श्रीमद् कनीरामजी विरचित्

सिद्धान्तसार

उर्फे

(श्वेताम्बरी) तेरापंथीनी चर्चा.

परमपूज्य अर्चानिधान सकल गुणसंपन्न प्रवर पंडित
पुज्यजी माहाराजश्री १००८ श्री रेखराजजी
माहाराज तत् सुशिष्य चक्रवालमा धर्ममूर्ति
स्वामीजी माहाराजश्री १००८ श्री रंगलालजी
माहाराज तत् जेष्ट सुशिष्य श्रीमन माहा-
मुनी १०८ श्री रत्नचंदजी स्वामीना
आश्रयथी अने राजेश्री मेहेताजी
पीताम्बरभाई हाथीभाइना
उद्देशथी
भाषान्तर करी छपावी प्रसिध्द कर्त्ता,

मेहेता. गंभीरमल हेमराज.

मु० पालणपुर. (गुजरात.)

अमदावाद

"श्री जैन प्रिन्टिंग प्रेस"मां शा. जेठालाल दलसुखभाइए छाप्यो.

विक्रमसंवत १९६४. इसवी सन १९०८.

कीमत रु २-०-०.

अर्पण पत्रिका.

महत्पदादि अनेक गुणगणालंकृत सुज्ञ मुरब्बी राजमान राजेश्री

मेहेता पीताम्बरभाइ हाथीभाइ माजी कारभारी साहेब

स्टेट—पालणपुर.

बाल्यावस्थाथी स्वशक्तिवले संसारिक व्यवहारमां तेमज राजकार्यादिमां अभ्युदय प्राप्त थवाथी आपे स्वउपार्जीत द्रव्यनो अन्य अन्य प्रसंगे विद्या केलवणीमां तथा धर्मकार्योमां अंतःकरणना धार्मिक उत्साहथी व्यय करी पोताना आत्माने निर्मल करेलो छे तेनो प्रत्यक्ष दाखलो के शुभ संवत् १९३७ मां महामुनी तपस्वीजी श्री त्रीलोकचंद्रजी माहाराज अत्रे चोमासु पधारी ९१ अपवास करेला ते प्रसंगपर गुजरात, मारवाड अने काठीयावाड विगेरे देशोना जैनभाइओ दर्शनार्थे आवेल तेमनी सेवा बरदाश करवामां तत्पर रही अत्यंत नम्रता भाव दर्शावेल तेमज अद्यापि पर्यंत अहर्निश पूर्वोक्त धर्मादि कार्य स्वात्म पवित्रतार्थे करोछो अने तेवी पवित्रता प्राप्त थवाथी वृद्धावस्थामां शान्तरसनो आपना अंतःकरणमां जमाव थयो छे तेनो प्रत्यक्ष अनुभव पालणपुरना जैन समुदायमां प्रसंगे प्रसंगे थता उंचा मनने शान्ती पमाडवामां आपनुं अंतःकरण साधनभूत थाय छे एवा अनेक कारणोने लीधे तेमज परोपकारार्थे आ महान् ग्रंथ प्रसिद्ध करवामां मने मदद आपी मारा उपर पूर्ण सद्भाव राखोछो तेथी आ भाषान्तररूप ग्रंथ आपनी पवित्र सेवामां सविनय अर्पण करुं छुं ते स्वीकारशोजी

पालणपुर वीर संवत् २४३४.

विक्रम संवत १९६४

ली.

आज्ञांकित

भाषान्तर कर्त्ता

प्रस्तावना



श्लोक.

स्याद्वादो वर्तते यस्मिन्, पक्षपातो न विद्यते;
नास्तन्य पिडनं किंचि, जैन धर्मस उच्यते ॥ १ ॥

श्री युती सकल श्रमण संघ (साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका सम्यक्दृष्टि मार्गानुसारी सज्जन नव्य जनो) ने विदीत करवामां आवे छे केः-वर्तमानमां हुंडा अवसर्पणी प्रवर्ते छे, तेना प्रज्ञावथी आश्चर्यजुत (न थवानी) अनेक वातो थइ, थइ रही छे, अने थवानी नवाइ नथी. तेमज अनेक कूपंथ प्रगट थया, थाय छे अने वली पण थवानी नवाइ नथी. आ बाबतमां विशेष लखवानी आवश्यकता नथी; कारण के आ बाबत जैन वर्गना नाना नाना बालक पण प्राय जाणे छे. वास्ते प्रयोजन जूत फक्त लखीए छीए केः—

पूर्वोक्त हुंडा अवसर्पणीना प्रज्ञावे अनेक मत मतान्तर प्रगट थइ गयेला छे. तेमां संवत १८१५ नी सालमां एक तेरापंथी नामनो पंथ दृष्टेष्ट विरुद्ध श्री जिन सासनने धूम्रकेतु शादृश्य प्रगट थयो. हवे ते पंथ शा कारणे अने कया पुरुषना निमीत्तथी प्रगट थयो ते, अने ते पंथस्थ मनुष्योनो शो मन्तव्य छे ते सत्य सनातन धर्माभिलाषी मध्यस्थ जनोने जाणवा सारु अति संक्षिप्त टुंक वृतांत नीचे लखवामां आवे छे.

अथ श्वेताम्बरी तेरापंथ मतोत्पत्ति.

संवत १८०८ नी सालना अरसामां श्री मरुधर (मारवाड) देशने विषे बावीस समुदायस्थ परम पुज्य सुगुण संपन्न क्रत पुन्य श्री श्री १००८ श्री श्री रघुनाथजी स्वामी घणा सुशिष्योना परिवार चोख्खे विहारे करी विचरता हता. तेओ साहेबनी समिपे मारवाडमां आवेल अति प्राचीन शेहेर सोजत बगडीने नजदीक गाम कंटालीआना वासी

ज्ञाते ओशवाल भिखुनजी नामे संवत १८०० नी सालमां शिष्य थया भिखुनजीना संसारथी उदासीन प्रणाम तो खरा, तेम बुधी पण तीक्ष्ण खरी, परन्तु विचार-शक्ति अवली, तेथी जे सूत्र शास्त्र वांचे ते उलटा प्रणमवा लाग्या एम करता एकदा प्रस्तावे पुज्यश्रीए तेमने विषीक्षण जाणी बीजा साधु साथे आपी मेवाड देशमां आवेला राजनगरे चोमासु करवा मोकल्या त्यां आगल सागरगछना यति नि संतान गयल होवाथी तेमना पुस्तक पानां विगेरेना वारस त्यांना श्रावको हता तेथी भिखुनजीने वांचवा वास्ते जोइए तेटली सूत्रनी प्रतो मली भिखुनजी पण ते प्रतो वांचवा मांड्या, पण स्याद्वाद पद लान्छित् अनंत नयात्मक श्री जिन-वचनना साचा रहस्य समुद्र सरखी बुद्धीवाला जीवोने पण गुरुगम्य पूर्वक पामवा योग्य, ते भिखुनजी सरखाने गुरुगम्य वगर साचा रहस्य क्यांथी मले ? हवे पूर्वोक्त श्रावकवल सूत्रोनी प्रतो वांचवाथी भिखुनजीना मनमां अनेक कुतर्को उत्पन्न थवा मांड्या छेवटे अविधिए सूत्र वांचवानी असर भिखुनजीने थइ के श्री नवीस सूत्रना बारमा उद्देशाना पेहेला तथा बीजा सूत्रमां कह्यु छे के, जे कोइ साधु साधवी अनेरा कोइ त्रसजीवने मुंज सुत्रादिकना पासावडे बांधे, बंधावे अने बांधताने भलो जाणे, तेमज पूर्वोक्त पासावडे बांध्या त्रसजीवने छोडे, छोडावे अने छोडताने भलो जाणे तो चोमासी प्रायश्चित आवे आवो साधु संबधीनो लेख वांचीने एकान्त मतीए एवो निश्चय करी लीधो के, मरता जीवने जो साधु बचाववा सारु खोले तो चोमासी प्रायश्चित पामे, अर्थात चार महिनानुं चारित्र लूए, त्यारे गृहस्थी मरता त्रसजीवने छोडावे तेमां तेने धर्म पुन्य क्यांथी थाय ? नज थाय, पाप लागे एवी रीते श्रीमद् दया भगवती विषे अश्रद्धा उपनी तेमज श्रीमद् भगवतीजी सूत्रना आठमा शतकना छठा उद्देशामा श्रमणोपासक (श्रावक) तथारुप असयति अव्रतिने सचित अचित, सुझता असुझता अन्नादिक प्रतिलाभे तो तेने एकान्त पाप थाय, पण किंचीत निर्जरा न थाय एम कह्युं

छे. तेनो पण परमार्थ जाण्या वगर एमनो एम एकान्त बुद्धिए एवो निश्चय करी लीधो के, साधु सिवाय कोइ संयति न कहेवाय, असंयतिज छे. माटे साधु सिवाय बीजा कोइने पण आप्यामां निर्जरा के पुन्यरुप नफो नथी. जे आपे छे तेने एकान्त पाप लागे छे. एवी रीते परंपराय परम कल्याणकारक मोक्षना प्रथम द्वाररुप दानने विषे पण अश्रद्धा उपनी. एवी रीते दयादान विषे ग्रहस्थीना निमीत्त पूर्वक अश्रद्धा थवाथी भिखूनजीने अनेक दोहला उत्पन्न थवा मांड्या. ते समिप-वर्ती साधुजनोने किंचीत् प्रगटरुपे केहेवा मांड्या, तेथी ते साधुउनां मन पण शंकाशील थइ गयां. एम करतां कोइक अवसरे पुज्यश्रीने ते बाबत जाणवामां आवतां भिखुनजीने पूर्वोक्त सोजत शेहेरने विषे हितमित मधुर वचने समजाव्या के " हे वत्स ! पूर्वोक्त सूत्रार्थनो तमने यथार्थ अवबोध नथी थइ शक्यो तेथी तमने तेम भाषे छे, पण तेनो एवो अर्थाशय नथी. तमे पोतेज जरा दीर्घद्रष्टिथी विचारो के, जो एम होय तो तो दया दान ए धर्मना मूल भूत मुख्य अंग उठी जाय; अने ज्यारे ए उठी जाय त्यारे आर्य (मोक्ष) मार्गनो अभाव थइ जाय. एम क्रम पूर्वक नास्तिक थवा दहाडो आवे. माटे हे आर्य ! तमे जे अनंत अरिहंत सिद्धना अभिप्रायथी विरुद्ध अभिप्राय कल्प्यो तेनो दंड (प्रायश्चित) अंगीकार करो अने हवे पछीथी एवुं स्व–मनिषा जनित अभिप्राय कल्पि अन्य जीवोने शंकाशील नही करवानी प्रतिज्ञा ल्यो. " ए वात भिखुनजीना मनमां तो न रुची, पण अवसरज्ञ एवा भिखुनजीए विचार्युं के, यदि हमणां हुं मारा मानसिक द्रढनिश्चय प्रगट करीश तो ए गुरु मने समुदाय बाहार काढी मुंकशे, अने विना मदद हुं एकलो रखडी मरी जइश. मारो जे उद्देश छे ते निष्फल जशे, तेथी हमणां तो गुरुने इच्छानुं लोम (मनने अनुसारे) भाषा बोलवी योग्य छे. एम धारी दंभ–प्रीय भिखूनजी बोल्या के, हे स्वामी ! मारी भुल आपने भाषी तेथी हुं क्षमापात्र छुं; माटे आपने गमशे ते दंड मने आपशो ते लेवा हुं खुसी

यशोवंत तु एवी रीते बोलता भिखुनजी प्रत्ये भद्रिक प्रणामी एवा श्री गुरुए यथायोग्य दंड आप्यो ते द्रव्यथी तो लीधो पण प्रणाम मिथ्यात्व न मट्यो, तेथी वली पूर्वोक्त रीतीथी विशेषत अनेक हेतु युक्तिथी दया–दान विषे भेदोत्पादक वचन जालमा विशेष करी भोला अल्पज्ञ साधुओने फसाववा शरु कर्या ते वात वली पण पुज्यश्रीना जाणवामां आव्याथी पूर्वोक्त रीते तेमने समजाव्या, पण तेहेजसाजमा तेओ समज्या नहि त्यारे तेमने इसत आक्रोश करी केहेवु पड्युं के, जेम कोइ मगजनु फाटेल गणीतज्ञ, एकडा बगडाना भणवामां माल नथी एम कहे, पण ए तेनु केहेवुं विद्वजन मडलमां अप्रमाण थाय, कारण के न्यायथी जोता प्रथम एकडा बगडा शीखवा ते विशेष गणीतज्ञ थवानु समवाइक मूल कारण छे, तेम तमारे पण समजवुं के, अनुकपा रुप दया–दान ते उचली दशा पोंहोंचाडवाना कारण छे तमे कारणनु निषेध केम करो छो ? कारण के कारण विना कार्य नथी थतुं यत पुर्वात पुर्वात कारणं, पश्चात पश्चात कार्यं इति वचनात इत्यादि गुरुए कह्यु पटले बीजीवार पण श्री गुरुना केहेवा प्रमाणे दंड लइने गुरुथी जुदा न पडता सामील रहीने अदर अदरखाने भिखूनजी साधुओने खूब बेहेकाववा मांड्या भावी वसात् साधुओ पण घणा बेहेकी भिखूनजीने सहमत थया अने प्रछन्न विचार करी राख्यो के, ज्यारे पुज्यजी आपणने छेडे त्यारे हवे उघोक थइ प्रथम तो तेमने विनय पूर्वक सत्य श्रद्धा अर्ज निवेदन करवी तेम करतां तेओ न माने तो तेमने पडता मुकी आपणे आपणो धोरेखो सत्य मार्ग प्रचलित करवो, तेवो दृढ निश्चय कर्यो पछी ग्राम बगडीने विषे पुज्यश्रीनो भेगारो थयो ते अवसरे पुज्यश्रीए फरमाव्यु के, भिखुनजी तमे हजी सुधी पण कपोल कल्पीत श्रद्धा तेमज तेनी परुपणा छोडी नथी वास्ते आ छेल्लीवार तमने कहेवामां आवे छे के, का तो तमे तमारी मिथ्या श्रद्धा परुपणा छोडी सत्य अंत करणथी प्रायश्चित ल्यो, नहिं तो हवे तमने समुदायथी बाहार करवामां,

आवशे. इत्यादि गुरुनां वचन सांभली बहु जन सम्मत एवा भिखुनजी बोल्या, स्वामी! अमने जे जाण्युं छे ते खरुं जाण्युं छे. अने खरानो दंड होय नही. माटे दंडफंड देवानी वात हवेथी आपने करवी लाजम नथी अने हवे अमे आपना केहेवा प्रमाणे दंड लेवाना पण नथी. अमारुं तो आपने एम केहेवुं छे के, आपने जो आत्मार्थनी इच्छा होय तो एटला दीवस खोटी श्रद्धा परुपणा करी साधु आचार्यना गुण विना मात्र नाम धराव्यां तेनुं प्रायश्चित करी अमारा केहेवा प्रमाणे सत्य श्रद्धाधारी मठपतिपणुं छोडी फरीथी दिक्षा ग्रहण करो, तो तमे अमारा गुरु अने अमे तमारा शिष्य, नहिं तो हवे अमे अमारुं धार्युं काम करवाना छीए. पछी केहेशो के अमने पेहेलुं कह्युं नही तेथी कही दरशावुं छुं. एवी रीते उलटा गुरुने उपदेशवा मांड्या. त्यारे श्री गुरुए जाण्युं के, आ जीवनो होणहार एवोज मालुम पडे छे माटे समजवो मुश्केल छे. तो हवे एने सामील राखवो शा कामनो. एम धारी "भिखुन समुदाय बाहार छे" एवो हुकम प्रगट कीधो. त्यारे भिखुनजी जाणे के "गुरुसें कपट साधसें चोरी, के हुवे नीर्धन के हुवे कोढी" आ वचनने संभारी बोलता होय ने, तेम बोल्या. जो स्वामी! आप मने एकलो जाणी समुदाय बाहार काढता हशो पण तेम नथी. मारे सामील बीजा पण महत्-गुणी साधुजन छे. माटे आपे मने समुदाय बाहार काढवानुं काम वीचार पूर्वक करवानुं छे. आवां भिखुनजीनां वचन शांभली भद्रिक प्रणामी श्रीगुरु तेमने कहेता हवा. हे वत्स! एक हो, गमे तो घणा हो, तेनी अमारे दरकार नथी, तथापी तमे जुदा जुदा नाम ल्योने, देखीयें तमारी सामील कोण कोण साधु छे. त्यारे भिखुनजीए नोखा नोखा नाम देइ बताव्या. ते शांभली श्री गुरु इशत धर्मानुराग रुप सरागवसे चिंता ग्रसीत थया; पण "बीगड्यो पान बीगाडे चोली, बीगड्यो साध बीगाडे टोली" आ वचनना अनुसारे तेमने संवत्सर १८१५ ना चैतर सुद ए सुक्रवारना दीवसे समुदाय बाहार कर्या. तेउ पण गुरु कुल वास छोडी वीहार करी अन्यत्र जता हता. एवामां माझा

वायुना योगे ते गामना बाहार उमीउंमा रह्या ते पुज्यश्रीना जाणवामा आवतां करुणाशील पवीत्र प्रीतीयभाव धारण करता थका तेमने सम जाववा खातर सामे पधार्या त्या गुरु चेलाने यथा सम्भवती चर्चा वार्ता थइ, पण भिखुनजीए विना समजे विहार कर्यो ते अवसरे भिखुन जीना साथे केटला साधु नीकल्या ए काइ चोकस नथी, पण सांभल्या प्रमाणे तेर साधु नीकल्या केहेवाय छे तेमाथी श्रीमान रुपचंदजी स्वामी आदि बर्णां ने कोइ निमित्त कारण जोगे तेमनी असत् श्रद्धान हृदये न बेसवाथी थोडा वखतमाज, भिखुनजीने छोडी पुज्यश्रीने मली पुन्यक्षेत्र श्री पालणपुर क्षेत्रने पवित्र कर्युं मुख्य करी वृद्धावस्यादि सयोगे पालणपुर बीराजमान रह्या, अने तेज शेहेरमां शुभ संवत् १८५५ ना आसो वद ३ ना दीवसे अणसण पूर्वक देहोत्सर्ग कर्यो ए माहात्मा श्री समकितसारना कर्त्ता श्रीमन् प्रवरपदीत वादलब्धीसपन्न श्रुत धर्ती श्रीयुत जेष्टमलजी स्वामीना धर्मगुरु हता तेउ भिखुनजीनी साथे नीकली पाछा आवेल तेथी तेमनो सक्षेप वृतात प्रसग पामी अहिं उपयुक्त जाणी लख्यु छे

हवे ते भिखुनजी शेप साधु रह्या तेउ साथे देश नगर ग्रामादि कने विषे खुल्ली रीते दया दान उथापवा रुप अनेक वचनजालमा अनेक जीवोने फसाववा माड्या अने पोताना गुरुवादिकने भ्रष्ट भागल, पडवाइ, पाखडी, इत्यादिक अनेक जातनी गालो चोपडावा माडया ते देखी अन्यान्य समुदायस्थ परोपकारी गीतार्थ साधुजनो तेमने सम जाववाने निमित्ते तेमनी साथे शास्त्रार्थ चर्चा करी वखतो वखत पराजय (खष्ट) करवा लाग्या, पण जेम भुमि ग्रहस्थित मनुष्यने सुर्यनी किरणानो जोइए तेवो प्रकाश न थाय, तेम पूर्वोक्त महामुनीरुप सुर्य, कथनोरुप किर्ण अने अभिनिवेष मिथ्यात्वरुप भुमिग्रह, तेमा भिखुनजी रहेला तेथी भ्रमरुप तीमीर नाश क्यांथी थाय ? भिखुनजी शास्त्रार्थमा हारे तोपण कहे के, मारी बुद्धिनी खामीथी हु पराजय पामु छु, बाकी वात तो हु कहु छु तेज सत्य छे एवी रीते कही मूल

हठवाद न छोडे. ते देखी बीजा साधुओए पण एम धार्युं के, आवा हठी दुराग्रहीनी साथे वाद करवो ते शुष्कवाद छे. एम जाणी उपेक्षा करवा लाग्या तेथी भिखुनजीने फावतुं आव्युं. एटले जाण पुरुष तो उपेक्षा करवा लाग्या, अने अजाण पुरुषोने भिखुनजीनी अलौकीक अनहद एकान्तीक बुद्धिए मोह पमाडी कबजे करवा मांड्या. इत्यादिक कारणयोगे मतनो प्रसार थवा लाग्यो.

हवे ए मतनो मंतव्य सांभलो! मूल तो दया अने दान बे रकमोनो फेरफार कर्यो. हवे जेम कोइ चोपडामांथी एक बे रकमनो फेरफार करवा चाहे त्यारे तेने बीजी पण घणी रकमोनो फेरफार करवोज पडे. ए स्वाभाविकज छे. तेम भिखुनजीए पण ज्यारे दया–दानरुप बे रकमोमां फेरफार कर्यो त्यारे तेमने तेने लगती एवी बीजी पण घणी रकमोनो फेरफार करवो पड्यो. ते नीचे प्रमाणेः—

श्री दया भगवती विषे.

१ श्रमण ज्ञातपुत्र माहावीरदेवे अनुकंपा आणी गोशालाने बचाव्यो तेथी तेमने चुक्या केहेवा पड्या.

२ साधुजीने कोइ दुष्ट फांसी दइ गयो छे. एवामां कोइ दयावंते देखी फांसी खोली साधुने जीवीत दीधुं, तेने एकान्त पाप लाग्युं, तेम केहेवुं पड्युं.

३ कोइ अनुकंपा आणी कोइ जीवना मरणना भयथी रक्षा करे अर्थात पुन्य जाणी बचावे तो तेने अढार पाप लागे एम केहेवुं पड्युं.

४ गायोथी वाडो भर्यो छे, एवामां अकस्मातथी अथवा कोइ दुष्टे लाहे लगाडी तेथी गायो बली जाय, ते देखी कोइ दयावंत वाडो खोली गायो बाहार काढी बचावे तेने एकान्त पाप लाग्युं एम केहेवुं पड्युं.

दान विषे

५ अग्यारमी प्रतीमा प्रतीपन्न याने ११ मी पडीमाधारी श्रावकने कोइ बेतालीस दुषण टालीने असनादिक आपे तेने एकान्त पाप लागे तेम केहेवु पड्यु

६ श्रावकने पोषध, सवर अथवा सामायक करवाने जग्या आपे तेने एकान्त पाप लागे तेम केहेवु पड्यु

७ अनाथ दुर्बल अभ्यागतादिने आपवामा एकान्त पाप लागे तेम केहेवु पड्यु

८ साधु सीवाय सर्व असजति छे एवु केहेवु पड्युं

९ श्री जिन-आज्ञा बाहार एकान्त पाप निपजे छे एम केहेवुं पड्यु

१० मिथ्यात्वीनी करणी श्री जिनाज्ञामा छे एम केहेवु पड्यु

११ श्रावकने भगवते रत्नना कचोला (वाटका) समान कह्या छे तेने झेरना कचोला सरखा केहेवा पड्या

१२ स्थिवरकल्पी साधुने कमाड वासवा तथा उघाडवानी आज्ञा नथी एम केहेवु पड्यु

१३ तेरापथी साधुने आहार करवामा धर्म छे एम केहेवु पड्यु.

विगेरे अनेक रकमो तथा तेना पेटानी घणी रकमो छे ते लख पाथी लयाण थवाना सबबथी उपर प्रमाणे फक्त जुज रकमो जणावी छे विशेष मथ वाचवाथी मालुम पडशे आवो तेओनो अघटीत उपदेश होवा छतां तेमा केटलाक लोको फसाया ए दुरमकालनु माहात्म छे

हवे श्री सिद्धान्तसार मथनी उत्पत्ति लखीए छीए

पूर्वोक्त रीते भिखुनजीयो मांडीने आ मथ उत्पन्न थवाना अरसा पर्यंत तेरापथीओ जेम जेम पोताना कल्पीत पथने प्रसार्या सारु कुतर्क प्रगट

करता गया, तेम तेम बावीस समुदायस्थ गीतार्थ विद्वान महानुभाग्य माहामुनीओ तेरापंथी कृत कुतर्कोनुं समाधान अर्थात श्रीमत सत्य शास्त्रानुसार खंडन करता गया; परंतु ते खंडन मंडन प्रथक प्रथक होवाथी सामान्य प्रकीर्ण लोकोने जोइए तेवो लाभ न मली शके. ते लोको सहेलाइथी लाभ लइ शके ते माटे तथा पूर्वोक्त कुपंथने विषे फसायला लोकोने मुक्त करवा तथा हवे पछी न फसाय एवा हेतुथी श्रीमान कनीरामजी स्वामीए नवकोटीना शेठजी श्री फतेहमलजीनी प्रेरणाथी पोते सिद्धान्त, पद, छेद टीका चुरणी आदि आर्स ग्रंथानुसारे पूर्वोक्त खंड खंड कथनने एकत्रीत करी साडाबार हजार श्लोकना विस्तारवालो ग्रंथ रची शुभ संवत १९०६ नी सालमां पुर्ण कर्यो. तेमां अनेक तरेहनी सरलता बतावी त्रीभंगी चोभंगी विगेरे सेहेली रीते वांचनार समजी शके तेवा टीका सहित द्रष्टान्तोथी भरपूर बनावेल छे. ते अथथी ते इति सुधी वांचवाथी समजाशे.

प्रीयतम! सत्य धर्मने समजवो ए काम बुद्धिमान विवेकी पुरुषोनुं छे, अने दस द्रष्टान्ते दुर्लभ, एवा मनुष्य जन्मनो सार पण मुख्य करीने धर्म पीछाणवो एज छे. वास्ते अमे सर्व सज्जनोने प्रार्थना करीए छीए के, एवो विचार जरापण न करवो जोइए के "अमे अमुक पंथस्थ छीए" ए रीते मतनो आग्रह अणकर्ता निःकेवल स्यादवाद पदलान्छीत निर्ग्रंथ प्रवचननोज आग्रह करवो उचीत छे; कारण के जे माणस मताग्रही, हठी, दुराग्रही या द्रष्टीरागी होय छे तेने श्री निर्ग्रंथ प्रवचननुं यथार्थ बोधरुप फल वंध्या स्त्रीनी माफक प्राप्त नथी थइ शकतुं. एटला माटे सर्व आत्मार्थी भवजीवोए आ ग्रंथ समदर्शीपणे वांची भेद विज्ञान पूर्वक सत्यनो अंगीकार करी स्वआत्महित साधन करवुं.

वली तेरापंथीओने नम्रता पुर्वक निवेदन करवामां आवे छे के, अमे आं भाषान्तरमां उपयोग सहित असत्य वचन अथवा तीक्ष्ण कटु वचन विशेषतः नथी लख्युं; केमके पूर्वोक्त वचन केहेवा तेमज लखवा ए विवेकी पुरुषोनुं काम नथी. तेमज उस वचन केहेवाथी

तथा सखवाथी विरोध वधे छे, सपतनो अनाश थाय छे अने नि कषक चड मम्लवत शीतल जिन धर्मनी निंदा थाय छे वली श्री जिनमार्गनो ए मुख्य सिद्धातज छे के, कोइने पण पूर्वोक्त वचन केहवाथी अथवा लखवाथी माठु लगाडवु ते ज्ञारे दोष छे एने लीधे आ लेखमा अमे पूर्वोक्त वचन नथी लख्यां तथापि यदि कोइ शब्द आपने असत्य लागे अथवा तीक्ष्ण कटुक लागे तो अमे क्षमापण करीए छीए के, असत्य वचनने तो जेम सम्यक्दर्शी पुर्वोपार्जीत कर्मोदय कालमा समजावे सहे तद्वत् सेहेवां अने तीक्ष्ण वचनने जेम वीचीक्षण वैद्य पोताना शास्त्रवडे सरुज (रोगी) ना शुभध्याने विचारे अने ते तीक्ष्ण शस्त्रनी धारनी मार आदर पूर्वक अगीकार करे तेम करवां हवे रह्या कटुक वचन, ते जेम ज्वर प्रसित कटुकने हित पथ्य जाणीने मधुरवत आचमन करे तेम करवा यदि आपथी उपर लख्या मुजब न सहा जाय अथवा न करयो जाय तो तेने माटे अमे क्षमा चाहीए छीए

बीजु श्री जैन धर्मनो मुख्य उद्देश ए छे के हरेकने तत्त्वार्थनी श्रद्धानो उपदेश करवो त्यारे आपतो अमारे परमप्रीय चैतन्य साधर्म ताथी अथवा लोकोक्तिना न्यायथी स्वधर्मी अथवा जैनी भाइ छो, माटे श्री परमागमजीनो सत्यार्थ प्रकाश करी बतावबो, ए अमारी फरज जाणी अमे बजावी छे, ते आपलोक पक्षपात छोडी अवश्य ग्रहण करशो

दुहा

मुल कर्ता इन ग्रंथका, श्री सर्व ज्ञदी जान,
उत्तर कर्ता गणधरु, तासु वचन परमान,
वर्तमान जे वर्तता, तिन आगम अनुसार,
स्वामी श्री कनीरामजी, रच्यो सिद्धातज सार,
विन बहु विस्तृतना, भया सो वीस्तारन हेत,
गुर्जर भाषांतर कीयो, पूरव कृति संकेत,

श्री पालणपुरने विषे, प्राकृत मुख्य प्रधान;
वेद महेता गोत्रमे, श्रावक वर्फ़े सुजान. ४
दृढ प्रिय धर्मि वत्सली, अम्मापित्तु समान;
राजमान राजेशरी, पीताम्बर अभिधान. ५
आप आदि श्री शंघके, एसी भइ अभिलाष;
त्यों करनो ज्यों ग्रंथ ए, पामे अधिक प्रकाश. ६
ए इच्छा बहु कालसे, वर्तिथी मनमांय;
पिन अपुर्ण कारणवसे, पूर्ण होयाथी नांय. ७
सो इच्छा इन सालमे, पामी परम संयोग;
परमार थकी बुद्धिए, पूरण भइ मनोग. ८
जग जाहर पंडीत प्रवर, एक सहस्त्रने आठ;
पुज्यजी श्री रेखराजजी, मिथ्यामत निर्घाट. ९
तसु प्रशिष्य श्रीमन मुनी, रत्न रत्नकी खान;
वर्ते जसु चर्चा विषे, यथायोग्य विज्ञान. १०
श्री संघकी लख प्रेरणा, जानी पर उपकार;
तसु आश्रय तल यह भयो, शुद्ध भाषान्तर त्यार. ११
संवत युगरस अंक भू, सक्र फागभव मास;
शुक्ल त्रयोदशि गुरुदिने, पूरण भया प्रयास. १२
वासि पालणपुरतणे, स्वपरके हित काज;
भाषान्तर निज कर लीख्यो, भंभोरमल हेमराज. १३

आ ग्रंथ मारवाडी भाषामां ग्रंथकर्ताए रचेलो हतो. तेनुं गुजराती भाषान्तर में मारी अल्पमति अनुसार कर्युं छे; माटे आ भाषान्तरमां जे जे स्थले भुलचुक मालम पडे ते सर्व सुज्ञ जनोए सुधारी वांचवा कृपा करवी. एज वीनंती.

ली.
भाषान्तर कर्ता.

ग्रंथ संबंधी सुचना

सर्व धर्माज्ञीलापी सद्गृहस्थोने विदित करवामा आवे छे के आ ग्रंथ गया आसो मासथी छपाववो शरु करेलो ते जेठ मास सुधीमां तैयार थयो तेथी अमे सर्व सद्गृहस्थोने अगाउथी ग्राहक थवा बाबतनी खबर आपी शक्या नथी माटे सर्व धर्माज्ञीलापी सद्गृहस्थो आ पुस्तकनो लाभ लइ शके तेटला कारणथी तेमने हजु इस्वीसन ता ३१-७-०७ सुधी अगाउथी थनार ग्राहक तरीके गणवामा आवशे

अमारा अगाउ थनार मानवंता ग्राहकोनां नाम पुस्तक छपाता दरम्यान वखतसर न आवी प्होंचवाथी ते साहेबोना मुबारक नाम छपावी शकाया नथी माटे क्षमा चाहु छु

ली

भाषान्तर कर्ता.



अनुक्रमणिका.



प्रश्न पेहेलो—आज्ञा विषे. पानुं १–७४.

प्रश्न बीजो—अनुकंपादान तथा दया विषे ७५ थी २३३

प्रश्न त्रीजो—दान देवा विषे. २३३ थी ३५७.

प्रश्न चोथो—साधुनो आहार, हालवुं चालवुं इत्यादि विषे.



कठण शब्दोना अर्थ

प्रवर्जित=त्यागी	अनागतकाळ=भूतकाळ
अनुमति=आज्ञा	जळचर=पाणीमां रेहेनारां
अनुष्ठान=आचरण	थळचर=जमीनपर रेहेनारा
उत्सर्ग=पोस	खेचर=आकाशमां उडनारां
उपशमाववुं=शान्त पाडवुं	गमनहार=जइ मनार
अभिलाषा=इच्छा	भवान्तरे=आवतरे
प्रशस्त=भला	उपरोठो=विरुद्ध
संक्लिष्ट=माठी	असंक्लिष्ट=भली
नीवड=चीकणी	प्रतिवर्ज्युं=अंगीकार कर्युं
खलाया=मुल्या	कालकूट=हलाहल
कोमारम=सोरबकोर	विद्यमान=वर्तमान
प्रतिलाभवुं=देवुं	अवग्रह=आज्ञा
सर्दहणा=श्रद्धा	अटवी=जंगल
प्रणविकलेंद्रि=बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चउरिंद्रि	निरुत्साहभावे=विना उत्साहे.



श्री वीतरागाय नमः

सिद्धान्तसार.

प्रश्न पेहेलो आज्ञा विषे.

अथ तेरापंथीउं साथे जे बोलनो आंतरो छे तेना उत्तर लखीए छीए. त्यां प्रथम तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यात्वीनी निर्वध्यकरणी श्री जिनाज्ञामांही छे. तेनो उत्तरः—हे आज्ञाना अजाण पुरुषो! प्रथम तो श्री वीतरागदेवनी आज्ञामांही एकांत धर्म छे, एकांत व्रत छे अने एकांत मुक्तिनो हेतु (कारण) छे; तेमां बीजो पक्ष कांइ नथी. ते आज्ञा केहेने कहीए, श्री वीतरागदेवने ओळखीने वचनरुपी आज्ञा प्रमाण करवी, तेज आज्ञा. तेनी शाख सूत्र आचारांग प्रथम श्रुतस्कंधे पांचमे अध्ययने छठे उद्देशे एहवो पाठ छे के, जिन-आज्ञा मांहेली करणीमां आळस, अने जिनाज्ञा बाहेरली करणीमां उद्यम, ए बे बोल हे शिष्य! तुजने मत होजो, ए तिर्थंकरनो अभिप्राय जाणवो. ते माटे श्री जिनेश्वरनी आज्ञाए प्रवर्तवुं जोइए, ते सूत्र पाठ लखीए छीएः—

अणाणाए एगे सोवठाणे आणाए एगे निरुवठाणे।
एवंते माहोउ एयं कुसलस्स दंसणं॥
तद्दिठीए तम्मुतीए तप्पुरक्कारे तस्सण्णी तन्निवेसणा।
अभिभूए अदक्खू अणाभिभूए पभू॥

अर्थः—हवे छठो उद्देशो प्रारंभीये छीए. पांचमे उद्देशे द्रह सरीखा

आचार्य कहाछे, तेमनी सेवाए कूमार्गनो परित्याग अने रागद्वेषनी हानी सजावीए, इहां एवो अधीकार छे अ० एकेक इन्द्रिय-वश दुर्ग तीना जानार, पोताना अभिमाने ग्रस्त, एहवा श्री वीतरागनी आज्ञा विना *सोपस्थानीछे अने चारित्र (क्रिया) मार्गे प्रतिपन्न छे ते मुखे एम कहे "अमे प्रवर्जित छीए" पर रुडा पाळुआ धर्मने विषे विशेष विकल छे अने +सावद्यानुष्टानने विषे प्रवर्त्तेछे, तथा आ० आज्ञा श्री वीत रागोपदिष्ट मार्गने विषे सन्मुख छे, परं मोहादिक काठियाने वस प्राये आ ळसु छे, ते श्री जिन-प्रणित मार्गने विषे नि० सदाचार पालवे विकल छे हवे श्री गुरु शिष्यने कहे छे, " ए० ए कूमार्गने विषे अनुष्टान अने सन्मा र्गने विषे प्रमाद, ए बे बोल, दुर्गतीना कारण हे शिष्य ! तुजने मा० मत होजो " ए० ए पूर्वोक्त अनाज्ञाविषे §निरुपस्थानपणुं, अने आज्ञा विषे सोपस्थानपणुं, ए कु० श्री तीर्थंकरदेवनो दं० अभिप्राय जाणवो वळी तेज कहे छे, ते कूमार्ग छोडीने सदाय आचार्यनी समिपे शिष्ये वसवुं, ते एम, तद्दि० ते आचार्यनी द्रष्टिए (तीर्थंकर प्रणीत आगमरुप द्रष्टीए) वर्ते, तम्मु० ते आचार्यनी मुक्तीए (निर्लोभपणे) प्रवर्त्ते, तप्पु० ते आ चार्यने सर्व कार्यने विषे आगळ करी प्रवर्ते, §एतावता आचार्यनी अनु मतीए अनुष्टान करे इत्यर्थ तस्स० ते आचार्यना ज्ञाने उपयुक्त प्रवर्त्ते, तन्नि ते० आचार्यना स्थाने प्रवर्त्ते, एतावता सदा गुरु कुलवासीपणे रहे, एवा शिष्यने शो गुण उपजे ते कहे छे -अभि० ते परिसह (उपसर्ग) जीते, प्रव० घाती कर्म चतुष्टय जीतीने केवली थइ तत्व देखे तथा अण० अनुकुळ प्रतिकुळ उपसर्गे करी अपराभिभूता (निरालबण) थाय आ संसारमां जीवने, नर्कादिक पडता एक जिनवचन टाळी माता पीता पुत्र कलत्रादिक कोइपण आलंबन नथी ते एव भूत भावनाने प० स मर्थ थाय, इत्यादि हवे आज्ञा केटला प्रकारनी छे, ते कहेछे त्रण प्र कारनी आज्ञा आराधना करीछे ज्ञान आराधना १, दर्शन आराधना

*उद्यमी +पापकारी आचरण §आळस §एवा प्रकारे

२ अने चारीत्र-आराधना ३. शास्त्र सूत्र भगवती शतक आठमे, उद्देशे दशमे, ते पाठ लखीए छीए:—

कइ विहेणं भंते ! आराहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा आराहणा पन्नत्ता, तंजहा:-णाणाराहणा, दंसणाराहणा, चारित्ताराहणा. णाणाराहणाणं भंते ! कइ विहे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता तंजहा:-उक्कोसिया,मज्झिमा, जहणा. दंसणाराहणाणं भंते ! एवंचेव तिविहा, एवं चारित्ताराहणावि.

अर्थ:—क० केटला वि० प्रकारे भं० हे भगवान् ! आ० आराधना प० कही ? इती प्रश्न. उत्तर-गो० हे गौतम ! ति० त्रण प्रकारे आ० आराधना:प० कही तं० ते जेम छे तेम कहे छे:- णा० ज्ञाननी आराधना निरतीचारपणे अनुपालना, ते ज्ञान पांच प्रकारे, अथवा श्रुतनी आराधना, ते कालादिक आठ भेदे तद्यथा. गाथा:-काले १, विणए २, बहूमाणे ३, उवहाणे ४, तहनिन्हवणे ५, वंजण ६, अत्थ ७, तदुभय ८, अठविहोणाणमायारो ॥ १ ॥ दं. दर्शन सम्यक्तनी आराधना (निःशंकितपणा आदि अष्टाचार पाळवा ते) यतः गाथा:-णिस्संकिय १, णिक्कंखीय २, णिवितिगिछा ३, अमूढदिठीय ४, उववुह ५, थिरीकरणे ६, वछल ७, पभावणे ८ अठ. उपर प्रमाणे दर्शनाराधनाना आठ भेद कह्या ते विषे पुनः गाथा:-दंसणं मूलं गुरुणो, सुयंचउभंतु विणयवछलया, जह आदरेण कीरइ, दंसण आराहणा णाम ॥ २ ॥ चा० चारित्र सामायकादिकनी आराधना (निरतीचारपणे सुमती गुप्ति पाळवी ते.) ए चारित्राराधनाना आठ आचार विषे गाथा:- पणिहाण जोग जुत्तो, पंचहिं समइहिं तिहिं गुत्तिहिं, एस चरित्तायारो, अठ विहो होइ णायबो; समइ गुत्त परिसह, जइ धम्माइ सुय धम्म जोगेसु, विरियस अ-

थिग्गुहो, चारित्ताराहणा होइ ॥ १ ॥ हवे णा० ज्ञान आराधना भं० हे भगवान् ! क० केटले वि० प्रकारे प० कही ? इति प्रश्न उत्तर-गो० हे गोतम ! ति० त्रण प्रकारे प० कही त० ते कहे छे उ० उत्कृष्ट ज्ञान-आराधना ते केवी के जे ज्ञान-कृत अनुष्टानने विषे प्रकृष्ट प्रयत्न गाढो उद्यम तथा उत्कृष्टी ज्ञाननी आराधना (चौद पूर्वनुं जाणवुं ते), म० तेने विषे मध्यम प्रयत्न (गाढो उद्यम नही तेम घणो थोडो पण नही, एकादशांगादि विचित्र सूत्रनु जाणवुं ते) ज० जघन्य थोडोज प्रयत्न, जे घणोज थोडो उद्यम (पांच सुमति अने त्रण गुप्ति ए मळी आठ प्रवचन मातानु जाणवुं ते) ॥ १ ॥ द० दर्शन आराधना भं० हे भगवान ! केटले भेदे कही ? इति प्रश्न उत्तर-हे गोतम ! ए० जेम ज्ञान आराधना त्रण भेदे कही, तेम दर्शन आराधना पण ति० त्रण भेदे केहेवी त्यां उत्कृष्टी दर्शन आराधना ते क्षायक सम्यक्त्व, मध्यमआराधना ते क्षयोपशमादिक सम्यक्त्व अने जघन्य आराधना ते सास्वादन सम्यक्त्व (जाखरना रसाकावत्) ॥ २ ॥ ए एम चा० चारित्र आराधना पण त्रण भेदे केहेवी, उत्कृष्ट चारीत्र आराधना ते यथाख्यात चारीत्र मध्यम-आराधना ते परिहार विसुद्धादि, अने जघन्यआराधना ते सामायक चारित्र ॥३॥ वळी बे प्रकारनो धर्म कह्यो छे -सूत्रधर्म अने चारित्र धर्म २ शास्त्र सूत्र ठाणायांग ठाणे बीजे ते सूत्रधर्मना बे भेद, ज्ञान अने सम्यक्त्व तथा सूत्र अने अर्थ २ सूत्रनी सज्झायना पांच भेद वायणा, पुछणा, परियट्टणा, अणुपेहा अने धम्मकहा ५ चारित्र धर्मना बे भेद मूलगुण-पच्चखाण, अने उत्तरगुण-पच्चखाण शास्त्र सूत्र भगवती शतक सातमे उद्देशे बीजे ते पाठ —

कइ विहेणं भंते ! पच्चख्खाणे पणत्ता ? गोयमा ! दुविहे पच्चख्खाणे पणत्ता तंजहा -मूलगुण-पच्चख्खाणेय उत्तरगुण-पच्चख्खाणेय मूलगुण-पच्चख्खाणेणं भंते ! कइ विहे पणत्ता ? गोयमा ! दुविहे पणत्ते तंजहाः-सव्व-मूलगुण-पच्चख्खाणे

देस-मूलगुण-पच्चक्काणे. सव्वमूलगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहाः-सव्वाउ पाणाइवायाउ विरमणं जाव सव्वाउ परिग्गहाउ विरमणं. देसमूलगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइ-विहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहाः-थूलाउ-पाणाइवायाउ विरमणं जाव थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं. उत्तरगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते-तंजहाः-सव्व-उत्तरगुण-पच्चक्काणेय देस-उत्तरगुण-पच्चक्काणेय. सव्व-उत्तरगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते तंजहाः-अणागय १, मइक्कंतं २, कोम्फिसहियं ३, नियंटियंचेव ४, सागार ५, मणागार ६, परिमाणकर्ड ७, निरवसेसे ८, संकियंचेव ९, अद्धाए १०. पच्चक्काणं भवे दस विहा. देसउत्तरगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ता तंजहाः-देसयव्वं १, उवभोग परिभोगपरिमाणं २, अणठदंड विरमणं ३, सामाइयं देसावगासियं ४, पोसहोववासो ५, अतिहिसंविभागो ६, अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झुसणा राहणाया ७.

अर्थः—क० केटला वि० प्रकारे भं० हे भगवान ! प० पचखाण प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! दु० बे प्रकारे प० पचखाण प० कह्यां तं० ते कहेछेः-मू० चारित्र कल्पनुं मूळ समणगुण प्राणातिपातादि विमरणरुप जे पचखाण ते मुलगुण पचखाण, उ० मूलगुणनी अपेक्षाये उत्तरगुण पचखाण, जेम वृक्ष अने वृक्षनी शाखा. मू० मूलगुण-पचखाण

भ० हे भगवान ! क० केटला वि० प्रकारे प० कह्या ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! दु० बे प्रकारे प० कह्या त० ते कहे छे स० सर्वथा मूलगुण पचखाण सर्ववृत्तीने होय ते, अने दे० देशथी मुलगुण-पच खाण देसवृत्तिने होय ते स० सर्व-मुलगुण पचखाण भ० हे भगवान ! क० केटले प्रकारे प० कह्या ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! प० पाच प्रकारे कह्या त० ते कहेछे -स० सर्वथा पा० प्राणीने हणवाथी वि० नि वर्तवु ते जा० यावत स० सर्वथा प्रकारे मृखावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रहथी वि० निवर्तवु ते ५ दे० देश-मुलगुण-पचखाण भ० हे भगवान ! क० केटले प्रकारे प० कह्यां ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! प० पाच प्रकारे प० कह्या त० ते कहेछे —थू० त्रसप्राणीने हणवाथी वि० निवर्तवु ते जा० यावत थुल-मृखावाद, थुल अदत्तादान, थुल-मैथुन अने थु० थुल प० परिग्रहथी वि० निवर्तवु ते उ० उतरगुण-पच खाण भ० हे भगवान ! क० केटले प्रकारे प० कह्या ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! दु० बे प्रकारे प० कह्या त० ते कहेछे -स० सर्वथकी उत्तरगुण-पचखाण अने दे० देशथकी उत्तरगुण पचखाण स० सर्वथकी उत्तरगुण-पचखाण भ० हे भगवान ! क० केटले प्रकारे प० कह्या ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! द० दस प्रकारे प० कह्यु तं० ते कहे छे अ० जे दीन तप करवो जोइए तेथी पहेला करे ते (आचार्यदिकनी वैयावचना कारणे) १, म० जे दीन तप करवो जोइए तेथी पछी करे ते (आचार्यदिकनी वैयावचना कारणे) २, को० जे तप आरम्भता अने मुकता एक सरखो करे ते (चतुर्थादिक करी अनतरे चतुर्थादिकनुं करवु ते) ३, नि० निश्चे करीने नोंहोतर्यो जे माहारे अमुक दिवसे ए तप निश्चे करवो ते नियन्नीत (तपना दिनादिकने विषे ग्लानत्वादि अतराय छता पण नियमथकी करवो) ४, सा० आगार सहित तप करवो ते ५, म० आगार रहित तप करवो ते ६, प० दात्यादिकनु प्रमाण करवु ते (दात एटले एक समुचय वस्तुनु पडवु ते अने भार

खंफीत थाय ने फरीथी ले ते बीजी दात) ७, नि० सर्व अस्नादिक परिहरे ते (निर्वशेष संथारो) ८, सं० अंगुष्ठादि मुष्टी गांठ श्रवण नासिका हाथ फर्स नमुक्कार गणवारुप पचखाण करे ते शंकेत तप ए, अ० पोरसी प्रमुख १०. प० पचखाण दस प्रकारे. यतः णमुक्कारसिए १, पोरसीए २, पुरिमढे ३, एकासणेय ४, एकठाणेय ५, आयंबिल ६, अवधठ ७, चरम ८, अन्निग्गह ए, णिविगइए १०. ए काळनुं मान करवुं ते. ए सर्व-उत्तरगुण-पचखाण जाणवां १०. दे० देसुत्तरगुण-पचखाण नं० हे नगवान ! क० केटले नेदे प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! स० सात नेदे प० कह्यां तं० ते कहेठेः-दे० दिशी प्रमाण व्रत (जोजनादिक क्षेत्रनी मर्यादा करवी ते) १, उ० उवन्नोग-परिन्नोगनी मर्यादा करवी ते, तेनुं लक्षण यतः उवन्नोगो नवे वस्तु, पुष्प मन्नं घृतादयो; प्रन्नोगा नूयणं धर्मि, प्रावणं वलन्ना यथा. २. अ० अनर्थदंड (अपध्यानादिक:प्रयोजनविना दंड लागे ते) थी निवर्तवुं ते ३, सा० सामायक करवुं ते. ते सामाइक किं० लक्षणं यतः जस्सा सामाणिउं अप्पा, संजमे णियमे तवे; तस्स सामाइयं होइ, इमं केवली नासियं. दे० दिनप्रत्ये दिशि क्षेत्रनुं प्रमाण करवुं ते ४, पो० पोषध (अष्टयाम चतुर्विधाहार विवर्जित ते) ५, अ० साधुथी संविन्नाग दान करवुं ते ६, अ० ठेह्ले मा० मरणने अंते सं० सलेखणा तप विशेषनुं झु० सेववुं तथा आ० तेनी आराधना अखंड करवी ते संथारो ७, इत्यर्थ.

जीवाणं नंते ! किं मूलगुण-पच्चरकाणी उत्तरगुण-पच्चरकाणी अपच्चरकाणी? गोयमा! जीवा मूलगुण-पच्चरकाणीवि उत्तरगुण-पच्चरकाणीवि अपच्चरकाणीवि ॥ नेरइयाणं नंते ! किं ? मूलगुण-पच्चरकाणी पुह्वा ? गोयमा ! नेरइया णो मूलगुण-पच्चरकाणी णो उत्तरगुण-पच्चरकाणी अपच्चरकाणी, एवं जाव चउरिंदिया. पंचिंदिया-तिरिक्क-जोणिया मणु-

सायजहाजीवा वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा नेरइया॥

अर्थ —जी० जीव भं० हे भगवान ! किं० शु ? मू० मुलगुण पचखाणी छे उ० उत्तरगुण-पचखाणी छे के अ० अपचखाणी छे ? इति प्रश्न उत्तर -गो० हे गौतम ! जी० जीव मू० मुलगुण पचखाणी होय, उ० उत्तरगुण पचखाणी पण होय अने अ० अपचखाणी पण होय ने० नारकी भं० हे भगवान ! किं० शु ? मू० मुलगुण प० पचखाणी छे ? उत्तरगुण पचखाणी छे ? के अपचखाणी छे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! ने० नारकी णो०मू० मुलगुण पचखाणी नथी णो०उ० उत्तरगुण पचखाणी पण नथी, पण अ० पचखाणना अभावथी अपचखाणी छे ए० एम संजमना अभावथी जा० यावत दस भवनपति, पांच स्थावर अने त्रण विगलेन्द्रि सुधी अपचखाणी कहेवा प० पंचेंद्रि तिर्यंच योनिकने अने म० मनुष्यने ज० जेम ओघीक (समुचय) जीव कह्या तेम कहेवा, पण एटलु विशेष के तिर्यंच योनिक पंचेंद्रियने सर्ववृत्तिनो अभाव छे तेथी ते देशथकीज मुलगुण पचखाणी होय वा० वाणव्यंतर ज्योतिष अने वैमानिकने जेम नारकी कह्या तेम कहेवा हवे मुलगुण प्रत्याख्यानादिवंतनो अल्पा बहुत्व चिंतवे छे ते पाठ —

एसिणं भंते! जीवाणं मूलगुण-पच्चक्खाणीणं उत्तरगुण-पच्च-क्खाणीणं अपच्चक्खाणीणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहि-यावा? गो०! सव्वथोवाजीवा मूलगुण पच्चक्खाणी, उत्तर गुण-पच्चक्खाणी असंखेज्ज गुणा, अपच्चक्खाणी अनंतगुणा॥ १॥ एएसिणं भंते! पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गो०! सव्वथोवाजीवा पंचिंदिय तिरिक्खजोणियामुल-गुणपच्चक्खाणी उत्तरगुण-पच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी असंखे-ज्जगुणा॥२॥एएसिणंभंते!मणुस्साणं मुलगुण-पच्चक्खाणीणं

पूछा?गो०!सवथोवा मूलगुण-पच्चक्काणी, उत्तरगुणपच्चक्का-णीसंखेज्ज-गुणा, अपच्चक्काणीअसंखेज्जगुणा ॥३॥ जीवाणं भंते! किं सव-मूलगुण-पच्चक्काणी देस-मूल-गुण-पच्चक्काणी अपच्चक्काणी ? गो० ! जीवा सवमूलगुण-पच्चक्काणीवि, देसमूलगुण-पच्चक्काणीवि, अपच्चक्काणीवि.॥४॥ णेरइयाणं पुच्छा ? गो० ! नेरइया नो सवमूलगुण-पच्चक्काणी, नो देस मूलगुण-पच्चक्काणी, अपच्चक्काणी, एवं जाव चउरिंदिया.॥५॥ पंचिंदियतिरिक्ख पुच्छा? गो०! पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया नो-सवमूलगुण-पच्चक्काणी, देसमूलगुण-पच्चक्काणीवि, अपच्च-क्काणीवि. मणूसा जहा जीवा. वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा नेरइया॥६॥एएसिणं भंते! जीवाणं सवमूलगुण-पच्च-क्काणीणं देसमूलगुण-पच्चक्काणीणं अपच्चक्काणीणय कय-रे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा? गो०! सवथोवाजीवा सव-मूलगुण-पच्चक्काणी, देसमूलगुण-पच्चक्काणी असंखेज्ज-गुणा, अपच्चक्काणी अणंत-गुणा, एवं अप्पाबहुगा, ति-णिवि जहापढमिल्लएदंडए; णवरं सवथोवा पंचिंदिय-तिरि-क्खजोणिया देस-मूलगुण-पच्चक्काणी, अपच्चक्काणी असंखेज्ज-गुणा.॥७॥जीवाणं भंते! किं सवउत्तरगुण-पच्चक्काणी, देसुत्तर गुण-पच्चक्काणी, अपच्चक्काणी? गो० ! जीवा सवउत्तरगुण-पच्चक्काणीतिणिवि. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया. मणुस्साए चेव. सेसा अपच्चक्काणी जाववेमाणिया॥८॥ एएसिणं भंते जीवाणं सवउत्तरगुण-पच्चक्काणीणं अप्पाबहुगा तिणिवि? जहा पढमे दंडए जाव मणुस्साणं. ॥९॥

अर्थ —प० प्र भ० हे भगवान ! जी० जीवने मू० मूलगुण-पच्चखाणीने उ० उत्तरगुण-पचखाणीने अ० अपचखाणीने क० कोण कोण थकी जा० जावत वि० घणा थोडा तुल्य विशेषाधिक होय? इति प्रश्न गो० हे गौतम ! स० देशथकी तथा सर्वथकी जे मूलगुण-पचखाणवंत छे ते थोडा छे, कारण के देशथकी तथा सर्वथकी उत्तरगुण-पचखाणवंत असंख्याता छे इहां सर्ववृत्तिने विषे जे उत्तरगुणवंत होय ते अवश्य मूलगुणवंत होय अने जे मूलगुणवंत होय ते उत्तरगुणवंत होय अथवा उत्तरगुणविना होय तेज इहां मूलगुणवंत अहवा ते उत्तरगुणथी थोडाज होय, घणा साधुने दसविध पचखाणना युक्तपणाथी ते पण मूल गुणथी असंख्यातगुणाज होय, कारण के सर्व जति असंख्याताज छे हवे देशवृत्तिने विषे मूलगुणवंतथी जिम पण उत्तरगुणवंत पामीए ते मधु मासादि विचीत्र अभिग्रहथी बहुत्तर (विशेष) होय एम देशवृत्ति उत्तरगुणवंत अधिक होय तेथी उत्तरगुणवंतने मूलगुणवंतथी असंख्या तपणु कह्यु मनुष्य अने पचेन्द्रि तिर्यंचनेज पचखाण होय, तेथी वनस्प तिना अनंतपणा माटे अपचखाणी अनंतगुणा कह्या छे ॥ १ ॥ प० प्र इनी भ० हे भगवान ! प० पचेंद्रि ति० तिर्यंच जो० योनिकनी पु० पुछा उतर गो० हे गौतम ! स० सर्वथी थो० थोडा जी० जीव प० पचेंद्रि तिर्यंचयोनिक मू०मूलगुण-पचखाणी, तेथी उ० उत्तरगुण पचखाणी अ० असंख्यातगुणा अने अ० अपचखाणी असंख्यातगुणा ॥२॥ प० प्र भ० हे भगवान ! म० मनुष्य मू० मूलगुणपचखाणी? इत्यादिक प्रश्न कीधा उत्तर गो० हे गौतम! स० सर्वथी थोडा मू० मूलगुणपचखाणी तेथी उ० उत्तरगुण-पचखाणी स० संख्यातगुणा तेथी अ०अपचखाणी अ० असं ख्यातगुणा, गर्भज मनुष्य संख्याताज छे ते माटे संमूर्छिम मनुष्यने ग्र हणे करी जाणवा ॥ ३ ॥ जी० जीव भ० हे भगवान ! किं शु ? स० सर्वमूलगुण-पचखाणी छे ? दे० देशमूलगुण-पचखाणी छे? के अ० अप चखाणी छे? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! जी० जीव स० सर्वमूल गुण-पचखाणी पण छे दे० देशमूलगुण-पचखाणी पण छे अने अ० अप

चखाणी पण छे. ॥ ४ ॥ णे० नारकीनो पु० प्रश्न पुछयो. उत्तर गो० हे गौतम! ने०नारकी नो०स० सर्वमूलगुण-पचखाणी नथी नो०दे० देशमूल-गुण-पचखाणी पण नथी, माटे अ० अपचखाणीज होय. ए० एम जा० यावत च० चौरेन्द्रि पर्यंत कहेवुं. ॥ ५ ॥ पं० पंचेन्द्रि ति० तिर्यंचनो पु० प्रश्न पुछयो. उतर गो० हे गौतम ! पं० पंचेन्द्रि ति० तिर्यंचयोनिकजीव नो०स० सर्वमूलगुण-पचखाणी नथी दे० देशवृत्ति होय ते माटे देशमू-लगुण-पचखाणी होय अने अ० अपचखाणी पण होय. म० मनुष्यने ज० जेम समुचय जीव कह्या तेम कहेवा. वा० वाणव्यंतर जो०जोतिषि अने वे० वैमानिकने ज० जेम ने० नारकीने कह्या तेम अपचखाणी कहेवा. ॥ ६ ॥ ए० ए भं० हे भगवान ! जी० जीवने स० सर्वमूलगुण-पचखा-णीने दे० देशमूलगुण-पचखाणीने अने अ० अपचखाणीने क० कोण कोणथी थोडा जा० यावत वि०विशेषाधिक होय? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! स० सर्वथी थोडा जीव स० सर्वमूलगुण-पचखाणी, दे० देश-मूलगुण-पचखाणी अ० असंख्यातगुणा अने अ० अपचखाणी अ० अ-नंतगुणा. ए० एम अ० अल्पाबहुत्व ज० जेम प० पेहेलाज दं० दंडकने विषे कह्या (त्यां पेहेलो जीवनो, तेमज बीजो पंचेन्द्रि-तिर्यंचनो अने त्रीजो मनुष्यनो, ए त्रणे जेम निर्विशेष मूलगुणादि प्रत्येक दंडकने विषे कह्या) तेम इहां पण त्रणेने कहेवा. वळी विशेष कहे छे ण० एटलुं वि-शेष स०सर्वथी थोडा पं०पंचेन्द्रि-तिर्यंचयोनिक दे०देशमूलगुण-पचखाणी छे (सर्वमूलगुण-पचखाणी तिर्यंच न होय ते माटे) तेथी अ० अपचखाणी अ० असंख्यातगुणा कह्या.॥७॥ जी०जीव भं०हे भगवान! किं शुं? स०सर्व उत्तरगुण-पचखाणी होय दे० देशउत्तरगुण-पचखाणी होय के अ० अप-चखाणी होय ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! जी० जीव स०सर्वउ-त्तरगुण-पचखाणी पण होय, ति० एम त्रणे होय. पं० पंचेन्द्रि-तिर्यंच अने म० मनुष्यने पण एमज कहेवा. से० शेष नारकी आदिक सघळा अ० अपचखाणी कहेवा. जा० यावत वे० वैमानिक पर्यंत कहेवा. ॥ ८ ॥ ए० एहने भं० हे भगवान ! जी० जीवने स० सर्वउत्तरगुण-पचखाणीने

अ० अस्पाबहुत्व ति० त्रणेने एम कहेवा ? ज० जेम प० पहेला व० दंडकने विषे कह्या तेम इहां पण जा० यावत म० मनुष्य पर्यंत कहेवा इत्यादि० ॥ ९ ॥

भावार्थ —मूलगुण-पचखाणना बे भेद, सर्वमूलगुण-पचखाण अने देशमूलगुण-पचखाण सर्वमूलगुणमां पांच माहाव्रत, अने देशमूलगुणमा श्रावकना पाच अणुव्रत उत्तरगुणना बे भेद, सर्वउत्तरगुण-पचखाण अने देशउत्तरगुण-पचखाण सर्वउत्तरगुणमां दश विधि पचखाण, अने देशउत्तरगुणमां श्रावकना उपरना सात व्रत इये उपरली सूत्रशाखाथी जाणवु के सूत्र अने चारित्र, ए बे बोल विना बीजा कोइपण बोलमा श्री वीतरागदेवनी आज्ञा नथी, तेमज ए बे बोल विना बीजा कोइपण बोलने मोक्षनो मार्ग (धर्म) श्री वीतरागदेवे कह्यो नथी त्यारे तेरापंथी कहे छे के, साधुने आहार करवानी, उपगर्ण राखवानी अने निंद्रा लेवानी इत्यादिक बोलनी भगवंते आज्ञा दीधी छे, तमे सूत्र अने चारित्र ए बे बोल शिवाय बीजा कोइपण बोलमा भगवंतनी आज्ञा नथी एम केम कहोछो ? तेनो उत्तर —हे देवानुप्रीय ! साधुजीने आहार करवानी, उपगर्ण राखवानी, निंद्रा लेवानी, इत्यादिक बोलनी अपवाद मार्गमां आज्ञा छे, पण उत्सर्ग (मोक्ष) मार्गमा छोडवानी आज्ञा छे साधुए छ कारणथी आहार करवो अने छ कारणथी छोडवो कह्यु छे शास्त्र सूत्र ठाणायाग तथा उत्तराध्ययन अध्ययन २६ मे गाथा ३२ थी ३५

तइयाए पोरसिए, भत्त पाण गवेसए,
छन्ह मणाय रागंमि, कारणमि समुठिए ॥ ३२ ॥

अर्थ —हवे त्रीजी पोरसिने विषे भात-पाणी गवेषे, तेनी विधि कहेछे त० त्रीजी पो० पोरसिने विषे भ० भात पा० पाणी ग० गवेषे (ले) छ० छ कारणमांहे म० अनेरुं कोइक का० कारण स० उपन्यायी ॥३२॥

वेयण वेयावच्चे. इरियाठाएय संजमठाए;
तहा पाणवत्तियाए, छठं पुण धम्म चिंताए. ॥ ३३ ॥

अर्थः—हवे आहार-पाणी गवेषणानां छ कारण कहेछेः-वे० क्षुधा-तृषाथी उपनी वेदना उपशमाववाने अर्थे १, वे० बाल-ग्लाननी वैयावच करवाने अर्थे २, इ० इरिया सोधवाने अर्थे ३, सं० सत्तर भेदे संजम पाळवाने अर्थे ४, त० तेमज पा० जीवितव्यने निमित्ते (अविधिए आत्माना प्राण मुकावीए तो आत्मघातनो दोष लागे ते माटे) ५, छ० छहुं पु० वळी ध० धर्मध्याननी चिंतवणाने अर्थे ६, भात-पाणी गवेषे. ॥ ३३ ॥

निग्गंथो धिइमंतो, निग्गंथोवि नकरेज्ज छहिंचेव:
ठाणेहिंतु इमेहिं, अणइक्कमणाय से होइ. ॥ ३४ ॥

अर्थः—हवे छ कारणे साधु तथा साधवी आहार-पाणी न गवेषे ते कहेछेः-नि० साधु धि० धीर्यवंत अने नि० साधवी पण न० भात-पाणीनी गवेषणा छ स्थानके न करे, ठा० ए छ स्थानक इ० आगळ कहेशे तेने अर्थे अ० संजमजोग उलंघे नहिं से० ते निर्ग्रंथ निर्ग्रंथी संजमवंत होय. ॥ ३४ ॥

आयंके उवसग्गो, तितिख्कया बंभचेर गुत्तीसु;
पाणीदया तवहेऊ, सरीर वोछ्छायणठाए. ॥ ३५ ॥

अर्थः—हवे भात-पाणी अणगवेषणानां (न लेवानां) छ स्थानक कहेछेः-आ०असाध्य रोगादि उपन्याथी १,उ०मर्णांतक उपसर्ग उपन्याथी २, ति० तीक्ष्ण बं० ब्रह्मचर्यनी गुप्ती पाळवाने अर्थे ३, पा० कुंथवादिक प्राणीनी द० दयाने अर्थ ४, त० तप करवाने अर्थे ५, अने स० शरीरनी वो० संलेखणा तथा अणसणने अर्थे ६, भात-पाणी गवेषे नही. ॥३५॥

भावार्थः—ए छ कारणथी आहार करवो ते तो अपवाद मार्गमां छे अने उत्सर्ग मार्गमांतो छोरुवो एवी श्री वीतरागदेवनी आज्ञा छे. हवे

अ० अल्पाबहुत्व ति० त्रणेने एम कहेवा ? ज० जेम प० पदेला व० वंड-कने विषे कह्या तेम इहां पण जा० यावत म० मनुष्य पर्यंत कहेवा इत्यादि० ॥ ए ॥

भावार्थ —मूलगुण-पचखाणना बे भेद, सर्वमूलगुण-पचखाण अने देशमूलगुण-पचखाण सर्वमूलगुणमां पांच माहाव्रत, अने देशमूलगुणमा श्रावकना पाच अणुव्रत उत्तरगुणना बे भेद, सर्वउत्तरगुण-पचखाण अने देशउत्तरगुण पचखाण सर्वउत्तरगुणमा दश विधि पचखाण, अने देशउत्तरगुणमा श्रावकना उपरना सात व्रत हवे उपरनी सूत्रशाखाथी जाणवु के सूत्र अने चारित्र, ए बे बोल विना बीजा कोइपण बोलमा श्री वीतरागदेवनी आज्ञा नथी, तेमज ए बे बोल विना बीजा कोइपण बोलने मोक्षनो मार्ग (धर्म) श्री वीतरागदेवे कह्यो नथी त्यारे तेरापथी कहे छे के, साधुने आहार करवानी, उपगर्ण राखवानी अने निंद्रा लेवानी इत्यादिक बोलनी भगवते आज्ञा दीधी छे, तमे सूत्र अने चारित्र ए बे बोल शिवाय बीजा कोइपण बोलमा भगवंतनी आज्ञा नथी एम केम कहोछो ? तेनो उत्तर —हे देवानुप्रीय ! साधुजीने आहार करवानी, उपगर्ण राखवानी, निंद्रा लेवानी, इत्यादिक बोलनी अपवाद मार्गमा आज्ञा छे, पण उत्सर्ग (मोक्ष) मार्गमा छोडवानी आज्ञा छे साधुए छ कारणथी आहार करवो अने छ कारणथी छोडवो कह्यु छे शाख सूत्र ठाणायाग तथा उत्तराध्ययन अध्ययन २६ मे गाथा ३२ थी ३५

> तइयाए पोरसिए, भत्त पाण गवेसए,
> छन्ह मणय रागंमि, कारणमि समुठिए ॥ ३२ ॥

अर्थ —हवे त्रीजी पोरसिने विषे भात-पाणी गवेषे, तेनी विधि कहेछे -त० त्रीजी पो० पोरसिने विषे भ०भात पा०पाणी ग० गवेषे (ले) छ० छ कारणमाहे म० अनेरु कोइक का० कारण स० उपन्याथी ॥३२॥

जीवाणं भंते! असंजए अविरिए अप्पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे इत्तोचुए पेच्चा देवेसिया? गोयमा! अत्थेगइया देवेसिया, अत्थेगइया णो देवेसिया. से केण ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइया देवेसिया अत्थेगइया णो देवेसिया? गोयमा! सेजेइमे जीवा गामागर णगर णिगम रायहाणि खेड कब्बड दोणमुह पट्टणासम संवाह सन्निवेसेसु अकाम तण्हाए अकाम छुहाए अकाम बंभचेर वासेणं अकाम अण्हाणय सीयाय व दंस मसक सेय जल्ल मल्ल पंक परितावेणं अप्पतरोवा भूजतरोवा कालं अप्पाण परिकिलेसंति २ त्ता कालंमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गइ तहिंतेसिं ठिइ तहिंतेसिं उववाए पन्नत्ते. तेसिणं भंते देवाणं केवइयं कालं ठिइ पन्नत्ता? गो०! दस वाससहस्साइं ठिइ पन्नत्ता. अत्थिणं? भंते! तेसिं देवाणं इड्ढिवा जुइतिवा जसेतिवा बलेतिवा विरिएतिवा पुरुषाकार परक्कमेतिवा? हंता अत्थि. तेणं भंते! देवा परलोगस्साराहगा? णो इणठ्ठे समठ्ठे.

अर्थः—जी० जीव (चेतना लक्षणवंत) भं० हे भगवान! असं० असंजमवंत अथवा अवि० व्रतरहित अप्प० सम्यक्त प्राप्त करीने नथी हण्यां तथा अनागतकाल संबंधी नथी पचख्यां जेणे पा० पाप कर्म, एवा जीव इ० इहां (मनुष्य) थकी चवीने पे० परभवांतरने विषे दे० देवता थाय? इति प्रश्न उत्तर. गो० हे गौतम! अ० केटलाएक दे० देवता थाय अ० केटलाएक णो० दे० देवता न थाय. से० ते के० शा ठे० कारणे भं० हे भगवान! ए० एम वु० कह्युं के अ० केटलाएक दे० देवता थाय अ० केटलाएक णो० दे० देवता न थाय? इति प्रश्न, उत्तर गो० हे

वीतरागदेवनी आज्ञामा एकान्त धर्म छे, एकान्त मुक्तिनो हेतु छे, तेमां बीजो पक्ष कांइ नथी, अने आज्ञा बहार मुक्तिनो मार्ग नथी अने आ ज्ञानी आराधनारुप धर्म नथी, त्यारे मिथ्यात्वीनी करणी श्री जिनाज्ञामा केवीरीते कहेवाय ! अर्थात् नज कहेवाय हवे प्रभुनी आज्ञा बाहार अशुभ करणीथी तो पाप बधाय, पण शुभ करणी करे तेथी पुण्य फल उपजे, एवु सूत्र मध्ये घणे ठामे कह्यु छे छता तेरापंथी कहेछे के, आज्ञा बाहार एकान्त पाप छे, ए तेमनु कहेवु हस्तिदंतवत् छे कारण के प्रथम तो तेमनाज बनावेला तेर द्वारमा कह्यु छे के, पुन्यपाप अजीव छे, आज्ञा मांहे नथी तेम आज्ञा बाहार पण नथी एवी तो मनमा सर्दहणा छे, अने लोकोने भरमाववाने कपट-जुठ लगावीने कहेछे के, आज्ञामांहे तो धर्म-पुन्य निपजे छे, पण आज्ञावाहार एकान्त पाप छे, एवु कपटथी बोले छे माटे हो ते वीचारी जोजो

वळी तेरापंथीओ एम कहेछे के, मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामांहेछे मोक्षनो मार्ग छे, अने मिथ्यात्वी करणी करे ते आश्री देशथकी श्री वीतरागनी आज्ञाना आराधक थाय १, एम सूत्र विरुद्ध प्ररुपे छे वळी एम कहे छे के, पुन्य बधाय ते आज्ञामाहेली करणीथी बधाय छे, अने आज्ञावाहार एकान्त पाप छे २, ए पण सूत्र विरुद्ध कहेछे ए बन्ने प्रश्नना नेला उत्तर कहीये छीए

हवे जुओ ! सूत्रमा मिथ्यात्वीनी (अन्यतिर्थीनी) करणी आज्ञा बाहार कही छे, अने ए आज्ञा बाहारनी करणीथी पुन्य बधाय छे, ते कहेछे -गोशालो, जमाली अने अन्यतिर्थी ए त्रण, तथा उववाइ सूत्रमां अनेक भेदना अन्यतिर्थी कह्या छे ते, तथा विनामन-भूख, तृषा, शीत अने तापना खमवावाळा, तथा राजादिक, खूनीने अनेक विधिना-छेदन भेदन, चाबखी तर्जन्यादिक मार दे, ते जीव कष्टथी पुन्य बांधे तेथी देवतामां जाय, अने तेने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या छे तेनी शाख सूत्र उववाइजीमा, ते पाठ लखीए छीए

जीवाणं भंते! असंजए अविरिए अप्पडिहय पच्चरकाय पावकम्मे इत्तोचुए पेच्चा देवेसिया? गोयमा! अत्थेगइया देवेसिया, अत्थेगइया णो देवेसिया. से केण ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइया देवेसिया अत्थेगइया णो देवेसिया? गोयमा! सेजेइमे जीवा गामागर णगर णिगम रायहाणि खेड कब्बड दोणमुह पट्टणासम संवाह सन्निवेसेसु अकाम तण्हाए अकाम छुहाए अकाम बंभचेर वासेणं अकाम अण्हाणय सीयाय व दंस मसक सेय जल्ल मल्ल पंक परितावेणं अप्पतरोवा भूजतरोवा कालं अप्पाण परिकिलेसंति २ त्ता कालंमासे कालं किच्चा अणयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गइ तहिंतेसिं ठिइ तहिंतेसिं उववाए पन्नत्ते. तेसिणं भंते देवाणं केवइयं कालं ठिइ पन्नत्ता? गो०! दस वाससहस्साइं ठिइ पन्नत्ता. अत्थिणं? भंते! तेसिं देवाणं इड्डिवा जुइतिवा जसेतिवा बलेतिवा विरिएतिवा पुरुषाकार परक्कमेतिवा? हंता अत्थि. तेणं भंते! देवा परलोगस्साराहणा? णो इणाठे समठे.

अर्थः—जी० जीव (चेतना लक्षणवंत) भं० हे भगवान! असं० असंजमवंत अथवा अवि० वृतरहित अप्प० सम्यक्त्व प्राप्त करीने नथी हण्यां तथा अनागतकाल संबंधी नथी पच्चख्यां जेणे पा० पाप कर्म, एवा जीव इ० इहां (मनुष्य) थकी चवीने पे० परभवांतरने विषे दे० देवता थाय? इति प्रश्न उत्तर. गो० हे गौतम! अ० केटलाएक दे० देवता थाय अ० केटलाएक णो०दे० देवता न थाय. से० ते के० शा ठे० कारणे भं० हे भगवान! ए० एम वु० कह्युं के अ० केटलाएक दे० देवता थाय अ० केटलाएक णो०दे० देवता न थाय? इति प्रश्न, उत्तर गो० हे

गौतम ! से०ते जे० जे प्रत्यक्ष (देखीता) जी० जीव (तिर्यंच अने मनुष्यरुप), गा० वाके वींटयु ते गाम अ० खवण अथवा सुवर्णादिकना अगर ण० ज्या गवादिकनो कर नहीं ते नगर णि० ज्या वाणीयानो वास ते णीगम रा० राजालोकना वास ते राजधानी खे० धुळनो गढ ते खेरू क० खकेरनगर म० ज्या ढुकडो सन्नीवेस होय ते दो० ज्यां जल वट अने थलवट ए बे पथ होय ते बदर प० पाटण (रत्नजूमिं) आ० तापसना आश्रम स०पर्वत उपर वास स०ञरथाकादि वसे ते, इत्यादिक वासने विषे अ० निर्जरानी अजिलाषा विना त० तृषा तथा अ०निर्जरानी अजिलाषा विना ढु० जूख खमे अ० निर्जरानी अजिलाषा विना (विनामन) ब० ब्रह्मचर्य वा० पाळे अ० विनामन, स्नान न करे सी० ताढ तथा ताप खमे अने द०धसा म० मसादिकनो रूख सहे से० परशेवो ज० रजमात्र मेल म० कठण मेल अने प० कादव इत्यादिकना प० परितापे करी अ० थोडा काळ तथा जू० घणा काळ सुधी अ० पोतानी आत्माने प० क्लेश डुःख पमाडे, पमाडीने का० काळने अवसरे का० काळ करीने अ० अनेरी वा० वाणव्यतरनी जातीना दे० देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ०ज० उपजे, त० त्या से० तेनी ग० गति त० त्या तेनी ठि० आउखानी स्थिति अने त० त्या तेनु उ० उपजवु प० कह्यु छे ते०ज०दे० हे जगवान ! ते देवतानी के० केटला काळनी ठि० स्थिति प० कही ? गो० हे गौतम ! द० दस वा० हजार वर्षनी ठि० स्थिति प० कही अ० छे? ज० हे पुज्य ! से० ते दे० देवताने इ० रुद्धि परिवारनी संपदा जु० शरीरना आजर्णनी जोति ज० लोक मध्ये जश कीर्ति ब० शरीरनु बळ वि० जीवथी उपन्यु जे वीर्य (शक्ति) पु० पुरुष संबंधि अजिमान अने प० पराक्रम फोरववानी शक्ति छे ? ह० हा गौतम, ते देवताने एटलां वाना छे ते०ज०दे० हे पुज्य! ते देवता प० परलोकने विषे मोक्ष पामवारुप पुज्यनी आज्ञाना आराधक होय ? गो० नही इ० ए अर्थ स०समर्थ ते समकितनो आराधक नथी माटे व्यन्तर थयो अनंता जव करे तोपण समकित विना आराधक नही.

सेजेइमे, गामागर, णगर, णिगम, रायहाणी, खेड, कब्बड, मंडव, दोणमुह, पट्टणास्सम, संबाह, सन्निवेसेसु, मणुआ भवन्ति तंजहाः-अंडुबंधगा, णियबंधगा, हडिबंधगा, चारकबंधगा, हत्थ छिन्नगा, पायछिन्नगा, कणछिन्नगा, णक्कछिन्नगा, उठछिन्नगा, जिब्भछिन्नगा, सीसछिन्नगा, मुखछिणगा, मफछिन्नगा, वईकछछिन्नगा, हियउप्पाडियगा, दसणुप्पाडियगा, वसणुप्पाडियगा, गेवछिन्नगा, तंडुलछिन्नगा कागणिमंसखावियगा, उलंबियया, लंबियया, घसंत्तगा, घोलंतघा, पफोडियया, पीलियया, सूलाइयया, सूलभिणगा, खारवत्तिया, वज्झवत्तिया, सीहपुछितया, दवग्गिदवढगा, पंकोसन्नगा, पंकेखुत्तगा, वलयमत्तगा, वसट्टमत्तगा, णिदाणमत्तगा, अंतसल्लमत्तगा, गिरिपडियगा, तरुपडियगा, मरुपडियगा, गिरिपखंदोलया, तरुपखंदोलया, मरुपखंदोलया, जलपवेसिका, जलणपवेसिका, विसभखितगा, सत्थोवाडित्तगा, वेहाणसिया, गिद्धपिठिगा, कंतारमत्तगा, दुभिखमत्तगा, असंकिलिठ परिणामाते कालमासे कालंकिच्चा अणयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारोभवइ. तहिंतोसिंठिई तहिंतोसिंगई तहिंतोसिं उववाए पन्नत्ते. तेसिणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिइ प०? गो० ! बारसवाससहस्साइंठिई पन्नत्ता. अत्थिणं? भंते ! तेसिंदेवाणं इढित्तिवा जुईवा जसेत्तिवा बलेत्तिवा वीरिएत्तिवा पुरिसक्कार परक्कमेत्तिवा ? हंता अत्थि. तेणं भंते ! देवा परलोगस्साराहगा ? णो तिणठे समठे ॥

अर्थ.—से० ते जे ए गा० गाम, अगर ण० नगर णि० नीगम रा० राजधानी खे० खेरु क० खंकेरनगर म० मरुप दो० बंदर प० पाटण आ० तापसोनां गाम स० पर्वतऊपर वास अने स० चरवारु प्रमुखना गामनेविषे म० मनुष्य ज० एवा होय त० ते कहेछे कोइएक अन्याय कीधाथी एटलां दुःख पामे ते कहेछे—अ० काष्टमा हाथ-पग बांध्या णि० लोढानी बेरीमां घाल्यो ह० हेरु गळामां घाली, चा० केदखानामां घाल्यो ह० हाथ छि० छेद्या पा० पग छेद्या क० कान छेद्या ण० नाक छेद्युं उ० होठ छेद्या जि० जीभ छेदी सी० मस्तक छेद्युं हि० हैयु ऊपाडी काळजानुं मांस काढ्युं द० दांत पाड्या व० वृषण (अरुकोष) उपाडी काढ्या गे० कोट छेदी त० पोखाना दाणा जेवडा कटका कर्या का० कोडी जेवडा कटका करी तेनु मस तेने खवराव्युं, उ० खाडमा उतारे खं० वृक्षनी शाखाए बांधे घ० पाषाण (पत्थर) ऊपर घसे, घो० पेटा दिकने घोळे प० कुहाडाथी फाडे पी० शेलडीनी पेठे पीले सू० शूळीए घाले सू० त्रिशूळादिके भेदे खा० अस्त्राथी छेदी लोही काढे, शरीरे खार छांटे व० आल्लु चामडु माथे बांधे सी० सींग छेदे तथा शिश्नना पुंछडे बांधे दा० दावानळनी अग्निथी दझावे प० कादवमां खोशी घाले, व० भूख मरतां मरे व० इन्द्रियो वश पीडायापका मरे णि० राजादिकना नियाणां करी मरे अ० हैयामा कषायादिकथी मिथ्यात्व शल्य राखी मरे गि० पर्वतथी पडीने मरे त० वृक्ष ऊपरथी पडीने मरे म० धूळना ढगला ऊपरथी पडीने मरे गि० पर्वतना पत्थरथी चपाइने मरे त० वृक्षनी काळी हींचोळीने ससरतु मुकीने मरे म० पत्थर हींचोळी पडीने मरे ज० पाणीमां डुबीने मरे ज० अग्निमां पेसीने मरे वि० विष खाइने मरे स० शस्त्रथकी मरे वे० गळे फासो लेइ मरे गि० पक्षी पासे चुंटावी मरे क० अटवी (जगल) मा जइ मरे दु० दुकाळे भूखे मरे अ० आर्त-रूद्रध्यान प्रणाममा अशकलीपृ प्रणामथी मरे, स० ए पूर्वोक्त जीव का० काळने अवसरे का० काळ करीने अ० अनेरी वा० वाणव्यंतर जातीना दे० देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे, त० त्यां तेनी

ठि० स्थिति त० त्यां तेनी ग० गति अने त० त्यां तेनुं उ० उपजवुं प० कह्युं छे. ते० नं० दे० हे जगवान! ते देवतानी के० केटला का० काळनी ठि० स्थिति प० कही? गो० हे गौतम! बा० बार हजार वर्षनी स्थिति प० कही. अ० छे? नं० हे जगवान! ते०ते देवने इ० रिद्धि परिवारनी संपदा जु० शरीराजरणनी कान्ती ज० लोकमांहे जश महिमा ब० शरीरनुं बळ वी० वीर्य पु० पुरुषाकार अने प० पराक्रम छे? हं० हा गोमत अ० छे. ते० नं दे० हे पुज्य! ते देवता प० परलोकने विषे आ० आराधक होय? णो० नही ए अर्थ समर्थ (परलोकना आराधक न होय).

जावार्थः—हवे जुठ! ए विनामन जूख-तृषा अने ताढ-ताप खमे, राजादिक अनेक प्रकारनां दुःख दे, ते परवशपणे सहे अने विनामन बाल-मर्णी करे, ते जीव देवतामां जाता कह्या, अने तेमने जीनाज्ञाना परलोकना (मोक्षना) अणआराधक कह्या. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा-बाहार छे अने आज्ञा-बाहार पुन्य निपजेछे.हवे ए बोलोनी, छेदन-जेदनी अने बाल-मर्णनी साधु-मुनीराज आज्ञा पण देता नथी. ए करणी जीनाज्ञामां के केम? त्यारे तेरापंथी कहेछे के, ए कामतो आज्ञामांहेलां नथी अने ए कामथी पुन्य बंधातु नथी, पण अंत समये शुज प्रणाम आवे ते आज्ञामांहेला छे तेथी पुन्य बंधाय छे. एम एकान्त जुठ कहेछे, पण अहियां तो मर्णने अंते आर्तध्यानने वशे काळकरी कष्टथी वाणव्यंतर-देवामां जाय एम कह्युंछे. माह्या हो ते विचारी जोजो. वळी आ आगला नववाइ-सूत्रना पाठमां कह्युंछे के, मातापीताना वचनना पालणहार सुवनित, पुन्य बंधाय तेथी देवतामां जाय एम कह्युं अने तेमने जीनाज्ञाना अणआराधक कह्या. ते पाठः—

मणुया जवंति तंजहाः-पगइ जद्दका पगइ विणया पगइ उवसंता पगइ उप्पएणु कोह माण माया लोजा मिउ मद्दव संपन्ना अलोणा विणीया अम्मा पिउ सुस्सूसका अम्मा-

-प्रियाण अणइक्कमणिज्ज वयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अ-
प्पपरिग्गहा अप्पेणं आरम्भेण अप्पेणं समारम्भेणं अप्पेणं
आरम्भसमारम्भेणं वित्तिंकप्पेमाणा विहरमाणाबहूइवासा-
य आउय पालिंति पालित्ता कालमासे कालकिच्चा अणय-
रेसु वाणमतरेसुदेवलोएसुदेवत्ताए उववत्तारो भवंति तेहिं-
तेसिंगइ तेहिंतेसिंठिइ तेहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते तेसिण
भते देवाण केवइयं कालं ठिइ पण्णत्ता ? गोयमा ! चउद-
स्सवास सहस्साइ ॥

अर्थ —पूर्वोक्त पाठमा कह्युं के, गाम जावत सन्निवेसने विषे म० मनुष्य भ० होय ते केवा होय तं० ते कहेछे' प० स्वभावे भ० भद्रिक, प० प्रकृतिना वि० वनित, प० स्वभावे उ० उपशमाव्या छे तथा प० स्वभावे ७० पातळा पाड्या छे को० क्रोध मा० मान मा० माया अने लो० लोभ, मि० सुकुमालपणुं अने म० निर अहंकारपणु सं० पाम्या छे अ० अगोपांग वश राखे छे वि० ते वनित अ० माता पीतानी सु० भली स्सू० शेवा भक्तिना करणहार तथा अ० माता-पी ताना अण० वचनने अतिक्रमे नहि एवा वनित छे ते अप्पि० लावा पीवानी थोडी इछावंत अप्पा० थोडाज आरंभी अप्प० अल्प परिग्रह वंत अ०आ० जीव घात्यारुप थोडाज आरम्भेकरी तथा अ०स० जी वने परितापना पमाडवारुप थोडाज समारंभेकरी तथा अ० थोडाज आ० आरंभ-समारंभेकरी वि० आजीविका करताथका वि० विचरता-थका ब० घणा वा० वर्षो सुधी आ० आउखुं पा० पाळे पा० पाळीने का० काळने अवसरे का० काळ करीने अ० अनेरा वा० वाणव्यतर देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे ते० त्या तेनी गति ते० त्यां तेनी स्थिति अने ते० त्यां तेनु उ० उपजवुं प० कह्युं ते०भं०दे० ते दे वतानी, हे भगवान ! के० केटला का० काळनी ठि० स्थिति प० कही ?

प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! च० चौद हजार वर्षनी स्थिति कही. पण ए समकितविना श्री जिनआज्ञाना आराधक नही.

हवे विनामन शील पाळे, ते पण जिन-आज्ञा बहार छे, तोपण ते देवतापणे उपजे छे. ते विषे सूत्र उववाइजीनो पाठ लखीए छीएः—

इत्थियाउ भवंति तंजहाः-अंतोअंतेउरीयाउ गयंपतियाउ मयंपतियाउ बालविहवाउं छड्डितल्लियाउ माइरक्खियाउं पियरारक्खियाउं भायरक्खियाउ पतिरक्खियाउ कुलघररक्खियाउ सुसरकुलरक्खियाउ परूढणह मंसकेस करकरोमाउ ववगय पुप्फगंध-मल्लालंकाराउं अण्हाणग सेयजल मल पंक परितावियाउ ववगय खिर दहि णवणीय सप्पि तेल गुल लोण महु मद्य मंस परिचतकय हाराउ अपिछाउ अप्पारंभाउ अप्पपरिग्गाहाउ अप्पेणंआरंभेणं अप्पेणंसमारंभेणं अप्पेणंआरंभसमारंभेणं वित्तिंकप्पेमाणिउ अकामबंभचेर वासेणं तामेव पति सेज्जं णाइक्कमंति, ताउणं इत्थियाउ एयारुवेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहूइं वासाइं सेसं तंचेव जाव चउसठिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ ८ ॥

अर्थः—पूर्वोक्त ग्रामादि यावत् सनीवेशने विषे इ० स्त्रीउ भ० होय ते केवी होय तं० ते कहेछेः-अं० अंतःपुरने विषे रहेछे ग० जेनो धणी प्रदेश गयो छे म० जेनो धणी मरण पाम्यो छे बा० जे बालपणथी वि० रंडापो पामी छे छ० जेने धणीए दुर करीने छोडी दीधी छे मा० जेने मातानो भय छे तथा माताए पांखमां राखी छे पि० पीतानो भय छे तथा पीताए पांखमां राखी छे भा० भाइए पण पांखमां राखी छे प० जेनु भरथार रखवाळुं करे छे कु० बधा पीताना घरवाळा सारी रीते रखवाळुं करे छे सु० सासराना घरवाळां रखवाळुं करे छे तेथी ते

अकार्य करी शकती नथी, प० जेणे हाथपगना नख, दाढीना रोमराय (स्त्रीने न होय पण कोइ स्त्रीने अल्प होय ते माटे) माथाना केश तथा बाहुनी रोमराय मोटा वधार्या छे (समरावती नथी), व० जेणे छोड्यां छे पु० सेवत्री जाइ जुइ मोगरादिक फुल गंध आमादय अने म० फुलनी माळा अलंकार आभरणादि, तेमज अ० जेणे स्नान पण छोड्युं छे तथा स०' परसेवो ज० रजमात्र म० काढो मेल प० ढीलो मेल परसेवाथी भींजाय एवी रीते प० परितापथी जेणे शरीरने क्लेश पमाड्यो छे, तथा घ० जेणे छाड्या छे खि० खीर दुध द० दही ण० माखण स० घृत, तेल, गोळ, खांड, साकरादिक लुंण म० मध म० चन्द्रहास्यादिक मद्य, तथा मं० जलचर थलचर अने खेचर संबंधीना मांसनो जेणे प० परिहार कर्यो छ, अ० जेने थोडी इच्छा छे अ० कर्षणादिकनो थोडो आरंभ छे अ० धनादिकनो थोडो परिग्रह छे अ० जीव घात्यादिकनो थोडो आरम्भ छे अ० जीवने परिताप उपजाववारुप थोडो समारम्भ छे तेवा अ० थोडा आरम्भ-समारम्भे करी वि० वृत्ती आजीविका करतीथकी अ० विनामन ब्रह्मचर्यने विषे वसतीथकी ते जे पतिनी पोढवानी 'सिज्या छे ते छाम णा० अतिक्रमती (उल्लघती) नथी ता० एवी स्त्री जात ए० एवा प्रकारना वि० विहारे करी वि० विचरतीथकी व० घणा वा० वर्ष सुधी, शेष बोल पूर्वनी पेरे जाणवा, जा० यावत् च० चोसठ हजार वर्ष संवत्सरनी ठि० आउखानी स्थिति प० श्री तीर्थंकरदेवे कही ॥ ७ ॥

वळी अन्यमति, तापस, गृहस्थी, विनयवादी अने अक्रियावादी श्री वीतरागदेवनी आज्ञाबाहार चाले छे, तोपण तेओ देवतापणे उपजे छे ते पाठ लखीए छीएः—

सेजेइमे गामागर णगर जाव सण्णिवेसेसु मणुच्चा भवंति, तंजहाः-दगवत्तिया दगतइया दगसत्तमा दगएकारसगा गोयमा गोवइया गिहि-धमा धम्म-चिंतका अविरुद्ध वि-रुद्ध वुढ-सावगप्पभितयो तेर्सि मणुयाणं णो कप्पंति

इमाउं णवरस विगइउं आहारेत्तए तंजहाः-खीरं दहिं णव-णियं सप्पिं तेलं फाणियं महु मज्जं मंसं, णणत्थ सरिस विगइए. तेणं मणुआ अप्पिच्छा तंचेव सव्वं, णवरं चउरा-सीति वास सहस्साई ठिई पण्णत्ता ॥ ए ॥

अर्थः—से० ए प्रत्यक्ष देखीता संसारी जीव गा० गाम अ० अग्गर ण० नगरादिक जा० यावत् स० नरवाह वसे ते वासने विषे म० मनुष्य ज० होय, ते केवा होय तं० ते कहेछेः-द०ब० केटलाक धान्यनो द्रव्य अने बीजुं पाणी, ते शिवाय बीजुं कांइ न ले, द०त० केटलाक बे द्रव्य अने त्रीजु पाणी ले,द०स०केटलाक ठ द्रव्य अने सातमुं पाणी ले,द०ए० केटलाक दस द्रव्य अने अग्यारमुं पाणी ले, गो० केटलाक गौतममति पोठीयाने माने गोव० केटलाक गायनी पेठे वृत्ति राखे (गायनी परे विश्रामथकी नीकळीने नीकळे, चरतां चरे, पाणीपीतां पीए, सुतां सुए, इत्यादिक गायनी परे वर्ते) गि० केटलाक ग्रहस्थपणुं रुडुं करी माने, ध० धर्मशास्त्रना चिंतवणहार, अ० विनयवादी, वि० अक्रियावादी (सर्व दर्शनथकी विरुद्ध) अने वु० वृद्ध श्रावक आदि पूर्व कह्या ते० ते म० मनुष्योने णो० न कल्पे इ० ते आगळ कहेशेः-ण० नव रसरुप विगयनो (शरिरमां विकृति-विकार करे तेनो) आ० आहार करवो,तं० ते कहेछे खी० खीर दुध द० दही ण० माखण स० घृत ते० तेल फा० गोळ म० मध म० चंद्रहास्यादि दारु अने मं० त्रण प्रकारनुं मांस न कल्पे, ण० पण एटलुं विशेष स० एक सरसवनी विगय कल्पे. ते० एवा म० मनुष्य अ० अल्प इच्छा, तेमज स० सर्व बीजुं जाणवुं, ण० पण एटलुं विशेष च० तेमनी चोराशी हजार वर्षनी आउखानी स्थिति प० कही; अने पूर्वोक्तपरे जिनाज्ञाना (परलोकना) अणआराधक कह्या.

वळी श्री वीतरागनी आज्ञाबाहार अन्यमति, तापस, अग्निहोत्री आदि घणा कष्टना करणहारा देवतापणे उपजता कह्या छे, ते श्री उव-वाइजीनो पाठ लखीए छीएः—

सेजेइमे गंगाकूलगा वणपत्था तावसा भवति तंजहा-होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जणाइ सड्ढई थालई हुंपउठा दंतुक्खलिया उमज्जका समज्जका निमज्जका संपक्खाला दक्खिणकूलका उत्तरकूलका सखधमका कूलधमका मिगलुद्धका हत्थितावसा उद्दंडका दिसापोक्खिणो वाकवासिणो अंबुवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो वेलवासिणो रुखमूलया अबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय कंदमूल तयपत्त पुप्फफलाहारा जलाभिसेय कढिणा गाय भूया आयावणाहि पचग्गीतावेहिं इंगालसोल्लिय कंडुसोल्लिय कठसोल्लियपिव अप्पाणंकरेमाणा बहुइं वासाइं परियाय पाउणत्ति २ त्ता कालमासे कालकिच्चा उक्कोसेणं जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति पलिउवम वास-सय-सहस्स मब्भहिय ठिई पण्णत्ता आराहणा ? णोइणठे समठे ॥

अर्थ—से० ए संसारिक जीव गं० गंगा नदीना काठे अमणा ढाबा पासाने विषे व० वाणप्रस्थ तापस तप अने कष्टना करणहार वनमां ठाम करी रह्या छे, ते केवा होय तं० ते कहेछे-हो अग्निहोत्रीना करणहार पो० वस्त्रना धरणहार कोण जशना करणहार अ० यज्ञना करणहार स० श्रद्धावंत शास्त्रना सांभळनार, भाजननु उपगर्ण साथे राखीने प्रवर्ते, एक कमंडल राखे, फळ भखे उ० एकवार पाणीमा पेसीने तत्काळ नीसरे स० वारवार स्नान करे नि० स्नानने अर्थे वारवार पाणीमां डुबका मारी रहे स० माटीए घसीघसीने स्नान करे द० गंगानदीने दक्षिणकांठे वसे उ० गंगानदीना उतरकांठे वसे सं० शंख पुरीने (वगाडीने) जमे

कू० कुळनी रीते उन्नारही रामनाम जपी भोजन करे मि० हिरणना मांसनुं भोजन करे ह० एक हाथी मारी घणा दीवस सुधी भोजन करे उ० उंचो दांडो करीने हींडे दि० दश दिशामां पाणी छांटी लोकपाळनी आज्ञा मागीने फुल-फल ले वा० वृक्षनी छालनां वस्त्र पहेरे अं० पाणीमां रहे बि० बीलमां रहे ज० पाणीमां रहे वे० वृक्षना हेठळ रहे रु० रुंखना मूळमां रहे अं० पाणी पीने रहे वा० वायु भक्षीने रहे से० नदीनी शेवाळ खाइने रहे मू० मुळनो आहार करे कं० कंदनो आहार करे त० वृक्षनी छालनो आहार करे प० पांदडांनो आहार करे पु० फुलनो आहार करे फ० फळनो आहार करे बी० बीजनो आहार करे प० पड्या-सड्या क० कंदमूळ तथा पु० फुल-फळनो आहार करे ज० पाणीमां स्नान करे, क० कठण गा० गात्र जू० जेणे बांध्युंछे ते आ० उन्हाळे आतापना ले, पं० चारे दिशे अग्नि अने माथे सुर्य तपे, ए पंचाग्निना तापथी ई० जेणे कोयला सरखुं शरीर कर्युंछे, कं० कष्टथी जेणे शरीर नबळुं कर्युं छे अने क० तपश्याथी अधबळया काष्ट समान शरीर कर्युं छे, एवी तपश्या करीने ब० घणा वा० वर्षलगी प० पर्याय (तापसीनी दिक्षा) पा० पाळे, पाळीने का० काळने अवसरे का० काळ करीने उ० उत्कृष्टा जो० जोतिषि संबंधी दे० देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे. तेनी प० एक पल्योपम उपर वा० एक लाख वर्षनी ठि० आउखानी स्थिति प० कही, शेष बीजा बोल पूर्वनी पेरे जाणवा; पण ते परलोकना आराधक न थाय.

सेजेइमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु पव्वइआ समणा भवंति तंजहाः-कंदप्पिया कुक्कुया मोहरिया गियरइप्पिया नच्चणसीला तेणं एएणं विहारेणं विहरमाणा बहुइं-वासाइं सामण-परिआगं पाउणंति २ त्ता तस्स-ठाणस्स अणालोइय अप्पडिकंता कालंमासे कालंकिच्चा उक्कोसेणं सोहम्मेकप्पे

सेजेइमे गंगाकूलगा वणपत्था तावसा नवति तंजहा -हो-त्तिया पोत्तिया कोत्तिया जणाइ सड्डई थालई हुपउछा दंत्तुक्खलिया उमज्जका समज्जका निमज्जका संपक्खाला दक्खिणकूलका उत्तरकूलका संखधमका कूलधमका मिग-लूद्धका हत्थितावसा उद्दंडका दिसापोखिणो वाकवासिणो अंबुवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो वेलवासिणो रुख-मूलया अबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूला-हारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुष्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय कंदमूल तयपत्त पुप्फफलाहारा जला-भिसेय कढिण गाय नूया आयावणाहिं पंचग्गीतावेहिं इंगालसोल्लिय कंडूसोल्लिय कठसोल्लियपिव अप्पाणंकरे-माणा बहुंइ वासाइ परियाय पाउणात्ति २ त्ता कालमासे कालकिच्चा उक्कोसेण जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो नवति पलिउवम वास-सय-सहस्स मब्भहिय ठिई परलोगस्स आराहणा [१] णोइणठे समठे ॥

अर्थ —से० ए संसारिक जीव ग० गंगा नदीना काठे जमणा डाबा पासाने विषे व० वाणप्रस्थ तापस तप अने कष्टना करणहार वनमा वास करी रह्या छे, ते केवा होय त० ते कहेछे-हो अग्निहोत्रीना करणहार पो० वस्त्रना धरणहार को० जशना करणहार ज० यज्ञना करणहार स० श्रद्धावंत शास्त्रना सांभळनार, थाळनवु उपगर्ण साथे राखीने प्रवर्ते, एक कमंडल राखे, फळ खादे उ० एकवार पाणीमा पेसीने तत्काळ नीसरे स० वारंवार स्नान करे नि० स्नानने अर्थे वारंवार पाणीमां डुबका मारी रहे सं०माटीए घसीघसीने स्नान करे द० गंगानदीने दक्खि-णकांठे वसे उ०गंगानदीना उत्तरकांठे वसे सं० शंख पुरीने (वगाडीने) जमे

लिय ८. तेणं परिव्वायगा रिउव्वेय जउव्वेय सामवेय अथ-व्वणवेय इतिहास पंचमाणं णिग्घंट छठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउन्हंवेयाणं सारका पारका धारका वारका सम्रंगवि सठितंत विसारदा संखाणे सिरकाकप्पे वाकरणे छंदे णिरुत्ते जोईसामायणे अणेसुय बहुसु बंभणएसु स-त्थेसु सुपरिणिठियाविहोत्था तेणंते परिव्वायगा दाणधम्मंच सोयधम्मंच तित्थाभिसेयंच आघवेमाणा पणवेमाणा परु-वेमाणा विहरंति जेणं अम्मं किंचि असुई भवंति तेणं उदयणाय मट्टियाएय पखालियंसमाणं सुई भवइ एवं खलु अम्मे चोरका चोरकायारा सुइसुई समायाए भवेत्ता अभिसेय जल पुयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति अगडंवा तलायंवा णइंवा वाविंवा पुक्खरणिंवा दीहियंवा गुंजालियंवा सरंवा सागरंवा उग्गहित्तए,णणछ अद्धाण गमणेणं॥तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पइ सगडंवा जाव संदमाणियंवा दुरूहित्ताणं गछि-त्तए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति आसंवा हत्थिंवा उट्टंवा गोणंवा महिसंवा खरंवा दुरूहित्ताणं गमित्तए, ण-णछ बलाभिउगेणं ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पई ण-डप्पेछाइवा जाव मागहपेछाइवा पेछित्तए॥तेसिणं परिव्वा-यगाणं णोकप्पंति हरिआणं लेसणतावा घट्टणतावा थंभ-णतावा लूसणतावा उप्पाडणतावा करित्तए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पई इछिकहाइवा भत्तकहाइवा देस-कहाइवा राइकहाइवा चोरकहाइवा जणवयकहातिवा अ-णछादंडकरित्तए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पई अय-

कंदप्पिएसु देवताए उववत्तारो भवंति तेहिं तेसिं ठिइ सेस तञ्चेव; णवर पलिउवमं वाससहस्स मब्भहियं ठिई ॥

अर्थ —से० ए संसारिक जीव गा० गाम नगरादि जा० यावत् स० सन्नीवेसने विषे प० प्रवर्जित स० श्रमण तपना करणहार भ० होय, ते केवा होय तं० ते कहेछे क० कदर्प-कथाना करणहार, कु० कुचेष्टाना करणहार, मो० मुखारी नाना विधना अपशब्दना बोलणहार, गि० गीत करी रमणानु करवु जेने प्रिय छे अने न० जेनो स्वभाव नाचवानो छे, ए पूर्वे कह्या से० तेवा वि० विहारे वि० विचरतायका ब० घणा वर्षलगी सा० सामान्य चारित्रपणु पा० पाळे, पाळीने त० पूर्वे कह्यां ते स्थानक प्रत्ये अणा० गुरु आगळ आलोव्या नथी तथा अप्प० पडिकम्यां नथी, एवा साधु का० काळने अवसरे का० काळ करीने उ० उत्कृष्टा आवा जाय तो सो० सौधर्मनामे प्रथम देवलोकने विषे क० कदर्प हास्य कौतकना करणहारा दे० देवताने विषे देवतापणे उ० उत्पात स्थानने विषे उपजे ते० त्यां तेनी स्थिति से० शेष बोल पूर्वनीपेरे जाणवा, ण० पण एटलु विशेष प० एक पल्योपम अने वा० एक हजार वर्षना आयुष्यनी ठि० स्थिति कही, पण तेमने आज्ञाना अणआराधक कह्या

वळी परिव्राजक-तापस वीतरागनी आज्ञाबाहार छे, अने ते करणी करीने देवलोकमा जाय छे, ते पाठ लखीए छीए—

सेजेइमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु परिवायगा भवति तं-जहा -सखा जोगी कविला भिउच्चा हसा परमहसा बहु-उदगा कुधिवया कण्हपरिवायगा तत्थ खलु इमे अठ माहण परिवायगा भवति तजहा:-कन्हेय करकंटय अव-भेय परासेर कन्हे दीवायणे चेव देवगुत्तेय णारखे ॥ तत्थ खलु इमेअठ खत्तिय परिवायगा भवंति तजहा-सीलई ससिहारे णगाइ भग्गई तियविदेहे राया रामे बले-

लिय ८. तेणं परिव्वायगा रिउव्वेय जउव्वेय सामवेय अथव्वणवेय इतिहास पंचमाणं णिग्घंट छठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउन्हंवेयाणं सारका पारका धारका वारका समंगवि सठितंत्त विसारदा संखाणे सिरकाकप्पे वाकरणे छंदे णिरुत्ते जोईसामायणे अणेसुय बहुसु बंभणएसु सत्थेसु सुपरिणिठियाविहोच्छा तेणंते परिव्वायगा दाणधम्मंच सोयधम्मंच तिच्छाभिसेयंच आघवेमाणा पणवेमाणा परुवेमाणा विहरंति जेणं अम्मं किंचि असुई भवंति तेणं उदयएणय मट्टियाएय पक्कालियंसमाणं सुई भवइ एवं खलु अम्मे चोरका चोरकायारा सुइसुई समायाए भवेत्ता अभिसेय जल पुयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति अगडंवा तलायंवा णइवा वाविंवा पुक्करणिंवा दीहियंवा गुंजालियंवा सरंवा सागरंवा उग्गहित्तए,णणाछ अद्धाण गमणेणं॥तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पइ सगडंवा जाव संदमाणियंवा दुरूहित्ताणं गछित्तए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति आसंवा हत्थिंवा उट्टंवा गोणांवा महिसंवा खरंवा दुरूहित्ताणं गमित्तए, णणाछ बलाभिउगेणं ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पई णडप्पेच्छाइवा जाव मागहपेच्छाइवा पेच्छित्तए॥तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति हरिआणं लेसणतावा घट्टणतावा थंभणतावा लूसणतावा उप्पाडणतावा करित्तए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पई इच्छिकहाइवा भत्तकहाइवा देसकहाइवा राइकहाइवा चोरकहाइवा जणवयकहातिवा अणच्छादंडकरित्तए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पई अय-

पायाणिवा तउपायाणिवा तंवपायाणिवा जसदपायाणिवा जाव वहुमुल्लाणिवा धारित्तए, णणत्थ अलाउपायणिवा दारुपायणिवा मट्टीयपायणिवा ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पति अयवंधणिवा तउयवंधणाणिवा तंववधाणिवा जाव वहुमुल्लाणि धारितए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पइ णाणाविहवणरागरत्ताई वत्थाई धारित्तए, णणत्थ एकाए धाउरत्ताए ॥ तेसिणं परिव्वायगाण णोकप्पति हारंवा अद्धहारंवा एकावलियंवा मुत्तावलियंवा कणगावलियंवा रयणावलिंवा मुरविंवा कंठमुरविंवा पालंववा तिसरयंवा कडिसुतं दसमुद्दिआणतकवा कडियाणिवा तुडियाणिवा अंगदाणिवा केउराणिवा कुण्डलाणिवा मउडवा चूलमणिवा पिणद्धित्तए,णणत्थ एकेण तविएण पवित्तएण॥तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति गंथिम वेढिम पुरिम संघातिमे चउव्विहे मल्लेधारिए, णणत्थ एक्केण कण्णपूरेणं ॥ तेसिणं परिव्वायगाण णोकप्पइ अगरखूएणावा चदणेणावा कुकुमेणावा गायं अणुलिंपित्तए,णणत्थ एकाए गंगामट्टिआए।तेसिणं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहयपत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए,सेविय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे, सेविय थिमिउदिए नोचेवणं, कद्दमोदए, सेविय वहूपसन्ने नोचेवणं अवहूपसन्ने, सेविय परिपूए नोचेवणं अपरिपूए, सेविय सावज्जेतिकाउ नोचेवणं अणवज्जेकाउ, सेविय जीवे नोचेवणं अजीवे,सेवियणं दिन्ने नोचेवणं अदिण्णे, सेविय पिवित्तए नोचेवणं हत्थपाय चरुचमस पक्खालणट्ठाए सिणाइत्तएवा ॥ तेसिणं परि-

वायगाणं कप्पइ मागदय अध्धाअढाए जलस्स पडिगाहित्तए, सेविय वहमाणे णोचेवणं अवहमाणे जाव नोचेवणं अदिणे, सेविय हथ्थपाव चरुचमस पखालणठायाए नोचेवणं पिवित्तए सिणाइत्तएवा ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं कप्पइ मागदए आढए जलस्स पडिगाहित्तए, सेविय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे जाव नोचेवणं अदिणे, सेविय सिणाइत्तए नोचेवणं हत्थपाय चरुचमस पखालणठयाए पिवित्तएवा ॥ तेणं परिव्वायगा एया रुवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूणं वासाइं परियागं पाउणित्ता कालमासे कालंकिच्चा उक्कोसेणं बंभलोएकप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति. तेहिंतेसिंगई दस सागरोवमाई ठिई पणत्ता सेसं तंचेव ॥

अर्थः—से० ए संसारी जीव गा० गाम, अगर, जा० यावत् स० सन्नीवेषने विषे प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासि भ० होय, ते केवा होय तं० ते कहेछेः-सं० शंखनी माफक नाद करी ध्यान करे ते, जो० अध्यात्म वेदान्त शास्त्रनुं ध्यान करे ते, क० कपिलदेवतने माने ते, भि० भृगुरुषि लोकमांही प्रसिद्ध छे तेना शिष्य वनमां फरता रहे ते, हं० पर्वतादिके वशे ते, प० नदी प्रवाहे वसे, कोपीनादिक सर्व वस्तु छोडीने प्राण तजे, अष्टांग योग साधे, इश्वरने माने अने भिक्षा अर्थेज गाममां आवे ते. व० पाणीनी परे घणा हींडे, गामे एक रात्री अने नगरे पांच रात्री रहे ते, कु० घेर रहीनेज क्रोध लोभने छांडे ते, क० कृष्ण-परिव्राजक जे नारायण परिभक्त तापस विशेष ते. त० त्यां ख० निश्चे इ० ए अ० आठ मा० ब्राह्मणनी जाति संबंधि प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिनी जाति भ० होय छे तं० ते कहेछेः-क० कृष्ण १, क० करकंटक २, अं० अंबड ३, प० पारासर ४, क०कृष्ण ५, दी० द्वीपायन ६, दे० निश्चे दे०

देवगुप्त ७ अने ना० नारद ८ इमे त० तेमाही ख० निश्चे ६० ए आठ ख० क्षत्रिनी जाति संबंधि प० परिव्राजक-दंडधरसन्यासि ज० होय तं० ते कहेछे सी० सीलवइ १, स० ससीहर २, ण० नगाइ ३, ज० भागीव ४, एम वि० विदेह ५, रा० राजा ६, रा० राम ७ अने ब० बल ८ ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसन्यासि रि० रुजुर्नामा-वेद १, ज० युजुर्वामा-वेद २, सा० शामनामा-वेद ३, अ० अथर्वण वेद ४, ६० इतिहास (अढार पुराण) प० ते पाचमो, णि० निर्घटनामा ७० छठु अंग, सं० शिक्षादिक छ अंगना उपांग सहित स० रहस्य भाव जेवे करी सहित च० वे० रुजुर्वेदादिक च्यार वेदने सा० विसरता सभारे छे, पा० वेदादिकना भार गामी छे, धा० हैयाने विषे धारक छे, वा० अशुद्ध जणता वारे छे, स० छ अंगना जाण छे, स० सावित्रनामा शास्त्रना वि० जाण (पवीत) छे, स० शाल्या गणितशास्त्रना जाण छे, सि० शिक्षा अक्षर स्वरूप शास्त्र तथा कल्प आचार शास्त्र वा० व्याकरण शब्द लक्षण शास्त्र छ० छंद पद्य गद्य शास्त्र शब्द नि० निर्युक्ति पद भजन शास्त्र जो० ज्योतिष शास्त्र, अयन उत्तरायन अने ज्योतिष विशेषना जाण छे, तेमज अ० अनेरा ब० घणा च० ब्राह्मण संबंधि स० शास्त्रना सु० रूडी रीते जाण होय ते निश्चे करीने, ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसन्यासि दा० दान धर्म सो० सोच पवित्रधर्म अने ति० तिर्थ धर्म प्रत्ये (गंगादिकने विषे स्नान करवु ते) आ० आख्यात कहेतायका प० परुपतायका प० प्रत्य क्षना बोध थापतायका वि० विचरे छे, जे० एम करता जे कोइ अ० अ मारे कि० थोडु पण अ० अशुचि पाप ज० होय ते० ते सर्व उ० पाणीए करी म० माटीए करी प० धोयुथकुं सु० सुचि पवित्र भ० थाय (पाप जाय) ए एम ख० निश्चे अ० अमे चो० निर्मळ थइ चो० सुपवित्र थइ सु० सम्यक् प्रकारे आचारवंत थइ अ० पवित्र थोरूलो आत्मा करीने स्नान करीने ज० पाणीए करी पु० पवित्र आत्मा करीने अ० विघ्नपणा रहित स० स्वर्गे ग० जइशु ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसं-न्यासिने, णो० न कल्पे अ० कुवामा त० तळावमा ण० नदीमा वा० वा-

वमां, पु० कमळ सहितनी वावमां, दी० लांबी नाळनी वावमां गुं० वांकी नाळनी वावमां, स० सरोवरमां, सा० समुद्रमां न० पेसवुं; ण० पण एटलुं विशेष अ० अर्धामार्गे ग० गमन करतां पाणी प्रमुख आवे तो कल्पे. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे स० गाडे जा० यावत् सं० पालखी डु० उपर चडीने ग० जावुं. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे आ० घोडा ह० हाथी उ० उंट गो० बळध म० पाडा तथा ख० गधेडां डु० उपर चडीने ग० जावुं; पण ण० एटलुं विशेष ब० कोइ बलात्कारे चढावे तो कल्पे. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे ण० नाटक जोवुं जा० यावत् मा० मागध देशनुं तथा मागध वडुवादिकनुं गायन सांभळवुं तथा पे० जोवा जवुं. ते० ते परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे ह० वनस्पति-कायने ले० घसवी घ० संघटो करवो थं० उंची करवी लु० हस्तादिके करी लीलफुल समारवी तथा उ० उखेडवी. ते० ते परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे इ० स्त्री जातिना कुळ, रुप, उपधि, शृंगारादिकनी क० कथा करवी, भ० भात, पाणी, घृत साख प्रमुखनी कथा, रा० राज्य संबंधि चतुरंग दळ भंडारीनी कथा, चो० चोर संबंधिनी कथा, ज० जनपद केटलाएक देशनी कथा, पूर्वोक्त कथाए करी अ० अनर्थदंड एटले अर्थविना आत्माने दंडवी ते न कल्पे. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे अ० लोढानां पात्र (लोटा वाडका), त० तरुवानां पात्र, तं० त्रांबानां पात्र (भाणुं थाळि आदिक) ज० जसतनां पात्र जा० जावत् ब० घणुं मुल बेसे एवां, थोडुं मुल बेसे एवां धा० राखवां; पण ण० एटलुं विशेष अ० तुंबडानां पात्र दा० नानां मोटां लाकडानां पात्र अने म० घडा आदिक माटीनां पात्र राखवां कल्पे. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे अ० लोहना बंधने बांधेलां, त० तरुवाना बंधने बांधेलां, तं० त्रांबाना बंधने बांधेलां, जा० यावत् ब० बहु मुल्यनां रुपादिकना बंधने बांधेलां पात्र धा० राखवां. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे णा० घणा प्रकारना वर्ण; रंग, चोळ, मजीठ, आल, लाख, पतंग अने कसुंबादिके

रग्या राता व० वस्त्र धा० राखवा, पण ण० एटलुं विशेष ए० एक धा० गेरुए रग्या वस्त्र राखवा कल्पे ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे हा० अढारसेरो हार, अ० अर्ध (नवसेरो) हार, ए० एकसेरो हार, मु० मोतीनो हार, क० सुवर्णनो हार, र० रत्नावली आभरण, मु० कंठने विषे मुरवि आभरण, पा० पाखव कुमणो, ति० त्रणसेरो हार, क० केडनो कदोरो, द० आंगळीना आभरण (अनतक आभरण विशेष) क० कटक सोनारुपानां कडां, तु० बेरखा, अ० बाहुना आभरण, के० बाजुबंध आभरण कु० कानना आभरण, म० मुगट आभरण अने चु० चुडामणी आभरण पि० शरीरने विषे पहेरवा, पण ण० एटलु विशेष ए० एक तं० त्रांबानी बनावेली प० पवित्री (आंगळीनुं आभरण) कल्पे ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे ग० जाइआदिक चार प्रकारे फुलनी गुथेली माळा तथा छुटा फुल धारण करवां, पण पा० एटलुं विशेप ए० एक क० कर्णफुल (काननुं आभरण) कल्पे ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे अ० अगरबत्तीनो धूप, च० चदन, कुं० कंकु केशर, तथा तेवा सुगंधी पदार्थ गा० शरीरपर अ० विलेपन करवा, पण ण० एटलु विशेप ए० एक ग० गगानदीनी माटी गोपीचंदनादिक कल्पे ते० ते परिव्राजकोने क० कल्पे मा० मागध देश संबंधि पाथो भरीने ज० पाणी प० लेवु, से० ते पण व० वेहेतु, नो० नहीं चे० निश्चे अ० अणवेहेतु, से० ते पण थि० निर्मल, नो० नहीं चे० निश्चे क० कोहोळु, से० ते पण व० घणु प० निर्मल, नो० नही निश्चे अ० अति मेलु, से० ते पण प० गळ्युं, नो० नहीं निश्चे अ० अणगळ्युं से० तेने पण सा० पापसहित जाणे, नो० नहीं निश्चे अ० पाप रहित जाणे, से० तेने पण जी० जीव सहित जाणे, नो० नहीं निश्चे अ० अजीव जाणे, से० ते पण दि० दीधेलु छे, नो० नहीं निश्चे अ० अणदीधुं छे, से० ते पण पि० पीवाने अर्थे छे, पण नो० नहीं निश्चे ह० हाथ, पा० पग च० चरु, थाळी, हांडली, च० चाटुडी, चाटुकादिक उपगर्ण, प० धोवा निमीत्ते अने सि० नाहवाने अर्थे न छे ते० ते परिव्राजकोने

कल्पे मा० मागध देश संबंधि अ० अर्ध अ० आढोमान ज० पाणी प० लेवु, से० ते पण व० नदीआदिकनुं वहेतुं कल्पे, पण नो० नहीं निश्चे अ० अणवहेतुं जा० यावत् नो० नहिं निश्चे अ० अणदीधुं; से० ते पण ह० हाथ, पग, चरु, चमचो, थाळी प्रमुख पं० धोवाने अर्थे कल्पे, पण नो० नहिं निश्चे पी० पीवुं तथा सि० स्नान करवुं. ते० ते परिव्राजकोने क० कल्पे मा० मागध देश संबंधि आ० एक आढा प्रमाण ज० पाणी लेवुं, से० ते पण व० वहेतुं, नो० नहिं निश्चे अणवहेतुं जा० यावत् नो० नहिं निश्चे अ० अणदीधुं; से० ते पण सि० स्नान करवाने अर्थे कल्पे, नो० नहिं निश्चे ह० हाथ, पा० पग, च० चरु, थाळी, हांकली चाटुडी, उपगर्ण, प० धोवाने तथा अ० पीवाने अर्थे न कल्पे. जे जे कामने वास्ते ले तेते काममांज वापरे, पण अनेरा काममां वापरवुं कल्पे नहिं. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधर संन्यासि ए० पूर्वे कह्या तेवा वि० विहारे करी वि० विचरता थका ब० घणा वा० वर्ष सुधी प० प्रवर्जा पाळे, पा० पाळीने का० काळने अवसरे का० काळ करीने उ० उत्कृष्टा ब० ब्रह्मनामे पांचमा देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे. ते० त्यां तेनी गति द० दस सा० सागरोपमनी ठि० स्थिति प० कही. दस कोडाकोडी पल्योपमनो एक सागरोपम कह्यो. से० शेष बोल पूर्वे कह्या तेमज जाणवा.

भावार्थः—हवे जुओ ! माता-पीतानो विनय करवानी, हाथी-तापसने हाथीनुं मांस खावानी, मृग्या-तापसने मृगनुं मांस खावानी, पंचाग्नि तापवानी, जळ स्नान करवानी तथा कंदमूळनो आहार करवानी, साधु आज्ञापण देता नथी; अने श्री वीतरागदेवे पण आ सूत्रमां जिनाज्ञाना मोक्षमार्गना अणआराधक (आज्ञाबाहार) कह्या. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहार छे, अने आज्ञाबाहार पुन्य निपजे छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, एवा कामनी साधु आज्ञा आपे नहीं, पण माता-पीताना विनयना करणहार तो भद्रकतिना नडिक छे, अने हाथी

तापसने हाथीना मांस सिवाय तथा मृग्या-तापसने मृगना मांस सिवाय बीजा द्रव्यनो निषेध थयो, ते करणी जिनाज्ञा माहेली छे, तेथी पुण्य बधाय छे एम कहेछे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! श्री वीतरागदेवे तो एम नथी कह्यु के, प्रकृतिना भद्रिकपणाथी तथा बीजा द्रव्य टळ्या तेथी देवता थाय शु ? तमाराथी श्री वीतरागदेवमां ज्ञान थोडु हतुं ? के एवां काम विनामतलबे सूत्रमा घाल्या ? त्यारे तेरापथी कहेछे के, ए कामतो कारण छे अने द्रव्य टळ्या ते कार्य छे जेम हाथीना अने मृगना मांसथी बीजा द्रव्य टळ्या तेथी पुण्य बधाय छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! ए रीते तो कोइ महस्थि मूल आपी तैयार वस्तु सुखडी वीगेरे लइ खाय, ने रसोइनो आरम्भ टाळे, अने बीजो कोइ आरंभ करतो होय तेने अचेत वस्तु आपी अनेक प्रकारना आरम्भ टळावे, तेमज कोइ आरंभ टाळतो होय तेने भलो जाणे, तेने तमे पाप केम कहोछो ? ए सावद्य (पापना) कामथी बीजा द्रव्य टळ्या तेथी पुन्य बधाय, त्यारे कोइ उत्तम प्राणी अनेराने मदद आपी, अनेक आरम्भ छोडावे तेने गुण केम नहीं थाय ? ते डाह्या हो ते विचारी जोजो एम उववाइसूत्रना आगला पाठमां जमालीना मतवाळा करणीना बळे पुण्य बांधे, तेथी किलविषी देवतामा जाय एम कह्यु छे, अने तेमने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या तेमज गोशालामति करणीना बळे पुण्य वाधे, तेथी उत्कृष्टा बारमा देवलोक सुधी जाय, तोपण तेमने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या वळी मिथ्यात्व छुटयाविना सर्लिगोपणामा करणी करीने नव ग्रैवेयक सुधी जाय, तेने पण जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या छे ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी जिनाज्ञा बाहार छे, अने आज्ञाबाहार पुण्य निपजे छे ते उपरना द्रष्टांतोथी जाणवुं वळी उववाइसूत्रमा साधु अने श्रावक, ए बनेने जिनाज्ञाना आराधक कह्या जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रण गुण आराधे, तेनेज आराधक कहीये ए त्रण गुण मिथ्यात्वीमां नथी, तेथी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामा नथी, छता स आज्ञा-बाहारनी करणीथी पुण्य बांधी देवतानी

गतिमां जाय छे. ए न्यायथी आज्ञाबाहार पुण्य निपजे छे. वळी सूयगडांग प्रथम श्रुतस्कंधे आठमे अध्ययने, मिथ्यात्वी दान, शील, तपादिकमां पराक्रम फोरवे, तेनुं पराक्रम अशुद्ध कह्युं, अने समकिति दानादिकमां पराक्रम फोरवे तेनुं पराक्रम शुद्ध कह्युं. ते श्री सूयगडांगजीना प्रथम श्रुतस्कंधना आठमा अध्ययननी गाथा २३, २४ अने २५.

जेया बुद्धा महा भागा, विरा असमत्त दंसिणो;
असुद्धं तेसिं परिक्कंतं, सफलं होइ सव्वसो. ॥ २३ ॥

अर्थः—जे० जे कोई बुद्धितत्वना जाण, पण जैन मार्गना अजाण छे, ते आ लोकमां पुज्य अने वि० शूरवीर कहेवाय छे, एटले कष्ट सहन करवामां वीर पुरुष छे, पण सम्यक्त दर्शन (देव, गुरु, धर्म ए त्रण तत्वनी सर्दहणा) रहित छे, तेथी तेनां अ० दान, शील, तपादिक उद्यम, पराक्रम तथा अनुष्टान सर्व अशुद्ध अने फोगट छे. स० फक्त सर्व प्रकारे कर्म बंधननुं कारण छे, पण कर्म निर्जरानुं कारण नथी. ॥ २३ ॥ हवे पंडित वीर्य आश्री कहेछे. ते गाथा २४ मीः—

जेया बुद्धा महा भागा, विरा समत्त दंसिणो;
सुद्धं तेसिं परिक्कंतं, अफलं होई सव्वसो. ॥ २४ ॥

अर्थः—जे० जे कोई बु० तिर्थंकरादिक म० माहा भाग्यवान पुज्य, वि० (वीर) घनघातियां कर्म विदारवा समर्थ छे, चार कर्म क्षय कीधां छे अने स० समकित सहित छे, सु० तेमनो उद्यम शुद्ध (हिंसा दोष रहित) छे, अने तेना अ० कर्म बंधनुं कारण (मिथ्यात्व) सर्व प्रकारे अफळ थाय. पण समकितने निर्जरानुं कारण जाणवुं. ॥ २४ ॥

तेसिंपि तवो असुद्धो, निक्खंता जे महाकुला;
जणे वन्ने वियाणंति, नसिलोगं पवेयए ॥ २५ ॥

अर्थः—ते० ते जो त० मासखमणादिक तप करे, तोपण अ० ते

तापसने हाथीना मास सिवाय तथा मृग्या-तापसने मृगना मांस सि
वाय बीजा द्रव्यनो निषेध थयो, ते करणी जिनाज्ञा माहेली छे, तेथी
पुण्य बधाय छे एम कहेछे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! श्री वीतरागदेवे
तो एम नथी कह्यु के, प्रकृतिना भद्रिकपणाथी तथा बीजा द्रव्य टल्या
तेथी देवता थाय शु ? तमाराथी श्री वीतरागदेवमां ज्ञान थोडु हतुं ?
के एवा काम विनामतलबे सूत्रमा घाल्या ? त्यारे तेरापंथी कहेछे के,
ए कामतो कारण छे अने द्रव्य टल्या ते कार्य छे जेम हाथीना अने
मृगना मासथी बीजा द्रव्य टल्या तेथी पुण्य बधाय छे तेनो उत्तर
हे देवानुप्रीय ! ए रीते तो कोइ महस्थि मूल आपी तैयार वस्तु सु
खडी वीगेरे लइ खाय, ने रसोइनो आरम्भ टाळे, अने बीजो कोइ
आरम्भ करतो होय तेने अचेत वस्तु आपी अनेक प्रकारना आरम्भ
टळावे, तेमज कोइ आरम्भ टाळतो होय तेने भलो जाणे, तेने तमे पाप
केम कहोछो ? ए सावद्य (पापना) कामथी बीजा द्रव्य टल्या तेथी
पुन्य वधाय, त्यारे कोइ उत्तम प्राणी अनेराने मदद आपी, अनेक
आरम्भ छोडावे तेने गुण केम नहीं थाय ? ते न्याय हो ते विचारी
जोजो एम उववाइसूत्रना आगला पाठमा जमाळीना मतवाळा करणी
ना घळे पुण्य बांधे, तेथी किलविषी देवतामा जाय एम कह्युं छे, अने
तेमने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या तेमज गोशालामति करणीना
घळे पुण्य बांधे, तेथी उत्कृष्टा बारमा देवलोक सुधी जाय, तोपण तेमने
जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या वळी मिथ्यात्व छुटयाविना सलिंगीप
णामा करणी करीने नव ग्रैवेयक सुधी जाय, तेने पण जिनाज्ञाना
अणआराधक कह्या छे ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी जिनाज्ञा बाहार
छे, अने आज्ञाबाहार पुण्य निपजे छे ते उपरना दृष्टांतोथी जाणवुं
वळी उववाइसूत्रमा साधु अने श्रावक, ए बनेने जिनाज्ञाना आराधक
कह्या जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रण गुण आराधे, तेनेज आराधक
कहीये ए त्रण गुण मिथ्यात्वीमां नथी, तेथी मिथ्यात्वीनी करणी
आज्ञामा नथी, छता स आज्ञा-बाहारनी करणीथी पुण्य बांधी देवतानी

गतिमां जाय छे. ए न्यायथी आज्ञाबाहार पुण्य निपजे छे. वळी सूयगडांग प्रथम श्रुतष्कंधे आठमे अध्ययने, मिथ्यात्वी दान, शील, तपादिकमां पराक्रम फोरवे, तेनुं पराक्रम अशुद्ध कह्युं, अने समकिति दानादिकमां पराक्रम फोरवे तेनुं पराक्रम शुद्ध कह्युं. ते श्री सूयगडांगजीना प्रथम श्रुतष्कंधना आठमा अध्ययननी गाथा २३, २४ अने २५.

जेया बुद्धा महा भागा, विरा असमत्त दंसिणो;
असुद्धं तेसिं परिक्कंतं. सफलं होइ सव्वसो. ॥ २३ ॥

अर्थः—जे० जे कोई बुद्धितत्वना जाण, पण जैन मार्गना अजाण छे, ते आ लोकमां पुज्य अने वि० शूरवीर कहेवाय छे, एटले कष्ट सहन करवामां वीर पुरुष छे, पण सम्यक्त दर्शन (देव, गुरु, धर्म ए त्रण तत्वनी सर्दहणा) रहित छे, तेथी तेनां अ० दान, शील, तपादिक उद्यम, पराक्रम तथा अनुष्टान सर्व अशुद्ध अने फोगट छे. स० फक्त सर्व प्रकारे कर्म बंधननुं कारण छे, पण कर्म निर्जरानुं कारण नथी. ॥ २३ ॥ हवे पंडित वीर्य आश्री कहेछे. ते गाथा २४ मीः—

जेया बुद्धा महा भागा, विरा समत्त दंसिणो;
सुद्धं तेसिं परिक्कंतं, अफलं होई सव्वसो. ॥ २४ ॥

अर्थः—जे० जे कोई बु० तिर्थंकरादिक म० माहा भाग्यवान पुज्य, वि० (वीर) घनघातियां कर्म विदारवा समर्थ छे, चार कर्म क्षय कीधां छे अने स० समकित सहित छे, सु० तेमनो उद्यम शुद्ध (हिंशा दोष रहित) छे, अने तेना अ० कर्म बंधनुं कारण (मिथ्यात्व) सर्व प्रकारे अफळ थाय. पण समकितने निर्जरानुं कारण जाणवुं. ॥ २४ ॥

तेसिंपि तवो असुद्धो, निरकंता जे महाकुला;
जाणे वन्ने वियाणंति, नसिलोगं पवेयए ॥ २५ ॥

अर्थः—ते० ते जो त० मासखमणादिक तप करे, तोपण अ० ते

अशुद्ध जाणवो, केमके ते पुजासत्कार सन्मान वांन्छे, ते कारणे तेनो तप पाकुळो जाणवो नि० जे वैरागे घर छांडीने म० मोटा कुळना तपस्या तेनो पण तप जो पुजासत्कारने हेते होय तो ते अशुद्ध जाणवो ज० जेम तप कीधो ते व० अनेरा महस्थादिक न जाणे तेमने जणाववा निमित्ते न० पोताना गुण पोते न बोले, अर्थात पोतानी श्लाघा पोते न करे ॥ २५ ॥

भावार्थ —हवे जुओ ! मिथ्यात्वीनी करणी ए आज्ञा मांहेलो धर्म होय तो तेना पराक्रम अशुद्ध केम कह्यां ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यात्वीनां पराक्रम अशुद्ध कह्यां छे, ते खोटां कर्तव्यमां पराक्रम फोरवे, ते आश्री अशुद्ध कह्यां छे, पण साधुजीने मिथ्यात्वी दान आपे, शीयळ पाळे, तथा तपश्या करे, ते पराक्रमने अशुद्ध नथी कह्यां एवी मनथी कुयुक्ति मेळवे छे तेनो उत्तर अरे भाइओ ! खोटां दान, शीयळ अने कुळाचार प्रमुख खोटा कृत्यमा पराक्रम फोरवे, तेने अशुद्ध कह्या केहेशो तो, आगळी गाथामा समकितिनां पराक्रम शुद्ध कह्यां, ते खोटा कर्तव्यमा (विषय विकारमा संसारना काममां) पराक्रम फोरवे, ते शु शुद्ध कह्यां हशे ? पण एम नथी अहियां तो बंनेनां पराक्रम परलोकने अर्थे क्रिया करे तेनुज वर्णन छे आ अध्ययनमा आद अंत सुधी परलोकनी क्रियानोज वर्णव छे संसारने अर्थे तो खोटा कर्तव्यमां पराक्रम फोरवे, ते तो समकिति तथा मिथ्यात्वी बंनेना अशुद्ध छे, पण परलोक अर्थे बंने दानादिक शुद्ध क्रियामां पराक्रम फोरवे, ते मिथ्यात्वीना अशुद्ध, अने समकितिनां शुद्ध, एम छे अरे भाइओ ! मान छोडी विचारो जो खोटा दानादिकमां पराक्रम फोरवे, तेना अशुद्ध कहेशो तो, आगळ आ गाथाना चोथा पदमा टीकाकारे कह्यु छे के, मिथ्यात्वीना दानादिकथी पुन्य प्रकृति बंधाय, पण निर्जरानों कारण नथी जो त्रीजा पदमा खोटा दानादिक कहेशो, तो चोथे पदे पुन्य बांधे एम कह्यु छे ए लेखे तमारी श्रद्धा सर्व उडी जशे, के-

मके जो दानादिकमां पाप कहेशो तो, तथा खोटा अर्थ करशो तो
ऊलटी गळामां पडशे. वळी सुयगडांगजीना प्रथम श्रुतस्कंधना बीजा
अध्ययननी गाथा नवमीमां कह्युं छे के, मिथ्यात्वी मास मास खमणे
पारणां करे, तोपण अनंतानु बंधी माया छुटी नथी, तेथी अनंता जन्म
मरण वधारे. ते गाथा नवमीः–

जेय विय णगणे किसेचरे, जयविय भुंजिये मास मंतसो;
जेइह मायाइ तिमिज्जइ, आगंता गब्भायणं तसो ॥९॥

अर्थः—जे० जो घणी क्रिया करे, ण० नग्न थइने रहे, दुर्बळ
शरीरी थइने विचरे, ज० तप घणो करे, आहार निरस करे, अने मास
मास खमण करीने पारणुं करे, एवी रीते जीवे त्यां सुधी करे, तोपण
जे० जे कोइ माया सहित बीजाने ठगवारुप योगेकरी बगध्यानी थइ
प्रवर्ते, (ते मायानां फळ कहे छे.) आ० ते आगमिये (भविष्य) काळे
ग० गर्भने विषे जन्म मरणनां अनंतां दुःख पामे.

भावार्थः—हवे जुओ ! मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा मांहली धर्म
होय तो, अनंता जन्म मरण वधे, एम केम कह्युं ? डाह्या हो ते विचारी
जोजो. त्यारे तेरापंथी कहेछे के, एतो माया कपटाइनां फळ कह्यांछे.
तेनो उत्तर-अरे भाइओ ! मायाकपटाइनां फळ तो खोटां छेज, तेमां शुं
कहेवुं. समकिति साधु-श्रावकपण कपटाइ करेतो तेनां तो फळ खोटांज
लागशे, पण अहियां तो मायाकपटाइ ए मिथ्यात्वनुं नाम छे, अने
मिथ्यात्वीने मायाकपटाइ छुटी नथी, तेथी मासमासखमण तप करे,
तोपण अनंता जन्म मरण वधे, एम कह्युंछे. जो एकली कपटाइनांज
फळ कह्यांछे, एम कहेशो तो तपस्यानो अधिकार आ गाथामां कहेवानो
शुं प्रयोजन ? अने तपस्यानां फळ केम न कह्यां ? अने ते क्यां गयां
ते कहो ? अरे भाइओ ! मिथ्यात्वीनी तपश्याथी पुन्य प्रकृति बंधाय,
देवतामां जाय अने त्यां सुख भोगवे; पण तेनी समी सर्दहणा विना

जन्म मरण घटे नही तेमज अजवि तथा जवि मिथ्यात्वपणामां करणी करीने नवग्रैवेयक सुधी अनंतीवार गया, तोपण तेओनी गरज लगार मात्र सरी नहीं जो आज्ञा मांहेलो धर्म होय तो गरज केम न सरे? जगवाने तो "करेमाणे करे" कह्यु छे कर्म तोडवा मांड्यां ते तो थयाज कहिये, निर्जरवा माड्या, ते निर्जर्याज कहीये, अने मुक्तिनो मार्ग लीधो तेने मुक्ति गयाज कहीये शास्त्र सूत्र जगवती सतक पहेले उद्देशे पहेले प्रश्न पहेले अजविनी करणी आज्ञामाहेली होयतो अजवि मुक्ति केम न जाय? ते माटे छो ते विचारी जोजो वळी श्री वीतरागदेवे सुयगडाग सूत्रमां कह्यु छे के, मिथ्यात्वीना पराक्रम अशुद्ध अने जन्म मरण वधारनार छे तेमज वळी उववाइ सूत्रमां मनवीना क्षुख-तृषा खमे, एवा कष्टथी मारीने अनेक प्रकारनो मिथ्यात्वोनी करणी कही, अने हस्ति-तापस आदि अनेक प्रकारना कह्या तेमज जमाळी, गोशाळा तथा सलिंगो, मिथ्यात्वपणा सहित करणी करे, तेथी पुण्य वधाय, अने उत्कृष्टा नव ग्रैवेयकमा जाय, तोपण तेमने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या हवे जुओ? मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामाहेली होयतो, तेमने परलोकना मोक्षमार्गना अणआराधक केम कह्या? त्यारे तेरापंथी कहेछे के, करणीनो करणहार तेतो आज्ञा बाहार छे, अने करणी आज्ञा माहेली छे तेनो उत्तर अरे देवानुप्रीय! जरा सीधी दृष्टी करीने जुओ गुण ने गुणी जुदा नथी, एम श्री अनुयोगद्वार सूत्रमधे कह्यु छे दडेन दडी, छत्तेण छत्ति पखेण पखि, तेम गुण ने गुणी जुदा नथी तेमज चन्द्रमा ने किर्ण, सुर्य ने ताप, दान ने दानी, ज्ञान ने ज्ञानी, सम्यक्त ने समकिति, चारित्र ने चारित्रियो, ध्यान ने ध्यानी, चोर ने चोरी, पाप ने पापी, पुण्य ने पुण्यवंत, तेमज मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी ए जुदा नथी तमे कर्ता ने कर्मनो जेद जुदो गवेष्यो, पण सिद्धान्तना मूळ नयना प्रवाहने पिपे समजता नथी ते अनुयोगद्वारनो पाठ—

छत्तेणं छत्ती, दंमेणं दंडी, पमेणं पमी, कमेणं कमी, नावाए नावीए, सगमेणं सागमीए, रहेणं रहीए, हलेणं हालीए, नाणेणं नाणी, दंसणेणं दंसी, चरित्तेणं चरित्ति ॥

अर्थः—छ० छत्रने संयोगे छ० छत्री राजा, दं० दंमने संयोगे दं० दंमी, अने प० पट वस्त्रे करी प० पट वस्त्री कहीये; तथा क० वांसनो कमो करे तेने क० कमीमान कहीये; तेमज ना० नावा (वाहाण) हंकारनारने ना० नावमीयो, स० गाकुं हांकनारने सा० गामीत, र० रथ हांकनारने र० रथवान, अने ह० हळ हांकनारने हा० हाळी कहीये; तथा ना० जेने ज्ञान छे तेने ना० ज्ञानी, दं० दर्शने करी दं० दर्शनी, तेमज च० चारित्रे करी च० चारित्रीयो कहीयेः अने जेने क्रोध छे तेने क्रोधी कहीये. एवी रीते नाम प्रमाणे गुण छे.

जावार्थः—हवे जुओ ! आ सूत्रना न्याय जोतां जे वस्तु आश्री जे नाम कह्युं, ते नामथी ते पुरुषने जुदो न कहीये. तेम मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी जुदी नथी. तमे अविवेकपणे शामाटे जुदा गवेषो गे ? वळी जगवतीजी सूत्र सतक पहेले उद्देशे दसमें, जीव ने जीवनी करणी जुदी नथी, पण एकज कही छे. ते पाठ लखीए छीएः—

तेणं कालेणं २ पासावच्चिज्जा कालासवेसियपुत्ते णामं अणगारे जेणेव थेरा जगवंतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थेरेजगवं एवं वयासि थेरा सामाइयं नजाणइ, थेरा सामाइयस्स अठं नयाणइ, थेरा पच्चरकाणं नयाणइ, थेरा पच्चरकाणस्स अठं नयाणइ, थेरा संजमं नयाणइ, थेरा संजमस्स अठं नजाणइ, थेरा संवरं नजाणइ, थेरा संवरस्स अठं नजाणइ, थेरा विवेगं नजाणइ, थेरा विवगस्स अठं नजाणइ, थेरा विउसग्गं नजाणइ, थेरा विउसग्गस्स अठं

जन्म मरण घटे नही तेमज भजवि तथा भवि मिथ्यात्वपणामो करणी करीने नवग्रैवेयक सुधी अनतीवार गया, तोपण तेओनी गरज लगार मात्र सरी नहीं जो आज्ञा मांहेली धर्म होय तो गरज केम न सरे ? भगवाने तो "करेमाणे कम्मे" कह्युं छे कर्म तोडवा मांड्या ते तो भोज कहिये, निर्जरवा मांड्या, ते निर्जयांज कहीये, अने मुक्तिनो मार्ग लीधो तेने मुक्ति गयाज कहीये शास्त्र सूत्र भगवती सतक पहेले उद्देशे पहेले प्रश्न पहेले अभविनी करणी आज्ञामाहेली होयतो अभवि मुक्ति केम न जाय ? ते माटे हो ते विचारी जोजो वळी श्री वीतरागदेवे सुयगडांग सूत्रमां कह्यु छे के, मिथ्यात्वीना परा क्रम अशुद्ध अने जन्म मरण वधारनार छे तेमज वळी उववाइ सूत्रमां मनवीना दुःख-सुधा लसे, एवा कष्टथी मारीने अनेक प्रकारनी मिथ्या त्वोनी करणी कही, अने हस्ति-तापस-आदि अनेक प्रकारना कह्या तेमज जमाळी, गोशाळा तथा सलिंगो, मिथ्यातपणा सहित करणी करे, तेथी पुण्य बधाय, अने उत्कृष्टा नव ग्रैवेयकमा जाय, तोपण तेमने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या हवे जुओ ? मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामाहेली होयतो, तेमने परलोकना मोक्षमार्गना अणआराधक केम कह्या ? त्यारे तेरापथी कहेछे के, करणीनो करणहार तेतो आज्ञा बाहार छे, अने करणी आज्ञा माहेली छे तेनो उत्तर अरे देवानुप्रीय ! जरा सीधी दृष्टी करोने जुओ गुण ने गुणी जुदा नथी, एम श्री अनुयोगद्वार सूत्रमधे कह्युं छे दव्वेन दव्वी, छत्तेण छत्ति पक्केण पक्कि, तेम गुण ने गुणी जुदा नथी तेमज चंद्रमा ने किर्ण, सुर्य ने ताप, दान ने दानी, ज्ञान ने ज्ञानी, सम्यक्त ने समकिति, चारित्र ने चारित्रियो, ध्यान ने ध्यानी, चोर ने चोरी, पाप ने पापी, पुण्य ने पुण्यवंत, तेमज मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी ए जुदा नथी तमे कर्ता ने कर्मनो भेद जुदो गवेष्यो, पण सिद्धान्तना मूळ नयना प्रवादने विषे समजता नथी ते अनुयोगद्वारनो पाठः—

छत्तेणं छत्ती, दंमेणं दंडी, पमेणं पमी, कमेणं कमी, नावाए नावीए, सगमेणं सागमीए, रहेणं रहीए, हलेणं हालीए, नाणेणं नाणी, दंसणेणं दंसी, चरित्तेणं चरित्ति ॥

अर्थः—छ० छत्रने संयोगे छ० छत्री राजा, दं० दंमने संयोगे दं० दंमी, अने प० पट वस्त्रे करी प० पट वस्त्री कहीये; तथा क० वांसनो कमो करे तेने क० कमीमान कहीये; तेमज ना० नावा (वाहाण) हंकारनारने ना० नावमीयो, स० गाकुं हांकनारने सा० गामीत, र० रथ हांकनारने र० रथवान, अने ह० हळ हांकनारने हा० हाळी कहीये; तथा ना० जेने ज्ञान छे तेने ना० ज्ञानी, दं० दर्शने करी दं० दर्शनी, तेमज च० चारित्रे करी च० चारित्रीयो कहीये: अने जेने क्रोध छे तेने क्रोधी कहीये. एवी रीते नाम प्रमाणे गुण छे.

जावार्थः—हवे जुओ ! आ सूत्रना न्याय जोतां जे वस्तु आश्री जे नाम कह्युं, ते नामथी ते पुरुषने जुदो न कहीये. तेम मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी जुदी नथी. तमे अविवेकपणे शामाटे जुदा गवेषो छो ? वळी जगवतीजी सूत्र सतक पहेले उद्देशे दसमें, जीव ने जीवनी करणी जुदी नथी, पण एकज कही छे. ते पाठ लखीए छीएः—

तेणं कालेणं २ पासावच्चिज्जा कालासवेसियपुत्ते णामं अणगारे जेणेव थेरा जगवंतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थेरेजगवं एवं वयासि थेरा सामाइयं नजाणइ, थेरा सामाइयस्स अठं नयाणइ, थेरा पच्चखाणं नयाणइ, थेरा पच्चखाणस्स अठं नयाणइ, थेरा संजमं नयाणइ; थेरा संजमस्स अठं नजाणइ, थेरा संवरं नजाणइ, थेरा संवरस्स अठं नजाणइ, थेरा विवेगं नजाणइ, थेरा विवगस्स अठं नजाणइ, थेरा विउसग्गं नजाणइ, थेरा विउसग्गस्स अठं

नजाणइ तएणते थेरान्नगवतो कालासवेसियपुत्त अण-
गारे एव वयासि जाणामोण अज्जो सामाइयं, जाणामोण
अज्जो सामाइयस्स अठं जाव जाणामोणं अज्जो विउस-
गस्स अठं तएणं कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरेन्न-
गवंते एवं वयासि जइणं अज्जो तुम्ने जाणह सामाइयं,
जाणह सामाइयस्स अठं जाव जाणह विउसगस्स अठं,के
न्ने अज्जो सामाइए,के न्ने अज्जो सामाइयस्स अठे,के न्ने जाव
विउसगस्स अठे? तएणते थेरा न्नगवतो कालासवेसियपुत्तं
अणगार एवं वयासि आयाणे अज्जो सामाइए आयाणे अ-
ज्जो सामाइयस्स अठे जाव विउसगस्स अठे तएणं से का
लासवेसिय पुत्ते अणगारे ते थेरे न्नगव एवं वयासि जइण
न्नते अज्जो आया सामाइए आया सामाइयस्स अठे जाव
आया विउसगस्सअठे अवहट्टु कोह माणं माया लोन्न
किमठं अज्जो गरह कालास० सजमठाए से न्नते किं गर-
हा संजमे अगरहा संजमे? कालास० गरहा सजमे नोअ-
गरहा सजमे गरहा वियणं सव्वं दोस पविणेति सव्वं वा-
लियं परिणाए एवं खु णे आया सजमे उवहिए न्नवइ, एवं
खु णे आया सजमे उवचिए न्नवइ, एव खु आया संजमे
उवठिए न्नवइ एत्थणं कालासवेसियपुत्ते अणगारे संबुधे
थेरेन्नगवते वंदइ णमसइ वंदित्ता णमंसित्ता एव वयासि
एएसिणं न्नते पयाणं पुव्विअणाणयाए असवणयाए अ-
सणिअआए अवोहियाए अणन्निगमेणं अदिठाणं अस्सु-
याणं असुयाणं अविणायाणं अवोगमाणं अवोन्निणाणं
अणिकढाणं अणुवधारियाणं एयमठेणोसद्दहिए,णोपत्तिए,

णोरोइए. इदाणिभंते एतेसिं पयाणं जाणयाय सवणयाए बोहियाए अभिगमेणं दिठाणं सुयाणं मूयाणं विणयाणं वोगडाणं वोच्छिणाणं णिज्जुढाणं उवधारियाणं. एयं मठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि. एवमेयं सेजदेयं तुब्भेवयह ॥

अर्थः—ते० ते कालने विषे ते समयने विषे पा० श्री पार्श्वनाथजीना (अपत्य) शिष्य का० कालासवेसितपुत्र नामे अ० अणगार साधु जे० ज्यां थे० श्री माहावीरभगवंतना शिष्य श्रूतवृद्ध (घणा विद्वान स्थिवर) भगवंत छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने थे० स्थिवरभगवंत प्रत्ये ए० एम व० कहे. थे० हे स्थिवर ! तमे सा० समता भावरुप सामायक न० न जाणो, तथा तेनो अर्थ प्रयोजन कर्म अनुपादानरुप ते पण न जाणो, थे० स्थिवर ! प० पोरसि आदि नियम तमे न जाणो, थे० स्थिवर ! प० पचखाणनो अर्थ (आश्रवद्वार निरोध) न जाणो, थे० स्थिवर ! सं० पृथ्वि आदि रक्षा लक्षणरुप संजम ते न जाणो, थे० स्थिवर ! सं० संजमनो अर्थ (अनाश्रवपणुं ते) न जाणो, थे० स्थिवर ! सं० सर्वे इंद्रि अने नोइंद्रिनो निग्रहरुप संवर ते न जाणो, थे० स्थिवर ! सं० संवरनो अर्थ (अनाश्रवपणुं ते) न जाणो, थे० स्थिवर ! वि० विवेक (विशिष्ट बोध ते) न जाणो, थे० स्थिवर ! वि० विवेकनो अर्थ (त्याग अत्यागादि ते) न जाणो, थे० स्थिवर! वि० काउसग्ग (कायाना त्यागरुप ते) न जाणो, तेमज थे० हे स्थिवर ! वि० काउसग्गनो अर्थ वांछा रहित ते पण तमे न जाणो. त तेवारे थे० स्थिवरभगवंत, का० ते कालासवेसितपुत्र-अणगार प्रत्ये ए० एम कहेता हवा. जा० जाणीये छीए हे आर्य! सा० समता प्रणामरुप सामायक, हे आर्य ! सा० सामायकनो अर्थ (कर्म अनुपादान निर्जरारुप), जा० यावत् जा० जाणीए छीए हे आर्य! वि० काउसग्गनो (काया त्यागरुप तेनो) अर्थ कर्म निर्जरारुप, इत्यर्थ. त० तेवारे का० कालाशवेशितपुत्र नामे अ० साधु ते० ते थे० स्थिवरभगवंत प्रत्ये ए० एम केहेता हवा. ज० जो अ० हे आर्यो ! तु० तमे

जा० जाणो छो सा० सामायक, जा० वळी जाणो छो सा० सामायकनो अर्थ, जा० यावत् जा० जाणोछो वि० काउसग्गनो अर्थ, तो के० शुं ? तमारे सामायक, के० शु ? तमारे सामायकनो अर्थ, के० शु ? तमारे काउसग्गनो अर्थ ? इति प्रश्न त० तेवारे थे० स्थिवरजगवत का० कालाशवेशितपुत्र-अणगार प्रत्ये ए० एम केहेता हवा आ० आत्मा णे० अमारे मते आत्मा सामायक (जीव गुणप्रतिपन्न होय त्यारे सामायकज कहीये) आ० आत्माज अमारे सामायकनो अर्थ सामायक एटले सामायकतो जीवज पडिवजे, तेटला माटे जीवनेज सामायक कहीये सा० सामायकनो अर्थ नवा कर्म न बांधे अने पूर्वना कर्म खपावे ए गुणतो जीवकने छेज, पर जीवथी गुण जुदो नथी ते माटे आत्माज सामायकनो अर्थ जाणवो एमज सर्व जाणवु जा० यावत् आत्माज अमारे वि० काउसग्गनो अर्थ त० तेवारे ते का० कालाशवेशितपुत्र नामे अ० अणगार ते० ते स्थिवरजगवत प्रत्ये ए० एम कहे -ज० जो तमारे अ० हे आर्यो ! आ० आत्मा सामायक, वळी आ० आत्माज सामायकनो अर्थ, जा० यावत् आत्माज वि० काउसग्गनो अर्थ निरजन रुप छे, तो अ० तजीने को० क्रोध मान माया लोज कि० शा अर्थे ? हे आर्यो ! गरहो छो निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि इत्यादि निंदा दोष विषे सत्नवे जे जीवने सावद्य लागे ते गरहियें ? गुरु समीपे आलोइए ? इति प्रश्न उत्तर–का० हे कालाशवेशितपुत्र ! स० सजमने अर्थे सावद्य (पाप) गर्हा सजम थाय से० ते ज० हे जगवान ! शु ? ग० गर्हा संजम छे के अगर्हा सजम छे ? का० हे कालाशवेशितपुत्र ! ग० गर्हा सजम छे, पण नो० अगर्हा सजम नथी ग० गर्हा तेज रागादिक सर्व दोषने अथवा पूर्वकृत पापने अथवा दूषने प० छाके स० ज्ञान प्रज्ञाए जाणीने, प्रत्याख्यान प्रज्ञाए पचखीने ए० एम खु० निश्चे णे० अमारे मते आ० आत्मा स० सजमने विषे उ० उपचित पुष्ट थाय आत्मारुप सजम उपचित थाय ए० एम खु० निश्चे आ० अमारे आत्मा स० सजमने विषे अत्यंत स्थिर थाय ए० इहा मे का० कालाशवेशितपुत्र-अणगार पार्श्व

नाथजीना (अपत्य) शिष्य सं० न्नलीपेरे बोध पाम्या. थे० स्थिवरन्नगवंत प्रत्ये वं० वांदे, ण० नमस्कार करे, वं० वांदीने ण० नमस्कार करीने ए० एम व० केहेता हवा. ए० ए नं० हे न्नगवान ! प० पदोना पूर्वे (आ पदोने विषे) अणा० जाणपणुं नहोतुं, अस० स्वरुपे उलख्या नहोता, अस० पूर्वे सांन्नल्या नहोता, अबो० जिनधर्मनी (माहावीरना धर्मने विषे) प्राप्ती नहोती, अण० विस्तार बोध रहित इत्यादि हेतुए करी अदि० पूर्वे शाक्षात अर्थथी लह्या नहोता, अस्सू० कोइनी समीपे सांन्नल्या नहोता, अमु० दर्शन आकर्णनना अन्नावे करी. एटलामाटेज अवि० विशिष्ट बोध रहितने अवो० विशेषथी गुरुए कह्या नहोता, अवो० विपक्षादि शंदेह छेद्या नहोता, अणि० मोटा ग्रंथथी सुखावबोध न्नणी गुरुए कह्या नहोता, अणु० एटला माटेज अमे पूर्वे ए अर्थ अवधार्या नहोता, ए० ए प्रकारे ए अर्थ सरदह्यो नहोतो, णो० प्रतित कीधी नहोती, णोरो० रुच्या नहोता. ते इ० हवे नं० हे न्नगवान ! ए० ए पदना अर्थ ज्ञा० ज्ञानेकरी जाण्या, स० श्रवणेकरी शांन्नल्या, बो० सम्यक्तपणे बोध पाम्या, अ० विस्तारबोधी थया, दि० अर्थथी लह्या, सु० अर्थ शांन्नल्या, मू० दर्शन आकर्ण थया, वि० अर्थ विशेषे जाण्या, वो० विशेषथी गुरुए कह्या, वो० विपक्षादि शंदेह छेद्या, णि० मोटा ग्रंथथी सुखावबोध थया, उ० ए अर्थ अवधार्या, ए० ए अर्थ स० सरदहुं छुं, प० प्रतितुं छुं, रो० रोचवुं छुं. ए० अथ जेम ए वात तमे कहोछो ते सर्व तेमज छे. इति न्नाव इत्याकिक. ए न्यायथी मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी एक छे.

वली तेरापंथीना बनावेला तेरद्वारमां पण एम कहे छे के, आश्रव ने जीव एक. संवर ने जीव एक, निर्जरा ने जीव एक, अने मोक्ष नें जीव एक. माटे ए न्यायथी पण मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी एक छे. वली तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यात्वी आज्ञा बाहार छे, अने मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा मांही छे. एम कपटथी एकान्त जुठ बोले छे. डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली मिथ्यात्वीनी करणी वखाणे, तेने समकितमां अतिचार लागे. शाख सूत्र आवश्यक श्रावकना अतिचारमां, तथा

उपाशकदशामा ते पाठ लखीए छीए —

समणे भगवं महावीरे आणंदं समणोवासगं एवं वयासि एवं खलु आणंदा समणोवासएणं! अभिगय जीवाजीवे जाव अणातिक्कमई णिजेणं, सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेआला जाणियवा न समायरिवा तंजहाः-संका कंखा वितिगिछा परपासंडप्पसंसा परपासंड सथ्थवोवा ॥ १ ॥

अर्थ —हवे भगवंत, आणंदने एम कहे छे स० श्रमण भगवंत श्री माहावीर आ० आणंद नामे स० श्रमणोपासकने ए० एम व० क हेता हवा ए० एम ख० निश्चे आ० हे आणंद श्रमणोपासक! अ० जेणे जाण्या छे जी० जीव अजीवना भेद, तेने कोइ देवता के मानव धर्मेथी चुकावी न शके, ते माटे स० श्रावकने सम्यक्तना प० पांच अ० अतिचार पे० मिथ्यात्वपणे (न० स०) समाचरवा नहीं सं० ते कहे छे— सं० शंका एटले जीनधर्म साचो के जुठो, कं० परमतनी अभिलाषा तथा धर्म करणीना फलनी अभिलाषा, वि० धर्म संबंधि फलनो संदेह तथा साधुसाध्वीना मलमलीन गात्र वस्त्र देखी दुगंछा करे ते, प० पर दर्शनीनी प्रशंशा करे, तथा प० मिथ्यात्वीनो स० संस्तव परिचय करे तेने अतिचार लाग्या कहीयें

भावार्थ —हवे जुओ! मिथ्यात्वीनी करणी वखाणवी नहीं एम कह्यु, त्यारे ते आज्ञामां क्याथी? विवेकी हो ते विचारी जो जो वली तेरापंथी प्रत्ये एम कहेवु के, जो एहनी करणी आज्ञा माहेली अंश मानो छो तो, एनुं ज्ञान, चार वेद अने अढार पुराण छे, तेमां केटलीक निर्वद्यवाणी छे, तेने पण ज्ञानना अंश गणवा जोइए, अने केटलीक लोकीक एहनी वातो, रात, दीवस, स्त्रि, पुरुष, कपडु, इत्यादि अनेक वातो, जेम समकिति माने, तेमज मिथ्यात्वी माने छे, तेने पण सम दृष्टिनो अंश गणवो जोइए वली वेहेवारमा पाप त्याग करे ते, तथा

तामलीतापस आदिए पादपोपगमन संथारो कर्यो, ते पण चारित्रनो अंश गणवो जोइए. ए लेखे तो मिथ्यातमार्ग पण देशथकी मुक्ति पहोंचवानो मार्ग गणवो जोइए. अहो ढ्रढ कदाग्रहिउ! ए वात केम मले? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां न होय तो मिथ्यात्वीना समकिति केम थाय? तेनो उत्तर.

अरे भाइओ! मिथ्यातपणामां करणी करे तेथी अशुभ कर्म निर्जरे, तथा मोहनी कर्म पातलां पडे, तेथी कोइ जीवने भवथिति पाकी होय तो समकित आवे; अने समकित आव्या पछी ते जिनाज्ञानो आधारक कहेवाय. ते केवा दृष्टांते, ते कहे छेः—

"जेम कोइ गरीब वाणीओ बबे रुपीया भेला करीने लखपती थयो, पण ज्यारे पोताना हाथनी हुंडीओ पटे, त्यारे तेने कोठीवाल (साहुकार) कहीये. तेम मिथ्यातपणामां करणी करतां कर्म तुटे, तेथी समकित आवे, त्यारे तेने जिन-आज्ञानो आराधक कहीये; पण मिथ्यातपणामां करणी करतां अशुभ कर्म तुटे अने पुन्य बंधाय, तेथी ते जिनआज्ञानो आराधक कहेवाय नही. ते अनंती वेला नवग्रैवेयक सुधि गयो, पण अनंतां जन्म मरण कर्यां. जेम सिवराजरुषि, तामलीतापस अने पूरणतापसे मिथ्यातपणामां करणी करतां अशुभ कर्म तोडी पुन्य बांध्यां, तेथी तामलीतापस तथा पूरणतापस इंद्र थया, पण ज्यारे समकित पाम्या, त्यारे करणी लेखामां गणाणी. जेम रुपीआ भेला थया, हुंडी हाथनी पटेथी कोठीवाल कहेवाणा, पण हाथनी हुंडी पटया विना जे धन मल्युं ते विलाइ जाय (नाश थाय) तो ते कोठीवाल न कहेवाय. तेमज समकित आव्या पहेलां आराधिक न कहेवाय; पण ज्यारे समकित आवे त्यारेज तेने आराधिक कहीए". तेवारे तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यातपणामां जे करणी करी ते करणीज समकित आववानुं कारण छे, अने ते आज्ञा माहेली छे. एम कहे छे तेनो उत्तर.

अरे भाइउ! सिवराज, तामली अने पूरणना सरखी करणी अ-

नता जीवे अनती वार करी, नव ग्रैवेयक सुधी गया, पण समकित केम न आव्यु ? ए तो जब स्थिति पाकी, अने समकित आव्यु, तेथी ते लेखामा गणाणी, पण समकित आव्या विना मिथ्यात्वीनी करणी (आज्ञामा) लेखामा नही जो मिथ्यात्वमा करणी करता कर्म तुटे, ने समकित आवे, तेथी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामा कहो तो, ए लेखे समकितपणामा अने यथाख्यात-चारित्रमा आहार-वाहारना कामो करे, तेथी पाछा पडे अने मिथ्यात्वमा आवे शु ? तमारे लेखे यथाख्यात चारित्रमा पण आहार-आहारना कामोने मिथ्यात्वपणु केहेवु जोइए-ए वात केम मले ? तेवारे तेरापथी एम कहे छे के, जो मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामा नथी तो मिथ्यात्वीने दान देवानी, लोयल पाळवानी अने लोळोग्री छोडवानी आज्ञा केम आपो छो ? एम कहे छे तेनो उत्तर

जेम गुरुजी, मिथ्यात्वीने तथा अजवि शिष्यने सूत्र भणावे तथा ज्ञान आपे, पण तेने समकितरुपी भाजन नथी, तेथी तेने अज्ञान क होये तेम साधुजी तो आज्ञा माहेला कामोनीज आज्ञा आपे, अने ते आज्ञा माहेलु काम करे, तोपण तेने अनाज्ञा कहीये वली जावे साधु जीने भला जाणे, तथा भावे समकित होय तो तेने आज्ञा आराधक पणानो पण लाभ थाय, तेथी साधुजी मिथ्यात्वीने दानादिक (साधु जीने) देवानी आज्ञा आपे तेवारे तेरापथी कहे छे के, समकिततो जीव अजीवनु जथातथ्य जाणपणु आवे, तथा दस बोलने समा जा णीने सरदहे, त्यारे आवे तेनो उत्तर अहो मतवादीओ ! एतो वेहवार समकितने ओलखवाना लक्षण कह्या छे, पण निश्चे समकित तो अनता नुबधी चोकडीनो क्षयोपशम थयो तेने कहीये तेनी स्थिति जघन्य अतर मुहूर्तनी छे समकिति अतर मुहूर्तमा जथातथ्य जीव अजीवनुं जाणपणु शी रीते करे ? ते कहो वली अवध-ज्ञाननी थिति जघन्य एक समयनी कही छे शाख सूत्र पन्नवणा पद अढारमें एक समयमा ए अवधज्ञाने करी शु जाणी शके ? पण केवलज्ञानीए कर्मना आवरण एक समये आघा थयां होत, तथा बीजे समये आवणरने वली आव्या होत

ए न्याये जीवने दर्शनावरणी कर्मनो क्षयोपशम थयो होय तो जावे समकित कहीये. वली दस प्रकारे समकितनी रुची कही छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन अठावीसमें. तेमां देव, गुरु, धर्म, श्री वीत्तरागना वचन तथा साधुजीने संक्षेप थकी जला जाणे तेने संक्षेप-रुची-सम्यक्त कहीये. ए न्याये साधुजीने जला जाणे तो जावे समकित कहीये; तो आज्ञानो पण लाज थाय, तेथी साधुजी आज्ञा आपे. माह्या हो ते वीचारी जोजो. वली तेरापंथीने पुछीए के, मिथ्यात्वी आज्ञा मांहेली करणी करे तेथी तेनी गरज सरे के नही? तेवारे तेरापंथी कहे छे केः—

"तामली तथा पूरण-तापस, सीवराज-रुषी, असोचा-केवली, विजय-गाथापती, सुमुख-गाथापती तथा पूर्व जवे मेघकुमार, आदि अनेक जीव मिथ्यातपणामां करणी करी एका अवतारी तथा मोक्ष गामी थया, अने मिथ्यातपणामां करणी करी तेथी तेमनी गरज सरी." एवुं कपटथी बोले छे, अने बीजा साध-श्रावकोनी करणी उमावबाने वास्ते एवी ढाळो जोमी छे. ते गाथा लखीए छीएः—

सुध समगत विण पाळीयां, अज्ञानपणे आचार जवियण
नवग्रिवेग उंचो गयो पण, न सरी गरज लगार जवियण
कीजो जीन धर्मनी पारखा.

एवी तो जोमो करी छे, अने वली मोढे ी एम कहे छे के "मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां छे तेथी संसार परित थाय (गरज सरे), अने साध श्रावक निर्वध करणी करी देवलोकमां तथा नवग्रैवेयकमां जाय, तो पण शुद्ध समकित विना गरज सरे नही." एम कपटथी कोइ ठेकाणे कांइ, ने कोइ ठेकाणे कांइ एम जाणी जाणीने जुठुं बोले, तेनी प्रतीत केम आवे? ते माह्या हो ते विचारी जो जो. वली जगवती आदि घणा सूत्रमां मिथ्यात्वीने "एगंत बाले, एगंत अपंमिए, अपमिहय पावकंमे." कह्या. ते केम? जो ते आज्ञा मांहेलुं काम होय तो एकान्त अपंमित न कहे, केमके चोथे गुणठाणे जघन्य थकी ज्ञान दर्शनना गुण प्रगट्या तेथी तेने श्री वीत-

रागदेवे आज्ञाना आराधक कह्या ते माटे मिथ्यात गुणठाणानी करणी मूलथीज आज्ञामा नथी

हवे मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामा स्थापवा माटे तेरापंथी दृष्टान्त कहेछे के " जेम तलावनु पाणी वाणीआ ब्राह्मणादिकना घेरे आव्युं ते तो शुद्ध, अने अतज्यादि (चमाल) अधम लोक लइ जाय ते अशुद्ध छे, पण जुओने ! ईण जातनु पाणी ते उत्तमना पाणी मांहेलुं छे ते पाणी पीवाथी तृषा जाय के नही ? " एवा दृष्टांत आपे छे, पण अविवेकीओ एम नथी जाणता के, अहियां तो त्रण ठाम बताव्या छेः तलाव १, उत्तम २ अने अधम ३ तेम लोकोत्तर पक्षे श्री वीतरागदेव ते तलाव अने श्रुत चारित्र रुप धर्म कह्युं ते पाणी १, जिन मार्गी चोथा गुणठाणाथी मांरंजी चौदमा गुणठाणा सुधी जे जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अने उत्तरगुण चारित्ररुप तप क्रियाना करणहार ते सर्व उत्तम माणीना घर २, अने ३६३ पाखन्डी ते अधम लोकोना घर ३ जाणवां हवे जिनमत रुप तलाव माहेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण आराधना रुप पाणी माहेलु, मिथ्यात्वी कयुं पाणी लइ जाय ते कहो तेवारे तेरापंथी कहे के, तप, शुभ जोग, अने निर्जरारुप धर्म आज्ञा मांहे लो छे, ते रुप पाणी लइ जाय छे एम कहे छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! मूलगुण उत्तरगुण चारित्रविना तपने, निर्जराने अने शुभजोगने, धर्म तथा आज्ञानी आराधना कोइ ठेकाणे कही नथी ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा बाहार छे, अने आज्ञा बाहार पुन्य बंधाय छे. न्यायी हो ते विचारी जोजो वली तेरापंथीओ एम कहे छे के, संसार परित करवानी भगवाननी आज्ञा छे, अने मेघकुमारे आगला भवमा तथा सुमुखगाथा पती अने विजयगाथापती आदि अनेक जीवोए मिथ्यातपणामां संसार परित कीधो छे, तेथी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां कहीये छीए तेनो उत्तर अरे भाइओ ! सूत्र पाठमां तो तेओने मिथ्यात्वी कह्या नथी ते ज्ञाता सूत्रना अध्ययन पेहेलानो पाठ लखीए छीएः—

तएणं तुमं मेहा पाएणं गतं कंडुइस्सामि तिकट्टु पाए उ-क्खित्ते. तेसिंचणं अंतरंसि अणेहिय बलवंतोहिय सत्तेहिय पलाइजमाणो २ ससए अणुंपविठे. तएणं तुमं मेहा गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायंपडि निक्कमिस्सामि तिकट्टु तंससयं अणुपविठं पासेइ २ त्ता पाणाणुकंपयाउ भुयाणुकंपयाउ जीवाणुकंपयाउ सत्ताणुकंपयाउं अंतराचेव संधारिय नो चेवणं नखित्ते. तएणं तुमं मेहाताए पाणाणुंकंपयाए जाव सत्ताणुंकंपयाए संसार परित्तिकए मणुसाउ निबंधे. तएणंसे वणदवे अढाइवाइंराइं तं वणं खामिति निठिए उवरए उवसंते निव्वाए याविहोत्था. एगंवाससय परमाउ पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहेवासे रायगिहेनयरे से-णियस्सरणो धारिणिएदेविए कुछिंसि कुमारताए पच्चाया. तएणं तुमंमेहा अणुपुवेणं गब्भावासाउ निक्कंतेसमाणे, उमुक्क बालभावे जोवणग मणुपत्ते. ममंअंतिए मुंडे भ-वित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए. तंजइताव तुमेमेहा तिरिक्खजोणियभव मुवागएणं अपडिलद्ध सम्मत्तरयण लभेणं. सेमाए पाणाणंकंपयाए जाव अंतरांचेव संधारिए नोचेवणं निक्खिति. किमंग पुण तुमंमेहा इयाणिं विउल कुल समुब्भवेणं ॥ ४ ॥

अर्थः—त० तेवारे तु० तमे मे० हे मेघकुमार ! पा० पगे करीने ग० शरीर प्रत्ये कं० खंजोलसुं, ति० एवा हेतुथी पा०पग उ० उंचो उ-पाड्यो. ते० ते पगनी भूमिनी अं० वीचाले अ० अनेरा घणा ब० बल-वंत स० शत्व जीवोए, मांरुतुं भराणुं तेथी ठेलाठेलो करतां पगने

रागद्वेषे आज्ञाना आराधक कह्या ते माटे मिथ्यात गुणठाणानी करणी मूलथीज आज्ञामा नथी

हवे मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामा स्थापवा माटे तेरापंथी दृष्टान्त कहेछे के " जेम तलावनु पाणी वाणीआ ब्राह्मणादिकना घेरे आव्युं ते तो शुद्ध, अने अतज्यादि (चमार) अधम लोक लइ जाय ते अशुद्ध छे, पण जुठने ! ईण जातनु पाणी ते उत्तमना पाणी मांहेलुं छे ते पाणी पीधाथी तृषा जाय के नही ? " एवा दृष्टांत आपे छे, पण अविवेकोठ एम नथी जाणता के, अहिंया तो त्रण ठाम बताव्या छे तलाव १, उत्तम २ अने अधम ३ तेम लोकोत्तर पक्षे श्री वीतरागदेव तो तलाव अने शुभ चारित्र रुप धर्म कह्यु ते पाणी १, जिन मार्गी चोथा गुणठाणाथी प्रारम्भी चौदमा गुणठाणा सुधी जे जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अने उत्तरगुण चारित्ररुप तप क्रियाना करणहार ते सर्व उत्तम प्राणीना घर २, अने ३६३ पाखन्डी ते अधम लोकोना घर ३ जाणवां हवे जिनमत रुप तलाव माहेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण आराधना रुप पाणी माहेलु, मिथ्यात्वी कयु पाणी लइ जाय ते कहो तेवारे तेरापंथी कहे के, तप, शुभ जोग, अने निर्जरारुप धर्म आज्ञा मांहे लो छे, ते रुप पाणी लइ जाय छे एम कहे छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! मूलगुण उत्तरगुण चारित्रविना तपने, निर्जराने अने शुभजोगने, धर्म तथा आज्ञानी आराधना कोइ ठेकाणे कही नथी एन्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा बाहार छे, अने आज्ञा बाहार पुन्य बधाय छे न्याय हो छे विचारी जोजो वली तेरापंथीउं एम कहे छे के, ससार परित करवानी भगवाननी आज्ञा छे, अने मेघकुमारे आगला भवमा तथा सुमुखगाथापती अने विजयगाथापती आदि अनेक जीवोए मिथ्यातपणामा ससार परित कीधो छे, तेथी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां कहीये छीए तेनो उत्तर आरे जाणवो । सूत्र पाठमां तो तेहने मिथ्यात्वी कह्या नथी ते ज्ञाता सूत्रना अध्ययन पेहेलानो पाठ लखीए छीए:—

वीर मेघकुमार प्रत्ये केहेता हवा. ए ज्ञातासूत्रना प्रथमाध्ययननो सूत्रार्थ.

हवे सुखविपाकसूत्रना बीजा अध्ययननो पाठ लखीए छीएः—

तेणंकालेणं तेणंसमयेणं इहेव जंबुद्दीवे २ जारहेवासे हत्थिणाउरे णामं नयरे होत्था. तत्थणं हत्थिणाउरेणयरे सुमुहेणामं गाहावइ परिवसइ अह्ने. तेणंकालेणं तेणंसमयेणं धम्मघोसेणामंथेरा जाइसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुम्रा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं डइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरेनगरे जेणेव सहस्संब वणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ ता अहापडिरुवं उग्गहं उगिन्हित्ताणं संजमेणं तवसा अप्पाणं जावेमाणस्स. तेणंकालेणं तेणंसमयेणं धम्मघोसेणं थेराणं अंतेवासी सुदत्तेणामं अणगारे उराले जाव तेउलेसेणं मासेणं विहरइ. तंसे सुदत्तेअणगारे मासखमण पारणगंसि पढमाए पोरसिए सम्रायंकरेइ जहा गोयम तहेव धम्मघोस थेरा आपुछंति जाव अम्माणे सुमुहस्स गाहावइस्स गेहं अणुपविठे. तत्तेणंसे सुमुहे गाहावइ सुदत्तं अणगारं एजमाणं पासइ २ त्ता हठतुठे आसणाउ अब्भुठेइ पायपिढाउ पच्चोरुहेत्ति एगसाम्रियं उत्तरासंगंकरेइ सुदत्तंअणगारं सत्तठ पयाइं अणुगछंति २ त्ता आयाहिणं पयाहिणं करेति २ त्ता वंदइ नमंसइ जेणेव जत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ सयहछेणं विउलेणं असणं ४ पमिलाजेसमाणे तुठे. तत्तेणं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स दव्वसुधेणं दायगसुधेणं तिविहेणं तिकरणसुधेणं सुदत्तेअणगारे प-

स्थानके खाली भूमिकाने विषे स० ससलो अ० पेठो त० त्यार पछी तु० तुमे हे मेघकुमार ! गा० शरीर प्रत्ये क० खाजखणी, खणीने पु० वली भूमि प्रत्ये पा० हेठो पग मुकु, एम विचार करीने,नीचे पग मुकवा लाग्या, ति० एम करीने त०ते ससलाने अ० पगना स्थानके पेठो देख्यो, देखीने पा० बेइन्द्रियादिक प्राणीजीवनी अनुकंपा दयाथी, भु० भुत वनस्पति मात्रनी दयाथी, जी० पचेन्द्रिजीव मात्रनी दयाथी, अ० वचे निराधार ऊंचो पग राख्यो, पण नो० निश्चे धरतीए पग मुक्यो नही त०त्यार पछी तु० तमे मे० हे मेघकुमार ! पा० प्राणीनी अनुकंपा-दयाथी जा० यावत् स० शत्व पृथ्व्यादिकनी दया, तेमज ससलानी दयाएकरी स० संसार परित कीधो, तथा वली म० मनुष्यनु नि० आउखुं बांध्यु त० त्यार पछी व० वननो दव अ० अढी रात्रदिवस सुधी बल्यो, अने व० वन पोताना क्षेत्रथी ऊलाणो एटले दव बध पड्यो, उ० उपशान्त थयो अने ससलो बच्यो ते समयथी हे मेघ ! ए० एक सो वर्षनु प० परम उत्कृष्ट आउखु पा० पालीने, तमे इ० आज ज० जबुद्वीपनामा द्वीपने विषे, भा० भरतक्षेत्रने विषे, रा० राजग्रही नगरीने विषे से० श्रेणिकराजानी पटराणी धा० धारणिदेवनो कु० कुखने विषे कु० कुमारपणे प० उपन्या त० त्यार पछी तु० तमे हे मेघकुमार ! अ० अनुक्रमे ग० गर्भवासथकी नि० निसरी जन्म पाम्या उ बालभावपणु मुक्युं अने जो० जोवन वय प्राप्त थइ त्यार पछी म० माहारी समीपे मुं० मुन्ड भ० थइने आ० ग्रहस्थवास छाडीने अ० अणगारपणु लीधु त० ते कारणथीज प्रथम तु० तमे हे मेघकुमार ! ति० तिर्यंच-योनिना भव प्रत्ये उ० पाम्या अ० अणपाम्यु समकितरुप रत्न अर्थात समकित पाम्या न हुता ते पाम्या से० ते हवे पग मुकवानी खाली जग्याने विषे पा० प्राणी ससलो राख्यो, तेनी दया करी ते जा० यावत् अ० विचाले सं० उचो पग राख्यो, पण नो० निश्चे हे मेघ ! नि० तमे धरतीए हेठो पग मुक्यो नही कि० कि इति कोमलामन्त्रणे पु० वली तु० हे मेघ ! इ० इमणा वि० आ विस्तीर्ण कुलने विषे तमे उपन्या छो एम श्री माहा-

आसनथकी अ० उठे, उठीने पा० पादपीठ थकी प० हेठा उतरीने ए० एक पटने डुपटे उ० उत्तरासन करीने सु० सुदत्त-अणगारने स० सात आठ प० पग अ० सामो जाय, जइने त्रण प्रदक्षिणा करी आ० आवर्तन प० परावर्तन क० करे, करीने वं० वांदे, न० नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने जे० ज्यां भ० रसोडुं छे, ते० त्यां उ० आवे, आवीने स० पोताने हाथे वि० घणा अ० असनादिक ४ प० पडिलाभतो शंतोष पाम्यो. त० तेवारे ते सु० सुमुख गा० गाथापती ते द० द्रव्य शुद्ध, दा० दातारनुं चित्त शुद्ध, तथा ति० त्रिविध एटले शुद्ध मन, वचन, काया अने ति० त्रण करण शुद्धेकरी सु० सुदत्त-अणगारने प० प्रतिलाभ्येथके ते सुमुखनामा गाथापतीए सं० संसार प० परित कीधो. म० मनुष्यनुं वि० आउखुं बांध्युं. वली तेना घरने विषे इ० ए पं० पांच द० द्रव्य पा० प्रगट थया. व० धरतीने विषे वु० पंचवर्णा फुल अने कु० फुलनी मालानी नि० वृष्टी थइ. चे० देवडुष्य—वस्त्रनी वृष्टी थइ. आ० आकाशमां दे० देवडुंडुभी वाजी. अ० आंतरारहित आकाशने विषे अ० अहोदान म० मोटुं दान दीधुं, एम निर्घोष शब्द धु० थता हवा.

भावार्थः—हवे जुओ! मेघकुमारे हाथीना भवमां प्राणी, भुत अने जीवनी अनुकंपा कीधी, तेथी संसार परित्त कर्यो कह्युं. ए अनुकंपाने समकितनुं लक्षण श्री वीतरागदेवे कह्युं छे. ए न्यायथी ते वखतमां समकित भाषे छे; कारणके लक्षण होय त्यां लक्ष अवश्य होवुं जोइए. वली सुमुख-गाथापती साधुजीने देखीने हर्ष शंतोष पाम्या, मुखे जयणा कीधी, सातआठ पग सामा गया, अने त्रण करण त्रण जोग शुद्ध राखी, घणा उलट भावे दान दीधुं, तेथी संसार परित कर्यो. ए लक्षणतो समकितीना दीसे छे, अने मिथ्यात्वी तो शुद्ध देव-गुरु-धर्मने खोटा जाणे तेने कहीये. तमे सुमुख-गाथापतीने मिथ्यात्वी कया ज्ञानेकरी जाण्या? ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, समकितीने तो एक

मिखाजेसमाणे ससार परितकए मणुसाउए निवधे. इमा-
र्हि पच दवाइ पाउव्भुआइ वसुदारा वुहि दस-द्ववणे कु-
सुमे निवात्तिते, चेलाखेलव करेंति, आकासाउ देवदुन्दुही
अणतर वियणं आसासति अहोदाण महोदान घुठेय ॥

अर्थ—हवे सुख–विपाकसूत्रना पाठनो अर्थ कहे छे ते० ते कालने विपे ते० ते समयने विपे इ० आ ज० जबुद्वीपनामे द्वीपने विपे, भ० भरतक्षेत्र माहे, ह० हस्तिनापुरनामे न० नगर हो० हतु त० त्या ह० हस्तिनापुर ण० नगरने विपे सु० सुमुखनामे गा० गाथापती प० रेहेतो हतो अ० ते रुद्धिवत हतो ते० ते कालने विपे ते० ते समयने विपे ध० धर्मघोपनामे थे० स्थिवर जा० जाति कुल सर्व गुण सहित जा० यावत् प० पांचसो स० श्रमण साधुनी सि० साथे स० प्रवर्तताथका पु० पूर्वानुपूर्वे च० विचरता, गा० ग्रामानुग्रामे दु० अनुक्रमे उलघता, जे० ज्यां ह० हस्तिनापुर नगर छे, जे० ज्या स० सहस्त्रावनामे व० वन उ० उद्यान छे, ते० त्या उ० आव्या, आवीने अ० यथायोग्य उ० स्थानक मागमा उतरवानी आज्ञा मागीने स० सत्तरभेदे सजम अने त० बार भेदे तपे करी अ० पोतानी आत्माने भा० भावता विचरे छे ते० ते कालने विपे ते० ते समयने विपे ध० धर्मघोपनामे थे० स्थिवरना अं० शिष्य सु० सुदत्तनामे अ० अणगार उ० जेनो भलो आचार छे, जा० यावत् जेणे ते० तेजुलेश्या गोपवी राखी छे, ते मा० माससमास खमण करता वि० विचरे छे त० ते सु० सुदत्तनामे अणगार मा० मास खम णने पा० पारणे प० पेहेली पो० पोरसिए स० सझाय करीने ज० जेम गो० गौतमस्वामी श्री माहावीरदेवने पुछीने गौचरीए जता त० ते मज ध० धर्मघोप थे० स्थिवरने आ० पुछीने जा० यावत् अ० फरता थका सु० सुमुखनामे गा० गाथापतीना गे० घरने विपे अ० आव्या त० तेवारे से० ते सु० सुमुख गा० गाथापती सु० सुदत्त अ० अणगारने ए० आवता पा० देखे, देखीने ह० हर्ष संतोप पाम्या, पामीने आ०

सूत्र पन्नवणा पद १७ मे. वली एक जीवने एक भवमां अशंख्याती वेला सम्यक्त आवे अने जाय, एम कह्युं छे. वली समकितिनी जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्तनी कही छे. ते अंतर मुहूर्तना अशंख्याता भेद छे. जघन्य बे समयने अंतर मुहूर्त कहीये; केमके वेदनी कर्मनी जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्तनी कही छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ३३ में तथा भगवतीजीमां तथा पन्नवणा पद २३ में. वेदनी कर्मना बे भेदः— शाता अने अशाता. शाता वेदनीना बे भेदः-संप्राय अने इरियावही. इरियावहीनी स्थिति बे समयनी कही छे. शाख सूत्र पन्नवणा पद २३ में तथा भगवतीजीमां. ए न्याये जघन्य बे समयने अंतर मुहूर्त कहीये, अने उत्कृष्टा बे समयथी मांडीने एक अंतर मुहूर्तमां एक समय उणो होय तेने अंतरमुहूर्त कहीये. एम असंख्याता भेद छे.

ए न्याये आउखाना बंध समये सम्यक्त गयु दीसे छे. जेम मेघकुमारने हाथीना भवमां, तथा सुमुख तथा विजय-गाथापतीने सम्यक्त फर्शवाथी संसार परित थयो छे, तथा सम्यक्तथी सनमुख थया छे, अने मनुष्यनुं आउखुं बांध्युं तेवेला सम्यक्त गयुं दीसे छे. पछी तो श्री केवलीमाहाराज स्वीकारे ते सत्य छे. वली ज्यारे मेघकुमार संजमथी डगीने प्रभुपासे आव्या, त्यारे श्री वीरप्रभुए कह्युं के, "हे मेघ! तें हाथीना भवमां दया पाली, तेथी तिर्यंचना भवमां सम्यक्त लाध्युं." एम कह्युं. ते श्री ज्ञाताजीना अध्ययन पेहेलानो पाठ लखीए छीएः—

तंजइत्ताव तुमे मेहा तिरिक्ख-जोणिय भवमुवागएणं अप्पडिलद्ध सम्मतरयण लंभेणं सेमाए पाणाणुकंपयाए जाव अंतराचेव संधारिए णो चेवणं णिक्खित्ते किमंगपुण तुमे मेहा इयाणिं विउल कुल समुब्भवेणं ॥

अर्थः—पुर्ववत्. जुओ प्रश्न पहेलो. पाछलपांने ४ए में.

भावार्थः—अहीया कह्युं छे के, कोइ दीवस नही मलेलुं एवुं

वैमानीक देवतानु आउखु बधाय, अने एमने तो मनुष्यनु आउखु ब धार्यु तेथी मिथ्यात्वी जाण्या एम कहे छे तेनो उत्तर —

अरे ज्ञाइओ ! श्री कृष्णमाहाराज तथा श्रेणीकमाहाराज, ए समकिती हता तेमनु नर्कनु आउखुं केम बधायु ? तेवारे तेरापथी कहे छे के, पेहेला नर्कनु आउखुं मिथ्यातपणामा बधायु, अने पछी समकित आव्युं एम एकान्त जुठ कहे छे हे देवानुप्रीय ! केटलाक जीवोने तो वर्तमान ज्ञवनु आउखुं छ महिना बाकी रहे, त्यारे परज्ञवनुं आउखु बंधाय छे, अने केटलाक जीवोने आउखानो त्रीजो ज्ञाग रह्या पछी प रज्ञवनु आउखु बधाय छे, पण बे ज्ञागमा तो कोइ जीवने परज्ञवनुं आउखुं बंधाय नही तेनी शाख सूत्र पन्नवणा पद २३ में

हवे जुओ ! श्री कृष्णमाहाराजनु हजार वर्षनु आउखु हतु, तेमां थी ६६६ वर्ष ऊकेरां गया, त्यां सुधी तो परज्ञवनु आउखु बंधायु नहीं, अने समकित तो श्री नेमनाथ ज्ञगवतने केवलज्ञान उपज्युं, त्यारबाद शेवाज्ञक्ति करी दीशे छे वली कृष्णमाहाराज आसरे त्रणसो वरसना हृता, त्यारे राजेमतिने आवीने कह्युं के, "हे कन्या ! नेमनाथ ज्ञगवान तो ससारसमुद्र तर्या, ने तुपण ससारसमुद्र तर " एवां वचन कह्या छे इहा सम्यक्त दीसे छे, अने पछी आउखु बधावाना समये सम्यक्त गयु, तेथी नर्कनु आउखु बंधायु दीशे छे, अने पछी वली सम्यक्त आव्युं दीसे छे वली कृष्णमाहाराजने क्षायक-सम्यक्ति परिपाटीमा (परपरामां) कहे छे ते क्षायक-सम्यक्त आउखु बाध्या पछी आव्यु होय तो अटकाव नही, पण सूत्रपाठमा तो क्षायक-सम्यक्त कह्युं नथी क्षयोपशम-सम्यक्त दीसे छे तेनी स्थिति जघन्य अतरमुहूर्तनी अने उत्कृष्टी ६६ सागरनी कही छे सास्वादन-सम्यक्तनी जघन्य तथा उत्कृष्टी छ आवलकानी, उपशम-सम्यक्तनी एक समयनी अने उत्कृष्टी अतर मुहूर्तनी, वेदक-सम्यक्तनी जघन्य उत्कृष्टी एक समयनी छे, अने क्षायक-सम्य क्तनी आद छे पण अत नथी, एटले ते आव्यु पाछुं जाय नही शाख

गो० हे गौतम! स० सनत्कुमार दे० देवेंद्र देवराजा ज० जव्य छे नो० अजव्य नथी, ए० तेमज स० सम्यक दृष्टि छे, प० अल्प संसारी छे, अनंत संसारी नथी, सु० सुलजबोधी छे डुर्लजबोधी नथी, आ० आराधक छे विराधक नथी, च० चरम छे, ए रीते प० प्रशस्त (जला) केहेवा अने अप्रशस्त छोमवा. से० ते शा अर्थे जं० हे जगवान! एम कह्युं? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! स० सनत्कुमार दे० देवेंद्र देवराजा ब० घणा स० श्रमण साधुने, ब० घणी स० श्रमणी साधवीने, ब० घणा सा० श्रावकने, ब० घणी सा० श्रावीकाने, हि० हित सुख निबंधन वस्तुना वान्छक १, सु० सुखना वान्छक २, प० डुःख त्राणना कामी एटले जुख्याने सुखकारी आहार आपे ३, अ० कृपाएकरी सहित ४, नि० मोक्षना इच्छक छे ५. हि० हितसुख अने अदुःखानुबंध नि० निशेष समस्तने वान्छे. एम जाणे के समस्त दुःखरहित थाउं ने मोक्ष जाउं. एवा हितना कारणथी साध-साधवी तथा श्रावक श्रावीका आदिनुं सुख वान्छे छे. से० ते अर्थे गो० हे गौतम! स० सनत्कुमार दे० देवेंद्रदेवराजा ज० जव्य छे जा० यावत् नो० अचरम नथी.

जावार्थः—हवे जुउ! ए बार बोलमां संसार एकथी एक बोलमां हलवो कह्यो. ए अजवि नथी पण जवि छे. जविना बे जेदः—समकिति अने मिथ्यात्वी. ए कोण छे? ए समकिति छे. समकितिना बे जेदः- अनंत-संसारी अने परित-संसारी. ए कोण छे? ए परित-संसारी छे. परित-संसारीना बे जेदः- सुर्लजबोधी अने दुलजबोधी. ए कोण छे? ए सुलजबोधी छे. सुलजबोधीना बे जेदः- आराधक अने विराधक. ए कोण छे? ए आराधक छे. आराधकना बे जेदः- अचरम अने चरम. ए कोण छे? ए चरमशरीरी छे. ए जुउ! समकित पेहेलुं कह्युं, अने संसार परित पछी कह्युं. ए न्याये मिथ्यातमां संसार परित थाय नहीं. वली परित-संसारीनी स्थिति उत्कृष्टी अर्धपुद्गल देश उंणी कही; अने समकित आव्या पछी पण संसार उत्कृष्टो अर्धपुद्गल देश उंणो बाकी रह्यो कह्यो; अने समकितिनी अने परित-संसारीनी जघन्य

समकित-रत्न मस्यु मूलपाठना अक्षरनो तो एवो अर्थ थाय छे, अने केटलाक टबामा मुलगो अर्थ करीने पछी कह्युं छे के, "एतावता सम्य क्त्व अणपाम्यो" पण जुओ ! ए अर्थ कया पाठना अक्षर छे? पाठ विना अर्थ प्रमाण थाय नही माटे मुलगा अर्थमा समकित-रत्न पाम्या कह्युं, तेज प्रमाण छे वली सनत्कुमार इन्द्रनी, सुर्याभदेवनी अने बीजा इन्द्रोनी वार बोलनी पुछा चाली, तेमा श्री वीतरागदेवे "सम्यक" पेहेलु कह्यु छे, अने परित ससार पछी कह्यो छे तेनी शाख सूत्र श्री भगवतीजी शतक त्रीजे उद्देशे पेहेले ते पाठ लखीए छीए —

सणंकुमारेण भंते! देविंदेदेवराया किं? भवसिद्धिए अभव सिद्धिए सम्मदिठिए मिच्छादिठिए परितससारिए अणंत-ससारिए सुलभबोहिए दुलभबोहिए आराहए विराहए चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सणकुमारे देविंदेदेवराया भवसिद्धिए नो-अभवसिद्धिए एव सम्मदिठि परित्तसं-सारि सुलभबोहिए आराहए चरिमे पसथनेयव्व सेकेण-ठेणं भंते ! गोयमा ! सणंकुमारे देविंदेदेवराया बहुण समणाणं बहुण समणीण बहुण सावयाण बहुण सावि याण हियकामए सुहकामए पथ्थकामए आणुकपिय निस्सयसिय हियसुह निस्सेसकामए सेतेणठेण गोयमा! सणकुमारे देविंदे भवसिद्धिए जाव नोअचरिमे ॥

अर्थ —श्री माहावीर स्वामी प्रत्ये गोतम स्वामी पुछता हवा स० सनत्कुमार भ० हे भगवान ! दे० देवेंद्र देवराजा किं० शु भ० भव सिद्धिक भव्य छे, के अ० अभव्य छे? स० सम्यक्‌दृष्टि छे के मि० मि थ्यादृष्टि छे ? प० अल्पससारी छे के अ० अनतससारी छे ? सु० सुलभ बोधी छे के दु० दुर्लभबोधी छे ? आ० ज्ञानादिकनो आराधक छे के वि० विराधक छे ? च० चरम छे के अ० अचरम छे ? इति प्रश्न उत्तर

पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ नोदुपच्चक्खायं एवं खलुसे सुपच्चक्खाइ ॥ सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्च क्खायमिति वदमाणे सच्चंभासं भासइ नोमुसंभासं भासइ एवं खलुसे सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंत पंडियाविभवइ ॥ सेतेणठेणं गो० ! एवंवुच्चइ जाव सिय दुपच्चक्खाय भवइ. ॥

अर्थः—श्री माहावीर भगवंत प्रत्ये गौतमस्वामी पुछता हवा. से० ते निश्चे भं हे भगवान ! स० सर्व प्राणेकरी, स० भु० सर्व भुते-करी, स० जी० सर्व जीवेकरी, स० स० सर्व सत्वेकरी, (यतः ॥ प्राणा द्वित्री चतुः प्रोक्ता, भूतास्तु तर्व स्मृता, जीवा पंचेंद्रिया ज्ञेया, शेषा सत्वा प्रकीर्तीता ॥ १ ॥) प० सर्व चेतनने हणवानुं पचखाण में कर्युं, एवुं कहे तेने सु० भलुं पचखाण भ० थाय के डु० माठुं पचखाण भ० थाय ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! स० पा० सर्व प्राणेकरी, सर्व भुतेकरी, सर्व जीवेकरी जा० यावत् स० सर्व सत्वेकरी जा० पचखाण सुपचखाण पण थाय अने डुपचखाण पण थाय. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान ! ए० एम कह्युं ? उभय वस्तु थाय. इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! ज० जे स० सर्व प्राण भुत जीवनो जा० यावत् स० सर्व सत्वनो प० नियम में कीधो, में हणवाना पचखाण कर्या, एम कहे तेने, णो० नही ए० एम अ० वक्ष्माण प्रकारे एटले आगल कहीये छीये तेम तेने ज्ञानेकरी जाणपणुं न होय. इ० ए जीव छे, इ० अ० ए अजीव छे, इ०त० ए त्रस जीव बेइंद्रियादिक छे, इ०था० ए स्थावर वृक्षादिक छे, त० ते स० सर्व प्राणनुं यावत् स०स० सर्व सत्वनुं प० पचखाण कर्युं छे एम कहे छे, पण जीव-अजीव त्रस स्थावनुं स्वरुप ज्ञानेकरी जाण्युं नहोय तेने, नो० सुपचखाण न थाय. (ज्ञानना अभावे

स्थिति अंतर मुहूर्तनी कही ते ससार परित्त कीधा पछी अंतरमुहूर्तमां मुक्ति जाय शास्त्र सूत्र पन्नवणा पद १७ में ए न्याये समकित आव्या पछीज ससार परित्त थाय, पण मिथ्यातमा ससार परित्त थाय नहीं पछीतो श्री केवली माहाराज जाणे वली जेने जीव अजीव अने त्रस थावरनु जाणपणु नथी, तेना पचखाणने दुपचखाण कह्यां तेनी शास्त्र सूत्र भगवतीजी शतक सातमे, उद्देसे बीजे ते पाठ लखीए छीए –

सेणुण भते ! सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्ते-हिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ दुपच्च-क्खाय भवइ ? गो० ! सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं जाव सिय दुपच्चक्खायं भवइ ॥ सेकेणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ ? सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं जाव सिय दुपच्चक्खाय भवइ गो० ! जस्सण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय-मिति वदमाणस्स णो एव अभिसमणागय भवइ इमे जीवा इमे अजीवा इमे तसा इमे थावरा त-स्सणं सव्वपाणेहिं सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नोसुपच्चक्खाय भवइ दुपच्चक्खाय भवइ एव खलुसे दुपच्चक्खाइ ॥ सव्वपाणे जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्चभास भासइ मोसभास भासइ एव खलुसे मुसावाइ ॥ सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिवि-ह तिविहेण असजय अविरय अप्पडिहय पच्चक्खाय पाव कम्मे सकिरिए असवुडे एगतदडे एगतबालेया वि भवितस्सइ जस्सण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमितिवदमा-णस्स एव अभिसमणागय भवइ इमे जीवा इमे अजीवा इमे तसा इमे थावरा तस्सणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं

पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ नोडुपच्चक्खायं एवं खलुसे सुपच्चक्खाइ ॥ सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्च क्खायमिति वदमाणे सच्चंभासं भासइ नोमुसंभासं भासइ एवं खलुसे सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंत पंडियाविभवइ॥ सेतेणठेणं गो० ! एवंवुच्चइ जाव सिय दुपच्चक्खाय भवइ. ॥

अर्थः—श्री महावीर भगवंत प्रत्ये गौतमस्वामी पुछता हवा. से० ते निश्चे भं हे भगवान ! स० सर्व प्राणेकरी, स० भु० सर्व भुते-करी, स० जी० सर्व जीवेकरी, स० स० सर्व सत्वेकरी, (यतः ॥ प्राणा द्वित्री चतुः प्रोक्ता, भूतास्तु तर्व स्मृता, जीवा पंचेंद्रिया ज्ञेया, शेषा सत्वा प्रकीर्तीता ॥ १ ॥) प० सर्व चेतनने हणवानुं पचखाण में कर्युं, एवुं कहे तेने सु० भलुं पचखाण भ० थाय के डु० माठुं पचखाण भ० थाय ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! स० पा० सर्व प्राणेकरी, सर्व भुतेकरी, सर्व जीवेकरी जा० यावत् स० सर्व सत्वेकरी जा० पचखाण सुपचखाण पण थाय अने डुपचखाण पण थाय. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान ! ए० एम कह्युं ? उभय वस्तु थाय. इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! ज० जे स० सर्व प्राण भुत जीवनो जा० यावत् स० सर्व सत्वनो प० नियम में कीधो, में हणवाना पचखाण कर्या, एम कहे तेने, णो० नही ए० एम अ० वक्षमाण प्रकारे एटले आगल कहीये छीये तेम तेने ज्ञानेकरी जाणपणुं न होय. इ० ए जीव छे, इ० अ० ए अजीव छे, इ०त० ए त्रस जीव बेइंद्रियादिक छे, इ०था० ए स्थावर वृक्षादिक छे, त० ते स० सर्व प्राणनुं यावत् स०स० सर्व सत्वनुं प० प-चखाण कर्युं छे एम कहे छे, पण जीव-अजीव त्रस स्थावनुं स्वरुप ज्ञा-नेकरी जाण्युं नहोय तेने, नो० सुपचखाण न थाय. (ज्ञानना अभावे

करी जेम छे तेम पाले नहीं, ते माटे सुपचख्खाणपणानो अन्नाव छे). वत ओ जीवेवि नयाणाइ अजीवेवि नयाणइ जीवाजीवे अयाणतो, कहतो नाहि सजम ॥ गाथार्थ –जे जीवअजीना भेद जाणे छे, तेने सुपचखा णी संजमी कहेवो, पण जे जोवअजीवना भेद जाणतो नथी, ते सुप चखाणी संजमी कहेवाय नहीं, (एटले ते सुपचखाणना अन्नावे करीने असंजमी छे इत्यादि) पण 'दु० दुपचखाण थाय एटले तेनां मागां पचखाण कहीए ए० एम ख० निश्चे दु० दुपचखाणी कहीये स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् सर्व सत्वेकरी प० में पचखाण कर्युं एम कहे ते, नो० साची भाषा बोलतो नथी, एटले मो० कुडी भाषा बोले छे ए० एम निश्चे मु० ते जुठ बोलणहार छे स० सर्व प्राणीने विषे जा० यावत् सर्व सत्वने विषे ति० त्रिविध (करनार, करावनार अने अनुमो-दनार ए त्रण त्रिभ भेद योग आश्रइने ति० मन-वचन-कायाए करी अ० असंजति प्राणवधादि भहारने विषे अयत्नवंत अ० व्रतरहित, अ० नथी हण्या पचखाणे करी पा० पापकर्म जेणे, स० कायिक्यादि क्रिया सहित अ० नथी संवर्या आश्रवद्वार जेणे, ते ए० सर्वथा प्रकारे स० परप्रत्ये दंडे, तथा ए० सर्वथा प्रकारे अज्ञानी होय वली ज० जे स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् सर्व सत्वेकरी प० पचखाण में कर्युं, एवुं कहे तेने, ए० एम वक्ष्माण प्रकारे अ० जाण्यु होय इ० ए जीव छे, इ० ए अजीव छे, इ०त० ए त्रसजीव छे, इ० ए स्थावर वृक्षादिक छे, त० तेने स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् स० सर्व सत्वेकरी प० पचखा ण में कर्युं, एवुं केहेता ते सु० सुपचखाणी थाय, पण नो० दुपचखाणी न थाय ए० एम निश्चे से० ते सु० सुपचखाणी थाय वली स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् स० सर्व सत्वेकरी, त्रिविधे त्रिविधे करी प० में पचखाण कर्युं, एम व० कहे ते स० सत्य वाणी बोलनार केहेवाय, पण नो०मु० निश्चे ते जुठनो बोलणहार न केहेवाय ए० एम निश्चे ते स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत सर्व सत्वेकरी ति०ति० त्रिविधे त्रिविधे करी स० संजति वि० विरति प० प्रतिहत प० पचखाणे करी पा० पापकर्म-

जेणे, अ० कायिक्यादि क्रिया रहित सं० संवर्या छे आश्रवद्वार जेणे, ते ए० एकान्त पं० पंडित सर्वथा-ज्ञानी थाय. से० ते तेणे अर्थे गो० हे गौतम! ए० एम वु० कह्युं जा० यावत् सि० कोइ सुपचखाणी थाय अने दु० कोइ दुपचखाणी पण थाय.

भावार्थः—हवे जुओ! मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां होय तो श्री वीतरागदेवे तेनां पचखाण भागां केम कह्यां? माह्या हो ते वीचारी जो जो. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा बाहार कहीये; अने आज्ञा बाहार पुण्य बंधाय छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पुण्य बंधाय ते आज्ञा मांहेली करणी छे, अने आज्ञा बाहारनी करणीमां एकान्त पाप बंधाय छे. तेमने पुछवुं के, उववाइआदि घणा सूत्रमां मिथ्यात्वीने जिनाज्ञाना (परलोकना) अणआराधक तो कह्या छे, पण मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां क्यां कही छे? अने मिथ्यात्वीने जिनाज्ञाना (मोक्षना) आराधक क्या सूत्रमां कह्या छे? ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, भगवती सूत्र शतक आठमे उद्देशे दसमे चोभंगी कही छे, तेना पेहेला भांगामां मिथ्यात्वीने देश आराधक कह्या छे. एवी एकान्त जुठी शाख बतावे छे, पण त्यां तो एम कह्युं छे के, केटलाक मिथ्यात्वी ज्ञानने श्रेष्ट कहे छे, केटलाक शीलाचारने श्रेष्ट कहे छे अने केटलाक शीलाचार तथा ज्ञान, ए बन्नेने श्रेष्ट कहे छे. एम एकान्त त्रण प्रकारे मिथ्यात्वी श्रेष्ट कहे छे, तेने भगवंते जुठा बोला कह्या छे. ते पाठः—

रायगिहे जाव एवं वयासि अण्णउत्थियाणं भंते! एव माइ क्खइ जाव एवं परुवेइ एवं खलु सीलं सेयं सुयंसेयं सीलं सुयंसेयं. सेकहमेयं भंते! एवं गो०! जणंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खइ जाव जेतेएवमाहंसु मिछंते एव माहंसु. अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परुवेमि एवं खलु मए चत्तारि पुरुषजाया पं० तं० सीलसंपन्नेणामएगे णोसुयसं-

पन्ने, सुयसंपन्नेणामएगे णो सील सपन्ने, एगे सीलसपन्नेवि सुयसंपन्नेवि, एगे णोसीलसंपन्ने णोसुयसपन्ने तत्थणं जेसे पढमे पुरिसजाए सेणंपुरिसे सीलवं असुयवं उवरए अविणायधम्मे एसणं गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहे पणत्ते तत्थणं जेसे दोच्चे पुरिसजाय असीलवंसुयवं अणुविरए विणायधम्मे एसण गो०! मए पुरिसे देसेविराहए पं०. तत्थण जेसे तच्चे पुरिस जाए सेणं पुरिसे सीलव सुयवं उवरय विणायधम्मे एसण गो०! मए पुरिसे सव्वाराहए प०. तत्थण जेसे चउथे पुरिसजाए सेणं पुरिसे असीलव असुयवं अणुविरए अविणायधम्मे एसणं गो०! मएपुरिसे सव्वविराहए प० ॥

अर्थ —रा० राजगृही नगरीने विषे जा० यावत् ए० एम व० कहे अ० अन्यतिर्थी, भ० हे भगवान ! ए० एम कहे छे, जा यावत् ए० एम प० परुपे छे -एवं खलु सीलसेय सुयसेय सीलंसुयं सेयमिति० एम लोक प्रसिद्ध न्याये करी निश्चे अर्हिया केटलाक अन्यतिर्थी क्रिया मात्रथीज वांछितार्थनी सिद्धि वाछे छे, एटले क्रियाथीज मोक्ष माने छे ते कहे छे के, ज्ञानथी काइ प्रयोजन नथी, कारण के घटादिक कार्यनी प्रवृत्तिने विषे आकाशादि पदार्थवत् निचेष्टित छे यतः

जहा खरो चंदन भारवाहि, भारसभागि नहु चंदणस्स,
एवंखु नाणि चरणेण हिणो, णाणस्सभागि नहु सग्गइजो॥

जेम रासभ चंदनना भारो वेहेनार, भारनो भजनहार होय, पण चंदननो गुण जाणनार न होय, तेम निश्चे जे ज्ञानी चारित्रे करी हीण होय ते, ज्ञाननो भजनहार होय, पण ते सुगतिनो (मुक्तिनो) भजनहार न होय एटला माटे सीलनो श्रेयपणं एम परुपे छे के, मोक्षसिपात

विरमण ध्यान अध्ययनादिरुप क्रिया तेज अतिशये करी श्रेय (प्रशंशनिय) छे, कारण के पुरुषार्थ साधकपणाथी ते क्रियानेज वान्छे, तथा केटलाक सु० ज्ञानथीज वान्छितार्थनी सिद्धि वान्छे छे, पण क्रियाथी नथी वान्छता; कारण के ज्ञानने क्रिया विना पण फल सिद्धिरुप कह्युं छे.

आहच्चः-पढमं णाणं तउ दया एवं चिठइ सव्वसंजए;
अणाणि किंकाही किंवा नाहि सेय पावगं ॥१॥

एटला माटे श्रुतनो नेश्रायवंत एम परुपे छे के, श्रुतज्ञान तेज पुरुषार्थ सिद्धिपणा माटे अतिशये करी श्रेय आश्रय करवा योग्य छे, पण सील क्रियानुं प्रयोजन नथी; अने केटलाक ज्ञान, क्रिया बंन्नेने अन्यो अन्य निर्पेक्ष वांछे छे. ज्ञान, क्रिया विनाज उपसर्जनी जुत फल आपे, अने क्रिया पण ज्ञान विना उपसर्जनी जुत फल आपे, इति भाव. एटला माटे ते कहे छे के, श्रुत श्रेय; तथा सील श्रेय. ए बंने प्रत्येके पुरुषने पवित्रताना निबंधनपणाथी श्रेय छे. बीजा केटलाक एम कहे छे के, शील श्रेय, ते मुख्य वृत्तिए तथा गौण वृत्तिए करी एकेकने उपकारपणाथी इत्यर्थ. ए अर्थ अहिंयां सूत्रने विषे काकु पाठथी लान्नीए छीए. ए पुर्वोक्त त्रणे पक्षने विषे अनंगपणाथी फल सिद्धि न थाय. समुदाय पक्षनेज फलसिद्धि थाय.

आहच्चः-णाणं पयासय सोहउ, तवो संजमोय गुत्तिकरो,
तिसहंपि समाउग्गो, मोखो जिण सासणे जणिउं॥१॥

तप संजम ए बन्ने सीलज छे. तथा

संजोग सिध्दिए फलवयंति, नहु एक चक्केण रहो पायइं;
अधोय पंगु वणे समिच्चा, तेसंप्पउत्ता नगरे प्पविठइ॥२॥

बीजा व्याख्यान पक्षे पण मिथ्यात्वी संजोगथकी फल सिद्धिना देवाथी, अकेक प्रधान गौण विवक्षाए करी असंगतपणाथी सिद्धि छे. एम विसंवादरुप परुपे छे.

पाठार्थ –से० ते केम भं० हे जगवान ! ए० एम कह्यु ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! ज० यदि ते अ० अन्यतिर्थी ए० एम मा० कहे छे, जा० यावत् जे० पुर्वे कह्यु तेम कहे, तो मि० जुठु छे ए० एमनुं कहेछुं अ० हुं पु० वली गो० हे गौतम ! ए० एम मा० कहु छुं जा० यावत् प० परुपु छुं –श्रुतयुक्त शील श्रेय, एटले ज्ञान सहित क्रिया वान्छितार्थ फलदायक थाय यत हत ज्ञानं क्रिया हीनं, इत्यादिक तथा अंधपंगुने दृष्टान्ते करी ज्ञानयुक्ते करी श्रेय एवु वाक्य शेष देखवुं ए० एम ख० निश्चे मे० में च० च्यार पुरुषना प्रमाण प० कह्या, त० ते कहे छे –सी० त्यां एक पुरुष शील एटले क्रियासहित छे, पण णो० सु० ज्ञाने करी स हित नथी, एटले ज्ञानरहित छे १, एक पुरुष सु० श्रुत एटले ज्ञाने करी संपन्न छे, पण णो०सी० क्रिया सपन्न नथी, एटले ज्ञानयुक्त क्रियारहित छे २, ए० एक पुरुष सी० क्रियाए करी पण सहित छे अने सु० ज्ञाने करी पण सहित छे, एटले ज्ञान अने क्रिया बन्ने युक्त छे ३, अने ए० एक पुरुष णो०सी० क्रियाए करी सहित नथी, अने णो०सु० ज्ञाने करी सहित नथी, एटलें ते पुरुष ज्ञान अने क्रिया बन्नेथी (विकल) भ्रष्ट छे ४ त० त्या जे० जे प० प्रथम पुरुष जाण, से० ते पुरुष से० सी० क्रियावंत छे, पण अ० ज्ञानवंत नथी उ० ते पोतानी बुद्धीए पापथी निवर्त्यो छे, पण अ० ध० श्रुत ज्ञानना अजाणथी धर्म जाण्यो नथी, अने पोते गुरु धार्या विना पोतानी मेलेज जोग लइ बालवयथी तपस्या करे छे, तेने अगीतार्थ कहेवो ए० एने गो० हे गौतम ! म० में दे० देशथकी थोडे अंशे आ राधक कह्यो ते भला बोध एटले ज्ञानरहित छे, पण क्रिया एटले द्रव्य चारित्रमां तत्पर छे तेथी हवे एना लक्षणनी गाथा कहे छ शिलवय पालतो, परमर्थ णेव जाणए तस्स, असहो आगार विलो, देशेणा राहगो मणुठं ॥ त० त्या जे० जे दो० बीजो पु० पुरुष अ० शीलवत नथी पण श्रुतवत छे अ० ते पापथी निवर्त्यो नथी, पण वि० धर्म जाण्यो छे ए एटले अवृति सम्यक्दृष्टि छे इत्यर्थ ए एने गो० हे गौतम ! म० में दे० थोडा अंशे ज्ञानादि त्रयरुप मोक्षमार्गना त्रीजा भाग रुप चारित्र विराधे

छे (पाम्यो छे पण पालतो नथी अथवा अप्राप्ती छे). तेथी देश-विराधक कह्यो. हवे एना लक्षणनी गाथाः- जाणंतो तिरंतो, निव्वाघाए नकुणइ, जोधम्मं साया सुह पडिवद्धो, देसेण विराहगो मणुउं. ॥ १ ॥ त० त्यां जे त० त्रीजो पु० पुरुष जात, से० ते पुरुष सी० क्रियावंत पण छे, अने सु० ज्ञानवंत पण छे. उ० ते पापथी निवर्त्यो छे अने वि० सम्यक्त श्रुत धर्म जाण्यो छे. ए० एहने गो० हे गौतम ! म० में स० सर्व (त्रणे प्रकारना मोक्षमार्गनो) आराधक कह्यो. हवे इहां श्रुत शब्दे करी ज्ञान दर्शन, अने शील शब्दे करी चारित्र तप संग्रहवाथी आराधना होय, एटले समुदित शील तथा श्रुतने विषे श्रेयपणुं कह्युं. ते विषे गाथाः- धम्मे उवट्ठियाणं, जंकरणि जंसुए निद्दिठं, विरियस्स अनिग्गुहो, तत्थय आराहणा भणिया ॥१॥ एवा पुरुषने हुं सर्व-आराधक कहुंछुं. त० त्यां णं०इति वाक्यालंकारे जे० ते च० चोथा पुरुषनी जात, से० ते पु० पुरुष असी० क्रियावंत पण नथी अने असु० ज्ञानवंत पण नथी. अ० ते पापकर्मथी निवर्त्यो पण नथी अने अ० धर्म पण जाण्यो नथी. ए० एहने गो० हे गौतम ! म० में स० सर्व-विराधक एटले ज्ञान दर्शन अने चारित्र, ए त्रणेनो विराधक मिथ्यादृष्टि कह्यो. तथा अणपाम्या आश्री सर्व–विराधक कह्यो. हवे आराधकनेज वली विशेष भेद करीने कहे छे. ते पाठ लखीए छीए:–

कइ विहेणं भंते ! आराहणा पं०गो०! तिविहा आराहणा पं०तं० णाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा. णाणाराहणाणं भंते ! कइविहे पं० ? गो० ! तिविहा पं० उ क्कोसिया मज्झिमा जहणा. दंसणाराहणाणं भंते ! एवंचेव तिविहावि एवं चरित्ताराहणावि॥ (अर्थः-पुर्ववत् पाने त्रीजे.)

हवे उपर कहेली आराधनाना भेदनोज मांहोमांहे उपनिबंधन करतो कहे छे. ते पाठ लखीए छीए:—

जस्सणं भंते! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा? गोयमा! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसावा अजहन्नुकोसावा जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स णाणाराहणा उक्कोसावा जहणावा अजहन्नमणुक्कोसावा जस्सणं भंते! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा? गो०! जहा उक्कोसिया णाणाराहणा दंसणाराहणाय भणिया तहा उक्कोसिया णाणाराहणा चरित्ताराहणाय भाणियव्वा जस्सणं भंते उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा? गो०! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसावा जहणावा अजहणमणुक्कोसावा, जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियम उक्कोसा उक्कोसियाणं भंते! णाणाराहणा आराहित्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतकरेइ? गो० अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतकरेइ अत्थेगइए कप्पोवएसुवा कप्पातिएसुवा उववज्जइ उक्कोसियाण भंते! दंसणाराहणा आराहित्ता कइहिं भवग्गहणेहिं? एवचेव उक्कोसियाण भंते! चरित्ताराहणा आराहेत्ता? एवचेव णवर अत्थेगइए कप्पातिएसु उववज्जइ मज्झिमएण भंते! णाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्ग-

हणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ? गो०! अत्थेगइए दोच्चे-भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ तच्चंपुणभवगाहणं नाइक्कम्मइ. मज्झिमएणं भंते! दंसणाराहणा आराहेत्ता? एवंचेव एवंमज्झिमियं चरित्ताराहणंपि. जहण्णियएणं भंते! णाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ? गो०! अत्थेगइए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ. सत्तठ भवग्गहणाहिं पुणनाइक्कमइ. एवं दंसणंवि एवं चरित्ताराहणंपि ॥

अर्थः—ज० जेने भं० हे भगवान! उ० उत्कृष्ट णा० ज्ञानआराधना होय त० तेने उ० उत्कृष्टी दं० दर्शनआराधना होय? तथा ज० जेने उ० उत्कृष्टी दं० दर्शनआराधना होय त० तेने उ० उत्कृष्ट णा० ज्ञानआराधना होय? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! ज० जेने जघन्य तथा उ० उत्कृष्टी णा० ज्ञानआराधना होय त० तेने दं० दर्शनआराधना उ० उत्कृष्टी होय, अने जघन्य ने उत्कृष्ट ए बन्नेथी वितिरक्त ते मध्यम आराधना होय. उत्कृष्टा ज्ञानआराधनावंतने निश्चे पेहेली बे दर्शनाराधना होय, पण त्रीजी जघन्य-दर्शनआराधना न होय, तेना तथा विध स्वभावपणाना लीधे. ज० जेने वली उ० उत्कृष्ट दं० दर्शनआराधना होय त० तेने णा० ज्ञानआराधना उ० उत्कृष्ट होय, अथवा ज० जघन्य होय, अथवा म० मध्यम पण होय. उत्कृष्ट दर्शनआराधनावंतने ज्ञान आराधना आश्री त्रणे प्रकारना प्रयत्ननो संभव छे. ज० जेहने भं० हे भगवान! उ० उत्कृष्ट णा० ज्ञानआराधना होय त० तेहने उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय? तथा ज० जेहने उ० उत्कृष्टी च० चारित्र-आराधना होय त० तेहने उ० उत्कृष्टी णा० ज्ञानआराधना होय? इ-तिप्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम! ज० जेहने उ० उत्कृष्टी णा० ज्ञानआराधना होय, तेने उत्कृष्टी अथवा मध्यम चारित्रआराधना होय, पण उत्कृ-

ष्टी ज्ञानआराधनावंतने चारित्र प्रत्ये अल्प प्रासपणु न होय, एटले तेना तथाविध स्वजावपणाना लीधे जघन्य उत्तम न होय, तथा उत्कृष्ट चारित्रआराधनावतने ज्ञानप्रत्ये प्रयत्न त्रणे (जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट), जजनाए होय इत्यर्थ ज० जेने ज० हे जगवान ! उ० उत्कृष्टी द० दर्शनआराधना होय, त० तेने उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय? तथा ज० जेने उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय, त० तेने उ० उत्कृष्टी द० दर्शनआराधना होय ? इतिप्रश्न उत्तर गो० हे गोतम ! ज० जेने उ० उत्कृष्टी दर्शनआराधना होय, त० तेने च० चारित्रआराधना त्रणे प्रकारे जजनाए होय उ० उत्कृष्ट अथवा ज० जघन्य अथवा मध्यम होय मध्यम दर्शनआराधनावंतने चारित्र प्रत्ये त्रिविध प्रयत्ननु पण अविरुद्धपणुं छे ते माटे ज० जेने वली उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय, त० तेने द० दर्शनआराधना नि० नियमथकी उ० उत्कृष्टीज होय, पण जघन्य मध्यम न होय प्रकृष्ट चारित्र अने प्रकृष्ट दर्शनना अनुगतपणाथी

हवे आराधनाना जेदनु फल प्रदर्शनने अर्थे सोल जांगा कहे छे: उ० उत्कृष्ट ज० हे जगवान! णा० ज्ञानआराधना प्रत्ये आराधीने क० केटला ज० जव ग्रहणे करी सि० सीझे जा० यावत् अं० सर्व दुःखनो अंत करे ? इति प्रश्न उत्तम गो० हे गोतम ! अ० केटलाएक ते० तेज ज० जव ग्रहणेकरी सि० सीझे जा० यावत् सर्व दुःखनो अत करे उत्कृष्ट चारित्र आराधनाने सद्जावे तेज जवे सीझे अ० केटलाएक क० सोधर्मादिक देवलोकने विषे उपजे, ज्ञानआराधना उत्कृष्ट पण चारित्रआराधना मध्यमने सद्जावे अथवा क० कल्पातित ग्रैवेयकादि देवनेविषे उपजे, मध्यमोत्कृष्ट चारित्रआराधनाने सद्जावे उ० उत्कृष्ट ज० हे जगवान ! दं० दर्शनआराधना प्रत्ये आ० आराधीने केटला जवे सीझे ? इति प्रश्न उत्तर ए० एमज, जेम ज्ञानआराधना कही तेम कहेवुं, उ० उत्कृष्ट ज० हे जगवान ! च० चारित्रआराधना प्रत्ये आ०

आराधीने केटला भवे सीझे ? इति प्रश्न. उत्तर ए० एमज एटले तेज भवे इत्यादिक केहेवुं; ण० पण एटलुं विशेष अ० केटलाएक क० कल्पातित-स्वर्गने विषे उ० उपजे. "अत्थेगइए कप्पोवयसुवा" एवुं कह्युं ते इहां न केहेवुं, कारण के उत्कृष्ट चारित्रआराधनावंतने सौधर्मादि कल्पने विषे जावुं न होय. इहां सिद्ध गमन अभावे तेने अनुत्तर सूरविषे गमन छे माटे. म० मध्यम भं० हे भगवान ! णा० ज्ञानआराधना प्रत्ये आ० आराधीने क० केटला भव ग्रहणकरी सीझे ? जा० अं० यावत् सर्व दुःखनो अंत करे ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! अ० केटलाएक दो० बे भव ग्रहणे करी सीझे, जा० यावत् सर्व दुःखनो अं० अंत करे. कारण के मध्यम ज्ञान-आराधनाएकरी वर्तमान भवने विषे निर्वाणनो अभाव छे. वली उत्कृष्टपणुं अवश्य थाशे, एवुं जाणवुं. निर्वाणनी उत्कृष्टपणाविना उत्पत्ति न थाय. त० वर्तमान मनुष्यभव ग्रहण अपेक्षाए त्रतिय मनुष्यभव उलंघे नही, एटले त्रीजे भवे मोक्ष जाय इत्यर्थ. म० मध्यम भं० हे भगवान ! दं० दर्शनाराधना आ० आराधीने केटले भवे सीझे ? इति प्रश्न. उत्तर ए० जेम मध्यम-ज्ञान आराधनानुं फल कह्युं, तेम इहां पण केहेवुं. ए० एमज म० मध्यम चारित्रआराधनानुं फल पण केहेवुं. ज० जघन्य भं० हे भगवान ! णा० ज्ञानआराधना आ० आराधीने क० केटला भव ग्रहणे करी सीझे ? जा० यावत् अं० सर्व दुःखनो अंत करे ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! अ० केटलाक त० त्रीजा भवने ग्रहणेकरी सीझे जा० यावत् अं० सर्व दुःखनो अंत करे. वर्तमान मनुष्य भवनी अपेक्षाए त्रीजो भव जाणवो. स० सात अथवा आठ भ० भव ग्रहण प्रत्ये अतिक्रमे नही. मनुष्यने, ए ज्ञानआराधना अने चारित्रआराधनाने बलेकरी ए फल कह्युं, पण श्रुत सम्यक्त देशवृत्तिने भव अशंख्याता कह्या छे. तेथी चारित्रआराधना रहित ज्ञान-दर्शन-आराधनावंतने अशंख्याता भव थाय. एज विषे अनुयोगद्वार वृत्तिमां, आवश्यक निर्युक्ति टीका चुर्णीमां अने पीठिकावृत्तिमां कह्युं छे ते गाथाः—

समत्त दंसण विरिया, पलियस्स असंख भाग मेताउं,
अठ भवाउं चरित्ते, अनंत काल सुय समयस्स ॥ १ ॥

ते माटे ए चारित्रआराधना सहित ज्ञान दर्शनआराधना जाणवी ए० जेम द० जघन्य दर्शनआराधनानु फल कयु छे ए० तेम च० चारित्रआराधनानु पण फल केहेवुं

भावार्थ —हवे जुउ ! जो मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा माहेली होय तो, ते करणीने श्रेष्ट कहे तेने भगवते जुठा बोला केम रह्या ? मिथ्यात्वी पण पोते करे ते क्रियाने, तथा पोते भणे ते ज्ञानने श्रेष्ट कहे छे, पण मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामा नथी तेथी भगवाते पोते तेमनी करणी वखाणी नथी, पण जे वखाणे तेने पण जुठा बोला कह्या छे

हवे भगवाने पोते चार प्रकारना पुरुष कह्या, ते कहे छे —पेहेला भागामां नवदिक्षित साधु तथा अल्पबुद्धिनो धणी, जे केवली तथा गुरुदेवना वचन तहत करी माने छे, अने जेने श्रद्धारुप ज्ञान तो छे, पण बेहेवारीक जाणपणु नथी तेने जाणवो, केमके ज्ञान तो फक्त आठ प्रवचन मातानु अने चारित्र यथाख्यात कयु छे शास्त्र सूत्र भगवती जी शतक २५ में, उद्देशे छठे तथा सातमे ए न्याये ज्ञान तुछमात्र, ते गण्युं नही, तेथी तेने ज्ञान रहित कह्यो, अने चारित्र उत्कृष्टा आश्री देशआराधक कह्यो तथा जघन्य ज्ञान अने जघन्य सम्यक्त देशआराधकपणामा आवी गयु हवे सर्व-आराधक तो जेने ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, त्रणे बोल उत्कृष्टा होय तेने कहीए ते चार भांगानी आराधना विषे गौतम स्वामीए श्री महावीर भगवत प्रत्ये पुछा करी के, हे भगवान ! चार भागामा आराधक विराधक कह्या ते शुं ? अने ते शु आराधे ? के तेने आराधक केहेवा तेवारे श्री महावीर भगवते, ज्ञान आराधना, दर्शन आराधना अने चारित्र आराधना, ए त्रण आराधना कही तेमां पेहेला भागावालो चारित्रनो आराधक छे १ बीजा भांगामां ज्ञान दर्शन ए बे उत्कृष्टा छे, पण चारित्रमा लोप सरावे छे, माटे

तेने त्रीजा भागरुप चारित्रनो देश-विराधक कह्यो; ते विराधक छठा गुणठाणानो धणी साधु जाणवो. २ त्रीजे भांगे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रणे बोल आराधे ते सर्व-आराधक साधु जाणवा; ते छठा गुणठाणाथी लइने चौदमा गुणठाणा सुधी, साधु जे जे गुणठाणे उत्कृष्टो गुण होय ते आराधे ते सर्व-आराधक. ३ तथा चोथे भांगे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रणे लइने सर्वथा रीते जेणे विराध्या ते विराधक साधु जाणवा. ४ ए चार भांगा श्रावक उपर पण साधुजीनी पेरे जाणवा. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पेहेला भांगाना अर्थमां तथा टीकामां बालतपस्वी कह्यो छे, ते माटे मिथ्यात्वी अन्य मतनो तापस जाणवो. तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! अर्थमांतो बालतपस्वी कह्यो, पण पाठमां नथी कह्यो. तेमाटे पाठविना अर्थ प्रमाण न थाय; केमके बापविना बेटो केहेनो केहेवाय, ते विचारो. वली अर्थमां बालतपस्वी कह्यो, तेथी अन्यमतनोज तापस कहो, तो ते अन्यमतना तापसमां चारित्र होय के नहि ? ते कहो. तेवारे तेरापंथी केहे छे के, चारित्रतो न होय. त्यारे हे देवानुप्रीय ! अर्थमां जेम बालतपस्वी कह्यो छे, तेम आगल पण गीतार्थनी नेश्रायविना तपश्चर्या निर्तिचारपणे पाले, पण अगीतार्थ कह्यो, एवाने ग्रहवा; पण अन्यमतना तापसने न ग्रहवा. ए अर्थने न्याये जिनमतना साधु जाणवा. बाल एटले अजाण, अने तपस्वी एटले तप-चारित्र पाले ते, तेथी बाल-तपस्वी कह्यो. वली अर्थमां बालतपस्वी कह्यो, तेथी मिथ्यात्वीने पेहेले भांगे देश-आराधक कह्यो छे, एम केहेसो तो, अर्थमांतो अनेक वातो कही छे, तेपण प्रमाण करवी पडशे. वली ठाणायांगने नवमे ठाणे अर्थमां कोइक ठेकाणे कह्युं छे के, साधुजीने दान देवाथी तीर्थंकरादि गोत्र बंधाय, अने अनेराने दीधाथी अनेरी पुन्य-प्रकृति बंधाय, ते पण प्रमाण करवुं पडशे. वली निषितना बारमा उद्देशाना द्वितियापद-अर्थमां कह्युं छे के, अनुकंपा निमित्ते साधु, त्रस-जीवने छोडे तो दोष नही; तेपण प्रमाण करो. तेमज निषितसूत्र मध्ये घणा बोलनां प्र-

यक्षित कह्यां छे, अने द्वितियापद अर्थमा करवा कह्यां छे, तेपण प्रमाण करवा पडशे इत्यादिक घणा बोल टीकामा तथा अर्थमा पाठथी अ णमलता कह्या छे, तेपण प्रमाण करवा पडशे तेवारे तेरापथी पण एम कहे छे के, जे मूलपाठथी मले ते अर्थ प्रमाण छे तो हे देवानुप्रीय ! " बालतपस्वी " ए कया पाठनो अर्थ छे ? पाठमा तो "उवरए" एटले पापथी निवर्त्यो छे एम कह्यु छे, अने मिथ्यात्वी पापथी निवर्त्यो नथी मिथ्यात्वीने सूत्रमा ठामठाम " एकान्त बाल, एकान्त अपण्डित अने एकान्त अपचखाणी " कह्या छे ए न्याये पेहेला भांगामा अन्यमती तापस मिथ्यात्वीने न जाणवा, पण जिनमतना अगीतार्थ साधु जाणवा

वली तेरापथी, मिथ्यात्वीने पेहेला भांगामा देशथकी आराधक कहे छे, तेने पुछीए छीए के, अर्ह्रीयातो ज्ञान ने शील, ये बोलथी चो भंगी थइ छे ते ज्ञान कयुं तत्व छे ? अने शील कयु तत्व छे ? तेवारे तेरापथी कहे छे के, ज्ञानतो सवर तत्व छे, अने शील ते निर्जरानी करणी छे एम कहे छे ते मिथ्यात्वीने पेहेला भागामा स्थापवासारु कहे छे तेहने फरी पुछीए छीए के, ज्यारे पेहेला भांगामा मिथ्यात्वी, त्यारे बीजा भागामा कोण ? तेवारे तेरापथी कहे छे के, चोथा गुणठाणावा ला अव्रत्ति-सम्यकूद्रष्टी छे एम कहे छे, तेमने कहेवुं के हे देवानुप्रीय ! पेहेले भांगे मिथ्यात्वीने शील नाम निर्जराथी आराधक कहोछो, तो बीजे भागे अशीलवत कह्यो छे ए लेखे समदृष्टिने निर्जरानी नास्ति थइ वली श्री कृष्णमाहाराज, श्रेणिकमाहाराज तथा इन्द्रादिक समदृष्टि देवताओ श्री तीर्थंकरादिकने वदणा करे, शुभ जोग वरतावे, तेने नर्जरा केम नहीं थाय ? वली श्री कृष्ण माहाराजे तथा श्रेणिक महाराजे धर्म दलाली करी, साधुने जग्यादिक दीधी, तथा दिक्षानी आज्ञा दीधी, तेथी तीर्थंकर-गोत्र बांध्युं ए अशुभ कर्मनी निर्जरा थया विना पुन्य केम बधायु ? ते कहो निर्जरा विना तो चोरासी लाख जोनाजोनमां कोइ जीव एहवो नथी, के जेने निर्जरा न थाय तमे एवा उुग अर्थ केम

करो छो ? वली त्रीजे भांगे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रण सहित साधुने सर्व-आराधक केहेशो तो, शील नाम निर्जरानुं कहो छो; चारित्र क्यांथी आव्युं ? केमके चारित्रनी करणीथी तो निर्जरा थाय, पण निर्जरानी करणीने तो चारित्र न केहेवाय. हे देवानुप्रीय ! अहियां तो शील नाम चारित्रनुं छे, अने आराधनामां पण चारित्र आराधना कही छे. पेहेला भांगावालो चारित्रनो आराधक छे, बीजा भांगावालो ज्ञान दर्शननो आराधक छे, त्रीजा भांगावालो ज्ञान, दर्शन ने चारित्र, ए त्रणे बोलनो आराधक छे अने चोथा भांगावालो त्रणे बोलनो विराधक द्रव्यलींगी जाणवो. हवे जे पेहेला भांगामां निर्जरानी करणी करे, तेवा मिथ्यात्वी तापसने कहे, बीजा भांगामां अव्रति-समद्रष्टिने कहे, त्रीजा भांगामां साधुने कहे, अने चोथा भांगामां बाकीना मिथ्यात्वीने कहे, तेने पुछवुं के, बीजा भांगावालाए अने चोथा भांगावालाए विराध्युं शुं ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, पापना त्याग नथी, अने पापनां काम करे, तेथी विराधक कहीये छीए, तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! श्रावक पण पापनां (आज्ञाबाहारनां) घणां काम करे छे. ए पण तमारे लेखे देश-विराधक बीजे भांगे ठेर्यां, पण श्री वीतरागदेवेतो श्रावकने त्रीजे भांगे सर्व-आराधक कह्या छे. शास्त्र सूत्र उववाइ, उपाशकदशा, सुयगडांगजी, आदि घणा सूत्रमां छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, लीधां व्रत चोख्खां पाले, तेथी आराधक कह्या छे; पण जे लइने भांगे तेहने विराधक कहीये. एम सीधा बोले. त्यारे हे देवानुप्रीय ! बीजे भांगे सम्यकद्रष्टी अने चोथे भांगे मिथ्यात्वी कहो छो, तेणे शुं वृत लइने भांग्युं ते कहो ? अहो देवानुप्रीय ! इहांतो चारे भांगामां आराधक विराधक साधुनेज कह्या दीशेछे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पेहेला भांगामां साधु होयतो, तेने ज्ञानरहित केम कह्या ? कारणके ज्ञानरहित तो मिथ्यात्वीज होय. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! पेहेला भांगावाला साधुने यथा क्षयोपशमभावे संक्षेप सम्यकथी सर-

वहणारुप ज्ञान तो छे, पण विशेष जाणपणारुप ज्ञान नथी तेथी ज्ञाननी गोणता राखी, तुच्छ मात्र सरवहणारुप ज्ञान तेने गण्यु नही, अने चारित्र उत्कृष्टुपाले, तेथी तेनी मुख्यता लीधी एवा गोणता मुख्यताना शब्दो सूत्रमा घणे ठेकाणे छे तेमां प्रथम तो उववाइ-सूत्रमां कोणिकनी राजनितिना गुण वखाण्या त्या कह्यु के, "मातापीतानी सेवानो करणहार, मातापीतानां वचन उलघे नही, मातापीतानुं दीधु राज्य करे छे," ए मुख्यताना गुण कह्या, अने श्रेणिकराजा तेनो पीता छे तेने काष्टपिंजरे नाखीने राज्य लीधुं, ते अवगुण न गण्यो ए गोणता वली अनुत्तर विमानना देवताने उपशान्त-मोहना धणी कह्या शास्त्र सूत्र भगवतीजीमा ह्वे उपशान्त-मोह सर्वथातो अग्यारमें गुणठाणे छे, अने अनुत्तर विमानना देवतामा तो चोथु गुणठाणुं छे, पण बीजा देवता करतां मोहकर्मनी विटंबणा थोडी छे घणो मोहकर्म उपशम्यो छे, अने थोडो उदयमा छे ते थोडो उदयमा छे ते गोणतामा राखीने, घणो उपशमाव्यो ते गुण मुख्यतामा लइने, उपशान्तमोहा कह्या ए गोणता मुख्यता कही

वली भगवती शतक बीजे उद्देशे पांचमे, तुगीयानगरीने श्रावके श्री पार्श्वनाथजीना सतानीयाना गुण कह्या, ते कहेछे जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जियलोहा, जियइंदिया, जियनिंदा जाव जीवियास मरणभय विप्पमुक्का जि० जीत्या छे क्रोधने, जि० जीत्या छे मोहने, जि० जीतीछे मायाने, जि० जीत्याछे लोभने, जि० जीतीछे इन्द्रियोने, जि० जीतीछे निंद्राने, एम जा० यावत् जी० जन्म तथा म० मरणना भयथी मुक्त थया छे इत्यादिक गुण कह्या, पण सजलनी चोकडीना क्रोधादिकतो भावी छे, ते गोणतामा राखीने गण्या नही, अने घणा क्रोधादिक जीत्या छे, ते गुण मुख्यतामा लइने, क्रोधादिक जीत्या छे एम कह्यु ए गोणता मुख्यता इत्यादिक अनेक सूत्रमा साधुजीनी स्तुति वर्णवी, त्यां मुख्यताना गुण वर्णव्या, पण उदयभाव सबधी तुच्छ अवगुणने गोणतामा राख्या, पण गण्या नही ए गोणता मुख्यता वली

जयणाथी चाले, उठे, बेसे, सुवे, आहार करे अने भाषा बोले, तेहने पापकर्म बंधाय नही. शास्त्र सूत्र दसवैकालिक अध्ययन चोथे. ए पण मुख्यतानुं वचन छे. तेज समये सात कर्म बंधाय छे, ते गौणतामां राख्यां पण गण्यां नहीं. ए गौणता मुख्यता इत्यादिक, सूत्रमां अनेक वचनो गौणता मुख्यतानां कह्यां छे. तेमज पेहेला भांगामां ज्ञानरहित कह्या, ते श्री वीतरागनां वचन तहत करी साचां माने, पण पोताने पुरुं जाणपणुं नही, तेथी तुच्छ मात्र सरदहणारुप ज्ञान गौणतामां राख्युं, पण गण्युं नही. ते माटे "असुयवं" सूत्रज्ञान रहित कह्या, अने चारित्र चोख्खुं (उत्कृष्टुं) पाले, ते मुख्यतामां लइने त्रीजा-भागरुप देश-आराधक कह्या. वली आराधक केहने कहीये ? आउखाना बंधकाल समये ज्ञाननां आवरण अलगां थाय, तेने ज्ञाननो आराधक कहीये; समकितनां आवरण अलगां थाय, तेने समकितनो आराधक कहीये; अने चारित्रनां आवरण अलगां थाय, तेने चारित्रनो आराधक कहीये. एवुं दोलतसागरकृत टबामां भगवतीमां कह्युं छे. पेहेला भांगामां आउखाना बंधकाले चारित्रनो आराधक छे.एम चारे भांगा आउखाना बंधकाले जाणवा. वली आउखाना बंधकाल विना जो आराधक कहीये, तो छठा गुणठाणाथी लइने अग्यारमा गुणठाणा सुधी चोख्खुं ज्ञान, दर्शन अने चारित्र पाले छे,एवा चार ज्ञानना धणी पण कोइक पडे,अने उत्कृष्टो अर्ध-पुद्गल संसार भमे, एम कह्युं छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक २५ में.

वली चोभंगी पेहेलां आराधना कही, तेमां कह्युं छे के, जघन्य ज्ञाननो आराधक, जघन्य सम्यक्तनो आराधक अने जघन्य चारित्रनो आराधक, जो भव करे तो जघन्य त्रण, अने उत्कृष्टा करे तो पंदर भव उलंघे नही. ए न्याये आउखाना बंधकाले जेने आराधक कहीये, ते विराधक थाय नही. नियमा ते पंदर भवमां मुक्ति जाय; अने चोखा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो पालणहार कर्मने वशे विराधक थाय तो उत्कृष्टा अनंता भव करे. ए न्याये चोखां ज्ञान, दर्शन ने चारित्र पाले, ते वेला अविराधक संजमी कहीये, पण आराधक तो आउखाना बंध-

कालेज कहीये, केमके तेतो भव पदरमा नियमा मुक्ति जाय हवे जो पेहेला भागामा मिथ्यात्वी देशथकी आज्ञानो आराधक होय तो, भर धीना करवावाला सर्व जीव पदरमे भवे मुक्ति गयाज जोइए, पण ए न मले ए न्याये पेहेले भागे नवदिक्षित् तथा अगीतार्थ साधुने भी वीतरागदेवनी आज्ञानो आराधक जाणवो ए चार भागा द्रव्य-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, आश्री अभव्यमा तथा द्रव्य लींगीमा पण होय छे, पण अहीया तो श्रीवीतरागदेवे द्रव्य अने भाव ए बन्ने बोलो आश्री चार भांगा कह्या दीशे छे माटे जिनाज्ञानो आराधक साधु, ते पेहेले भागे जाणवो

हवे तेरापथी, पेहेले भागे मिथ्यात्वीने देशथकी आज्ञाना आराधक ए वास्ते कहेछे के, आज्ञामाहेलो धर्म आराधे तेनेज पुन्य बंधाय, आज्ञावाहार पुन्यनो बंध मानता नथी तेथी मिथ्यात्वीने पेहेले भागे कहेछे हवे जुवो ! पेहेले भागे मिथ्यात्वीने आज्ञानो आराधक कहे, तेनी श्रद्धा चोथा भागामा जरूमूलथी जुठी देखाय छे तेनो न्याय कहेछे -हे देवानुप्रीय ! सर्व चोरासी लाख जीवाजोनने निर्जरा होय छे, ने समे समे पुन्य बंधाय छे, पण एवो कोइ जीव नथी के जेने निर्जरा न थाय, के पुन्य न बंधाय ए लेखेतो निगोदादिकमां सर्व जीवने निर्जरा थाय छे, पुन्य बंधाय छे, ते पेहेला भागामा आव्या बीजा भांगामां अव्रति समदृष्टिने कहोछो, अने त्रीजे भागे साधुजीने कहोछो, तेमज श्रावकने पण केहेता हशो ए सर्व ससारस्था जीव तमारे लेखेतो त्रण भागामा आवी गया हवे चोथा भागामा कया जीव रह्या ? ते बतावो त्यारे जवाबदेवा असमर्थ थशो चोथा भागावाला जीवने भगवते सर्व विराधक (आज्ञावाहार) कह्या छे, तेने तमारे लेखेतो निर्जरा थाय नही, तेम पुन्य पण बंधाय नही हवे ससारमा एवा तो कोइ जीव नथी के जेने पुन्य न बंधाय ए न्याये चोथा भागावाला जीव आज्ञावाहार छे अने आज्ञावाहार पुन्य बंधाय छे हवे जे आज्ञावाहार पुन्य बंधावु नथी मानता, तेमने सूत्रबल पुरु देखातु नथी थशी जेम गहु साथे पराल (खाखलो) थाय, तेम आज्ञामाहेला धर्मनी साथे पुन्य बंधावुं माने, ते लेखेतो कोइ

जीव त्रण कालमां मोक्ष जाय नही; कारणके जेम गहुंनी साथे निश्चे पराल निपजे, तेम धर्मनी साथे निश्चे पुन्य बंधाय. ते पुन्य जोगवतां राग-द्वेषथी पाप बंधाय, ते पाप तोडवाने माटे करणी करे, तेथी वली पुन्य बंधाय. ए न्याये जीव उंचे गुणठाणे चढे नही, ने त्रण कालमां मोक्ष पण जाय नही.

हे देवानुप्रीय ! ए वात केम मले ? कारण के धर्मतो आवता कर्मने रोके, ने आगला कर्मने तोडे तेने कहीए; अने पुन्य-पाप तो आश्रव-जावमां बंधाय छे. ए आश्रव-जावने तेरापंथीना बनावेला तेरद्वारमां ढांकवा जोग कह्यो छे. अहो ! केवुं कपट वचन. कोइ ठेकाणे आश्रव-जावने आज्ञामां कहे, कोइ ठकाणे आज्ञामांहेलो धर्म कहे, अने कोइ ठेकाणे तेने ढांकवा जोग पण कहे. माह्या हो ते वीचारी जोजो. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी मोक्षनो मार्ग (धर्म) नथी, तेम जिन आज्ञाना आराधकपणामां पण नथी. शाख सूत्र उतराध्ययन अ० ए मे. गाथा ४२ मी.

घोरा समं च इत्ताणं, अन्नं पन्नेसि यासमं;
इहेव पोस हरउ, जयाहि मणुया हिवा. ॥ ४२ ॥

गाथार्थः—घो० छोडतां अत्यंत दोहीलो एवो ग्रहवास छोडीने तेथकी अ० अनेरुं आश्रम (दिक्षारुपी चारित्र) लेवातुं वान्छे छे, पण ए तुजने जुक्त नथी. इ० ए ग्रहस्थाश्रममां रह्यांथकां आठम चौदसादिक पर्वने विषे पोसा करवाने हे मनुष्याधिपति ! तुं तत्पर था.

एय मठ निशामित्ता, हेउ कारण चोइउ;
तउ नमीराय रिसी, देविंदं इण मब्बवी. ॥ ४३ ॥

गाथार्थः—ए० पुर्वोक्त अर्थ (इंद्रनुं वचन) नि० शांजलीने हे० ग्रहस्थाश्रममां जे जे धर्म आचारतां दोहीलो ते धर्म, जे धर्मना अर्थी होय, तेणे आचारवुं. इत्यादिक हे० हेतु कारणे चो० प्रेर्यो थको. त० त्यारपछी न० नमिराज ऋषि दे० देवेंद्र सक्रेन्द्र प्रत्ये एम बोलता हवा.

मासे मासे उजोबालो, कुसग्गेण तु भुंजए,
नसो सुय खाय धम्मस्स, कल अग्घइ सोलस ॥ ४४ ॥

गाथार्थ —मा० मासमास खमणने पारणे जे कोइ अविवेकी गृहस्थ कु० डाभनी अणी उपर जेटलु अनाज आवे तेटलु पारणे जमे, तोपण न० ते सूत्रमा कह्यु ते सम्यक तथा चारित्र धर्मनी सोलमी कलाए आवे नही, तथा सोमें भागे पण आवे नही

भावार्थ —हवे जुओ ! मिथ्यात्वी बाल अज्ञानी मासमास खमणना पारणा करे, अने पारणे डाभनी अणीमाथे आवे एटलो आहार भोगवे, तोपण श्री केवलीए धर्म कह्यु तेनी सोलमी कलाने अमचामे पण आवे नही, एम कह्यु ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञारूप धर्ममा नथी, अने मासमास खमण तपथी पुन्य बंधाय छे ए न्याये आज्ञाबाहार पुन्य बंधाय छे वली मिथ्यात्वीनी करणी ए न्याये आज्ञामा नथी शाख सूत्र आचारांग श्रुतस्कंध १ ले अ० चोथे उद्देशे चोथे. ते पाठ

आयाण सोय गढिए बाले अवोछिन्न बंधणे अणाभिकंत सजोए तमसि अविजाणउ आणाएलंभोणत्थि त्तिबेमि जस्स नत्थि पुरापछा मझे तस्स कउसिया ॥

अर्थ —जे कर्म आ० आश्रवानां सो० मिथ्यात्वादिक श्रोत्रने विषे गृद्ध छे, ते बा० बाल अज्ञानी ते वली केवो छे ? अ० अष्ट प्रकारे कर्म जेणे छेद्यां नथी तेथी सेंकडा गमे जन्मे करी संसार परिभ्रमण करे वली ते केवो छे ? अ० जेणे छोड्या नथी स० धन धान्य, द्विपद चतुष्पदादि सजोग तथा त० मोहरुपी अंधकारने विषे अ० जाण्यो नथी आत्महित जेणे, तेने आ० मोक्षना उपायरुप तीर्थंकरनी आज्ञानो किंचितमात्र लाभ नथी त्ति० श्री सुधर्मास्वामी कहे छे एम हुं कहुं छुं वर्तमानकाले तेने आज्ञानो लाभ नथी, एम कह्यु हवे आगमे काले पण तेने आज्ञानो लाभ न थाय, पछु कहे छे ज० जेने पुर्वे जन्मे बोधनो लाभ नथी, तेने आगम्ये काले पण न थाय, तो वचले काले क्यांथी थाय?

हवे जुओ ! जे कर्म आववानां मिथ्यातादिक श्रोत्रने विषे गृद्ध छे, तथा जेणे अष्ट कर्मनो बंध छेद्यो नथी, धनधान्य द्विपद चतुःपदादि संजोग छेद्यो नथी तथा मोहरुपी अंधकारने विषे (आत्महित) मोक्षनो उपाय जाण्यो नथी, तेने श्री जिनाज्ञानो लाभ नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय ! एकेंद्रियादिक मिथ्यात्वी जीव, जे ज्ञान दर्शन चारित्ररुप मोक्ष मार्गने न जाणे, तेने आज्ञानो लाभ क्यांथी थाय ? ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञावाहार छे, अने आज्ञा बाहार पुन्य बंधाय छे. वली भगवतीजी सूत्र श०१७मे उ०बीजे मिथ्यात्वी जीवने एकान्त अधर्मी कह्या. ते पाठः—

जीवाणं भंते ! । किं धम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया ? गो० ! जीवा धम्मेठियावि अधम्मेठियावि धम्माधम्मेठियावि॥ नेरइयाणं पुछा गो० ! नेरइया णोधम्मेठिया, अधम्मेठिया, नोधम्माधम्मेठिया एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ पंचदियतिरिक्खजोणियाणं पुछा ॥ गो०! पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया नोधम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया ॥ मणुस्सा जहाजीवा वाणमंतर जोइसिय वेमाणि य जहानेरइया॥अणउछियाणं भंते ! एव माइक्खइ जाव परूवेति एवंखलु समणापंडिया समणोवासया बालपंडिया जस्सणं एग पाणावि दंडेअनिखिते सेणं एगंत बालेत्ति वत्तवंसिया॥सेकहमेयं भंते ! एवं ? गो०! जेणंते अणउछिया एवं आइक्खंति जाव वत्तवंसिया जेते एवमाहंसु मिछंते एवमाहंसु अहं पुण गोयमा ! एवमाइखामि जाव परूवेमि एवंखलु समणापंडिया समणोवासया बालपंडिया जस्सणं एग पाणाएवि दंडेनिखत्ते सेणं नो एगंतबालेति वत्तवंसिया ॥ जिवाणं भंते ! किंबालापंडिया बालपंडिया ? गो०! जिवा बालावि पंडियावि बालपंडियावि ॥ नेरइयाणं

पुच्छा गो० ! नेरइया बाला नोपण्डिया नोबालपण्डिया एवं जाव चउरिंदियाण ॥ पचढियतिरिक्ख पुच्छा पचिंदिय तिरिक्ख जोणिया बाला नोपडिया बालपण्डियावि ॥ मणुस्सा जहाजीवा ! वाणमतरा जोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया॥

अर्थ—पाठ सुगम छे माटे शब्दार्थ लख्या नथी

भावार्थ —हवे जुओ ! बावीस दण्डकना जीवने एकान्त अधर्मी कह्या, तिर्यंचने अधर्मी ने धर्माधर्मी कह्या अने मनुष्यने धर्मी अधर्मी ने धर्माधर्मी कह्या हवे जो मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा-मांहेलो धर्म होय तो धर्मना करणहारने श्री वीतरागदेव अधर्मी केम कहे ? पण धर्म तो संवरनेज कहेवो ते संवर मिथ्यात्वीने नथी, ते माटे तेने अधर्मी कह्या छे ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहार छे, अने आज्ञाबाहार पुन्य नीपजे छे. वली एकेंद्रिनो बेइन्द्रि अनता पुन्य बध्याथी थाय छे, एमज जाव पचेन्द्रिपणु पण अनता पुन्य बध्याथी पामे ए न्याये आज्ञाबाहार पुन्य बधाय छे वली अनुयोगद्वार सूत्र मध्ये पण वक्तव्यता कही छे त्या परसमय वक्तव्यतामा सात अवगुण कह्या छे ते पाठ —

सेकिंत वत्तवया २ तिविहा प०त० ससमय-वत्तवया परसमय-वत्तवया ससमय-परसमय-वत्तवया सेकिंत ससमय-वत्तवया २ जत्थण ससमए आघविज्जइ पण्णविज्जइ परुविज्जइ दसिज्जइ निदसिज्जइ उवदसिज्जइ सेत ससमय-वत्तवया सेकिंत परसमय-वत्तवया २ जत्थण परसमय आघविज्जइ जाव उवदसिज्जइ सेत परसमय-वत्तवया सेकिंत ससमय परसमय वत्तवया २ जत्थण ससमय-परसमय आघविज्जइ जाव उवदसिज्जइ सेत ससमय-परसमय-वत्तवया इयाणि कोनओ कोवत्तवय इच्छइ तत्थ नेगम स·

गह ववहारो तिविहं वत्तवयं इबइ तं ससमय-वत्तवयं परसमय-वत्तवयं ससमय-परसमय-वत्तवयं. उद्युसुउं ड-विहं वत्तवयं इबई तं० ससमय-वत्तवयंच परसमय-वत्तव-यंच, तन्नणं जासा ससमय-वत्तवया सासमयं पविठा जासा परसमय-वत्तवयासा परसमयपविठा तम्मा दुविहा वत्तवया नत्थि तिविहा वत्तवया. तिण्हि सदन्नया एगं ससमयं वत्तं इबंति नत्थि परसमय-वत्तवया नत्थि सस-मय-परसमय-वत्तवया, कम्मा जम्मा परसमए अणठे अ-हेउ असब्नावे असंकिरिए उमग्गो अणुवएसे मिछामि दंसणंमि तिकट्ठु तम्मा सब्वा ससमय-वत्तवया नत्थि पर-समय-वत्तवया नत्थि उन्नयसमय-वत्तवया. सेतं वत्तवया॥

अर्थः—से० केवी ते व० वक्तव्यता ? प्रश्नोत्तर. त्यां अध्ययना-दिकने विषे प्रति अवयव यदा संजव प्रति नियम एकार्थनुंज वखाणवुं, तेने वक्तव्यता कहीए. ते वक्तव्यता ति० त्रण प्रकारे पं० परुपी तं० ते कहेछेः- स० स्वसमय वक्तव्यता, प० परसमय वक्तव्यता अने स० प० स्वसमय परसमय वक्तव्यता. से० केवी ते स०स्वसमय वक्तव्यता? प्रश्नोत्तर. ज० ज्यां जेने विषे स० पोतानो सिद्धान्त आ० वखाणे, यथा पंचास्ति काय, धर्मास्तिकाय इत्यादिक. तथा प० प्रज्ञापीये (जणावीए) यथा ते लक्षण धर्मास्तिकाय इत्यादिक, तथा प० परुपे ते धर्मास्तिकाय अ-शंख्यात प्रदेशरुप इत्यादिक. तथा दं० सामान्य स्वरुपथकी देखाडे ते धर्मास्तिकाय वर्णादिक रहित इत्यादिक तथा नि० दृष्टान्तद्वारेकरी दे-खाडीये. जेम माछलांनी गतिनो उपष्टंजक (आधार) जलादिक इत्यर्थः उ० उपनयद्वारेकरी देखाडीयें. यथा जेम जीव पुद्गलने धर्मास्तिकाय गतिनो उपष्टंजन छे, इत्यादिक निरदेश मात्राने देखाडवे करी एम व-खाणवुं. से० ए स्वसमय वक्तव्यता कही. से० केवी ते प० परसमय-व-

क्तव्यता ? प्रश्नोत्तर, ज० ज्या तेने विषे प० परायो सिद्धान्त आ० वखाणे जा० यावत् देखाडे जेम पाच भूत आत्मा इत्यादिक

संति पंच महा भुया, इहमेगेसिं आहिया,
पुढवि आउ तेउय, वायु आगास पचमा ॥ १ ॥

अर्थ—स० छे प० पाच म० मोटा भु० भुत इ० आ देहिने विषे पु० पृथ्वि आ० पाणी ते० अग्नि वा० वायु अने आ० आकाश, प० ए पाच भूत.

एवं पंच महा भूया, तत्तोए गुत्तिए आहिया,
अहतेसिं विणासेण, विणासो होइ देहिणा ॥ १ ॥

अर्थ—ए० ए प० पाच म० मोटा भू० भुत आ० कह्या अ० अथ ते० तेना वि० विनाशे करी दि० जीवनो विनाश थाय

एम अहीया लोकायत मत वखाण्यो, तेथी से० ए प० परसमय वक्तव्यता कहीये अथ से० केश्री ते स०प० उभयसमय-वक्तव्यता ? प्रश्नोत्तर ज० ज्या स० प० स्वसमय परसमय एकठा वखाणीये ते उभय समय-वक्तव्यता कहीये ते विषे गाथा—

आगारसमा वसताबि, अरनावावि पव्वया,
इम दरसिण मावन्ना, सव्व दु क्खवि मुच्चइ ॥

व्याख्या—आ० घरमा वसताथका गृहस्थ अथवा अ० अरण्य मा वसता तापसादिक अथवा प० प्रवर्जित शाक्यादिक, ए अमारो मत आ० अगीकार कर्याथी म० सर्व दु:खथी मुकाय एम जीवनी शक्या दिक परुपे, त्यारे तेने परसमयवक्तव्यता कहीये, अने ज्यारे एम न वखाणे त्यारे तेने स्वसमय वक्तव्यता कहीये तेटला माटे तेने स्वसमय-परसमय-वक्तव्यता कहीये इ० ए वक्तव्यताने फरी वीचार छे इ०

हवे कोण केवी वक्तव्यताने वान्छे ते कहे छेः-त० त्यां ने० नैगम, सं० संग्रह अने व० व्यवहार ए त्रणे नय, ति० त्रणे वक्तव्यताने इ० वान्छे. तं० ते कहे छेः-स० स्वसमय-वक्तव्यताने प० परसमय-वक्तव्यताने अने स० प० उन्नयसमय-वक्तव्यताने वान्छे, कारण के नैगम-नयना अनेक गमा छे, अने व्यवहार-नयवालो लोक व्यवहार माने. ते लोकने विषे सर्व प्रकारनी रुढी छे, अने संग्रहनय उपरनी बन्ने नयथी मलतीज छे. उ० रुजुसूत्रनय प्रथमनी त्रण नय करतां अति विशुद्ध छे. तेटला माटे ते दु० बे न्नेदनी व० वक्तव्यताने माने, तं० ते कहे छेः-स० स्वसमय-वक्तव्यता अने प० परसमय-वक्तव्यताने माने, परं त्रीजी उन्नयसमय-वक्तव्यताने मुलथी न माने. ते न मानवानी जुक्ति कहे छे. त० त्यां त्रण वक्तव्यताना न्नेदने विषे जे स० स्वसमय-वक्तव्यता कही ते सा० स्वसमय-वक्तव्यतामां प० पेठी, अने जे प० परसमय-वक्तव्यता ते प० परसमय-वक्तव्यतामां पेठी. तेन्नणी उन्नयरुप वक्तव्यता. ते ए नयना मतने विषे आस्ता छे. त० ते कारणे दु० द्विविध वक्तव्यता छे, पण न० त्रिविध वक्तव्यता सर्वथा नथी. त्यां पण संग्रहनय सामान्यवाद नैगम मध्ये अन्योक्तिन्नणी ए विविक्षा छे, अथवा सूत्रनी विचित्रगत छे, तेथी जुदी न कही. हवे ति० त्रणे नय शब्द १, समन्निरुढ २, अने एवंन्नुत ३, ते रजुसूत्रथी पण अति विशुद्ध छे, ते न्नणी एक स्वसमय-वक्तव्यतानेज माने छे, पण परसमय-वक्तव्यता तथा स्वसमय-परसमय, ए बे वक्तव्यता नथी, एम कहे छे. क० ते शा माटे के परसमयमां अवगुण मोटो छे, माटे ते समदृष्टिए न मानवी. तेमज परसमयमां अ० अनर्थ छे, अ० अहेत छे, तथा अ० असतन्नाव छे, अ० अक्रिया छे, पण दान, शील, तप अने न्नावरुप सक्रिया नथी, आज्ञाबाहार छे, उ० उन्मार्ग छे, पण श्री वीतरागनो मार्ग नथी, अ० अणउपशमपणुं छे. पण उपशमपणुं नथी. मि० परसमयनी वक्तव्यतामां मिथ्यात दर्शन छे, ते समदृष्टिने प्रसंसवा योग्य नथी. ति० एम करीने त० ते माटे जे नय स० साचो छे, ते स० स्वसमय-वक्तव्यताने माने, पण न० नथी मानता प० अन्य-

तिर्थिना दान शील तपना शास्त्रनी वक्तव्यताने, तेमज उजयसमय-वक्तव्यताने जावनयवाला ते बनेने मानता नथी, पण एकान्त नथी सेण ते व० वक्तव्यता सपूर्ण

जावार्थ –हवे जुठ ! परसमय-वक्तव्यतामा सात अवगुण कह्या ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहार ठे, अने आज्ञाबाहार पुन्य निपजे ठे इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे करी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहारज ठे, अने आज्ञाबाहार पुन्य बंधाय ठे

॥ इति आज्ञानो प्रश्नोत्तर संपूर्ण ॥



प्रश्न बीजो.

अनुकंपा दान तथा दया विषे.

हवे जुउ ! जेम मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबहार छे, अने आज्ञाबाहार पुन्य निपजे छे, तेम कोइ अनुकंपा लावी गरीब-रांकने दान दे, तथा मरता जीवने जबराइथी, मुलाएजाथी (शरमावीने) अथवा पैसा आपी छोडावे, ते करतव्य आज्ञाबाहार छे; पण जेम मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहार छे, अने शुभजोगथी तथा कायाकष्टथी पुन्य बंधाय छे, तेम आज्ञाबाहारना दानमां, जीव छोडाववामां, तथा अनुकंपा शुभजोगथी पुन्य बंधावानो नाकारो नथी.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, "तरसे मरता जीवने अनुकंपा लावी काचुं पाणी पाय, काचुं अनाज खवरावे, रसोइ करीने जमाडे, पेटीउं आपे, कबुतरने दाणा खवरावे. पाणीनी परब बंधावे, दानशाला बंधावे तथा मारकुट करी नासी दोडी वायुकायने हणी जीव छोडावे, इत्यादिक अनेक प्रकारना जीवनी घात सहितना प्रश्न, दान-दया उठाववाने वास्ते पुछे छे, अने एम कहेछे के, घणा एकेंद्रि जीवने हणी एक पंचेंद्रि-जीवने शाता उपजाववामां पुन्य नथी, एकान्त पाप छे; कारणके ज्यां जीवनी घात होय त्यां शुभजोग नथी, धर्म नथी, आज्ञा नथी अने पुन्यनो लेश मात्र नथी. साधुभगवंततो छकाय-जीवना पीहर छे, छकायना जीवने सरखा जाणे छे. ते पांच स्थावर एकेंद्रिनी घात करी एक पंचेंद्रि जीवने शाता उपजावीने पुन्य मानवुं, शुभजोग मानवो, ए श्री वीतरागनी वाणी नथी." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! छकाय जीवनी हिंसानु पाप सांभली, कोइ क्षत्री रजपुत प्रमुख तमारी पासे आवीने कहे के, कांदा मुळाना गोढ प्रमु-

खमा एकेंद्रि अनंता जीव छे, तेमा जो घणु पाप होयतो ते छोडावो, अने जो शीकार (पचिंद्रि जीवनी हिंसा)मा घणु पाप होयतो ते छोडावो, ए बेमाथी एक छोडशु आपनी मरजी होय ते छोडावो त्यारे तमे शेना पचखाण करावशो ? ते कहो कारणके प्रभुए पण श्रावकने पेहेला व्रतमा त्रसजीव मारवाना त्याग कराव्याछे, पण घणा अशंख्याता अने अनंता जीव जाणीने पेहेला एकेंद्रिजीव मारवाना त्याग केम न कराव्या ? पण त्रसजीवनी पुन्याइ एकेंद्रिथी अनंतगणी वधारे छे तेने हणतां रूपना दुष्ट रुद्र प्रणाम घणा प्रवर्ते, तेथी तेने हणतां घणु पाप लागे, ते टालवा माटे त्रसजीव न हणवानुं पेहेला व्रतमा कह्यु वली पचिंद्रिजीवनी घात करे तो नर्कनु आउखुं बांधे एम कह्यु छे, (शास्त्र सूत्र ठाणायाग ठाणे चोथे तथा भगवती शतक आठमाने उद्देशे नवमें) पण एम नथी कह्युं के, एकेंद्रि घणा जीवनी घात करेतो नर्कनुं आउखुं बांधे हे देवानुप्रीयन जो पंचिंद्रिने मार्यानु पाप घणु हशे, तो तेने बचाववानो लाभ पण घणो हशेज. तमे बंनेने सरखु पाप केम कहो छो ?

वली तेरापंथी एम पुछेछे के, छकायना जीव खाधामां शु ? ख वराव्यामा शु ? अने खाताने भलो जाण्यामा शु ? तेमज हण्यामां शु ? हणाव्यामा शु ? अने हणताने भलो जाण्यामा शु ? तेनो उत्तर –

हे देवानुप्रीय ! छकायना जीवतो अरुपी अशंख्यात प्रदेशी छे तेतो मार्यां मरे नही, अने पुन्यपापनी प्रकृतीरुप शरीरादिक प्राणने तमे जीव मानता नथी ए लेखे तो छकायना जीव खाधा खवाय नही, हण्या हणाय नही, अने हण्याविना पाप लागे नही ए लेखे तो तमारो नास्तिक मत ठरशे, केमके तमे जीवने एकान्त नये अरुपी मानो छो तेथी तेने पुन्य पाप लागे नही, अने अमेतो श्री वीतरागदेवे व्यवहारनयमां कायाने जीव कह्योछे, सचित कही छे तथा आत्मा कहीछे, ते प्रमाणे मानीये छीए माटे पुर्वोक्त दोष अमारे न आवे. हवे कायाने जीव,

सचित अने आत्मा कह्यो छे. तेनी शाख सूत्र जगवती शतक तेरमे उद्देशे सातमे. ते पाठः—

आया नंते! काय अन्नेकाय? गो०! आयाविकाय अन्नेविकाय. रुवि नंते! काय अरुविकाय? गो०! रुविविकाय अरुविविकाय. एवं एक्केक पुच्छा ? गो० ! सचित्तेविकाय अचित्तेविकाय जीवेविकाय अजीवेविकाय जीवाणविकाय अजीवाणवि-काए. पुविं नंते ! काय पुच्छा ? गो०! पुविंपिकाए काइच-माणेविकाए कायसमय विइक्कंतेविकाए पुविंविकाएनिचइ काइचमाणेविकायनिचइ काय समय वीइक्कंते विकाए नि-चइ. कइ विहेणं नंते? काए पं० गो०! सत्तविहेकाए पं० तं० उरालिय उरालियमिसिए वेउव्विय वेउव्वियमिसिए आहा-रए आहारमिसए कम्मए. ॥

अर्थः—अनंतरे मननुं निरूपण कर्युं, ते मन काया थकीज होय. एटलामाटे कायनुं निरुपर्ण करेछे. आ० आत्मा नं० हे जगवान ! का० काया ते ? के अ० अनेरी ते काया छे ? कायाए कर्युं ते काया जोगवे? के अनेरे कर्युं ते काया जोगवे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! आ० आत्माने पण कथंचित प्रकारे काया कहीये, कारणके ते खीरनीरनी परे, अग्नि-लोह पींडनी परे, अथवा कंचन-उपल (पथ्थर) नी परे देहथी जिन्न नथी. एटलामाटेज काया स्पर्श थयाथी आत्माने संवेदन थाय. एटलावास्तेज कायाए कीधुं जवान्तरने विषे आत्माए वेदीयें. तथा अन्न० ए जीवथी अनेरी पण काया होय. अत्यंत अनेद होवानो शरी-रना अंश छेदन कर्याथी, जीवना अंशनो छेद प्रसंग थाय. तेम थयाथी वेदना संपुर्ण थाय. तथा शरीरना दाहे आत्माना दाहनो पण प्रशंग थाय. तेवारे परलोकना अजावनो प्रसंग थाय. एटला माटे कथंचित् प्रकारे आत्माथी अनेरी पण काय छे. इहां कोइएक एम व्याख्यान करे

ठे के, कार्मण काय आश्रीने आत्मा काय ठे (ते कार्मण कायने अने संसारी जीवने माहोमाहे अव्यभिचारपणेकरी स्वरुप ठे तेथी) एक तथा अने ठदारीकादि कायनी अपेक्षाए, जीवथी अनेरी पण काय ठे, तेने मुकवाथी तेनो भेद थाय रु० रुपी भ० हे भगवान ! का० काय ठे ? के अरु० अरुपी कायठे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! रु० स्थुल शरीरनी अपेक्षाए रुपी पण काय ठे, अरु० कार्मण शरीर शुक्ष्म पुद्गल (चक्षु अग्राह्य) नजरे आवे नही, तेनी अपेक्षाए अरुपी पण काय ठे एव० एम पूर्वोक्त प्रकारे ए० एकेक सूत्रने विषे पु० पुठा करवी ते एम सचित्त हे भगवान ! काय ठे ? के अचित्त काय ठे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! स० जीवीत अवस्थाने विषे, चैतन्यपणाथी सचित्त पण काय ठे, अने अ० मृत्यु अवस्थाने विषे चैतन्यना अभाव थकी अचित्तपण काय ठे जीव, हे भगवान ! काय होय अथवा अजीव, काय होय ? ए प्रश्न उत्तर हे गौतम ! जी० जीव विवक्षीत उत्स्वासादि प्राणसहितने जीवकाय कहीये तथा अजी० उदारीक शरीर प्रत्ये अपेक्षीने अजीवकाय पण कहीये अथवा कार्मणशरीर प्रत्ये अपेक्षीने उत्स्वासादि रहित पण काय कहीये जी० जीवने हे भगवान ! काय होय ? अथवा अजीवने काय होय ? इतिप्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! जी० जीवने संबधी काय शरीर होय अ० अजीवने पण स्थापनादिकने काय शरीर होय शरीराकार इत्यर्थ पु० पुर्वे भ० हे भगवान ! का० काय होय ? इतिप्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! पु० पूर्वे (जीव संबध कालथकी पहेला) पण काय होय (यथा भविष्यत जीव संबध मृत्य दर्दुर शरीरनी पेरे, जीवथी पेहेली काया होय, ते मा जीव आवणहार ठे तेम) काइ० जीव गर्भावस्थाए जे काया चणे ते पण काय काय० काय समयने विषे कायता करण लक्षण प्रत्ये जीव व्यतिक्रान्त थयो तेने पण मृत्य कलेवरनी पेरे काय कहीये पूर्वे हे भगवान ! काय भेदाय ? ए प्रश्न उत्तर हे गौतम पुर्वि० जीव कायपणे ग्रहण समयथी पहेला पण, मधु घृतादि न्याये करी द्रव्य कायने भेद प्रतिक्षण पुद्गल चय, अपचय भावथी

काय भेदाय. काइज्ज० जीवे क्रियमाण काय पण भेदाय. पुद्गलने अनुक्रमे परिशाटन भावथी शेकाता कण समुद्र मुष्टी ग्रहणनी पेरे भेदाय. का० कायसमय व्यतिक्रांतने कायपणुं भूतभावपणे घृत कुंभादिक न्याये करी भेदे. (ते पुद्गलने तेवे स्वभावपणे करी). वली चूर्णीकारे काय सूत्रने विषे, काय शब्दने केवल शरीरार्थ त्यागे करी चयमात्र वाचक अंगिकार करी वखाण्या. यदाह (काय शब्द, भाव सामान्य शरीर वाची) एनो अर्थ काय शब्द सघला भावोनुं चयमात्र जे सामान्य शरीर ते वाचक इत्यर्थः एमज आत्मा पण काय (प्रदेश संचय इत्यर्थ) तेथी अनेरो पण अर्थ, ते काय प्रदेश संचयरुपपणाथकी. वली रुपी काय ते, पुद्गल संबंधनी अपेक्षाए, अने अरुपी काय ते, जीव तथा धर्मास्ति कायादिकनी अपेक्षाए. सचित्त काय ते, जीव शरीरनी अपेक्षाए. अचित काय ते अचैतन्य संचया पेक्षया. अजीव काय ते, उत्श्वासादि युक्त अवयव संचयरुप अजीवरुप. तेथी विपरीत ते जीवनी काय. हवे जीवराशी ते जीवनी काय, अने प्रमाणुं आदि राशी ते अजीवनी काय. एम शेष पण कहेवा. हवे कायानोज भेद कहे छेः-क० केटले भेदे भं० हे भगवान ! का० काया पं० कही ? इति प्रश्न. उत्तर. गौ० हे गौतम ! स० सात भेदे काया पं० कही तं० ते कहे छेः-उ०उदारिक (इत्यादिक साते. पहेलां विस्तारे वखाण्या छे, ते माटे इहां लेश मात्र वखाणीए छीए.) शरीरज पुद्गल स्कंधपणे उपचय मानपणाथी काय ते उदारीक काय, ते पर्याप्ताने होय. उ०मि० उदारीक-मिश्र, ते कार्मण संघाते, ए अपर्याप्ताने होय. वे० वैक्रिय काय, ते पर्याप्त देवादिकने होय. वे०मि० वैक्रियमिश्र, ए अतिपूर्ण वैक्रिय शरीर देवादीकने अपर्याप्तावस्थाए होय. आ० आहारिक निवृतने विषे आ०मि० आहारीक-मिश्र आहारीक परित्यागे करी उदारीक ग्रहण उद्यतने उदारीक संघात मिश्र होय ते. क० कार्मण-काय,ते विग्रह गतिने विषे होय अथवा केवल समुद्घातने विषेजहोय.

भावार्थः—ए जीव सहित कायाने जीव कह्यो. इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे व्यवहार-नयमां कायाने जीव कहीये. ए न्याये अमेतो,

छकायना जीव खाता, खवरावता अने खातो होय तेने नलो जाणवामां, तथा हणतां, हणावता अने हणताने नलो जाणवामा पाप कहीये छीए तेवारे तेरापथी कहेछे के, अनुकपा आणीने छकायना जीवने खाय, खवरावे अने खाताने नलो जाणे तेमा शु ? तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! छकायना जीव हणाय, तेनुतो व्यवहारमा अवश्य पाप कहीये, पण अनुकपा शुनजोग तो एकान्त पुन्य प्रकृति वधावानुं कारण छे तेवारे तेरापथी कहे छे के, ज्या हिंसा होय त्या शुनजोग नथी, पुन्य धर्म पण नथी एम कहे छे तेनो उत्तर —

हे देवानुप्रीय ! साधुने, कोइ उघाडे मोंढे वोलता दान दे, उघाडे मोंढे वोलीने मार्ग वतावे, तथा चित्तप्रधाने कपट करी घोडा अनेक जोजन दोडावी, प्रदेशीराजाने केशीश्रमणपासे वोलावी समजाव्यो तथा उववाइसूत्रमा पचाग्नि-तापस हाथी-तापस तथा कदमूल प्रमुखनो आहार करवावाला तापस अने जलस्नानना करणद्वारा इत्यादिक अनेक जीवहिंसा सहित कष्टना करणद्वारा, देवतामा जाता कह्या छे एटला काम हिंसा सहित छे तेमा एकान्त पाप छे के एकान्त धर्म पुन्य छे ? ते कहो

तेवारे तेरापथी कहेछे के, आटला काममा हिंसा छे तेनु पाप छे, पण थोडु छे, अने दानदेवाना प्रणाम, मार्ग वतावी साधुजीने शाता उपजाववाना प्रणाम, चित्त अने सुबुद्धिप्रधानना राजाने समजाववाना प्रणाम, तथा तापसोनु कष्ट, ए सर्वना शुनजोगना प्रणाम, ते आज्ञा माहेलो धर्म छे एम कहे छे तेनो उत्तर

हे देवानुप्रीय ! ए हिंसा सहित कर्तव्यमा शुनजोगने आज्ञा माहेला धर्म कहो छो, तेम दानमा तथा जीव बचाववामा जेटली हिंसा ने तो पाप छेज, पण अनुकपा शुनजोगमा पुन्य नथी, ने शुण पण नथी एम केम कहो छो ? कारणके गरीवने दान देवावालाना तथा जीव बचाववावालाना, एकेंद्रि जीवने मारु, एवा रूप प्रणाम नथी,

सुखशाता उपजाववाना अने अनुकंपाथी जीवने बचाववाना दयाना प्रणाम छे, तेथी तेने गुण केम नहि निपजे ? नकाचित पापनो बंधतो रागद्वेषना प्रणामथी थाय. जो रागद्वेष विना जीव हणाय तेनुं पाप लागतुं होयतो, केवलीना शरीरथी पण हालतां चालतां जीव हणाय छे, तथा जलमां सिद्धा कह्या छे, तेमने पण पाप लाग्युं जोइए. वली जयणाथी साधु हाले, चाले, बेसे, सुवे, तेथी पापकर्म बंधाय नहि, एम दशवैकालिकसूत्रमां कह्युं छे. जो एम पाप लागतुं होयतो, जयणाथी हालतां चालतां जीव हणाय, तेनुं पण पाप साधुजीने लाग्युं जोइए. पण हे देवानुप्रीय ! श्री वीतरागदेवेतो, एटले ठेकाणे रागद्वेषना प्रणाम नथी तेथी, पाप बंधाय एवुं कह्युं नथी. रागद्वेष एज कर्मबंधनुं कारण छे. तेमां द्वेष तो एकान्त पापबंधनुं कारण छे. हवे रागना बे भेदः— अप्रशस्त-राग अने प्रशस्तराग. तेमां अप्रसस्तराग तो पाप बंधावानुंज कारण छे, अने प्रशस्तराग पुन्य बंधावानुं कारण छे. वली रागद्वेष विना पुन्य पाप बंधाय नहि. ते कारणथी दान देवावालाना तथा जीव बचाववावालाना, एकिंद्रिने हणवाना द्वेषभाव नथी, पण जीवने शाता उपजाववानो प्रशस्तीराग छे; अने अनुकंपा शुभजोग दयाना प्रणाम छे, ते पुन्य-प्रकृतिनुं कारण छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, “ रागद्वेष तो अढार पापमां छे. दया पालवी, जबराइथी जीव छोडाववो, अने दान देवुं. एक माथे राग अने एकमाथे द्वेष, ए रागद्वेषना चालातो एकान्त पाप बंधावानुं कारणछे. अने पुन्य तो एकान्त शुभ जोगथीज बंधाय. ” एम कहेछे तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! शुभाशुभ जोग तो पुन्यपापना पुद्गल भेला करे छे, अने बंध तो रागद्वेषनी चोकडीथीज पडेछे. क्रोध, मान, राग अने द्वेषथीज पापनी स्थिति बंधाय; अने माया, लोभ तथा प्रशस्तीरागथी पुन्यनी स्थिति बंधाय. जो शुभजोगथीज पुन्य बंधावुं मानो तो ११ में, १२ में अने १३ में गुणठाणे उत्कृष्टो शुभजोग छे. त्यां शाता-वे-

दनीनोज वध छे ते शाता-वेदनीना वे भेद -सप्राय अने इरियावही शास्त्रसूत्र पन्नवणा पद २३ में, तथा भगवती शतक त्रीजे उद्देशे त्रीजे तेमां इरियावही शातावेदनी पुन्यप्रकृति वे समयनी स्थितिनी वधाय, अने सप्राय शातावेदनी कपायसहित पलसागरनी स्थीतिनी बेतालीस पुन्यप्रकृति माहेली ११में, १२में अने १३ में गुणठाणे एके वधाय नही जो शुभजोगथी पुन्य वधाय तो वीतराग-सजमीने (राग द्वेष रहितने) त्रण समयथी अधिकी इरियावही टलोने, बेतालीस पुन्यप्रकृति माहेली एके केम न वधाय ? ते कहो हे देवानुप्रीय ! रागविना एकला शुभजोगथी पुन्य बंधाय नही शुभजोग तो शुभ पुद्गलने भेला करे अने प्रशस्त-रागथी चणे (स्थिति) वाधे शास्त्र कर्मग्रंथ तथा भगवती शतक बीजे उद्देशे पाचमे, तुंगीयानगरीना श्रावकोना अधिकारे श्री पार्श्वनाथ भगवानना पाचसें सतान्या तुंगीयानगरीए पधार्या, तेमने तुंगीयानगरीना श्रावके, सजम अने तपना फल शु छे, ते विषे प्रश्न पुछ्या ते पाठ —

तएणते समणोवासया थेराणभगवतो अतिए धम्म सोच्चा निसम्य हठतुठा जाव हियया तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ२त्ता एव वयसी सजमेणं भते ! किं फले तवेणं भते ! किंफले ? ततेणं थेराभगवतो ते समणोवासए एवं वयासी सजमेणं अज्जो अणण्हयफले तवे वोदाणफले तएणते समणोवासया थेरेभगवते एवंवयासी जइणं भते ! संजमेणं अणण्हयफले तवे वोदाणफले किं पतिएणं भते ! देवा देवलोएसु उववज्जइ तत्थणं कालियपुत्ते णाम अणगारे तेसमणोवासए एव वयासी पुव्व तवेणं अज्जो देवादेव लोएसु उववज्जइ तत्थणं मेहलेणाम थेरे तेसमणोवासए एव वयासी पुव्व सजमेणं अज्जो देवादेवलोएसु उववज्जइ तत्थणं

आणंदरक्खिए णामं थेरे तेसमणोवासए एवं वयासी कम्मियाए अज्जो देवादेवलोएसु उववज्जइ. तत्थणं कासवेनामं-थेरे ते-समणोवासए एवं वयासी संगियाए अज्जो देवादेवलोएसु उववज्जइ पुव्व तवेणं पुव्व संजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो देवादेवलोएसु उववज्जई. सच्चेणं एसअट्ठे नोचेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥

अर्थः—त० तेवारे ते स० श्रमणोपासक श्रावक थे० स्थिवरभगवंत ज्ञानवंतनी अं० समिपे ध० द्विविध धर्म सो० सांभल्याथी नि० अतिशय सम्यक्प्रकारे ह० हर्ष पाम्या, (वचनने विषे विश्वास छे जेने तथा अत्यंत शांभलतां आदर छे जेने ते) जा० यावत् हि० हृदयने विषे साधु उपदेश देवाथी पोतानो धन्यवाद पामताथका ति० त्रणवार आ० जमणा पासाथी मांडी प० प्रदक्षणा क० करे, करीने ए० एम व० केहेता हवा. सं० संजमनुं भं० हे भगवान ! किं० शुं फल होय ? अने त० तपनुं भं० हे भगवान ! किं० शुं फल होय? इतिप्रश्न. त० तेवारे ते थे० स्थिवरभगवंत, ते स० श्रावकोप्रत्ये ए० एम केहेता हवा. सं० संजमनुं अ० अहो आर्यो ! अण० अनाश्रव फल एतावता नवां कर्मने आवतां वारे. त० तपनुं फल वो० पूर्वकृत कर्मनुं छेदवुं एतावता जुनां कर्म मुलगां छेदे. त० तेवारे ते स० श्रमणोपासक, प्रश्नना उत्तर शांभलीने थे० स्थिवरभगवंत प्रत्ये ए० एम केहेता हवा. ज० जो भं० हे भगवान ! सं० संजमनुं अ० अनाश्रव फल जे आवतां कर्मने वारे ते फल कह्युं छे, अने त० तपनुं वो० पूर्वे संचित कर्मनुं निर्जरारुप फल कह्युं छे, तो किं० शा कारणे भं० हे भगवान ! दे० देवता देवलोकने विषे उ० उपजे? तप संजमने युक्तरीते तेना अकार्यथी. इति अभिप्राय. त० त्यां ते साधुउना समुदायमां का० वडा कालीकपुत्र नामे अ० अणगार ते० ते श्रमणोपासको प्रत्ये ए० एम केहेता हवा. पु० पूर्वे तपेकरी अ० अहो आर्यो ! दे० देवलोकने विषे देवतापणे उ० उपजे. पूर्व शब्दे वीतराग

अवस्थानी अपेक्षाए सरागपणु (सरागनावे तप करे) ते पेहेलु त० ते साधुना समुदायमा मे० मेहेलनामे थि० स्थिवर श्रुतवृद्ध ते० ते स० श्रमणोपासको प्रत्ये ए० एम कहे पु० पूर्व सजमेकरी अ० अहो आर्यो! दे० देवलोकने विषे देवपणे उ० उपजे एटले सराग सजमे तथा तपेकरी देवपणुं पामे (रागना अशथी तथा कर्मबंधना हेतुथी जयाख्यात नथी ने सामायकादिक यथाख्यात-चारित्रथी पूर्वे छे तेथी) त० त्यां ते साधुउंना समुदायमा आ० आणदरखीत नामे थे० स्थिवर साधु ते० ते स० श्रमणोपासको प्रत्ये ए० एम केहेता हवा -क० कर्मपणे कर्मने विकारे अ० अहो आर्यो! दे० देवलोकने विषे देवतापणे उ० उपजे (एटले समस्त कर्म जेणे क्षय कर्यां नथी, पण शेष कर्म बाकी रह्या छे तेथी) त० त्यां (ते साधुना समुदायमां) का०काश्यपनामे साधु श्रुतवृद्ध ते०ते स० श्रमणोपासको प्रत्ये ए० एम केहेता हवाः-स० सगेकरी अ० अहो आर्यो! साधु दे० देवलोकने विषे देवतापणे उ० उपजे मनुष्यादिकना सगे वर्ततोथको सरागपणा नणी, इत्यादिकने विषे सग करतोथको सजमादिशुक्त छतु कर्म बाधे, तेथी ते देवलोकमा जाय ए चार पु० एम सराग तपेकरी तथा पु०स० सरागसजमे तथा चारित्रेकरी तथा क० शेष कर्मेकरी तथा स० मनुष्य इत्यादि सगेकरी अ० अहो आर्यो! दे० देवता देवलोकने विषे उ० उपजे स० साचो ए० ए अर्थ वली ए अर्थ यथार्थ कह्या छे, पण नो० नहीं चे० निश्चे आ० आत्मनावनी व० वक्तव्यताएकरी कह्या एटले पोतानी बुद्धि कल्पनाएकरी नथी कह्या

नावार्थ —हवे जुउ ! सजमथी कर्म रोकवा कह्या, तपथी आगलां कर्मने थोडां पाम्वा कह्या, खपाववा कह्या अने सरागपणाथी पुन्य प्रकृतिरुप देवतानु आउखु बधावु कह्यु ए न्याये प्रशस्तरागथी पुन्य बधाय ते पेहेला गुणठाणाथी मांडीने दसमा गुणठाणा सुधी राग छेप छे, तेथी उपरी स्थितिना पुन्य पाप बधाय, अने दसमा गुणठाणा सुधी शुभजोग राग सहित छे, तेथी पुन्यप्रकृति त्रण समयथी अधिकी स्थि

तिनी बंधाय. आगले गुणठाणे राग नथी, तेथी बे समयनी स्थितिनी इरियावही-क्रिया बंधाय. वली क्रोध, मान, माया अने लोजथी पुन्य पाप बंधाय. तेनी शाख, सूत्र जगवती शतक सातमे उद्देशे पेहेले. ते पाठः—

अणगारस्सणं जंते! अणागउमाणस्सवा चिठमाणस्सवा णिसीयमाणस्सवा तुयट्टमाणस्सवा अणाउत्तं वथ्थं पमि-ग्गहं कंबलं पायपुछणं गिन्हमाणस्सवा निक्खिवमाणस्सवा तसणं जंते! किं इरियावहीया-किरियाकज्जइ संपराइया-किरियाकज्जइ? गो०! नो इरियावहीया-किरियाकज्जइ संपराइया-किरिया कज्जइ. से केणठेणं जंते! गो०! जस्सणं कोह माण माया लोज वोछिन्नाजवइ तस्सणं इरियाव-हीया-किरियाकज्जइ. जस्सणं कोह माण माया लोजा अवोछिन्नाजवइ तस्सणं संपराइया-किरियाकज्जइ अहा-सुत्तंरीयमाणस्स इरियावहीया-किरियाकज्जइ उसुत्तंरीयमा-णस्स संपराइया-किरियाकज्जइ सेणं उसुत्तमेवरीयंति सेतेणठेणं ॥

अर्थः—अ० अणगारने जं० हे जगवान! कर्मबंध चिंतासहित अणगारनुं सूत्र तथा वली अणगाराधिकारथी तेनां खानपान जोजननां सूत्र कहे छेः-अ० उपयोग रहित चालता थकाने, चि० उजा रेहेता थकाने, णि० बेसताथकाने, तु० सुताथकाने, अ० उपयोग रहित व० वस्त्र प० पमिघा पात्रां कं० कांबला पा० रजोहरणा, पुंजणी तथा बीजा-वनानां वस्त्र गि० लेताथकाने, नि० मुंकताथकाने, (त० तेने) जं०हे जग-वान! कि० शुं इ० इरियावही-क्रिया लागे? के सं० संप्रायनी क्रिया लागे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! तेने नो० इ० इरियावही-क्रिया न लागे. ते इरियावही-क्रिया उपशान्त तथा क्षायक वीतरागीनेज होय तेथी. सं० संप्रायनी क्रिया लागे. से० ते शा अर्थे? जं० हे जगवान!

एम कह्यु ? गो० हे गौतम ! ज० जेने को० क्रोध, मा० मान, मा० माया अने लो० लोभ, वो० ए कषाय विछेद (उपशान्त तथा क्षय) थया होय त० तेने इ० इरियावही क्रिया लागे ज० जेने को० क्रोध, मान, माया अने लाभ, ए कषाय अ० विछेद गया न होय त० तेने सं० सप्रायनी क्रिया लागे अ० जथा जेम सूत्रमा कह्यु तेम चालताने, इ० इरियावही क्रिया लागे, अने उ० विपरीत चालताने स० सप्रायनी क्रिया लागे से० ते ठ० उत्सूत्रथी उपराठो चाले छे, से० ते अर्थे एम कह्यु

भावार्थ —हवे जुओ ! जेना क्रोधादिक चार विछेद गया, तेने इरियावहि क्रिया कही,अने क्रोध, मान, माया ने लोभ सहित छे, तेने संप्रायनी २४ क्रिया कही तेवारे तेरापथी कहे छे के, इहातो क्रोधादिकथी सप्रायनी क्रिया कही छे, पण पुण्य बधावु कह्यु नथी तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! समवायागसूत्रमा आश्रवना पाच भेद कह्या छे तेमा मिथ्यात, अव्रत, प्रमाद अने कषाय तो अशुभ कर्मना कारण छे, अने जोग आश्रवना पचर भेद ने पचीस क्रिया छे तेमा वीतराग-सजमीने रागरहितने तो शुभजोगथी शातावेदनी इरियावही क्रिया कही, अने शेष चोवीसने सप्राया क्रिया कही तेथी पुन्य न बधाय, तो शुभाशुभ कर्मना ग्रहवावाला आश्रवना तो पांचज भेद कह्या छे मिथ्यात, अव्रत, प्रमाद, कषाय अने जोग, ते पचीस क्रिया तेमा पुन्य न बधाय, तो पुन्य कइ क्रिया अने कया आश्रवमा बधाय ? ते कहो हे देवानुप्रीय ! चोवीस सप्रायने कषायनी क्रिया कही तेमा प्रशस्त-रागनी क्रिया अने शुभ जोगथीज पुन्य बधाय, अने अशुभजोगनी क्रिया रूप अने अप्रशस्तरागथी पाप बधाय ए न्याये प्रशस्त-रागसहित शुभजोग, तेज पुन्य बधावानु कारण जाणवु, पण सवर-भावमा देवतादिकनु आउखु तथा पुन्यप्रकृति बधाय नही-शास्त्र सूत्र भगवती शतक पेहले उद्देशेएमे ते पाठ

असवुडेणं भते ! अणगारे सिझइ बुझइ मुच्चइ परिणिवाइ सव्वदुक्खाण मतकरेइ ? गो० ! णोइणठेसमठे सेकेणठेण

जाव अंतं न-करेति? गो०! असंवुडे अणगारे आउयव-
ज्जाउ सत्तकम्मपगडीउ सिढिल बंधणबंधाउ, धणियबंधण
बंधाउ पकरेंति रहस्सकाल ठिआउ दिहकाल ठिइयाउ
पकरेंति मंदाणुभावाउ तिव्वाणुभावाउ पकरेंति अप्पपए-
सगाउ बहुप्पएसगाउ पकरेंति आउयंचणं कम्मं सियबंधइ
सियनोबंधइ असायावेयणिज्जंचणं कम्मं भुज्जो २ उव-
चिणेइ अणाइयंचणं अणवदग्ग दीहमद्धं चाउरंत संसा-
रकंतारं अणुपरियट्टइ. सेतेणठेणं गो० ! असंवुडे अण-
गारे णोसिज्झइ. संवुडेणं भंते ! अणगारे सिज्झइ ? हंता
सिज्झइ जाव अंतंकरेइ. सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ
संवुडे अणगारे सिज्झइ ? गो० ! संवुडे अणगारे आउयव-
ज्जाओ सत्तकम्मपगडिउ धणियबंधणबंधाउ सिढिल-
बंधणबंधाउ पकरेंति दिहकालठिइआउ रहसकालंठि-
इयाउ पकरेइ तिव्वाणुभावाउ मंदाणुभावाउ पकरेंति
बहुप्पएसगाउ अप्पपएसगाउ पकरेइ आउयंचणंकम्मं
न बंधइ असायावेयणिज्जंचणं नोभुज्जो २ उवचिणइ
अणादियं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसारकंतारं
वीइवयई. सेतेणठेणं गो० ! एवंवुच्चइ संवुडे अणगारे
सिज्झइ जाव अंतं करेंति. ॥

अर्थः—अ० असंवृत (जेणे आश्रवद्वार रुंध्या नथी एवा) अ०
साधु भं० हे भगवान ! सि० सिद्धिगमन योग्य होय ? केवल-ज्ञानेकरी
जीवादिक पदार्थने जाणे ? मु० नवा कर्मेकरी छुटे ? अने प० कर्म
पुद्गल क्षय करी स० आउखाने छेडे शेष कर्मनो अंत करे ? इतिप्रश्न.
उत्तर. गो० हे गौतम ! णो० ए अर्थ समर्थ नही. से० ते शा कारणे हे

जगवान ! जा० यावत् अ० अंत न करे ? इतिप्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! अ० असंवृत (जेणे आश्रवद्वार रुंध्या नथी एवा) अ० साधु आ० आउखा-कर्म टालीने (एक जवनेविषे एकवार अंतरमूहुर्त मात्र कालने विषेज आउखानो बंध छे तेमाटे आउखु वर्ज्युं) स० सात कर्मनी प्रकृति सि० सिथील बंधने बांधी होय तेना ध० गाढा अथवा निकाचित बंधन करे, र० थोडा कालनी स्थिति होय तेनी दि० दीर्घ कालनी स्थिति करे, एतावता घणी स्थितिने वधारे म० कर्मनो जे मंद अनुजाग (मंदरस) होय, तेने ति०तीव्र अनुजाग (तीव्ररस) करे-अ० थोडो प्रदेश जाग कर्म दलीक होय ते ब० बहु प्रदेश जाग करे, कर्मना दलीया वधारे इत्यर्थ आ० वली आउखा-कर्म सि० कोइक वखत बांधे, सि० कोइक वखत नो० न बांधे अ० असाता-वेदनी कर्मने जु० वार वार उ० पुष्ट करे अणा० जे संसारनी आदि नथी, अण० तेमज अंत पण नथी, दी० दीर्घ मध्य छे जेनी, एवा चा० चार गतिरुपी संसार कंतार (जवरुप अरण्य उजाड) ने विषे अणु० परिभ्रमण करे से० ते कारणे गो० हे गौतम ! अ० जेणे आश्रवद्वार रुंध्या नथी तेवा अ० अणगार णो० सीझे नही, इत्यादिक पूर्ववत् केहेवुं वली गौतम प्रश्न करे छे स० जेणे आश्रवद्वार रुंध्या छे एवा अ० साधु सीझे? इत्यादिक सर्व केहेवुं ह० हा गौतम ! संवृत अणगार सि० सीझे जा० यावत् अ० अंत करे एम सर्व केहेवुं से० ते शामाटे ज० हे जगवान ! ए० एम वु० कह्यु ? के स० संवृत अणगार सि० सीझे, जाव सर्व दु खनो अंत करे गो० हे गौतम ! स० जेणे आश्रवद्वार रुंध्या छे एवा अ० अणगार आ० आठ कर्म माहेलु पाचमु आयु-कर्म टाली स० सात कर्मनी प्रकृति ध० नीबड चीकणी बांधी होय, तेना सि० सिथिल (ढीलां) बंधन प० करे दी० दीर्घकाले वेदवा जोग स्थिति होय, ते र० थोडा काले वेदवा जोग स्थिति करे ति० तीव्र रस प्रत्ये म० मंद रस प० करे ब० घणा प० प्रदेश होय ते अप्प० अल्प प्रदेश करे, पण आउ० आउखा कर्मने न० न बांधे अ० अशाता-वेदनी न बांधे, जु० वारवार

छु० चोथे नही. अ० आदि अंत रहित अण० चार गतिरुप संसार-कंतारमां फरे नही. से० ते ए अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम कह्युं. सं० जे एवा संवृती अणगार छे ते सि० सीझे, जा० यावत् अं० सर्व कर्मनो अंत करी मोक्ष जाय.

भावार्थः—हवे जुओ ! आश्रवभावमां सर्वार्थ-सिद्ध आदि चार-गतिनुं आउखुं बंधाय एम कह्युं, अने संवरभावमां आउखुं न बंधाय एम कह्युं. ए न्याये चोवीस संप्रायनी क्रियाने आश्रव भावमां कहीये; अने आश्रवभावमां देवतादिकनुं आउखुं बंधाय. ए न्याये क्रोधादिक सहितने संप्राया-क्रिया लागे, अने तेमां प्रशस्त-रागथी पुन्य बंधाय. ए न्याये दानमां तथा जीव बचाववामां अनुकंपा, शुभजोग अने प्रशस्त-राग, ए पुन्यनुं कारण जाणवुं.वली छकायना जीव खाय, खवरावे, अने खाताने भलो जाणे, तेमां शुं ? एम पुछे, तेने पाछा नीचे लखेला प्रश्न पुछवाः—

(१) छकायना जीव राख्यामां तथा बचाव्यामां शुं ? रखाव्यामां शुं ? अने राखताने भलो जाण्यामां शुं ? (२) कोइ अलुणुं खावा अस-मर्थ छे, तेणे काचु सचित लुंण लेतां केवलीनां वचन संभार्यां, अने अशंख्याता जीव जाणीने सचित लुंण छोड्युं, अचित लुंण खाधुं. ए पृथ्विकायना जीवनी रक्षा करी, तेनुं पाप पोताने लागतुं हतुं ते टाल्युं तेमां शुं ? (३) कोइ सचित लुंण खातो होय, तेने अचित लुंण आपी पृथ्विकायना जीवोनी रक्षा करावी अनेरानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (४) ए रीते कोइ पृथ्विकायना (लुंणना) जीवोनी रक्षा करताने तथा पाप टालताने भलो जाणे तेमां शुं? (५) कोइने जग्यानी अरुचण पडे तेथी हवेली प्रमुख जग्या करावावाना तेना प्रणाम थया. एवामां केव-लीनां वचन संभार्यां. अने छकायना आरंभनुं मोटुं पाप जाणी छोड्युं. सीधी जग्या भाडे लइने रह्यो. ए छकायना जीवनी रक्षा कीधी अने पोतानुं पाप टाल्युं तेमां शुं ? (६) कोइ जग्या करा-

वतो होय तेने पोतानी जग्या रेहेवा आपी, छकायना जीवनी रक्षा करवी आगलानु मोढु पाप टलावे तेमा शु ? (७) वली कोइ जग्यानु पाप टालतो होय तेने जलो जाणे तेमां शु ? (८) कोइए केवलीनां वचन सञारी उनु पाणी पीने, असंख्याता अपकायना जीवनी रक्षा करी पोतानु पाप टाल्यु तेमा शु ? (९) कोइए तिविहार अपवास कर्यो तेने तृषा लागी, ते तृषा सहेवाने असमर्थ, अने उना पाणीनो जोग नथी, तेथी ते काचु पाणी पीवा चाल्यो ते वारे कोइ श्रावकना घेरे उनु पाणी ठारेलु पड्युं छे, ते पाइ अपकायना जीवनी रक्षा करी आगलानु पाप टलावे तेमा शुं ? (१०) ए रीते उंनुं पाणी पीने काचा पाणीनु पाप टाले, तेने जलो जाणे तेमा शु ? (११) कोइने स्नान करवानी मरजी थइ तेणे केवलीना वचन संञारी काचा पाणीमा असंख्याता अपकायना जीव जाणी, उनु पाणी जाचीने लावी स्नान कर्युं ए उंना पाणीनी साजे अपकायनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्यु तेमां शु ? (१२) एज रीते कोइ स्नान करताने उनुं पाणी वह अपकायना जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलावे तेमां शु ? (१३) वली कोइ उना पाणीथी स्नान करी काचा पाणीना जीवनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाले तेने जलो जाणे तेमां शु ? (१४) कोइ ज्रुख सेहेवाने असमर्थ छे, तेणे केवलीना वचनथी तेउकायमां असंख्याता जीव जाणी, तैयार ञुखडी लइ खाइ तेउकायना जीवनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्यु तेमां शु ? (१५) एज रीते कोइने रसोइनो आरम्भ करतो जाणी तैयार ञुखडी प्रमुख खवरावीने तेउकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानु पाप टलावे तेमा शु ? (१६) तेमज कोइ तैयार अचित वस्तु खाइ, तेउकायना जीवनी रक्षा करी पोतानु पाप टालतो होय, तेने जलो जाणे तेमां शु ? (१७) कोइ शीत सेहेवा असमर्थ छे तेने सगडी करी तापवानी मरजी थइ, पण तेणे केवलीना वचन संञारी वस्त्र उढीने असंख्याता तेउ-कायना जीवोनी रक्षा करी पोतानु पाप टाल्यु तेमां शुं ? (१८) कोइ तापतो होय तेने वस्त्रादिक आपी, अलादेवो

बेसारूी माला फेरवावे. ए तेउ-कायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (१९) एज रीते कोइ वस्त्र उंढी तेउ-कायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टालतो होय तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (२०) तेमज कोइ, अनार्यना उपदेशथी गाम बाल्याथी, दव दीधाथी, उपद्रव टलतो जाणी, गाम बालवा तथा दव देवा चाल्यो; पण साधु तथा श्रावकना उपदेशथी तेमां मोटुं पाप जाणी, अचित वस्तु दाना-दिकनुं उपक्रम करे, अने गाम बालवामां तथा दवमां जीव मरता तेनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्युं तेमां शुं ? (२१) तेमज कोइ गाम बालतो होय, दव देतो होय तेने सुखडी प्रमुख अचित वस्तु खव-रावी दान दइ, ते जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (२२) एज रीते कोइ पाप टाली जीवनी रक्षा करे, तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (२३) कोइ उघाडे मोढे बोलतां केवलीनां वचन संभारी वस्त्र प्रमुखथी जयणा करी, वायु-कायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टाले तेमां शुं ? (२४) तेमज कोइ उघाडे मोढे बोलतो होय तेने मुहपत्ति, अंगुछो प्रमुख वस्त्र दइ वायु-कायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (२५) एज रीते कोइ व-स्त्र प्रमुखथी जयणा करी वायुकायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टा-लतो होय तेने जलो जाणे तेमां शुं ? (२६) कोइ वनस्पतीनो आरंभ करतां केवलीनां वचन संभारी अचित वस्तुना संजोगथी, वनस्पती ली-लोत्री तथा अजमो जीरुं इत्यादिक जीवोनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टाले तेमां शुं ? (२७) एज रीते अनेरो कोइ माणस तथा तिर्यंच, लीलोत्री खातो होय तेने सुखडी, सेक्या चणा तथा सुकुं:धास प्रमुख दइ वन-स्पतीकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (२८) एज रीते कोइ अचित वस्तु खाइने वनस्पतीना जीवोनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टालतो होय तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (२९) कोइ मांस-नो गृधी मांस खावाने अर्थे, तथा वेपारने अर्थे त्रस-जीवनो सीकार करतां, साधु श्रावक, तथा दयावंतनो उपदेश सांभली सुखडी प्रमुख

थतो होय तेने पोतानी जग्या रेहेवा आपी, छकायना जीवनी रक्षा करवी आगलानु मोटु पाप टलावे तेमा शु ? (७) वली कोइ जग्यानु पाप टालतो होय तेने भलो जाणे तेमा शु ? (८) कोइए केवलीना वचन सभारी उनु पाणी पीने, असख्याता अपकायना जीवनी रक्षा करी पोतानु पाप टाल्यु तेमा शु ? (९) कोइए तिवि हार अपवास कर्यो तेने तृषा लागी, ते तृषा सहेवाने असमर्थ, अने उना पाणीनो जोग नथी, तेथी ते काचु पाणी पीवा लाग्यो ते वारे कोइ श्रावकना घेरे उनु पाणी गारेलु पड्यु छे, ते पाइ अपकायना जीवनी रक्षा करी आगलानु पाप टलावे तेमा शु ? (१०) ए रीते उनु पाणी पीने काचा पाणीनु पाप टाले, तेने भलो जाणे तेमा शु ? (११) कोइने स्नान करवानी मरजी थइ तेणे केवलीना वचन संभारी काचा पाणीमा असख्याता अपकायना जीव जाणी, उनु पाणी जाचीने लावी स्नान कर्यु ए उना पाणीनी साजे अपकायनी रक्षा करी पोतानु पाप टाल्यु तेमा शुं ? (१२) एज रीते कोइ स्नान करताने उनु पाणी दइ अपकायना जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलावे तेमा शु ? (१३) वली कोइ उना पाणीथी स्नान करी काचा पाणीना जीवनी रक्षा करी पोतानु पाप टाले तेने भलो जाणे तेमा शु ? (१४) कोइ भुख सेहेवाने असमर्थ छे, तेणे केवलीना वचनथी तेउकायमा असंख्याता जीव जाणी, तैयार सुखडी लइ खाइ तेउकायना जीवनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्यु तेमा शु ? (१५) एज रीते कोइने रसोइनो आरम्भ करतो जाणी तैयार सुखडी प्रमुख खवरावीने तेउकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानु पाप टलावे तेमा शु ? (१६) तेमज कोइ तैयार अचित वस्तु खाइ, तेउकायना जीवनी रक्षा करी पोतानु पाप टालतो होय, तेने भलो जाणे तेमा शु ? (१७) कोइ शीत सेहेवा असमर्थ छे तेने सगडी करी तापवानी मरजी थइ, पण तेणे केवलीनां वचन सभारी वस्त्र ओढीने असख्याता तेउकायना जीवोनी रक्षा करी पोतानु पाप टाल्युं तेमां शुं ? (१८) कोइ तापतो होय तेने वस्त्रादिक आपी, अलाहेदो

बेसारी माला फेरवावे. ए तेउ-कायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (१९) एज रीते कोइ वस्त्र उंढी तेउ-कायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टालतो होय तेने न्नलो जाणे तेमां शुं ? (२०) तेमज कोइ, अनार्यना उपदेशथी गाम बाल्याथी, दव दीधाथी, उपद्रव टलतो जाणी, गाम बालवा तथा दव देवा चाल्यो; पण साधु तथा श्रावकना उपदेशथी तेमां मोटुं पाप जाणी, अचित वस्तु दानादिकनुं उपक्रम करे, अने गाम बालवामां तथा दवमां जीव मरता तेनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्युं तेमां शुं ? (२१) तेमज कोइ गाम बालतो होय, दव देतो होय तेने सुखडी प्रमुख अचित वस्तु खवरावी दान दइ, ते जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (२२) एज रीते कोइ पाप टाली जीवनी रक्षा करे, तेने न्नलो जाणे तेमां शुं ? (२३) कोइ उघाडे मोढे बोलतां केवलीनां वचन संन्नारी वस्त्र प्रमुखथी जयणा करी, वायु-कायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टाले तेमां शुं ? (२४) तेमज कोइ उघाडे मोढे बोलतो होय तेने मुहपत्ति, अंगुछो प्रमुख वस्त्र दइ वायु-कायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (२५) एज रीते कोइ वस्त्र प्रमुखथी जयणा करी वायुकायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टालतो होय तेने जलो जाणे तेमां शुं ? (२६) कोइ वनस्पतीनो आरंन्न करतां केवलीनां वचन संन्नारी अचित वस्तुना संजोगथी, वनस्पती लीलोत्री तथा अजमो जीरुं इत्यादिक जीवोनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टोले तेमां शुं ? (२७) एज रीते अनेरो कोइ माणस तथा तिर्यंच, लीलोत्री खातो होय तेने सुखडी, सेक्या चणा तथा सुकुं:घास प्रमुख दइ वनस्पतीकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (२८) एज रीते कोइ अचित वस्तु खाइने वनस्पतीना जीवोनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टालतो होय तेने न्नलो जाणे तेमां शुं ? (२९) कोइ मांसनो गृधी मांस खावाने अर्थे, तथा वेपारने अर्थे त्रस-जीवनो सीकार करतां, साधु श्रावक, तथा दयावंतनो उपदेश सांन्नली सुखडी प्रमुख

खाइ, अचित वस्तुनो वेपार करी आजीविका करे ए अचित वस्तुना जोगथी सीकार छोडी, त्रस-जीवनी रक्षा करी पोतानु पाप टाले तेमां शु ? (३०) कोइ अनेरो त्रस जीवनो सीकार करतो होय, तथा छोकरो कीडीयोने कचरतो होय, इत्यादिक अनेक त्रसकाय जीवनी हींसा करता सुखडी तथा अचित द्रव्य प्रमुख पुद्‌गल दइ त्रसकाय-जीवनी रक्षा करी आगलानु पाप टलावे तेमा शु ? (३१) तेमज कोइ अचित सुखडी प्रमुख खाइ तथा अचित पुद्‌गलना व्यापारे आजीविका करी त्रसजीवनी हींसानुं मोटुं पाप छोडी त्रसजीवनी रक्षा करतो होय पाप, टालतो होय तेने धर्म जाणे तेमा शु ? (३२) कोइ श्रावकना पोषा करवाना प्रणाम थया, पण जग्यानो जोग नथी त्यारे कोइ श्रावके पोतानी जग्या दइ पोषा कराव्या ए पाच आश्रव सेववा छोडाव्या तथा छकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शु ? (३३) कोइ श्रावकना सामायक तथा पोषा करवाना भाव थया, पण जग्या, पुंजणी तथा मुहपतिनो जोग नथी त्यारे कोइ श्रावके जग्या, पुजणी, अंगुछो अने मुहपति दइ सामायक पोषा करावीने पाच आश्रव छोडाव्या ए छकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानु पाप टलाव्यु तेमा शु ? (३४) कोइ टावर (छोकरो) कीडीयोने कचरतो होय, तेने कोइ वरजी राखी कीडीयोनी रक्षा करावी तेनुं पाप टलावे तेमां शु ? (३५) कोइ मीठाइनी चीज उपर कीडीउं आवी, तेने कुतरो खावा लाग्यो ते देखी कोइए हलवेथी फाटकी कीडीयोने आघी करी ए कीडीयोनी रक्षा करी खावावालानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (३६) कोइ गायोथी वाडो भर्यो छे तेमां लाहे लागी जाणी, कोइ दयावंते वाडो खोलीने बलती गायोनी रक्षा करी लाहे लगाववावालानु द्रव्य पाप टाल्यु तेमा शुं ? (३७) तेमज कोइ गाम बालतो होय तथा लाहे लगाडतो होय, तेने वरजी राखी छकायना जीवनी रक्षा करी आगलानु पाप टलावे तेमा शु ? (३८) साधुने कोइ दुष्ट फांसी देतो होय तेने कोइ दयावत वरजी राखे ए साधुनी रक्षा करी आगलानु पाप टलाव्यु तेमां शु ? केमके एक साधुनी रक्षा करी तेणे अमता जीवनी

रक्षा करी एम जाणवुं. तेमज जे एक साधुनी घात करे, तेने अनंता जीवोनुं वेर लागे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक नवमे, उद्देशे चोत्रीसमें. ते पाठ लखीए छीए:—

पुरिसेणं भंते ! इसि हणमाणा किं ? इसि वेरेणं पुठे नो इसिवेरेणं पुठे? गो० ! नियमं ताव इसि वेरेणं पुठे अहवा इसि वेरेय णो इसिं वेरेणाय पुठे ॥

अर्थः—पु० पुरुष भं० हे भगवान ! इ० रुषिने ह० हणतांथकां किं० शुं ? इ० रुषिने वे० वेरे करी पु० फरश्यो ? के नो० अनेरा जीव संघाते वेरे फरश्यो ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! नि० नियमा इ० रुषिने वेरे करी फरश्यो, अ० अथवा इ० रुषि वेरे करीने णो० अनेरा जीव संघाते वेरे फरश्यो. एटले अनंता जीव संगाते वेरे फरश्यो.

भावार्थः—हवे जुओ ! एक साधुने हणे तेने अनंता जीवोनुं वेर लागे कह्युं. (३९) ए न्याये साधुने मारतां राखे तेणे, अनंता जीवनी रक्षा करावी कहीए. अनंता जीवोनुं मारवावालाने पाप लागतुं, ते टलाव्युं तेनां शुं ? (४०) कोइ कीडीओ उपर पग देता होय तेने, आडो हाथ दइ कीडीयोनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (४१) तेमज कोइ लीलोत्री या पृथ्विकाय (मरोडमाटी) उपर पग दइ चालतो होय तेने वरजी राखी, पृथ्विकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? इत्यादिक अनेक प्रकारे जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ?

हे देवानुप्रीय ! घणुं पाप लागतुं जाणीने टाल्युं अने थोडुं पाप लगाव्युं, तेने श्री वीतरागदेवे धर्म-पुन्य कह्युं छे. ते जीवने भलो कह्यो छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ३४ में. कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण अधर्म—लेश्या कही; अने तेजु, पद्म अने शुकल, ए त्रण धर्म—लेश्या कही. वली पन्नवणाना लेश्या—पदमां त्रण अशुद्ध अने

सक्लिष्ट (माठी) लेश्या कही, अने त्रण शुद्ध अने असक्लिष्ट (जली) लेश्या कही वली ठाणायागने त्रीजे ठाणे, त्रण लेश्या दुर्गति-गामिनी कही, अने त्रण सद्‌गति-गामिनी कही हवे श्री वीतरागदेवे छ लेश्या उपर आंबानुं दृष्टान्त दीधु ते कहेछे -छ जणा केरी खावाने अर्थे वनमां आव्या तेमा कृष्ण-लेश्यानो धणी बोल्यो के, मुलथी आंबो कापो १ नील-लेश्यानो धणी बोल्यो के, डाला कापो २ कापोत लेश्यानो धणी बोल्यो के, डालीउं कापो ३ तेजु-लेश्यानो धणी बोल्यो के, काची पाकी केरीउं तोडो ४ पद्म-लेश्यानो धणी बोल्यो के, पाका पाकी केरीउं तोडो, ५ अने शुक्ल-लेश्यानो धणी बोल्यो के, वेसो ! पुर्व पश्चिमना पवन ला गवाथी पाकेली केरी पडशे ते खाइशुं ६

हवे जुउ ! काची पाकी केरीउं ले, पाकी केरीउं ले, अने पडी होय ते लइने खाय, तेमां पण पापतो छे, पण पेहेली कृष्णादिक त्रण लेश्याना प्रणाममा तथा करतव्यमा पाप घणु छे, ते माटे अधर्म-लेश्या कही, अने कृष्णादिक त्रण लेश्यामा घणु पाप लागतु ते टाल्यु अने थोडुं पाप लगाड्युं, ते घणु पाप टाल्यु तेनी अपेक्षाए धर्म-लेश्या कही वली छ लेश्या उपर वधकनो दृष्टान्त श्री वीतरागदेवे कह्यो छे ते कहे छे -कृष्ण लेशी सघु गाम मारे १ नीललेशी माणसनेज मारे २ कपोत लेशी पुरुषनेज मारे ३ तेजुलेशी आयुद्ध सहितनेज मारे ४ पद्मलेशी सामो लडवा आवे तेनेज मारे ५ अने शुक्ललेशी अपराधीनेज मारे ६

हवे जुउ ! तेजु, पद्म अने शुक्ल-लेश्याना करतव्यमा पण पाप तो छे, पण श्री वीतरागदेवे, कृष्णादिक त्रण लेश्यामा घणु पाप लागे ते माटे अधर्म तथा माठी लेश्या कही, अने उपरनी त्रण लेश्याना ध णीने, कृष्णादिक त्रण लेश्यामा घणु पाप लागतुं ते टाली थोडुं पाप लगाड्यु ते माटे त्रण धर्म-लेश्या कही ए न्याये ४१ प्रश्नोमा थोडा पाप लाटे घणु पाप टाल्युं, ते माटे त्रण धर्म-लेश्यानी पेरे धर्म पुन्य कहीये जे थोडुं पाप लगाडी घणुं पाप टाले, ते जीवने श्री वीतरागदेवे लाभ कह्यो शास्त्र सूत्र भगवती शतक बारमे उदेशे बीजे ते पाठ —

सुतत्तं भंते! साहू जागरियंतं साहू? जयंति! अत्थेगतियाणं जीवाणं सुतत्तं साहू अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियंतं साहू. सेकेणठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगतियाणं जाव साहू? जयंति! जेइमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिठा अहम्मखाइ अहम्मपलोइ अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं वित्तिंकप्पेमाणा विहरइ एएसिणं सुतत्तं साहू. एणंजीवाणं सुत्तासमाणा नो बहूणं पाण भूय जीव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणियाए वहंति. एएणं जीवा सुत्तासमाणा अत्ताणं परंवा तदुभयंवा नोबहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति. एएसिणं जीवाणं सुत्ततं साहू. जयंति! जेइमे जीवा धम्मत्थिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिंकप्पेमाणा विहरइ एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू. एएणं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वहंति. तेणं जीवा जागरासमाणा अप्पाणंवा परंवा तदुभयंवा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति. एएणं जीवा जागरासमाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति. एएसिणं जीवाणं जागरियंतं साहू. सेतेणठेणं जयंति! एवं वुच्चइ अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्ततं साहू अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियंतं साहू.

अर्थः—सु० सुता निंद्राने वश पड्या भं० हे भगवान! सा० भला? के जा० जागता सा० भला? ए प्रश्न उत्तर. ज० हे जयंति! अ० केटलाएक जो० जीवने सु० निंद्रावश पणुं सा० भलुं, एटले सुता

संक्लिष्ट (माठी) लेश्या कही, अने त्रण शुद्ध अने असंक्लिष्ट (चखी) लेश्या कही वली ठाणायागने त्रीजे ठाणे, त्रण लेश्या दुर्गति-गामिनी कही, अने त्रण सद्‍गति-गामिनी कही हवे श्री वीतरागदेवे ठ लेश्या उपर आंबानुं दृष्टान्त दीधुं ते कहेठे -ठ जणा केरी खावाने अर्थे वनमां आव्या तेमा कृष्ण-लेश्यानो धणी बोल्यो के, मुलथी आंबो कापो १ नील-लेश्यानो धणी बोल्यो के, डाला कापो २ कापोत लेश्यानो धणी बोल्यो के, डालीठ कापो ३ तेजु-लेश्यानो धणी बोल्यो के, काची पाकी केरीठ तोडो ४ पद्म-लेश्यानो धणी बोल्यो के, पाका पाकी केरीठ तोडो, ५ अने शुक्ल-लेश्यानो धणी बोल्यो के, वेसो ! पुर्व पश्चिमना पवन ला गवाथी पाकेली केरी पडशे ते खाइशु ६

हवे जुठ ! काची पाकी केरीठ ले, पाकी केरीठ ले, अने पडी होय ते लइने खाय, तेमा पण पापतो ठे, पण पेहेली कृष्णादिक त्रण लेश्याना प्रणाममा तथा करतव्यमा पाप घणु ठे, ते माटे अधर्म-लेश्या कही, अने कृष्णादिक त्रण लेश्यामा घणु पाप लागतु ते टाल्यु अने थोडुं पाप लगाव्यु, ते घणु पाप टाल्यु तेनी अपेक्षाए धर्म-लेश्या कही वली ठ लेश्या उपर वधकनो दृष्टान्त श्री वीतरागदेव कह्यो ठे ते कहे ठे -कृष्ण लेशी वधुं गाम मारे १ नीललेशी माणसनेज मारे २ कपोत लेशी पुरुषनेज मारे ३ तेजुलेशी आयुध्द सहितनेज मारे ४ पद्मलेशी सामो लडवा आवे तेनेज मारे ५ अने शुक्ललेशी अपराधीनेज मारे ६

हवे जुठ ! तेजु, पद्म अने शुक्ल-लेश्याना करतव्यमा पण पाप तो ठे, पण श्री वीतरागदेवे, कृष्णादिक त्रण लेश्यामा घणु पाप लागे ते माटे अधर्म तथा माठी लेश्या कही, अने उपरनी त्रण लेश्याना भ णीने, कृष्णादिक त्रण लेश्यामा घणु पाप लागतु ते टाली थोडु पाप लगाव्यु ते आश्री त्रण धर्म-लेश्या कही ए न्याये ४१ प्रश्नोमा थोडा पाप साटे घणु पाप टाल्यु, ने माटे त्रण धर्म-लेश्यानी पेरे धर्म पुन्य कहीये जे थोडु पाप लगाडी घणु पाप टाले, ते जीवने श्री वीतरागदेवे लाभो कह्यो शास्त्र सूत्र भगवती शतक बारमे उद्देशे बीजे ते पाठ –

ए० एम वु० कह्युं के अ० केटलाएक जी० जीव सु० सुताज ज्जला; अने अ० केटलाएक जी० जीव जा० जागता सा० ज्जला. ए सुता जागतानो अधिकार कह्यो.

बलियत्तं ज्जंते ! साहू दुब्बलियत्तं साहू ? जयंति ! अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहु. से केणठेणं ज्जंते ! एवं वुच्चइ ? जाव साहू. जयंति ! जेइमे जीवा अहम्मिया जाव विहरइ एएसिणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू. एएणं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुबलिय वत्तव्वया ज्जाणियव्वा. बलियस्स जहा जागरस्स तहा ज्जाणियव्वं जाव संजोएत्तारो ज्जवंति. एएसिणं जीवाणं बलियत्तं साहू सेतेणठेणं जयंति ! एवंवुच्चइ तंचेव जावसाहू. दखत्तं ज्जंते ! साहू आलसियत्तं साहू ? जयंति ! अत्थेगतियाणं जीवाणं दखत्तं साहू अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू से केणठेणं ज्जंते ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव साहू ? जयंति ! जेइमे अहम्मिया जाव विहरंति एएसिणं जीवाणं आलसियत्तं साहू. एएणं जीवा आलसासमाणा नो बहूणं जहा-सुत्ता तहा-आलसा ज्जाणियव्वा जहा-जागरा तहा-दरका ज्जाणियव्वा जाव संजो एत्तारो ज्जवंति. एएणं जीवा दरकासमाणा बहूहिं आयरिय-वेयावच्चेहिं उवज्झाय-वेयावच्चेहिं थेवर-वेयावच्चेहिं तवस्सी-वेयावच्चेहिं गिलाण-वेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुल-वेयावच्चेहिं गण-वेयावच्चेहिं संघवेयावच्चेहिं साहमी-वेया-वच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो ज्जवंति. एएसिणं जीवाणं दरकतं साहू सेतेणठेणं तचेव साहू. सोइंदिय-वसठेणं ज्जंते!,

जला अने अ० केटलाएक जी० जीवने जा० निंद्राने अन्नावे जागवुं सा० नलुं, एटले जागता नला से० ते शा अर्थे न० हे नगवान ! ए० एम वु० कयुं ? के अ० केटलाएक जीवने सुवुं नलुं, अने केटलाएक जीवने जागवु नलु ? प्रश्न उत्तर ज० हे जयति ! जे० एवा जीवने (श्रुत चारित्ररुप धर्मथी रहितने) अ० अधर्मी कह्या वली एज कहेठे अहम्मा० अधर्मानुग श्रुत चारित्ररुप धर्मथी विरुद्ध अधर्म मार्गे चाले ते, अहम्मि० अधर्मज जेनो इष्ट ठे ते, अणम्मखा० अधर्म प्रत्ये कहे एवो जेनो आचार ठे ते, अहम्मप० अधर्मप्रलापी अधर्मज उपादेयपणे करी देखे ते, अहम्मपल० अधर्म प्ररजन अधर्मने विषे रहे ते, अहम्म स० अधर्मसमुदायाचार जेनो अधर्म समुदायनोज आचार ठे ते, अह म्म० अधर्मे करीज आजीविका करतायका वि० विचरे ठे, ए० एवा जीवोने सु० सुता सा० नला कह्या ए० ए जीव सु० सुतायका नो० नही ब० घणा प्राणीने नू० नूतने, जीवने स० सत्वने ऽु० दु खना उपजावणहार सो० शोकना उपजावणहार जा० यावत् प० परितापना उपजावणहार थाय ए० ए जीव सु० सुतायका अ० पोतानी आत्माने तथा प० परआत्माने त० घनेने नो० नही ब० घणा अ० अधर्मना कारणोने विषे स० सजोगेकरीने स० संजोगपणे थाय ए० ए जीव सुता नला ज० हे जयति ! जे० जे आगल कहेवाशे ते जीव ध० धर्मने विषे रह्याथका ध० धर्मानुग जा० यावत् ध० धर्मेनोज चे० निश्चे करीने वि वृत्तिकल्प करता थका विचरे ए० ए जीव जा० जागता नला ए० ए जीव जा० जागतायका व० घणा प्राणी जा० यावत् स० सत्व पृथ्व्यो दिकने अ० दु ख न उपजावे, जा० यावत् अ० परितापना नही उपजा वतायका व० वर्त्ते ते० ते जी० जीव जा० जागतायका अ० पोताने प० परने अथवा ८० पोताने अने परने बेहुने ध० घणी ध० धार्मिकना स० सजोगने विषे सं० जोमणहार न० थाय ए० एवा जी० जीव जा० जागतायका ध० धर्मजागिका करीने अ० आत्माने जगामणहार थाय ए० एवा जीवनु जागवु सा० नलु कयु से० तेणे अर्थ ज० हे जयति !

ए० एम वु० कह्यु के श्र० केटलाएक जी० जीव सु० सुताज नला; अने अ० केटलाएक जी० जीव जा० जागता सा० नला. ए सुता जागताने अधिकार कह्यो.

बलियत्तं नंते ! साहू दुव्बलियत्तं साहू ? जयंति ! अहेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू अहेगइयाणं जीवाणं दुव्बलियत्तं साहु. से केणठेणं नंते ! एवं वुच्चइ ? जाव साहू. जयंति ! जेइमे जीवा अहम्मिया जाव विहरइ एएसिणं जीवाणं दुव्वलियत्तं साहू. एएणं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुबलिय वत्तवया नाणियवा. बलियस्स जहा जागरस्स तहा नाणियवं जाव संजोएत्तारो नवंति. एएसिणं जीवाणं बलियत्तं साहू सेतेणठेणं जयंति ! एववुच्चइ तंचेव जावसाहू. दखत्तं नंते ! साहू आलसियत्तं साहू ? जयंति ! अहेगतियाणं जीवाणं दखत्तं साहू अहेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू से केणठेणं नंते ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव साहू ? जयंति ! जेइमे अहम्मिया जाव विहरंति एएसिणं जीवाणं आलसियत्तं साहू. एएणं जीवा आलसासमाणा नो बहूणं जहा-सुत्ता तहा-आलसा नाणियवा जहा-जागरा तहा-दखा नाणियवा जाव संजो एत्तारो नवंति. एएणं जीवा दखासमाणा बहूहिं आयरिय-वेयावच्चेहिं उवझाय-वेयावच्चेहिं थेवर-वेयावच्चेहिं तवस्सी-वेयावच्चेहिं गिलाण-वेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुल-वेयावच्चेहिं गण-वेयावच्चेहिं संघवेयावच्चेहिं साहमी-वेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो नवंति. एएसिणं जीवाणं दखत्तं साहू सेतेणठेणं तचेव साहू. सोइंदिय-वसठेणं नंते!

जीवे किं वधइ ? एव जहा कोह वसट्टे तहेव जाव अणु-परियट्टइ एव चरिंकिंदियवसट्टेवि जाव फासिंदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ ठउमट्ठेण भते ! निद्दाएजावा पयला-यद्ववा ? हंता निद्दाएव्ववा पयलायद्ववा जहा हसेद्धा तहा

अर्थ —हवे दुर्बलादिकने तेमज कहे छे –ब० अनतरे बलवत पणु भ० हे भगवान ! सा० भलु ? के दु० दुर्बलपणु सा० भलुं ? इति प्रश्न उत्तर ज० हे जयति ! अ० केटलाएक जीवने ब० सबलपणुं सा० भलुं, अने अ० केटलाएक जीवने दु० दुर्बलपणु सा० भलुं से० ते शा अर्थे भ० हे भगवान ! ए० एम वु० कह्यु ? के जा० केटलाएक सबला भला, अने केटलाएक निर्बल भला इति प्रश्न उत्तर ज० हे जयति ! जे० जे जीव अ० अधार्मिक इत्यादिक पुर्वोक्त सर्वे बोल के हेवा जा० जावत् वि० विचरे ए० ए जीवने दु० दुर्बलपणु भलु ए० ए जीव इत्यादिक ए०ज० जेम सु० सुतानी वक्तव्यता कही, त० तेम दु० दुर्बलनी केहेवी एटले सुता सरीखो दुर्बल पक्ष जाणवो ब० बलवतनी वक्तव्यता ज० जेम जा० जागतानो वक्तव्यता कह्यो तेम केहेवी जा० यावत् स० सजोग जोरूपाहार थाय ए० ए जीवने ब० बलवतपणुं सा० भलु से० तेणे अर्थे ज० हे जयंति ! ए० एम कह्युं तेमज जा० यावत् भलो थयो जयति पुछे छे के, हे भगवान ! द० क्षामापणुं (उद्यमपणु) भलु ? के आ० आलसपणु सा० भलु ? ए प्रश्न उत्तर ज० हे जयति ! अ० केटलाएक जी० जीवने द० दक्षपणु एटले उद्यमवतपणु भलु, अने अ० केटलाएक जी० जीवने आ० आल सपणु भलु से० ते शा अर्थे ? भं० हे भगवान ! ए०वु० एम कह्यु तं० तेमज जा० यावत् सा० भला एटलासुधी केहेवु ? ज० हे जयंति ! जे० जे जीव अ० अधर्मिक अधर्मानुगत् इत्यादिक जा० यावत् करतायका वि० विचरे, ए० जी० ए जीवने आ० आलसपणुं सा० भलुं ए० ए जीव आ० आलसु थयाथका नो० नही ब० घणा प्राणीने ज०सु० जेम

सुतानी वक्तव्यता कही त० आ० तेम आलसुनी पण वक्तव्यता केहेवी. ज० जा० जेम जागतानी वक्तव्यता कही त० द० तेम डाह्यानी वक्तव्यता केहेवी. जा० यावत् सं० संजोडणहार थाय, एटला सुधी केहेवुं. ए० ए जीव द० डाह्या थयाथका व० घणा आ० आचारजनी वे० वैयावृत्तने विषे, उ० उपाध्यायनी वैयावृत्तने विषे, थे० स्थवरनी श्रुतवृद्धनी वैयावृत्तने विषे, त० तपस्वीनी वैयावृत्तने विषे, गि० गीलाणनी वैयावृत्तने विषे. से० शिष्यनी वैयावृत्तने विषे, कु० कुलनी वैयावृत्तने विषे, ग० गणनी वैयावृत्तने विषे, सं० संघनी वैयावृत्तने विषे अने सा० साधर्मिनी वैयावृत्तने विषे, अ० आत्माने सं० संजोडणहार थाय. ए० एवा जीवने द० दक्षपणुं भलुं. से० तेणे अर्थे ज० हे जयंति! इत्यादिक. तं० तेमज केटलाएकने आलसपणुं अने केटलाएकने दक्षपणुं सा० भलुं होय. वली जयंति पुछे छे के, सो० श्रोतिंद्रिने व० वशेकरी भं० हे भगवान! जी० जीव किं० शुं कर्म बांधे? ए प्रश्न. ए० एमज ज० जेम-को० क्रोधने व० वश कह्यो तेम केहेवुं. एटले सात कर्मनी प्रकृति बांधे इत्यादि. त० तेमज जा० यावत् अ० परिभ्रमण करे. ए० एम च० चक्षु-इंद्रिने वशे पण केहेवुं. जा० यावत् फा० स्पर्श-इंद्रिने वशे पण तेमज केहेवुं. जा० यावत् संसार परिभ्रमण करे. छ० छदमस्थ भं० हे भगवान! मनुष्य नि० सुखे जागे? निंद्रा करे? प० उभो रही निंद्रा करे? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा जयंति! नि० निंद्रायमान थाय, तथा प० प्रचलायमान थाय. ज० जेम ह० हसवाने विषे कह्युं, त० तेम निंद्राने विषे पण केहेवुं.

भावार्थः—हवे जुओ! अधर्मी जीव तो सर्वथा भुंडा छे, पण जागता पांच आश्रव सेवे, हिंसा कुड कपट करे, अने सुता निंद्रामां एटलुं पाप न करीशके. घणुं पाप टल्युं, तेमाटे सुता भला कह्या. हवे जुओ! निंद्रामां सुता शुं भलुं काम करे छे? निंद्रालेतां पण सातआठ कर्म बंधाय कह्युं छे. शाख सूत्र भगवती शतक पांचमे उद्देशे चोथे. ते पाठः—

जीवेणं भंते! निद्दायमाणेवा पयलायमाणेवा कइ कम्मपगडीओ बंधइ? गो०! सत्तविह बंधएवा अठविह बंध एवा एवं जाव वेमाणिए पोहत्तिएसु जीवेर्गिदिय वज्जो तिय भंगो॥

अर्थ —जी० जीव भं० हे भगवान! निंद्रा करतो थको प० प्रचलायमान (विशेष निंद्रा) करतो थको क० केटला कर्मनी प्रकृति बं० बांधे? इतिप्रश्न उत्तर गो० हे गौतम! स० आउखु न बांधे त्यारे सात कर्मनी प्रकृति ब० बांधे, अने आउखु बांधे त्यारे अ० आठ कर्मनी प्रकृति ब० बांधे ए० जा० एम यावत् वे० वैमानिक सुधी केहेवु पो० बहुवचनने विषे पुठली परे जी० जीवपदने तथा एकिंद्रियना पांच पदने विषे एक भागो शेष १९ दमके ति० त्रण भं० भागा

भावार्थ —हवे जुओ! निंद्राथी सातआठ कर्म बंधाय, त्यारे पापी जीवने सुता भला केम कह्या? पण अछियातो अपेक्षाय वचन छे ते जागतानी अपेक्षाये निंद्रामां सुताने थोडुं पाप लागे, अने घणु पाप टल्युं ते माटे सुताने भला कह्या एमज पापी जीवने दुर्बल आलसु भला कह्या ए न्याये कोइने तृषा लागी तेथी काचु पाणी पीवा मांड्या, पण अरिहंतना वचनथी तेमां असंख्याता जीव जाणीने पीवु छोड्युं, पण तृषा न खमाय तेथी उनु पाणी पीधु हवे उनु तथा काचुं पाणी ए बे टाली न शकाय, तेथी उना पाणीनी साटे काचा पाणीनु पाप टाल्यु, ते गुण नीपन्यो कारणके निमित्त कारण विना दया न पलाय" हवे जेम पोते थोडा पाप साटे घणु पाप टाल्यु ते गुण थयो, तेम अनेराने घणु पाप लागतुं जाणी, थोडा पाप साटे घणुं पाप टलावे तेमां गुण केम नही थाय? पोतानु पाप टाल्यामां गुण हशे तो अनेरानुं पाप टलाव्यामां पण गुण हशेज, अने टालताने भलो जाण्यामां पण गुण हशेज एम ४१ प्रश्नमां पण जाणवुं ते उपर द्रष्टान्त कहीये छीये जेम कोइने राजाए सो रुपीया दंड कर्या तेथी घरनो धणी जाणे के माहारा सो रुपीया गया तेवामा कोइ प्रधान प्रमुख वचे पडी, पचास रुपीया

छोडावी पचासज रुपीया देवराव्या. तेथी ते पुरुष तेने शुं जाणे ? ए पापीए माहारा पचास रुपीया खोवराव्या,एम जाणे? के एम जाणे? जे शाबाश न्नाइ, तमे माहारा पचास रुपीयामां छुटको कराव्यो, तमे मने घणो गुण कर्यो एम कहे ? ए रीते गुण छे के अवगुण छे ? ते विचारो. एम ४१ प्रश्नमां अनेरानुं पाप टलाव्युं ते पण न्नवन्नवमां गुणज छे.

वली तेरापंथी कहेछे के, "बीलाडी प्रमुख हिंसक जीव उंदर प्रमुख गरीब जीवने मारे, तेने छोडावे तो, छोडावे तेना उपरतो राग आव्यो, ने बीलाडी प्रमुख उपर द्वेष आव्यो. ए रागद्वेषनां फलतो कडवां छे. वली जेम न्नाणुं पीरश्युं ने जमनारना मोंढा आगलथी खोशी ले, ते दृष्टान्ते छोडावनारने न्नोगांतराय लागे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! न्नोजनवाला तो कमाइ करी पीशी रांधीने जमे, अने तेनुं जमवुं न्नोजनथकीज थाय. ते न्नोगांतराय खोश्या आश्री लागे, पण बीलाडीना उंदरमां केटला टका न्नर्या हता ? ते कहो. केमके तेतो द्वेष-न्नावथी दुष्ट प्रणामथी मारे छे. ए छोडावनारना अंतराय देवाना द्वेष प्रणाम नथी, पण तेनुं घणुं पाप टलाववाना प्रणाम छे. वली तमे पूर्वे कह्युं के, छोडावनारनो बीलाडी उपर द्वेष-न्नाव आव्यो. ए तमारुं केहेवुं अयथार्थ छे. कारणके एज वेलाए बीलाडीने कुतरो मारे, तेने पण दया आणी छोडावे. ए द्वेषनो राग केम थयो ? हे देवानुप्रीय ! छोडाववावालानातो दयानाज प्रणाम छे, अने बीलाडीनुं पाप टलाववानाज प्रणाम छे. जेम बालकने ताव आवतो होय, ते बालक दहीनो वाटको पीवा लागे. ते तेनी माता खोशी ले, तेथी ते पोताना अज्ञानपणे दुःख पामे, पण माताने दुखनी देणहारी न कहीए. हितसुखनी वान्छनहारीज कहीये. वली कडु करीयातुं वाटीने पाय तेथी बालक दुःख पामे, पण माताने तो ताव गमाववावाली अने सुख देवावालीज कहीये. तेम बीलाडी पोताने अज्ञानपणे दुःख पामे, पण जीव छोडाववावालो तो बीलाडीनुं पाप टलाववावालो तथा हितनो वंछनहारोज कहीए.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, "एम जवराइथी जीव बचाव्या तथा आगलानु पाप टलाव्या धर्म थायतो, पहेला देवलोकनो धणी इन्द्र सीमंधरस्वामी पासे जाय छे हवे सीमंधरस्वामी जो जवराइथी जीव बचाव्यामां धर्म मानता होयतो, इन्द्रने उपदेश दइ असंख्याता म्लेच्छ कसाई माछला प्रमुख हिंसा करे छे, तेने वर्जी राखे, असंख्याता जीवोनी रक्षा करावे अने घणा जीवोनु पाप टलावे, पण श्रीवीतरागदेवनी जवराइथी जीव छोडाववानी श्रद्धा नथी " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! तमारा केहेवा प्रमाणे जवराइथी जीव बचाव्याथी तो पाप थाय, तेथी ए काम इन्द्र करे नहीं पण अमे तमने पुछीए छीए के, इन्द्र कोइने उपदेश दइ मिथ्यात्व छोडावे, तेमा शु थाय ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, धर्म थाय तो हे देवानुप्रीय ! भरतक्षेत्रमां घणा कुमतिओए अवली अवली परुपणा करी चालणी चालणी धर्म करी नांख्यो छे हवे जो अहींयां इंद्र आवीने उपदेश दे, अने कहेके सीमंधरस्वामीए कह्युं छे के, फलाणो धर्म साचो छे एम कहे तथा घणा जीवोने तीर्थंकर केवलीना दर्शननी चाहना होय तेमने दर्शन करावी लावे तो घणा जीवोनु मिथ्यात्व छुटे, अने समकित पामे ए तो धर्मनु कार्य छे ए समजाववामा तो तमे पण धर्म कहोछो ए धर्मनु काम इन्द्र केम न करे ? ते कहो पण हे देवानुप्रीय ! कोइना केहेवाथी काम करे तेने अनुकंपा न कहीये प्रत्यक्ष जीव मरतो देखी कोमल करुणा भाव आणी कार्य करे ते प्रणामनेज अनुकंपा कहीए ते अनुकंपा जीवने क्षयोपशम भावथी आवे

वली तेरापंथी कहेछे के, "४१ प्रश्नमा पैसा आपी अचित्त वस्तु खवरावी जीवनी रक्षा करावी आगलानु पाप टलाव्यु, तेमा त्रण कन्याना दृष्टान्ते धर्म पुन्य नथी जेम त्रण कन्याओमा, एकतो श्रावकनी बेटी, एक वेश्यानी बेटी, अने एक ब्राह्मणनी बेटी ३ ए त्रण जणीए त्रण कसाइने बकरा मारवा लइ जता देखी, जे श्रावकनी बेटी हती तेणे कसाइने उपदेश दइ बकराने छोडाव्या, १ वेश्यानी बेटीए कुशील सेवीने छोडाव्या, २ अने ब्राह्मणनी बेटीए घरेणु, धन परिग्रह

दइ छोमाव्यां. ३ हवे ए त्रण जणांमां उपदेश दइ छोमाव्यां तेमां तो धर्म छे, पण कुशील सेवीने छोमाव्यां तेमां, अने दाम घरेणुं दइ छोमाव्यां तेमां धर्म नथी. जो घरेणुं परिग्रह दइने छोमाव्यां तेमां धर्म हशे तो कुशील सेवीने छोमाव्यां तेमां पण धर्म हशे." एवी कुयुक्ति मेलवे छे. तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! तमारा पुज्यजीने घणा वर्षे आव्या शांभलीने तमारा श्रावक श्रावीका सामा आव्या, अने वंदणा करी रसोइछे तैयार करावी बारमुं वृत निपजाव्युं. तेमां बे तमारा पुज्यनी पक्की रागीणी बाइछे मोमी आवी. तेमने तमारा पुज्यजीए पुछयुं के, हे बाइछ ! तमे मोमी केम आवी ? त्यारे तेमणे कह्युं के, चोर अमने मारगमां मल्या. तेमां एक जणी तो कहेके में कुशील सेवी केम मुंकावी (छुटी), अने एक कहे के में तो घरेणुं आपीने केमे मुंकावी. हवे तमारी केहेणीने लेखे एके चोथो आश्रव सेवराव्यो, अने एके पांचमो आश्रव सेवराव्यो. हवे तमारा पुज्यजी प्रायश्चित केने देशे ते कहो. त्यारे तेरापंथीए कहेवुंज पमे के, कुशील सेव्युं तेने प्रायश्चित दे. तो हे देवानुप्रीय ! कुशील सेवी तथा परिग्रहो दइ जीव छोमावे ते बंन्नेने सरखां केम गणोछो ? कारण के जेणे कुशील सेवराव्युं, तेणे तो पोतानां अने आगलानां बंनेनां मोह कर्म पोख्यां. असंख्याता पंचेंद्रिजीवनी हींसा बंनेने लागी, अने एक पंचेंद्रि जीवनी रक्षा कीधी. हवे आगलानुं एक पंचेंद्रि जीवनुं पाप टलाव्युं, ते तो चोखुंज कामछे, पण असंख्याता पंचेंद्रि जीवनी घात कुशील सेवतां बंनेने लागे, तेमां नफो थोमो, अने तोटो घणो, तेथी ए काम अकरवा जोग्य छे; पण घरेणुं दइ बकरां छोमाव्यां, तेने कया जीवनी हींसा लागी ? ते कहो. ए कुहेतु केम मले ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "कुशील सेव्यां सेवराव्यामां तो चोथुं पाप छे, अने परिग्रहो सेव्यां सेवराव्यामां पांचमुं पाप छे. गृहस्थिनुं खावुं पीवुं अने घरेणुं, ए परिग्रहामां छे." एम कहे छे. तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! खावु पीवु घरेणा ने कपडा, ए तो आठ फरसी पुद्गल छे, रुपी छे, अने नजरे आवे छे, अने अढार पापने तो भगवाने रुपी चोफरसी कह्या छे, ते नजरे आवे नही शास्त्रसूत्र भगवती शतक बारमें उद्देशे पांचमें ते पाचमु पाप मुर्छा, तृष्णा, ममता, चोफरसी छे तेने कहीये, पण खावा, पीवा, अने घरेणाने परिग्रहो न कहीए ए न्याये घरेणां देइ बकरा छोडाव्या तेणे पोताना तृष्णा-ममतारुप परिग्रहो घटाड्यो, जीवनी रक्षा करावी, अने आगलानु पाप टलाव्यु ए प्रत्यक्ष गुणनुं कार्य छे ते विवेक विना दीसतु नथी वली खावु, पीवु, घरेणु ने कपडाने परिग्रहो कहे, तेने पुछीए के, पाचमा पाप परिग्रहा छतां जीवने केवल ज्ञान उपजे के नहि ? तेवारे कहेछेके, परिग्रहाथकां केवल न उपजे तेवारे पाछु कहेवु के, मरुदेवी माता हाथीनी अस्वारीए खाखो करोडोनां घरेणा पेहेरेल थकाने केवलज्ञान केम उपज्युं ? ते कहो तेवारे कहेछे के, “ तृष्णा ममताने परिग्रहो कहीए, ते मटी गइ तेथी केवल उपन्यु, पण खावा पीवा कपडा घरेणा अने हाथीनी अस्वारीने परिग्रहो न कहीए ए उपर ममता होय, ते ममताने परिग्रहो कहीए ” तो जुओ ! हे देवानुप्रीय ! एकतालीस प्रश्नमा देवावालानी अने लेवावालानी ममता-तृष्णा परिग्रहो छे, ते रुपी चोफरसी पुदगल छे, ते दीधा लीधा जाय नही बेनेना पोतपोतानी पासे ज रहे, अने भद्रीयां देवावाले तो उलटो पोतानी ममता तृष्णा-रुप परिग्रहो घटाड्यो छे तेनी शास्त्र सूत्र भगवती शतक पाचमे ते पाठ —

गाहावइस्सणं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा भंडयसे अणुवणिएसिया गाहावइस्सणं भंते ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरियाकज्जइ जाव मिच्छादंसण किरिया-कज्जइ कइयस्सवाताओ भंडाओ किं आरंभिया किरियाकज्जइ जाव मिच्छादंसण किरियाकज्जइ ? गो० ! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरियाकज्जइ जाव

अपच्चरकाणी मिच्छादंसणवत्तिया सियकज्जइ सियनोकज्जइ कइयस्सणं ताउ सव्वाउ पयणु नवइ. गाहावइस्सणं नंते! नंमेविक्किणमाणस्स जाव नंमेसेउवणीएसिया कत्तियेस्सणं नंते! ताउ नंमाउ किं आरंनिया किरियाकज्जइ जाव मिच्छादंसणकज्जइ? गो० ! कत्तियस्स ताउ नंमाउ हेठिल्लाउ चत्तारि किरिया कज्जइ मिछादंसण किरियाए नयणाए गाहावइस्सणं ताउ सव्वाउ पयणुइ नवइ. गाहावइस्सणं नंते! नंमे जाव धणेयसे अणुवणिएसियाए एयंपि जहा नंमे उवणीए तहा णेयव्वं चउत्थो आलावगो धणेयसे उवणीए सिया जहा पढमो आलावगो नंमेयसे अणुवणिएसिया तहा णेयव्वो पढमं चउत्थाणं एक्को गमो ॥

अर्थः—गा० गाथापतीने नं० हे नगवान! नंमा० क्रियाणां वेचतांथकाने क० क्रइक (क्रियाणाना ग्राहक) नं० ते नांम प्रत्ये सा० संचकार अंगीकार करे, नं० ते क्रियाणुं अ० जेणे संचकार्युं तेने आप्युं नथी. तेवारे गा० गाथापतीने नं० हे नगवान! ता० ते नं० क्रियाणाथकी किं० शुं? आ० आरंननी कि० क्रिया लागे? के परिग्रहनी, मायाप्रत्ययनी, अपचखाणीनी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन-प्रत्ययनी कि० क्रिया लागे? अने क० क्रइकने नं० ते क्रियाणाथकी किं० शुं आ० आरंननी कि० क्रिया लागे? जा० यावत् मि० मिथ्यदर्शन-प्रत्ययनी कि० क्रिया लागे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! गा० गाथापतीने ता० ते नं० क्रियाणाथकी आ० आरंननी, परिग्रहनी अने मायाप्रत्ययनी जा० यावत् अ० अपचखाणनी क्रिया नियमथकी लागे, अने मि० मिथ्यादर्शन-प्रत्ययनी क्रिया सि० मिथ्यादृष्टि होय तेने लागे, अने सम्यक्दृष्टि होय तेने न लागे. क० ते क्रइकने संचकारना देणहारने स० हजी तेणे क्रियाणुं लीधुं नथी ते माटे सघली क्रिया हस्व

लागे, अने गृहस्थीने ते क्रियाणु हजी तेनु छे ते माटे मोटी लागे गा० गाथापतीने भ० हे भगवान ! भ० क्रियाणु वेचतायकाने जा० पा सत् भ० ते क्रियाणु जेणे संचकार्युं तेने आप्यु होय तो क० ते क्रिया णाना प्राहकने भ० हे भगवान! भ० ते क्रियाणाथकी किं० शु ? आ० आरंभनी क्रिया लागे ? तेमज जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययनी क्रिया लागे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गोतम ! क० प्राहकने ते भ० क्रयाणायकी क्रियाणुं लीधुं माटे च० पेहेली आरंभनी आदि चार क्रिया मोहोटी लागे, अने मि० मिथ्यात्विने मिथ्यादर्शन प्रत्ययनी क्रिया लागे, पण सम्यक्दृष्टिने न लागे ते माटे भ० भजना कही गा० गाथापतीने (क्रियाणु दीधु छे ते माटे) ता० ते सर्व प० पातली लागे गा० गाथा- पतीने भ० हे भगवान ! भ० भ० जा० यावत् इत्यादि त्रीजा आला- वानो पाठ पाछला बीजा सरखो केहेवो धन दीधु नथी त्या सुधी के- हेवो, अने क्रयकने हेठली चार क्रिया लागे, अने मिथ्यादर्शननी क्रिया कोइ वखते लागे अने कोइ वखते न लागे, अने गाथापतीने ते धननी क्रिया धन अणलीधा माटे पातली लागे ए त्रीजु सूत्र बीजा सूत्र स- रखु केहेवु तेम चौथे सूत्रे "भंकेणवणिए" ए सूत्रने विषे क्रयकने पांच क्रिया मोटी लागे अने गाथापतीने पातली लागे तेम ए बीजा सूत्रने विषे केहेवी एनो पाठ वली ज० जेम पेहेला आलावाने विषे " भंते अणु वणेसिया गाहावइस्सण ताउ आरंभिया किरियाकज्जइ मिथ्यादसण किरिया सियकज्जइ सियनोकज्जइ कइयस्सण ताव सव्वाउ पयणुइ भवइ" एम पाठ छे तेम ए पाठ च० चोथे आलावे केहेवो कारणके गाथाप तीए धन लीधुं छे तेथी तेने धननी मोटी क्रिया लागे, अने क्रयकने धन दीधु छे माटे तेने पातली लागे एम पाठने अनुसारे पेहेला आ- लावानो अने चोथा आलावानो एक सरखो पाठ जाणवो

भावार्थ —हवे जुओ ! क्रियाणुं अने धन दीधु तेने च्यार पांच क्रिया पातली कही, अने राखवावालाने जबरी कही ए च्यारे ४१ प्र श्नमां वस्तु द्रव्य दीधु, तेने परिग्रहादिकनी क्रियापातली एमी च्यारे

दाम दइ अचित रुपी-आठ-फरसी पुद्गल खवरावी घणा जीवनी रक्षा करावी, आगलानुं हिंसानुं पाप टलाव्युं तेमां गुण केम नथी? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "जीव जीव्या तेतो दया नथी, अने जीव मरे ते हिंसा नथी; पण जीव मारे तेने हिंसा लागे, अने जीव न मारे तेने दया नीपजे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! जीव मुए अने जीव जीवतो रह्यो ते तो कारण छे, अने हिंसा लागी अने पाप टाल्युं टलाव्युं ते कार्य छे. ए कारणनो नाश केम करो छो? केमके कारण विना तो कार्य नीपजे नही. जेम कोइए कंदोइना हाटनी सुखडी पोते खावी छोडी अनेराने छोडावी, लीलोत्री पोते खावी छोडी अनेराने छोडावी, चोरी करवी पोते छोडी अनेराने छोडावी. हवे कंदोइना हाटनी सुखडी रही, लीलोत्रीना जीव जीवता रह्या, अने धणीने घेर माल रह्यो, ते तो कारण छे; अने पोतानुं अने बीजानुं पाप टलाव्युं ते कार्य छे. हवे कंदोइनी सुखडी रही, लीलोत्रीना जीव जीवता रह्या, अने शेठना घरमां माल रह्यो, त्यारेज पाप टल्युं; तेम जीव जीवता रह्या तोज दया नीपजी. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "कोइने साधुजीए कुशीलना त्याग कराव्या, तथा दिक्षा दीधी, तेथी तेनी स्त्री कुवामां जइ पडी. तेनुं पाप साधुजीने लागवुं जोइए. ए पण कारण अने कार्य छे." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! एमां शुं भुल छे? जेम सुखडीना त्याग कराव्याथी सुखडी पडी रही जाणे, लीलोत्रीना जीव जीवता रह्या जाणे, अने शेठना घेरे माल रह्यो जाणे, तेम कुशीलना त्याग कराव्याथी तथा दीक्षा दीधाथी तेनी स्त्री कुवे पडशे एम जाणीने त्याग करावशे तो तेने पाप लागशेज; पण स्त्रीने मरती जाणे तो साधु मुनीराज त्याग करावेज नही. ए कारण अने कार्य साचुं छे, पण ते सुखडी अने लीलोत्री, बीजो कोइ खाशे अने चोरीने धन लेशे, तेने पाप लागशेज; पण त्याग करावनावालाने तो ए वस्तु रही. हवे जेना जोगथी ए वस्तु रही, तेनेज गुण नीपज्यो अने पाप टल्युं. एम ४१ प्रश्नमां दाम दीधा, वस्तु

खवरावी अने जयराइ कीधी ते तो कारण छे, अने जीवनी रक्षा थई आगलानुं पाप टल्युं ते कार्य छे तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "उपदेश दई जीव छोडावे तेमा तो धर्म छे, पण पैसा दइ, वस्तु खवरावी, जयराई करी जीव वचावे, तेमा धर्म नथी" तेनो उत्तर –

हे देवानुप्रीय ! उपदेश दीधो, पैसा दीधा, वस्तु खवरावी, तथा जयराइ कीधी, ए तो चार कारण छे, अने ए कारणथी जीवनी रक्षा थई, आगलानुं पाप टल्युं, ते कार्य छे हवे उपदेश दइ जीव छोडाव्यो, ते तो कार्य तथा कारण वने शुद्ध छे, अने पैसा दइ, वस्तु खवरावी, के जयराइ करी जीव छोडाव्या, ए कारण तो त्रणे अशुद्ध छे, पण जीवनी रक्षा थइ, पाप टल्युं, ए कार्य शुद्ध छे हवे तमे ए कारण अशुद्ध देखी कार्यमां पाप केम कहो छो ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "जेनुं कारण अशुद्ध छे तेनु कार्य शुद्ध नथी" तेनो उत्तर

हे देवानुप्रीय ! रायप्रशेणी सूत्रमां चित्त प्रधाने कपटाइ करी घोडा रथ दोडावी, अनेक जीवनी घात करी, प्रदेशी राजाने समजाव्यो ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध ? ए कारण अशुद्ध छे तेमां तो पाप छे, पण, प्रदेशीने समजाव्यो ते कार्य शुद्ध छे, तेमा पाप नथी तेने श्री वीतरागदेवे धर्म वखाणी कह्यो छे, पण कारण अशुद्धनो पक्ष लइने पाप दखाडी कह्यो नथी एमज ज्ञाता–सूत्रमां सुबुद्धि प्रधाने काचा पाणीनी हिंसा करी जीतशत्रु राजाने समजाव्यो ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध ? ते कहो तेमज कोइ साधुने वंदणा करवाने, वाणी सांभलवाने, तथा सामायक करवाने, रथ पालखी प्रमुखनी अस्वारी करी, मेह वरसतां, रातना उपयोग विना अनेक प्रकारनो आरंभ तथा अजयणा करतो आव्यो ए कारण अशुद्ध? के साधुने वंदणा करी, वाणी शांभली प्रतिबोध पाम्यो, ए कार्य अशुद्ध ? ते कहो तेमज नदीमां असंख्याता जीवनी घात करतां साधु नदी उतरे, ए कारण अशुद्ध ? के ज्ञान, दर्शन अने चारित्र निर्मलां राखवाने,

श्रीवीतरादेवनी आज्ञा आराधी, ए कार्य अशुद्ध ? ते कहो. तेमज वहेती नदीमांथी आरजाने अनंता जीवनी रक्षपाल जाणीने, साधु काढे, ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध? ते कहो. तेमज उघाडे मोंढे बोलतां साधुने दान दीधुं, तथा उघाडे मोंढे बोलतां देव-गुरु-धर्मने धन्‍कारो दीधो, ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध ? वली पंचाग्नि प्रमुख अनेक हिंसा सहित तपश्या तथा कष्ट करे, तेथी पुन्य बंधाय. ने देवतामां जाय. (शाखसूत्र उववाइजी) ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध ? ते कहो. इत्यादि अनेक कारण अशुद्ध, तेनां कार्य शुद्ध जाणवां. ए न्याये उपदेश दइ जीवने बचाव्यो, तेनुं कारण अने कार्य बंने शुद्ध छे, अने दाम दइ, वस्तु खवरावी, जवराइ करी, जीव छोडाव्यो, तेनुं कारण तो अशुद्ध छे; पण कार्य शुद्ध छे ते करवा योग्य छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "अशुद्ध कारणे करीने शुद्ध कार्य करवुं नहीं." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! शुद्ध कारणथी कार्य सिद्धि थाय तो अशुद्ध कारण न करवुं, पण शुद्ध कारणथी कार्य सिद्धि न थाय तो, अशुद्ध कारणने तो खोटुंज जाणे, पण कार्यमां गुण घणो जाणे तो, अशुद्ध कारणथी शुद्ध कार्य करे. ते उपर द्रष्टान्त कहेछेः-" जेम कोइ वेपारी देशदेशावरमां माल मोकले, ने हुंडी भाडुं वोलाइ खरच लाग्याविना माल ठेकाणे पोहोंची जाय, सवाया दोढा दाम थाय, तेवारे तो ए कारणथी कार्य करवुं श्रेष्ट जाणे; पण हुंडी, भाडुं, ने वोलाइ खरच लाग्यां पण सवाया दोढा दाम थाय तो, वीस रुपीया खरच पडे तेने तो खोटा जाणे, पण आगल लाभ घणो जाणे तो ए वेपार करे के नही ? अर्थात करेज." तेम दान दयामां पण अशुद्ध कारणने तो खोटुंज जाणे, पण आगल कार्यमां लाभ घणो जाणे तो ते करवा योग्य छे. वली कोइना दिक्षा लेवाना भाव छे, पण साधुनां उपगर्ण जोइए तेनो जोग नथी. तेवारे कोइक श्रावके ओघो, मुहपति, वस्त्र, पात्रां अने सूत्र देइ दिक्षा देवरावी. ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध? ते कहो. जेम ए उपगर्ण दइ दिक्षा देवराववी, ए कार्य करवा योग्य छे. तेम उपगर्ण देइ सामायक

पोसो करावे, तथा ४१ प्रश्नोमा ऽव्यवस्तु देइ, जीवनी रक्षा करावी आगलानु पाप टलाव्यु, ते शुद्ध कार्य करवा योग्य ठे वली श्री कृष्ण माहाराजे पाठला परिवारनी खावा पीवानी सारसज्जाल करी, घणा जीवोने धर्म दलाली करी दीक्षा देवरावी ए कारणे तीर्थंकर गोत्र बांध्यु ए न्याये अशुद्ध कारणथी पण शुद्ध कार्य करवा योग्य ठे हे देवानुप्रीय! उपदेश दइने जीव ठोडाव्यो, तेमा गुण थसे तो, बाकीना त्रण कारणथी पण गुण थशेज, पण उपदेश दइनेज जीव ठोडाव्यामा धर्म ठे एम तमे कपटाइथी मत कहो, कारणके तमारे लेखे असजतीना जीववामा धर्म नथी ए मिथ्या जुठ केम भाखो ठो? तमारी सरधाने लेखे तो उपदेश दीधामाज धर्म कहेवु जोइए, पण उपदेश दइ असंजतीने हणवाना त्याग करावबामा तथा ठोडाववामा धर्म कहेवु न जोइए

वली अनुकपा दान दयाना उत्थापक कहेठे के, " जीवने न हणवा तथा जीवनु पाप टलावीने तरवु थठ्युं, ते तो सूत्रमा ठाम ठाम कह्यु ठे, पण असजती जीवने बचाववो क्या कह्यु ठे ?" तेनो उत्तर हे देवाणुप्रीय ! जीवने उगारवानु सूत्रमा ठामठाम श्री वीतरागदेवे कह्यु ठे, पण तमारा सरखा जीव–दया–अनुकंपा रहितने सुजतु नथी ते सूत्रनी शाखा कहे ठे प्रथम तो साधु त्रण करण अने त्रण जोगे करीने, ठकायना जीवने मन, वचन अने कायाथी हणे नही, हणावे नही अने हणताने भलो जाणे नही १ ए न हणावु तो त्रण करण नव जोगे करीने करी चुक्या हवे उपदेश दइ ठकायना जीव बचावे, तथा ठकायनी हिंसाने त्याग करावे, ए न हणयामा के उगार्यामा ? वली ठकायना जीवनी रक्षावास्ते तथा उगारवाने अर्थे श्रीवीतरागदेव उपदेश देवे कह्यु ठे शाखसूत्र प्रश्नव्याकरण प्रथम सवर द्वारमा ते पाठ•

इमच सबजग जीव रक्कण दयठयाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहिय पेच्चा भनिय आगमेसि भद्द सुध नेयाउय ॥

अर्थः—इ० ए प्रत्यक्ष स० सर्व जगतना जीव (चोरासी लाख जीवाजोन) ने र० राखवाने विषे कारणरुप द० दयाने अर्थे पा० प्रवचन (श्री सिद्धान्त दयानो परमार्थ) न० नगवंत श्री महावीरदेवे सु० नलो कह्यो. ए सिद्धान्तविना कांइ दयानो परमार्थ जाणे नही, ते माटे प्रवचन कह्युं. ते प्रवचन आ० आत्मा (जीव)ना हीतनणी पे० जन्मान्तरे न० शुद्ध फलपणे प्रणमे, जीव उगारवो ते प्रवचन इत्यर्थ आ० आगमे काले न० कल्याणनुं कारण सु० निर्दोष न्याय मार्गे वर्तवानुं कारण.

नावार्थः—हवे जुन ! प्रवचन सिद्धांन्त रुपणी वाणी श्री नगवंते नली कही. ते शा अर्थे ? सर्व जगतना एटले छ कायना जीवोनी रक्षा तथा दयाने अर्थे कही. ए न हणयामां के उगार्यामां ? सर्व गणधर साधु प्रमुख, त्रिविधे त्रिविधे न हणवुं, ते तो करी चुक्या. हवे उपदेश शा अर्थे देवे ? छ कायना जीवोनी रक्षा, दया, अने उगारवाने अर्थेज उपदेश दे छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के " उपदेश तो जीवनुं तरवुं वान्छवाने अर्थे तथा आगलानुं पाप टलाववाने अर्थे दे छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जीवनी रक्षा कर्याथी तथा दया पाल्याथी पाप टलशे, तरवुं थशे, एमां शुं नुल छे ? श्री वीतरागदेवने तो तमथकी अनंतुं ज्ञान हतुं, पण तमारी पेठे केम न कह्युं? के जीवने तरवाने अर्थे वाणी प्रकाश करी छे. हवे जो तरवाने अर्थेज वाणी प्रकाश करी कहो छो, तो पांच स्थावर, त्रण विगलेन्द्रि, अने असन्नी (मनरहित) जीवने, श्री नगवंतनी वाणी कइ रीते तारे ? ते कहो. अहीं तो " सवजग जीव रक्खणछयाए " एवो पाठ छे. वासते छकायना जीवनी रक्षा तथा दयाने अर्थे उपदेश दे, वाणी प्रकाशे, एम कह्युं छे. ए न हण्यामां के उगार्यामां ? ए कूमति उगावीने अनंता तीर्थंकर तथा केवलीमाथे आल दइ वचन उत्थापी अनंतो संसार केम वधारो छो ? वली चित्तप्रधाने केशीश्रमण मुनीराजने कह्युं के, प्रदेशीराजाने

धर्म संजलावशो तो घणा जीवोनी दया पलशे, रक्षा थशे ते रायप-
शेणी सूत्रनो पाठ —

एवं खलु जंते ! अम्म पएसीराया अहम्मिए जाव सय-
स्सवि जणवयस्स नो स्सम करजर पवतेइ त-जत्तिणं देवा-
णुप्पिया पयस्सिसरन्नो धम्ममाइरकेज्जा वहु गुणत्तरं खलु
होद्धा तेसिणं वहुणय दुप्पय चउप्पय मिग पसु पंखि
सिरिसवाण तं-जइणं देवाणुप्पिया पएसिस्सरणो धम्म
माइरकेद्धा वहु गुणतरं फल होद्धा तेसिणं वहुणं समण
माहणं जिख्खूयाणं तं-जइणं देवाणुप्पिया पएसिस्स वहुणं
गुणत्तरं होद्धा जणवयस्स

अर्थ —प० एम ख० निश्चे ज० हे जगवान ! अ० अमारो प०
प्रदेशीराजा अ० अधर्मी छे जा० जावत् स० पोताना ज० देशने नो०
नथी स० सम्यक क० करजार प० प्रवर्तावतो तं० ते माटे ज० जो
दे० हे देवानुप्रीय ! प० प्रदेशीराजाने ध० धर्म मा० कहेशो तो ब०
घणो गु० गुण ख० निश्चे हो० थशे ते० ते ब० घणा डु० डुपद च०
चतुष्पद मि० मृग प० पशु प० पक्षी सि० ठवर स० नोलियादिने, तं०
ते माटे ज० जो दे० हे देवाणुप्रीय ! प० प्रदेशीराजाने ध० धर्म मा०
कहेशो तो ब० घणो गुण फल हो० थशे ते० ते ब० घणा स०
समण शाक्यादिकने, मा० ब्राह्मणादिकने अने जि० जिक्षाचरने तं०
ते माटे ज० जो तमे दे० हे देवानुप्रीय! प० प्रदेशीने ब० घणो गु० गुण
हो० थाशे ज० पोताना देशने विषे पण गुण थासे ॥ १ ॥

जावार्थ—हवे जुठं इहा चीत्त प्रधाने कह्यु के, हे माहाराज !
प्रदेशी राजाने धर्म सजलावशो तो ते घणा डुपद, चौपद, पशु, पक्षी
मृग, ठंदर, नोलीया, सिंह, प्रमुख जीवने मारतो रहेशे, देश प्रदेशमां
सुख थाशे, दुःख करनार थोको छेशे, रैयत सघी सुखशाता पामशे, अने

समण-माहणने भिक्षा सुखे मलशे. पछी केशीश्रमणे धर्म पामवाना अने न पामवाना चारचार ठाम कह्या. ए वचन नहीं हण्यामां के उगार्यामां ? इहां चित्तप्रधाने एमकेम न जाण्युं, के "असंजतीनुं जीववुं वांछवुं नही. असंजती जीव जीवता रहेशे तो वली जीवनी हिंसा करशे, ने मने अनुमोदना लागसे; अने राजा एना कर्मे करी डुबशे तेमां मने शुं." एम तो नथी जाण्युं. पण एम जाणजो के, एवी दुष्ट सरदहणा चीत्तसार्थीनी नोहोती. तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के, " एतो परना उपगार माटे, रक्षा माटे, अने गुण माटे नथी कह्युं, पण प्रदेशीराजाना तरवासारु, पाप टालवा सारु, अने पाप टलाववा सारु गुणने माटे कह्युं छे. " तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! जो प्रदेशी-राजाना गुणनी खातर कह्युं होय तो, एम कहेवुं जोइए के " हे स्वामी ! ए अधर्मी अधर्म करेछे, अढार पाप सेवे छे, तेने तेमे समजावो, के ते अढार पाप न सेवे, अने एना आत्मानुं साधन थाय, एवुं करो ". पण इहांतो त्रण पाठ कह्या, ते परजीवने उगारवाना एटले परने उपगार करवाना कह्या छे. ते परजीवने उगार्याथीज पोतानुं तरवुं अने आत्मानुं साधन थाशे, एमां शी भूल छे. परजीवने उगारवानुंज चित्तप्रधाने कह्युं ते कारण छे, अने परदेशीनुं तरवुं तथा आत्मानुं साधन थाय ते कार्य छे. पहेलुं कारण अने पछी कार्य थाय. ते माटे साधुजी परजीव उगेरे तेवो उपदेश दे. तेज रीते श्री केशीकुमारे उपदेश दीधो अने चीत्तसार्थीए धर्म दलाली कीधी. ए न हणवुं थयुं के परजीवने उगारवुं थयुं ? काह्या हो ते वीचारी जोजो. वली छ कारणे मुनीने आहार छोडवो कह्यो छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २६ मानी गाथा ३५ मी ते. पाठ लखीए छीए.

आयंके उवसग्गो, तितिख्खुया बंभचेर गुत्तीसु;
पाणीदया तवहेऊ, सरीर वोछेयण ठाए. ॥३५॥

अर्थ —पूर्ववत् जुठं प्रश्न १ लो पाठस पाने १३ में

भावार्थ —हवे जुठं ! ए छ कारणमा चोथा कारणमा कह्युं के, प्राणी जीवनी दया तथा रक्षाने अर्थे साधु आहार लेके, पण एम न कह्यु के, पोताने तरवा अर्थे, अथवा पाप टालवा अर्थे आहार लेके कारण के प्राणी जीवनी दया पाली, तथा रक्षा कीधी, ए कारणथी तर थशेज एमां शुभुल ठे ए कार्य ठे, पण कारणथी कार्य सिद्ध थाय ते माटे इहां कारण कह्यु ठे ए न्याये असजती जीवनु जीववु वान्छवुं, उगारवो, दया पालवी, ने रक्षा करवी वली भगवती शतक पेहेले ठद्देशे नवमे, असजती जीवनु जीववु वठमु तथा रक्षा करवी कही ठे ते पाठ—

अहा कम्मेण भंते ! भुंजमाणे समणेनिगंथ किंबंधइ, किंपकरेइ किंचिणेइ जाव किंउवचिणाइ ४ ? गो० ! आ हाकम्मेण भुजमाणे आउय वज्जाउं सत्त कम्म पगमीउं सिढिल बंधण वंधाउ धणिय वधण वंधाउ पकरेड जाव अणुपरियट्टइ से केणठेण जाव अहाकम्मेण भुंजमाणे जाव अणुपरियट्टइ ? गो० ! अहाकम्मेण भुजमाणे आ याए धम्मं अवक्कमइ आयाए धम्म अवक्कममाणे पुढवि- काय णावकखइ जाव तसकाय णावकखइ जेसिंपियणं जीवाण सरीराइ आहार माहरेइ तेविजीवे णावकखइ से तेणठेण गो० ! एवं वुच्चइ अहाकम्मेण भुजमाणे आउय- वज्जाउ जाव सत्तकम्म पगम्डि जाव अणुपरियट्टइ फासु एसणिज्जेण भंते ! भुंजमाणे किंबधइ ४ जाव किं उवचि- णाइ ? गो० ! फासु एसणिज्जेण भुजमाणे आउयवज्जाउ सत्तकम्म पगम्डि धणियबंधणबंधाउ सिढिलबंधणबंधाउ पकरेइ दीहकालठिइयाओ रहस्सकालठिइयाओ पकरेइ

तिव्वाणुनावाओ मंदाणुनावाओ पकरेइ बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसगाओ पकरेइ आउयंचणंकम्मं सियबंधइ सियनोबंधइ असाया वेयणिज्जंचणं कम्मं नोनुज्जो २ उवचिणई अणादियं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंत्तार वीईवयइ. से केणठेणं नंते ! जाव वीईवयइ ? गो० ! फासु एसणिज्जेणं नुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्कमइ आणाए धम्मं अणइक्कममाणे पुढविकायं अवकंखइ जाव तसकायं अवकंखइ जेसिंपियणं जीवाणं सरीरायं आहारइ माहारेइ तेविजीवे अवकंखइ ॥

अर्थः—अ० आधाकर्मी (ते साधुने अर्थे सचित्तनुं अचित्त करीने आपे ते) नुं० नोगवतोथको स० साधु किं० शुं बांधे, किंप० शुं पकवे, किंचि० शुं चणे जा० यावत् किंन्न० शुं नचपणे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! आ० आधाकर्मी आहार नोगवतोथको आ० आनखुं व० वर्जीने स० सात कर्मनी प० प्रकृति सि० सिथिल बंधने बांधी होय ते ध० ऋढ बंधने बांधे. हलवा कर्मने सुधा ताणी बांधे. जेम रेशमनी गांठ बांधीने मधुसिष्ट घुंटीथकी जेम गाढी नीवरू थाय तेम बंधन करे. जा० यावत् रहस्सकाल ठिइयाउ दीहकाल ठिइयाउ पकरेइ मंदाणुनाउ तिव्वाणुनावाओ पकरेइ अप्पपएसगाओ बहुप्पएसगाओ पकरेइ आउयचणं कम्मं सियबंधइ सियनोबंधइ असायावेयणिज्जस्सणं कम्मं नुज्जो २ उवचिणइ अणादियं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारे अनंतीवार परिभ्रमण करे. हवे गौतम पुछे छे. से० ते शा अर्थे ? हे नगवान ! एम कह्युं. जा० यावत् अहा० आधाकर्मी आहार नुंजमतोथको साधु जा० यावत् अ० चतुर्गति संसारने विषे अनंतिवार नमे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! अ० आधाकर्मी आहार नुंजमतोथको साधु आ० आत्माए करी ध० चारित्र धर्म अ० अतिक्रमे

एतावता धर्मथी पडे आ० आत्माए करी ध० धर्म अ० अतिक्रमतोथको उल्लंघतोथको पु० पृथ्विकायना जीवनी णा० अनुकंपा न आवे, दयाभाव रहित थाय जा० यावत् अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय बे इन्द्रियादिकने णा० विणाशे तेने दया न आवे ज० जे जीवना स० शरीरनो आ० आहार करे-ते० ते जीवनी पण णा० अनुकंपा न आवे से० तेणे अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम कह्यु, के आ० आधाकर्मी भुं० भोगवतोथको साधु आ० आउखुं वर्जीने जा० यावत् स० सात कर्मनी प्रकृति बांधे जा० यावत् चतुर्गतिरुप संसारने विषे अ० परिभ्रमण करे फा० प्रासुक अचित्त ए० एषणिक (४२ दोष रहित) आहार, भ० हे भगवान ! भुं० भोगवतोथको साधु किं० शुं कर्म बांधे जा० यावत् किं० शुं प्रदेश बंधन वधारे ? इति प्रश्न गो० हे गौतम ! फा० निर्दोष भुं० भोगवतो थको साधु आ० आउखु वर्जी स० सात कर्मनी प्रकृति ध० गाढे बंधने बांधी होय ते सि० सिथिल बंधणे करे, ते कर्म प्रकृति निर्जरीने सिथिल करे दी० दीर्घकालनी स्थितिनी होय तेने र० थोडा कालनी स्थितिनी करे, ति० तीव्रअनुभाग रसरुप होय तेने मं० मंद अनुभाग रसरुप करे, ब० घणा प्रदेशनी होय तेने अ० अल्प प्रदेशनी करे, आ० आउखा कर्म सि० केटलाक बांधे अने सि० केटलाक न बांधे अ० असाता-वेदनी कर्म नो० वारवार उपचणे नहीं अ० आदि अंत रहित दी० दीर्घ मध्य भाग छे जेनो, एवी चा० चार गतिरुप ससार क० अटवीनो वी० पार पामे से० ते शा अर्थे ? भं० हे भगवान ! जा० यावत् वी० व्यतिक्रमे, ससार तरे इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! फा० प्रासुक ए० एखणिक भुं० जमतो थको स० साधु तपस्वी नि० निर्ग्रंथ० आ० आत्माए करी ध० श्रुतचारित्ररुप धर्म प्रत्ये ना० उल्लंघे नहिं वली आ० आज्ञाए करी ध० श्रुतचारित्ररुप धर्म प्रत्ये अण० अणउल्लंघतो थको साधु पु० पृथ्विकायना जीवनी अव० दया वांछे,जा०यावत् त० त्रसकाय बेइन्द्रियादिक जीवनी अ० रक्षा करे,जं० जे जी०जीवना स०शरीरनो आ० आहार करे ते जीवनी पण रक्षा करे॰

भावार्थः—हवे जुओ ! आधाकर्मी आहार भोगवे तेने सात कर्म ढीलानां गाढां बंधाय, यावत् चतुरगति संसारमां दीर्घकाल सुधी परिभ्रमण करे. ते शा अर्थे हे भगवान ! एम कह्युं ? उत्तर. हे गौतम ! आत्मानो धर्म (ज्ञान दर्शन चारित्र) उलंघे, पृथ्वीकायनी अनुकंपा न करे, दया न पाले, रक्षा न करे, आउखुं (जीववुं) न वान्छे, एम छकायनी अनुकंपा दया न आवे, आउखुं जीववुं न वान्छे, तेथी जीव रुले. ए न्याये असंजतीनुं आउखुं (जीवीतव्य) वंछे ते संसारमां न रुले. वली जे प्रासुक निर्दोष भोगवे ते सात कर्म गाढानां ढीलां करे, यावत् चारगतीरुप संसारने उलंघे, पार पामे. ते शा अर्थे हे भगवान ! एम कह्युं ? हे गौतम ! आत्मानो धर्म (ज्ञान दर्शन ने चारित्र) उलंघे नही, छ कायना जीवनुं जीवीतव्य (दया) वान्छे, जे जीवोना शरीरनो आहार करे, ते जीवोनुं पण जीवीतव्य (दया) वान्छे, तेथी संसार समुद्र तरे. ए छ कायनुं जीवीतव्य वंछयुं, दयापाली, तथा रक्षा करी, तेथी तरवुं कह्युं; पण एम न कह्युं के "निर्दोष भोगवे तेणे पोतानुं पाप टाल्युं, तेथी संसार तरे." ए छ कायनुं जीवीतव्य वान्छयुं तथा दया पाली ते तो कारण छे, अने पाप टल्युं अने तरवुं थयुं ते कार्य छे. ते कारणथी कार्य सिद्ध थाय. ते माटे इहां श्री वीतरागदेवे कारण कह्युं छे. ए न हणयामां के उगार्यामां ? ए न्याये छ कायना जीव असंजतीनुं जीववुं उगारवुं सिद्ध थाय छे. वली साधु परजीवनुं उगारवुं अने जीववुं वान्छे. शास्त्र सूत्र दशाश्रुतस्कंध अध्ययन सातमें. ते पाठः—

मासियणं भिक्खू केवइ उवसयं अगणिकाएणं चामेवा णोसेकप्पइ तंपडुच्च निक्कमित्तएवा पविसित्तएवा तत्थणं केइ बांहाएगाहाय आगसेवा णो से कप्पइ तं अवलंबित्तएवा पवलंबित्तएवा कप्पइ से आहारियंरित्तए ॥१४॥

अर्थः—मा॰ मासिक पडिमाधारी भिखुने के॰ कोइ अनार्यउ॰ उपाश्रयने विषे अ॰ अग्नि-कायेकरी झा॰ बाले, एटले कोइ अनार्य आग

लगारो, त्यारे णो० ते पडिमाधारीने न कल्पे त० ते लाहे लाग्यामो ते नि० स्थानकथी बाहार नीकलवु, अथवा प० बाहारथी मांही पेसवुं त० त्या के० कोइ आर्य समदृष्टि तथा श्रावक ते बलतामांहीथी बा० बाह ग्रहीने आ० ताणे तो णो० न कल्पे से० ते पडिमाधारीने त० ते ताण वावालाने अ० बाहेकरीने ग्रही राखवो प० वारवार झाली राखवो क० कल्पे से० ते पडिमाधारीने अ० यथा इर्या सुमति चाली नीकलवुं कल्पे अने ते साधुने ते उपाश्रय अग्निथी बल्यानी बीके नीकलवु न कल्पे, पण कोइक काढे तो ते बलीजाशे तेनी दयाने अर्थे नीकलवुं कल्पे

भावार्थ —हवे जुओ ! जिनकल्पी तथा अभिग्रहधारी साधु आगलागथी पोताना जीवीतव्यनी आशाए सुखने अर्थे नीकले नही, पण अनेरो कोइ दयावत, साधुने बलता देखीने काढवा आवे तो विसंवरहित नीकले, जरापण ढील करे नही ए न हण्यामा के उगार्यामा ? केमके साधुना नव जोगमा तो हिंसानु पाप लागतु नथी ए न्याये जीवनुं जीववु वान्छवु, उगारवु अने रक्षा करवी ते स्पष्ट रीते सिद्ध छे वली साधवी नदीमा वेहेती होय तेने साधु काढे तो आज्ञा उलंघे नही, शास्त्र सूत्र ठाणायग ठाणे नवमे ए न हण्यामा के उगार्यामा ? तथा सुयगडाग श्रुतस्कधे पहेले अध्ययन अग्यारमें ते पाठ

हणंत णाणुजाणेज्जा आयगुत्ते जिइंदिए ठाणाइ संति सड्ढिण गामेसु नगरेसुवा ॥१॥ तहागिरं समारम्भ अत्थि पुन्न-ति णोवए अहवा णत्थि पुणाति एवमेय महब्भयं ॥२॥ दाणठ्याय जेपाणा हम्मति तसथावरा तेसिं सारक्खणठ्ठा ए तम्मा अत्थिति णोवए ॥३॥ जेसितं उवकप्पंति अन्न-पाणं तहाविह तेसिं लाभंतरायति तम्मा णत्थि-त्ति णोवए ॥४॥ जेय दाण पससति वह मिच्छति पाणिणा जेयण पडिसेहंति वितिछेय करतिते ॥५॥ दुहओ वित्ते णाभासंति

अत्थि वा नत्थिवा पुणो आयं रहस्स छेच्चाणं निव्वाणं पाउणंतिते ॥ ६ ॥

अर्थः—ह० जीवने हणतां णा० अनुमोदे नही. आ० जेनी आत्मा गुप्त छे अने जेणे इंद्रिओ जीती छे एवा साधुनी ठा० समीपे सं० छे स० श्रद्धावंत (धर्म करवानी इच्छावाला) बौध्यादिक गा० गाम अने न० नगरने विषे वसनारा छे, ते त० आरंभ सहित गि० वाणीए करीने पुछे छे के, हे महामुनी ! अमे सदाव्रत, पाणीनी परब आदिक धर्म अर्थे करावीए ? तेमां अमने शुं थाय ? एवुं तेमनुं पुछवुं सांभलीने साधु, अ० छे पु० तमने पुन्य, णो० एम न कहे. अ० अथवा ण० नथी पुन्य, एम कहेवामां पण म० महा भय छे. दा० दानने अर्थे जे० जे प्राणी (बेइंद्रियादिक) ह० हणाय त० त्रस अने था० स्थावर (पृथ्व्यादिक), ते० तेनी सा० सम्यक् प्रकारे रक्षाने अर्थे (त० ते माटे) अ० छे तमने पुन्य, एम णो० न कहे. अने जे० जेने पुर्वोक्त सदाव्रत परबादिकनुं अन्न पाणी लेवुं कल्पे एटले जेने तथाप्रकारना अन्न पाणी लेवानी आशा छे, ते० ते जीवोने ला० लाभान्तराय थाय. त० ते कारणे पूर्वोक्त अनुष्टानमां तमने पुन्य नथी णो० एम पण न कहे. जे० जे साधु दा० दानने प० प्रसंशे ते व० वध हिंसा इच्छे छे पा० प्राणोनी. (जे सावध दानने अनुमोदे ते हिंसाने अनुमोदे छे); अने जे० जे सावध दाननो प० निषेध करे छे ते पूर्वोक्त दानार्थि जीवोनी वि० वृत्ति आजीविकानो छे० छेद करे छे. ते माटे उ० ए बे भाषा आगला पुछनारने ण० न कहे. अ० छे अथवा न० नथी तमने पु० पुन्य. आ० आत्म र० रहस्यनो हे० हेतु (पाप कर्मनो त्याग जाणीने) पूर्वोक्त वाणी बोलवी मुके. एवी भाषा न बोले ते यति नि० मोक्ष पा० पामे. एवी रीते मौन राखवी पण एवुं मीश्र वचन खुलासे नहीज कहेवुं.

भावार्थः—हवे जुओ ! दानने अर्थे जे प्राणी (त्रस स्थावर) हणाय ते जीवनी रक्षाने अर्थे " तमने पुण्य छे " एम न कहे; अने जेने अन्न-

पाणी तथा प्रकारना कल्पे, तेने लाजनी अंतराय पडे, ते अर्थे " तमने पुन्य नथी " एम पण न कहे कारणके जे दानी प्रसशा करे तेने छ कायना वधनो वछणाहार कहीए, अने जे दानने निषेधे तेने वृतिनो छेदणाहार तथा अंतरायनो देणाहार कहीए एम जाणीने साधु मौन राखे ए जुउं ! त्रस स्थावर जीवनी रक्षाने अर्थे "पुण्य छे" एम न कर्वे कह्यु पण एम न कह्यु के, पोतानुं पाप टालवाने अर्थे पुण्य छे एम न कहे ए न हणयामा के उगार्यामा ? वली कोइ उघाडे मोंढे बोले तेने कहे के, " उघाडे मोंढे न बोलो " ए वचन न हणयामा के उगार्यामा ? वली छकायना जीव हणताने कहे के, " मा हणो, मां हणो, " ए वचन न हणयामा के उगार्यामा ? ते कहो

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " छकायने न हणो " एम कहे ते तो आगलानुं पाप टालवाने तथा तरवाने अर्थे उपदेश दे छे" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! जीवनी रक्षा थइ ते तो कारण छे, अने पाप टल्युं, तरवुं थयुं, ते कार्य छे कारणविना कार्य थाय नही श्रीवीतरागदेवे तो ठाम ठाम जीवनी रक्षाना वचन कह्या छे, पण तमारी पेरे एम तो कोइ सूत्रमां कह्यु नथी के, आगलानुं पाप टालवाने उपदेश देवे हे देवानुप्रीयो जीवनी रक्षा करो, अने उगार्यो, ए तो कारण छे ए कारणथी पाप टल्युं तेथी कार्य थशेज वली श्री वीतरागदेवे तो ठाम ठाम ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, जीवनी जयणा, पांच सुमति, त्रण गुप्ति, संवर अने जीवनी रक्षा इत्यादिक कारण कह्यां छे, अने फलने अधिकारे फल कह्यां छे तमे कारणनो नाश केम करोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " प्रत्नयवाननो लाभतो सूत्रमां ठाम ठाम कह्यो छे, पण अनुकंपानो तथा जीव उगार्यानो लाभ कह्यो नथी " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! कह्यु तो छे पण तमे सरदहाने सुजतु नथी जुउं सूत्र ठाणायाग ठाणे त्रीजे, तथा भगवती शतक पांचमाने उद्देशे छठे स्पष्ट रीते जीव उगारवानुं फरमान सिद्ध थाय छे ते पाठ लखीए छीए —

कहणं भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं प्पकरेइ ? गो० ! पाणेअइवइत्ता मुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा अफासुएणे अणेसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेइ. कहणं भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ ? गो० ! नो पाणेअइवइत्ता नो मुसंवइत्ता तहारुवं समणंवा माहणंवा फासु एसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ. कहणं भंते ! जीवा असुह दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ ? गो० ! पाणे अइवइत्ता मुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा हीलित्ता निंदित्ता खिंसिता गरहित्ता अवमन्निता अणयरेणं अमणुणेणं अप्पियकारएणं असणं पाणं खाइमं साईमं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा असुह दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ. कहणं भंते! जीवा सुहदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ ? गो० ! नो पाणेअइवइत्ता नो मुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा वंदित्ता जाव पज्जुवासित्ता अणयरेणं मणुणेणं पीयकारणेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जाव पकरेइ. ॥

अर्थः—क० केवे प्रकारे भं० हे भगवान ! जी० जीव अ० अल्प आयुष्यरुप क० कर्म प० बांधे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पा० प्राणातिपात करवाथी, मु० मृखावाद बोलवाथी, तेमज त० तथारुप शास्त्रोक्त स० साधु मा० ब्राह्मणने अ० सचित अ० सदोष एवा अ० असंन पा० पाणी खा० खादिम सा० स्वादिम प० प्रतिलाभवाथी ए० ए प्रकारे ख० निश्चे करी जी० जीव अ० अल्प आयुष्य बांधे. हवे क० कये प्रकारे

भ० हे पुज्य ! जी० जीव दी० दीर्घ आयुष्यरुप कर्म प० बांधे ! इति प्रश्न गो० हे गौतम ! णो० प्राणातिपात न करवाथी, णो० मु० जुठ न बोलवाथी, तेमज त० तथारुप सं० श्रमण मा० ब्राह्मणने प्रा० अचित ए० निर्दोष अ० असन, पाणी, खादीम, स्वादीम प० प्रतीलाजवाथी ए० ए प्रकारे ख० निश्चे जी० जीव दी० दीर्घायुष्य बांधे क० कये प्रकारे भ० हे पुज्य ! जी० जीव अ० अशुज्ञ दी० दीर्घायुष्य कर्म प० बांधे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! पा० प्राणातिपात करवाथी, मु० जुठ बोलवाथी, तेमज त० तथारुप स० श्रमण मा० ब्राह्मणने ही० हेलो निं० निंदि खिं० खष्ट करी ग० गर्ही अने अ० अपमानोने अ० अनेरो को इक अ० अमनोज्ञ अ० अप्रीतीकारक अ० असन, पान, खादीम, स्वादिम, प्रतीलाजवाथी ए० ए प्रकारे ख० निश्चे जी० जीव अ० अशुज्ञ दी० दीर्घायुष्य प० कर्म बांधे क० कये प्रकारे भ० हे पुज्य ! जी० जीव सु० शुज्ञ दी० दीर्घायुष्यरुप कर्म प० बांधे ? इति प्रश्न उत्तर, गो० हे गौतम ! नो० प्राणातिपात न करवाथी, नो० जुठ न बोलवाथी, तेमज त० तथारुप स० श्रमण मा० ब्राह्मणने वं० स्तुति करीने जा० पार्यत प० सेवा करीने अ० अनेरो कोइएक म० मनोज्ञ पी० प्रीतीकारक अ० असण, पाणी, खादीम, स्वादीम, प० प्रतीलाजवाथी ए० ए प्रकारे ख० निश्चे जा० यावत् जीव शुज्ञ दीर्घ आयुष्य प० बांधे

जावार्थ—हवे जुओ ! आ पाठमां जीव हिंसा करे तो, जुठु बोले तो, तथा असुझतो आहार आपे तो, अल्प आयुष्य बांधे, अने जीवने न हणे तो, जुठु न बोले तो, तथा सुझतो आहार पाणी आपे तो दीर्घ आयुष्य बांधे, एम कह्यु तेवारे तेरापंथी कहे छे के "ए ठामे जीव हणे तो अल्प आउखु बांधसो कह्यो, अने न हणे तो दीर्घ आउखु बांधशे कह्यो हवे अनुकंपाथी तथा जीव बचाव्याथी शु फल पामे ? एनु फल देखाडो" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! बचाववुं ए न हणवामांज आव्युं जेणे जीव बचाव्यो तेणे मरणना भयथी मुकाव्यो के तामो भयमां

मांल्यो ? ते कहो. हे देवानुप्रीय ! जीवने उगारवुं ते शुं न हणवाथी जुदुं छे ? एम जाणता हो तो एक पापी, जीवने मारे तो ते हणतो कहेवाय अने न हणे ते न हणतो कहेवाय. हवे जुओनी ! जीव उगारवावालो शेमां जल्यो ? ते तमे वीचारी जुओ. हवे जीवने हणतो अल्प आयुष्य बांधे अने न हणतो दीर्घ आयुष्य बांधे, पण तमे उगारवुं जुदुं मानो छो ते तमारुं मानवुं भ्रमथी छे. तेनुं नीराकरण नीचे मुजबः—

हवे जे जुठुं बोले ते अल्प आयुष्य बांधे, अने जुठुं न बोले ते दीर्घ आयुष्य बांधे. हवे जुठुं बोले तेनां अने जुठुं न बोले तेनां तो फल कह्यां; पण निर्वध साचुं बोले तेनां शुं फल ? ए बे बोलमां तो साच न पेठुं. हवे निर्वध साचुं बोले ते शेमां पेठो ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे के " निर्वध साचुं बोले ते जुठुं न बोले तेमां पेठो. " तेम एक, जीव हणे, एक न हणे, अने एक उगारे. ए त्रण त्रण बोलना ठाम जुदा कहोछो, तेम एना पण त्रण बोल छे. जुठुं बोले, जुठुं न बोले, अने साचुं बोले. हवे जेम साचुं बोले ते जुठुं न बोले तेमां पेठो, तेम उगारे तेपण न हणवामां पेठो. (१) वली कोइ असुझतुं आपे, कोइ असुझतुं न आपे अने कोइ सुझतुं आपे. ए पण त्रण बोल छे. हवे जे सुझतुं आपे ते, असुझतुं न आपे तेमां पेठो. जे असुझतुं न दे तेनां जेवां फल, तेवांज सुझतुं दीधानां फल. तेम उगारवुं ते न हणवामां पेठूं, तेनां पण तेवांज फल. (२) कोइ चोरी करे, कोइ चोरी न करे, अने एक दीधेलुं ले. हवे दीधुं ले ते चोरी न करे तेमां पेठो, तेम उगारवावालो जीव न हणे तेमां पेठो. (३) एक, स्त्रीथी वात करे. एक, स्त्रीथी वात न करे, अने एक, धर्मोपदेशनी वात करे. हवे धर्मोपदेशनी वात करे, ते धर्म आश्री पापनी वात न करे तेमां पेठो, तेम जीव उगारवावालो, जीव न हणे तेमां पेठो. (४) एक, उपगर्ण राखे. एक, उपगर्ण न राखे अने एक, धर्म उपगर्ण राखे. ए पण त्रण बोल छे. हवे धर्म उपगर्ण राखे ते धर्मी, पापना उपगर्ण न राखे तेमां पेसे. तेम जीव उगारवावालो

जीव न हणे तेमा पेसे (५) एक, पापनी वात (रागरग) साम्भले पण न साम्भले अने एक, धर्म उपदेश साम्भले ए पण त्रण बोल छे हवे जे धर्म उपदेश साम्भले ते पापनी वात (रागरग) न सांभले तेमां पेसे तेम जीव उगारे ते, जीव न हणे तेमा पेसे (६) एक, स्त्री आदिकना रुप देखे एक, न देखे अने एक, साधुना दर्शन करे ए पण त्रण बोल छे, हवे जे वीतराग साधुना दर्शन करे ते, स्त्री आदिकनु रुप न देखे तेमां पेसे तेम जीव उगारवावालो, जीव न हणे तेमां पेसे (७) एक, सुगंधवासना ले एक, न ले अने एक, वासना आवे तेमा राग द्वेष न आणे (राग द्वेषने जीते) ए पण त्रण बोल छे हवे राग द्वेष जीते ते वासनाना त्याग करे तेमां पेसे तेम जीव उगारवावालो जीव न हणे तेमा पेसे (८) हवे एक, पापकारी सावध वचन बोले, एक, सावध वचन न बोले, अने एक, निर्वध वचन बोले (सझाय करे) ए पण त्रण बोल छे हवे निर्वध वचन बोलवावालो सावध वचन न बोले तेमां पेसे तेम जीव उगारवावालो जीव न हणे तेमा पेसे (९) हवे एक, सर्वथा बोल बोल करे एक, मौन राखे, अने एक, निर्वध बोले ए पण त्रण बोल छे जेम निर्वध वचन बोलवावालो मौनवालानी पांतीमां पेसे, तेम जीव उगारवावालो जीव न हणे तेनी पांतीमा पेसे (१०) एक फर्सथकी सुख दुःख माने एक, फर्सथको सुंहालादिकना त्याग करे, अने एक, शीत-तापनी आतापना ले ए पण त्रण बोल छे हवे आतापना लेवावालो, स्पर्श इंद्रिनो विषय जीते, तेमा पेसे तेम जीव उगारवावालो जीव न हणे तेमां पेसे (११) एक, मननो जोग माठो प्रवर्तावे एक, माठो न प्रवर्तावे अने एक, भलो प्रवर्तावे ए पण त्रण बोल छे हवे भलुं मन प्रवर्तावे ते, माठु मन न प्रवर्तावे तेमा पेसे तेमज जीव उगारवावालो जीव न हणे तेमा पेसे (१२) एम वचन जोगना त्रण बोल जाणवा (१३) एम काय जोगना पण त्रण बोल जाणवा (१४) ए चौद बोलना घवे बोलतो सुयगडांग श्रुतस्कंध बीजे अध्ययन बीजामा छे, अने अकेक बोलना त्रीजा बोलमांना केटलाएक बोल सुयगडांग सूत्रमा छे, अने केटलाएक भगवती

प्रमुख अनेरा सूत्रमां छे. त्रीजा बोलनां फल थोमा घणा धर्म आश्री श्रीवीतरागदेवे बीजा बोल सरखां कह्यां छे. तेम जीव उगारे तेनां फल, जीवने न हणे तेनी परे जला जाणवां. एम अमारे मते न हण्यामां अने उगार्यामां कांइ फेर नथी.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के "एक, जीवने मारेछे, एक वर्जे छे (टंटा झघमामां पमेछे) अने एक, मौन राखे छे. हवे मौन राखवावालाने तो, जीव मारे तेनुं पाप नथी लागतुं; कारणके जगतमां अनेक जीव मरे छे. केने केने उगारशे. केनुं केनुं पाप टालशे. पोतपोताने कर्म करी पचे छे. मुनीराज तथा श्रावकजी केना केना ऊगमामां पमे. मुनीराजने तो अनेक जगतमां जीव मरे तेनुं पाप नथी लागतुं, त्यारे असंजती जीव-ने बचाववाना ऊगमामां शा वास्ते पमे. सामु पाप लागे. कारणके कोइ राजी थाय, कोइ कराजी थाय." तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय ! परोपकारनी बुद्धीवाला, परजीवने उपकार कर्यामां गुण जाणे ते वास्ते उपकार करेज. जो तमारा कहेवा प्रमाणे परउपकार करवो ते पराया ऊगमामां पमवुं, एम होयतो श्री तीर्थंकरदेवने तथा केवलीने केवलज्ञान उपन्युं ते पाछुं न जाय. त्यारे उपदेश शा वास्ते दे. संसारी जीवे करेलुं पाप तीर्थंकर तथा केवलीने तो नथी लागतुं. उलटुं उपदेश सांजलीने कोइ राजी थाय, अने कोइ कराजी थाय. ए परना ऊघमामां केम पमे ? ए तीर्थं-कर केवली उपदेश दे ते न हण्यामां के परजीवना उपकार वास्ते ? वली वितिजयपुर—पाटणना धणी उदाइ—राजाए पाछली रातनी चिंत-वणा करी के "जगवंत श्री माहावीरजी पधारे तो छकायने अजय-दान दउं, दिक्षा लउं." पछी महावीरदेव घणा साधुना परिवारे पधार्या, अने उदाइ—राजाने दिक्षा दीधी. शाख सूत्र जगवती शतक तेरमे.

हवे जुउ ! उदाइ—राजानुं करेलुं पाप जगवंतने तो नोहोतुं लागतुं, पण सातसो कोशथी चालीने आव्या, रस्तामां अनेक नदीउ उलंघी हशे, साधुउना पगथी विहारमां असंख्याता जीवोनी घात थइ हशे,

अने उदाइ राजाने दिक्षा दिधाथी अनेक जीव दुःख पाम्या हसे ए भगवंत तमारी कहेणीने लेखे उदाइ-राजाना ऊधमामा नाहकना केम पड्या ? सातसो कोशथी गया ए न हणयामा के परजीवना उपकार वास्ते ? (२) वली चक्रवर्ति प्रमुख अनेक जीवोने केवली अने साधु उपदेश दइ दीक्षा दे, तेथी स्त्रीदेवी प्रमुख अनेक जीव दुःख पामे हवे केवली तथा साधु भगवंतने तो चक्रवर्ति आदिकनु कीधेलु पाप नथी लागतु, पण घणा जीवने दुःख उपजावीने पारका ऊगडामा केम पडे ? ए न हणयामां के परजीवना उपगार वास्ते ? (३) एम अनेक जीवोने दीक्षा दे तथा श्रावको प्रमुखने कुशील प्रमुखना सोगन करावे, तेथी स्त्रीआदिक अनेक जीव दुःख पामे ए साधु, भगवंत तथा केवलीने तो पाप नथी लागतु ए घणा जीवने दुःख उपजे, एवा ऊघडामां केम पडे ? ए न हणयामां के परजीवना उपकार वास्ते ? (४) वली भाग शतक श्रावकने दोष लाग्यो त्यारे गोतमने मुकीने पायश्चित देवराव्युं ए दोष भगवंतने तो नहोतो लागतो ए न हणयामां के परजीवना उपकार वास्ते ? (५) वली माहोमाही कलेश होय ते उपशमावे तो मोक्षनी प्राप्ती थाय शास्त्र सूत्र ठाणायंग ठाणे आठमे ते पाठ —

अठहिं ठाणेहिं सम्मं घडितव्वं जइतव्वं परक्कमियव्वं अस्सिं-चणं-अठे णोपमाएयव्वं भवइ असुयाणं-धम्माणं सम्मं सुणणयाए अब्भुठेयव्वं भवइ १ सुयाणं धम्माणं उगेन्हणत्ताते अवधारणयाए अब्भुठेतव्वं भवइ २ णवाणं-कम्माणं सजमेणं मकरणताते अब्भुठेयव्वं भवइ ३ पोराणाणं-कम्माणं तवसाविगिंचणताते विसोहणताते अब्भुठेयव्वं भवइ ४ असगिहित परितणस्स सगेन्हणताते अब्भुठेयव्वं भवइ ५ सेहं आयार गोयर ग्गहणताते अब्भुठेयव्वं भवइ ६ गिलाणस्स अगिलाणताते वेयावच्चं

करणताए अब्भुठेयव्वं भवइ. ७ साधंमित्ताण मधिकरणंसि उप्पन्नंसि तत्र अनिस्सितो वस्सिते अपख्खगाही मझत्र भावभूते कहणु साहंमित्ता अप्पसदा अप्पजंझा अप्पतुमतुमा उवसामणताते अब्भुठेयव्वं भवइ. ८ ॥

अर्थः—अ० आठ ठा० स्थानके स० सम्यक् प्रकारे घ० अणपाम्याने विषे उद्यम करवो. ज० पाम्याने विषे यत्न करवो. प० शक्ति न होय तोपण पराक्रम करवुं. अ० एवा अर्थने विषे णो० प्रमाद न करवो. हवे ते स्थानक कहे छेः-अ० अणसांभल्यो श्रुतधर्म सांभलवाने विषे अ० उद्यम करवो. १ सु० सांभल्या श्रुतधर्मने उ० ग्रहण करवाने, अविसारवाने अर्थे, अ० अवधारवाने अर्थे अ० उद्यम करवो.२ ण० नवा कर्म सं० संजमे करी अ० अणकरवाने विषे अ० उद्यम करवो. ३ पो० पुर्वलां कर्म त० तपे करी वि० निर्जरवाने अर्थे वि० आत्मा विशुद्धवाने अर्थे अ० उद्यम करवो. ४ अ० निराधार शिष्य वर्गने सं० आधार देवाने विषे अ० उद्यम करवो. ५ से० नवदिक्षीत शिष्यने आ० ज्ञानादिक पांच आचार गो० गोचर भिक्षाचार ग० ग्राहावाने विषे अ० उद्यम करवो.६ गि० रोगीनी अ० खेदरहित वैयावच करवाने विषे अ० उद्यम करवो.७ सा० साधर्मीकने विषे अ० अधिकरण विरोध उ० मांहोमांही उपन्याथी त० त्यां अ० राग रहित, आहारादिकनी इच्छा रहित, द्वेष रहित अ० अपक्षपातपणे म० मध्यस्थ भा० भावे क० शुं शुं करे, ते कहे छेः—सा० साधर्मी अ० राडना मोटा शब्द रहित तथा अ० विखर्या वचन रहित अ० क्रोधकृत विकार रहित थाशे. एम विचारीने उ० विरोध उपशमाववाने विषे अ० उद्यम करवो. ८

भावार्थः—हवे जुओ ! ए कलह कदाग्रहनां कर्म बीजाने तो नथी लागतां, पण झगडो मुंकाव्यो तेने लाभ कह्यो. ए झगडो मुंकाव्यो ते न हणयामां के परजीवना उपगार वास्ते ? (६) वली मार्गमां कीडी, मकोडी, हरीकाय (लीलोत्री) प्रमुख पडी होय ते पोते टालीने नीक-

त्यो तेवारे मा हणो मा हणो थइ चुक्यु पछी बीजाने कहे के, हे नाथ! तमे पण त्रस प्रमुख जीव उपर पग न देशो ए उपदेश न हणयामां के परजीवना उपगार वास्ते? (७) वली केशीगुरुने तथा चित्तसारथिने प्रदेशीनु कर्युं पाप नहोतु लागतु, पण कपटाइ करी घोमा रथ दोमावी हिंसा करीने चित्तप्रधान प्रदेशीराजाने लाव्यो धर्मदलाली करी पछी केशीश्रमणे अनेक दृष्टांत दइ प्रदेशीने समजाव्यो ए ऊगमामा पमया ए न हणयामां के परजीवना उपगार वास्ते? (८) वली दसाश्रुतखंधमां साधुनी पमिमाने अधिकारे कह्यु छे के, साधु अपिमा वहतो होय त्यारे तेने कोइ वयावत काढवा आवे ते काढनारनी अनुकंपा अर्थे नीकले ते पाठ

मासियपं भिक्खू केइ उवस्सग अगणिकाएणं झामेज्जा णो से कप्पइ तं पमुच्च निक्खित्तएवा पविसित्तएवा तत्थणं केइ वाहाए गाहाय आगसेज्जा णो से कप्पइ तं अवलं-वित्तएवा पवलंवित्तएवा कप्पइ से आहारियरित्तए

अर्थ —पूर्ववत् प्रश्न बीजे, पाठल पनि १९७ में

भावार्थ —हवे जुओ! वहता साधुने कोइ अग्निमाथी काढे तो ते काढनारनी अनुकंपाने अर्थे नीकले, पण एम न जाणे के " ए प्राणी नीकलीने शुं धर्म करशे जो हुं नहीं नीकलुं तो ए भलो बलशे तेमां मारा नव जोगमा तो हिंसा लागती नथी " पण तेना उपकार अर्थे सुखे नीकले ए न हणयामा के परजीवना उपकार वास्ते? (९) वली नदीमा आरजा डुबे तेनु पाप साधुने तो नथी लागतु, पण तेने अनंत जीवनी रक्षपाल जाणीने काढे ए न हणयामा के उगार्यामा? इत्यादिक अनेक प्रश्न उपकार उपर जाणवा जेम आ प्रश्नोमा आगलानु करेलुं पाप पोताने नथी लागतु, पण उपकार अर्थे उपदेश दे तथा आटला कार्य करे, तेम उपकार वास्ते अने आगलानु पाप टलावताने वास्ते जीवने बचाववो जोइए जेना घटमां परोपकारनी बुद्धि नथी, अनुकंपा

समकितनुं लक्षण नथी अने दया नथी, तेनुं अन्नयदान पण अन्न-विनी परे निरर्थक जाणवुं. वली जीवने बचाव्यामां पाप कहे तेने पुछवुं के, हे देवानुप्रीय ! जीवनी रक्षा करवी तथा उपकार करवो ते तो सूत्रमां ठामठाम बताव्युं छे, पण अमे तेमने पुछीए छीए के " कया सूत्रमां कह्युं छे के, पोताना वृतनी (कल्पनी) मर्यादा राखीने जीवने न बचाववो. " वली जीवने बचाव्याथी पाप लागे, अने असंजति जीवनुं जीववुं न वान्छवुं, एवुं ३२ सूत्रमां, ४५ तथा ८४ आगममां अथवा टीका चूर्णि भाष्य के प्रकरणमां क्यांय कह्युं होय तो बतावो. तेवारे डुबतो माणस बाचका भरे तेनी माफक सुयगडांग सूत्रनी जुठी शाख बतावे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! इहां तो एम कह्युं छे के, हे साधु तुं संजम भांगीने असंजम करी जीववुं वान्छीश नही. संजम धारीने संजम छोडीने पोतानुं असंजम जीवीतव्य वान्छवुं नहिं, एम कह्युं छे; पण एम नथी कह्युं के, साधु तथा श्रावके छकायना जीव असंज-तिनुं कोइए जीववुं वान्छवुं नहिं. वली तेरापंथी, असंजति जीवनुं जीववुं नही वान्छवुं ते विषे, आवश्यक सूत्रनी तथा उपाशकसूत्र प्रमु-खनी जुठी शाख बतावे छे. ते पाठः—

तयाणंतरंचणं अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणा समणोवासगस्सणं पंच अइयारा जाणियव्वा णसमायरियव्वा तं० इहलोगा-संसप्पउग्गे १ परलोगा-सं-सप्पउग्गे२ जीविया-संसप्पउग्गे३ मरणा-संसप्पउग्गे ४ कामभोगा-संसप्पउग्गे ५

अर्थः—त० तेवार पछी अ० छेल्लो मा० मरणने अंते सं० संलेष-णा झु० तप अग्निने विषे आ० आराधनाना स० श्रमणोपासकने (श्राव-कने) पं० पांच अ० अतिचार जा० जाणवा ण० पण समाचरवा नही. तं० ते जेम छे तेम आलोउवुं. इ० आलोक मनुष्यादिकनां सुख चक्र-वृत, बलदेव, अथवा वासुदेवनी रिद्धिने पामुं एवी इच्छा न करे, प०

देवतादिकना सुखनी, इन्द्रादिकना पदनी इच्छा ज करे जी० पोताके मही मानोच्छय देखीने घणा दीन जीवु तो ठीक एम न चितवे म० अपु ज्यपणु देखीने तथा क्षुधादेवनी सहन न थाय तेथी ऊट मरी जाउं तो सारु, एम न चिंतवे का० शब्द, रुप, रस, गध अने स्पर्श, एवा काम भोगनी इच्छा न करे "परलोके आ तपना प्रभावे ए मने अधिक प्राप्त थाजो, एम न चिंतवे "

भावार्थ —हवे जुठे ! इहांतो एम कह्यु के, सलेषणामा (संथारामां), पांच बोलनी वान्छा करवी नही करे तो सथारामा अतिचार लागे हे देवानुप्रीय ! इहांतो एम कह्यु छे के, सथारामा घणादीन जीवु तो सारुं अथवा मरण वेहेलु आवे तो सारु एतो पोताना जीव आश्री कह्यु छे के, संथारामा पोताने जीववुं मरवु वान्छवु नही, पण एम नथी कह्युं के, कोइ जीवनु जीववु मरवु वान्छवु नही ए कया छगा- वधाने वास्ते मतना खीधे मृखावोली ससार केम वधारो छो ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "ज्यारे सथारामा जीववुं मरवु वान्छयामा दोष छे त्यारे विनासथारे पण जीववु मरवु वान्छे तेपण आर्तध्यान छे, अने आज्ञा बाहार छे " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! धर्मध्यान शुक्लध्यान तो सवरनिर्जरा सम्यक्त सहित होय तेने कहीये ते संवरथी तो पुन्य पापरुपी कर्म आवता रोकाय, निर्जराथी आगला कर्म तुटे (शास्त्र सूत्र भगवती सतक बीजे उद्देशे पाचमे) अने रुद्रध्यानथी पाप बधाय हवे कहो ! पुन्य कया ध्यानथी बधाय अने देवतानुं आउखु कया ध्या नथी बधाय ते सूत्र शास्त्र बतावो

हे देवानुप्रीय ! पुन्यनो अने देवताना आउखानो बध आर्तध्यान (आश्रवभाव)माज छे सवरभावमां आउखु बधाय नही शास्त्र सूत्र भगवती शतक पहेले हवे अप्रशस्त–आर्तध्यानथी (आश्रवभावरागथी) पाप बधाय, अने प्रशस्त आर्तध्यानथी (आश्रवभाव सरागथी) पुन्य अने देवतानुं आउखु बधाय शास्त्र सूत्र भगवती शतक बीजे उद्देशे

पांचमे. सराग प्रशस्त संजम तथा तप उपर पण आर्तध्यान छे. ए न्याये प्रशस्त कार्यथी तथा प्रशस्त राग भावथी जीववुं मरवुं वान्छे; ते पुन्य प्रकृतिनुं कारण छे. वली तेरापंथी, "जीववुं मरवुं वान्छयामां धर्म पुन्य सरधे तेने मिथ्यात पाप लागे" एवी परुपणा भोला जीवोने भरमाववा वास्ते करे छे, पण पोतानुं जीववुं वान्छे छे. वचन बोलीमां वंध नथी. तेमने एवा प्रश्न पुछीए केः-(१) तमारे जीववानी वांछा नथी त्यारे साप आव्याथी आघा केम जाउछो ? (२) सांढ लढता आवता देखीने आघा केम खसोछो ? (३) सींह आवता देखीने आघा केम जाउछो? (४) हडकायुं कुतरुं देखीने आघा केम खसोछो? (५) टाढ लाग्याथी कपडां केम उढोछो? (६) तापमांथी (धुमांथी) छांये केम आवोछो? (७) पेटमां भुख लाग्याथी गाम गाम घर घर भटकी आहार लावीने केम खाउछो? (८) वायु दाघज्वर वीगेरे शरीरमां रोग उपज्याथी औषधनो उद्यम करी जीवीतव्य केम वंछोछो? (९) छात पत्थर पडतो देखी आघा केम खसोछो? इत्यादिक उपसर्ग उपज्यां सांमा जाउतो मरण वांछयुं कहेवाय अने आघा जाउ तो जीवीतव्य वान्छयुं कहेवाय. तमारी श्रद्धाने लेखे तो जे जग्योए बेठा तेज जग्योए बेठा रहेवुं जोइए. ए उपसर्ग उपन्याथी आघा केम जाउछो, भुख लाग्याथी आहार केम करोछो अने रोग उपन्ये औषध केम करोछो; कारण के जीववुं वंछयां आर्तध्यान पाप लागे, तो दुःख गमाववानी वांछा, तेपण आर्तध्यानज छे. मनगमतो संजोग मल्यो तेनो विजोग न पडे तो सारुं, अने अणगमतो संजोग मल्यो ते वहेलो मटे तो सारुं, एवी चिंतवणा करे ते पण आर्तध्यान छे. शास्त्र सूत्र उववाइ, चार ध्याननां अधिकारमां.

हवे जुउ ! हे देवानुप्रीय ! जो जीववुं वान्छवुं नही तो दुःख गमाववुं पण वान्छवुं नही. तमे सर्पादिकना उपसर्ग उपन्याथी आघा केम जाउछो? भुख गमाववाने आहार केम करोछो ? तथा रोग गमाववानी वान्छा केम करोछो ? तमे कहेता हता के जीववुं न वान्छवुं, त्यारे ए

उपाय करी जीववुं केम वान्छयु ? ए बोलीने केम बदलोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " घणा दीन सजम पालवाथी लाभ घणो छे ते घणा दीन संजम पालवानी वान्छा वास्ते एटला उपाय करीए छीए अमारे जीववानी वान्छा नथी " तेनो उत्तर -हे देवानुप्रीय ! गजसु-कमाल मुनीराजतो माताने हाथे भोजन करी, संजम लेइ तेज दीवसे उपसर्ग सही मोक्ष गया ते शु लाभ थोडो थयो ? वली विक्षा लइ उप सर्ग उपन्याथी समे प्रणामे सामा मरे तथा समे प्रणामे संथारो करे, तेमां लाभ घणो के माल खाइ घणा दीन सजम पाले तेमां लाभ घणो ? ते कहो तेवारे तेरापथो कहे छे के, उपसर्ग आव्याथी सामा मरे तथा सथारो करे तेने धन्य छे सो हे देवानुप्रीय ! तमारे लेखे तो जीववानी वान्छा करवी नही तमारे तो सथारोज करवो श्रेष्ठ छे पण भगवते तो दुःख गमाववाने अर्थे तथा जीवीतव्यने अर्थे आहार करवो कह्युं छे शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन छवीसमें, गाथा तेत्रीसमी ते पाठ--

वेयण वेयावच्चे इरियठाएय संजमठाएय,
तह पाणवत्तियाए छठं पुण धम्म चिंताए ॥ ३३ ॥

अर्थ---पुर्ववत् जुओ प्रश्न १ लो पाने १०मे

भावार्थ---हवे जुओ ! अहींतो छ कारणे आहार करवो कह्युं छे, अने तमे कहोछो के, एक संजम पालवाने अर्थे एटला उपाय करीए छीए, औषध खावीए छीए, अने आहार करीए छीए ए मृषावाद केम बोलोछो ? तेवारे तेरापथी कहेछे के " असजम जीवीतव्य न वान्छवुं, पण संजम जीवीतव्य वान्छयामा धर्म छे, ते माटे एटला उपाय करी सजम जीवीतव्य वान्छीए छीए " एम कहेछे, पण आगल ए वचन पण पलटी जशे, कारणके जुगन्बोल्याना वचनमां धध नथी ते वास्ते तेरापथीने पुछवुं के " तमारा साधुने कोइ अनार्य फांसी दइ गयो ते देखी कोइ दयावत, ए साधु सजम घणा दीवस पालशे एवा मोटा मुनी-राज छे, एम जाणी अनुकंपा आणीने शुद्ध प्रणामथी लोखे लपा बजे.

ए संजम जीवीतव्य खोलनारे वान्छयुं, तेमां पाप केम कहोछो? तेमज कुतरो करडे तेने हकाले, पमताने बचावी ले, इत्यादिक सर्पादिकना अनेक उपसर्ग उपजता देखी, घणा दीन संजम पालशे एम जाणीने टाले. ए संजम जीवीत्व उपसर्ग टालनारे वान्छयुं एमां पाप केम कहोछो?" तेवारे तेरापंथी कहेछे के, "गृहस्थीनी साहाज साधुए वान्छवी नही, तेथी पाप कहीए छीए. जेम संथारामां खावाना त्याग छे तेने अनुकंपा आणीने खवरावे तथा संथारो भंगावे तेने पाप थाय, तेनी पेरे अनुकंपा आणीने धर्मार्थे साधुनी फांसी खोले तेने पाप कहीए छीए." एवा कुहेत मेलवी बोघां लोकोने बेहेकावे छे. तेनो उत्तर: हे देवानुप्रीय! साधुतो गृहस्थीने धर्म थाय तेवां पण घणांक कार्य न वान्छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ३५ में, गाथा १७ मी. ते पाठः—

> अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूयणं तहा;
> इड्ढि सक्कार सम्माणं, मणसावि न पत्थए ॥ १७ ॥

अर्थः—अ० चंदनादिके करी अर्चवुं, र० रत्न मंरूननुं रचवुं, चे० निश्चे वं० वांदवुं (गुणानुं करवुं,) पु० पुजवुं, तेमज इ० लब्धिनी रिद्धि अन्नादिक देवे करी स० सत्कार स० सन्मान, एटलां वानां म० मने करीने पण न० न प० वान्छे. ॥ १७ ॥

भावार्थः—हवे जुओ! इहां कह्युं के, साधुए गृहस्थीनी वंदणा के सत्कार सन्मानादिक वान्छवो नही, पण गृहस्थी साधुने वंदणा करे तथा आदर सन्मान दे तेने धर्म थाय के नही? तेम साधु तो गृहस्थीनी साहाज न वान्छे, पण कोइ दयावंत फांसी खोले, उपसर्ग टाले, तेने पाप कया न्यायथी कहो छो. वली गृहस्थीने घेर सुखडी प्रमुख देखी साधु मनमां एम न वान्छे के, मने वोहोरावे तो ठीक; पण वोहोरावे तेने धर्म छे. तेम साधुनो उपसर्ग टाले तेने धर्म छे. वली तमे संथारो भंगाववानो कुहेतु मेलव्यो, पण संथारामां तो खावापीवाना त्याग छे. ते त्याग कोइ दुष्टबुद्धि, मिथ्यादृष्टि के धर्मनो

रूपी होय ते जगावे तेने तो पाप लागे, पण तेना जगाव्या त्याग साधु जागे नही वली जेम संथारामां खावापीवाना त्याग छे तेम फांसीथी खुल्ला थवाना तथा कुत्ता प्रमुखना उपसर्गथी वचवाना साधुने त्याग नथी कोइ दयावंत खोले तो सुखे खुले, पण साधुए गृहस्थीने खोलवानुं केहेवु नही ए साधुनो कल्प छे तेमज साधु गृहस्थीने विनय करवानुं, सामा आववानुं, उन्ना रहेवानु अने उपसमीपे आववानु, कल्प नथी तेथी कहे नहीं, पण गृहस्थी साधुनो विनयादिक करे तेने तो गुणज छे तेम फांसी खोले तथा उपसर्ग टाले तेने पण गुण जाणवो. पण सूत्रसेलीना अजाण त्यागने अने कल्पने उलख्याविना मोहवसां उक्या बोले के, संथारो जगावे तेनां फल अने फांसी खोले तेनां फल एक सरखां छे एम कहे तेने समकिति केम कहीये वली तेरापंथीने केहेवु के, साधूनु साधू संजम जीवीतव्य वान्छे तेमांतो तमे पण धर्म कहोछो, अने जगवंते पण सूत्र ठाणायांगमा कह्युं छे के, साधवी नदीमां कुवती होय तेने दयाना जावेकरी साधू काढेतो आज्ञा उलघे नही संजम जीवीतव्य वान्छयुं कहीये ए लेखेतो जगवंत श्री माहावीरदेवे गोशालाने अनुकंपारस आणीने वचाव्यो ते पण जगवंते संजम जीवीतव्य वान्छयु कहीये तेमा तमे जगवतने पाप लाग्यु कहोछो अने जगवंतने चुक्या कहोछो ते कया न्याये ? जेम साधवी संजमधारी छे, तेम गोशालाने पण जगवते पोतानो शिष्य कह्यो छे शाख सूत्र जगवती शतक पंदरमे ते पाठ लखीए छीए—

ततेणं समणेजगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्तं एवंवयासि जेति ताव गोसाला तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा तचेवजाव पज्जुवासति किमगपुण गोसाला तुम्म मए चेव पवावित्ते जाव मए चेव वहूसुतीकए मम चेवमिछ विप्पन्डिवणे

अर्थ —त० तेवारे स० श्रमण जगवंत श्री महावीर स्वामी गो० गोसाला म० मखलीपुत्रने ए० एम केहेता हवा जे० जे ता० ते गो०

हे गोशाला ! त० तथारुप स० श्रमण तपस्वी मा० ब्राह्मण तं० तेमज जा० यावत् शब्दे समीपे एक पण वचन आर्यनलुं धर्मसंबंधी सुवचन शांभले ते पण ते प्रत्ये वांदे, नमस्कार करे, यावत् कल्याणकारी, मंगलकारी, देवसमान, चैत्यसमान जा० यावत् शब्दे प० शेवा करे. तो कि० घणुं शुं कहीये, तुजोने पु० वली गो० हे गोशाला ! तु० तुजप्रत्ये म० मेंज च०निश्चे प० प्रवर्ज्या (दिक्षा) दीधी इत्यादि जा० यावत् म० मुजथकी चे० निश्चे ब० बहु श्रुत थयो. तजुलेश्या पामीने समर्थ थयो ते म० मुजथीज चे० निश्चे मि० तें अनार्यपणु वि० प्रतिवर्ज्युं.

भावार्थः—हवे जुओ ! गोशालो प्रभुनी साथे छ वर्ष सुधी रह्यो, लाभ अलाभ सुख दुःख भेलां भोगव्यां, मांहोमांही सुख चिंतवता रह्या, अने पछी मिथ्यात्व प्रवर्ज्यो. समोसरणमां आव्यो त्यां भगवंते एम कह्युं के, हे गोशाला ! में तने मुंड्यो, प्रवर्ज्या (दिक्षा) दीधी, भणाव्यो अने बहुश्रुत कर्यो. ए श्रीमुखथी वीतरागदेवे कह्युं. ए भगवंतनो शिष्य गोशालो, तेने भगवंते संजम धारीने बचाव्यो, तेमां भगवंतने पाप कर्म लाग्यां तथा चुक्या कहो तो, पाणीमां डुबती साधवीने काढयाथी धर्म कया न्याये थशे. जो साधवीने नदीमांथी काढयामां (बचाव्याथी) धर्म हशे तो, भगवंते पोताना शिष्य गोशालाने बचाव्यो तेमां पण धर्म हशे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "भगवंत ज्यारे छद्मस्थपणे हता त्यारे छ लेश्या अने आठ कर्म हतां. गोशाला उपर राग आव्यो ते कृष्णादिक माठी लेश्याना प्रणाम छे. ते रागना प्रणामे करी गोशालाने बचाव्यो तेथी प्रभुने चुक्या कहीये छीए." एवां जुठां आल प्रभुने देछे तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! छद्मस्थ तीर्थंकरमां दिक्षा लीधा पछी छ लेश्या कया सूत्रमां कही छे ? ते बतावो. तेवारे तेरापंथी केहे छे के "सामायक-चारित्रमां, छेदोस्थापनी-चारित्रमां, कषायकुशील-नियंठामां अने मनपर्यव-ज्ञानमां इत्यादिकमां छ लेश्या कही छे, अने सामायक-चारित्र, कषायकुशील-नियंठो अने मनपर्यव-

ान छद्मस्थ तीर्थंकरमा होय छे ए न्याये भगवंतमा छ लेश्या कहीये छीए ” तेनो उत्तर

हे देवानुप्रीय ! ए बोलोना धणी तो घणा साधु छे सामायक चारित्रना अने कषायकुशील नियठाना धणी जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक हजार क्रोड कह्या छे ते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टा चारित्रना धणी छे, अनतगुणा हाणी अधिक छे, छठाण वडिया छे ते कर्मने वशे पाछा पडे तो निगोदमां पडे, अने उत्कृष्टो अनतो काल अर्ध पुद्गल सुधी भमे ए कृष्णादिक त्रण माठी लेश्याना प्रणाम आवे त्यारे सजमनो विणाश थाय वली सामायक, छेदोस्थापनी चारित्र अने कषायकुशील नियठो एक भवमा जघन्य एक वार आवे अने उत्कृष्टो प्रत्येक सोवार आवे शास्त्र सूत्र भगवती शतक २५ में, उद्देशे ६ छे तथा ७ में त्या छ नियठा अने पाच सजया चारित्रना अनेक प्रकार कह्या छे ते पहेला कृष्णादिक त्रण माठी लेश्याना प्रणाम आवे तेने पाछा वाली ले, मिच्छामि दुक्कडं इत्यादिक प्रायश्चित ले, अने कर्मने वशे पाछा न वले तथा प्रायश्चित न ले तो सजम जाय हवे चार ज्ञानथी पडे त्यारे पहेलां तो किंचितमात्र लेश्या वर्ते, पछी मनपर्यव ज्ञान अने चारित्र नियठो जाय, ते आश्री छ लेश्या कही दीसे छे ए न्याय देखाडोने भगवंतमां पण सामायक-चारित्र, कषायकुशील नियठो अने मनपर्यव-ज्ञान होय, तेथी समचय छ लेश्या कही, तेम भगवतने पण छ लेश्या होय एम कहे छे तेने पुछीए के, सामायक चारित्र तथा कषायकुशील नियठावालामां तो सजम जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टो पण होय अने अनतगुण हीण अधिक पण होय हवे भगवतमा कयो सजम होय ते कहो

हे देवानुप्रीय ! भगवतमांतो उत्कृष्टो निर्मलो सजम छद्मस्थप णामा पण कह्यो छे शास्त्र सूत्र आचारागमां वली सामायकचारित्र अने कषायकुशील नियठामा छ लेश्या कही, तेथी भगवंतमा छ लेश्या कहे, तेना केहेवाने लेखेतो कोइ तीर्थंकरे पंदर भव पण कर्या जोइए,

अने कोइ तीर्थंकर कर्मने वशे भ्रष्ट थइने चार गतिमां अनंतो काल अर्धपुद्गल सुधी रुल्या (भम्या) पण जोइए, अने एक भवमां नवसोवार संजम जाय आवे एम पण थवुं जोइए. वली सामायक-चारित्र अने कषायकुशील-नियंठामां छत्रीस बोल कह्या छे. शाख सूत्र भगवती शतक पचीसमें, उद्देशे छठे तथा सातमें. ते प्रमाणे छद्मस्थ तीर्थंकरमां सर्वे होवा जोइए. हे देवानुप्रीय ! सामायक-चारित्रादिकनी शाख देखाडी भगवंतमां छ लेश्या कहो तो, सर्व बोल सामायक-चारित्रादिकमां कह्या ते छद्मस्थ तीर्थंकरमां केम नथी केहेता ? वली सामायक-चारित्र अने कषायकुशील-नियंठामां तो कल्प पांच कह्या छेः—ठीय-कल्पी (कल्प प्रमाणे रेहेवुं) १, अठीय-कल्पी (कल्प रहित) २, जिन-कल्पी (अभिग्रहधारी) ३, स्थवर-कल्पी (इमणा साधु आरजा विचरे छे ते) ४, अने कल्पातित (वीतराग) ५. तेमां छद्मस्थ तीर्थंकरमां दिक्षा लीधा पछी कल्प एक कल्पातितज होय एम कह्युं छे. शतक २५ में. हवे सामायक-चारित्र कल्पातितमां अने कषायकुशील-नियंठा कल्पातितमां छ लेश्या कोइ सूत्रमां तथा टीका प्रकरणमां क्यांय पण कही नथी. तमे एवा मतना लीधा भगवंत उपर कुडा आल केम द्योछो. वली सामायक-चारित्रादिक सर्वे बोलमां छ लेश्या कही छे, ते द्रव्य लेश्या जाणीए छीए. लेश्या द्रव्य अने भाव, बे प्रकारे कही छे. तेमां द्रव्य लेश्याने रुपी आठ फर्सी कही छे. जेमां पांच वर्ण, पांच रस, बे गंध अने आठ फर्स होय ते शरीरादिकना वर्णादिकने कहीये; अने भाव लेश्याने अरुपी कही छे, तेमां वर्ण, रस, गंध अने फर्स नथी. शाख सूत्र भगवती शतक १२ में, उद्देशे ५ में. ए न्याये ज्ञानमां, समकितमां, चारित्रमां, नियंठामां अने चोवीस दंडकमां, सर्वमां भाव-लेश्या केहेशोतो द्रव्य-लेश्या शेमां होय ते कहो. साधुजीमां द्रव्य-लेश्या होय के नहि ते कहो; कारणके साधुजीमां द्रव्य-लेश्या भाव-लेश्या न्यारी न्यारी तो कोइ ठेकाणे कही नथी.

वली नारकीमां पेहेली त्रण माठी लेश्या कही छे, पण ते द्रव्य

लेश्या जाणीये छीए, कारण के भावे तो क्षायकादिक समकितना प्रणाम तथा उदासीभाव पाछला भवना कीधेला पापने निंदे, पोताना आत्माने धिक्कार देवे, ते प्रणाममा भावे भली लेश्या होय तो नाकारो नहि वली भवनपति अने वाणव्यतरमा लेश्या चार कही छे त्या पण पद्म शुक्ल भावे होयतो नाकारो नहि वली समकितिमा अनतानुबंधी चोकडीना क्रोधादिक उपशम्या तथा खप्या, ते कइ लेश्यानु लक्षण कहीये? ते उत्तराध्ययनना ३४ मा अध्ययनथी वीचारीने कहो वली ज्योतिष अने पहेला बीजा देवलोके लेश्या एक तेजु कहीछे त्रीजे चोथे अने पाचमे देवलोके लेश्या एक पद्म कहीछे आगल छठा देवलोकथी मांडीने पाच अनुत्तर विमान सुधी लेश्या एक शुक्ल कहीछे, ते पण द्रव्य लेश्या कही दीसे छे भावे कृष्ण, नील, अने कापोत माठी लेश्या होय तो नाकारो नही, कारणके छकायनु अव्रत सेवे, रागद्वेष, परजीव उपर द्रोह भाव करे, देवांगनाथी भोग भोगवे अने अनेक प्रकारना युद्ध करे, ते प्रणामोने भावे केवी लेश्या कहीये ते कहो उत्तराध्ययन सूत्रना ३४ मा अध्ययनमा तो ए लक्षणने भावे कृष्णादिक माठी लेश्याना कह्या छे, ते वीचारी जोजो वली सूत्रमा तो नारकी तथा देवतामा लेश्या समचय कही छे पण द्रव्ये जाणीए छीए, अने भावे तो छए दीसेछे उत्तराध्ययन सूत्रना ३४ मा अध्ययनमा छ लेश्याना लक्षण कह्यां छे, ते वीचारी जोजो तेम सामायक चारित्रमा, छेदोस्थापनी चारित्रमा कषायकुशील नियंठामा अने मनपर्यव ज्ञानमा समचे छ लेश्या कही, ते द्रव्ये जाणीए छीए जो भावे होयतो पुलाक, बकुस अने पडिसेवणा, ए त्रणे नियंठावाला मूलगुण अने उत्तरगुणमां दोष लगावे, तेमा पण त्रण लेश्या कहीछे, अने कषाय कुशील तो अपडिसेवी छे, एटले मूलगुण, उत्तरगुणमा दोष लगाडे नही, त्यारे तेमा भावे छ लेश्या केम संभवे? कारण के भावे तो साधुभगवतमा लेश्या त्रण भलीज होय वली साधुभगवनमा भावे छ लेश्या कहे, तेने पुछीए के, आरंभ लागे ते कइ लेश्याथी लागे? द्रव्य छ लेश्या अजीव

कहो छो तेथी लागे? के भाव लेश्या जीवना प्रणाम, तेथी लागे? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, द्रव्य लेश्या अजीव छे, तेथीतो आरंभ पाप लागे नही, पण भाव लेश्याथी (जीवना प्रणामथी) आरंभ पाप लागे छे. त्यारे जुओ ! आरंभ लागे ते आश्री लेश्याना प्रश्न कर्या, त्यां साधुजीमां त्रण भली लेश्या कही. शास्त्रसूत्र भगवती शतक १ले उद्देशे १ले ते पाठ.

जीवाणं भंते ! किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ? गो०! अत्थेगइया जीवा आयारंभावि परारंभावि तदुभयारंभावि णोअणारंभा. अत्थेगतिया जीवा णो आयारंभा णोपरारंभा णोतदुभयारंभा अणारंभा. सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइया आयारंभावि एवं पडिउच्चारियव्वं गो०! जीवा दुविहा पं०तं० संसार-समावण्णगाय असंसार-समावण्णगाय. तत्थणं जेते असंसार-समावण्णगा तेणंसिद्धासिद्धाणं णोआयारंभा जाव अणारंभा. तत्थणं जेते संसार-समावण्णगा ते दुविहा पं०तं० संजयाय असंजयाय. तत्थणं जेते संजया ते दुविहा पं०तं० पमत्त-संजयाय अप्पमत्त-संजयाय. तत्थणं जेते अप्पमत्त-संजया तेणं णोआयारंभा णोपरारंभा जाव अणारंभा. तत्थणं जेते पमत्त-संजया ते सुहजोगंपडुच्च णोआयारंभा णोपरारंभा जाव अणारंभा असुहजोगंपडुच्च आयारंभावि णोअणारंभावि. तत्थणंजेते असंजया ते अविरयपडुच्च आयारंभावि जाव णोआयारंभा. सेतेणट्ठेणं गो०! एवंवु अत्थेगतिया जीवा जाव अणारंभा. णेरइयाणं भंते ! आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ? गो०! नेरइया आयारंभावि जाव णोअणारंभा. सेकेणट्ठेणं भंते गो०

हे गौतम ! णे० नारकी आ० आत्मारम्भी छे, परारम्भी छे जा० यावत् तदुभयारंभी छे. पण णो० अणारम्भी नथी से० ते शा अर्थे ज० हे भगवान ! ए० एम कह्यु ? णे० नारकी जा० यावत् णो० अणारम्भी नथी! इतिप्रश्न उत्तर गो० हे गौतम! अ० जेने वृत नथी तेने अवृति कहीये ते आश्री आत्मारम्भी आदि त्रणे छे पण अणारम्भी नथी से० ते कारणे जा० यावत् जे वृतवत होय ते अणारम्भी होय, अने जे अवृतवंत होय ते णो० अनारम्भी न होय इत्यर्थ ए० एम जा० यावत् असुरकुमार आदि पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक सुधी जाणवा अवृतीपणाथी आरम्भी आत्मारम्भी, परारम्भी अने तदुभयारम्भी होय पण अनारम्भी न होय एम केहेवु म० मनुष्यने विषे सजत, असजत, प्रमत्त, अप्रमत्त ए चार भेद, पूर्वे सघला जीव आश्री कह्या तेम जाणवा ण० पण एटलु विशेष सि० सिद्ध चारे भागे रहित छे ते माटे सिद्ध विना केहेवा वा० वाणव्यतर आदि जा० यावत् वे० वैमानिक सुधी ज० जेम णे० नारकी कह्या तेमज जाणवा एम सर्व अविरतीपण साधर्मी छे ते माटे आत्मारम्भादि करे हवे ते जीव स-लेशी अलेशी होय तेमाटे सलेशीनी पुछा करे छे स० लेश्या सहित ज० जेम उर्ध्वथोक कह्या तेम जाणवु क० कृष्ण-लेशीने नी० नील-लेशीने अने का० कापोत-लेशीने ज० जेम ओ० समचे जीव कह्या तेम जाणवा ण० पण एटलु विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त वर्जीने। केहेवा कृष्णादि त्रण अप्रशस्त भाव लेश्यामा सजतपणु नथी, अने जे कह्यु ते अनेरी रीते द्रव्यले या आश्री जाणवु ते० तेजु-लेशीने प० पद्म-लेशीने सु० शुकल लेशीने जेम उंघीक सामान्यसूत्रे जीव कह्या तेम कहेवा ण० पण एटलु विशेष सि० सिद्ध नही (सिद्ध लेश्यारहित छे ते माटे)।

भावार्थ —हवे जुओ ! अहींया कह्यु के, कृष्ण, नील अने कापोत लेशीमा छठु सातमु प्रमत्त अप्रमत्त गुणठाणु नथी सजमनो अभाव (नाकारो) कह्यो वली कृष्णादिक त्रण माठी लेश्यामा, सूत्रनी टीकामां अने वीमलसागरकृत टबामा कह्यु छे के, कषायकुशील नियठादिकमां छ लेश्या कही छे ते द्रव्ये जाणवी ए न्याये साधुजीमा द्रव्ये छ लेश्या

अने जावे त्रण जली लेश्या जाणवी. वली साधुजगवंतमां जावे ब लेश्या कहे तेने पुबीए बीए के, क्रीया अने कर्म द्रव्य-लेश्याथी लागे के जाव-लेश्याथी लागे? ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे बे के, क्रिया अने कर्म द्रव्यलेश्याथी न लागे पण जाव लेश्याथी लागे. वली क्रिया आश्री जाव लेश्याना प्रश्न कर्या त्यां पण साधुजीमां त्रण जली लेश्या कही बे. शाख सूत्र जगवती शतक १ ले उद्देशे बीजे. ते पाठः—

मणुस्साणं जंते! सव्वे समकिरिया? गो०! णोइणठे समठे. सेकेणठेण जंते? गो०! मणुस्सा तिविहा पं० तं० सम्म-दिठी मिछदिठी समामिछादिठी तछणं जेते सम्मदिठी ते तिविहा पं० तं० संजयाय असंजयाय संजयासंजयाय. त-छणं जेते संजया तेदुविहा पं० तं० सरागसंजयाय वीयरा-गसंजयाय. तछणं जेते वीयरागसंजया तेणं अकिरिया. तछणं जेते सरागसंजया ते दुविहा पं० तं० पमत्तसंज-याय अप्पमत्तसंजयाय. तछणं जेते अप्पमत्तसंजया तेसि-णं एगा मायवत्तिया-किरियाकज्जइ. तछणं जेते पमत्तसं-जया तेसिणं दोकिरियाउ कज्जंति तं० आरंजियाय माया-वत्तियाय. तछणं जेते संजयासंजयाय तेसिणं आदिमाउ तिणि किरियाउ कज्जंति आरंजिया परग० मायावत्तिया. असंजयाउ चत्तारि किरियाउ कज्जंति. मिछादिठीणं पंच समामिछदिठीणं पंच. वाणमंतरा जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा णवरं वेयणाए णाणतं माई-मिछदिठी उव-वणगाय अप्पवेयणत्तरा अमाइ-स्सम्मदिठी उववणगाय महावेयणत्तरा जाणियव्वा. जोतिस वेमाणियाय. सल्लेसाणं जंते! णेरइया सव्वे समहारगा? उहियाणं सलेसाणं सुक्कले-

स्साणं एतेसिणं तिण्हं इक्कोगमो कन्हलेस नीललेसाणंपि एक्कोगमो णवर वेयणाए माइ-मिछदिठी उववणगाय अमाइ सम्मदिठी उववणगाय ण भाणियव्वा मणुस्सा किरियासु सराग वीयराग अप्पमत्ता प्पमत्ताण भाणियव्वा काउलेसाणवि एमेवगमो णवरं णेरइए जहा उहिए दंडए तहा भाणियव्वा तेउलेस्सा पम्हलेस्सा जस्स अत्थि जहा उहिउ दम्डउ तहा भाणियव्वा णवर मणुस्सा सराग वीयरागा ण भाणियव्वा

अर्थ —म० मनुष्य भ० हे भगवान ! स० सघला सम० सरखा क्रियावत छे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गोतम ! णो० ए अर्थ स मर्थ नथी युक्त नथी से० ते शामाटे भ० हे भगवान ! एम कह्यु ? गो० हे गौतम ! म० मनुष्यना ति० त्रण भेद प० कह्या, त ते कहेछे स० सम्यक्दृष्टि, मि० मिथ्यादृष्टि अने स० समामिथ्यादृष्टि त० त्यां पूर्वोक्त त्रण पक्षमा जे स० समकिति छे ते० तेना ति० त्रण भेद पं० कह्या, त० ते कहेछे स० सयति सर्वविरती प्रमत्त आदि अयोगी गुण ठाणे वर्ते ते अ० असयति केवल सम्यक्दृष्टि जे चतुर्थ गुणठाणे वर्ते ते स० सयतासयति श्रावक देसविरती पाचमे गुणठाणे वर्ते ते त० त्यां पूर्वोक्त त्रण पक्षमा जे सं० सजति, तेना दु० बे भेद प० कह्या, स० ते कहेछे -स० जेना कषाय क्षय थया नथी अथवा उपशम्या नथी तेने सरागसयति कहीये वी० जेणे कषाय उपशमाव्या अथवा खपाव्या होय तेने वीतरागसयति कहीये त० त्या पूर्वोक्त बे पक्षमा ज० जे वी० वीत रागसयमी ते० तेमने वीतरागपणे करी आरम्भादिकनो अभाव छे ते माटे अ० अक्रिय छे त० ते पूर्वोक्त बेमा स० जे सरागसंयमी, तेना दु० बे भेद प० कह्या त० ते कहेछे -प्प० प्रमत्त-सयति छठे गुणठाणे वर्ते ते अप्प० अप्रमत्तसयति सातमा गुणठाणाथी दसमें गुणठाणे वर्ते ते. त० त्या बे पक्षमां अप्प० अप्रमत्तसयति सातमे गुणठाणे वर्ते ते० ते कह्या

चित उमाह राखवा निमित्ते प्रवर्ते तो तेने ए० एक मा० मायावतिया क्रिया लागे (कषाय क्षीण थया नथी ते माटे.) त० त्यां पूर्वोक्त बे पक्षमां जे प० प्रमत-संयति छे ते० तेने दो० बे क्रिया लागे, तं० ते कहेछेः-आ० सर्व प्रमत्तयोग आरंभरुप छे ते माटे आरंभनी क्रिया लागे. मा० अक्षीण कषायपणाथी मायाप्रत्ययी क्रिया लागे. त० त्यां पेहेला सूत्रने अंतरे कह्युं के त्रण पक्षमां देसविरतीना धणी पांचमे गुणठाणे वर्ते ते० तेने आ० पेहेली त्रण आरंभनी, परिग्रहनी अने मायाप्रत्ययनी क्रिया लागे. अ० असंयति केवल सम्यक्दृष्टि चोथे गुणठाणे होय तेने मिथ्यादर्शनप्रत्ययनी टाली च० चार क्रिया लागे. मि० मिथ्यादृष्टिने आरंभनी आदि पं० पांच क्रिया लागे. स० सम्यक्मिथ्यादृष्टि जे त्रीजे गुणठाणे छे तेने पण पांच क्रिया लागे. वा० वाणव्यंतर, ज्योतिष, अने वैमानिक ज० जेम अ० असुरकुमार कह्या तेम जाणवा. त्यां शरीरनुं अल्पपणुं तथा बहुत्वपणुं पोतपोतानी अवगाहनाने अनुसारे जाणवुं. ण० पण एटलुं विशेष वे० ज्योतिष वैमानिकने विषे ए केहेवुं. वे० वेदना आश्री मा० माया-मिथ्यादृष्टिपणे उ० उपन्या तेने अ० अल्प वेदना शातावेदनी आश्री जाणवी. अ० अमाइ-सम्यक्दृष्टिपणे उपजे तेने म० शातावेदनी अधिकतर होय(उत्कृष्ट सम्यक्ज्ञान माटे).जो० ज्योतिष, अने वे० वैमानिकने विषे असुरकुमारथी विशेष जाणवुं.

स० लेश्या सहित जे नारकी प्रमुख. जीव ते भं० हे भगवान! ने० नारकी स० सघलानो सम० एक सरखो आहार छे? उं० समचय जीवनो पुछवो. स० लेश्या सहितने सु० शुक्ल-लेशीने ए० एनो एक सरखो गमो (पाठ) जाणवो. क० कृष्ण-लेशी नी० नील-लेशी ए बेहुनो पण एक सरखो पाठ जाणवो. ण० एटलुं विशेष वे० वेदनाने विषे मा० मायामिथ्यादृष्टिपणे उपन्या तेने माहावेदना होय, उत्कृष्ट स्थिति प्रत्ये पामे, त्यां मोटी वेदना संभवे; अने अमाइसम्यक्दृष्टिपणे उपन्या तेने अल्प वेदना होय इत्यादिक केहेवुं. म० मनुष्य पदे कि० क्रिया सूत्रने विषे ओधिक दंडके सराग, वितराग, प्रमत्त, अप्रमत्त कह्या छे तेम केहेवा,

कृष्ण अने नील-लेश्याने उदये संयमना अभावथी कोपात-लेश्यानो दण्डक पण नील-लेश्याना दंडकनी परे केहेवो ण० एटलु विशेष से० नारकीने ज० जेम उ० उधीक दण्डक कह्यो तेम केहेवा जेम नेरइयाणं दुविहा प० त० सन्नीभूयाय असन्नीभूयाय तिर्यंचजीव पेहेली पृथ्वि ए उपजवेकरी कापोत लेश्यानो संभव छे ते० तेजु लेश्या प० पद्म-लेश्या ज० जे जीवने होय ते आश्रीने ज० जेम उ० उधीक द० दंडक कह्यो तेम ते बेउनो केहेवो ते लेश्या जेमछे तेम कहे छे — नारकी, विगलेंद्रि, तेउ अने वाउने पेहेली त्रण लेश्या होय, अने भवनपति, पृथ्वि, अप, वनस्पति अने व्यंतरने पेहेली चार लेश्या होय पचेंद्रितिर्यंचने छ लेश्या होय ज्योतिषिने एक तेजु-लेश्याज होय वैमानिकने छेली प्रशस्त लेश्या होय ण० पण एटलु विशेष म० केवल उधीक दंडकने विषे मनुष्य स० सरागी वीतरागी विशेषपणे कह्या ते इहां न केहेवा कारणके तेजु पद्म-लेश्याने विषे वीतरागपणानो अभाव छे फक्त शुक्ल-लेश्याने विषेज वीतरागपणानो संभव छे तेथी ॥ १७ ॥

भावार्थ —हवे जुओ ! इहां एम कह्यु के, कृष्ण, नील अने कापोत-लेशीमा छठुं प्रमत्त तथा सातमु अप्रमत्त गुणठाणुं, सरागी-संजम तथा वीतरागीसंजम, ए चार प्रकारनो संजम नथी संजमनो अभाव (नाकारो) कह्यो ए न्याये साधुजीमा भावे त्रण लेश्या भलीज होय वली भगवती शतक ९ में उद्देशे ३१ में असोचाकेवलीना अधिकारमां, विभग अज्ञान प्रत्ये छोडीने अवधज्ञान चारित्र पडिवज्जे, तेमां त्रण भली लेश्या कही, तथा शतक ३७ में उद्देशे ५ में पण लेश्या त्रण भलीज कही, तथा ठाणायाग ठाणे त्रीजे उद्देशे बीजे पण लेश्या त्रण कही इत्यादिक अनेक सूत्रमा साधुजीमा लेश्या त्रण कही छे छतां तेरापंथी, साधुमा छ लेश्या कहे छे, तेमने पुछीए के, साधुजी धर्मी के अधर्मी ते कहो तेवारे तेरापंथी कहेछे के, साधुजीतो धर्मी छे अधर्मी नथी त्यारे हे देवानुप्रीय ! तमे साधुजीमां भावे छ लेश्या केम कहोछो ? कारणके कृष्णादिक त्रण लेश्याने तो अधर्म लेश्या कही छे,अने तेजु, पद्म ने

शुक्ल ए त्रणने धर्म-लेश्या कही छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अ०३४में ते पाठः-

कन्हा नीला काओ तिण्णिवि एयाओ अहम्म लेसाओ एयाहिं तिहिंवि जीवा दुग्गइ ओववज्जइ ॥ ५६ ॥ तेउ पह्मा सुक्का तिण्णिवि एयाओ धम्म लेसाओ एयाहिं तिहिंवि जीवा सुग्गइं उववज्जइ ॥ ५७ ॥

अर्थः—क० कृष्ण नी० नील, अने का० कापोत, ए ति० त्रण अ० अधर्म ले० लेश्या छे. ए० ए ति० त्रणे जी० जीवने दु० दुर्गति उ० उपजावे. ते० तेजु प० पद्म, अने सु० शुक्ल ति० ए त्रण ध० धर्म ले० लेश्या छे. ए० ए ति० त्रणे जी० जीवने सु०शुद्ध गति उ० उपजावे.

भावार्थः—हवे जुओ ! ए त्रण अधर्म-लेश्या कही. ए अधर्म-लेश्याथी दुर्गतिमां उपजवुं कह्युं छे, अने साधुजीनेतो एकान्त-धर्मी कह्या छे. ते अधर्म पामे नहिं अने दुर्गतिमां पण जाय नहिं. तेथी साधुजीमां भावे त्रण भली लेश्या होय. हवे तमे कहोछो के, साधुजीमां त्रण अधर्म-लेश्या होय. ए तमारे लेखेतो साधुजीने धर्माधर्मी केहेवा जोइए. ज्ञान, दर्शन ने चारित्र आश्रीतो धर्मी, अने कृष्णादिक अधर्म-लेश्या आश्री अधर्मी, एम धर्माधर्मी साधुजी थया. पण वीतरागदेवेतो साधुजीने एकात-धर्मी कह्या छे. शाख सूत्र भगवती, उववाइ, सुयगडांग आदि अनेक सूत्रमां तथा कर्मग्रंथमां पण साधुजीमां लेश्या त्रण कही छेः. तेजु, पद्म अने शुक्ल. तमे आटला सूत्रनी वीतरागदेवनी वाणी उछापीने साधुभगवंतमां भावे छ लेश्या केम कहोछो ? वली भगवंतमां तो द्रव्ये पण त्रण भली लेश्याज होय, कारण के भगवंतना सर्व पुद्‌गल शुभ होय छे. शाख सूत्र उववाइजी. हवे जुओ ! भगवानना शरीरना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श सर्व शुभ होय अने कृष्णादिक त्रण माठी लेश्याना वर्णादिकतो माहा अशुभ कह्या छे अने भली त्रण लेश्याना शुभ कह्या छे. वली त्रण माठी भाव लेश्यानां लक्षण खोटां कह्यां छे अने

अथ, छत्री लेश्याना स्वरूप चोखा कह्या छे शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ३४ में ते पाठ

कन्हा नीला काउ तेउ पम्मा तहेवय सुक्कालेसाय छठाओ, नामाइतु जहक्कम्म ३ जीमूत णि‍द्ध सकासा गवलरिठग सणिन्ना खजजण नयणनिन्ना कन्ह लेस्साओ वणाओ ४ नीलासोग सकासा चास पिन्छ समप्पन्ना वेरुलिय निद्ध संकासा नीललेसाओ वणाओ ५ अयसी पुप्फ सकासा कोइल छद संनिन्ना पारेवयग्गिवनिन्ना काउ लेसाओ वणाओ ६ हिंगुलय धाव सकासा तरुणाइच्च संनिन्ना सुयतुन्ड पइव निन्ना तेउलेसाओ वणाओ ७ हरियाल भेद सकासा हलिद्दाभेय समप्पन्ना सणासण कुसुमनिन्ना पम्म-लेसाओ वणाओ ८ संख ककुद सकासा खीर पुर सम-प्पन्ना रयतहार सकासा सुक्कलेसाओ वणाओ ९ जह कडुग तुवग्गरसो निंवरसो कडुग रोहिणी रसोवा एत्तोवि अणं-तगुणो रसो कन्हाय नायवो १० जह तिकडुग सरसो तिक्खो जह हत्थि-पिप्पलीएवा एतोवि अणात्तगुणो रसोउ निलाए नायवो ११ जह तरुण अंवग रसो तुव कवि-ठस्सवावि जारिसाओ एत्तोवि अणातगुणो रसोऊ काऊ नायवो १२ जहपरिणय वगरसो पक्क कविठस्सवावि जारिसओ एतोवि अणातगुणो रसोवि तेउ नायवो १३ वरवारु-णियव रसो विविहाणव आसवाणं जारिसओ महुमेरगस्सव रसो एत्तो पम्माए परिएण १४ खजूर मुद्दिय रसो खीररसो खन्ड सक्कर रसोवा एत्तोवि अणातगुणो रसोउ सुक्काए नायवो १५ जहा गो मम्डस्स गंधो सुणग्ग

मम्मसव जहा अहि मम्मस्स एत्तोवि अणंतगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं. १६ जहा सुरहि कुसुमगंधो गंधवासाण पिस्समाणाणं यत्तोवि अणंतगुणो लेस्साण पसत्थ तिन्हंपि. १७ जह करगयस्स फासो गोजिब्भाएव सागपत्ताणं एत्तोवि अणंतगुणो लेस्साणं अप्पसत्थाणं. १८ जह बुरस्सव फासो णवणीयस्सव सिरीस कुसुमाणं एत्तोवि अणंतगुणो पसत्थ लेसाण तिन्हंपि. १९ तिविहो नवविहोवा सत्तावीसइ विहे क्कासिउवा दुसहोतेयालोवा लेसाण होइ परिणामो. २० पंचासव प्पवत्तो तिहं अगुत्तोछसु अविरहोय तिव्वा-रंभो परिणाउ खुद्दो साहस्सिओनरो. २१ निद्धंधस परि-णामो निस्संसो अजिइंदिओ एयजोग समाउत्तो कन्हले-संतु परिणामो. २२ ईसा अमरिस अत्तवो अविज्जमया अहीरियथाय गिद्धि पउसेय सढे पमत्ते रस लोलुए. २३ सायं गवेसएय आरंभि खुद्दो साहस्सिओनरो एयजोग समाउत्तो नीललेसंतु परिणमे. २४ वंकेवंक समायारे निय-म्मिल्ले अणज्जुए पलिउंच गउहिए मिच्छदिट्ठि अणारिए. २५ उप्फालग्ग दुक्कवाइय तेणयावियं मच्छरि एयजोग समाउत्तो काउलेसंतु परिणामे. २६ नीयावत्ति अचवले अमाई अकुतुहले विणीय विणए दंते जोगवं उवहाणवं. २७ पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरु हिएसए एयजोग समा-उत्तो तेउलेसंतु परिणामे. २८ पयणु कोह माणेय माया लोभेय पयणुए पसंत्तचित्त दंतप्पा जोगवं उवहाणवं २९ तहा पयणुवाइय उवसंते जिइंदिए एयजोग समाउत्तो पम्हलेसंतु परिणामे. ३० अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता धम्म सुक्काई

झायइ पसत्त चित्तदतप्पा समिए गुत्तेय गुत्तीसु ३१ सरागे
वियरागेवा उवसंते जिइदिए एयजोग समाउत्तो सुक्कले-
सतु परिणामे ३२ असखेजा णोसप्पिणीण उसप्पिणीण
जेसमया सखाइया लोगा लेसाण हवइठाणाइं ३३ ॥

अर्थ —क० कृष्ण, नी० नील का० कापोत, ते० तेजु, प० पद्म अने सु० शुक्ल लेश्या छ० छठी, ना० लेश्यानां ए नाम ज० जेम छे तेम अनु क्रमे जाणवा हवे लेश्याना वर्ण कहे छे जी० मेघ (पाणी) सहित वादलां होय नि० चोपडया दीसे ते स० सरीखी ग० पाडाना शींग सरीखी अ० आरीठा स० सरीखी ख० गाडाना पइडाना (ऊंगणना) मेश सरखी अने न० आखनी कीकी सरीखो क० कृष्ण-लेश्या वर्णथी काली जाणवी (१) नी० नीलु जेवु अशोक वृक्ष होय ते सरीखी चा० नील (चास) पखीनी पि० पीछी स० सरीखी प्रभा कांती छे जेनी वे० वेडुर्य रत्न जेवु नि० चोपड्यु दीसे ते स० सरीखो नी० नील-लेश्या वर्णथी नीली जाणवी (२) अ० अलसीना पु० फुल स० सरीखी को० कोयलनी छ० पाख स० सरीखो पा० पारेवानी गो० कोट (ग्रिवा) नि० सरीखी का० कापोत-लेश्या व० वर्णथी काइक राती जाणवी (३) हिं० हिंगलो धा० काइक धातु विशेष त० उगता आ० सुर्य स० सरीखी सु० सुडानी तु० चांच सरीखो अने प० दीवा नि० सरीखो ते० तेजु लेश्या व० वर्णथी राती जाणवी (४) ह० हरतालना भे० कटका स० सरीखो हा० हलदरना ज० कटका स० सरीखो स० सणनामे वनस्पति ना कु० फुल सरीखी प० पद्म-लेश्या व० वर्णथी पीली जाणवी (५) स० सख अ० अकनामे रत्न अने कु० मचकवनामा वनस्पतिना फुल सरखो खी० दुधनी पू० धारा सरखी रु० रुपाना पत्र हा० हार स० सरीखी सु० शुक्ल-लेश्या व० वर्णथी उजली जाणवी (६) हवे लेश्याना रसना स्वाद कहेछे ज० जेवो क० कडवा तु० तुंबडाना र० रसनो स्वाद निं० लींबडाना रसनो स्वाद क० कडवी रो० रोहणीनामा वनस्पतिना र०

कडवा रसनो स्वाद ए० एथी पण अ० अनंतगुणो र० रसनो स्वाद कि० कृष्ण-लेश्यानो अती कडवो ना० जाणवो.(१)ज० जेवो ति० त्रिकटु (सुंठ, मरिच,न पीपर)ना र०रसना स्वाद ति० तिखो ज० जेवो ह० हस्ति-पिपरी एटले गजपींपरनो स्वाद होय ए० एथी पण अ० अनंतगुणो र० अतीतीखो स्वाद नी० नील-लेश्यानो ना० जाणवो. (२) ज० जेवो काचा आंबाना र० रसनो स्वाद तु० तुंबरनामा वनस्पतिनुं काचुं फल जेवुं कसायलुं होय तेवो स्वाद क० काचा कोठना फलनो जा० जेवो स्वाद होय ए० एथी पण अनंतगुणो र० अती कषायलो स्वाद का० कापोत-लेश्यानो ना० जाणवो. (३) ज० जेवो प० पाका आंबाना र० रसनो स्वाद प० पाका क० कोठनो पण जा० जेवो स्वाद होय ए० एथी अनंत गुणो र० स्वाद कांइक खाटो कांइक मीठो ते० तेजु लेश्यानो जाणवो. (४) व० प्रधान वा० मद्यनो जेवो र० स्वाद होय वि० घणा प्रकारना आ० आसव (घणा फुल प्रमुख सुगंध द्रव्यनो रस या सत्व) म० माखीए नीपजाव्युं ते मध तथा महुडानो मद्य मे० ताडवृक्षनो निपन्यो मद्य ए० ए मद्यनो जेवो स्वाद होय ए०एथी प०अनंतगुणो रुडो स्वाद पद्मले-या-नो जाणवो. (५) ख० खजुरनो मु० द्राखनो खी० दुधनो खं० खांडनो अने स० साकरनो जेवो स्वाद होय अ० एथी अनंतगुणो मीठो स्वाद सु० शुक्ल-लेश्यानो ना० जाणवो. (६) हवे लेश्याना गंध कहे छेः–ज० जेवो गो० गायना मडानो गंध सु० कुतराना मडानो गंध अने ज० जेवो अ० सर्पना मडानो गंध पाडुवे होय ए० एथी अनंतगुणो भुंडो गंध ले० कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण अ० अप्रशस्त लेश्यानो जाणवो. ज० जेवी सु० सुगंध कु० केवडादिक फुलनी गंध ग० सुगंध-वाली पि० पीसतां वाटता होय त्यारे जेवी सुगंध होय ए० एथी अ० अनंतगुणी सुगंध तेजु, पद्म अने शुक्ल ए त्रण ले० प्रशस्त (भलो) लेश्यानो होय. हवे लेश्याना फर्स कहे छेः–ज० जेवो क० करवतनो फा० फर्स असुंहालो होय गो० गाय बलधनो जि० जीभनो जेवो क-ठीन फर्स होय सा० सागरवृक्षना प० पांदडानो जेवो फर्स होय ए०

एथी पण अ० अनतगुणो कठण फर्स ले० अ० प त्रण अप्रशस्त-लेश्यानो (कृष्ण, नील अने कापोत-लेश्यानो) जाणवो ज० जेम बुर नामा वनस्पतिना फुलनो अति सुहालो फा० फर्स न० माखणनो फर्स अने सि० सीरीपनामा फु० फुलनो जेवो फर्स होय ए० एथी अनंत गुणो सुहालो फर्स प० प्रशस्त (भली) ले० लेश्या ति० त्रणेनो जाणवो हवे लेश्याना प्रणाम कहे छे –ति० त्रण प्रकारे ते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टो न० जघन्यना त्रण प्रकार -जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टो, एम अकेक वर्गना त्रण त्रण भेद करता नव थाय स० एम सत्तावीस भेद पण थाय इका० एकासी भेद पण थाय दु० घसेने तेतालीस भेद पण लेश्या छना प्रणामना थाय प० एटला प्रणाम देरकना त्रण त्रण गणा करता थाय हवे प्रथम लेश्याना लक्षण कहे छे –प० पाच आश्रवनो प० सेवणहार ति० त्रण मन वचन कायाएकरी अ० अगुप्तो (मोकलो) छ० छकायने विपे अविरति (घातनो करणहार) ति० तीव्रपणे आरंभने प० प्रणामेकरी सहित खु० सर्व जीवने अहितकारी सा० जीवघात करवाने विपे साहसीक नि० आ लोक परलोकना दु खनी शकार हित, जीव दयाता सुगर हित अ० अजीतेंद्रिय ए० ए पूर्वे कह्या ते जो० (मन, वचन, कायाना) जोगना पाप व्यापारेकरी स० सहित क०कृष्ण लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणामे (१) हवे नीललेश्याना लक्षण कहे छे इ० इर्षा (पर जीवना गुणनु असहेवु) अ० घणो कदाग्रही अ० तप रहित अ० भली विद्या रहित अ० अणाचारने वर्तता निर्लजपणु गि० विपयनो लपट प० द्वेपभाव सहित स० धूर्त प०आठ मदनो करणहार र० स्वादनो लो० लपट सा० सातानो ग० गवेपणहार आ० आरंभनो करणहार खु० सर्व जीवने अहितकारी सा० अणविमास्या कार्यनो करणहार न० मनुष्य ए० एवा व्यापारकरी स० सहित होय ते जीव नी० नील-लेश्याने प० प्रणामेकरी परीणामे (२) हवे कापोत लेश्याना लक्षण कहे छे -व० वांको बोले, वांका कार्यनो करणहार नि० निवड भाषा सहित उ० सरलपणा रहित प० पोतानो दोप ढांके उ०

कपटेकरी सहित मि० मिथ्यादृष्टि अ० अनार्थ उ० जे वचनथी पर-जीव ऊंचो ऊछले, माथे चाटको ऊठे तेवा वचननो बोलणहार दु० दुष्ट वचननो बोलणहार ते० ते चोरीनो करणहार म० अनेरानीसंपदा सही न शके ए० एवा जो० व्यापारेकरी स० सहित होय ते जीव का० कापोत-लेश्याने प्रणामेकरी परीणमे. (३) हवे तेजु-लेश्यानां लक्षण कहे छेः--नी० मन वचन कायाएकरी नीची वृत्ति (मान रहित) अ० चपलपणा रहित अ० माया रहित अ० कु० कुतुहल रहित वि० वनित होय वि० विनय करवाने विषे दं० इंद्रिनो दमणहार जो० स्वाध्यायादिकने व्यापारेकरी सहित होय, सिद्धान्त जाणता पि० धर्म जेने वल्लभ छे द० धर्मने विषे निश्चल होय व० पापथी भी० बीहे हि० मोक्षनो वंछणहार ए० एवा धर्मना व्यापारेकरी सहित होय ते जीव ते० तेजु-लेश्याने प्रणामेकरी परिणमे. (४) हवे पद्म-लेश्याना लक्षण कहे छेः--प० पातला (थोडा) छे जेने को० क्रोध, मान, माया अने लोभ, प० रागद्वेषथी ऊपशम्युं छे चि० चित्त जेनुं, द० दम्यो छे आत्मा जणे, जो० मन वचन कायाना जोग वसछे जेना, उ० सिद्धान्त जाणतां जे तप करवो जोइए ते तपवंत होय त० तेम प० थोडा वचननो बा० बोलणहार उ० ऊपशान्त थयो (विशम्यो) होय जि० जितेंद्रि ए० एवा जो० धर्मना व्यारेकरी स० सहित होय ते जीव प० पद्म-लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणमे. (५) हवे शुक्ल-लेश्याना लक्षण कहे छेः--अ० आर्तध्यान अने रु० रुद्रध्यान व० वर्जे, ध० धर्मध्यान अने शुक्लध्यान भा० ध्यावे, प० रागद्वेषेकरी ऊपयम्युं छे चित्त जेनुं, दं० दम्यो छे आत्मा जेणे, स० पांच सुमतिवंत गु० त्रण गुप्तिने विषे गुप्तिवंत स० राग सहित, अथवा वी० वीतराग होय ऊ० रागद्वेष ऊपशमाव्या छे जेणे, जो० जीतेंद्रिय ए० एवा जो० गुणना व्यापारेकरी स० सहित होय ते जीव सु० शुक्ल-लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणमे. (६) हवे लेश्यानां स्थानक कहे छेः-- अ० असंख्याती ऊ० उत्सर्पिणीना जेटला समय चढता ऊतरता आवे थाय तेना अने अ० असंख्याती अवसर्पिणीना जेटला

एथी पण अ० अनंतगुणो कठण फर्स ले० अ० ए त्रण अप्रशस्त-लेश्यानो (कृष्ण, नील अने कापोत-लेश्यानो) जाणवो ज० जेम बुर नामा वनस्पतिना फुलनो अति सुहालो फा० फर्स न० माखणनो फर्स अने सि० सीरीपनामा फु० फुलनो जेवो फर्स होय ए० एथी अनंत गुणो सुहालो फर्स प० प्रशस्त (जली) ले० लेश्या ति० त्रणेनो जाणवो हवे लेश्याना प्रणाम कहे छे—ति० त्रण प्रकारे ते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टो न० जघन्यना त्रण प्रकार जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टो, एम अकेक वर्गना त्रण त्रण भेद करता नव थाय स० एम सत्तावीस भेद पण थाय इका० एकासी भेद पण थाय दु० बसेने तेतालीस भेद पण लेश्या छना प्रणामना थाय ए० एटला प्रणाम देरकना त्रण त्रण गणा करता थाय हवे प्रथम लेश्याना लक्षण कहे छे—प० पांच आश्रवनो प० सेवणहार ति० त्रण मन वचन कायाएकरी अ० अगुप्तो (मोकलो) छ० छकायने विषे अवृति (घातनो करणहार) ति० तीव्रपणे आरंभने प० प्रणामेकरी सहित खु० सर्व जीवने अहितकारी सा० जीवघात करवाने विषे साहसीक नि० आ लोक परलोकना दु:खनी शंकार हित, जीव हणता सुगर हित अ० अजीतेंद्रिय ए० ए पूर्वे कह्या ते जोग (मन, वचन, कायाना) जोगना पाप व्यापारेकरी स० सहित क०कृष्ण लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणामे (१) हवे नीललेश्याना लक्षण कहे छे इ० इर्षा (पर जीवना गुणनु असहेवुं) अ० घणो कदाग्रही अ० तप रहित अ० भली विद्या रहित अ० अणाचारीने वर्ततां निर्लजपणु गि० विषयनो लंपट प० द्वेषभाव सहित स० धूर्त प०आठ मदनो करणहार र० स्वादनो लो० लंपट सा० सातानो ग० गवेषणहार आ० आरंभनो करणहार खु० सर्व जीवने अहितकारी सा० अणविमास्या कार्यनो करणहार न० मनुष्य ए० एवा व्यापारेकरी स० सहित होय ते जीव नी० नील-लेश्याने प० प्रणामेकरी परीणामे (२) हवे कापोत लेश्याना लक्षण कहे छे व० वांको बोले, वांका कार्यनो करणहार नि० निवड माया सहित उ० सरलपणा रहित प० पोतानो दोष ढांके उ०

कपटेकरी सहित मि० मिथ्यादृष्टि अ० अनार्थ उ० जे वचनथी पर-जीव ऊंचो ऊछले, माथे चाटको ऊठे तेवा वचननो बोलणहार डु० दुष्ट वचननो बोलणहार ते० ते चोरीनो करणहार म० अनेरानीसंपदा सही न शके ए० एवा जो० व्यापारेकरी स० सहित होय ते जीव का० कापोत-लेश्याने प्रणामेकरी परीणमे. (३) हवे तेजु-लेश्यानां लक्षण कहे छेः--नी० मन वचन कायाएकरी नीची वृत्ति (मान रहित) अ० चपलपणा रहित अ० माया रहित अ० कु० कुतुहल रहित वि० वनित होय वि० विनय करवाने विषे दं० इंद्रिनो दमणहार जो० स्वाध्यायादिकने व्यापारेकरी सहित होय, सिद्धान्त जाणता पि० धर्म जेने वल्लभ छे द० धर्मने विषे निश्चल होय व० पापथी भी० बीहे हि० मोक्षनो वंछणहार ए० एवा धर्मना व्यापारेकरी सहित होय ते जीव ते० तेजु-लेश्याने प्रणामेकरी परिणमे. (४) हवे पद्म-लेश्याना लक्षण कहे छेः--प० पातला (थोडा) छे जेने को० क्रोध, मान, माया अने लोभ, प० रागद्वेषथी उपशम्युं छे चि० चित्त जेनुं, द० दम्यो छे आत्मा जणे, जो० मन वचन कायाना जोग वसछे जेना, उ० सिद्धान्त जाणतां जे तप करवो जोइए ते तपवंत होय त० तेम प० थोडा वचननो बा० बोलणहार उ० उपशान्त थयो (विशम्यो) होय जि० जितेंद्रि ए० एवा जो० धर्मना व्यारेकरी स० सहित होय ते जीव प० पद्म-लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणमे. (५) हवे शुक्ल-लेश्याना लक्षण कहे छेः--अ० आर्तध्यान अने रु० रुद्रध्यान व० वर्जे, ध० धर्मध्यान अने शुक्लध्यान झा० ध्यावे, प० रागद्वेषेकरी उपयम्युं छे चित्त जेनुं, दं० दम्यो छे आत्मा जेणे, स० पांच सुमतिवंत गु० त्रण गुप्तिने विषे गुप्तिवंत स० राग सहित, अथवा वी० वीतराग होय उ० रागद्वेष उपशमाव्या छे जेणे, जो० जीतेंद्रिय ए० एवा जो० गुणना व्यापारेकरी स० सहित होय ते जीव सु० शुक्ल-लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणमे. (६) हवे लेश्यानां स्थानक कहे छेः-- अ० असंख्याती उ० उत्सर्पिणीना जेटला समय चढता उतरता भावे थाय तेना अने अ० असंख्याती अवसर्पिणीना जेटला

समय घटता चढता भावे थाय तेना जे० जेटला स० समय थाय तेट-ला अथवा स० सख्याता लोकना जेटला आकाश प्रदेश थाय तेटला ले० तेटला लेश्याना ठा० स्थानक चढता घटता शुभ अशुभ हु० थाय

भावार्थ —हवे जुवो ! त्रण लेश्यानो वर्ण अशुभ कह्यो,गंध माठा दुर्गंध कही, रस माठा कडवो कह्यो अने फर्स माठा खरखरो (कठोर) कह्यो एवा अशुभ वर्णादिक भगवतमा तो होयज नही माटे भगवं तमां द्रव्ये पण त्रण भलीज लेश्या होय वली भावे त्रण लेश्यानां लक्षण खोटां कह्या, ते लक्षण साधुभगवतमा होय नहि जेथी भावे त्रण भलीज लेश्या होय निश्चेकरी भगवतमा तो द्रव्ये अने भावे त्रण भलीज लेश्या होय शास्त्र सूत्र आचाराग श्रुतस्कंध बीजे वास्ते भग वंतमा छ लेश्या कहे तेने एकान्त मिथ्यादृष्टि जाणवा जो तमे भगवं तमा छ लेश्या कहो तो, प्रभुए छमासी तप कर्या तथा अनार्यदेसमां विहार कर्यो त्यारे छ लेश्या अने आठ कर्म हता के नहि ? हे देवानु प्रीय ! अहिया लेश्या अने कर्मनु शु कारण छे जे करणी कीधी तेनो पक्ष लेवो सजम-जीवीतव्य वधारवामां तमे पण धर्म कहोछो,अने प्रभुए संज मधारी (गोशालो साथे रेहेतो हतो तेने) पोताना शिष्यने अनुकंपा आणीने बचाव्यो ते संजम-जीवीतव्य वान्छयु तेमा प्रभुने चुक्या केम कहोछो तेवारे तेरापथी कहेछे के " साधुए लब्धि फोरवबी नही, एवु सूत्र भग वती शतक बीजे कह्युं छे, अने भगवते लब्धि फोरवीने गोशालाने ब चाव्यो ए अकरवायोग्य काम कर्युं, तेथी चुक्या कहोए छीए " तेनो उत्तर

हे देवानुप्रीय ! त्यांतो मायाकपटाइ करी विकुर्य-लब्धि फोरवी अनेक रुप बनावे, ते आलोवे तथा प्रायश्चित ले तो आराधक थाय, अने न आलोवे तथा प्रायश्चित न ले तो आराधक न थाय ए विकुर्य-लब्धि फोरवे तेनु प्रायश्चित कह्यु छे, पण भगवते तो विकुर्य-लब्धि फोरवी नथी. शीतल लेश्या फोरवीने गोशालाने बचाव्यो छे ए जाणता छतां मतना लीधे मायाकपटाइ करी विकुर्वनुं नाम लुपावी "भगवते लब्धि फोरवी

तेथी चुक्का" एम जुठुं बोली बोधांने केम भरमावो छो? कारण के शी-तल-लेश्या जीवदया निमित्ते फोरवे तेनुं प्रायछित कोइ अंगउपांगादि सूत्रमां कह्युं नथी. कह्युं होय तो बतावो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, एक लब्धिनुं प्रायछित कह्युं तेम सर्व लब्धिनुं जाणवुं. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! लब्धितो अठावीस प्रकारनी कही छे. तेमां विक्रय-लब्धि फोरवे तेनुंतो प्रायछित कह्युं छे. अने तेजु-लेश्या करी अनेक जीवने क्रोधेकरी बाले ए पण प्रत्यक्ष प्रायछितनुं काम दीसे छे अने शास्त्रमां पण कह्युं छे; पण २८ लब्धिमां केवलज्ञाननी लब्धि, तीर्थंकर-पदवीनी लब्धि, गणधर-पदवीनी लब्धि, पुलाक-चारित्रनी लब्धि,अवध मनपर्यव केवलज्ञाननी लब्धि,चौदपूर्वनी लब्धि इत्यादिक लब्धिनुं प्रायछित होय तो,शीतल-लेश्या जीवदया माटे फोरवी तेनुं प्रायछित होय पण जेम एटली लब्धिनुं प्रायछित नथी तेम शीतल-लेश्यानुं पण प्रायछित नथी.तेवारे तेरापंथी कहेछे के "शीतल-लेश्या अने तेजु-लेश्या ए बन्ने भेली थइ तेवारे उनुं थरुं पाणी भेलुं कर्याथी जीवनी हिंसा थाय,तेम बन्ने लेश्या भेली थइ तेथी जीवनी हिंसा थइ. वली जेम अग्निना भर्यो चुलामां काचुं पाणी ढोले तेथी तेउकाय ने अपकाय ए बन्ने कायनी हिंसा थाय तेम तेजु-लेश्या तो अग्नि समान अने शीतल-लेश्या पाणी समान, ए बेउ लेश्या भेली थइ तेथी बन्नेना जीव मुआ. ए हिंसानुं पाप प्रभुने लाग्युं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ए कुमत तमे क्यांथी लाव्या ? सूत्रमां तो लेश्याना अचित्त पुद्गल कह्या छे. शाख सूत्र भगवती शतक सातमे उद्देशे दसमे. ते पाठः—

अचित्तावि पोग्गलाउ भासेइ उद्योवेइ तवेइ पभासेइ ? हंता अत्थि. कयरे भंते ! अचित्तावि पोग्गलाउ भासेइ जाव पभासेइ ? कालोदाइ! कुधस्स अणगारस्स तेयलेस्सा निसठ्ठा समाणी दुरंगत्ता डुरं निपतइ देसंगत्ता देसं निपत्तइ जेहिं २ चणं सानिपत्तइ तहिं २ चणंते अचित्ता

पोग्गलाउ ज्ञासइ जाव पज्ञासइ एएण कालोदाइ ते अ-
चित्तावि पोग्गलाउ ज्ञासेइ ॥

अर्थ —अ० अचित पण पो० पुद्गल ज्ञा० प्रकाश करे ? वस्तु प्रत्ये उ० उद्योत करे ? त० तपे ? आताप करे ? प० प्रकाश करे, ? वस्तुने उजवाले ? इतिप्रश्न ह० हा वच्छ अ० उद्योत करे छे क० कयां ज्ञं० हे ज्ञगवान ! अ० अचित्त पण पो० पुद्गल ज्ञा० प्रकाश करे जा० यावत् प० उजवाले ? का० हे कालोदाइ ! कु० कोप्यो अ० जे अणगार, ते सबधि ते० तेजुलेश्या नि० नीकलीथकी (तपस्वी अणगारना शरीरथी नीकलीथकी) तेजुलेश्या जवालारूप दु० दुरगामनी उती वु० वेगली नि० पडे, जइने बोले, दारु पुजवत् दे० देशने विषे जाय दे० देशमां जइने पडे जे० जे जे स्थानकने विषे, दुर देशने विषे निकट प्रदेशमां पडे त० त्यां त्यां अ० अचित्त पो० पुद्गल ज्ञा० प्रकाश करे जा० यावत् प० उजवालो करे ए० ए का० हे कालोदाइ ! ते० ते अ० अचित पो० पुद्गल पण ज्ञा० प्रकाश करे

ज्ञावार्थ —हे देवानुप्रीय ! इहांतो लेश्या शब्दे श्री वीतरागदेवे अचित्त पुद्गल कह्या छे ए तमे सूत्र वाचीने जाणतां उतां जुठ बोलीने, मतना लीधे लोकोने बेहेकावीने अनत ससार केम वधारो छो तेवारे तेरापथी कहेछे के " लेश्याना अचित्त पुद्गल छे, पण जेम कपडु, काटो प्रमुख अचित्त पुद्गल फेंकवाथी वायुकायनी हिंसा थाय, तेम ज्ञगवते शीतललेश्या फेंकी तेथी वायुकायनी हिंसा थयानु पाप लाग्युं " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! शीतललेश्याना पुद्गलतो शुक्ष्म छे तेथी वायुकायनी हिंसा थाय नहि जो सूत्रमा कह्यु होय तो काढी बतावो वली शीतललेश्याना पुद्गलथी हिंसा थइ मानो तो मनवचनना जोग, स्वासोस्वास, ए पण पुद्गल छे साधुजीने मनना पुद्गल घणी दुर जाय अने वचनजोग (ज्ञाषा) ना पुद्गल घणी दुर जाय, बीजाना कानोमां जाय ए तमारे लेखेतो कोइ पण साधुमां साधपणु नथी ए लेखे, तो

साधपणुं लेती वेला सावज्ञजोगना त्याग पण नतावला न करवा, कारण के नाषाना पुद्गल बाहार नीकली जाय अने वाउकायनी हिंसा थाय. माटे साधपणुं लइने स्वासोस्वास पण लेवो नहि, मन-जोग पण स्थीर राखवो. वचन पण लवलेश मात्र न बोलवुं, मौन राखवुं अने पादोगमन संथारो करीने हाथ पग पण हलाववा नहीं त्यारे साधपणुं कहीये. ए केम मले ? तमे शीतल-लेश्याना शुक्ष्म पुद्गलथो नगवंतने वायरानी हिंसा लागी कहोछो, पण शीतल-लेश्याथी वायुकायनी हिंसा थाय अने शीतल-लेश्यानी लब्धि फोरव्यां प्रायछित आवे, एवुं सूत्रमां कोइ ठेकाणे कह्युं नथी. एकान्त जुठां आल नगवंत उपर शामाटे द्योछो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, जो नगार्यामां लान होय तो केवलज्ञान उपन्या पछी समोसरणमां बलता बे साधुने केम न नगार्या ? तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! ते साधु उपर प्रनुनी अनंती नाव दया हती, पण तेमना आउखानुं निमित्त कारण आवी मल्युं, तेथी प्रनु शुं करे ? तमे,लेश्या-लब्धि फोरव्याथी दोष लागे ते माटे न नगार्या एम कहोछो, ए तमारुं केहेवुं छल पूर्वक छे; कारण के जो एमनुं आनखुं होततो, नगवंततो केवलज्ञाने करी अनंत कालनी वात जाणता हता, त्यारे विहार केम न कराव्यो. विहार करावतां तो दोष नहोतो लागतो ? पण एमनुं आनखुं आवी रह्युं, नवितव्यता बलीष्ट, तेथो नगवंत शुं करे. क्रोम तीर्थंकर नेला थाय तोपण कोइ जीवनुं आउखुं वधारवा समर्थ नथीं. छद्मस्थ तो व्यवहार साचवे अने केवलज्ञानी तो निरर्थक उद्यम न करे. तोपण नगवंते तो बचाववानो व्यवहार राखवानणी आगलथी वर्ज्यां हता, पण इहां आउखुं पुरुं थवानो समय हतो ते कोण टाली शके ? हे देवानुप्रीय ! बचाव्यामां पाप छे तेथी न बचाव्या एम कहोछो, पण पोते चोत्रीस अतिशय पांत्रीस वाणीकरी सहित छे, पचीस जोजन प्रमाण सात इत थाय नाहिं, मृगीमारी रोग थाय नाहिं अने वेरनाव व्यापे नाहिं, ते अतिशय क्यां गया ? गोशालाने वेरनाव केम व्यापो ? बे साधुनी घात समोसरणमां केम कीधी ते कहो. तेवारे तेरा-

पछी कहेछेके, "होणहार पदार्थ अछेराभुत थात छे ते केम टळे"? त्यारे एम कहोछो के जीव ऌगायाँ पाप लागे ते माटे न ऌगाव्यो. वळी अतिशयथका समोसरणमा बे साधुनो घात थइ ते अछेरामां छे वळी छद्मस्थ अवस्थामा तो प्रभुजीने शीतल लेश्या कर्तव्यरुप हती अने केवली थया बाद सत्तारुपे तो खरी पण करतव्यरुप न होय तेथी बे साधुओने बचाववारुप कार्य केम बने? इहां कोई एम आशंका करे के शीतल-लेश्या सत्तापणे छता कर्तव्यरुप कार्ये केम न प्रवर्ते, 'तेनु समाधान-जेम सूत्रजीश्री ऌगवतीजीने विषे पाच देवना अधिकारे कह्युं छे के, देवाधिदेवने अनत रुप वैक्रय करवानी शक्ति छे, परतु करे नहिं ने करशे पण नहिं तद्वत् शीतल-लेश्या पण शक्तिरुपे सत्ताये, पण व्यक्तिरुपे थइ कार्य साधे नहिं एवो नियम छे जो तेरापंथीओने एकान्त एवोज हठवाद होय के केवली जे कार्य करे तेमातो धर्म, अने जे कार्य न करे तेमा पाप, त्यारे तो देवगुरुने वदणा नमस्कार करवामां पण पाप मानवुं पडशे, कारणके केवली ऌगवंत परस्पर वदणा नमस्कार पण करता नथी वास्ते ए सर्व कूतर्क छे वास्ते ऌवचीरुहए हरेक कार्य परत्वे अधिकारीने ओळखवो जोइए कदापी तेरापथी एवी तर्क करशे के, ए तो तमे श्री वीतरागऌगवान बाबतनुं समाधान लख्युं, पण समोवसरणमां तो श्री गौतमादि लब्धि—सपन्न सरागी साधु घणाए हता तेमणे बे साधुओने केम न बचाव्या? तेनो उत्तर -हे देवानुप्रीय! श्री गौतमादि गणधर वा सामान्य साधुओने शीतल-लेश्या हती एवु कया सूत्रना मूळ पाठना आधारथी कहोछो ते बतावबो पडशे

वळी तेरापथी कहेछेके "ऌगवते गोशालाने तलनो छोड बताव्यो एक सींगलीमा सात तल बताव्या पछी गोशाले तलनो छोड उखेड्यो एक सींगळीमाथी सात तल काढ्या ए ऌगवतना वचनथी हिंसा थइ ए पश्चात कर्म दोष ऌगवतने लाग्यो" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! एम ऌगवतने दोष लाग्यो कहोछो, ए लेखेतो तमे नित्य आहारादिक गृहस्थी कनेथी मागो छो तथा मार्ग पुछोछो, त्यारे गृहस्थी उपाडे

मोंढे बोले तेथी असंख्याता वायुकायना जीव हणाय. ए तमारे कारणे नित्य अनेक उघाडे मोंढे बोले, तथा तमे गाममां जाउ त्यारे कुतरां उघाडे मोंढे जसे, ए हिंसानो दोष तमने लागशे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के " अमेतो आहार लेवाना अने मार्ग पुछवाना कामी छीए. उघाडे मोंढे बोलाववाना कामी नथी. तेने जलो जाणता नथी. तेथी अमने पाप न लागे. " त्यारे हे देवानुप्रीय ! जगवंते पण ज्ञानमां देख्या तेम जाख्या. तीलनो छोड उखेडाववाना तथा तील कढाववाना कामी नहोता. तेथी जगवंतने दोष लगार मात्र लाग्यो नथी. तमे प्रजुने एम पाप लाग्युं जाणो तो, तमे अनेक ग्रहस्थीने बोलावो छो. नित्य उघाडे मोंढे बोले छे. ए संजम केवी रीते रहे ते कहो. ए जगवंत उपर अछतां आल केम द्यो छो ? तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के " एटलां काम सूत्रमां साधुने करवां वर्ज्यां छे. करेतो प्रायछित आवे, ते काम प्रजुए छद्मस्थपणामां कीधां छे. साधुए निमित्त जाखवुं नहि, अने जगवंते जाख्युं छे. गोशालाने तलनो छोड बताव्यो. एक तलनी सींगलीमां सात तल बताव्या. कुपात्रने विद्या देवी नाहिं, अने जगवंते दीधी. गोशालाने शीखव्यो, प्रवर्ज्या दीधी, बहु श्रुत कर्यो एवो पाठ छे. तेजु-लेश्या उपजवानी गोशालाने विधि बतावी. शीतल-लेश्यानी लब्धि फोरवी गोशालाने बचाव्यो. अनार्य देशमां विहार कीधो. ७ ए सात काम साधुने करवां सूत्रमां वर्ज्यां छे. ते जगवंते कर्यां ते माटे जगवंतने पाप लाग्युं अने चुक्या, एम कहीए छीए. " तेनो उत्तरः-हे देवानुप्रीय ! ए सात बोल सामान्य साधुने (छद्मस्थ सूत्रव्यवहारना धणीने) वर्ज्यां छे, अने जगवंत तो आगमव्यवहारना धणी छे. व्यवहार पांच प्रकारना कह्या छे. शाख सूत्र व्यवहार तथा जगवती शतक ८ में, उद्देशे ८ मे. ते पाठः—

कइ विहेणं जंते ! विवहारे पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच विहे विवहारे पन्नत्ता तंजहाः-आगमे १ सुए २ आणा ३ धारणा ४ जिए ५. जहासे तछ आगमेसिया आगमेणं ववहारं पठ-

वेद्या णोयसे तत्थ आगमेसिया जहा से तत्थ सुएसिया सुएण विवहारेण पठवेद्या णोयसे तत्थ सुएसिया जहा से तत्थ आणासिया आणाए ववहार पठवेद्या णोयसे तत्थ आणासिया जहासे तत्थ धारणासिया धारणाए ववहार पठवेद्या णोयसे तत्थ धारणासिया जहा से तत्थ जिएसिया जिएण ववहार पठवेद्या इच्चे एयाहिं पंचहिं ववहारं पठवेद्या त आगमेण सुएण आणाए धारणाए जीएण जहाजहासे आगमे सुए आणाए धारणा जीय तहातहा ववहार पठवेद्या से किं माहू भंते! आगमवलिया समणा निगथा इच्चेइया पचविह ववहार जया २ जहिं २ तया २ तहिं अणिस्सि उवसिय सम्मं ववहारमाणे समणे निग्गथे आणाए आराहए भवइ? हंता भवइ

अर्थ —क० केटला वि० भेदे भ० हे भगवान! वि० व्यवहार पं० कह्यो? इतिप्रश्न उत्तर गो० हे गोतम! प० पाच प्रकारे वि० व्यवहार प० कह्यो त० ते कहे छे त्या व्यवहरीए जीवादिके करीने ते व्यवहार. साधुने प्रवृति निवृत्तिरुप ते व्यवहार तेना कारणपणे जे ज्ञान विशेष ते पण व्यवहार कहीए त्या पेहेलो आ० आगमव्यवहार ते आगम ज्ञानथी जाणीए जेणेकरी पदार्थने जाणीये ते आगम सु० सांभलीए ते श्रुत २ आ० आदेश करी दीजे ते आज्ञा ३ धा० धारीए ते धारणा ४ अने जि० जीत ५ (आचार) त्या पेहेलो जे आगमव्यवहार ते केवलज्ञानी १, मनपर्ययज्ञानी २, अवधज्ञानी ३, चौद पूर्वधर ४ दस पूर्वधर ५, अने नव पूर्वधर ६ एनो व्यवहार छ प्रकारनो छे त्या पेहलो केवलीना अछतायकी प्रथम आलोयणा केवली पासे लेवी तेना अभावे मनपर्यवज्ञानी पासे लेवी एम आगलाना अभावे पाछला पात्रज्ञानने आलोयणा लेवी त्यां केवली प्रमुख आगम

व्यवहारी समस्त अतिचार पोतेज जाणे. ते पासे गयाथी आगमव्य-वहारी आलोवणहारने कहे "सघलो अतिचार कहो." तेवारे ते जाण-तोथको पोतानो दोष मायाएकरी गोपवे तो तेने प्रायश्चित न आपे, अने एवुं कहे के, अनेरे ठामे जइने शोध करो; अने जेने दोष याद न आवे तथा जे मायाथकी न गोपवे तेने केवलज्ञानना धरणहार दुषण विचा-रीने प्रायश्चित दे. पण कपटीने, फोकट जासे एम जाणीने प्रायश्चित न दे. इहां चौद पूर्वधर यद्यपि परोक्षज्ञानी छे तोपण उपयोग दीधे छते केवली कहे तेटलुं कही शके. हवे इहां कोइ कहेशे के "आगम-व्यवहारी जाणे तो तेने कहीये के, मुजने आलोवणा द्यो. तेवारे अति-चार पोते कहीने पोते आलोचना आपे तेमां शी हरकत छे? के आलो-वणहारना मोंढाथकी केहेवरावे." एम कहे तेनो उत्तर. ए आलोव-णामां घणा गुण छे. सम्यक्-आराधना थाय अने आलोवणहारने उत्साह वधे. मान छोमी पोतानी आत्माना हित उणी रहस्य प्रगट करे छे. ए वात माहा दोहीली छे. इत्यादिक कारणे गुरु आलोवणहारनाज मोंढाथी आलोवणा करावे अने ते समस्त प्रकारे निःशल्य थइ गुरु जे प्रायश्चित दे, ते हर्षीत थको अंगीकार करे. एम करतोथको निर्वाणपद पामे. १

सु० हवे श्रुतव्यवहार कहेछेः—आचार, कल्प, निषिथ आदि जेने अगीयार अंग तथा नव पूर्व सुधी जाणपणुं होय तेने सुत्रव्यवहारी क-हीये. ते सुत्रव्यवहारी आलोवणा लेणहारना अभिप्राय जाणवा माटे त्रण वार दुषण केहेवरावे. एक वारने कह्ये श्रुतव्यवहारी कदाच एम जाणी न शके के, ए कुमे मने आलोवणा आलोवे छे के साचे मने. त्रणे वार एक सरखुं कहे तेने तो आलोवणा दे, पण कपटथी फेरफार कहे तेने पेहेलां तो जे फेरफार कह्यो होय तेनुं प्रायश्चित दे, पछी पूर्व पापनी आलोवणा दे. २ आ० आज्ञाव्यवहार ते जे बेहु आचार्य सूत्रार्थना जाणवाथी माहा गीतार्थ छे, पण जंघाबल क्षीणपणाथी विहार करी न शके. अलग देशान्तरे रह्या छे. मांहोमाहे मली न शके अने तेमाथी कोइकने प्रायश्चित लेवुं होय, तेवारे ते आचार्य गीतार्थ शिष्यना अज्ञा-

यथी, धारणा कुशल अगीतार्थ साधु वा शिष्यने सिद्धान्तनी जाषाए गुढार्थे अतिचार आसेवना कही बीजा आचार्य कने मुके हवे ते आचार्य तेनो अपराध सांजली ड्रव्यादि चार सहनन धृति बलादिक विचारी पोते स्या जाय अथवा पूर्वनी विधिए गीतार्थ शिष्यने मुके, अने तेने जणावे जे आव्यो ठे तेनेज अतिचारनी आलोवणा कही मुके, ए आणा व्यवहार ३ धा० हवे धारणा व्यवहार कहे ठे –कोइक गीतार्थ सवेगी आचार्ये कोइक शिष्यादिकने कोइक अपराधने विषे ड्रव्यादिक चार (ड्रव्य-क्षेत्र-काल-जाव) जोइ,जे विशुद्धि दीधी होय ते शिष्य गुरुनी दीधेली विशुद्धि मनमांहे धरीने कोइकने तेवे अपराधे तेवीज विशुद्धि दे तो, एम देताने उधृतपद धरणरुप धारणाव्यवहार कहीये, अथवा धारणा ते एम -कोइएक वैयावचनो करणहार शिष्य ठे, पण ते समस्त ठेद श्रुत देवाने योग्य नथी तेवारे तेने आचार्य कृपाकरीने केटलांएक प्रायश्चितना पद आगमथी उद्धरीने तेने कहे ने ते धरीने राखे, अने तेज पद मांहेथी आलोवणा आपे तेने पण धारणाव्यवहार कहीये ४ जि० हवे जीतव्यवहार कहेठे: जेम कोइक अपराधे पूर्वे साधु घणा तपेकरी शुद्धि करता, तेवोज अपराध उपन्ये ठते वर्तमानकाले ड्रव्यादि चार चिंतवी सघयण धृति बलनी हानी जाणीने जे योग्य तपनो प्रकार (प्रायश्चित) दइए ते समय जाषाए जीतगीतार्थ कहीये, अथवा प्रायश्चित जे आचार्यना गच्छमां अधिको उंगो सूत्र प्रवर्त्यो, अने घणे अनेरे गीतार्थे मान्यो होय ते रुढ जीत कहीये ५ ए पांच व्यवहारमां गमे ते व्यवहार सहित गीतार्थ होय तेनी पासेथी प्रायश्चित लइए, परतु अगीतार्थकने लेता दोष उपजे

हवे आगमादिकव्यवहारने विषे प्रवर्त्तवा माटे उत्सर्ग अपवाद कहेठे -ज० जथा प्रकारे केवली आदिक अन्यत ते० ते व्यवहार अथवा त० ते पांच व्यवहारमां त० ते प्रायश्चित क्षानादिक व्यवहार काल विषे आ० आगम केवली प्रमुख होयतो तेवेज आगमव्यवहार प्रायश्चित क्षानादिक प्रत्ये प० प्रवर्ते, पण शेषे करी न प्रवर्ते आगम पण ठ प्रकारे ठे तेमां केवलज्ञानमा अयथोपपणाथी विना फल्ला जाणे, ते माटे तेनुं

कहेलुं प्रायश्चित लेवुं; अने तेने अन्नावे मनपर्यवज्ञानी पासेथी लेवुं. एम पूर्ववत् आगला आगलाने अन्नावे पाछला पाछलाकने लेवुं. णो० नहिं से० ते त० तीहां आ० आगमव्यवहार होय तो ज० जथाप्रकारे से० ते त० तीहां श्रुत होय तेवे श्रुतेकरी व्यवहार प० प्रवर्ते. णो० नहिं से० ते त० तीहां (ते अवसरे) श्रुतव्यवहारी तो ज० जेम से० ते त० तीहां आ० आज्ञाव्यवहारेकरी प० प्रवर्त्ते. णो० नहि से० ते त० तीहां आ० आज्ञाव्यवहारी, तो ज० जेम से० ते त० तीहां धा० गीतार्थ कोइने द्रव्यनो अपराध क्षेत्र, काल, न्नाव जाणीने प्रायश्चित दीधुं ते धारणाए करी प० प्रवर्ते. णो० नहिं से० ते त० तीहां धा० धारणाव्यवहारी, तो ज० ज्यां पुरुष धीर्यादिक विचारी प्रायश्चित दे ते जीतव्यहारेकरी प० प्रवर्ते. इ० इत्यादिक ए० ए पं० पांच प्रकारे करी व्यवहार प्रत्ये प० प्रवर्तावे. तं० ते कहेछेः-आ० आगमेकरी १, सु० श्रुतेकरी २, आ० आज्ञाए करी ३, धा० धारणाए करी ४ अने जि० जीते करी ५. ज० जेम जेम से० ते आ० आगम सु० श्रुत आ० आज्ञा धा० धारणा अने जि० जीत ५, ए पांच होय त० तेम तेम व० व्यवहार प० प्रवर्तावे. ए व्यवहारवंत पुरुषने फल प्रसन्नद्वार कहेछे. से० हवे शुं न्नदंत (न्नट्टारक) आ० कहो कोण आगमबलिउं उक्त ज्ञान विशेष सु० श्रमण निर्ग्रंथ केवली प्रमुख इ० ए वक्ष्माण अथवा ए न्नक्त स्वरुप प्रत्ये पं० पंचविध व्यवहार प्रायश्चित दानादिरुप सम्मं० ए पद संघाते संबंध कीजे व्यवहार तो प्रवर्ते. इत्यर्थः हवे संबंध रुमी रीते, ते केम ते कहे छेः-ज० जेजे अवसरने विषे अथवा जेजे प्रयोजनने विषे अथवा जेजे क्षेत्रने विषे जेजे उचित्त ते ते प्रत्ये इति शेष तदातदा काले ते ते प्रयोजनादिकने विषे केहेवुं, ते कहेछेः— अ० सर्व वान्छा रहित न० तेणे अंगीकार कीधुं ते अनिश्रितोपाश्रित ते प्रत्ये अथवा निश्रित राग उपाश्रित द्वेष नहिं, रागद्वेष ते अनिश्रितोपाश्रित सर्वथी पक्षपात रहितपणे यथावत् इत्यर्थः एतावता पं० पंच वि० विध व्यवहार प्रत्यें ज० ज्यारे ज्यारे ज० जेजे प्रयोजनने विषे योग्य त० तेते प्रत्ये विचारे त० तेते प्रयोजनने विषे सर्वथा पक्षपात

रहित स० सम्यक् व० प्रवर्त्ततो थको स० साधु नि० निर्ग्रंथ आ० आ ज्ञानो आ० आराधक ज० थाय ? इति प्रश्न उत्तर ह० हा थाय

भावार्थ —हवे जुओ ! आगम-व्यवहारना पांच प्रकार कह्या केवल ज्ञानीने १, मनपर्यवज्ञानीने २, अवधज्ञानीने ३, चौदपूर्वधारीने ४, जाव दसपूर्वधारीने ५, आगमव्यवहारी कहीये ए पांच प्रकारना आगमव्यवहारी कह्या आत्मज्ञानथी गुण जाणे ते कार्य करे ए प्रथम व्यवहार ए प्रथमव्यवहारनो धणी बीजो सूत्रव्यवहार माने नहिं, एटले सूत्रमां कह्युं तेम सर्व कार्य करवानो तेमने नियम नहिं आत्मज्ञानथी अवगुण जाणे ते कार्य न करे, अने गुण उपजतो जाणे ते कार्य करे हवे आगमव्यवहारीना वचनथी वा उपदेशथी ग्रंथ जोड्यो तेनेज सूत्र कहीये ते आगमव्यवहारीनु कह्यु करवु, पण आगमव्यवहारी थकां सूत्रमां कह्यु तेम न करवुं वली सूत्रमा कह्यु छे के, नवमा पूर्वनी त्रीजी आयारवथु (त्रीजु अध्ययन) भण्याविना साधुनी पडिमा वहेवी नहिं, अने खधकजी अगीयार अगनुज ज्ञान भण्या छता भिखुनी बारमी पडिमा वह्या, ते आगमव्यवहारीना वचनथी वली गजसुकुमालजी विना सूत्र भण्यां दिक्षा लइ तेज दीने बारमी पडिमा वह्या, ते पण आगमव्यवहारीना वचनथी ए न्याये आगमव्यवहारी थकां सूत्रव्यवहार मानवानो जरुर नथी १, अने आगमव्यवहारीना अभावे बीजो सूत्रव्यवहार मानवो, एटले सूत्रमा कह्युं तेम करवु २, अने जो सूत्रमां कोइ वस्तुनो निर्णय न होयतो त्रीजो आज्ञाव्यवहार मानवो, एटले आचार्य गुरुदेव कहे ते वचन प्रमाण करवु ३, अने ए त्रण व्यवहार न होय तो चोथो धारणाव्यवहार मानवो, एटले गुरुदेव आचार्ये कोइ बोल धराव्या होय तथा कोइने केहेता सांभल्या होय ते प्रमाणे कार्य करवुं ४, अने ए चार व्यवहार न होय त्यारे पांचमो जितव्यवहार मानवो, एटले गीतार्थ वगेरा जेम करता आव्या तेम करवु ५ ए रीते पांच व्यवहार मानतां थकां आज्ञाना आराधक थाय

हे देवानुप्रीय ! भगवत तो आगमव्यवहारी छे ते सूत्रव्यवहार

माने नहिं. ए तमे जाणतां छतां मतना लीधे सूत्रनुं नाम लइ बोधां लोकोने बेहेकावी आगमव्यवहारी उपर आल दइ अनंत संसार केम वधारो छो ? जो आगमव्यवहारीने सूत्रमां वर्ज्यां ते कार्य कीधाथी दोष लाग्यो मानो तो, भगवंते केवलज्ञान उपन्या पछी कालीकुमार प्रमुख दस भाइनां मरण बताव्यां १. वली नेमनाथस्वामीए द्वारकानो दाह बारे वर्षे बताव्यो २. तेमज गोशालाने सात दीवसने आंतरे मरण बताव्युं; पण माहाशतके रेवतीने मरण बताव्युं, तेवारे गौतमस्वामीने मुंकीने प्रायछित देवराव्युं, अने पोते सुखे बताव्युं. ३ वली गोशालाथी धर्म चोयणा करवानी साधुओने आज्ञा दीधी. ४ वली चौदपूर्वधारी धर्मघोष आचार्ये नागश्री ब्राह्मणीने चोरासी चौटामां हीलवा-निंदवानी आज्ञा दीधी. ५ ए पांच बोल सूत्रमां साधुने करवा वर्ज्यां छे, अने केवलज्ञानी आगमव्यवहारीए कीधा छे. हे देवानुप्रीय ! तमारे लेखे तो केवलज्ञानीने ए दोष लाग्यो तेथी चुक्या. पण ए वात केम मले ? आगमव्यवहारीपणुं तो कषायकुशील अने सनातक ए बे नियंठामां होय तेने अपडिसेवी कह्या छे. मूलगुण ते पांच माहाव्रतमां अने उत्तरगुण ते दसविध पचखाणमां दोष लगाडे नाहिं. शाख सूत्र भगवती शतक २५ में उद्देशे ६ छे. हवे जुओ भगवंत तो छद्मस्थपणे पण अवध मनपर्यव-ज्ञान आश्री आगमव्यवहारी छे, अने केवलज्ञानमां पण आगमव्यवहारी छे, तथा कषायकुशील-नियंठाना धणी छे. ते भगवंतने चुक्या कहोछो पण सूत्रमांतो मूलगुण उत्तरगुणना अपडिसेवी कह्या छे. हवे जो चुक्या कहोछो, तो कहो कया व्रतमां मूलगुण उत्तरगुणमां दोष लाग्यो? अने ते वेला नियंठो कषायकुशीलज हतो के बीजो आव्यो ते पण कहो. हे देवानुप्रीय ! भगवंतनो तो अपडवाइ संजम छे. नियंठो फरे नहिं तेथी ते पुरुषोने दोष लागे नहिं. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, जेम गौतमस्वामी चारज्ञान चौदपूर्वना धणी आगमव्यवहारी अने कषायकुशील-नियंठाना धणी आणंद श्रावकने घेरे भाषामां चुक्या तेम भगवंत पण चुक्या. एम कहे छे तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! गौतमस्वामी आणादजी श्रावकने घेर जापामां चुक्या ते समये तेमने चार ज्ञान, कषायकुशील नियंठो अने आगम व्यवहारीपणु हतु, एम कया सूत्रमा कह्युं छे ते कहो वली गौतमस्वामीनु अने जगवंतनु ज्ञान अने नियठो सरखा नथी अनतगुण हानी वृद्धिपणु छे जगवतनो तो सजम नियठो अपकषाइ छे दिक्षा लीधी तेज वखते मनपर्यव ज्ञान उपन्यु अने एकोयकुशील नियंठो आव्यो ते एकज् वार आवे अने ते पाछो जाय नहिं वली कषायकुशील नियंठानो सजम एक जीवने एक जवमा जघन्य एक वार आवे अने उत्कृष्टा नवसो वार जाय अने नवसो वार पाछो आवे वली कषायकुशील नियंठानी अने मनपर्यवज्ञाननी स्थिति जघन्य एक समयनी कही ते एक समय रहे अने बीजे समये वीलाइ जाय कोइक जीवने वली पाछो एक समयथी तथा अतरमुहूर्त तथा घणा कालथी पाछो आवे, अने कोइ जीवने ते जवमां पाछो आवेज नहिं, अने कोइ जीवने एक जवमां घणीवार जाय अने घणीवार आवे तेनी उत्कृष्टी स्थिति देशोणी क्रोड पूर्वनी कही ते एक वारज आवे पण पाछो जाय नहिं वोपनो अपडि सेवीज रहे वली चार ज्ञानवाला, कषायकुशील नियठावाला अने आगमव्यवहारना धणी कर्मने वशे भ्रष्ट थइ जाय तो अर्धपुद्गल अनतकाल संसारमा निगोदादिकमां जमे शास्त्र सूत्र जगवती शतक २५ में उद्देशे छठे, तथा पन्नवणामा ए सर्व अधिकार छे ए कषायकुशील नियठो एक जवमा नवसोवार उत्कृष्टो आवे कह्युं तेनी स्थिति जघन्य एक समयनी कही, अने भ्रष्ट थइ जाय तो उत्कृष्टो अर्धपुद्गल रुले कह्यु, पण जगवंतने तो मनपर्यवज्ञान अने कषायकुशील नियठो एकवार आव्या पछी पाछो जाय नहिं, एक समयनी स्थिति, पण होय नहिं अने अर्धपुद्गल सुधी जमे पण नहिं ते माटे सर्व कषायकुशील नियठाना धणीनो, गौतमस्वामीनो अने जगवतनो छद्मस्थपणानो पण सजम सरखो नथी त्यारे हे देवानुप्रीय ! गौतम स्वामीनो अने जगवतनो कषायकुशील नियठो सरखो केम? वली गौतमस्वामी जापामां

चुक्या, तेम भगवंत पण चुक्या, एम केम कहोछो? वली गौतम स्वामी सरखा द्वादशांगी ज्ञानना धणी पण भाषामां खलाइ जाय कह्युं छे. शाख सूत्र दसवैकालिक अध्ययन आठमे, गाथा ५० मीः—

आयार पणत्तिधरं, दिठिवाय महिद्यगं;
वयंवि खलियं णच्चा, णतं उवहसे मुणी. ॥ ५० ॥

अर्थः—आ० आचारांग अने प० भगवती सूत्रना धरणहार तथा दि० दृष्टिवादना (बारमा अंगना) म० भणनारने व० बोलतां वचने करी ख० खलाया ण० जाणीने ण० नहिं तं० तेमने उ०हसे मु० यति. ॥५०॥

भावार्थः—हवे जुओ! आचारांग, विवाहपन्नति अने दृष्टिवाद (बारमा अंग) ना भणनार वचनमां चुकी जाय, तेनो उपहास नै करवो. ए आगमव्यवहारना धणी वचनमां चुकी (खलाइ) जाय कह्युं, अने मूल-उत्तरगुण दोषना अपडिसेवी कह्या, पण एमने अने भगवंतने सरखा न कह्या. वली गौतम प्रत्ये भगवंते पण कह्युं के, तमे वचनमां भुल्या छो, आणंद साचो छे माटे जइने खमावो. ए वचनने भुल्या कह्युं तेम भगवंत पोते चुक्या हत तो केम न कह्युं. हवे वीरप्रभुने चुक्या तमे कया ज्ञानथी जाण्या? तेवारे तेरापंथी कहे छे के " केवल ज्ञान उपन्या पछी ए काम न कर्युं. बे साधुने न बचाव्या ते वीतराग भावथी, अने छद्मस्थपणे गोशालाने बचाव्यो ते सराग भावथी, एम टीकामां कह्युं छे. ते रागनां कर्म लाग्यां. सरागपणाथी काम कर्यां. गोशालाने बचाव्यो. ए न्याये चुक्या कहीये छीये." तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय! सूत्र पाठमां तो एम नथी कह्युं के, गोशालाने बचाव्यो ते रागभावथी, अने बे साधु न बचाव्या ते वीतरागभावथी. अरे! तमारी श्रद्धानी पुष्टीने माटे टीकाना मलता वचननुं सरणुं ल्यो छो ते मिथ्या छे, केमके अमारे तो सिद्धान्तनी पंचांगी प्रमाण छे. ते पंचागीमां अनेक गुरु लक्क छे. तेमां केटलांक वचन उत्सर्ग-मार्गनां छे अने केटलांक अपवाद-मार्गनां छे. ते मतलब जाण्या विना अने टीका तमे नथी

मानता, वतां टीकानी शाख्नी शाने माटे आपो ढो ? जो टीकामां कयुं तेमज प्रमाण करता हो तो टीकामा पाठल कहेला बोल मेलवी आपी टीकामां तो आधाकर्मी आहार करवो कह्यो ढे, फलफुलनो आहार करवो कह्यो ढे तथा साधुने चक्रवर्तिना कटक चुरवा कह्या ढे. इत्यादिक अनेक विरूद्ध वातो कही ढे ते पण प्रमाण करवी पडशे, अने जो ए प्रमाण न करो तो ए टीकानु वचन प्रमाण केम करो ढो ते कहो

हे देवानुप्रीय ! जगवंतनी करणी ढद्मस्थपणे अने केवलपणे एक सरखी अनुक्रम करणी ढे ढद्मस्थपणे पण आगमव्यवहारी अने केवलमा पण आगमव्यवहारी ढे सूत्रमा साधुने वर्ज्यां तेवा काम ढद्मस्थपणे पण आगमव्यवहारपणाथी कीधा अने केवलज्ञान उपन्या पढी आगमव्यवहारपणाथी कीधा तेमणे ढद्मस्थ अने केवलीपणे एक सरखां काम कर्यां ढे हे देवानुप्रीय ! जे कार्य सूत्रमां सामान्य साधुने वर्ज्यां ढे ते कार्य केवलीपणामां पोते कर्यां ढे मुवानी खबर दीधी, मस्थ बताव्यु अने निमित्त प्राख्यु ए केवलमां तो तमे चुक्या नथी केहेता तेनु शु कारण ? वली नेमनाथजीए वारे वर्षे द्वारीकानो दाह बताव्यो, तेमने तो चुक्या नथी केहेता, पण जगवत माहावीरस्वामीथी अने जीवदयाथी द्वेप दीसे ढे तेथी प्रजुने चुक्या कहोढो वली सरागपणाथी गोशालाने बचाव्यो तेथी जो पाप लाग्युं कहो तो, दसमा गुणठाणां सुधी संजम, तप, विनय, वैयावच इत्यादिक सर्व काम सरागपणाथी करे ढे ते सर्व काममां पाप लागसे, केमके वीतरागजाव तो अग्यारमा गुणठाणा उपर ढे तेमने तो एक इरियावही क्रियाज लागे, ते इरियावही क्रिया पण सातावेदनी बे समयनी स्थितिनी बंधाय, अने दीर्घ स्थितिना पुन्यपाप तो दसमा गुणठाणा सुधी रागद्वेपथीज बंधाय, द्वेपथी अने अप्रशस्त रागथी तो पाप बंधाय अने प्रशस्त-रागथी पुन्य बंधाय वली सराग-संजम अने सराग-तपथी देवतानुं आउखु पुन्यप्रकृति बंधाय एम कह्यु ढे शास्त्र सूत्र जगवती शतक बीजे उद्देशे पांचमे, तुंगिया नगरीना श्रावकोने अधिकारे हे देवानुप्रीय ! सरागथी गोशालो बचाव्यो

तेथी पाप लाग्युं एम कहोछो; परंतु इहांतो टीकामां एम कह्युं छे के, सरागसंजम छद्मस्थथकां जीव जीवे तो अने न जीवे तोपण बचाववानो उद्यम करवो. ते माटे बचाववानो उद्यम कीधो अने बे साधुने न बचाव्या ते वीतरागभावथी. वीतरागे केवलज्ञानथी आउखानो समय आव्यो जाणी लीधो. होणहार टलतुं न जाण्युं तेथी उद्यम न कर्यो, कारणके केवलज्ञानी निरर्थक उद्यम न करे ए भावार्थ. आगमव्यवहारी अकरवाजोग काम करे नहिं. गुण जाणे तेवुं काम करे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "भगवंते गोशालाने बचाव्यो तीहां जोगनो व्यापार थयो. ए जोगनुं पाप लाग्युं." तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय ! जोगविना तो संजम, तप, विनय, वैयावच, चर्चा वार्ता, सझाय, ध्यान, आहार, पाणी, व्यवहार, कांइ पण थाय नहिं. सजोगीने ए जोगना व्यापारथी पाप लाग्युं जाणो तो तमारे लेखे तो कोइ तरवानो मार्ग दीसतो नथी. हे देवानुप्रीय ! ए शुभजोग छे के अशुभजोग ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "गोशालाने बचाव्यामां प्रभु धर्म जाणे तो केवलज्ञान उपन्या पछी ए काम केम न कर्युं ? बीजा कोइ साधुने एरीते जीव उगारवानो उपदेश केम न दीधो" ? तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! प्रभुए पोते छद्मस्थपणे अनार्यदेशमां विहार कर्यो, अने केवली थया पछी अनार्यदेशमां विहार न कर्यो, अने बीजा कोइ साधुने जवानो उपदेश पण न दीधो. ते माटे शुं पूर्वे छद्मस्थपणे अनार्यदेशमां विहार कर्यो ते खोटो कहेवाय ? हे देवानुप्रीय ! आगम व्यवहारीनुं काम अने सूत्रव्यवहारीनुं काम सरखुं नथी. आगमव्यवहारी अकरवायोग्य काम करे नहि, गुण जाणे तो करे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "गोशालाने उगार्याथी केवो गुण उपन्यो ? बे साधुने मार्या. भगवंत उपर तजुलेश्या मुंकी लोहीठाणवाडो कर्यो अने घणुं मिथ्यात्व वधार्युं. शो गुण थयो ?" तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय ! ए वातनो प्रभुने शानो दोष. जेम अभवि जीव हतो ते साधपणुं लइ उदाइराजाने पोषामां मारी गयो. तेनो पापदोष कांइ महापुरुष आचारजने तो लाग्यो

नथी तेमज कोइ अनार्य ठग बुद्धिए साधपणु लइ कोइने ठगी आप तो तेनो पाप दोष बीजाने नथी लागतो तेम महावीरस्वामीए गोशालाने दिक्षा दीधी, जोबतो बचाव्यो तेथी मिथ्यात बधार्यु तेनु पाप प्रभुने नथी लाग्यु जो प्रभुने पाप लाग्युं जाणोतो ए लेखेतो ऋषभदेव स्वामीने घणुंज पाप थयु हशे, केमके तेमणे चार हजार माणस साथे दिक्षा लीधी पछी सघला भाग्या ३६३ पाषरू मत चाल्या थई मिथ्यात बधार्युं पण ऋषभदेवस्वामीने तो पाप लाग्यु नथी तेम वीर प्रभुने पण जाणवु वली गोशालाने तो छद्मस्थपणे दिक्षा दीधी अने बचाव्यो, पण केवलज्ञान उपन्या पछी जमालीने दिक्षा केम दीधी ? तथा नदण मणीहारने श्रावकना व्रत केम दीधां? पार्श्वनाथस्वामीए सोमील ब्राह्मणने व्रत केम दीधा ? सुखमालीकाने साधपणु केम दीधु ? अने वर्ले छ साधवीने दिक्षा केम दीधी एम तो घणा अटकाशे केवलीना दिक्षा दीधेला घणा जणें भ्रष्ट थइने अकार्य कीधा छे तथा मिथ्यात वधार्युं छे ते पाप पण तमारे लखे केवलज्ञानीने लाग्युं जोइए पण ए वात केम मले वली भगवते लब्धि फोरवी गोशालाने बचाव्यो, तेथी भगवतने पाप लाग्यु अने चुक्या कहे, तेने पुछीए के, छद्मस्थपणे पाप कर्युं तेनुं पायश्चित तो कोइ सूत्रमा चाल्युं नथी त्यारे पायश्चित लीधा विना आराधक केम थया ते कहो तेवारे तेरापथी कहेछे के, "जेम रहेनेमीए राजेमतीने भोगनी आमत्रणा कीधी, तेनुं प्रायश्चित चाल्यु नथी तेम आ पण चाल्यु नथी, पण प्रायश्चितनु छेकाणु छे तेथी लीधुज हशे" तेनो उत्तर -अरे मुग्ध प्राणी ! एतो एकान्त असजमनु ठाम प्रत्यक्ष दिसेछे, अने प्रायश्चित पण दस भेदे आवे ते गाथा —

> आदप्प दप्प पमादणा भोगे, आउरे आवति सुय,
> सकित्ते सहसाकारे, भय पतो साय वीमसा ॥ १ ॥

अर्थ —धिपपनो पीट्यो १, प्रमादने लीधे २, अजाणपणे ३, आतुर रोग क्षुधा तृषाए ४, आपदा पडयाथी ५, शकाने लीधे ६, सहसातकारे ७

भयने लीधे ८, रागद्वेषने लीधे ए अने शिष्य शिष्यणीनी परिक्षा निमित्ते १०. ए दस भेद छे. तेमां उत्तराध्ययन २२ में अध्ययने ४६ मी गाथामां दसविध प्रायश्चित मांहेलुं प्रायश्चित कह्युं छे. राजेमतीनां वचन रहेनेमीए सांभलीने प्रणाम पाछा वाल्या. ते पाठः—

इंदियाणि वसे काऊ अप्पाणं उव संहरे. इत्यादि ॥

अर्थः—इं० पांच इंद्रिने व० वश का० करी अ० पोतानी आत्माने उ० फेरवी सं० ठेकाणे लाव्या.

भावार्थः—हवे जुओ ! रहेनेमीनी अती दुष्टपणे भोगनी वंछा नहोती. फक्त दिक्षाथी प्रणाम फर्या हता. पछी राजेमतीना वचनथी पाछा ठाम आव्या त्यारे पश्चाताप कर्यो; पण प्रभुए पश्चाताप कर्यो, एवुं कोइ सूत्रमां चाल्युं नथी. वली गोशालानो जीव द्रढपइनो थशे अने केवल पामशे तेवारे सर्व साधुने कहेशे के, भाइ ! हुं गयाकालमां श्रमण घाती हतो. बे साधुने में मार्या तथा प्रभुनो अविनय कीधो तेम तमे मत करजो. एम गोशालाना जीवे द्रढपइनाना भवमां पोताना पाछला भवनुं पाप निंद्युं, निषेध्युं तेम भगवंते केवल उपन्या पछी ए कार्य निंद्युं निषेध्युं नथी. वली निषिथ प्रमुख घणा सूत्रमां अनेक जातनां प्रायश्चित कह्यां छे, पण भगवंते शीतल-लेश्याथी गोशालाने बचाव्यो, तेनुं प्रायश्चित कोइ पण सूत्रमां कह्युं नथी; पण उलटुं आचारांगसूत्रना प्रथम श्रुतष्कंधना नवमा अध्ययनना चोथा उद्देशामां कह्युं छे के, भगवंत श्री माहावीरदेवे छद्मस्थपणे दिक्षा लीधा पछी पाप कर्युं नथी. ते पाठः—

णच्चाणं से महावीरे, णोविय पावगं सयमकासी;
अण्णेहंवा णकारित्था, करंतंपि णाणु जाणित्ता. ॥

अर्थः—ण० तत्वना जाण से० ते माहावीरदेव णो० नहिं पा० पाप स० पोते करता, अ० बीजा पासे ण० न करावता, अने क० करनारने पण रुडो णा० न जा० जाणता.

भावार्थ —हवे जुत्रो ! आचारांग प्रथम श्रुतस्कंधे नवमें अध्ययने चारे उद्देशामां, भगवतना गुण कह्या अने निरतीचार संजम कह्यो, अने चोथा उद्देशानी, आठमी गाथामां कह्यु के, नवा हे उपादेय स्वरुप जाणीने पोते पाप कर्युं नथी, बीजेरा पासे कराव्यु नथी अने करताने भलो पण जाण्यो नथी हवे छद्मस्थपणे अनेक कार्य कर्या तेमां पाप लाग्यु एवी शंका उपजे, पण छद्मस्थनी शंका केवलीना वचनथी भागे जेम भगवते छद्मस्थपणे, सूत्रमां वर्ज्यां तेवा काम आगमव्यवहारथी कीधां, पण केवल उपन्या पछी सूत्रनी वाणी प्रकाशी तेमां कह्युं के, में छद्मस्थपणे त्रण करणथी पाप कर्युं नथी हवे तमारी कहेणीने लेखे छद्मस्थपणे पाप लाग्यु, अने केवलमां कपटाइ करी जुठ बोल्या ते जुठ लाग्युं (कर्यां पापने छुपाव्यु ते) ए जुठा बोलाना परूप्यां सूत्र पण जुठां हवे तमे प्रतीत केनी राखशो ? तमारे लेखे ए सिद्धान्त उठीगया तेवारे दीवसना चुक्या कहे छे के "ए तो गणधरना वचन छे तेमणे वीतरागना गुण वर्णव्या छे तेनो उत्तर –

हे देवानुप्रीय ! सर्व सूत्र गणधरेज गुंथ्या छे एक वचन जुठुं तो संघलाए जुठा जेम खतमां एक शाख जुठी तो आखु खत जुठुं, तेम ए पण जाणवु तेवारे तेरापंथी वली कहे छे के "अहिंया तो एम कह्यु छे के, भगवंते जाणीने पाप कर्युं नथी अजाण्ये मोहनी-कर्मने वशे पाप लाग्यु तेथी चुक्या कहीये छीए " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! त्यां तो पंदरमें शतके प्रभुए गोशालाने कह्यु छे के, हे गोशाला ! में तारी अनुकंपा वास्ते शीतल-लेश्या मेली एम जाणीने लेश्या मेली कही छे, पण एम नथी कह्युं के, मारे अजाण्ये लेश्या नीकली तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के "लेश्या तो जाणीने मेली, पण एम न जाण्युं के, ए काम करवु के न करवुं एम अजाण्ये पाप कीधु " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! ज्ञान विना तो समकित पण नथी शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २८ में गाथा ३० मी —

नादंसणस्स नाणं, नाणेण विणा णहोइ चरण गुणा;
अगुणिस नत्थि मोक्खं, नत्थि अमोक्खस्स णिवाणं ॥३०॥

अर्थः—ना० दर्शन रहितने ना० सम्यक् ज्ञान न होय, अने नाणे० सम्यक्ज्ञान विना ण० न होय, न उपजे च० चारित्र (पांच महाव्रतादि) गु० गुण (चरण सित्तरी पिंड विशुद्धादि करण सित्तरी). अ० अगुणीने चरणसितरी रहितने न० सकल कर्म क्षय लक्षण रुप मोक्ष नथी. न० नथी अ० कर्मे अणमुंक्याने नि० निर्वाण (मुक्ति) पदनी प्राप्ती ॥ ३० ॥

भावार्थः--हवे जुओ! भगवंतने ए काम करवुं के न करवुं, ए ज्ञान नहिं त्यारे तो ज्ञानविना समकित पण नहिं, अने समकित नहिं त्यारे चारित्र (कर्मथी मुंकावानो मोक्षनो मार्ग) पण नहिं.कारणके पेहेलुं ज्ञान अने पछी चारित्र कह्युं छे. शास्त्र सूत्र दसवैकालीक अध्ययन चोथे गाथा दसमी. हे देवानुप्रीय ! तमारे लेखे तो भगवंतमां छद्मस्थपणामां समकित अने साधपणुं पण नहोतुं. एम केम कहोछो के भगवंतने करवा अकरवा जोग कामनी खबर नहोती. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, भगवानने जाण-पणुंतो हतुं पण ज्ञानथी जोयुं नहिं. हे देवानुप्रीय ! ज्ञान दीधा-विना तलनो छोड शीरीते बताव्यो ? एक फलीमां सात तल शीरीते बताव्या ते कहो. ए प्रत्यक्ष जाणीने काम कर्यां तेने अजाण्ये कर्यां कहोछो ए आश्चर्यनी वात छे. जो अजाण्ये पाप लाग्युं कहो तो चुक्या केम कहोछो. अजाण्ये पाप लाग्याने जो चुक्या केहेशो तो, अनंता तीर्थंकर थया अने अनंता थशे ते सघलाने चुक्या केहेवा पडशे. वली छद्मस्थ साधुभगवं-तने समेसमे सात कर्म बंधाय कह्युं छे, पण तेमने पापदोष (मूल उत्तर-गुण) ना अपडिसेवी कह्या छे, (शास्त्र सूत्र भगवती शतक २५ में उद्देशे ६–७ में) पण चुक्या न कह्या. हवे तमे तो अजाणे पाप लाग्याथी चुक्या कहेछो, त्यारे छद्मस्थ तीर्थंकरदेव तथा साधु विहार करे अने आहा-रादिक वोहोरवाने जाय त्यां अजाणपणे जीवनी घातादिकनुं पाप समे समे लागे अने सात कर्म अजाणपणे बंधाय. ए लेखे तो सर्व छद्मस्थ

साधु तथा भगवत समेसमे चुके, ते कये समे प्रायश्चित ले? अने तेम नामां कये समे साधपणु कहीये ते कहो एम तमारे लेखे तो सर्व छद्मस्थ साधु तथा भगवतमां साधपणुज न रहेशे

हे देवानुप्रीय! एम केम कहो छो के, अजाणये पाप लाग्यु तेथी चूक्या अजाणये पाप तो सर्व छद्मस्थ साधु तथा भगवंतने लागे छे ते अजाण पापथी चूक्या कहेवाय नहिं वली भगवते केवलज्ञान उपन्या पछी कह्युं छे के, में त्रण करण ने त्रण जोगे करी छद्मस्थपणे पाप कर्युं नथी हवे तमे मतना लोभे भगवत उपर अछता आल दइने अनत ससार केम वधारो छो वली पाप तो प्रमादथी थाय एम कह्यु छे ज्यारे प्रमादनो उपचय थाय अने जोगनुं निमित्त कारण थाय त्यारे साधुने क्रिया लागे,(शास्त्र सूत्र भगवती शतक त्रीजे) पण भगवंते तो छद्मस्थपणे मूलथीज किंचितमात्र पण प्रमाद नथी सेव्यो शास्त्र सूत्र आचाराग प्रथम श्रुतस्कधे नवमे अध्ययने उद्देशे चोथे ते गाथा—

अकसाइ विगय गेहीय सद्दरुवेसु अमुच्छिए झावी
छउमत्थेववि प्परिक्कममाणो नोए पमाय सइंपि कुव्विथा ॥१५॥

अर्थ —अ० कषाय रहित (तीव्रनी भीडमी चकावबादि क्रोधनुं कारण कोइ वखते न आवे ते) वि० शब्दादि विषे गृद्धपणा रहित स० शब्द रुपादिकने विषे अमु० मुर्छा रहित, एवा थका झा० ध्यान ध्याते श्री माहावीर छ० छद्मस्थ छता पण विविध प्रकारे सयमानुष्टानने विषे प्परि० पराक्रम करता थका नो० एक वार पण प्रमाद (कषायादिक) पोते नहिं करता हवा एवी रीते स्वामी प्रवर्त्या

भावार्थ —हवे इहां कह्यु के, भगवंते छद्मस्थथकां संजमानुष्टानने विषे उद्यम करता पोते प्रमाद कर्यो नहिं जुओ हे देवानुप्रीय! प्रमाद कर्याविना पाप शी रीते थाय तमे एटला सूत्रनां केवलीनां वचन उत्थापीने प्रभुने चुक्या कहीने अनत ससार केम वधारो छो हवे एटला सूत्रनी शाखे भगवते गोशालाने बचाव्यो तेमां पाप लाग्युं

नथी. तेम बीजा पण केइक जीवने बचावे, आगलानुं पाप टलावे तेमां पाप नथी. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "मुसादिक (उंदर)ने बीलाडी पासेथी बचावी ल्यो तथा पंखीने मालामां मेलो घो. जो एवी रीते जीव बचाव्यां धर्म होय तो, लब्धिधारी मुनीराज हाथ फेरवे तो सर्व श्रावकनुं पेट दुखतुं रही जाय तथा जीव जीवतो रही जाय, पण हाथ फेरवे नहिं. तेम जीव बचाव्यां धर्म होय तो उंदरादिक असंजति जीव करतां तो श्रावकनां पुन्य अधिकां छे. ते धर्मध्यान पण करशे, पण जीव बचाव्यामां धर्म नथी, तेथीज ते श्रावकोना पेट उपर हाथ फेरवे नहिं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! उंदरनी परे श्रावकने पण अमारा कहेवाथी वचे तो बचावी लइए. वली तेरापंथी कहेछे के " जेम साधु, श्रावकना पेट उपर हाथ फेरवे नहिं, तेम उंदरने पण पेट दुखे तो हाथ फेरवे नहिं." एवा कुहेतु लगावीने बोघा लोकोनां हृदय दया रहित करे छे, अने पोताने तो अंधारुं छे, केमके कोइ काम धर्मनां करे छे अने कोइ काम धर्मनां नथी करता. हे देवानुप्रीय ! तमे कहोछो के असंजति जीवनुं जीवीतव्य न वांछवुं. त्यारे जुओ ! असंजति छे तेने तमे केम पोषो छो ? जो अंगथी उपनी जाणीने पोषो तो, अंगथी बालकादि उपजे छे तेने केम नथी पोषता ? वली शीतकालमां पाणीमां माखी पडे तेने मुहपत्तिमां घालीने साजी केम करोछो ? बाहार केम काढोछो? तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अमारा पाणीथी माखी मरे तेनुं पाप अमने लागे. ते टालवा माटे साजी करीए छीए. अमारुं पाप टालवुं तेमां धर्म छे, पण माखीनुं असंजम जीवीतव्य नथी वंछता.", एम कपटथी जुठ बोले छे. तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! तमारा पाणीथी माखी मरे तेनुं पाप तमने लागे, ते पाप टालवामां धर्म कहोछो, त्यारे अंधारी रातमां आंधलो श्रावक साधुना बाजोठ या कपडाथी अथडाइने मुर्छाखाइ पगथीयांनी नालमां पड्यो, तेथी तेनी कोट भागे छे. ए वेला बीजो ग्रहस्थी तेनी पासे नथी, त्यारे तमे साजो करो के नहिं ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " अमे तो

साजो न करीए " एज वेला बीजो ग्रहस्थी आवीने पुछे के, ए शाथी पड्यो ? त्यारे कहेके, मारा उपगर्णथी पड्यो। तेवारे श्रावक तमने कहे के, माखीने तमारा पाणीमांथी काढीने तमारुं पाप टाल्यो त्यारे तमारा कपडा तथा बाजोठथी श्रावक पड्यो, ए श्रावक पचेंद्रिनी हत्यानुं पाप तमने लागे छे, ए केम न टालो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, अमारे ग्रहस्थोथी शु प्रयोजन छे ? हे देवानुप्रीय ! माखी चौरेंद्रि, असंजति, अव्रति छे, अने श्रावक तो व्रति छे, धर्मनो करणहारो छे तेना पुन्य शु माखीथी पण हलवा छे ? जो माखी तमारा पाणीथी मरे तेनु पाप तमने लागे ते टालवा साजी करो तो, तमारा उपगर्णथी श्रावक पड्यो तेनी हत्या तमारा केहेवा प्रमाणे तमने लागे छे, त्यारे ए श्रावकने साजो केम न करो? ए पुरु अधारु केम छे ? एक माखीनु पाप टाली धर्म करो, अने श्रावकनु पाप टाली धर्म न करो ए अज्ञानी प्रतीत केम आवे ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, अमारो कल्प नथी त्यारे हे देवानुप्रीय ! उंदराविक गरीब जीवने बचाव्यां दयानु कार्य छे आगल पण राग द्वेष वधे नहिं, तेथी बचाववानो कल्प छे, अने श्रावकनुं पेट साजुं करेतो एवा ताप, स्वास, कोढ प्रमुख बाला घणाए रोगी होय तेनुं दु:ख जो साधु मटाडे तो प्रमाद वेदगी वधे, अने तप, संजम, स्वाध्याय, ध्यान घटे वली कोइना त्यां सज्झाय, ध्यान के पडिक्कमणानी वेला बोलाव्याथी साधु न जाय तो द्वेष पामे तेथी मुनीराज श्रावकनु पेट साजु न करे ए कल्प नथी।

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " साधु तो छकायना पिहर छे जो बचाव्यामां धर्म होय तो बधांने बचावे हवे तमे उंदरा, पक्षी, गरीब जीवने दयाने अर्थे बचावी मारवावालानु पाप टलावो छो, त्यारे सव्रुं धान्य बकरु खाय तेने केम नथी बचावता ? ए बकरानु पाप केम नथी टलावता? वली मुला अनंता जीवना पिंडनु गांठुं भर्युं छे ते मुला सांढ खावा लाग्यो ए मुलाना अनंता एकेंद्रि जीवने केम नथी बचावता ? सांढनुं पाप केम नथी टलावता ? वली तलावमां माछलां घणां तेमां

गायो जेसो पाणी पीवा जाय. ३ लीलोत्री तिर्यंच खाय. ४ मार्गमां कीडीउं, गींगोला पग नीचे मरे. ५ उकरडा उपर लटो कागडा चुगे. ६ इत्यादिक गरीब जीवने केम नथी बचावता ? ए मारवावालानुं पाप केम नथी टलावता ? " एवा कुहेतु लगाडीने भोला जीवनां हृदय दया रहित करे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ए जीवने पण कोइ दया आणी बीजी वस्तुनो जोग मेलवी बचावे, मारवावालानुं पाप टलावे, तेमां अमे पाप नथी केहेता. ए कुहेतु तो क्यारे मले के, जो अमे उंदराने बचाव्यामां धर्म केहेता होइए अने ए जीवने बचाव्यामां पाप केहेता होइए त्यारे मले; पण ए जीवने बचाव्याथी लोकमां अशुद्ध व्यवहार लागे. धणीनी खुसामतो वास्ते रखवाली करे छे, तिर्यंचने खावापीवा देता नथी, अने उकरडाना कीडा विष्टामांथी वीणे छे. एम जिनमार्गनी लघुता थाय तेथी वर्जे नाहिं. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, धर्म करतां लोकनो अशुद्ध व्यवहार गणवो नाहिं. तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! तमारी जग्यामां मुवेल चकली या उंदर प्रमुखनुं कलेवर पड्युं होय, तेने सूत्रनी सद्याय करवा अने असझाय टालवा वास्ते बाहार परठो तेमां धर्म छे के पाप छे ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " धर्म छे, पण जो पाप जाणे तो साधु कलेवरने बाहार परठे नाहिं. " त्यारे तेने केहेवुं के, तमारी जग्यामां कुतरो बीलाडी प्रमुख मुवां पड्यां छे. तेना कलेवरना पगे दोरडी बांधी सूत्रनी सझाय करवा वास्ते बाहार परठीने धर्म करो के नाहिं ? तेवारे कहेछे के "लोकीकमां अशुद्ध वहेवार लागे. लोकोमां जिनधर्मनी लघुता लागे. लोक कहे के, साधु थइने मेहेतरनुं काम करे छे. कुतरानां कलेवर खेंचे छे. ए वास्ते न परठीए. " तेवारे तेमने केहेवुं के, " तमे केहेता हता के धर्म करतां लोकीकनो अशुद्ध व्यवहार गणवो नाहिं. त्यारे चकलो, उंदर पण पंचेंद्रिनां कलेवर छे अने कुतरो बीलाडी पण पंचेंद्रिनां कलेवर छे. बंने सरखां छे. जो चकलो परठो धर्म करोछो तो कुतरो परठी धर्म केम नथी करता ? ते अशुद्ध-व्यवहार केम गणोछो ? " तेवारे जवाब दइ शके नाहिं. शुद्ध

अशुद्धव्यवहार ओलखे नहिं साधुना कल्पमां अने आज्ञा अनाज्ञामां समझे नहिं, अने दयानो जड़ कापवाने वास्ते एवा कुहेतु मेलवे छे

वली तेरापंथी कहेछे के "मरता जीवने जबराइथी छोडावे तो अंतराय लागे, तेमा धर्म सरदहे तो समकित जाय, पण उपदेश दइ समजावे तेमा धर्म छे " एम कहेछे, पण उपदेशनी विधि जाणता नथी तेने विधि ओलखाववाने पुछवु के, तमारा आहार उपर ताकीने कुतरो आवे तेने रुचकारो करो डंघो हाथमां लइ केम रुरावो छो ? ए धर्म जाणी जबराइ करी समकित केम गुमावो छो? जो जबराइमां पाप जाणो तो ए काम केम करो छो? तमारी केहेणीने लेखेतो ए कुतराने मनुष्यनी परे वचनथी समजाववो जोइए के "अरे कुतरा ! साधुजीनो आहार खावो नहिं जाइ तने पाप लागसे " एम उपदेश देवो, पण जबराइ करवी ए न्याय केम मले ? हे देवानुप्रीय ! तिर्यंच विवेकविकलने एज उपदेश छे जेम असजति खुल्ला ग्रहस्थने साधु आववा जवानु कहे नहिं, कहे तो प्रायश्चित आवे, पण सांढ कुतरा प्रमुख आवे तेने रुचकारो करे, धुरकारो दे अने डंघो हाथमा लइने रुरावे एनो एज उपदेश छे तेम जबराइ करी जीवने बचावे ते कायानो उपदेश जाणवो त्रण करण ने त्रण जोगथी उपदेश देवो तेमज त्रण करण ने त्रण जोगथी दया पाली जीवने बचावे ते कायानो उपदेश जाणवो जीवने मरतां बचावे तेने कायाथी दया पाली कहीये ते दयाना साठ नाम कह्यां छे शास्त्र सूत्र प्रश्नव्याकरण प्रथम संवर द्वारमा ते पाठ —

तत्थ पढम अहिंसाजासा सदेव मणुआ सुरस्स लोगस्स भवइ दीवोत्ताणं सरणगइपइठा - निव्वाण १ निव्वुई २ समाही ३ सत्ति ४ कित्ति ५ कंती ६ रइय ७ विरइय ८ सुयंग ९ तित्ति १० दया ११ विमुत्ति १२ खंत्ति १३ समत्ताराहणा १४ महंति १५ बोही १६ बुध्धि १७ धिती १८ समिद्धि १९ रिद्धि २० विद्धि २१ ठित्ति २२

पुठी २३ नंदी २४ नद्दा २५ विसुद्धि २६ लद्धि २७ विसठ २८ दिठी २९ कल्लाणं ३० मंगलं ३१ पमोउ ३२ विभूति ३३ रखा ३४ सिद्धावासो ३५ अणासवो ३६ केवलीणठाणं ३७ सिव ३८ समिइ ३९ सील ४० संजमोत्ति ४१ सीलघरो ४२ संवरोय ४३ गुत्तो ४४ ववसाउ ४५ उसत्तोय ४६ जणो ४७ आयत्तणं ४८ जयण ४९ मप्पमाउ ५० आसासो ५१ विसासो ५२ अन्नउ ५३ सव्वस्सवि अमाघाउ ५४ चोरका ५५ पवित्ता ५६ सुत्ती ५७ पूया ५८ विमलपन्नासा ५९ निम्मलतरत्ति ६० एवमादीणि नियगुण निम्मियाइं पज्जवनामाणि होई अहिंसाए भगवईए एसा भगवई अहिंसा ॥

अर्थः—त० तोहां पांच संवरद्वारमां प० पेहेली अ० जीवदया स० देव म० मनुष्य अने अ० असुर सहित लो० लोकने विषे सर्व जीवने ते अहिंसा भ० केवी होय छे ते कहेछेः-दी० दीवासमान आधारभूत तथा द्वीपसमान आपदा निवारणहार स०संपदानी देणहार,आदरवायोग्य सर्व गुणनो आधार.ते श्री जीवदयानां गुणनिष्पन्न नाम कहे छे.नि०मोक्षनुं कारण नि०निवृत्तिनी करणहार स०समाधीनुं कारण सं० सान्तीनी दायक कि०कीर्तिनुं कारण कं०कान्तिनुं कारण र०रतिनी उपजावणहार वि०पापथी निवर्तावे सु०सिद्धान्तनुं अंग ति०तृप्तिनी करणहार द०अभयनुं देवुं ते वि० सर्व बंधनथी मुंकावे ते खं० क्षमानी करणहारी स० समकितनी आराधनानुं कारण म० सर्वथी मोटी बो० धर्मनी बुझावणहारी बु० बुद्धिनी देणहारी धि० धीरजनी करणहारी स० समृद्धिनी देणहारी रि० रिद्धिनी देणहारी वि० सुखनी वृद्धिनी देणहारी ठि० अचलनी देणहारी पु० सुखनी पुष्टीनी करणहारी नं० आनंदनी देणहारी भ० कल्याणनी करणहारी वि० विशेष निर्मलताकारक ल० लब्धिनी उपजावणहारी

वि० विशेष प्रधान दि० समकितरुप दृष्टि क० कल्याणनो हेतु म० मग-लीकनो हेतु प० हर्ष पामवानो हेतु वि० मोटाइ पामवानो हेतु र० रक्षानी करणहारी सि० सिद्धने रेहेवानु मदीर अ० आश्रव नथी जेमां के० केवलनी राज्यधानी सि० उपद्रव रहित स० रुडी रीतनी प्रवर्तावक सी० सुआचारनो हेतु स० सजमनो हेतु सी० सीलनु घर स० पापथी आत्माने सवरवु ते गु० अशुभ जोगनु गोपववु ते व० निश्चे आंजनो व्यापार छ० छघो पदार्थ ज० जाव यग्य आ० सर्व गुणनो आश्रम ज० जतना म० प्रमादनु निराकरण आ० आस्वासनु स्थान वि० विस्वासनु स्थान अ० पोतानी आत्माथी कोइने जय न उपजाववो ते स० सर्व जीवने अ-मारी चो० मूलबीज चोक्खी, प० सदाय पवित्र, सु० मलनी टालणहारी पू० तीर्थंकरादिकनी पुजा वि०मल रहित प्रजा छे जेनी नि० अतिशय निर्मल छे इति ए नाम ए० ए आदि अनेक नि० पोताने गुणे नि० निपजाव्यां प० गुण निष्पन्न नाम हो० होय अ० अहिंसा ज० जगवतीना ए० ए ज० जगवती अ० जीवदया जाणवी

जावार्थ —हवे सुछे ? दयाना साठ नाम कह्या, ते गुणनिष्पन्न अकेकु नाम कह्यु छे हवे त्रण करण त्रण जोगथी जीवने हणे नहिं तेतो अहिंसा दयानुं नाम पेहेलु निपनुं हवे ५९ नामना न्यारा न्यारा अर्थ कह्ो दया, अनुकपा, करुणा, वीसासो आसासो अमोघाए अने रखती केने कहीये ते कहो हे देवानुप्रीय ! दया तो त्रण करण अने त्रण जोगथी प्राणीने बचावे तेने कहीयें साधुजीए त्रिविधे २ हिंसाना त्याग कर्या तेने अहिंसा कहीयें पांच सुमति अने त्रण गुप्तिनो उप करता विचरे तेने सजम जतना कहीये कारणके चारित्र, सजम, संवर अने दया न्यारां न्यारा कह्या छे, अने ए चारना आवरण पण न्यारां न्यारां कह्या छे शास्त्र सूत्र जगवती शतक ए में उदेशे ३१ में, असोचा-केवलीना अधिकारमा ए न्याये जीव हणवाना त्याग तेतो चारित्र, तेने अहिंसा कहीयें बचावे तेने दया जतना कहीयें पांच सुमति ने त्रण गुप्तिमां प्रवर्तवु तेने सजम कहीयें जीवना जीवीतव्यनी आसा

कोइना जोगथी बंधाय तेने आसासो कहीयें. वचनथी मरताने जोवी-तव्यनो विश्वास उपजावे तेने विसासो कहीये, अने जीवने कोइ मारी शके नहिं, एवो पडो फेरावे तेने आमेघाए कहीयें. शास्त्र सूत्र उपाशक अध्ययन ८ में. श्रेणिकराजाए अमार-पडो फेरवाव्यो त्यां "अमोघाए घुटेया विहोछा" एवो पाठ छे. इत्यादिक ६० प्रकारनी दया कही छे. तमे जीवने न हणे ते एकनेज दया केम कहो छो ? ५९ प्रकारनी दया मतना लीधे केम छुपावो छो? वली साठ प्रकारनी दया केटला करण अने केटला जोगथी पालवी ते कहो; अने हिंसानुं पाप केटला करण अने केटला जोगथी टालवुं तेपण कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, त्रण करण अने त्रण जोगथी दया पालवी. वली एम न कहे तो एम कहे के, त्रण करण अने नव जोगथी हिंसानुं पाप टालवुं. हवे जुओ! देवानु-प्रीय ! त्रण करण ने त्रण जोगथी जीव मरे कह्युं, अने त्रण करण ने त्रण जोगथी प्रथम संवर राखवो एटले जीवनी रक्षा करवी, दया पालवी, एम प्रश्नव्याकरणमां तथा आवश्यक सूत्रमां कह्युं छे. वली अढार पापमां प्राणातिपात (जीवहिंसा) त्रण करण ने नव जोगथी लागे कह्युं. हवे मनथी हिंसा शी रीते थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, मनेकरी जीवनुं माठुं चिंतववुं ते मार्युं कहीये. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! मनेकरी जीवनुं मरण चिंतववुं तेतो रुद्रध्यान कहीयें. ते अशुभजोगथी कर्म बंधाय, पण जीव मरतो नथी. मन वचनथी जीवने शीरीते मारे तथा अनेराकने शोरीते मरावे ते कहो. पोताना मननी अनेराने शीरीते खबर पडे ते कहो. हे देवानुप्रीय ! मनथी मंत्रादिक गणे अने माठुं ध्यान धरे, तेथी आगलो मरी जाय ते मनथी मार्यो कहीयें. वचनथी मंत्रादिक पढे तथा श्राप दे,तेथी मरी जाय ते वचनथी मार्यो कहीयें,अने कायाथी मारवो तो प्रत्यक्ष देखाय छे. एमज अनेरा पासे त्रण जोगथी मरावे. मनेकरीने मंत्रादिकनुं मातुं ध्यान करावे, तेथी अनेरो अनेरा जीवने मारवा लागी जाय, ते मनथी मरा-व्यो कहीयें. एम वचनथी जीवने मारवानो उपदेश दे, अने कायाथी

हाथपग आदिकनी इसारत जणावीने जीवने मरावे ते कायाथी मराव्युं कहीयें एमज मारे तेने मन, वचन अने कायाथी भलो जाणे एम त्रण करण ने ठ जोगथी तो जीव मरे, अने एक करण ने त्रण जोगथी भलो जाणे तेनु पाप लागे तेमज त्रण करण ने नव जोगथी ठकायना जीवनी रक्षा करवी, दया पालवी पलावची, अने पोतानु पाप टालवु, अनेरानुं टलाववु अने टाले तेने भलो जाणवो ए नव जोगथी दया पालवी ने पाप टालवु कह्यु हवे वचनथी उपदेश दइ जीवने ठोडावे तेतो एक वचन जोगनो उपदेश ठे तेने वचनजोगथी रक्षा करावी दया पाली आगलानु पाप टलाव्युं, तरवुं वठ्यु कहीये, पण आठ जोगथी रक्षा शीरीते करावे, दया पाले पलावे, पाप टाले टलावे, तरवु वठे वठावे ते कहो अहो देवानुप्रीय ! कोइ, जीवने मारतो होय तेने कायाना जोगथी उद्यम करी ठोडावे, तथा कोइ कीडी प्रमुख जीव उपर विना उपयोगे पग देतो होय तेने आडो हाथ दइ बचावे, तेने कायानाजोगथी उपदेश दीधो, दया पलावी, रक्षा करावी आगलानु पाप टलाव्युं अने तरवु वठ्युं कहीये ए कायाथी दया पलावी, तेमा जबराइ करी पाप लाग्युं केम कहोछो ?

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " निशिथसूत्रना बारमा उद्देशाना पेहेला सूत्रमा कह्यु ठे के, जे कोइ साधु अनुकंपा निमित्ते त्रसजीवने बांधे, बंधावे अने बांधताने भलो जाणे तेने चोमासी प्रायश्चित आवे, अने बांध्याने ठोडे, ठोडावे अने ठोडताने अनुमोदे तोपण चोमासी प्रायश्चित आवे जो ठोडता लाभ होय तो प्रायश्चिय केम कह्युं ? " तेनो उत्तर अरे देवानुप्रीया बाधवामा तो 'कोलुणपडिया' एवो पाठ ठे तेनो अर्थ करवावाले कर्यो ठे के " साधु अनुकंपा निमित्ते त्रस जीवने बांधे, बंधावे, अने बांधताने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे, " पण ए अर्थ पाठथी मलतो नथी जो अर्थ लख्यो प्रमाण करो तो, एज पाठमा द्वितिया पदनो अर्थ ठे तेपण प्रमाण करो वली, निशिथना सत्तरमा उद्देशाना अर्थमा कह्यु ठे के ' फासो खाइ मरतो होय तथा लाइ लागी होय इत्यादिक कारणे ठोडे ' ते अर्थ पण प्रमाण करवो पडशे, वे

देवानुप्रीय! साधु तो सर्वथा प्रकारे संसारना कामथी निवर्त्या छे, तेथी ए काम साधुनुं नथी. तेमाटे ए ना कही छे, अने तमे कहोछो के, अनुकंपा निमित्ते छोडे तेने प्रायश्चित आवे. त्यारे साधु तो बीजां घणांए धर्मनां काम करता नथी. जेम श्री पार्श्वनाथजीना साधु केशीश्रमण प्रमुख विचरता हता ते वेला माहावीरजीना श्रावक तेमने आहारपाणी प्रमुख चौदे प्रकारनुं दान देता, वंदणा नमस्कार करता, तेमां एकान्त धर्म छे, अने माहावीरजीना साधु पण ए काममां श्रावकने धर्म परुपता, पण पोतानो कल्प नहिं तेथी माहावीरजीना साधु पार्श्वनाथजीना साधुने आहारपाणी आपता नहिं, द्रव्ये वंदणा पण करता नहिं. वली साधवीने श्रावक श्रावीका वंदणा करे तेमां धर्म छे, अने साधु पण श्रावक आर्याने वंदणा करे तेमां धर्म परुपे, पण पोतानो कल्प नथी तेथी साधवीने साधु द्रव्ये वंदणा करे नहिं. वली गुरु चेलाने द्रव्ये वंदणा करे नहिं, अने ग्रहस्थीने धर्म परुपे. ए प्रकारे अनेक कार्य धर्मनां छे, पण पोतानो कल्प नथी तेथी पोते करे नहिं. तेम ए पण त्रसजीवने बांधवा छोडवानो कल्प नथी, तेथी बांधे छोडे नहिं; पण अनेरो ग्रहस्थी अनुकंपा वास्ते त्रसजीवने बांधे छोडे तेने तमे पाप कया न्याये कहोछो ?

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " साधुनो कल्प नथी तेथी छोडे छोडावे नहिं ते तो ठीक, पण छोडताने भलो जाणे तेनुं प्रायश्चित कह्युं छे, कारणके पापनुं काम भलुं जाणे तो प्रायश्चित्त आवेज, पण धर्मपुन्यनुं काम भलुं जाणे तेनुं प्रायश्चित न आवे. ए न्याये ग्रहस्थी अनुकंपा करीने जीवने छोडे तेमां पाप जाणवुं. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! इहांतो त्रण करण कह्या ते साधु आश्री जाणवा. ए काम साधु करेतो, बीजा साधु पासे कहीने करावेतो, अने बीजो साधु ए काम करतो होय तेने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे. ए साधुनां त्रण करण छे. जेम पार्श्वनाथजीना साधुने पंचवर्णा कपडां तथा चार माहाव्रतथका माहावीरजीना साधु पोते आहारपाणी आपे नहिं, बीजा साधु पासे अपावे नहिं, अने माहावीरजीना साधु आपता होय तेने भला पण जाणे नहिं,

एमज साधवीने साधु ऊव्ये वदणा करे नहिं, बीजा साधु पासे करावे नहिं, अने बीजा साधू करता होय तेने नलो पण जाणे नहिं ए सा धुना त्रण करण कह्या, पण श्रावक पार्श्वनाथजीना साधुने आहार आपे, अने साधवीने ऊव्ये वदणा करे तेने साधु नलो जाणे ठे तेम साधुनो कल्प नथी तेथी, पोते त्रसजीवने ठोके नहिं, बीजा साधुकने ठोकावे नहिं, अने बीजा साधु ठोकता होय तेने नलो पण जाणे नहिं पण ग्रहस्थी अनुकंपा आणी जीवने ठोकावे तेमां गुण केम नथी ? साधु नलु केम न जाणे ? ग्रहस्थी अनुकपा आणीने जीवने ठोकावे तेने पाप लागे, एवु कोइ सूत्रमा कह्यु नथी वली अनुकपा निमित्ते साधु त्रस जीवने ठोके, ठोकावे अने ठोकताने नलो जाणे तेने प्रायश्चित नथी कह्यु शास्त्र सूत्र निषिथ उद्देशे १२ में ते पाठ —

जे निरकू कोलुणपमियाए अणयर तसपाणजाय तण पासएणावा मुजपासएणावा कठपासएणावा चम्मपासएणावा वेत्तपासएणावा रजुपासएणावा सुत्तपासणावा बंधइ बंधंतवा साइजइ जे निरकू वधेलयंवा मुयइ मुयंतंवा साइजइ ॥

अर्थः—जे० जे कोइ नि० साध साधवी को० दीन वृत्ति आजी विका निमित्ते अ० अनेरा कोइ त० त्रसप्राणीनी जाती (गो महिषी आदिक)ने त० त्रणाना पासे मु० मुजना पासे क० काष्टना पासे च० च र्मना पासे वे० नेत्तरना पासे र० दोरमीना पासे अने सु० सुतरना पासे करी ब० बाधे ब० बधावे अने सा० बांधताने नलो जाणे तेमज जे० जे साध साधवी पूर्वोक्त पासे करी ब० बाधेला त्रसजीवने मु० ठोके मु० ठोकावे अने सा० ठोकनारने नलो जाणे इति

नावार्थः—हवे जुर्ज ! इहांतो 'कोलुणपमियाए अणयरं तसपाण जाय' एवो पाठ ठे साधु ठोकावेतो प्रायश्चित नथी ए पण अर्थ प्रमाण करो इत्यादि घणे ठेकाणे पाठमां अणमलता अर्थ ठे, ते पण प्रमाण

करो. तेवारे तेरापंथी कहेछेके "पाठथी मले ते अर्थ प्रमाण छे." त्यारे हे देवानुप्रीय! इहां पण पूर्वोक्त अर्थ प्रमाण नथी. कारणके पाठमां 'कोलूणपडिया' एवो पाठ छे. तेनो अर्थ करुणा शब्देकरीने पोतानुं दुःख मटाडवाने अर्थे ए काम करेतो प्रायश्चित आवे, ए अक्षरार्थ. पण छोडे-छोडावे तेमांतो 'कोलूणपडियाए' एवुं पण पाठमांतो नथी. तमे अनुकंपा निमित्ते छोडे, छोडावे, छोडताने भलो जाणे तेमां प्रायश्चित आवे, एवुं मतने लीधे जुठ केम लगावोछो? इहांतो समचय कह्युं छे के, बांध्या जीवने छोडे, छोडावे अने छोडताने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे. एतो संसारीना जीव बांध्या छे तेने छोडवा आश्री छे. जो अनुकंपा निमित्ते बांधे, बंधावे, बांधताने भलो जाणे तेनुं प्रायश्चित होय तो 'अनुकंपण-छयाए' एवो पाठ जोइए, पण एवो पाठ नथी. वली इहांतो एम कह्युं छे के, त्रणांना, मुंजना, काष्टना, चामडाना, वेतनी छालना अने सुतरना एटली जातना बंधणेकरी बांधे, बंधावे अने बांधताने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे, एवुं कह्युं छे. हवे जुवो! मुंजादिकनां बंधण साधु राखे नहिं. साधुने राखवां कोइ सूत्रमां कह्यां होयतो बतावो. हवे ज्यारे ए बंधणो राखे नहिं त्यारे बांधे क्यांथी? वली साधुने ठेकाणे कोण बांधी जाय, के तेने छोडे; कारणके पशु प्रमुख जीव रहेतो होय त्यां साधुने तो रहेवुं नहिं, एम कह्युं छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन १६ में.तेथी ए पाठ साधुना ठेकाणानो तो भासतो नथी. ए पाठतो साधुजी ग्रह-स्थीना घेर आहारपाणीना अर्थे गोचरीए जाय, त्यां ग्रहस्थी त्रसजीव (गाय, भेंस, बलध, वाछडां प्रमुख) ने बांधतो होय तथा छोडतो होय तेने कहेके, ए तारुं काम हुं करीश, तुं मने अन्नपाणी आप. एवी रीते आहारने अर्थे बांधे छोडे तो चोमासी प्रायश्चित कह्युं, एम भासे छे; पण अनुकंपानो तो पाठज नथी. 'कोलूणपडिया' एवो पाठ छे. करुणा शब्द करीने कहे के, हुं भुखे मरुंछुं तेनुं नाम कोलूणपडिया छे. शाख सूत्र विपाकमां. मृगयालोढीयाना अध्ययनमां गौतमस्वामीए आंधला पुरुषने करुणा शब्दे करी आजीविका करतो दीठो. ते ठेकाणानो अने

आ पाठ एक सरखो छे एम आजीविका अर्थे बाधे छोडे तो प्रायश्चित आवे दीसे छे वली संसारना सर्व कामथी साधु निवर्त्या छे तेथी प्रायश्चित कह्यु छे, पण बीजो कोइ पुरुष पोतानी मेले अनुकंपा करी छोडे छोडावे अने छोडताने भलो जाणे तेने गुण थाय के नहि ? वली गृहस्थी अनुकंपा करी जीवने छोडे छोडावे तेने पाप लागे, एवु कोइ सूत्र, टीका, प्रकरण या प्राचीन ग्रंथमा, क्याय कह्यु होयतो बतावो

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, उपाशकदशामा चूलणिप्पिया पोसह पडिमामा माताने बचाववा उठया त्यारे माताए कह्यु के, हे पुत्र ! तमे प्रायश्चित ल्यो जो उगार्या लाभ होय तो प्रायश्चित केम कह्यु ? तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! इहा तो एम कह्यु छे के, देवता चलाववा आव्यो अने चली गया ते अर्धी रातनो समय छे अने कोलाहल शब्द करी अजयणाथी उठया छे ए प्रत्यक्ष विरुद्ध छे, कारण के पोसामां प्रहर रात गया पछी उतावला शब्दे कोलाहल करवो न जोइए, अने कर्यो उतावला अजयणाथी रातना हलफलता उठवुं न जोइए अने उठया थंभो पकड्यो अने मुखथी छोड्या सजोगने आदर्यो ते माटे माताए 'भगपोसए भगनीयमे भगवए' कह्यु, पण एम नथी कह्यु के पोसामां जीव बचावबो नहिं अने माताने वचाववा उठया ते माटे व्रत भाग्यां वली पोसानी करणी मूलव्रत, संवर, निर्जरा ने एकान्त धर्म मोक्ष मार्गनी छे, अने अनुकंपानी करणी शुभ जोगनी पुन्यप्रकृतिनी छे ते व्रतमां कसर लगाडीने काम करवुं न जोइए अभिग्रह खंडीने साधुनी वैयावच पण न करवी, ते दृष्टांते जेम बे साधु छे, तेमा एके काउसग्ग कर्योछे, एवामा गुरु पधार्या हवे गुरुनी सेवा कर्यामा एकान्त लाभ छे, पण काउसग्गवालो तो पोते अधिक गुण आदर्या छे ते माटे सेवा न करे, पण बीजो साधु सेवा करे तेने लाभ जाणे के खोट जाणे ते कहो तेम पोसावालो अनुकंपानी करणी कल्पे तेवी करे पण पोताना त्यागने कसर लगाडीने अनुकंपा न करे, पण बीजो कोइ पुरुष अनुकंपा करे तेने लाभ केम न जाणे ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के " अरणिकश्रावकने

देवता डगाववा आव्यो त्यारे देवताए कह्युं के, हे अरणीक! तारो धर्म मुंक, नहिं तो तारुं वाहाण समुद्रमां डुबावी नांखीश. ए जुओ! जो जीव बचाव्यां लाभ होय तो एटलां माणस उगारवा माटे तेणे धर्म केम न मुक्यो?" तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय! अनुकंपाथकी पोतानो धर्म जे उत्कृष्टो पदार्थ छे ते केम मुंके? जेम कोइ सो पुरुष साधुने आवीने कहे तथा तमनेज कहे के, तमारा माथापर एकवार पाघडी बांधी ल्यो, तथा एकवार साधुपणुं मुंकी द्यो तो अमे सोए जणा दीक्षा लइशुं. तेवारे तमे पाघडी बांधो के नहिं तथा साधपणानो स्वांग छोडो के नहिं? केमके सो जणाने दिक्षा दीधाथी तो धर्म छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "दिक्षा देवराव्यां तो धर्म छे, पण पोतानो धर्म छोडी साधपणुं केम मुंकीए? पोतानुं साधपणुं राखीने धर्म करीए." त्यारे हे देवानुप्रीय! अरणीक श्रावक जीव बचाव्यामां धर्म जाणे छे, पण पोतानो धर्म छोडीने ए अनुकंपा केम करे? वली कोइ स्त्री साधुने कहे के, तुं मुजने भोगव, नहि तो हुं मरीश. ते माटे शुं कोइ पोतानो धर्म मुंकशे? वली कोइ कुलवंत पुरुषने कहे के, तुं गायनुं मांस खाय तो राज्य आपुं; पण ते उत्तम पुरुष पोतानो धर्म कुल संबंधी नथी मुंकतो अने लोक विरुद्ध कार्य नथी करतो. त्यारे अरणीक श्रावक पोतानो धर्म केम मुंकशे? अहियां अनुकंपाने हिंणी नथी जाणता, पण धर्म मुंकवो पडे ते माटे जीवने उगारवा वास्ते धर्म केम मुंके? वली देवताए पण एम नथी कह्युं के, तने जीव छोडाववो कल्पे नहिं. पण मारा केहेवाथी तुं कही दे के, जीवने मत मारो तथा झाझने मत डुबावो एम देवताए केहेवराव्युं होत अने अरणीक श्रावके न कह्युं होत तो तमारुं केहेवुं मलत; पण देवताए एम नथी केहेवराव्युं. देवताए तो धर्म छोडवानुं कह्युं छे. हवे जीवने छोडाव्यां धर्म थाय, ते धर्म तो देवता पेहेलांज छोडावे छे. ते धर्म छोड्याथी बाकी शुं रहे? ते डाह्या हो ते वीचारी जोजो. वली श्रेणीकराजाए अमारपडहो वज-

आ पाठ एक सरखो छे एम आजीविका अर्थे बांधे छोडे तो प्रायश्चित आवे दीसे छे वली संसारना सर्व कामथी साधु निवर्त्या छे तेथी प्रायश्चित कह्यु छे, पण बीजो कोइ पुरुष पोतानी मेले अनुकंपा करी छोडे छोडावे अने छोडताने भलो जाणे तेने गुण थाय के नहि ? वली गृहस्थी अनुकंपा करी जीवने छोडे छोडावे तेने पाप लागे, एवुं कोइ सूत्र, टीका, प्रकरण या प्राचीन ग्रंथमां, क्यांय कह्युं होयतो बतावो

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, उपाशकदशामां चूलणिप्पिया पोसह पडिमामां माताने बचाववा उठया त्यारे माताए कह्युं के, हे पुत्र ! तमे प्रायश्चित ल्यो जो उगार्यां लाभ होय तो प्रायश्चित केम कह्युं ? तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! इहां तो एम कह्यु छे के, देवता चलाववा आव्यो अने चली गया ते अर्धी रातनो समय छे अने कोलाहल शब्द करी अजयणाथी उठया छे ए प्रत्यक्ष विरुद्ध छे, कारण के पोसामां प्रहर रात गया पछी उतावला शब्दे कोलाहल करवो न जोइए, अने कर्यो उतावला अजयणाथी रातना हलफलता उठवुं न जोइए अने उठया थंभो पकड्यो अने मूलथी छोड्या संजोगने आदर्यो ते माटे माताए 'भगपोसए भगनीयमे भगवए' कह्यु, पण एम नथी कह्युं के पोसामां जीव बचाववो नहिं अने माताने बचाववा उठया ते माटे व्रत भाग्या वली पोसानी करणी मूलव्रत, संवर, निर्जरा ने एकान्त धर्म मोक्ष मार्गनी छे, अने अनुकंपानी करणी शुभ जोगनी पुन्यप्रकृतिनी छे ते व्रतमां कसर लगाडीने काम करवुं न जोइए अभिग्रह लेइने साधुनी वैयावच पण न करवी, ते दृष्टांते जेम बे साधु छे, तेमां एके काउसग्ग कर्योछे, एवामां गुरु पधार्या हवे गुरुनी सेवा कर्यामां अकान्त लाभ छे, पण काउसग्गवालो तो पोते अधिक गुण आदर्यो छे ते माटे सेवा न करे, पण बीजो साधु सेवा करे तेने लाभ जाणे के खोट जाणे ते कहो तेम पोसावालो अनुकंपानी करणी कल्पे तेवी करे पण पोताना त्यागने कसर लगाडीने अनुकंपा न करे, पण बीजो कोइ पुरुष अनुकंपा करे तेने लाभ केम न जाणे ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के " अरणिकश्रावकने

देवता डगाववा आव्यो त्यारे देवताए कह्युं के, हे अरणीक! तारो धर्म मुंक, नहिं तो तारुं वाहाण समुद्रमां डुबावी नांखीश. ए जुओ! जो जीव बचाव्यां लाभ होय तो एटलां माणस उगारवा माटे तेणे धर्म केम न मुक्यो?" तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय! अनुकंपाथकी पोतानो धर्म जे उत्कृष्टो पदार्थ छे ते केम मुंके? जेम कोइ सो पुरुष साधुने आवीने कहे तथा तमनेज कहे के, तमारा माथापर एकवार पाघडी बांधी ल्यो, तथा एकवार साधुपणुं मुंकी द्यो तो अमे सोए जण दीक्षा लइशुं. तेवारे तमे पाघडी बांधो के नहिं तथा साधपणानो स्वांग छोडो के नहिं? केमके सो जणाने दिक्षा दीधाथी तो धर्म छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "दिक्षा देवराव्यां तो धर्म छे, पण पोतानो धर्म छोडी साधपणुं केम मुंकीए? पोतानुं साधपणुं राखीने धर्म करीए." त्यारे हे देवानुप्रीय! अरणीक श्रावक जीव बचाव्यामां धर्म जाणे छे, पण पोतानो धर्म छोडीने ए अनुकंपा केम करे? वली कोइ स्त्री साधुने कहे के, तुं मुजने भोगव, नहि तो हुं मरीश. ते माटे शुं कोइ पोतानो धर्म मुंकशे? वली कोइ कुलवंत पुरुषने कहे के, तुं गायनुं मांस खाय तो राज्य आपुं; पण ते उत्तम पुरुष पोतानो धर्म कुल संबंधी नथी मुंकतो अने लोक विरुद्ध कार्य नथी करतो. त्यारे अरणीक श्रावक पोतानो धर्म केम मुंकशे? अहियां अनुकंपाने हिंणी नथी जाणता, पण धर्म मुंकवो पडे ते माटे जीवने उगारवा वास्ते धर्म केम मुंके? वली देवताए पण एम नथी कह्युं के, तने जीव छोडाववो कल्पे नहिं. पण मारा केहेवाथी तुं कही दे के, जीवने मत मारो तथा डाडने मत डुबावो एम देवताए केहेवराव्युं होत अने अरणीक श्रावके न कह्युं होत तो तमारुं केहेवुं मलत; पण देवताए एम नथी केहेवराव्युं. देवताए तो धर्म छोडवानुं कह्युं छे. हवे जीवने छोडाव्यां धर्म थाय, ते धर्म तो देवता पेहेलाज छोडावे छे. ते धर्म छोड्याथी बाकी शुं रहे? ते डाह्या हो ते वीचारी जोजो. वली श्रेणीकराजाए अमारपडहो वज-

मान्यो तथा जीवनी हिंसा टलावी कही ठे शास्त्र सूत्र उपाशक अध्ययन आठमें, माहाशतकजीना अधिकारमा ते पाठ —

ततेण सा रेवइ गाहावइणी मसलोलुया मसएहिं मुछिया जाव अझोववणा वहू विहेहिं मसेहिय सोल्लेहिय तलि एहिय जविएहि सुरच महूच मेरगच मवच सिंधुच पसणाच आसाएमाणि २ विहरइ तएण रायगिहे नयरे अणायाकयाइ अमायाए घुठेयावि होत्था. तएण सा रेवइ मसलोलुया मसमुछिया कोलघरिए पुरिसे सद्दावेई २ एवंव तुझे देवा० । मम कोलघरिए हिंतो वयहिंतो कल्ला काल्लिं उवे २ गोणपोयए उद्दवेह २ मम उवणेह तएणते कोलघरिया पुरिसा रेवइ गाहावइणीए तहत्ति एयमठ विणएण पडिसुणंति २ रेवइए गाहावयणिए कोलघरिए हिंतो कल्लाकल्लिं दुवे २ गोणपोयए वहेइ २ रेवइए गा हावइणीए उवणेइ तएण सा रेवइ तेहिं गोमसेहिं सोल्ले हिय ४ सुरच ४ असाएमाणी २ विहरइ ॥

अर्थ —त० तेवारे सा० ते रे० रेवती गा० गाथापत्नि निर्जयपणे सोंको मार्या पछी म० मसनी लोलपी म०मु० मासनी मुर्छित जा० यावत् अ० अत्यत एकरूपणाथी ते घ० घणा वि० प्रकारना म० मासना भेदकरी सो० सुलादिक प्रमुख त० तलीने भ० भुंजीने साथ सु० सुरा म० मदिरा पान से मे० गोल धावडीनो नीपन्यो, म० मासीनुं मध विशेष सिं० सिंधु साकि प्रमुख खजुरनो रस विशेष अने प० घडद्राक्षादि मदिरा आ० आस्वादे, स्वाद लेती वि० विचरे त० तेवार पछी रा० राजगृह न० नगरे अ० पपदा प्रस्तावे अ० अमारी (कोइ जीवने मारवो नही एवी) घोषणा राजाए प्रवर्तावी त० तेवारे सा० ते रे० रेवती गाथापत्नि मंसलो०

मांसनी लोलपी मंसमु० मांसनी मुर्छित थइथकी को० पिहरना घरना प्रतीतकार्या पु० पुरुषने स० तेडावे, तेडावीने ए० एम कहेः—तु० तमे दे० हे देवानुप्रीय ! ए प्रकारे म०को० मारा पिहरना घरथी व० गोकलव्रजथी क० दीन दीन प्रत्ये दु० बबे गो० गायना पो० वाछडा उ० मारी मारीने म० मुजने उ० प्रछन्नपणे आणी द्यो. त० तेवारे ते को०पु० पिहरना मनुष्य रे० रेवती गा० गाथापत्निना वचन त० तहत करी ए० ए वचन साचां करीने वि० विनय करीने प०ि० सांभले, सांभलीने रे०गा० रेवती गाथापत्निना को० पिहरना घरथी प्रभात वेलाए दु० बबे गो० गायना वाछडानो व० वध करे, करीने रे०गा० रेवती गाथापत्निने उ० आणीने आपे. त० तेवारे सा० ते रे० रेवती गाथापत्नि ते० ते गो० मांसनी लोलपी सुलादिकनी गृद्धि सु० सुरा मदीरा पाननो अ० स्वाद लेती थकी वि० विचरे छे.

भावार्थः—हवे जुओ ! श्रेणीकराजाए अमारपडो वजडाव्यो ते गुण खाते के अवगुण खाते ? ए करणी शुभ के अशुभ ? ए शावास्ते अमारपडो वजडाव्यो ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, एतो राजनीति छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जो राजनीति होय तो राजनीतिना पालणहार जेटला राजा छे ते सर्वने राजनीति एवीज जोइए. राजनीति तो सुयगडांगसूत्रना १८ मा अध्ययने अधर्म-पक्षमां वखाणी छे. वली उववाइसूत्रमां कोणीकनी राजनीति वखाणी. वली जंबुद्वीपपन्नंतिमां भरतेश्वरनी राजनीति वखाणी, त्यां घणो विस्तार छे; पण अमारपडो वजडाव्यो कह्युं नथी. हवे ए कया शास्त्रमां राजनीति कही छे ते कहो. कारण के राजनीति तो राज्य जमावे, वेरीने मारे, अने संग्रामे जय पामे तेने कहीयें. वली ठाणायांग ठाणे त्रीजे 'सामे दंडे भेदे तिविहा अथ्थ जोणि पं. तं.' वली रायप्रशेणीमां चित्तसार्थीना गुण वखाण्या, त्यां पण अमारपडो वजडाव्यो कह्युं नथी. तेमज ज्ञातामां अभयकुमारना गुण वखाण्या, त्यां पण अमारपडो वजडाव्यो कह्युं नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय ! ए राजनीति कया सूत्रमां कही छे ते कहो. ते

वारे तेरापंथी कहे छे के, जिनमार्गमा अमारपडो वजडाववानो अने जीव छगारवानो आचार होय तो, बीजा कोइ राजाए ए काम केम न कर्युं ? तेनो उत्तर —

हे देवानुप्रीय ! दसासुतखधमा दसमे अध्ययने नव नियाणना नाम कह्या, त्या श्रेणीकराजाए गाम नगरमा स्थानक आश्री ढंढेरो फे रव्यो छे के, घर, हाट, वखार, पर्वस्थान धातुना ठाम, सोनानी खाण इत्यादिक सूत्रमा स्थानकना घणा नाम कह्या छे, ते स्थानकनी आज्ञा देवरावी के, हे भाइ! जेने जग्या होय ते वीरप्रभुना साधुने रेहेवा आपजो. हवे जुओ ! श्रेणीकराजाए स्थानक आश्री ढंढेरो फेरव्यो, तेम बीजा कोइ पण राजाए ए काम नथी कर्युं ए काम जिनमार्गी साधुना रागीनुं छे के साधुना द्वेषी मिथ्यात्वीनुं छे ते कहो वली अवरूश्रावक आधाकर्मी प्रमुख दोष टाळतो हतो, अने बीजो कोइ श्रावक पडिमा विना आधाकर्मी दोष टाळतो कह्यो नथी हवे कहो ! अवरूश्रावके ए काम रुडुं कर्युं के भुंडुं कर्युं ? वली दिक्षानी दलाली श्री कृष्णमाहाराजे करी अने बीजा कोइए नथी करी ते रूडी करी के भुंडी करी ते कहो हे देवानुप्रीय ! एम केम कहोछो के, जीव बचाव्या तथा अमारपडो वजडाव्या धर्म होयतो बीजा राजाए केम न फेरव्यो ? जेणे फरव्यो तेनो पहाल्यो तेने केवा फल लाग्या ते कहो ढंढेरो फेरव्यो अने साधुने स्थानकनी आज्ञा देवरावी, तेना फल भलां के भुंडा ? ए करणी शुभ के अशुभ ? हे देवानुप्रीय ! आगलतो श्रेणीकराजाए आहेडे खेलतां गर्भवती हरणी विंधी तेथी नर्कनुं आवखुं बंधायुं, एवुं टीका तथा प्रकरणमा कह्युं छे, अने पछी अनाथी-मुनीराजकने समकित पाम्या ते उत्तराध्ययनना २० मा अध्ययनमां अधीकार छे पछी राज ग्रही नगरीमा तेमणे अमारपडो वजडाव्यो के 'कोइ जीव मारवा पामे नहिं' एवो सातमा अंगमां अधीकार छे ए काम समकित पामीने ना माटे कर्युं ते कहो एवे पूर्वोक्त धर्मीरामाने जगत धन धन

कहे, पण त्रण पक्षवाला ठुंमो जाणे. तेमां एक तो मांसनो गृद्धि, बीजो कसाइ, अने त्रीजो जेनी श्रद्धा जीव बचाववामां पाप मानवानी होय ते निन्हव. ए त्रण निर्दय, धर्मीने ठुंमो जाणे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "सूत्रमां ढंढेरो फेरव्यो कह्युं छे, पण श्रेणीकने धर्म थयुं एम नथी कह्युं. जे धर्म कहे तेने जुठ लागे छे." तेनो उत्तर

हे देवानुप्रीय ! सूत्रमां ढंढेरो फेरव्यो कह्युं छे, पण पाप लाग्युं तो कोइ सूत्रमां कह्युं नथी. तमे श्रेणीक राजाने पाप लाग्युं कहीने जुठ केम बोलो छो ? श्रेणीक राजाने जेवां फल लाग्यां छे तेवांज फल बीजो कोइ दयावंत, जीवने बचावशे तेने पण लागशे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, एम जबराइथी जीव बचाव्यां धर्म थाय तो, इंद्र माहाराज चौद राजलोकमां अमारपडो वजडावीने जीवदया पलावे अने माछलांनां मोंढां बंध करी दे, पण धर्म नथी. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! आ अवसरमां जैन धर्म चालणी चालणी थइ रह्यो छे. सीमंधरस्वामीने इंद्र पुछीने कहे तो घणा जीवने मिथ्यात्व मटे, संदेह टले. एमां तो तमे पण धर्म कहो छो. ए तो इंद्रकने केहेवरावबुं जोइए ? एमां तो पाप नथी ? पण ते केम नथी केहेता ? तमे एवा कुहेत केम मेलवो छो ? वली तेरापंथी कहे छे के "मार्गमां बेंइंद्रियादिक त्रसजीव पड्या छे, ते देखीने तडकेथी लइने छांयडे मुके अने तेनी अनुकंपा करे तो दस प्रकारनो असंजम लागे. एम ठाणायांगमां कह्युं छे." एवुं सूत्रनुं नाम जुठुं ले छे. ते पाठ.

पंचिंदियाणं जीवाणं असमारंभमाणस्स दसविहे संजमे कज्जइ तं० सोयमयाउ सोखाउ अववरोवेत्ता भवइ सोयमएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवई एवं जाव फासामत्तेणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ एवं असंजमोवि भाणियव्वो.

अर्थः—हवे पंचेंद्रि आश्री संजम असंजम कहे छेः—पं० पंचेंद्रि जीवने अ० असमारंभ करतां थकां द० दस प्रकार सं० संजम क० लागे तं० ते कहे छेः—सो० कानना सुखथी अ० अलगो न करे, सो० श्रोतें-

वारे तेरापंथी कहे छे के, जिनमार्गमां अमारपडो वजडाववानो अने जीव छगारवानो आचार होय तो, बीजा कोइ राजाए ए काम केम न कर्युं ? तेनो उत्तर —

हे देवानुप्रीय ! दसासुतखंधमा दसमे अध्ययने नव नियाणना भाव कह्या, त्या श्रेणीकराजाए गाम नगरमा स्थानक आश्री ढंढेरो फे रव्यो छे के, घर, हाट, वखार, पर्वस्थान धातुना ठाम, सोनानी खाण इत्यादिक सूत्रमां स्थानकना घणा नाम कह्या छे, ते स्थानकनी आज्ञा देवरावी के, हे भाइ ! जेने जग्या होय ते वीरप्रभुना साधुने रेहेवा आपजो. हवे जुओ ! श्रेणीकराजाए स्थानक आश्री ढंढेरो फेरव्यो, तेम बीजा कोइ पण राजाए ए काम नथी कर्युं ए काम जिनमार्गी साधुना रागीनुं छे के साधुना द्वेषी मिथ्यात्वीनु छे ते कहो वली अंबडश्रावक आधाकर्मी प्रमुख दोष टाळतो हतो, अने बीजो कोइ श्रावक पडिमा विना आधाकर्मी दोष टाळतो कह्यो नथी हवे कहो ! अंबडश्रावके ए काम रुडु कर्युं के भुंडु कर्युं ? वली दिक्षानी दलाली श्री कृष्णमाहाराजे करी अने बीजा कोइए नथी करी ते रुडी करी के भुंडी करी ते कहो हे देवानुप्रीय ! एम केम कहोछो के, जीव बचाव्यां तथा अमारपडो वजडाव्या धर्म होयतो बीजा राजाए केम न फेरव्यो ? जेणे फेरव्यो तेनो पडछ्यो तेने केवा फल लाग्या ते कहो ढंढेरो फेरव्यो अने साधुने स्थानकनी आज्ञा देवरावी, तेना फल जखां के भुंडा ? ए करणी शुभ के अशुभ ? हे देवानुप्रीय ! आगळतो श्रेणीकराजाए आहेडे खेलतां गर्भवती हरणी विंधी तेथी नर्कनु आउखुं बधायुं, एवु टीका तथा प्रकरणमा कह्यु छे, अने पछी अनाथी-मुनीराजथने समकित पाम्या ते उत्तराध्ययनना २० मा अध्ययनमा अधीकार छे. पछी राजगृही नगरीमा तेमणे अमारपडो वजडाव्यो के 'कोइ जीव मारवा पामे नहिं ' एवो सातमा अंगमा अधीकार छे ए काम समकित पामीने शा माटे कर्युं ते कहो हवे पूर्वोक्त धर्मीराजाने जगत धन धन

सेइ सुखना ठेकाणे मुंके तेने समारंभ केम लागे ? एवुं मतना लीधे जुठ केम बोलोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " इरियावहि पडिक्कमे छे तेवारे ठाणाउठाणा संकामियानो बोल आलोवीए छीए, तेमां जीवनी अनुकंपा करतां ठाणाउठाणा करे ते पण भलो आठयो. एमां लाभ क्यांथी ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एतो अभिहया वत्तिया लेसियाथी मांडी जाव जीवीयाउ ववरोविया सुधी हिंसाना बोल छे. चढती चढती हिंसा छे. पंथे प्रमादने वशे कोइ जीव विराध्यो होय ते आलोववुं. 'जेमे जीवा विराहिया' एवो पाठ छे, पण 'जेमे जीवा उगारीया' एवो पाठ नथी. हे बालमीत्रो ! ए दस बोलतो हिंसामां छे, अने प्राणीनी अनुकंपा तो प्रत्यक्ष दयामां छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के " अभयदाननो लाभ घणो छे. ते तो साधु त्रण करण ने नव जोगेकरी माहाणो माहाणो शब्द करी चुक्या, अने अनुकंपानो लाभ थोडो छे ते शा वास्ते करे" ? तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! सझायथकी ध्यानमां लाभ घणो छे ते माटे शुं ? ध्यान करीने सझाय मुंकी देशे? थोडा घणा लाभनुं शुं कारण छे. लाभ तो पोताना प्रणाम उपर छे, पण अहो अनुकंपा-रहित ! जेने जेवो कल्प छे तेवी करणी न करे तो तेनुं अभयदान पण कर्म फल देछे, संसारमां रुलवानो हेतु छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के " जीव उगार्ये लाभ जाणोछो, त्यारे तमे ठामठामना जीवडा केम नथी पुंजता ? धर्मपुन्य तो तमारे पण करवुं छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अमारे धर्म करवो ते तो खरो, पण कल्प प्रमाणे थाय. वली धर्म-उपदेश देवामांतो तमे पण लाभ जाणोछो. त्यारे तमे मेला उत्सवमां जइने, वेश्याना पाडामां जइने अने घेर घेर जइने उपदेश केम नथी करता ? एमां तो एकांत धर्म तमे पण जाणो छो. तो ते प्रमाणे केम नथी करता. तेवारे तेरापंथी कहे छे के " उपदेश देवामां तथा सझाय करवामां एकांत धर्म छे, पण कल्प प्रमाणे थाय. " त्यारे हे देवानुप्रीय ! जेम ए कल्प प्रमाणे थाय तेम जीव उगारवो पण कल्प प्रमाणे थाय. जेम राजानो मेहेतो मुसदी तथा कोठीवाल पुन्यवंतजीव मजुरी न करे, पण निर्धन मजुरी करी बे टका,

द्रिना दु:खने विषे अ० जोके नहिं ए० एमज जा० यावत् फा० स्पर्शना दु:खने विषे अ० जोके नहिं ए० एम अ० असजम पण जा० कहेवो.

भावार्थ —हवे जुओ! अहिंया तो एम कह्युं छे के, पांच इंद्रिना सुखथी विछोके अने पांच इंद्रिना दु:खमा जोके ते पण समारंभ करतो थको होय तेने असजम लागे हवे समारम्भ नाम तो मार्यानुं छे शास्त्र सूत्र दस वैकालिक अध्ययन छठे ते पाठ लखीये छीए —

पुढविकायंवि हिंसंतो हिंसइउ तयस्सिए तसेय विविहे पाणे चक्खुसेय अचक्खुसे १७ तम्हाएयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइ वढ्ढणं पुढविकाय समारम्भं जाव जीवाए वज्जए १८॥

अर्थ —पु० पृथ्वीकायनी हिं० हिंसा करतो थको हिं० हिंसा करे त० तेनी नेश्राए जे जीव त० त्रस वि० विविध प्रकारना पा० प्राणी प्रत्ये च० चक्षु गोचर (बादर) अ० सुक्ष्म त० ते जणी ए० एहवुं वि० जाणीने दो० ए दोश दु० दुर्गतीनो व० वधारणहार पु० पृथ्वीकायनो स० समारंभ (हणवुं) जा० जाव जीव सुधी व० छोके ॥

भावार्थः—ए जुओ! सूत्रमा शास्त्र हणयानुं नाम तथा दुःख दीधानुं नाम समारम्भ कह्युं छे, पण सुख निमित्ते अनुकंपाने हेते अम्बना मुके, तेने समारम्भ लागे एवुं कया सूत्रमा कह्युं छे ते बतावो वली पडि- लेहणा करतां तथा उपाश्रय पुंजता घणा जीव देखी वेगला परठे, कचरो कादी वेगलो परठे तेने समारम्भ केम लागशे? जो समारंभ लागे तो तमे ए काम केम करोछो? वली साधु सूखे वेगा छे तेने कोइ श्रावक आवीने कहे के, हे स्वामी! तमने फलाणा गामे तमारा गुरुए तेडाव्या छे, तेने समारम्भ केम लागशे? वली साधुना शरीरे दुःख जाणी श्रावक औषध आपे, तेथी साधुने अतिसारादिक घणुं दु:ख उपजे पण रोग जाय हवे ए दातारने औषधनो अशाता दीधां माटे अशाता थाय के शाता वेदनी थाय ते कहो हे देवानुप्रीय! अनुकंपाकरी दुःखना छेकावेची

लेइ सुखना ठेकाणे मुंके तेने समारंभ केम लागे ? एवुं मतना लीधे जुठ केम बोलोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " इरियावहि पडिक्कमे छे तेवारे गणाउगणा संकामियानो बोल आलोवीए छीए, तेमां जीवनी अनुकंपा करतां गणानगणा करे ते पण भेलो आव्यो. एमां लाभ क्यांथी ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एतो अभिहया वत्तिया लेसियाथी मांडी जाव जीवीयाउ ववरोविया सुधी हिंसाना बोल छे. चढती चढती हिंसा छे. पंथे प्रमादने वशे कोइ जीव विराध्यो होय ते आलोउंवुं. 'जेमे जीवा विराहिया' एवो पाठ छे, पण 'जेमे जीवा उगारीया' एवो पाठ नथी. हे बालमीत्रो ! ए दस बोलतो हिंसामां छे, अने प्राणीनी अनुकंपा तो प्रत्यक्ष दयामां छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के " अभयदाननो लाभ घणो छे. ते तो साधु त्रण करण ने नव जोगेकरी माहाणो माहाणो शब्द करी चुक्या, अने अनुकंपानो लाभ थोडो छे ते शा वास्ते करे " ? तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! सझायथकी ध्यानमां लाभ घणो छे ते माटे शुं ? ध्यान करीने सझाय मुंकी देशे? थोडा घणा लाभनुं शुं कारण छे. लाभ तो पोताना प्रणाम उपर छे, पण अहो अनुकंपा-रहित ! जेने जेवो कल्प छे तेवी करणी न करे तो तेनुं अभयदान पण कर्म फल देछे, संसारमां रुलवानो हेतु छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के " जीव उगार्ये लाभ जाणोछो, त्यारे तमे गामगामना जीवडा केम नथी पुंजता ? धर्मपुन्य तो तमारे पण करवुं छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अमारे धर्म करवो ते तो खरो, पण कल्प प्रमाणे थाय. वली धर्म-उपदेश देवामांतो तमे पण लाभ जाणोछो. त्यारे तमे मेला उत्सवमां जइने, वेश्याना पाडामां जइने अने घेर घेर जइने उपदेश केम नथी करता ? एमां तो एकांत धर्म तमे पण जाणो छो. तो ते प्रमाणे केम नथी करता. तेवारे तेरापंथी कहे छे के " उपदेश देवामां तथा सझाय करवामां एकांत धर्म छे, पण कल्प प्रमाणे थाय. " त्यारे हे देवानुप्रीय ! जेम ए कल्प प्रमाणे थाय तेम जीव उगारवो पण कल्प प्रमाणे थाय. जेम राजानो मेहेतो मुसदी तथा कोठीवाल पुन्यवंतजीव मजुरी न करे, पण निर्धन मजुरी करी बे टका

एकान्त पक्षे न बोलवी, ते माटे ना कह्युं छे सहेज स्वभावे कोइ भावीने पुछे के, हे स्वामी! चोरने मार्यानुं शु फल छे? तेवारे साधु हिंसानां फल कही देखाडे, अने चोरने छोडावबा छगारवाना फल पुछे त्यारे भला फल कही देखाडे वली तमारा मतमा तो, चोरने मारे अने चोरने छगारे ए बेहुना फल सरखा छे त्यारे कोइ साधुने भावीने कहे के, हे स्वामी! मुजने चोर मारवाना पचखाण करावो, तेवारे साधु पचखाण सुखे करावे, पण कोइ कहे के, मुजने चोर छगारवाना पचखाण करावो,त्यारे साधु न करावे हवे जो बेउ वातोमा सरखा गुण अवगुण होय तो छगारवाना पचखाण केम न करावे? एम हैयाथी विचारी जुओ, तेवारे तेरापथी कहे छे के "अनुकपा कर्याथी धर्म होय तो नमीराज रुषीश्वरने इंद्रे कह्यु के, मीथीला नगरी बले छे, तमारी आखमा अमृत वसे छे, तमे सामु जुओ तो बलती रही जाय तेवारे अनुकपा कीधां धर्म जाणे तो नमीराजे सामु केम न जोयु?" एवु एकान्त जुठ बोले छे, कारणके उत्तराध्ययनजीमां तो नीचे मुजब कह्यु छे ते अध्ययन ए मानी गाथा १२, १३, १४, १५, १६ —

एस अग्गीय वाऊय, एय डज्झइ मदिर,
भयव अंतेउर तेण, कीसण नाव पिस्कह ॥ १२ ॥
एयमठं निसामित्ता, हेउ कारण चोइओ,
तओ नमिराय रिषि, देविंद इण मब्बवी ॥ १३ ॥
सुह वसामो जीवामो, जेसिंमो नत्थि किंचण,
मिहिलाए डज्झमाणीए, नमे डज्झइ किंचण ॥ १४ ॥
चत्त पुत्ते कलत्तस्स, निव्वा वारस्स भिक्खुणो,
पिय नविज्जए किंच, अप्पियं पि न विज्जए ॥ १५ ॥
बहु खु सुणिणो भद्द, अणगारस्स भिक्खुणो,
सघउ विप्प मुक्कस्स, एगत मणु पस्सउ ॥१६ ॥

अर्थः—ए० ए प्रत्यक्ष अं० अग्नि वा० वायराथी ए० ए रू० बले छे तमारां मं० घर न्न० हे न्नगवान! अ० अंतःपुर तमारां, छतां की० शा माटे ना० सामुं जोता नथी? ॥१२॥ ए० ए पूर्वोक्तार्थ नि० सांन्न-ळीने जे पोताना आत्मानुं होय ते रुमी परे राखवुं. घरथी तारुं निक-ळवुं ते परजीवने छुःखनो हेतु अने छुःखनुं कारण थयुं एवा हे० हेतुना कारणे चो० प्रेर्योथको त० त्यार पछी न० नमीराजऋषि दे० देवेंद्र सक्रेंद्र प्रत्ये इ० म० एम बोल्या. ॥१३॥ सु० जेम सुख थाय तेम व० हुं वसुंछुं, जी० जीवुंछुं, जे० जे माहारी न० नथी किं० कांइ अल्प मात्र वस्तु. मि० मिथीला नगरी रू० बलतांथकां न० नथी माहारुं रू० बलतुं किं० अल्प मात्र पण.॥१४॥ च० छांरुया पु० पुत्र क० स्त्री जे यतिए, तेने नि० सर्व व्यापार रहित न्नि० एवा साधुने पि० प्रीयकारी वल्लन्न न० नथी किं० कांइ थोकुं पण, अ० अप्रीयकारी पण नथी कांइ. ॥१५॥ ब० घणुं खु० निश्चे मु० साधुने न्न० श्रेय सुख छे. अ० घर रहित अणगार न्नि० साधु स० सर्व (बाह्य धनादि, अन्यंतर कषायादिक) परिग्रहथी वि० विशेष मु० मुकाणा छे, अने ए० हुं एकलो छुं, एवुं एकत्वपणुं म० देखतो थको विचरे ते साधुने सुख छे. ॥१६॥

न्नावार्थः—हवे जुओ! इहांतो एम नथी कह्युं के, तमारी आंखोमां अमृत वर्से छे, तेथी सामुं जुओ तो बलती रही जाय. इहांतो इंद्रे परिक्षा करी छे के, मोहनी-कर्म जीत्यां के नथी जीत्यां? इहां अनुकंपानुं नाम पण क्यां छे? हे स्वामी! तमारुं अंतःपुर बलेछे माटे तमे सामुं केम नथी जोता? इहां मोहनी उपजावी छे. त्यारे स्वामी बोल्या के, मेंतो मुक्यां छे, हुं तो सुखे वसुछुं, मारे बलवानुं कांइ नथी; पण इंद्रे एम नथी कह्युं के, जुओ तो नगरी बलती रहे. जो इंद्र एम कह्युं होय तो नमीराजाए एम केहेवुं जोइए के, हे न्नाइ! एवी अनुकंपा मुजने करवी कल्पे नहिं. एम कह्युं होततो अनुकंपानो प्रश्न थात, पण इंद्रे एम नथी कह्युं. इंद्रेतो मोहनीनी परिक्षा निमित्ते पुछ्युं छे. वली आगल मेहेल, कोट तथा दरवाजा करावंवाना अने धन न्नंकार न्नरावंवाना प्रश्न

लावे तेने लाज्ञ जाणे के नाहिं तेम साधु तथा सामायक पोसामा वे ठेलो श्रावक कल्पे तेवी अनुकपा करे सझाय ध्यानरुप घणो लाज गे कीने अकल्पनीक काम जाणे तो, थोरा लाजनुं अनुकपानु काम न करे, पण कोइ सवर सामायक विना नवरो वेठो होय ते, जीवनी अनुकपारुप थोरो लाज कमायतो तेने लाज्ञ केम नाहिं थशे? वली जेम सामायक पोसामा वेठा तो साधुने पण दान देवु कोइ सूत्रमा चाल्यु नथी पण खुल्लो दान दे तेने ज्ञलो जाणे के नाहिं? तेम पूर्वोक्त साधु श्रावक कल्पे तेवी अनुकपा करे, पण खुल्लो अनुकपा करे तेने ज्ञलो जाणेज

वली तेरापथी कहे ठे के "जीवने उगार्ये रक्षा कर्ये लाज्ञ थाय तो, गजसुकमाल परिमा साधवा गया, ते ज्ञगवत जाणे ठे के, एने सोमील ब्राह्मण परिसह देसे त्यारे एनी अनुकपा माटे वे साधु रक्षा करवा केम न मोकल्या?" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! प्रज्ञुनी तो गज सुकमाल उपर अनत ज्ञावदया हती, पण एम रक्षा कर्याथी वारमी परिमा सधाय नाहिं अने मुक्तिए जवाय पण नाहिं वली प्रज्ञुए तो गजसुकमालने अनत सुखरुप मुक्ति आपी ठे वे साधु साने काजे मुके वगर साधु मुक्यां पण अनती दया रक्षा करी कहीयें जेम मावीत्र पोताना पुत्रने वलात्कारे करवु श्रोषध खवराये, तेथी ते मोंढेथी घणा शब्द करे ए श्रोषध खवरावता थका देखावमा तो माता पीता अशाता वे ठे, एम देखीए ठीए, पण परमार्थे मावीत्र पुत्रना हितकारी ठे के अहितकारी ठे? जेवी मावीत्रनी दृष्टि पुत्र उपर, तेवी नेमीनाथ ज्ञगवतनी दृष्टि गजसुकमाल उपर हितनी हती वली तेरापथी कहे ठे के "चोर, सिंह अने परदारा लपटने मारता देखीने, एने मारो अगर मत मारो एम न कहे त्यारे जुठने! मत मारो पण साधु न कहे, त्यारे उगारवो क्यां रह्यु?" तेना उत्तरमा सुयगडाग श्रुतस्कध बीजे अध्ययन ५ में ते गाथा ३१ मी लखीए ठीए —

असेसे अक्खयनावि, सव्व दुक्खे त्तिवापुणो,
वज्झापाणा अवज्झत्ति, इति वाय णणिसरे ॥ ३१ ॥

अर्थः—हवे अनेरा वचन आश्री संजम कहे छे. अ० जगमां समस्त वस्तु घट पटादिक अखु० संख्याने अभिप्राये (नित्य) सास्वती छे, एवुं वचन न बोले. वि० अनित्यपणुं पण न बोले. स० सघलो जगत दुःखी छे एम पण न बोले; कारण के चारित्रादिक प्रणमवाथी सुख पण दीसे छे. यदुक्तं. 'तण संथार णिवणोवि मुणिवरोवि भट्टराग मयमोहो जंपावइ मुत्तिसुहं कतोतं चक्कवट्टीवि.' व० विणासवा योग्य चोर परदारागामि आदिक छे अथवा अ० अवध्य अविणासवा योग्य छे एवुं पण न कहे. जो कहे तो तेना कर्मनी अनुमोदना लागे. एणी परे सिंघ, व्याघ्र, मंजारादिक हिंसक जीव अनेरा जीवनी घात करवा उद्यमवंत देखी साधु मध्यस्थपणुं अवलंबी इ० ए वे भाषा (अनेराने अप्रतीत कारणी छे माटे) न बोले.

भावार्थः—हवे जुओ! इहां तो एकान्त पक्षनी ना कही छे. लोकने एकान्त सास्वतो पण न कहेवो, तेम अशास्वतो पण न कहेवो. आ लोक एकान्त सुखी छे एम पण न केहेवुं, तेम दुःखी छे एम पण न केहेवुं. आ चोर तथा परदारागामिक मारवा योग्य छे अथवा नथी मारवा योग्य, एवुं एकान्त वचन न बोलवुं. जो 'ए मारवा योग्य छे, माहा दुष्ट छे' एम कहे तो तेना प्राण जाय, अने 'तेने मत मारो, ए मारवा योग्य नथी, भलो आदमी छे' एम कहे तो ए लोक विरुद्ध छे; कारण के ए चोर मुक्यो थको वली चोरी प्रमुख अकार्य करे. तेथी लोक कहे के, ए साधुनो उपगार छे. एम चोर जारना पक्षी ठरावे. ते माटे साधुए 'मारो, मत मारो' कांइ पण न कहेवुं. ए रीते सुयगडांगना २१ मा अध्ययनमां सर्व बोल एकान्त पक्षे बोलवा आश्री ना कही छे. 'आधाकर्मी आहारादिक भोगवे तेने कर्म लागे' एवुं वचन एकान्त न बोलवुं; 'तेम कर्म न लागे' एवुं पण वचन एकान्त न बोलवुं. इत्यादिक वचन एकान्त पक्षे बोलवा आश्री ना कही छे. तेम ए पण वचन एकान्त पक्ष आश्री ना कह्युं छे; पण एम नथी कह्युं के "जीव बचाव्याथी पाप लागे ते माटे 'मारो, मत मारो' न केहेवुं." ए तो छद्मस्थने निश्चेकारी भाषा

एकान्त पक्षे न बोलवी, ते माटे ना कह्यु छे स्हेज स्वभावे कोइ आ-वीने पुछे के, हे स्वामी ! चोरने मार्यानुं शु फल छे ? तेवारे साधु हिं-साना फल कही देखाडे, अने चोरने छोडावया ठगारथाना फल पुछे त्यारे भला फल कही देखाडे वली तमारा मतमा तो, चोरने मारे अने चोरने ठगारे ए बेहुना फल सरखा छे त्यारे कोइ साधुने आवीने कहे के, हे स्वामी! मुजने चोर मारवाना पचखाण करावो, तेवारे साधु पचखाण सुखे करावे, पण कोइ कहे के, मुजने चोर ठगारवाना पचखाण करावो,त्यारे साधु न करावे हवे जो बेउ वातोमा सरखा गुण अवगुण होय तो ठ गारवाना पचखाण केम न करावे ? एम हैयाथी विचारी जुओ, तेवारे तेरापथी कहे छे के "अनुकपा कर्याथी धर्म होय तो नमीराज रुषीअ-रने इंद्रे कह्युं के, मीथीला नगरी बले छे, तमारी आलमा अन्तेउर बले छे, तमे साधु जुओ तो बलती रही जाय तेवारे अनुकपा कीधां धर्म जाणे तो नमीराजे साधु केम न जोयु ?" एवु एकान्त जुठ बोले छे, कारणके उत्तराध्ययनजीमा तो नीचे मुजब कह्यु छे ते अध्ययन ए मानी गाथा १२, १३, १४, १५, १६ —

एस अग्गीय वाऊय, एय डज्झइ मदिर,
भयव अतेउर तेण, कीसण नाव पिस्कह. ॥ १२ ॥
एयमठ निसामित्ता, हेउ कारण चोइओ,
तओ नमिराय रिषि, देविंद इण मबवी ॥ १३ ॥
सुह वसामो जीवामो, जेसिंमो नत्थि किंचण,
मिहिलाए डज्झमाणीए, नमे डज्झइ किंचण ॥ १४ ॥
चत्त पुत्ते कलत्तस्स, निब्वा वारस्स भिक्खुणो,
पिय नविज्जए किंच, अप्पिय पि न विज्जए ॥ १५ ॥
बहु खु मुणिणो भद्द, अणगारस्स भिक्खुणो,
सबओ विप्प मुक्कस्स, एगत मणु पस्सओ ॥ १६ ॥

अर्थः—ए० ए प्रत्यक्ष अं० अग्नि वा० वायराथी ए० ए रू० बले छे तमारां मं० घर भ० हे भगवान! अ० अंतःपुर तमारां, छतां की० शा माटे ना० सामुं जोता नथी? ॥१२॥ ए० ए पूर्वोक्तार्थ नि० सांभलीने जे पोताना आत्मानुं होय ते रुडी परे राखवुं. घरथी तारुं निकलवुं ते परजीवने दुःखनो हेतु अने दुःखनुं कारण थयुं एवा हे० हेतुना कारणे चो० प्रेर्योथको त० त्यार पछी न० नमीराजऋषि दे० देवेंद्र सक्रेंद्र प्रत्ये इ० म० एम बोल्या. ॥१३॥ सु० जेम सुख थाय तेम व० हुं वसुंछुं, जी० जीवुंछुं, जे० जे माहारी न० नथी किं० कांइ अल्प मात्र वस्तु. मि० मिथीला नगरी रू० बलतांथकां न० नथी माहारुं रू० बलतुं किं० अल्प मात्र पण.॥१४॥ च० छांडया पु० पुत्र क० स्त्री जे यतिए, तेने नि० सर्व व्यापार रहित भि० एवा साधुने पि० प्रीयकारी वल्लभ न० नथी किं० कांइ थोडुं पण, अ० अप्रीयकारी पण नथी कांइ. ॥१५॥ ब० घणुं खु० निश्चे मु० साधुने भ० श्रेय सुख छे. अ० घर रहित अणगार भि० साधु स० सर्व (बाह्य धनादि, अभ्यंतर कषायादिक) परिग्रहथी वि० विशेष मु० मुकाणा छे, अने ए० हुं एकलो छुं, एवुं एकत्वपणुं म० देखतोथको विचरे ते साधुने सुख छे. ॥१६॥

भावार्थः—हवे जुओ! इहांतो एम नथी कह्युं के, तमारी आंखोमां अमृत वर्से छे, तेथी सामुं जुओ तो बलती रही जाय. इहांतो इंद्रे परिक्षा करी छे के, मोहनी-कर्म जीत्यां के नथी जीत्यां? इहां अनुकंपानुं नाम पण क्यां छे? हे स्वामी! तमारुं अंतःपुर बलेछे माटे तमे सामुं केम नथी जोता? इहां मोहनी उपजावी छे. त्यारे स्वामी बोल्या के, मेंतो मुक्या छे, हुं तो सुखे वसुछुं, मारे बलवानुं कांइ नथी; पण इंद्रे एम नथी कह्युं के, जुओ तो नगरी बलती रहे. जो इंद्र एम कह्युं होय तो नमीराजाए एम केहेवुं जोइए के, हे भाइ! एवी अनुकंपा मुजने करवी कल्पे नहिं. एम कह्युं होततो अनुकंपानो प्रश्न थात, पण इंद्रे एम नथी कह्युं. इंद्रेतो मोहनीनी परिक्षा निमित्ते पुछयुं छे. वली आगल मेहेल, कोट तथा दरवाजा करावबाना अने धन भंडार भरावबाना प्रश्न

इत्यादिक प्रश्न पुछया छे एमां कयो अनुकपानो प्रश्न छे ? ए तो सर्व परिक्षाना प्रश्न छे नमीराज रुपिश्वरने समकित-मोहनी, चारित्र-मोहनी तथा विषय कषायादिक उपशम्या के नथी उपशम्या ? इत्यादिक प्रश्न सर्व परिक्षाना छे वली नगरीनुं बलवु तथा उगारवु ए नमीरायना हाथमा नथी वास्ते ए प्रश्न अनुकपानो नथी

तेवारे तेरापथी कहेछे के " माहावीरस्वामीए दिक्षा लीधी ते दी वसथीज शरीर वोसराव्यु छे ते दीवसे भगवतनी अनुकपा वास्ते इन्द्रे आवीने कह्यु के, हे स्वामी ! हुं तमारी सेवा करु, परिसह टाळु अने साथे रहुं, पण भगवते वान्छी नाहिं एवु परंपरामा कहेवाय छे जो अ नुकपा कीधा लाभ होय तो इन्द्रनी कीधी अनुकपा भगवंते केम न वाछी ? " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! एवो कोण छे जे भगवतनी अ नुकपा करे कारण के प्रभु तो शूरवीर सीरमुगट छे एतो मूलथीज कोइनी साज वाछता नथी सेवकनी साज तो असमर्थज वाछे वली अनेरानी साजे कर्म खपता दीठा नहिं तेथी साज वांछी नहिं वली केवलज्ञान उपन्या पछी इन्द्रे आवीने कह्यु के, हे भगवत ! साधुने आज्ञा केटला प्रकारनी जोइए ? त्यारे भगवते कह्यु, के पांच जणानी आज्ञा जोइए त्यारे इंद्रे कह्युं के, हे स्वामी ! जो पाचनी आज्ञामा इ न्द्रनी आज्ञा जोइए तो स्वामी सुखे लेजो, मारी आज्ञा छे शास्त्र सूत्र भगवती शतक १६ में उ २ जे तथा ठाणायांग ठाणे ५ में हुवे जुओ! भगवंते पोताना साथ साधवा वास्ते इंद्रनी आज्ञा लीधी छे ते माटे ए अनुकंपानो प्रश्न नथी अनुकपानो प्रश्न तो क्यारे थाय के जो भग वते इन्द्रनी साज तथा सरणु वछयु होत, अने इंद्रे दोष लागतो जाणीने अनुकपा न कीधी होत तो अनुकपानो प्रश्न थात, पण इन्द्रे तो भग वतनु कष्ट निवारवामा भक्ति लाभ जाणयो, ते माटे अरज कीधो, पण भगवते पोतानां कर्म खपाववा माटे इन्द्रनी साज न वछी जेम साधुजीने दान देवामा श्रावक बारमु व्रत निपजतु जाणी आहारपाणी आमत्रे, पण साधूजी कर्म खपाववा तपश्या करे, तेमाटे,

ग्रहस्थीनां आहारपाणी न ले तथा साज न वंछे; पण ग्रहस्थीने दान देवामां पाप केम जाण्युं जाय. हे देवानुप्रीय ! एम केम कहोछो के, भगवंतनी अनुकंपा कीधां तथा भगवंतने साज दीधां इंद्रने पाप लागे तेथी भगवंते इंद्रनी साज न वांछी. एवुं मतना लीधे जुठ केम बोलोछो?

वली तेरापंथी कहेछे के, जो जीवनी अनुकंपा कीधां तथा जीवने उगार्यां लाभ होय तो, चेडा कोणीकनी लडाइ थइ तेमां अनेक मनुष्य मुआं. ते चेडा कोणीकने भगवंते केम न वर्ज्यां ? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! उपदेश दइ छोडाव्यामां तो तमे पण धर्म कहोछो. त्यारे चेडा कोणीकने भगवंते जइने उपदेश केम न दीधो ? उपदेश देवामां तो पाप नहोतुं लागतुं ? पण हे देवानुप्रीय ! एतो निमित्त कारण एज रीते छे. ते टाल्युं टले नहिं. भावी पदार्थने टालवा कोइ बलीष्ट नथी. वली तमने अनुकंपा ए लेखे करवी न भाषी, त्यारे श्री भगवतीमां नवमे शतके, जमालीने अधिकारे, जमालीए आवीने कह्युं के, हुं केवली थइने आव्यो छुं. त्यां भगवंते जमालीने खष्ट केम न कर्यो ? अने गोशालो आव्यो त्यारे भला भला प्रश्नोत्तर करी तेने खष्ट कर्यो, त्यारे शुं जमालीने खष्ट करवामां लाभ नहोतो ? वली दसासुतखंधमां श्री वर्धमानस्वामीए, पोताना साधु साधवीए नियाणां कर्यां तेने प्रायश्चित दइ शुद्ध कर्यां; माहाशतक श्रावकने गौतमस्वामीने मोकली प्रायश्चित देवराव्युं; अने श्री नेमनाथ भगवंते अयमत्ता अणगार निमित्त परुपता हता तेने शुद्ध केम न कर्या? वली सुखमालका साधवी, सोमील ब्राह्मण, इत्यादिक घणा जीव सल्य सहित देखी ते समयना केवली भगवंत प्रायश्चित देवा केम न गया ? तथा कुंडरिक प्रमुखने शुद्ध केम न कर्या ? भला एमां तो कोइनुं असंजम जीवीतव्य नहोतुं वधतुं ? कोइने अवगुणतो नहोतो थतो ? सामो गुण थात, आराधिक थात. ए काम केम न कर्युं ? पण तेरापंथी एम न विचारे के, भावि पदार्थने कोण मटाडी शके. ज्यांत्यांथी हैयामांथी अनुकंपा कापवानुंज सुझे छे.

वली दान देवामां तथा जीव छोडाववामां वचमां जीवनी हिंसा

तो थाय, पण जीवहिंसानी (प्राणातिपातनी) क्रिया विना प्रणामे न लागे शास्त्र सूत्र जगवती शतक ५ मे उद्देशे छठे, कह्यु छे के, जे कोइ वधक (हिंसक पुरुष) पक्षीने हणवा माटे बाण नाखे छे, ते पक्षी बाणथी मुर्छ, त्यारे बाणना जीवने, धनुष्यना जीवने अने नाखणहारने, ए त्रणेने पांच पाच क्रिया लागे कही, अने तेज बाण पोताना जारथी हेठुं पडे तेवारे वचाळे पडता अनेरा जीव हणाय ते आश्री, बाणना जीवने अने धनुष्यना जीवने पांच पाच क्रिया लागे कही, अने बाणना नाखणहारने चार क्रिया कही, पण प्राणातिपातनी क्रिया न लागे एम कह्युं हवे जुओ ! जीवने मारवाना प्रणाम हता तेवारे पांच क्रिया लागती कही, अने पोतानो हणवानो जोग नथी तेवारे तेने चार क्रिया कही हवे जीव उगारे तेने केटली क्रिया लागे ते कहो उगारवावालानु आर्त्त ध्यान मांहेलुं ध्यान कर्युं ? छ लेश्या माहेली लेश्या कइ ? जोग कयो? अने ते शुज के अशुज ? ते कहो

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, जीव हणे तेने प्राणातिपातनुं पाप लागे, अने जीवने बचावे तेने अढार पाप लागे, कारण के असंजति जीव जीवतो रह्यो, ते अढार पाप सेवे तेनुं पाप बचाववावालाने लागे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! ए कुमति तमे क्यांथी लाव्या ? त्रस जीवने मारवाना त्याग कीधां हिंसानु एक पाप देसथकी टले, अने जीवने उगारवानो त्याग करे तेने अढार पाप टले ए तमारे लेखे तो जीव बचाववाना त्याग पेहेलां कराव्या जोइए, पण कोइ साधु जगवते ए त्याग कराव्या नथी, कराव्या होय तो बतावो ए जीव बचाववाना त्याग करे तेने कयु व्रत निपजे ते कहो ए कुमति तमे कया सूत्र प्रकरणथी काढी ते कहो जीवने मारवाना त्याग कराववानुं तो ठाम ठाम सूत्रमां चाल्युं छे, पण जीवने बचाववाना त्याग करवानु तो कोइ सुत्रमां चाल्युं नथी वली जेना जेवा प्रणाम होय तेने तेवां फल लागे दान दयामां जीव हिंसाना तथा जुठुं बोलवाना जेना प्रणाम नथी, तेने हिंसानां तथा जुठनां फल लागे नहिं शास्त्र सूत्र जगवती शतक ५ में, उद्देसे

छे, एम कह्युं छे के, जेवुं जुठुं आलदे तेनां आवता भवान्तरे तेवांज फल पामे; पण एटलुं विशेष के, कोइ मृगप्रछाने समये मृग-रक्षाने कारणे जुठुं बोले ते दयाना प्रणामनुं जुठ टालीने बीजा जुठनां माठां फल कह्यां, एटले दयाना प्रणामथी जुठ बोले तेनां माठां फल कह्यां नथी. ए पुरुषना जुठ बोलवाना प्रणाम नथी, पण मृग्यादिकने राखवाना प्रणाम छे, ते माटे दयानां फल लागे, पण जुठनां फल न लागे. एम दान दयामां पण जेवा जेना प्रणाम होय तेवां तेनां फल लागे. जेम साधु मुनीराजने कोइ दातारे पात्र भरीने घृतदान दीधुं, त्यारे कोइए कह्युं के, हे भाइ! हुं तो अपुन्यो छुं, मारे लगार मात्र दान देवानो जोग नथी. हवे ए दातारने दान दीधानां शुभ फल लागे के जुठ बोल्या माटे जुठनां फल लागे? तेम जीव दयामां पण जाणवुं. वली साधुना शरीरमां रोगादिक कारण जाणीने श्रावके वमन विरेचनादिक करूवां औषध दीधां, तेथी साधुने अशाता उपजे. हवे श्रावकने अशातानां पारूवां फल लागे? के साधुना शरीरमां शाता थइ तेनां फल लागे? ए करतव्य प्रमाणे फल लागे? के मन–प्रणाम जेवा होय तेवां फल लागे ते कहो. जो साधुने कल्पतुं दान दीधां शाता-वेदनी बंधाय, तो मरता जीवने उगारतां एकांत पाप केम निपजे? ते विवेकनां तालां खोलीने जुओ. वली जीवनी अनुकंपा कीधाथी शाता-वेदनी बंधाय. तेनी शाख सूत्र भगवती. ते पाठः—

अत्थिणं भंते! जीवाणं कक्कस वेदणिज्जा कम्मा कज्जइ? हंता अत्थि. कहणं भंते! जीवाणं कक्कस्स-वेयणिज्जा कम्मा कज्जइ? गो० ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसण-सल्लेणं एवं खलु गो० ! जीवाणं कक्कस्स वेयणिज्जा कम्मा कज्जइ. अत्थिणं भंते! नेरइयाणं कक्कस्स वेयणिज्जा कम्माकज्जइ? गो०! एवं चेव जाव वेमाणियाणं. अत्थिणं भंते! जीवाणं अकक्कस वेयणिज्जा कम्माकज्जइ? हंता अत्थि. कहणं

न्नते ! जीवाण अककस्सवेयणिवा कम्माकबइ ? गो० ! पाणाइवाय वेरमणेण जाव परिग्गह वेरमणेण कोह विवेगेणं जाव मिछादसण-सल्ल विवेगेण एव खलु गो०! जीवाण अककस्स वेयणिवा कम्माकबइ अत्थिणं न्नते! नेरइयाण अककस्स वेयणिवा कम्माकबइ ? गो० ! णो इणठे समठे एव जाव वेमाणियाण णवर मणुस्साण जहा जीवाण अत्थिणं न्नते ! जीवा सायावेयणिज्जा कम्माकबइ ? हता अत्थि. कहण न्नते ! जीवा सायावेयणिवा कम्मा कबइ ? गो० ! पाणाणुकपाए नूयाणुकपाए जीवाणुकपाए सत्ताणुकपाए बहूणं पाणाण जाव सत्ताण अदुरकणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अप्पिट्टणयाए अप्परियावणियाए एवखलु गो० ! जीवाण सायावेयणिवा कम्माकबइ एव नेरइयाणवि एव जाव वेमाणिया अत्थिण न्नंते! जीवाणं असायावेयणिवा कम्मा-कबइ? हता अत्थि कहण न्नंते ! जीवाणं असायावेयणिवा कम्माकबइ? गो०! परदुरकणयाए परसोयणयाए परजूरण-याए परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरियावणयाए बहूण पाणाण जाव सत्ताण दुरकणयाए सोयणयाए जाव परियाव णयाए एव खलु गो० ! जीनाण असायावेयणिवा कम्मा-कबइ एव नेरइयाणवि एव जाव वेमाणियाण ॥

अर्थ —भ० हे न्न० हे नगवान ! जी० जीव क० करकस रौद्र दुःखथी वे० वेदीए एवा क० कर्म क० करे ? उपार्जे ? ह० हा गौतम छे क० केये प्रकारे न्न० हे नगवान ! जी० जीव क० करकस कठोर रौद्र स्वरुप कम्मा० कर्म बाधे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! पा०

प्राणातिपात जा० यावत् मि० मिथ्या-दर्सन-सल्य, अढारे पापे करी ए० एम ख० निश्चे गो० हे गौतम ! जी० जीव क० कर्कस-वेदनी रौद्र कर्म कम्र० बांधे. अ० ठे नं० हे भगवान ! ने० नारकी क० कर्कशरौद्र वेदनी कर्म बांधे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ए० एमज पुर्वलीपरे नारकी बांधे, जा० यावत् वे० वैमानिक सुधि कहेवुं. अ० ठे नं० हे भगवान ! जी० जीव अक० अकर्कश वेदनी (कठोर नही, सुखे वेदवा योग्य) क० कर्म करे ? इति प्रश्न. उत्तर. हं०हा गौतम ! अ० करे ठे. क० कये प्रकारे नं० हे भगवान ! जी० जीव अक० अकर्कश अकठोर क० कर्म करे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पा० प्राणीने हणवाथी वे० निवर्तवे करी जा० यावत् प० परिग्रहथी निवर्तवे करी को० क्रोधने वि० तजवे करी जा० यावत् मि० मिथ्या दर्सन शल्य ठांमवे करी ए० एम ख० निश्चे गो० हे गौतम ! जी० जीव अक० अकर्कश क० कर्म करे. अ० ठे नं० हे भगवान ! ने० नारकी अक० अकठोर क० कर्म करे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! णो० ए अर्थ समर्थ नही. ए० एम जा० यावत् वे० वैमानिक लगे जाणवुं; पण ण० एटलुं विशेष म० मनुष्यने ज० जेम जी० जीवने कह्युं तेम कहेवुं. अ० ठे नं० हे भगवान ! जी० जीव सा० साता-वेदनी क० कर्म करे ? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा गौतम अ० ठे. क० केम नं० हे भगवान ! जी० जीव सा० सातावेदनी क० कर्म क० बांधे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पा० प्राणीनी अनुकंपा दयाथी भु० भूतनी दयाथी जी० जीवनी दयाथी स० सत्वनी दयाथी ४ ब० घणा पा० प्राणीभने जा० यावत् स० सत्वने अ० दुःख न देवाथी, असो० शरीरनो क्षय करतां शोक उपजे ते न उपजाववाथी, अजू० न झुराववाथी, अति० आंसु लालादि खरवाना कारण सोग न कराववाथी, अप्पि० मुखादि ताडन प्रहार न करवाथी, अप्प० शरीरने ताप न उपजाववाथी, ए एम ख० निश्चे गो० हे गौतम ! जी० जीव साता-वेदनो क० कर्म बांधे. यतः गुरु भत्ति खंति करुणा वय जोग कसायविजयदाण जुउ दढ धम्माइ अजइ साय ममायं विवजउ. ॥१॥ इति

वचनात् ए० एम ने० नारकिने पण जा० यावत् वे० वैमानिक सगी सातावेदनी बांधवानो उपाय कह्यो अ० ठे जं० हे जगवान! जो० जीव अ० असाता वेदनी क० कर्म करे? बांधे? ह० हा गौतम ठे क० केम न० हे जगवान! जो० जीव असा० असातावेदनीय क० कर्म करे! बांधे? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम! परदु० परने दुःख देवाथी परसो० परने शोक उपजाववाथी परजू० परने हीनपणु उपजाववाथी परति० परने आंसु लालादिक खरावबाना कारणथी परपि० परने लाकडीए ताडवाथी परप० परने परितापवाथी व० घणा पा० प्राणीने जा० यावत् स० घणा सत्वने दु० दुख करवाथी सो० हीन करवाथी जा० यावत् प० परितापना उपजाववाथी ए० एम ख० निश्चे गो० हे गौतम! जो० जीव अ० असातावेदनिय क० कर्म उपार्जे बांधे ए० एम ने० नारकीने पण कहेवु ए० एम जा० यावत् वे० वैमानिक लगी कहेवु

जावार्थ —हवे जुओ! प्राणीजीवनी अनुकपा कीधाथी सातावेदनी बधाय कह्यु ए न्याये जीवनी अनुकपा करे, दुखी देखीने दुःख शोक मटाडे तथा बचावे तेने शातावेदनी बधाय ते शातावेदनी पुन्यनी प्रकृती ठे तेवारे तेरापथी कहेठे के " जीवने मारवाना त्याग करे तथा जीवने न हणे तेने अनुकपा कहीये, तेथी शातावेदनी बंधाय " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! इहांतो चार प्रकारना कर्म कह्या ठे ते जीवहिंसादि अढार पाप सेवे, सेवरावे अने सेवताने जलो जाणे, तेने कर्कसवेदनी (अशातावेदनी) कर्म बधाय, एटले दुःखे दुःखे जोगवे ए कर्कसवेदनी कर्म चोवीस दडकना जीवने बधाय, अने जीवहिंसादि अढार पापथी निवर्ते तेने अकर्कस वेदनी कर्म बधाय ते सुखे सुखे जोगवे, मुक्ति जाय अने जरतमहाराजनी परे कर्कसपणु वचमा न आवे ए अकर्कसवेदनी शातावेदनी कर्म एक माणसनाज दडकमा बधाय वली त्रण करण त्रण जोगेकरी प्राणीजीवने दुःख वेदना करावे, तेने अशातावेदनी कर्म बधाय ए अशातावेदनी चोवीस दडकमां बधाय तेमज त्रण करण त्रण जोगेकरी प्राणीजीवनी अनुकपा करे, तेने शातावेदनी कर्म बंधाय

ए शातावेदनी पण चोवीस दंमकना जीवोने बंधाय. हवे तमे कहो! कर्कसवेदनी-कर्म केने कहीये अने अशातावेदनी-कर्म केने कहीये? अकर्कसवेदनी-कर्म केने कहीये अने शातावेदनी-कर्म केने कहीये ते कहो. हे देवानुप्रीय! जीवने न हणे तेने तो अकर्कसवेदनी बंधाय, अने अनुकंपा करे तेने शातावेदनी बंधाय. ए जुत! जीवने न हणे तेनां फल न्यारां कह्यां, अने अनुकंपानां फल न्यारां कह्यां. अनुकंपातो आगलानुं दुःख मेटे, मटारुे अने मटारुताने जलो जाणे तेने कहीए. तेनी शाख सूत्रअंतगरुमां, सुलसा श्राविकाए पुत्रनी तृष्णा वास्ते हर्णगमेषी देवताने आराध्यो. त्यां दुःख मटारुवाना प्रणामने अनुकंपा कही छे. वली कृष्णमाहाराजने कोसानां ईंटो नाखवानां दुःख मटारुवाना प्रणाम आव्या तेने अनुकंपा कही छे. वली ज्ञातासूत्रमां धारणी राणीनो कोलो पुरवाने अजयकुमारे देवताने आराध्यो, त्यां दुःख मटारुवाना प्रणामने अनुकंपा कही छे. तमे मतना लीधे "जीवने न हणे तेनेज अनुकंपा कहीये." एम केम कहोछो?

वली तेरापंथी अनुकंपा सावध निर्वध बे प्रकारनी कहेछे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अनुकंपा सावध निर्वध बे प्रकारनी कोइ सूत्रमां कही नथी. तमे मतना लीधे जुठुं केम बोलोछो? कारणके अनुकंपाने तो समकितनुं लक्षण कह्युं छे. ते दुःख मटारुवाना प्रणामने अनुकंपा कहीये. तेने सावध शीरीते कहीये? पण दुःख मटारुवा सारु कर्तव्य करे ते कर्तव्य सावध निर्वध होय. ते कर्तव्यनो पक्ष लइने अनुकंपाने सावध केम कहोछो? छकायनो आरंभ करे तेने तो कर्तव्य कहीये, अने हिंसाने निंदे, ने छकायनी उपर करुणा आवे तेने अनुकंपा कहीये. एम अनेक कार्यमां शुभ प्रणामथी निर्जरा थाय, अने सावध कर्तव्यथी कर्म बंधाय. एम कर्तव्य न्यारुं अने अनुकंपा न्यारी. हवे जो अनुकंपाने सावध कहेशो तो समवायांगमां तथा उत्तराध्ययन अध्ययन २ए मामां, सम, ससवेग, निर्वेद, अनुकंपा अने आस्ता, ए पांच समकितनां लक्षण कह्यां छे, ते पण सावध निर्वध बे प्रकारनां केहेवां पमशे; अने जो

बधनात् प० एम ने० नारकिने पण जा० यावत् वे० वेमानिक सगी सातावेदनी बाधवानो उपाय कह्यो अ० ठे जं० हे भगवान! जो० जीव अ० असाता वेदनी क० कर्म करे? बाधे? ह० हा गौतम ठे क० केम भ० हे भगवान! जो० जीव असा० असातावेदनीय क० कर्म करे! बांधे? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम! परदु० परने दुःख देवाथी परसो० परने शोक उपजाववाथी परजू० परने दीनपणु उपजाववाथी परति० परने आंसु स्वाभाविक खराववाना कारणथी परपि० परने आक्रोश ताम्रवाथी परप० परने परितापवाथी ब० घणा पा० प्राणीने जा० यावत् स० घणा सत्वने दु० दुःख करवाथी सो० दीन करवाथी जा० यावत् प० परितापना उपजाववाथी ए० एम ख० निश्चे गो० हे गौतम! जो० जीव अ० असातावेदनिय क० कर्म उपार्जे बांधे ए० एम ने० नारकीने पण कहेवु ए० एम जा० यावत् वे० वैमानिक सगी कहेवु

भावार्थ —हवे जुओ! प्राणीजीवनी अनुकंपा कीधाथी सातावेदनी बधाय कह्युं ए न्याये जीवनी अनुकंपा करे, दुःखी देखीने दुःख शोक मटाडे तथा बचावे तेने शातावेदनी बधाय ते शातावेदनी पुन्यनी प्रकृती ठे तेवारे तेरापंथी कहेठे के "जीवने मारवाना त्याग करे तथा जीवने न हणे तेने अनुकंपा कहीये, तेथी शातावेदनी बंधाय" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! इहांतो चार प्रकारना कर्म कह्या ठे ते जीवहिंसादि अढार पाप सेवे, सेवरावे अने सेवताने भलो जाणे, तेने कर्कसवेदनी (अशातावेदनी) कर्म बधाय, एटले दुःखे दुःखे भोगवे ए कर्कसवेदनी कर्म चोवीस दंडकना जीवने बधाय, अने जीवहिंसादि अढार पापथी निवर्ते तेने अकर्कस वेदनी कर्म बधाय ते सुखे सुखे भोगवे, मुक्ति जाय अने भरतमहाराजनी परे कर्कसपणु वचमा न आवे ए कर्कसवेदनी शातावेदनी कर्म एक माणसनाज दंडकमां बंधाय बली त्रण करण त्रण जोगेकरी प्राणीजीवने दुःख देइ झुरावे, तेने अशातावेदनी कर्म बधाय ए अशातावेदनी चोवीस दंडकमां बधाय तेमज त्रण करण त्रण जोगेकरी प्राणीजीवनी अनुकंपा करे, तेने शातावेदनी कर्म बंधाय

ए शातावेदनी पण चोवीस दंमकना जीवोने बंधाय. हवे तमे कहो! कर्कसवेदनी-कर्म केने कहीये अने अशातावेदनी-कर्म केने कहीये? अकर्कसवेदनी-कर्म केने कहीये अने शातावेदनी-कर्म केने कहीये ते कहो. हे देवानुप्रीय! जीवने न हणे तेने तो अकर्कसवेदनी बंधाय, अने अनुकंपा करे तेने शातावेदनी बंधाय. ए जुन! जीवने न हणे तेनां फल न्यारां कह्यां, अने अनुकंपानां फल न्यारां कह्यां. अनुकंपातो आगलानुं दुःख मेटे, मटारू अने मटारूताने जलो जाणे तेने कहीए. तेनी शाख सूत्रअंतगरूमां, सुलसा आविकाए पुत्रनी तृष्णा वास्ते हणेगमेषी देवताने आराध्यो. त्यां दुःख मटारूवाना प्रणामने अनुकंपा कही छे. वली कृष्णमाहाराजने मोसानां ईटो नाखवानां दुःख मटारूवाना प्रणाम आव्या तेने अनुकंपा कही छे. वली ज्ञातासूत्रमां धारणी राणीनो मोलो पुरवाने अजयकुमारे देवताने आराध्यो, त्यां दुःख मटारूवाना प्रणामने अनुकंपा कही छे. तमे मतना लीधे "जीवने न हणे तेनेज अनुकंपा कहीये." एम केम कहोछो?

वली तेरापंथी अनुकंपा सावध निर्वध बे प्रकारनी कहेछे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अनुकंपा सावध निर्वध बे प्रकारनी कोइ सूत्रमां कही नथी. तमे मतना लीधे जुठुं केम बोलोछो? कारणके अनुकंपाने तो समकितनुं लक्षण कह्युं छे. ते दुःख मटारूवाना प्रणामने अनुकंपा कहीये. तेने सावध शीरीते कहीये? पण दुःख मटारूवा सारु कर्तव्य करे ते कर्तव्य सावध निर्वध होय. ते कर्तव्यनो पक्ष लइने अनुकंपाने सावध केम कहोछो? छकायनो आरंन करे तेने तो कर्तव्य कहीये, अने हिंसाने निंदे, ने छकायनी उपर करुणा आवे तेने अनुकंपा कहीये. एम अनेक कार्यमां शुन्न प्रणामथी निर्जरा थाय, अने सावध कर्तव्यथी कर्म बंधाय. एम कर्तव्य न्यारुं अने अनुकंपा न्यारी. हवे जो अनुकंपाने सावध कहेशो तो समवायांगमां तथा उत्तराध्ययन अध्ययन २ए मामां, सम, ससवेग, निर्वेद, अनुकंपा अने आस्ता, ए पांच समकितनां लक्षण कह्यां छे, ते पण सावध निर्वध बे प्रकारनां केहेवां पमशे: अने जो

समकितना लक्षणने सावद्य केहेशो तो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र (मोक्षनो मार्ग) सर्वने सावध निर्वध बे प्रकारना केहेवा पडशे ए न्याय केम मले? ए अनुकंपा समकितना लक्षणने मतने लीधे सावद्य केम कहोछो

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " जिनरीखे रयणादेवीनी अनुकंपा करी ते पण निर्वध हशे ते पण जिनरीखने धर्म थयो हशे " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! जो अनुकंपा करी होत तो धर्मज थात, पण 'कोलुणवक्रियाए' पाठ छे कोलुणवक्रिया नाम मोहरसनु छे तथा दीन वचन बोले तेनुं छे शास्त्र सूत्र सुयगडांगना नरयविभत्ति अध्ययनमा कह्युं छे के, नेरइया कलुणवक्रिया शब्द करे छे वली विपाकसूत्रमा मृगालोढीयाना अध्ययनमा आधलाने त्रिटाने अर्थे 'कलुणवक्रिया' दीनदयामणा शब्द बोलता कह्यो छे तेमज अनुयोगद्वार, ठाणायाग इत्यादि अनेक सूत्रमां 'कोलुणवक्रिया' नाम मोहरसनु कह्यु छे रयणादेवी उपर जिनरीखने मोहकर्म आव्यो, पण 'अनुकंपाए' एवो पाठ नथी तमे मतना लीधे अनुकंपा केम कहोछो? वली तेरापंथी, मतना लीधे एम कहेछे के, " कोइ जीवने शाता दीधाथी शातावेदनी पुन्य प्रकृति बंधाय, एम कहे तेने छ बोल भगवते माठा कह्या " एम कहीने सुयगडांगसूत्रना त्रीजा अध्ययनना चोथा उदेशानी ५ मी अने ६ ठी गाथानी जुठी शाख प्रथमनी चार गाथा छुपावीने बतावे छे ते पाठ —

आहंसु महा पुरिसा, पुव्विं तत्त तवो धणा,
उदएण सिद्धि मापन्ना, तत्थ मंदेवि सीयइ ॥ १ ॥
अभुंजिया नमि विदेही, रामगुत्तेण भुंजिया,
बाहूए उदगं भुच्चा, तहा तारागणा रिसि ॥ २ ॥
आसले देवले चेव, दीवायण महा रिसि,
पारासरे दग भोच्चा, बीयाणि हरियाणिय ॥ ३ ॥
एते पुव्व महा पुरिसा, आहित्ता इह संमता,

सोच्चा वी उदगं सिध्धा, इति मेय मणुस्सुयं. ॥ ४ ॥
तत्र मंदावि सीयंति, वाह छिन्नाव गद्दभा;
पिठउ परि सप्पंति, पिठ सप्पो व संभ्रमे. ॥ ५ ॥
इह मेगेउ भासंति, सातं साते णविज्जइ;
जे तच्छा परियंमगा, परमं च समाहिए. ॥ ६ ॥
मा एयं अवम्मन्नंता, अप्पेणे लुपइ बहू;
एत्तस्स अमोरकाए, आयहारिब्ब जूरहे. ॥ ७ ॥
पाणाइवाय वट्टंता, मुसावाएय संजए;
अदिन्नादाणाय वट्टंता, मेहूणाय परिग्गहे. ॥ ८ ॥
एव मेगेउ पासत्था, पन्नवंति अणारिया;
इत्थी वसंगया बाला, जिण सासण परमुहा. ॥ ९ ॥
जहा गंमं पिलागंवा, परि पीलिज्ज मुहुत्तगं;
एवं विन्नवणइत्थिसु, दोसो तत्र कउसिया. ॥ १० ॥
जहा मंधोदए नामं, थमित्तं भुंजती दगं;
एवं विन्नवण इत्थीसु, दोसो तत्र कउसिया. ॥ ११ ॥
जहा विहंग मापिंगा, थिमितं भुंजती दगं;
एवं विनवण इत्थीसु, दोसो तत्र कउ सिया. ॥ १२ ॥
एव मेगेउ पासत्था, मिच्छादिठि अणारिया;
अध्योववन्ना कामेहिं, पूयणाइव तरुणए. ॥ १३ ॥
अणागयम पासंतो, पच्चुप्पन्न गवेसगा;
तेपछा परितप्पंति, खीणा आउंमि जुव्वणे. ॥ १४ ॥
जेहिं काले परिक्कंतं, नपच्छा परितप्पई;
ते धीरा बंधणं मुक्का, नाव कंखंति जीवियं. ॥ १५ ॥

अर्थ —आ० कहे छे म० मोटा पु० पुरुष पू० पूर्वे त० तीहां तवो० तपरुपी ध० धनेकरो सोहत उ० शीतल पाणीएकरी सि० मोक्ष मा० प्राप्त थया कहे छे त० तीहा म० मूर्ख स० सिदाय (पस्ताय) ॥१॥ अ० बीजा जोगव्यां न० नमिराजा वि० विदेह देशना उपन्य॥ तथा रा० रामगुप्त राजर्षि भु० जोगवताथका मुक्ति पोहच्या बा० नरुकरुषी उ० शीतल पाणी भु० जोगवता मुक्तो गया त० तेमज ता० तपरागथ रुपी शीतल पाणीथी सिध्या ॥२॥ आ० आसल रुपी दे० देवल रुषी चे० निश्चे दी० द्वीपायण नामा म० मोटा रुषी अने पा० पारासरजी द० काचुं पाणी जो० जोगवीने बी० बीज आदिक ह० लीलोत्री प्रमुख जोगवीने मुक्ती पोहोच्या ॥३॥ ए० ए पु० पुर्वे म० मोटा पुर्ष आ० केहेवा इ० आ लोकमा स० प्रसिद्ध जो० जोगवीने बि० बीज उ० सचित पाणी सि० सिद्ध थया इ० एम कुतीर्थी कहे मे० अमे माहस्नातोवि विषे सालयु एवी रीते अमे पण मुक्ती जाशुं ॥ ४ ॥ त० तिहा कु शास्त्र साजल्याथी म० मुर्ख सि० चारित्रथी सिदाय जेम जारना छि० गर्दभ थाक्याथका जार नाखी नासी जाय, तेम अज्ञानी संजमनो जार नाखीने शिथल विहारी थाय वली दृष्टांन्त कहे छे पि० अग्नि प्रमुखना जयथी बीजा लोकने नासता देखी थोभी समर्थाश्वत पुरुष पुठे जाय, पण आगल न चाले जेम कायर वीहता आगल न चाले, तेम शिथिल विहारी मोक्षना अग्रगामी न थाय, अनतो काल ससार जमे ॥५॥ इ० इहा मे० अकेक अन्यतिर्थी स्वतिर्थी पासत्या जा० कहे सा०शाताथी सा०शाता थाय,पण्डु खथी सुख केम थाय ? एटले लोचा दिक डु खथी मोक्ष केम थाय ? सालथी साल अने कोद्रवथी कोद्रव निपजे जे० जे कोइ त० त्यां आ० श्री जिनेंद्र मार्ग प० उत्कृष्टो स० ज्ञान दर्शनादि समाधि सहित ॥६॥ मा० रखे ए० ए अ० जिनमार्गने हिलताथका ते अ० अल्प सुखने काजे मोक्षनां घणां सुखने गुमावे छे ए० एवा जीवने अ० मोक्ष नथी आ० जेम लोहनो व्यापारी जु० फुर्यो तेम ते पण झुरसे ए सविस्तार दृष्टान्त राज्यप्रश्नीयथी ज्ञेयः ॥७॥

पा० जीवहिंसामां व० वर्तताथका मु० मृषावाद सं० असंजत छतां अ० अदत्तादाने व० वर्तताथका अने मे० मैथुन प० परिग्रहे वर्तता छता थोडा सुखने काजे घणा सुखने विणाशो छो. ॥८॥ ए० एम मे० अकेक पा० स्वतिर्थी परतिर्थी प० परुपे, तेने अ० अनार्य इ० स्त्रीने व० वशे पड्याथका बा० अज्ञानी जि० जिनमार्गथी प० उप्रांठा जाणवा. ॥९॥ वली तेउ कहे छे के, ज० जेम गं० गुंमडुं पि० पाक्युं प० तेनी पीडा तेमांथी पी० लोही काढयाथी टले, मुहूर्त मात्र सुख थाय, ए० तेम वि० भोगवीथकी इ० न्युतन स्त्रीने दो० दोष त० त्यां क० क्यांथी होय? ॥१०॥ ज० जेम मं० मंदोधक नामा मींढो थ० थीर थइने भु० जमे द० पाणी पीए, ए० एम वि० भोगवी थकी ई० स्त्रीने दो० दोष त० त्यां क० क्यांथी सि० होय? ॥११॥ ज० जेम वि० कपिंजल नामा पंखी थि० अफोल भरुतोथको भुं० पीए द० पाणी, ए० एम वि० भोगवीथकी थि० स्त्रीने दो० दोष त० त्यां क० क्यांथी होय. ॥१२॥ ए० एम मे० अकेक पा० पासत्थादिक (ढीला) मि० मिथ्यादृष्टी अ० अनार्य पुरुष आ० कामभोगमां आशक्त पू० जेवां गाडर (भेड) त० पोतानां बच्चांने विषे गृद्ध (लुब्ध) होय छे तेवा पुर्वोक्त पासत्थादि मिथ्यात्वीने जाणवा. ॥१३॥ अ० ते आगम्य काले नर्कादिक दुःख अपा० अणदेखता प० वर्तमान सुखना ग० गवेषणहार ते० ते अज्ञानी पछी परि० पश्चाताप करे खी० क्षीण थये आ० आउखुं अने जु० जोवन वय, के हवे हुं शुं करुं. जे० जेणे धर्मने विषे पराक्रम करवाने का० काले प० पराक्रम कर्युं ते, प्रछी वृद्धावस्थामां पस्ताय नहिं. ते० ते धी० धीर पुरुष बं० बंधनथी मु० मुकाणा न० न कं० वान्छे जी० असंजम जीवीतव्य. ॥ १५ ॥

भावार्थः—हवे जुउ ! इहांतो पाछला त्रण उद्देशामां अनुकुल प्रतिकुल परिसहा देखाड्या छे के " हे साधु तुं अणगमता परिसाथी अने इंद्रीउने गमता परिसाथी चलजे मत. तेमज आ चोथा उदेशामां अन्यमतीनां वचन शांभलीने समकितथी चलजे मत " एम कह्युं. पहेली चार गाथामां अन्यमती एम कहे छे के " काचुं पाणी पीतां अने

बीज फल फुलनो भोग करतां अनेक रुषीश्वर सद्गतीमा गया छे माटे जे आ देहीने दुःख देशे ते भव भवमां दुःखी थासे, अने आ नरनारायणनी देहने शाता दीधाथी शाता पामशे " एवु वेदनु नाम लइने परुपणा करे छे एवी वातो शाक्यलीने साधु चारित्रथी परीसह उपन्यां रुगे, ते वास्ते पाचमी छठी गाथामा कह्यु के "देहीने शाता दीधाथी शातावेदनी बंधाय," एम परुपे तेने आर्य मार्गथी वेगलो कहीए ! समाधी मार्गथी न्यारो २ जिन मार्गनी हीलणानो करणहार ३ थोडा सुखने कारणे घणा सुखनो गमावनारो ४ असोक्षनु कारण ५ अने लोहवाणीयानी परे झुरशे ६ ए छ बोल भगवते माठा कह्या वली अन्यमति विषय विकारने गुमडानो दृष्टान्त देछे के, गुमडानी रसी काढयां शाता थाय, तेम विषय सेव्यां मन सतोष पामे एवां ए अध्ययनमा अन्यमतीए दृष्टान्त दीधा छे ते सारु साधुने सजममा दृढ करवा माटे भगवंते छ बोल माठा कह्या ए जुओ ! पोतानी देहीने सयम भागीने शाता दीधां शाता कहे तेने छ बोल माठा कह्या छे तमे जाणता थका मतने लीधे एम केम कहोछो के " कोइ जीवने शाता दीधां शाता थवाय, एम कहे तेने छ बोल माठा कह्या छे " वली तेरापथी, साधुनी फांसी खोल्ही शाता उपजाववामा पण एकान्त पाप माने छे पण साधु मुनीराजने धर्मनी बुद्धिए शाता उपजावे, हरख छेदे, तेने शुभ क्रिया तथा शुभ फल कह्यां छे शास्त्र सूत्र भगवती शतक १६ में उद्देशे त्रीजे श्री गौतमस्वामीए उत्तर सहित प्रश्न पुछयो छे ते पाठ—

> भतेत्ति भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदति नमसइ २त्ता एव वयासी -अणगारस्सण भते ! भाविअप्पणो छठ छठेणं अणिखित्तेणं तवो जाव आतावेमाणस्स तस्सणं पुरत्थिमेणं अवड्ढ दिवस नोकप्पति हत्थवा पायंवा जाव उरवा आउट्टावेत्तएवा पसारेत्तएवा पचत्थिमेणासे अवड्ढ दिवस कप्पति हत्थवा पायवा जाव उरुवा आउट्टावेत्तएवा

पसारेत्तएवा. तस्सय असियाओ लवइ तंचेव विज्जेअदक्खू इसिं पाडेइ २ त्ता असियाउ छिंदेज्जा. सेणुणं भंते ! जे छिंदइ तस्स किरिया कज्जइ ? जस्स छिंदइ नो तस्स किरिया कज्जइ. णणत्थ एगेणं धम्मंतराइणं. हंता गो०. जे छिंदइ जाव धम्मत्तराएणं ॥

अर्थः—भं० एवे आमंत्रणे भ० भगवंत श्री गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवंत श्री म० माहावीर प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने ए० एम व० कहेः—अ० अणगारने भं० हे भगवान! भा० भावितात्माने छ० बेले बेले अ० आंतरारहित त० तप करी जा० यावत् आ० आतापना ले त० तेने पु० पुर्व भागे पुर्वान्ह दीवस भागे एटले अ० अर्धा दि० दीवस सुधी नो० न कल्पे ह० हाथ पा० पग जा० यावत् उ० उरु आ० संकोचवा प० प्रसारवा; काउसग्ग रह्यो ते माटे. प० पश्चिम भाग एटले अ० अपरान्हने विषे क० कल्पे ह० हाथ पा० पग जा० यावत् उ० उरु आ० संकोचवा प० पसारवा. (काउसग्गना अभावथी). त० तेने अ० अणफोडा हरस ल० लटके छे नाकमां तं० ते प्रत्ये चे० निश्चे वि० वैद अ० देखीने इ० रुषीने पा० भुमिकाए पाडे, (भोंयपर पाड्या विना हरस छेदाय नही ते भणी) पाडीने अ० हरस छिं० छेदे. से० ते निश्चे भं० हे भगवान ! जे० जे हरसने छिं० छेदे त० तेने कि० क्रिया क० लागे ? वैदने क्रिया व्यापार रुप छे ? ते धर्मनी बुद्धे छेदताने शुभ क्रिया थाय, अने लोभादिके छेदताने अशुभ क्रिया थाय. ज० जे, साधुना हरस छिं० छेदे नो० ते साधुने क्रिया न लागे (निव्यापारपणाथी). शुं साधुने सर्वथा क्रियानो अभाव छे ? अने वैदने करे ते क्रिया छे ? परंन्तु पचीस मांहेली नथी; अथवा एम नथी ते कहे छेः- ण० ए निषेध ते ए० एक ध० धर्मांतरायरुप क्रिया शुभ ध्यान विछेदथी लागे अथवा हरस छेदे ते अनुमोदनथी अनेरी क्रिया लागे ? ए प्रश्न. हं० हा गो० गौतम, जे० जे हरस छिं० छेदे तेने यावत् पूर्वे कह्युं तेम धर्मान्तरायनी क्रिया लागे. इ०

भावार्थः—हवे जुओ। ए सूत्र पाठमा तो साधुना हरस (मसा) छेदे ते वैद्यने समचय क्रिया कही, अने साधुने निर्व्यापारपणाथी क्रिया नो नाकारो कह्यो, अने जो साधु अनुमोदे तो तेने धर्मान्तराय लागे, (ध्याननी अंतराय पडे) वली ए पाठनी टीकामा कह्युं छे के, वैदने क्रियातो लागे, "ते करे इति क्रिया" पण वैद् लोजनी बुद्धीए छेदे तो अशुभक्रिया ने अशुभ फल लागे, अने धर्मनी बुद्धीए छेदे तो शुभ फल क्रिया लागे अनेशुभ हवे जुओ। आ सूत्रने न्याये साधुने कोइ अनार्य फासी दइ जाय, ते कोइ उत्तम दयावंत प्राणी धर्मनी बुद्धे खोले, तथा कुतरो करडतो धर्मनी बुद्धे हाकोटे, तथा एवा अनेक प्रकारना साधुना उपसर्ग धर्मनी बुद्धिए टाले, तेने एकान्त शुभ फल लागे तमे "साधुनी फासी खोले तेने तथा साधुना अनेक प्रकारना उपसर्ग धर्मनी बुद्धे टाले तेने पाप लागे," एवुं कहीने ए सूत्रना केवलीना वचन मतना लोभे केम उथापोछो ?

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, साधुना कर्म तुटता राखे तेने ध्यानादि कनी धर्मनी अंतरायनो देणहार कहीये तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! ए लेखे तो साधुने अहार देवावाला श्रावके पण तपस्यानी अंतराय दीधी, केमके भुखे मरता कर्म कपाता ते राख्या जग्या देवावाले प[illegible] कर्म कपातां राख्या अनेक प्रकारनी शाता दीधी तेणे कर्म कपाता राख्यां ए तमारे लेखेतो साधुजीने चौद प्रकारनुं दान पण देवुं न जोइए, कारणके धर्मनी अंतराय लागे, अने कर्म कपातां रही जाय ए तमारे लेखेतो साधुने दुःख थइ कर्म तोडाये तेने धर्म थाय तेवारे तेरापंथी कहेछे के "आहारादिकतो साधु लेवो वान्छे छे, तेथी देवावालाने धर्म थाय. पण फांसी प्रमुख उपसर्ग महस्थीने टालवानु कहे नहि, तेथी पा लागे" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! सुखनी प्रमुख सरस अहार देवं साधुए मनेकरीने पण वान्छवु नही, तेम तेने अर्थे महस्थोने घेर जाइ पण नही, ए आचारांग तथा निशियमा कह्युं छे, पण दातार पोतान भावथी आपे, तेने धर्म थाय के नही ते कहो वली जयराइथी साधुन

उपसर्ग टाल्यो, तेने साधुनी वैयावचनो करणहारो कह्यो छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन बारमें. ते पाठः—

जखो तहिं तिंदुय रुक्ख वासी अणुकंपउ तस्स महामुणिस्स पछायइत्ता नियगं सरीरं इमाई वयणाइं मुदाहरित्था ८ समणो अहं संजउ बंभयारी विरओ धणपयण परिग्गहाओ परप्पवितस्सउ भिक्ख काले अन्नस्सअठा इह मागओसी ९ एयाइं तीसे वयणाइं सुच्चा पत्तिए भदाइं सुभासियाइं इसिस्स वेयावभियं ठयाए जक्खा कुमारेवि णिवारयंति पुविं च इन्हंच अणागयंच मणप्पओसो नमे अछि कोइ जक्खाहु वेयावभियं करेंत्ति तम्हाहु एए निहया कुमारा.

अर्थः—ज० यक्ष त० ते अवसरे ति० तिंडुक रु० वृक्षनो वा० वसणहार अ० शातानो करणहार, भक्तिवंत त० ते हरिकेशी म० महामुनीना (साधुना) शरीर उपर प० आछादिने नि० देवता पोते स० साधुना शरीरमां आवे, प्रवेश करीने ते इ० एवां व० वचन कहेवा लाग्यो के, स० साधु छुं अ० हुं, सं० संजति ब० ब्रह्मचारी छुं, वि० निवर्त्यो छुं ध० सुवर्णादिक धनथी, ए ढव्यादिक प० परिग्रहथी, पर० गृहस्थने अर्थे निपन्यो छे अहार भि० भिक्षाना का० कालने विषे अ० अहारने अर्थे इ० इहां मा० आव्यो छुं. ए० ए पूर्वोक्त ती० ते कुंवरीनां व० वचन सु० सांभलोने प० शामदेव प्रोहीतनी भार्या भ० भद्राना सु० भला भाख्या वचन, इ० रुषीना वे० वैयावच, ते पक्षपातने अर्थे जं० जक्षे कु० कुमार प्रमुखन वि० विशेषे हण्या. णि० तेवार पछी यक्ष अलगों थयो. हवे यती बोल्या, पु० पूर्वे इ० हमणा अने अ० अनागत काले म० मने करी पण ८८० नथी मारे को० कांइ अल्प मात्र पण द्वेष, जं० यक्ष हु० निश्चे जे भणी वे० वेयावच पक्षपात करे छे, ते माटे ए निश्चे प्रत्यक्ष नि० निरंतर हण्या कु० कुमार.

भावार्थ —हवे जुओ ! जक्ष देवताए मुनीराजने मारवा आव्या ते कुवरोने लोही वमता हेठा नाख्या तेने हरिकेसी मुनीराजे कह्यु के, जक्षदेवता मारी वैयावच करेछे, तेणे हे ब्राह्मणो ! तमारा कुवरोने नाख्या छे ए जबराइ करी साधुनो उपसर्ग टाल्यो तेने सूत्रमा वैयावच कही साधुनो पोतानो कल्प नथी तेथी ते एवा कामनी, आववा जवानी अने साधुने वास्ते जग्या जाचवानी आज्ञा के नहीं, पण तेने सूत्रमा वैयावच कही छे हवे साधुनी वैयावचनां फल शुभ के अशुभ ते कहो वली वृहत्कल्पमा कह्युं छे के, साधु एटला काममा जबराइ करे तो आज्ञा उलंघे नहीं ते पाठ —

निग्गथस्सय अदे पायसि खाणुवा कटएवा हीरएवा सकरेवा परियावजेज्जा त च निग्गथे नोसचायइ नीहरीत्तएवा विसोहित्तएवा तच निग्गथी नीहरमाणिवा विसोहेमाणीवा णाइक्कमइ निग्गंथस्स अच्छिसि पाणेवा बीएवा रएवा परियावजेज्जा तच निग्गथे नोसंचाइए निहरित्तएवा विसोहित्तएवा त निग्गंथी नीहरमाणीवा विसोहीमाणीवा णाइक्कमइ निग्गंथीए अहेपायसि खाणुवा कटएवा हिरएवा सकरेवा परियावजेज्जा तच निग्गथी नोसचाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तचे निग्गथे निहरमाणेवा विसोहेमाणेवा णाइकम्मइ निग्गंथीए अच्छिसि पाणेवा बीएवा रएवा परियावजेज्जा तच निग्गथी नोसचाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तच निग्गथे निहरमाणेवा विसोहिएवा णाइक्कमइ निग्गथे निग्गथी दुग्गसिवा विसमसिवा पव्वयसिवा पक्खलमाणवा पवडमाणवा गिण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ निग्गथे निग्गथी सेयसिया पकसिवा पणगसिवा उदगसिवा उक्कसमाणवा उवुज्झमाणेवा

गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. निग्गंथे निग्गंथी नावं आरोहमाणंवा उरोहमाणंवा गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. खित्तचित्तं निग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. दित्त चित्तं निग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. जखाइठ निग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमई. उमायपत्त निग्गंथी. उवसग्गपत्ति निग्गंथी. साहिगरण निग्गंथी. स पायच्छित्तं निग्गंथी. भत्तपाणपडियाए खियं निग्गंथी. अठजाय निग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमई ॥ १७ ॥

अर्थः—नि० साधुने चालतां अ० हेठे पा० पगना तलाने विषे खा० खीलो कं० कांटो ही० फांस अने स० कांकरा प्रमुख प० भांग्यो, प्रवेश कीधो, तं० ते च० वली नि० साधु नो० समर्थ नथी नी० काढवा वि० विशेष शुद्ध करवा; तं० ते नि० साधवी नी० काढतीथकी वि० विशुद्ध करतीथकी बाप बेटीनी बुद्धे करे तो णा० तीर्थंकरनी आज्ञा अतिक्रमे नही. एवां चौद सूत्रने उपदेशी कह्यां छे. वली ठाणायांग व्यवहार मध्ये कह्युं छे के, जो धीर्यवंत खरा अडोल चित्तनो धणी एटलां वानां करेतो आज्ञा अतिक्रमे नही, अने न करे तोपण आज्ञानो भंग नही. नि० साधुनी अ० आंखने विषे पा० प्राणी बी० बीज र० रज प० आवीने पडे, तं० ते नि० साधु नो० समर्थ नथी नि० काढवा वि० विशुद्ध करवा, ते नि० साधवी नी० काढतीथकी वि० विशुद्ध करतीथकी णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. नि०साधवीने अ० पगना हेठला तलाने विषे खा० खीलो कं० कांटो हि० फांस अने स० कांकरा प्रमुख प० शरीरने विषे खुचे प्रवेश करे तं० ते नि० साधवी नो० समर्थ नथी नि० काढवा वि० विशुद्ध करवा, तं० ते नि० साधु नी० मा बेटीनी बुद्धे काढतोथको वि०

विशुद्ध करतोथको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही नि० साधवीने अ० आखने विषे पा० प्राणी बी० बीज अने र० रज प्रमुख प० शरीरने विषे खुचे, आवीने पडे, त० तेने नि० साधवी नो० समर्थ नथी नि० काढवा वि० विशुद्ध करवा, त० तेने नि० साधु नि० काढतोथको वि० विशुद्ध करतोथको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही हवे साध साधवी साथे भेळो विहार करे नही, पण वाटे साथे सामा मळे, ए प्रयोग कदाचित उपजे तो ते वस्ततनु ए सूत्र जाणवुं वळी कुवा वीगेरेमा पडतीने अड़े तो पण आज्ञानो भंग थाय नही पोते संयमने विषे समर्थ दृढ रहे तो, ए ठामे आज्ञा अतिक्रमे नही कारण उपने ठले नि०साधु नि०साधवीने दु० व्याघ्रादिक आकुल मार्ग वि० वांको चुकी भरती अने प० पर्वतने विषे पक्ख० पीसली (खपसती) थकीने पव० भरतीए पडती थकीने गि० हस्तादिके ग्रहतोथको अ० सर्वांगे आधार देतो थको, (अक्षोभ मन तेथी) संयमने विषे धीर्य राखे तो णा० आज्ञा अतिक्रमे नही नि० साधु नि० साधवीने से० जल सहित कादव प० जल रहित कादव अने प० निपट ढीला कादवने विषे उ० नदी प्रमुखना पाणीने विषे जल खुती थकीने वुज्झ० बुवती थकीने गि० ग्रहतां थकां अ० आधार देतां थकां णा० आज्ञा अतिक्रमे नही नि० साधु नि० साधवीने ना० नावाये आ० चडती उ० उतरती अने पडती थकीने गि० ग्रहतो थको अ० अवलंबतो थको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही खि०शुन्यकार त्रि०चित्त भयना विपरीतादिकेकरी वीहलचीत्त थयुंछे एवी नि०साधवीने कुप दृढा विषे विषे पडती, नासती अने जोती होय तेने नि० साधु तयरोग अथवा भेली साधवी गि० ग्रहतो थको अ० अवलंबतो थको णा० आज्ञा अति-क्रमे नही एम दि० दीस चित्त जेनु (दर्पवंत चित्त) थयुं छे एवी नि० साधवीने नि० साधु गि० ग्रहतो थको अ० अवलंबतो थको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही ज० यक्षे प्रवेश कीधो होय जा यक्ष अधि-ष्ठीत होय एवी नि० साधवीने नि० साधु गि० ग्रहतोथको अ० अवलं-बतो थको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही उ० मायुना जोरे उन्माद करती

होय तेवी नि० साधवीने साधु ग्रहतो थको अवलंबतो थको आज्ञा अतिक्रमे नही. उ० व्याघ्र सिंहादिकना उपन्या उपसर्गे पडती होय तेवी नि० साधवीने साधु ग्रहतो थको आज्ञा अतिक्रमे नही. सा० शंक्लेशादिकथी कुपादिके पडे नि० ते साधवीने अधिकरणे करीने ग्रहतोथको आज्ञा अतिक्रमे नही. स० घणुं प्रायश्चित आववाथी भयभ्रांत छे चित्त जेनुं तेवी नि० साधवीने ग्रहतो थको आज्ञा अतिक्रमे नही. भ० अणसण कीधे पोते भ्रमकरी अरही परही जातीने ग्रहतो थको आधार देतो थको अतिक्रमे नही. अ० लोभ प्राप्तने लक्ष्मी पडी देखी मननी चपलताए करी, चित्त विभ्रमे करी लवरी करती नि० साधवीने नि० साधु गि० ग्रहतो थको अ० आधार देतो थको णा० आज्ञा अतिक्रमे नहिं. ॥

भावार्थः—हवे जुउ ! इहां कह्युं के, कोइ साधु एटलां कामोथी संयम भांगतो होय तेने साधु जबराइथी पकडीने राखेतो आज्ञा उलंघे नही. हवे ए जबराइ करवानी भगवंते साधुने धर्म जाणीने आज्ञा दीधी छे. ए न्याये धर्मने अर्थे कल्पती जबराइ करे तेमां पाप नथी. तेमज जीववी अनुकंपा आणी यथायोग्य जबराइ करी उगारे तेमां पण पाप नथी. वली श्री नेमनाथस्वामीए पण जीवोनी अनुकंपा करी छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २२ में. ते पाठः—

अहसो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए;
वाडेहिं पिंजरेहिंच, संनिरुध्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥
जीवियं तंतु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए;
पासित्ता से महापन्नो, सारहिं इण मब्बवी ॥ १५ ॥
कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो;
वाडेहिं पिंजरेहिं च, संनिरुध्धाय अच्छहिं ॥ १६ ॥

अह सारहि तवो जणाइ, एए जद्दाओ पाणिणो,
तुज विवाह कचंमि, जोयावेउं बहुजणं ॥ १७ ॥
सोऊण तस्स सोवयणं, बहु पाणी विणासणा,
चिंतेइ से महापन्ने, साणुकोसे जिए हिओ ॥ १८ ॥
जइ मज्ज कारणा एए, हम्मति सु बहु जिया,
न मेय एयतु निसेस्स परलोगे जविस्सइ ॥ १९ ॥
सो कुम्मलाण जुयल, सुतगं च महायसो,
आजणाणिय सवाणि सारहिस्स पणामइ ॥ २० ॥

अर्थ —अ० अथ हवे त० तेवार पछी नि० श्री नेमीनाथ त्यां जाता थकां दि० देखीने पा० मृगादिक प्राणीने ज० जयभ्रांत वा० वा ड़ामां तथा पिं० पींजरामा राखीने स० अतिशय रुंध्या छे ते सु० अतिघणा दुःखी जीवने देखीने ॥१४॥ जी० जीवीतव्यनो अंत स० पाम्या छे, एवा जीवने म० मासने अर्थे ज० मास खावाने अर्थे पा० देखीने से० ते श्री नेमीनाथ म० माहा प्रज्ञावंत सा० सारथी प्रत्ये इ० एम म० कहेता हवा ॥१५॥ क० शा अ० अर्थे इ० ए प्रत्यक्ष पा० जीव ए० ए स० सर्व जीव सु० सुखना वांछक वा० वाड़ामा पींजरामा रुंध्या छे ? अ० हवे सा० सारथी, ते श्री नेमीनाथे पुछ्युं त० तेवार पछी ज० कहेछे, ए० ए ज० सोजनीक मृगादिक पा० जीव छे ते तु० तमारा वि० विवाहना क० कार्यने विषे जो० घणा लोकने जमाडवाने अर्थे रुंध्या छे ॥१७॥ सो० सांजलीने त० ते सारथिनु वचन सो० ते श्री नेमीनाथे, ब० घणा पा० प्राणीजीवना वि० विनाशकारी वचन शांजलीने चिं० चिंतवे छे से० ते श्री नेमनाथ म० महा प्रज्ञावंत सा० दया सहित जि० जीवने विषे हि० हित छे जेनु॥१८॥ज० जो म० मारे का० काजे ए० ए ह० हणाशे सु० अति ब० घणा जि० जीव, तो न० नही मे० मुजने ए० ए जीवघात नि० कल्याणकारी प० परलोकने विषे ज० थाय ॥१९॥ सो० ते श्री नेमीनाथे कु० कुंडलनु जु०

जोऊं सु० कणदोरा प्रमुख म० महा यशवंत आ० आजर्ण स०सर्व मुकुट वर्जिने सा० सारथिने प० दीधां. ॥ २० ॥

जावार्थः—हवे जुर्ज ! जीवनी अनुकंपा तथा जोवीतव्यने हेते श्री नेमनाथ जगवंत तोरणथी पाठा फर्या. हे देवानुप्रीय ! असंजति जीवने बचाव्यामां पाप कये न्याये कहोगे ? ए असंजति जीवोनुं जीवीतव्यश्री नेमीनाथ जगवंते केम वान्छयुं ? ते कहो. वली चीत्तमुनीराजे ब्रह्मदत्त चक्रवृतने कह्युं के. तुं सर्व प्राणीनी तथा सर्व प्रजानी अपुकंपा कर. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन १३ में. गाथा ३२ मीः—

जइ तेसिं जोगे चइउं असंतो अज्जाइ कम्माइं करेहिं रायं
धम्मेठिउ सव पयाणुकंपी तो, होहिसि देव इउ विउवी. ३२

अर्थः—ज० जो ते० ते जो० जोग च० ठांरुवा अ० (अशक्त) असमर्थ ठे तो ए अ० आर्य क० काम करे० कर. रा० हे राजा ! ध० ग्रहस्थना धर्मने विषे ठि० रेहेतां थकां स० सर्व पया० जीवनी अनुकंपा करवी, करावबी, ए आर्य कर्म कर. ग्रहस्थनो धर्म पालीश तो० तोपण हो० थइश दे० देवता इ० ए मनुष्य जवथी वि० विक्रय शरीरवंत ॥ ३२ ॥

जावार्थः—हवे जुउ ! चित्तमुनीए ब्रह्मदत्तने कह्युं के "जो तमारो जोग त्यागवानी बुद्धि नथी, तो तमे हे राजेंद्र ! आर्य कर्म तो करो." हवे नियाणा-कृतने त्याग तथा साधु श्रावकनां व्रत तो आवे नहि, त्यारे आर्य कर्म शुं करवुं कह्युं ते कहो. ए आर्य कर्म कहेतां जीवनी दया पलाय, धर्म तथा समकितने विषे स्थिर रहे अने सर्व प्राणीनी तथा प्रजानी अनुकंपा करे, तोपण तमारे पुन्य बंधासे; तेथी विक्रय रिद्धिनो धणी देवता थइश, एम कह्युं. अहो देवानुप्रीय ! तमे प्राणी जीवनी अनुकंपा कीधामां तथा जीवदया पलाव्यामां पाप कये न्याये कहो ठो ? वली उत्तराध्ययन अध्ययन २१ मानी गाथा १३ मीमां कह्युं छे के,

साधु अनेरा जीवनु दुःख अनुकंपे, ते परजीवना जीवीतव्यनो तथा हीतनो वंछणाहार थाय ते गाथा –

सव्वेहिं भूएहिं दया णुकंपी, खंती खमे संजय बंभयारी;
सावज्जजोग परिवज्जयंतो, चरेज्ज भिक्खू सुसमाहि इंदिए ॥१३॥

अर्थ—स० सर्व भू० जीवने विषे द० दयाएकरी अ० परजीवनुं दुःख देखीनें कंपे, परजीवने हितनो करणहार, ख० क्षमाए करी खं० दुर्वचन खमे, स० संयति व० ब्रह्मचारी सा० पापनो जो० व्यापार प० सर्वथा प्रकारे वर्जतोथको च० विचरे भि० साधु सुस० भली समाधिए करी सहित इ० इन्द्रिउं छे जेनी एवो ॥ १३ ॥

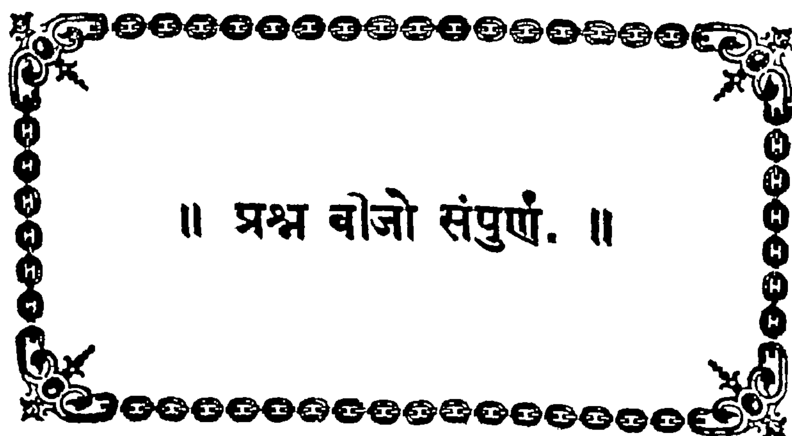
भावार्थ—हवे जुओ ! इहा कह्युं के, साधु सर्व जीवनी अनुकंपा करे तथा हीत वान्छे त्यारे हे देवानुप्रीय ! तमे संजतिनी तथा सर्व जीवनी अनुकंपा कर्यामा तथा दया पाल्यामां पाप केम कहोछो ?

तेंवारे तेरापंथी कहेछे के "दुःखी जीवने देखीने चिंतववु के "अरेरे! ए जीव कर्मने वशे दुःखी छे, एना कर्म तुटेतो ठीक" एवी चिंतवना करें तेने अनुकंपा कहीये, पण आहार वस्त्रादिक देइ शाता उपजाववी क्या कही छे ?" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! दुःखीनु दुःख देखी अनुकंपा लावी दुःख मटाडे, तेनेज अनुकंपा कहीये ठामठाम ज्यां अनुकंपा आवी त्यां त्यां दुःख मटाडवानुज कह्यु छे, पण "ए जीव कर्मने वशे दुःखी छे, तेथी एना कर्म तुटेतो ठीक" एवी चींतवणाज करवी तेने अनुकंपा कहीये, एम तो क्याय कह्यु नथी तमे मतनें खींचे एवो जुठा अर्थ केम करोछो ? वली उत्तराध्ययन सूत्रनी १५ मां अध्ययननी गाथा १२ मीमा कह्युं छे के, जे साधु अस्नादिक चार अहार लावीने, रोगी (गीलाण) साधुनी अनुकंपा करीने दे तेनेज साधु कहीए ते पाठः—

जंकिंचि आहार पाणजाइ विविह खाइमं साइमं परेसिं लध्धुं, जो तं तिविहेण नाणुकंपे मण वय काय, सुसंवुडे स भिक्खू. ॥ १२ ॥

अर्थः—जं० जे कोइ आ० असनादिक आहार पा० पाणीनी जाती वि० अनेक प्रकारे खा० द्राक्ष खजुरादिक सा० लविंगादिक मुखवास प० ग्रहस्थ कनेथी ल० पामीने, लावीने जो० जे तं० ते आहारादिक ति० त्रीविधे त्रिविधे मन, वचन, कायाए करी ना० जे बाल गिलाणादिकने संविजाग करी दे, म० मन व० वचन का० कायाए करी सु० जलीपरे सं० जेणे आश्रव कषाय संवर्या छे एवो होय तेज जि० साधु. ॥ १२ ॥

जावार्थः—ए जुत ! इहां कह्युं के, साधु आहारादिक पोते लावीने रोगी (गीलाण) साधुने अनुकंपा आणीने आपे, तेनेज जिखु (साधु) कहीए, एम कह्युं; पण एम न कह्युं के, रोगी गीलाण साधुने देखी "अहो ! ए कर्मने वशे रोगी दुःखी छे. एनां कर्म तुटे तो ठीक. जो एने आहारादिक, औषधादिक देशुं तो एनां कर्म तुटतां रही जाशे." एवुं चिंतववुं तेने अनुकंपा कहीये, एम तो नथी कह्युं. तमे मतने लीधे एवी कुयुक्ति लगावीने अनंत संसार केम वधारो छो ?—


॥ प्रश्न बीजो संपुर्ण. ॥

प्रश्न त्रीजो.

दान देवा विषे.

वळी तेरापंथी कहे छे के 'साधु विना अगीआरमी पडिमाधारी श्रावकथी मांडीने सर्वने दान दीधाथी एकान्त पाप निपजे छे.' तेओ दानमां कांइ पण पुन्य के लाभ न जाणतां एकान्त पाप परुपे छे. एवी खोटी श्रद्धा राखनारने पुछवुं के, हे देवानुप्रीय ! साधु विना श्रावकने तथा गरीब रांक भीखारीने डुर्बल दुःखी देखीने, अनुकंपा आणीने शुभजोगथी कोमल भाव लावीने आपे, तथा श्रावकने धर्मध्यान कर- वाने साज आपे, तेने पाप कया सूत्रमां कह्युं छे ते पाठ बतावो. तेवारे तेरापंथी भगवतीसूत्र शतक ८ मे, उद्देशा ६ ठानी जुठी शाख देखाडे छे. ते त्रीजा पाठमां असंजतिने श्रावक दान दे तेमां एकान्त पाप कह्युं छे, एम कहे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! त्यां तो त्रणे पाठमां श्रावक मोक्षने अर्थे दान देतो प्रतिलोभतो थको शुं फल पामे ? एवी पुछा छे. ते पाठः-

समणोवासगस्सणं भंते ! तहारुवाणं समणंवा माहाणंवा फासु एसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिला- भेमाणस्स किंकज्जइ ? गोयमा ! एगंत सोसे निज्जरा क- ज्जइ नत्थियसे पावकम्मे कज्जइ. समणोवासगस्सणं भंते ! तहारुवं समणंवा माहणंवा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणं पाणं जाव पडिलाभेमाणस्स किंकज्जइ ? गो० ! बहुत्तराएसे णिज्जरा कज्जइ, अप्पत्तराएसे पावकम्मे कज्जइ. समणोवासगस्सणं भंते! तहारुवं असंजय अविरय अपडिहय अपच्चक्खाय पावकम्मे फासुएणवा अफासुएणवा एसणिजे-

णवा अणेसणिजेणवा असणं ४ जाव किंकज्जइ ? गोयमा! एगंतसोसे पावकम्मे कज्जइ, नत्थिसेकावि णिज्जरा कज्जइ॥

अर्थ —स० श्रमणोपासक श्रावकने भ० हे भगवंत! त० तथारुप तपयोग उपशमे करी सहित स० श्रमण प्रत्ये अथवा मा० माहण प्रत्ये फा० प्रासुक (निर्जीव) ए० एषणिक (४२ दुषण रहित) एवा अ० अन्नादिक पा० पाणी द्राक्षादिकनु खा० मेवा सुखडी प्रमुख सा० सा दिम (सविंगादिक प्रमुख), ए चार आहार प० प्रतिलाभता थकाने कि० शु फल थाय ? ए प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम! ए० ते श्रमणोपासकने एकान्त नि० निर्जरा क० कर्मनो क्षय हेतु फल थाय, नं० नथी से० तेने पा० पाप कर्म एटले साधुने प्रासुक दान दे तेने कर्मनी निर्जरा थाय, ने पापकर्म न थाय अथ अप्रासुक दान विषे बीजुं सूत्र कहेछे:— स० श्रमणोपासक भ० हे भगवान! त० तथारुप स० श्रमण प्रत्ये मा० माहण प्रत्ये अ०अप्रासूक (सजीव) अणे० अनेषणिय (दुषण सहित), एवा अ० असन पा० पान, खादिम, सादिम जा० यावत् प० प्रतिलाभ तायकाने कि० शुं फल थाय ? ए प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम! ब० पाप कर्मनी अपेक्षाये घणी णि० निर्जरा थाय, ने अप्प० निर्जरानी अपेक्षाये अल्पतरे पा० पापकर्म थाय इहा ए भावना गुणवत पात्रने कामे अ प्रासुक दान दीधाथी चारित्र कायनो उपष्टंभ थाय अने जीवघात पण थाय. ते व्यवहारथी चारित्र बाधा थाय त्यार पछी चारित्र कायोपष्ट भथी निर्जरा थाय अने जीवघातादिकथी पापकर्म थाय त्या स्वहेतु सामर्थ्यथी पापनी अपेक्षाये बहुत्तर निर्जरा थाय, अने निर्जरानी अपे क्षाये अल्पतर पाप थाय साधुने अप्रासुक दाने अल्प पाप, ने निर्जरा घणी, एम सूत्रे कह्युं इहा केटलाक एम कहे छे के, असथरणादि कार णेज अप्रासुक दाने घणी निर्जरा थाय, परतु कारण विना नहिं यत उक्त "संथरणंमि असुद्धं दोणवि गण्हत दित्तयाणहियं आउर दिठं तेण तंचेव हिय असंथरणे " वली केटक एम कहेछे के, अकारणे पण

गुणवंत पात्रदान काजे अप्रासुक दीधाथी प्रणाम वसथी घणी निर्जरा थाय. अति थोडुं पापकर्म निर्विशेषपणाथी थाय, ते प्रणामना प्रधानपणाथी. आहच्चः—परम रहस्स मिसिणं समत गणिपिडग करीया साराणं परिणामियं पमाणं निछय मवलंबमाणाणं ॥ १ ॥ जे संथरणंमि असुद्धं इत्यादिक कह्युं, ते अशुद्ध देणहारना अहितने काजे थाय. ते ग्राहकने व्यवहार संजम विराधनाथी अने दायकने लुब्धक दृष्टान्त नावितपणे करी; अथवा अच्युतपन्नपणे करी देतां शुन्न अल्प आउखाना निमित्तपणाथी, ते शुन्न आयु बांधे पण अल्प ते अहित जाणवुं. ते शुन्न आउखाना निमित्तपणेकरी अप्रासुक दानने अल्प आउखा फल प्रतिपादक सूत्रने विषे पेहेलां चर्च्युं छे. वली इहां तत्व केवलीगम्य छे. हवे त्रीजुं सूत्र कहेछे. स० श्रमणोपासकने नं० हे नगवान ! त० तथारुप चारित्र गुणे करी रहित सामी शाक्यादिक अ० असंजति अ० अव्रति (पापकर्म पचख्यां नथी) अप० पचखाणेकरी पापकर्मने जेणे हण्यां नथी, इत्यादिक गुण रहित पात्रनुं विशेष कह्युं, ते प्रत्ये फा० प्रासुक (अचित) अथवा अफा० अप्रासुक (सचित—सजीव) ए० एषणिय (दुषण रहित) अथवा अणे० अनेषणिय (दुषण सहित) एवा अ० असनादि चार आहार जा० यावत् प० प्रतिलानताथकाने किं० शुं फल थाय ? गो० हे गौतम ! ए० तेने एकान्त पाप कर्म थाय, पण न० न तेने कांइ पण णि० निर्जरा थाय. वली ए पाठना अर्थमां तथा वृत्तिमां नीचे मुजब गाथा कही छेः—

मोक्खत्थं च जेदाणं, एसविियस्स सुक्कात्;
अणुकंपा दाणं पुणः जिणेहिं कयाइ न पडिसिद्धं ॥ २ ॥

एनो नावार्थ मोक्षने अर्थे गुरुनी बुद्धिए प्रतिलाने तो तेने एकान्त पाप (मिथ्यात्व) लागे; पण अनुकंपा दान पुन्य कोइ तीर्थंकरे निषेध्युं नथी.

नावार्थः—हे देवानुप्रीय ! आ त्रीजा पाठमां तो एम नथी कह्युं

के, रांक, भिखारी, दुर्बलने मरता देखीने अनुकंपा आणीने दान दे तेने एकान्त पाप लागे ए त्रीजा पाठमा तो तथारुप असजति अव्रतिने, प्रासुक अप्रासुक एषणिक अणेषणिक प्रतिलाभे तो एकान्त पाप लागे, पण निर्जरा नथी एम कह्यु छे ए तमे जाणताथका मतना लोभे तथारुप शब्द छुपावीने, घोघा लोकोने व्हेकाववाने काजे 'असजति, अव्रति, मागता भीखारी अने दुर्बलने अनुकपा लावीने दान दे तेने एकान्त पाप लागे ' एम केम कहो छो ? इहा तो तथारुप असजतिने प्रतिलाभे तो एकान्त पाप कह्यु छे हवे तथारुप केने कहीये ? जेनो असजति अन्यतीर्थीनो वेष छे तथा असजति अव्रतिपणानां लक्षण छे, जे मिथ्यात्वनो मालीक छे, मिथ्यात्व परुपे छे, तेने अन्यमति धर्म जाणीने तथा गुरु जाणीने रसोइ आपे छे, तेनी परे श्रावक गुरुनी बुद्धिए करी आपे तो मिथ्यात्वनु पाप लागे ए असजतिनो वेष, असजतिपणाना अवगुण तथा अव्रति, अपचखाणी, ते आश्री प्रश्न छे तेवारे तेरापंथी कहेछे के " असजतपणु, अव्रतपणु, अपचखाणपणुं अने मिथ्यात्वपणुं जेनामां होय तेनेज तथारुप कहीये अन्यमतिना वेसनुं काइ कारण नथी मागता भीखारी असजति, अव्रति, अपचखाणी छे तेने तथारुपज कहीये तेने दीधानु पाप कह्युं छे वेशनु कांइ कारण नथी " तेनो उत्तर —

हे देवानुप्रीय ! पेहेला पाठमा तो तथारुप समण माहणने प्रासुक एषणिक प्रतिलाभे तो एकान्त निर्जरा कही, तेने पाप कर्म न लागे कयुं हवे जुओ ! ए तथारुप समण माहण, रंघो मुहपत्ति आदि सलिंगीपणानो वेश राखे, अने असजति अव्रति अपचखाणीपणाना गुण सहित होय, तेने प्रतिलाभ्यानो निर्जरारुप लाभ कह्यो ? के सलिंगीना वेश विना सजति व्रति पचखाणीपणाना गुण होय, तेने प्रतिलाभ्यामां निर्जरारुप लाभ कह्यो ते कहो जो सलिंगी साधुपणाना वेश विना सजति साधुपणाना गुण होय, तेने प्रतिलाभ्यामा निर्जरा (मोक्ष) नु फल केहेशो तो, असजति अन्यलिंगीना वेशना भावे साधपणु आवे, अने केवल

ज्ञान पण उपजतुं कह्युं छे. शाख सूत्र भगवती शतक ए में, असोचा-केवलीना अधिकारमां. पण त्यां एम कह्युं छे के, दिक्षानो उपदेशतो दे, पण पोते चेलो करे नहिं. हवे जुओ! तथारुप वेशनुं कारण न होय तो चेलो केम न करे? डाह्या हो ते विचारी जो जो. तेमज चौद भेदे पंदर प्रकारे सिद्ध सिध्या कह्या छे. शाख सूत्र पन्नवणा तथा नंदीमां. ते पाठः-

से किंतं सिद्ध केवलनाणं २ दुविहा पन्नत्ता तंजहाः-अणंतरंसिद्ध-केवलनाणं परंपरसिद्ध-केवलनाणं. से किंतं अणंतरंसिद्ध-केवलनाणं २ पनरस विहा पंन्नना तंजहाः-तित्थसिध्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थंगरसिध्धा ३ अतित्थंगरसिध्धा ४ सयंबुध्धसिद्धा ५ पत्तेयबुध्धसिध्धा ६ बुध्धबोहियसिध्धा ७ इथिलिंगसिध्धा ८ पुरिसलिंगसिध्धा ए नपुसकलिंगसिध्धा १० सलिंगसिध्धा ११ अन्नलिंगसिध्धा १२ गिहलिंगसिध्धा १३ एगसिध्धा १४ अणेगसिध्धा. १५.

अर्थः—से० ते किं० कयुं सि० सकल कर्मना दहणहार (सिद्ध) नुं केवलज्ञान ? ते केवलज्ञानना दु० बे भेद प० परुप्या तं० ते जेम छे तेम कहे छेः-अ० आंतरा सहित एटले अहिंथी देहो छोडी एक समय सिद्धगतिमां पोंहोंच्याने थयो ते अनंतरसिद्ध-केवलज्ञान. १ प० सिद्धगतिमां पोंहोंच्याने अंतर मुहूर्त आदि संख्यातो, असंख्यातो अने अनंतो काल ओलंघ्यो ते परंपरसिद्ध-केवलज्ञान. २ से० ते कि० कयुं अ० अनंतरसिद्ध-केवलज्ञान ? ते अनंतरसिद्ध-केवलज्ञानना प० पंदर भेद प० परुप्या तं० ते जेम छे तेम कहे छेः-ति० जेथी तरीए तेने तीर्थ कहीये. तेना बे भेद, द्रव्य ने भाव. इहां नदी आदिके नाहावुं अथवा यात्रा करवानां तीर्थ, ते सर्व द्रव्य तीर्थ, एथी संसार न तराय; अने आदिनाथजीनुं सासन ते सर्व भाव तीर्थ, एथी संसार तराय. एने विषे आदिनाथना प्रथम गणधर रुषभसेन, तथा वर्धमान स्वामीना प्रथम

गणधर गौतमस्वामी प्रमुख सिध्या तेनी परे सिध्या ते तीर्थसिद्धा १ अ० तीर्थना आतरे तीर्थना विरहने विषे जातिस्मरणादिके करी सिध्या ते, तथा तीर्थ प्रवर्ताव्या विना सिध्या ते अतीर्थसिद्धा, मरुदेवीवत् २ ति० पूर्वोक्त तीर्थना जे स्थापनहार ते तीर्थंकर सिद्धा ते श्रीऋषभदेववत् सर्व जाणवा ३ अति० जे सामानिक केवली-छता गौतमादिकनी परे सिध्या ते अतीर्थंकरसिद्धा ४ स्व० स्वयमेव पोतेज जातिस्मरणादिक ज्ञाने करीने तत्वना जाण थया ते स्वयंबुद्धसिद्धा ५ प० प्रत्येकबुद्ध जे कांइ एक वृषभादिक वस्तु देखीने अनित्य भावनादिकनु कारण, तेनी प्रतीते बुझया ते प्रत्येक बुद्धसिद्धा ६ हवे स्वयंबुद्ध अने प्रत्येकबुद्धमा शु विशेष होय ते कहे छे -बोध १, उपधि २, श्रुत ३, अने लिंग ४ ए चार प्रकारे फेर होय हवे बाह्य प्रत्यय विना (कोइ कारण विना दीठे) स्हेजेज जातिस्मरणादिके बुझे तेने स्वयंबुद्ध कहीये ते बे भेदे होय तीर्थंकर स्वयंबुद्ध अने अतीर्थंकर-स्वयंबुद्ध अने बाह्य कारण देखीने प्रतिबोध पामे तेने प्रत्येकबुद्ध कहीये, करकंडु प्रमुख ते निश्चे एकाकीज विचरे, पण गछवासी न होय, इति बोधी विशेष

वली स्वयंबुद्धने सात पात्रना उपगर्ण, त्रण पछेडी, रजोहरण अने मुखवस्त्रीका, ए बार उपगर्ण होय (गाथा-पत्त १ पत्ताबंधो २ पाय ठवणंच ३ पायकेसरिया ४ पडिलाय ५ रयत्ताण ६ गोछंउ ७ पायनिथोगो ८ तिणेवए ९ पछागा १० रयहरण ११ चेव होइ मुहुपत्ति १२) अने प्रत्येकबुद्धने तो जघन्य रजोहरण ने मुखवस्त्रिका ए बेज उपगर्ण होय, अने उत्कृष्टा सात उपगर्ण पात्राना तथा रजोहरण अने मुहपत्ति ए नव उपगर्ण होय ए उपध्य विशेष २ वली स्वयंबुद्धने पुर्व भवाधित श्रुत पण होय अने न पण होय, पण जेने पुर्व भवाधित श्रुत होय तेने लिंग देवता आपे, अथवा पोते गुरु पासे जइने ले जो एकाकी विचरवा समर्थ होय तथा पोतानी इछा होय तो एकाकी विचरे, नहिं तो गुरु पासे गछमा रहे, अने जेने पुर्वाधित श्रुत न होय तेतो निश्चय गुरु पासे जइनेज लिंग आदरे, अवश्य गछमाज रहे अने प्रत्येकबुद्धने

तो पुर्वाधित श्रुत निश्चे होयज, जघन्य अगीयार अंग अने उत्कृष्टा कांइक उणा दस पुरव होय. तेने लिंग देवता आपे अथवा लिंग रहित पण होय. एम श्रुत विशेष लिंग विशेषथ्थ. ५ । ६ बु० जे आचार्यना प्रतिबोध्या सिध्या ते बुद्धबोद्धित–सिद्धा. ७ इ० स्त्रीना लिंगे सिध्या ते स्त्रीलींगसिद्धा. तेना बे भेदः–द्रव्यस्त्री अने भावस्त्री. वेद सहित होय ते न सिजे, अने द्रव्य स्त्री अवेदी सिजे, अथवा पुरुषे स्त्रीनो वेश कर्यो होय ते सिजे. ते स्त्रीलिंगसिद्धा. ८ पु० पुरुष लिंगे सिद्ध थाय तेने पुर्षलिंगसिद्धा कहीये. ९ न० नपुशक लिंगे सिद्धा तेना बे भेदः– जन्म नपुंषक अने कृत्रिम नपुंषक. तेमां कृत्रिम नपुंषकज सिजे. ते नपुषकलिंग-सिद्धा. १० स० रजोहरण, मुहपत्ति आदि साधुना वेष सहित सिध्या ते सलिंगी-सिद्धा. ११ अ० अन्यतीर्थीना वेषमां भावे साधुपणुं आवे, ने सिद्ध थाय ते अन्यलिंग-सिद्धा. १२ गि० ग्रहस्थीना लिंगमां भावे साधपणुं पामी सिध्या (भरतादिवत्) ते ग्रहस्थलिंग-सिद्धा. १३ ए० एक समयमां एक सिध्या ते एक सिद्ध, वर्धमानस्वामीवत्. १४ अ० एक समयमां एकसो ने आठ सिजे ते अनेकसिद्धा, ऋषभदेवस्वामीवत्.

भावार्थः—हवे जुओ ! इहां अन्यलिंगी तथा ग्रहलिंगीना वेशमां भावे साधपणुं आवे, तेथी केवलज्ञान उपजे (सिद्धे) कह्युं. हवे ज्यारे तमारे तथारुप वेशनुं कांइ कारण नथी, त्यारे अन्यलिंगी तथा ग्रहलिंगीना वेशमां संजति–व्रति साधुपणाना गुण जाणीने वंदणा केम नथी करता ? आहारपाणीना संजोग केम नथी करता ? तमारा श्रावक वंदणा केम नथी करता ? तथा निर्जरा मोक्षरुप लाभ जाणीने आहारादिक केम नथी देता ते कहो. वली सामायक १, छेदोपस्थापनी २, शुक्ष्मसंप्राय ३, अने जथाख्यान ४, ए चार चारित्र तथा ७ नियंठा अन्यलिंगी तथा ग्रहलिंगीमां भावे कह्या. शाख सूत्र भगवती शतक २५ में उद्देशो छठे तथा सातमे. ते पाठः—

पुलायणं नंते ! किं सलिंगे होज्जा अण्णलिंगेहोज्जा ? गो० ! दव्वलिंगपडुच्च सलिंगेवाहोज्जा अन्नलिंगेवाहोज्जा गिहलिंगेवाहोज्जा नावलिंगपडुच्च नियमा सलिंगेहोज्जा एवं जाव सिणाए. ॥६॥ सामाइय सजएण नंते ! किं सलिंगेहोज्जा अन्नलिंगेहोज्जा ? जहा पुलाए एव छेदोवठावणिएवि परिहार विसुध्दि सजयण नंते ! किं पुरा ? गो० ! दव्वलिंगवि नावलिंगवि पडुच्च सलिंगेहोज्जा नोअन्नलिंगेहोज्जा नोगिहलिंगेहोज्जा सेसा जहा समाइय सजए ॥ ७ ॥

अर्थः—पु० पुलाक न० हे नगवान ! किं० शुं स० पोताने लिंगे होय ? अ० अन्यलिंगे होय ? के गृहलिंगे होय ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गोतम ! त्यां लिंग बे प्रकारे छे –द्रव्यलिंग अने नावलिंग त्या नावलिंग ते ज्ञानादिक ए स्वलिंगज ज्ञानादि नावने अरिहंतनाज नावथी, अने द्रव्यलिंग बे प्रकारे –स्वलिंग अने परलिंग त्या स्वलिंगने रजोहरणा विगेरे होय, अने परलिंगना बे प्रकार –कुतीर्थलिंग अने गृहस्थलिंग एटला माटे द० द्रव्यलिंग आश्रीने स० स्वलिंग अ० अन्यलिंग अथवा गि० गृहस्थलिंगने विषे पण होय, ना० नावलिंग आश्रीने नि० निश्चे स० सलिंगनिज होय, ए० एम जा० जावत् सि० सनातक सुधी केहेवु ॥ ६ ॥ सा० सामाइक सजत न० हे नगवान ! कि० शु स० सलिंगीने होय ? के अ० अन्यलिंगीने होय ? जे० जेम पु० पुलाकने कह्यु तेम केहेवु ए० एम छे० छेदोपस्थापनिय पण केहेवु प० परिहार विशुद्धि ते शुं ? इत्यादिक प्रश्न उत्तर गो० हे गोतम ! द० द्रव्यलिंग अने ना० नावलिंग आश्रीने स० सलिंगीने विषेज होय, पण नोअ० अन्यलिंगीने विषे न होय नोगि० गृहलिंगीने विषे न होय से० शेष ज० जेम स० सामाइक सजत कह्यु तेम केहेवु ॥ ७ ॥

नावार्थ —हवे जुओ ! इहां सूत्रमा अन्यलिंगी अने गृहलिंगीमां

चार चारित्रना अने छ नियंठाना साधुपणाना भाव कह्या. हवे तमे कहोछो के "तथारुपमां वेशनुं कारण कांइ नथी. असंजतिपणुं अव्रतिपणुं होय ते मागता भीखारी सर्वने तथारुप असंजति कहीये. तेने दीधानुं पाप कह्युं छे." ए लेखे सलिंगी साधुना वेश विना अन्यलिंगी तथा गृहलिंगीमां भावे चार संजम तथा छ नियंठा (साधपणुं) होय. ते तमारे लेखे तथारुप समण माहण पेहेला पाठमां कह्या तेज जाणवा. तेने प्रतिलाभ्यां एकान्त कर्मनी निर्जरा (मोक्षरुप लाभ) जाणीने तमे केम नथी वांदता? आहारादिकनो संभोग केम नथी करता? तथा श्रावक केम नथी वांदता ? अने निर्जरा (मोक्षनो लाभ) जाणीने आहारादिक केम नथी देता ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अन्यलिंगी गृहलिंगीमां भावे चार चारित्र अने छ नियंठा होय तो खरा, पण कोइने अतिशय ज्ञानविना खबर पडे नहिं, तेथी ते वंदणा करवा तथा संभोग करवा जोग नथी." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! तमने तो ज्ञानविना खबर नथी, पण केवलज्ञानी अन्यलिंगी तथा गृहलिंगीमां भावे साधुपणुं जाणीने संभोग करे के नहिं ? तथा बीजा छद्मस्थ साधु तथा श्रावकने वंदणा करवानी, संभोग करवानी तथा आहारादिक देवानी आज्ञा आपे के नहिं ते कहो. तेवारे तेरापंथी पण कहेछे के, "सलिंगी साधुपणाना वेश विना व्यवहार अशुद्ध, तेथी अन्यलिंगी तथा गृहलिंगीमां भावे साधपणुं जाणीने केवलज्ञानी संभोग करे नहिं, तथा बीजा साधु श्रावकने वंदणा करवानी तथा आहारपाणी आपवानी आज्ञा दे नहिं."

त्यारे हे देवानुप्रीय ! सलिंगी साधुनो वेश, संजति व्रति अने पचखाणीपणाना गुण, तेने पेहेला पाठमां तथारुप समण माहण कहो छो, ते सलिंगी साधुपणाना गुण सहितने प्रतिलाभ्यां शुद्ध व्यवहार मानो छो, ने निर्जरा मोक्षरुप फल मानो छो, अने सलिंगीना वेश विना भावे साधपणुं होय तेने वंदणा न करो अने आहारादिक दीधामा निर्जरा न मानो, तो त्रीजा पाठमां असंजतिना वेश विना तथारुप केम

मानो छो ? मागता भीखारी दुर्बलने असजति अव्रतिपणु जाणीने तथा-रुप असजति केम कह्यो छो ? तेने प्रतिलाभ्या एकान्त पाप कह्यु छे, एम जुठ केम बोलो छो ? इहातो तथारुप असजति कह्यो छे ते अन्य मतिनो वेश छे, मिथ्यात् प्ररुपे छे अने गुरु करीने पुजावे छे तेनो श्रावक आलापसलाप करे अने अशनादिक प्रतिलाभे तो लोकीक मिथ्यात् लागे भद्रिक गृहस्थ एम जाणे के, ए जिनमार्गी श्रावक अन्यमतिने रसोइ दे छे, दान दे छे, तो ए पण तारणतरण छे एम मिथ्यात् दीपे वली श्राव कने अन्यदर्शनीनो सांसतो-परचो वर्ज्यो छे जो अन्य दर्शनीनो सांसतो परचो करे तो समकितमा अतिचार लागे तेथी तथारुप असजतिने प्रतिलाभे तो परपाषन्डीनो सासतो-परचो थाय, एज मिथ्यातनुं पाप लागे वली अन्यमतिना वेश विना जे असंजति अव्रति छे, तेनेज तथा रुप असजति मानीए तो श्रावकने ज्ञातीगोत्री, दासदासी, तिर्यंच अने मागता भीखारी ए सर्व असजति अव्रति छे,तेनो सासतो-परचो करवाथी समकितमा अतिचार लागे, त्यारे ते करवाथी श्रावकनु श्रावकपणुं (समकित) शी रीते रहे ते कह्यो

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " अन्यमतिनो वेश तथा परपाषन्डीपणुं धारण कीधुं तेनो सासतो परचो करे तो समकितमा अतिचार लागे" त्यारे हे देवानुप्रीय ! जेनो सासतो-परचो कर्यां अतिचार लागे तेनेज तथारुप असजति अव्रति कहीये तेने प्रतिलाभे तो मिथ्यातनुं पाप लागे, एम प्रजुए त्रीजा पाठमां कह्यु छे, अने तमे कहोछो के " तथा रुपमां वेशनु कारण कांइ नथी असजति अव्रतिपणु होय तेनेज तथारुप असजति कहीये " त्यारे अभविने सलिंगी-साधुनो वेश छे, व्यवहारमा साधुपणु पाले छे, अने निश्चेमा असंजति, अव्रति, अपच खाणी छे ते तमेतो ज्ञान विना नथी जाणता, पण केवलज्ञानीतो जाणे छे एवे अभविने सलिंगी-साधुनो वेश व्यवहार शुद्ध जाणीने, पेहेला पाठमां तथारुप समण माहण कह्या तेमु जाणीने केवली सजोगमा रहे तथा बीजा साधु श्रावकने वंदणा करवानी तथा आहारपाणी

देवानी आज्ञा दे, के भावे असंजति अव्रति अपचखाणी जाणीने वेशनुं कारण कांइ नहिं, एम जाणीने त्रीजा पाठमां तथारुप असंजति, अव्रति कह्या तेवो जाणीने केवलज्ञानी संभोग बाहार काढे ते कहो. वली पूर्वोक्त कथनने स्पष्ट करवा अर्थे चोभंगी कहीये छीए, के एक तो साधुनो वेश अने संजति-व्रतिपणाना गुण १, एक साधुनो वेश अने असंजति अव्रति अपचखाणीपणाना गुण निश्चेमां, ए अभवि साधु २, एक अन्यलिंगीनो वेश अने संजति व्रति पचखाणीपणाना गुण अन्य-लिंगीमां भावे साधपणुं ते आश्री ३, अने एक अन्यमतिनो वेश अने असंजति अव्रति अपचखाणीपणाना गुण ते त्रणसो त्रेसठ पाखंडी ४, ए चार भांगामां पेहेला पाठमां कया भांगा अने त्रीजा पाठमां कया भांगा ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " पेहेलो अने बीजो भांगो तो पेहेला पाठमां छे, तेने दीधां तो एकान्त निर्जरा थाय, पाप नथी; अने त्रीजो ने चोथो भांगो त्रीजा पाठमां छे, तेने दीधां एकान्त पाप थाय. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! तथारुपमां तमे कहोछो के, वेषनुं कारण कांइ नथी, तो बीजा भांगामां अभवी साधुने भावे असंजति अव्रति अप-चखाणी केवली जाणे छे, तेने पेहेला पाठमां केम गणो ? अने त्रीजा भांगामां अन्यलिंगीमां भावे साधुपणुं होय, तेने केवलज्ञानी गुण आश्री भावे संजति वृत्ति पचखाणी जाणे छे, तेने त्रीजा पाठमां केम गणो? वेशनुं कारणतो तमारे लेखे कांइ नथी, गुण तो संजतिपणाना छे. पण हे देवानुप्रीय! तथारुप तो वेशथीज जाणयो जाय. तेथी त्रीजा पाठमां तथारुप-असंजति कह्यो छे. ते असंजति पाखंडीनो वेश छे, मिथ्यात्व प्ररुपे छे, अने मिथ्यात्वनो मालीक छे, तेनोज अधिकार छे. तेने पण दी-धानुं पाप नथी कह्युं. "पडिलाभेमाणे किं कज्जइ" एवी पृछा छे. प्रतिलाभ नाम तो परम उत्कृष्ट लाभ मोक्षरुप निर्जरारुप लाभ जाणीने गुरुनी बुद्धे दे तेनेज कहीये; पण मागता भीखारी दुर्बलने अनुकंपा आणीने दान दे, तेने बत्रीस सूत्रमा कोइ ठेकाणे 'पडिलाभेमाणे' नथी कह्युं;

पण देवु कह्यु छे शास्त्र सूत्र ज्ञाता अध्ययन चौदमे पोटीला दानशाला मांडी दान दे छे, ते पाठ —

ततेणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणं संकप्पं जाव झिया-यमाणं पासइ २ त्ता एवं वयासी माणं तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणं संकप्पे जाव झियायह तुमणं मम माहणसंसि विउलं असणं ४ उवक्खडावेहि बहूणं समणं माहणं जाव वणिमग्गणं देयमाणीय दवावेमाणीय विहराहि ततेणंसा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं एवं वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठ तेयलिपु त्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता कल्लाकल्लिं माहणसंसि विउलं असणं ४ जाव दवावेमाणीय विहरइ ॥

अर्थ —त० तेवारे ते० तेतलीपुत्र पो० पोटीलाने उ० चिंतातुर म० मनसा स० सकल्प विकल्प जा० यावत् झि० आर्तध्यान ध्याती थकी पा० देखे, देखीने ए० एम व० कहे, मा० रखे तु० तमे दे० हे दे वानुप्रीय ! उ० चिंता करो, म० मनमां सं० सकल्प जा० यावत् झि० आर्तध्यान करो तु० तमे म० मारा मा० सतुकार दानशालाए वि० विस्तीर्ण अ० अशनादि ४ उ० निपजावो ब० घणा स० श्रमण मा० माहण जा० यावत् व० वणिमग भिक्षाचरोने दे० देतीथकी दे० देवरा वतीथकी वि० विचरो त० तेवारे सा० ते पो० पोटीला ते० तेतलीपुत्रे ए० एम वु० कहेथके ह० हर्ष तु० संतोष पामी, ते० तेतलीपुत्रनो ए० ए अर्थ प० सांभले, सांभलीने क० दिन दिन प्रत्ये मा० दानशालामां वि० विस्तीर्ण अ० अशनादि ४ जा० यावत् दे० देती देवरावतीथको वि० विचरे छे

भावार्थ —हवे जुओ ! इहां समण माहण रांक भीखारीना दानमा 'दवावेमाणे' कह्युं, पण 'पडिलाभेमाणे' नथी कह्युं वली ज्ञाताना सो लमा अध्ययनमां द्रौपदीना आगला भवमां सुकुमालीकाए दानशाला दीधी, त्यां पण 'दवावेमाणे' कह्युं छे ते पाठ लखीए छीए —

ततेणं से सागरदत्ते तहेव संभंतेसमाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागछइ २ त्ता सुकुमालियं दारियं अंके णीवेसइ२ त्ता एवं वयासीः—अहोणं तुमं पुत्ता पोरा पोराणं जाव पच्चणु-भवमाणि विहरसि. तं माणं तुमं पुत्ता ! उहय मण जाव झियाहिं तुमणं पुत्ता ! मम माहणसंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साईमं जहा पोट्टिला जाव परिभएमाणि विहराइ. ततेणं सा सुकुमालिया दारिया एयमठं पडिसुणेइ२ त्ता माहणसंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमेणं जाव दलयमाणि विहरइ ॥

अर्थः—त० तेवारे से० ते सा० सागरदत्त त० तेमज सं० भय भ्रान्त थकी जे० ज्यां वा० वासघर छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने सु० सुकुमालीका दा० दारिकाने अं० खोले णि० बेसारे, बेसारीने ए० एम व० कहेः-अ० अहो तु० तुमे पु० हे पुत्र ! पो० पाछला भवनुं पाप कर्म जा० यावत् प० भोगवतीथकी वि० विचर. हवे हुं शुं करुं. तं० ते माटे मा० रखे तु० तमे पु० हे पुत्र ! उ० आर्तध्यान म० मनमां जा०यावत् झि० ध्याता. तु० तमे पु० हे पुत्र ! म० मारी मा० सतुकार दानशालाए वि० विस्तीर्ण अ० अशन पा० पाणी खा० खादिम सा० सादिम निपजावी ज० पो० पोटीलानी जा० परे प० वहेंची आपतीथकी वि० विचर. त० तेवारे सा० ते सु० सुकुमालीका दारिका ए० ए अर्थ प० सांभले, सांभलीने मा० दानशालाए वि० विस्तीर्ण अ० असण पा० पाणी खा० खादिम सा० सादिम जा० जावत् द० देती देवरावती थकी वि० विचरे.

भावार्थः—हवे जुओ ! 'इहां दलयमाणे' कह्युं छे, पण समण माहण गरीबने दान देवामां 'पडिलाभेमाणे' नथी कह्युं. वली रायप्रशेणी सूत्रमां प्रदेशीराजाए समण माहण अने रांक भीखारीने दान देवा दानशाला मंडावी, त्यां पण 'पडिलाभेमाणे' नथी कह्युं.

हे देवानुप्रीय ! पडिलाभेमाणे तो गुरुनी बुद्धिए मोक्षनो लाभ निर्जरा-रुप जाणीने दे तेनेज कह्यु छे वली आवश्यक सूत्रमा पण 'पडिलाभेमाणे' साधुना दानमा कह्यु छे वली उपाशकदशामा आणंद श्रावकने साधुना दानना अधिकारमा 'पडिलाभेमाणे' कह्यु छे वली उववाइ अने सूयगडांग सूत्रमा, श्रावकना बारमा व्रतमा साधुने गुरुनी बुद्धिए मोक्षनो लाभ जाणीने दे, त्या 'पडिलाभेमाणे' कह्यु छे तेमज भगवती सूत्रमा तुंगीयानगरीना श्रावकोना बारमा व्रतना अधिकारमा 'पडिलाभेमाणे' कह्यु छे इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे साधुने गुरुनी बुद्धिए मोक्षरुप लाभ जाणीने दे, तेमा पडिलाभेमाणे कह्यु छे तेमज त्रीजा पाठमा पण तथारुप-असंजती, ते पाखंडीनो वेश छे, मिथ्यातनो मालीक छे, तथा मिथ्यात परुपे छे, तेने लोको गुरुनी बुद्धिए रसोइ दे, दान दे, एवी बुद्धिए श्रावक दे, तो मिथ्यातनु पाप लागे वली भगवती सूत्रना त्रीजा पाठनी टीकामां नीचे प्रमाणे गाथा छेः—

मोक्खठ्ठच जे दाणं, एसचिय, समुस्कारुं,
अणुकपा दाण पुण, जपोहिं कयाई न पडिसिध्द ॥ १ ॥

इहां एस एम कह्यु के, जे गुरुनी बुद्धिए मोक्षनो हेतु जाणीने आपे तेने एकान्त पाप मिथ्यात्वनु लागे, पण अनुकपा दान पुन्य कोइ पण तीर्थंकरे निषेध्युं नथी, एम टीकानी गाथामा कह्यु छे तेवारे तेरापथी कहेछे के "गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु जाणीने आपे तो मिथ्यात्वनुं पाप लागे, पण अनुकपादान जुदु रह्यु ते तमे मनथी स्थापवा माटे युक्ति मेलवोछो " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! ए त्रण पाठ लगता दान दीधाना छे त्या तमारा लेखे जेवु असजतिना दानमा पाप कह्यु, अने ए पाठ जेवो कह्यो तेवोज मानवो, युक्ति हेतु कांइ न मानवु, त्यारे बीजा पाठमां तथारुप साधुने प्रासुक, अप्रासुक, एषणिक, अनेषणिक, प्रतिलाभे तो अल्प दोष बहुत निर्जरा कही ए पाठ जेवो कह्यो तेवोज मानोछो ? के एषणिक अनेषणिकथी कोइ युक्ति मानोछो ? कारणे

अकारणे, जाण्ये अजाण्ये. हवे जो बीजा पाठमां अजाण्यानो तथा कारणनी युक्ति मानोछो, तो त्रीजा पाठमां युक्ति साची छे ते केम न मानो ? गुरुनी बुद्धिए मोक्षने हेते दे तो एकान्त पाप (मिथ्यात्व) लागे, ए युक्ति खरी छे. वली अल्प दोष बहुत निर्जरानो पाठ तमने शंका सहित जाषे छे, त्यारे त्रीजो पाठ निःशंक केम मानो छो ? वली तथारुप असंजतिने दान दीधां एकान्त पाप लागे, तो ठामठाम श्रावके दान केम दीधां ? इहांतो असंजतिने प्रतिलाजे तो एकान्त पाप लागे एम कह्युं. ते अढार पाप मांहेलुं कयुं पाप लागे ते कहो. अढार पापमां एकान्त पाप कया पापने कहीए ते कहो. श्रावकने अढारमां एकान्त पाप कयुं लागे एवो मुल अर्थ तमे जाणता नथी. श्रावकने सत्तर पापमां कांइक देसथकी आगार छे, अने घणो त्याग छे. तेथी श्रावक पापना व्रताव्रत्ति छे, धर्माधर्मी छे, पण एकान्त पापी नथी. एकान्त पापतो मिथ्यात्वनुं छे, तेनो देशथकी त्याग थाय नही, अने ते तो श्रावकने मुलथीज नथी. ते माटे गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु जाणीने आपे तो मिथ्यात्वरुपी एकान्त पाप लागे, ने समकीत पण जाय. त्यारे बीजा पापनुं शुं कहेवुं.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "इहांतो श्रावक तथारुप असंजतिने प्रतिलाजे, तो एकान्त पाप लागे एम कह्युं छे. त्यारे श्रावक थइने तथा रुप असंजतिने गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु जाणीने केम देशे ?" तेनो उत्तरः-

हे देवानुप्रीय ! इहांतो पुछानी रचना छे. जेम दसाश्रुतष्कंधमां कह्युं के, साधु रात्री-जोजन करेतो, मैथुन सेवेतो, अने दस प्रकारनी हरी लीलोत्री खाय तो सबलो दोष लागे. हवे जुओ ! साधु होय ते रात्री जोजन केम करशे, मैथुन केम सेवशे, अने सचित लीलोत्री केम खाशे; पण उदयजावना जोरथी साधु ए काम करे तो सबलो दोष लागे कह्युं. वली आचारांग तथा निषीत सूत्रमां अनेक अकरवाजोग कामो विषे पुछा करी, तेनुं प्रायछित कह्युं. हवे जुओ ! साधु अकरवाजोग कामो केम करे ! पण कर्मनो गती विचीत्र छे. कर्मना उदयजावना जोरथी दोष लगाडे. तेम कोइ श्रावक असंजतिनी क्रिया आरं-

मर देखीने, मिथ्यात-मोहनी-कर्मना उदये गुरुनी बुद्धे, मोक्षनो हेतु छे एवो जाण आणीने आपे तो मिथ्यात्वनु पाप लागे एवी रीते सूत्र भगवतीना आठमे पाठमा पुछानी रचना छे दातार तो एक श्रावकनेज कह्यो सर्व दातार (दानना देणहारा) विषे नथी पुछयु वली पात्र त्रण प्रकारे कह्यां फल मोक्षरुप तथा निर्जराना लाभरुप पुछयो पछी प्रभुए आठमे पाठमां जेवो लाभ हतो तेवो कह्यो एकान्त निर्जरा, अल्प दोष बहुत निर्जरा, अने एकान्त पाप ए आठमे पाठमां जेवा फल हतां तेवा कह्या, पण पडिलाभवु आठमे पाठमा सरखु कह्युं, ते गुरुनी बुद्धे मोक्षने हेते जाणवुं माटे ए अनुकपानो प्रश्न नथी मागता भीखारी तथा दुखीने मरता देखी अनुकपा आणीने आपे तो एकान्त पाप लागे, एम नथी कह्यु तमे प्रभुना वचन माथे एवा जुठां आल दइ अनंत ससार केम वधारो छो ? वली तेरापथी कहेछे के, "आर्द्रकुमारे कह्यु छे के, ब्राह्मणोने जमाडे तो नारकीमां जाय ए अनुकपा दानथी नारकी केम कही ?" तेनो उत्तर सुयगडांगजीना बीजा श्रुतस्कधना छठा अध्ययननो पाठ —

सिणायगाणंतु दुवे सहस्से, जे भोयइ णितिए माहणाणं, ते पुणखंधं समहं ऊणिता, भवति देवा इति वेयवाउ ।४३। सिणायगाणतु दुवे सहस्से, जे भोयए णितिए कुलाल-याणं, सेगछइ लोलुय सपगाढे तिव्वाहि त्तावा णारगाभि सेवी ॥४४॥ दया वर धम्म दुगछमाणा, वहावह धम्म पससमाणे, एगं पि जो भोययती असील णिवो णिस-ज्जाति, कउंसुरेहिं ॥४५॥

अर्थ —सि० स्नान वीगेरे षट्कर्मना करणहारा दु० बे स० हजार जे० जे कोइ पुरुष भो० जमाडे णि० नित्य प्रत्ये मा० ब्राह्मणोने। ते० ते पुरुष पु० पुन्य लाभ स० जेहो कर ऊ० उपार्जीने भ० थाय दे० देवता इ० एम वे० वेदनो वाणी छे ॥ ४३ ॥ हवे आर्द्रकुमार ब्राह्मण प्रत्ये कहे

टे:-सि० स्नान वीगेरे षट्कर्मना करणहारा दु० वे स० हजार ब्राह्मणने जे० जे कोइ भो० भोजन जमाडे णि० नित्य प्रत्ये कु० मार्जारवृत्तिवालाने, से० ते जमाडणहार ग० जाय लो० मांसने गृद्धेकरी सं० व्याप्या छे ति० सहेतां दोहीलो ता० ताप छे जेनो, एवी ण० नरकनो भि० सेवणहार थाय. ॥४४॥ द० दयारुप व० प्रधान ध० धर्मनो दु० निंदणहारो व० हिंसामां ध० धर्मने प० प्रशंसतो थको एवा ए० एकने पि० पण जे० जे भो० भोजन जमाडे अ० व्रतरहितने णि० छ कायनो उपमर्दन करीने, ते सं० संजति अथवा सु० स्वर्गपणुं माने छे ते मृषा छे.

भावार्थः—हे देवानुप्रीय! अहीयां तो आर्द्रकुमारने पहेलां ब्राह्मणोए कह्युं के, "हे आर्द्रकुमार! तुम सरखा राजकुमारने ब्राह्मणज गुरु करवा जोग्य छे, परंतु शूद्र गुरु मानवा जोग्य नथी. ते माटे वेद, विप्र, विष्नुं, अने संध्यास्नान, ए चार मोक्षनां अंग छे, एथी मुक्ति थाशे. ए सनातन कर्मना करणहारा वे हजार ब्राह्मणोने नित्य प्रत्ये जमाडे तो पुन्यनो खंध उपार्जे, एवुं वेदमां कह्युं छे." एम ब्राह्मणे आर्द्रकुमारने कह्युं. जेम जैनमार्गमां सूत्र, साधु, जिन, अने त्याग, ए चार बोल मुक्तिना हेतु छे, तेम तेने ठामे वेद, ब्राह्मण, विष्णु अने भोग, ए चार बोल मानवा सारु देखाड्या. तेवारे आर्द्रकुमारे तेमने जैनमार्गना द्वेषी जाणी तथा मिथ्यात्व परुपता जाणी, तेमना बोलवाना अभीप्रायनो उत्तर दीधो के, मिथ्यात्त मार्गथी मुक्ती नथी. वली आर्द्रकुमारे कह्युं के, जे तम सरीखा सनातन कर्मना करणहारा बीलाडा तुल्य बे हजार ब्राह्मणोने जमाडे, ते तीव्र नरके जाय. तमे दयारुपी प्रधान धर्मनी दुगंछा करो छो, अने छकाय जीवनी हिंसा (वध) रुपी धर्मने प्रशंसो छो. एवा एक पण ब्राह्मणने जमाड्याथी (असुर धर्मे) देवगति क्यांथी थाय? तेवारे ब्राह्मणो बोल्या के "जे सनातन कर्मना करणहारा (ब्राह्मणनां षट् कर्म करे, गुरु बुद्धे पुजावे) छे तेने तुं मोक्षनो हेतु जाण." तेवारे आर्द्रकुमारे ते ब्राह्मणोना अभिप्रायना अनुसारे पुर्वोक्त वचन कह्यां. एम गुरुनी बुद्धे, मोक्षने हेते दे तेनी ना कही; पण अनुकंपा

वर देखीने, मिथ्यात-मोहनी कर्मना उदये गुरुनी बुद्धे, मोक्षनो हेतु छे एवो जाण आणीने आपे तो मिथ्यात्वनु पाप लागे एवी रीते सूत्र भगवतीना त्रणे पाठमा पुण्यनी रचना छे दातार तो एक श्रावकनेज कह्यो सर्व दातार (दानना देणहारा) विषे नथी पुण्यु वली पात्र त्रण प्रकारे कह्या फल मोक्षरुप तथा निर्जराना लाभरुप पुण्यो पछी प्रभुए त्रणे पाठमा जेवो लाभ हतो तेवो कह्यो एकान्त निर्जरा, अल्प दोष बहुत निर्जरा, अने एकान्त पाप ए त्रणे पाठमां जेवा फल हतां तेवा कह्या, पण परिलाभवु त्रणे पाठमा सरखु कह्यु, ते गुरुनी बुद्धे मोक्षने हेते जाणवु माटे ए अनुकपानो प्रश्न नथी मागता भीखारी तथा दुबलेने मरता देखी अनुकपा आणीने आपे तो एकान्त पाप लागे, एम नथी कह्यु तमे प्रभुना वचन माथे एवा जुग आल दइ अनत ससार केम वधारो छो ? वली तेरापथी कहेछे के, "आर्द्रकुमारे कह्यु छे के, ब्राह्मणोने जमाडे तो नारकीमां जाय ए अनुकपा दानथी नारकी केम कही ?" तेनो उत्तर सुयगडागजीना बीजा श्रुतस्कधना छठा अध्ययननो पाठ —

सिणायगाणतु दुवे सहस्से, जे भोयइ णितिए माहणाणं, ते पुणखध समहं जणिता, भवति देवा इति वेयवाउं ।४३। सिणायगाणतु दुवे सहस्से, ज भोयए णितिए कुलाल-याण, सेगछइ लोलुय सपगाढे तिव्वाहि त्तावा णरगाभि सेवी ॥४४॥ दया वर धम्म दुगछमाणा, वहावह धम्म पससमाणे, एग पि जे भोययती असील णिवो णिस-जाति, कउंसुरेहिं ॥४५॥

अर्थ —सि० स्नान वीगेरे षट्कर्मना करणहारा दु० बे स० हजार जे० जे कोइ पुरुष भो० जमाडे णि० नित्य प्रत्ये मा० ब्राह्मणोने ते० ते पुरुष पु० पुन्य स्कध स० मेलो कर ज० उपार्जीने भ० थाय दे० देवता इ० एम वे० वेदनो वाणो छे ॥ ४३ ॥ एवे आर्द्रकुमार ब्राह्मण प्रत्ये कहे

छेः-सि० स्नान वीगेरे षट्कर्मना करणहारा दु० वे स० हजार ब्राह्मणने जे० जे कोइ न्नो० न्नोजन जमाके णि० नित्य प्रत्ये कु० मार्जारवृत्तिवालाने, से० ते जमाकणहार ग० जाय लो० मांसने गृद्धेकरी सं० व्याप्या छे ति० सहेतां दोहीलो ता० ताप छे जेनो, एवी ण० नरकनो न्नि० सेवणहार थाय. ॥४४॥ द० दयारुप व० प्रधान ध० धर्मनो दु० निंदणहारो व० हिंसामां ध० धर्मने प० प्रशंसतो थको एवा ए० एकने पि० पण जे० जे न्नो० न्नोजन जमाके अ० व्रतरहितने णि० छ कायनो उपमर्दन करीने, ते सं० संजति अथवा सु० स्वर्गपणुं माने छे ते मृषा छे.

न्नावार्थः—हे देवानुप्रीय! अहीयां तो आर्द्रकुमारने पहेलां ब्राह्मणोए कह्युं के, "हे आर्द्रकुमार! तुम सरखा राजकुमारने ब्राह्मणज गुरु करवा जोग्य छे, परंतु शूद्र गुरु मानवा जोग्य नथी. ते माटे वेद, विप्र, विश्नुं, अने संध्यास्नान, ए चार मोक्षनां अंग छे, एथी मुक्ति थाशे. ए सनातन कर्मना करणहारा बे हजार ब्राह्मणोने नित्य प्रत्ये जमाके तो पुन्यनो खंध उपार्जे, एवुं वेदमां कह्युं छे." एम ब्राह्मणे आर्द्रकुमारने कह्युं. जेम जैनमार्गमां सूत्र, साधु, जिन, अने त्याग, ए चार बोल मुक्तिना हेतु छे, तेम तेने ठामे वेद, ब्राह्मण, विष्णु अने न्नोग, ए चार बोल मानवा सारु देखाड्या. तेवारे आर्द्रकुमारे तेमने जैनमार्गना द्वेषी जाणी तथा मिथ्यात्व परुपता जाणी, तेमना बोलवाना अन्निप्रायनो उत्तर दीधो के, मिथ्यात्त मार्गथी मुक्ती नथी. वली आर्द्रकुमारे कह्युं के, जे तम सरीखा सनातन कर्मना करणहारा बीलाडा तुल्य बे हजार ब्राह्मणोने जमाके, ते तीव्र नरके जाय. तमे दयारुपी प्रधान धर्मनी दुगंछा करो छो, अने छकाय जीवनी हिंसा (वध) रुपी धर्मने प्रशंसो छो. एवा एक पण ब्राह्मणने जमाड्याथी (असुर धर्मे) देवगति क्यांथी थाय? तेवारे ब्राह्मणो बोल्या के "जे सनातन कर्मना करणहारा (ब्राह्मणनां षट् कर्म करे, गुरु बुद्धे पुजावे) छे तेने तुं मोक्षनो हेतु जाण." तेवारे आर्द्रकुमारे ते ब्राह्मणोना अन्निप्रायना अनुसारे पुर्वोक्त वचन कह्यां. एम गुरुनी बुद्धे, मोक्षने हेते दे तेनी ना कही; पण अनुकंपा

दाननो निषेध नथी जो ब्राह्मणोए एम कह्यु होत के "हे आर्द्रकुमार! हु दुर्बल भीखारी ब्राह्मण छु माटे तु अनुकपा आणीने दान आप" एम ब्राह्मणे कह्यु होत, अने आर्द्रकुमारे एम जवाब आप्यो होत के "मागता भीखारी दुर्बलने मरता देखी अनुकपा आणीने दान देवु नही, जो असजति मागता भीखारीने अनुकपा आणीने दान दे तो नारकीमा जाय" एम आर्द्रकुमारे कह्यु होत तो तमारु कहेवु मलत, पण एम नथी कह्यु अहीया तो ब्राह्मणोए पोतानु गुरुपणु देखाड्यु, अने ब्रह्मभो जने पुन्यनो खध (पुज) तथा मोक्षनो हेतु जणाव्यो, तेना अभिप्रायनो उत्तर दीधो छे जो ब्रह्मभोजनमा पुन्यनो खध तथा मोक्षनो हेतु माने तथा गुरु जाणीने दे, तो नारकीमा जाय, ए अभिप्रायनो उत्तर छे, पण ए श्रीवीतरागदेवनु उपदेशीक वचन नथी ए तो ज्यारे आर्द्रकुमार श्री माहावीर भगवंत पासे दीक्षा लेवा जाय छे, तेवारे ब्राह्मणे जैनधर्मने निषेध्यो तथा मिथ्यात्व थाप्यो, तेथी आर्द्रकुमारे वीवादमा उत्तर दीधो के, जे ब्राह्मणने जमाडे ते नारकीमा जाय पण ए वचन प्रमाण नथी एतो विवाद वचन ग्रहस्थनुं छे

तेवारे तेरापथी कहे छे के, समकिती धर्म चर्चामा जुठ केम बोले? अने समकितीनु वचन प्रमाण केम नही? तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! समकिती श्रावक तो पापना अनेक काम करे छे तथा रागद्वेषने वश अनेक जुठ बोले छे जेम श्रावकना प्रणाम वैरागभावमा दिक्षा लेवाना होय, तेवारे ससारी (मोहमा लुब्ध थयेला) कहे के, घरमा बेठो धर्म ध्यान कर, दान दे अने श्रावकना बारव्रत पाल, तेथी पण सद्गति थइ जशे, मारी छातीने दाह देइ केम जाय छे तेवारे श्रावक भाव चा रित्रीयो पण एम कहे के, तमे मारा आत्माना वेरी छो, मने घरमां राखीने ससारमां तथा नरक निगोदमा भमाववा चाहो छो एम विवादमां वचन कहे छे जेम जमालीनी माताए जमालीने कह्यु के, हे पुत्र! ए शरी रथी धन, जोवन तथा स्त्रीना सुख भोगवो, पछी दीक्षा लेजो तेवारे जमालीए कह्यु के, हे माता! ए तन, धन, जोबन अने कुटब अभत

संसारनां वधारणहार छे तथा चार गतिमां अनंत काल सुधी रुलावणहार छे. एम विवादमां कह्युं.

हवे जुओ ! श्रावक घरमां बेठो तन, धन, जोबन, स्त्री आदिक भोगवतो श्रावकपणुं पाले, ते एकावतारी थाय के नही ? पण वैरागीने संसारी घरमां राखवा च्हाय, तेवारे समकिती श्रावक भावचारित्रीयो पण संसारीओने विवादमां उपदेश देवाने उंची नीची परुपणा करे, तेनुं वचन प्रमाणमां न गणाय. वली द्वेषने वश विवादमां साधु मुनीराज पण उंचां नीचां काम करे छे, तथा उंचुं नीचुं वचन बोली जाय छे. जेम नागेश्री ब्राह्मणीए धर्मरुची अणगारने करुवुं तुंमरुं वहोराव्युं, तेथी तेमनी घात थइ. पछी धर्मघोष आचार्ये श्रुतज्ञानेकरी धर्मरुचीने सर्वार्थ-सिद्धमां उपन्या दीठा, अने नागेश्री ब्राह्मणीए करुवुं तुंबरुं वहोराव्युं एम ज्ञाने करी दीठुं. पछी धर्मरुचीना मोहे करी नागेश्री ब्राह्मणीने बजारमां तथा गलीए गलीए हिली निंदी. ए काम धर्मघोष आचार्ये द्वेषमां तथा विवादमां कर्युं, तेम बीजा साधुने ए काम करवुं योग्य नथी. तेमज आर्द्रकुमारे ब्राह्मणोने जैन धर्मने निंदता जाणी ए वचन विवादमां कह्युं, पण आर्द्रकुमारनुं ते वचन प्रमाणमां न गणाय. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, साध श्रावकने कर्मने वशे दोष तो लागी जाय, पण धर्म उपदेशमां व्रती अव्रती परुपणा करे नही. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! श्रावक समद्रष्टी तो कयांय रह्या, पण साधुजी दस पूर्व माठेरा भणेला श्री केवलीना वचननी नेश्राय वीना पोताना मनथी सूत्र गुंथे तेनां वचन पण एकान्त प्रमाण नथी; अने (समसूत्र) साचां मानवां कह्यां नथी. शाख सूत्र नंदी. ते पाठः—

से किंतं समसूयं, २ जइमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं उपन्न नाण दंसणधरेहिं तिलोक निरिक्खिय महियं पुइएहिं तीय पच्चु-पन्न मणागय जाणएहिं सवनाणेहिं सवदरिसिहिं पणिहिं दुवालसग गणि पिडग पणत्ता तंजहाः-आयारो १

सूयगमो २ एठाण ३ सम्मवाउं ४ विवहापणत्ता ५ नायाधम्मकहाउ ६ उवासगदसाउ ७ अंतगम्डदसाउं ८ अणुत्तरोववाइयदसाउ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसूय ११ दिठिवाउय १२ इच्चेइय दुवालसंग गणि पिंम्गा चउदस पुविस्स समसूय अभिण दस्स पुविस्स समसूय तेणपर भिणेसू भयणा सेत समसूय ॥

अर्थ —से० ते किं० शु स० सम्यक् सूत्र ? इति प्रश्न गुरु बोल्या के, हे शिष्य ! सम्यक् सूत्र ज० जे ए प्रत्यक्ष आगल कहेशे ते अ० अशोकादि अष्ट महा प्रतिहार्यना धरणहार अरिहंत भ० सम्यक् ऐश्वर्यादिकना धरणहार ते भगवंत, उ० उत्पन्न ना० केवलज्ञान द० केवल दर्शनना ध० धरणहार ति० त्रण लोकना नि० देखणहार म० महिमा योग्य छे, पू० पुजवा सत्कार करवा योग्य छे, ती० भुतकाल प० वर्तमानकाल अने म० भविष्यकाल, ए त्रण कालना जा० जाण छे ते श्री तीर्थंकरदेव स० सर्वज्ञ सद० सर्वदर्शी ते पुरुषोए प० (प्रणीत) कह्या ते शु कह्यु ते कहेछे दु० द्वादशांगीरुप ग० आचार्यनी पिं० पेटी प० कही त० ते कहेछे —आ० आचारांगने विषे पांच आचारनो विवरो (साधुनो आचार) चाल्यो छे १ सू० सुयगडांगने विषे स्वसमय परसमयना भाव चाल्या छे २ ठा० ठाणायांगने विषे एक ठाणाथी मांडीने दसठाणा सुधी बोल चाल्या छे ३ स० समवायांगने विषे एक समवायांगथी लइ सो क्रोडाक्रोडी प्रमुख बोल चाल्या छे ४ वि० विवाहपन्नतिने विषे गौतमस्वामीए छत्रीस हजार प्रश्न पुछ्या तेनो विचार भगवती सूत्रमा चाल्यो छे ५ ना० ज्ञाताने विषे ग्राम नगरनो, साधु साधवीनो अने सर्व वस्तुनो वीचार चाल्यो छे, अने धर्म कथाने विषे साडी त्रणक्रोड कथा कही छे ६ उ० उपाशकदशाने विषे दस श्रावकनी उत्तम करणीनो वीचार कह्यो छे ७ अं० अंतगडदशांगने विषे अंत समये अष्टकर्मनो अंत कीधो तेनो वीचार चाल्यो छे ८ अ० अणुत्तरोववाइदशांगने विषे पांच

अणुत्तर विमानने विषे पोहोच्या तेनो वीचार चाल्यो छे. ए प० प्रश्नव्या-करणने विषे अंगुष्टादिक प्रश्ननो, पांच संवरनो अने पांच आश्रवनो वीचार चाल्यो छे. १० वि० विपाकने विषे शुभ-विपाक, अशुभ-विपाक कर्मनो विचार चाल्यो छे. ११ दि० दृष्टिवादने विषे पांच प्रकारनो विचार चाल्यो छे. १२ इ० ए प्रत्यक्ष दु० बार अंग ग० आचार्यनी पिं० पेटी छे. ते आचा-रांगादिक छे ते मध्ये आचार एकादिक गुण आव्या, ते जेम द्रव्य शब्द वस्तुमां छए षट् द्रव्य आव्या, ते घणा भणणहार आश्री बार अंगमां सर्व समाणा. वली तेनुं स्वरुप कहेछे. च० चउद पु० पूर्वधारीनां कर्यां स० सम्यक् सूत्र कहीए. अ० वली द० दस पु० पूर्व संपूर्ण भण्या छे ते दस पूर्वधारीनां कर्यां पण स० सम्यक् सूत्र कहीए. एटलानांज कर्यां निश्चय सम्यक् सूत्र जाणवां ते सर्वने सम्यक् सूत्र कहीये. तेο ते उप-रांत भि० जे दस पूर्वथी ओछुं भण्या छे तथा नव पुर्व भण्या छे तेनां कर्यां सूत्रनी भ० भजना छे. से० ते स० सम्यक् सूत्र कह्यां.

भावार्थः—हवे जुओ ! दस पूर्व उंणा भण्या साधुनां वचन सम-सूत्र (साचां) करी मानवां, एम श्री वीतरागदेवे कह्युं नथी, पण साच जुठनी भजना कही छे. त्यारे हे देवानुप्रीय ! ते वखते आर्द्रकुमार केटला पूर्वनुं ज्ञान भण्या हता ते कहो. वली कया सूत्रमां श्री वीतराग देवे कह्युं छे के, ब्राह्मणोने जमाड्याथी नारकीमां जाय, के ते वचननी नेश्रायथी आर्द्रकुमारे कह्युं ते सूत्रनुं नाम बतावो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के " बीजा सूत्रमां तो श्री वीतरागदेवे, ब्राह्मणोने जमाड्यां नार-कीमां जाय, एम श्रीमुखथी तो कह्युं नथी, पण आर्द्रकुमारेज ए वचन ब्राह्मणोने कह्यां छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्रमां केवलीना कह्या विना मनथी आर्द्रकुमारे विवादमां ब्राह्मणोने कह्युं, ते वचन प्रमाण केम थाय ? केमके दस पूर्व पुरुं भण्यावोना साधु मनथी कहे ते वचन प्रमाणमां नथी; त्यारे आर्द्रकुमारे विवादमां मनथी ब्राह्मणोने कह्युं, ते वचन प्रमाण केम थाय ?

तेवारे तेरापथी कहे छे के "आर्द्रकुमारे विवादमा वचन कह्यां प्रमाण नथी, त्यारे श्री केवलज्ञानी श्रीतीर्थंकरदेव, गणधरे सूत्रमां के घाल्यां? केवली गणधरे सूत्रमा घाल्या तेवारे तो ते वचन केवली ग धरे वखाण्यां तथा अंगीकार कर्यां कहेवाय ते वचन प्रमाणमां के नहीं?" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! एतो अपेक्षाय वचन छे जेम आ र्द्रकुमार अने ब्राह्मणोने माहोमाहे विवाद थयो अने उत्तर प्रत्यु थया, तेम सूत्रमा गणधरे गुंथ्या छे, पण केवलज्ञानीए वखाण्या प कह्यु होय तो कहो अने ते पाठ बतावो जो वखाण्या कह्या होय एम कह्यु जोइए के, हे आर्द्रकुमार! तें ब्राह्मणोने साचा वचन क अने जेम तें कह्या तेम हु कहु छु जेम तुगीया नगरीना श्रावकोए पार्श्वनाथ भगवानना संतानीया साथे चर्चा कीधी, अने तप संजमना फ पुछया तेवारे स्थिवरे कह्युं के, संजमथी आवता कर्म रोकाय, अने तप आगलां कर्म पातला पडी खपे एम सूत्र भगवती शतक बीजे उदेशे पां मे कह्यु छे पछी स्थिवरे तुगीया नगरीथी विहार कर्यो, अने श्रीमाहावी स्वामी राजग्रही नगरीए पधार्या त्या गौतमस्वामी बेलानु पारणु वोहोर राजग्रही नगरीमा पधार्या त्या फरता घणा लोकोनो समिपे आ वात सां भली के तुगीयानगरीना श्रावकोए पार्श्वनाथस्वामीना संतानीया साथे त संजमना फल विषे चरचा करी पछी गौतमस्वामीए आवीने श्री माहावी रस्वामीने पुछयुं, तेवारे भगवते कह्यु के, हे गौतम! ए अर्थ साचो छे हु पण एमज कहुछुं एम श्री पार्श्वनाथजीना संतानीयाना वचन माहावीरभगवते स्वीकार्यां वली भगवतीजीना अढारमा शतकमा मं श्रावके अन्यमतिउ साथे पचास्तिकायनी चर्चा करी, अने तेमने कर्या पछी तेणे श्री भगवतने आवीने वंदणा करी त्या भगवते ते वचननी प्रशंसा कीधी

वली उपाशकदशांगमा कुंडकोलीया श्रावके गोशालामती देवने न्याय चर्चा करीने खट कर्यो पछी भगवत पधार्या त्यारे तेमने कुं लीयो वंदणा करवा आव्यो त्या भगवते गौतमादिकना मोढाकने ते

प्रशंसा कीधी. तेम आर्द्रकुमारना वचननी भगवंते प्रशंसा कीधी होय तो बतावो. वली तमे कहोछो के आर्द्रकुमारे विवादमां वचन कह्यां ते जो प्रमाणमां नथी, तो सूत्रमां केम घाल्यां? पण हे देवानुप्रीय ! एवा पाठ तो सूत्रमां घणा छे. जेम जंबुद्वीप पन्नति सूत्रमां भरतमाहाराजा छ खंरू साधवा गया, त्यारे मागध, वरदाम अने प्रभास तिर्थना देवता उपर बाण मेल्युं, ते बाण देवताना भुवनमां पड्युं, ते देखी देवताए कोपमां आवीने वचन कह्यां. तेमज उत्तरार्धभरतमां तमसगुफा भेदीने गया पछी म्लेछराजाने वचन कह्यां. ते जंबुद्वीपपन्नतिनो पाठः—

तएणं से सर भरहेणं रणा णिसठेसमाणे खिप्पामेव दुवालस्स जोयणाइ गंता मागह तिछ्छ हिवइस्स भवणंसि णिवइए. तएणं से मागह तिछ्छ हिवइ देवे भवणंसि सर णिवइयं पासइ २ त्ता आसूरते रुठे चंभीक्किइ कुविए मिसिमिसेसमाणे तिवलिं भिउडिं णिडाले साहरइ २ त्ता एवं वयासी केसणं भो यस अपछिय पछिए दुरंत पंत लक्खणे हिण पुण चाउदसे हिरि सिरि परिवज्जिए जिणं ममं इमाए एयाणुं-रुवाए दिवा देवड्ढीए दिवाए देवजूइए दिवेणं दिव्वाणु-भावेणं लधाए पत्ताए अभिसमणागयाए उप्पि अप्पु रसूए भवणंसि सर णिस्सरइ तिकट्टु सिहासणाउ अभ्भुठेइ २ त्ता जेणेव से णामायंके सरे तेणेव उवागछइ २ त्ता तं णामायकं सरं गिण्हइ २ त्ता णामाकं अणुप्पवाए इणामंकं अणुप्पवाय माणस्स इमे एयारुवे अझछिए चिंतिए पछ्थिए मणोगए संकप्पे सम्मुप्पज्जिछ्छा उप्पणे खलु भो जंबुद्दीवे २ भरहेवासे भरहेणामंराया चाउरंत चक्कवट्टी तं जीय मेयं तीय पच्चुप्पण मणागयाणं मागह तिछ्छ कुमा-

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "आर्द्रकुमारे विवादमा वचन कह्यां ते प्रमाण नथी, त्यारे श्री केवलज्ञानी श्रीतीर्थंकरदेव, गणधरे सूत्रमां केम घाल्या? केवली गणधरे सूत्रमा घाल्या तेवारे तो ते वचन केवली गणधरे वखाण्यां तथा अंगीकार कर्यां कहेवाय ते वचन प्रमाणमां केम नही?" तेनो उत्तर हे देवानुप्रिय! ए तो अपेक्षाय वचन छे जेम आर्द्रकुमार अने ब्राह्मणोने माहोमाहे विवाद थयो अने उत्तर प्रत्युत्तर थया, तेम सूत्रमा गणधरे गुंथ्या छे, पण केवलज्ञानीए वखाण्या एम कह्यु होय तो कहो अने ते पाठ बतावो जो वखाण्या कह्या होय तो एम कह्यु जोइए के, हे आर्द्रकुमार! तें ब्राह्मणोने साचा वचन कह्यां, अने जेम तें कह्यां तेम हु कहु छु जेम तुंगीया नगरीना श्रावकोए श्री पार्श्वनाथ भगवानना संतानीया साथे चर्चा कीधी, अने तप संजमना फल पुछया तेवारे स्थिवरे कह्यु के, संजमथी आवता कर्म रोकाय, अने तपथी आगला कर्म पातला पडी खपे एम सूत्र भगवती शतक बीजे उद्देशे पांचमे कह्यु छे पछी स्थिवरे तुंगीया नगरीथी विहार कर्यो, अने श्रीमाहावीर स्वामी राजगृही नगरीए पधार्यां त्या गौतमस्वामी बेलानु पारणु वोहोरवा राजगृही नगरीमा पधार्यो त्या फरता घणा लोकोनी समिपे आ वात सांभली के तुंगीयानगरीना श्रावकोए पार्श्वनाथस्वामीना संतानीया साथे तप संजमना फल विषे चरचा करी पछी गौतमस्वामीए आवीने श्री माहावीरस्वामीने पुछयु, तेवारे भगवते कह्यु के, हे गौतम! ए अर्थ साचो छे अने हु पण एमज कहुं छु एम श्री पार्श्वनाथजीना संतानीयाना वचन श्री माहावीरभगवते स्वीकार्यां वली भगवतीजीना अढारमा शतकमा मडुक श्रावके अन्यमतिर्थ साथे पंचास्तिकायनी चर्चा करी, अने तेमने लाजवाब कर्या पछी तेणे श्री भगवतने आवीने वंदणा करी त्या भगवते ते श्रावकनी प्रशंसा कीधी

वली उपाशकदशांगमा कुंडकोलीया श्रावके गोशालामती देवताने न्याय चर्चा करीने खष्ट कर्यो पछी भगवत पधार्यां त्यारे तेमने कुंडकोलीयो वंदणा करवा आव्यो त्या भगवते गौतमादिकना मोंढाकने तेनी

थयो रु० रुठ्योथको चं० क्रोधेकरी आकरो थयो कु० कोप्यो मि० क्रोधरुप अग्निऐ दीपतोथको ति० त्रण सल त्रि० भृकुटीए णि० लीलाटे सा० चम्हावे, चम्हावीने ए० एम व० कहेवा लाग्यो. के० कोण छे भो० इति संबोधने. प० ए बाणनो मुकणहार अ० अप्रार्थीत मरणनो प० वंछणहारो, दु० माठा पं० तुच्छ ल० लक्षणनो धरणहार, हि० हीणपुन्यो चा० काली बोली तुटती चउदस अमावाशनो जण्यो, हि० लाज सि० शोभा प० रहित, जि० जे पुरुष म० मारी इ० एवी ए ताद्रश्यरुप प्रत्यक्ष दीसती दि० दीव्य दे० देवता संबंधिनी रिद्धि दि० प्रधान दे० देवतानी जू० जोती क्रांति दे० देवता संबंधी दि० देवताना अनुभाग अने महिमाए करीने ल० लाध्या प० पाम्या अ० भोगतां प्रत्ये सनमुख आवे एवी रिद्धि उपर उ०पोतानी आपदाए परनी संपदानो अभिलाषियको मारा भ० भुवनने विषे स० बाण णि० नाखे छे. ति० एवुं कहीने सि० सिंहासनथी अ० उद्यमवंत थको उठे, उठीने जे० जीहां से० ते णा० नामांकित (नाम सहित) स० बाण छे ते० तीहां उ० आवे, आवीने तं० ते णां० नामांकित स० बाण गि० ग्रहे, ग्रहीने णा० नामना अक्षर अणु० वांचे. हवे नामना अक्षर वांचताथका इ० ए ताद्रश्यरुप हेवो अ० आत्माथी उपन्यो अभिप्राय चि० चिंतारुप प० प्रार्थनारुप म० मनने विषे उपन्यो एवो चिंतारुप सं० संकल्प स० सम्यक् प्रकारे उ० उपन्यो. ख० निश्चे भो० इति आमंत्रणे जं० जंबुद्वीप नामा द्वीपने विषे भ०भरतक्षेत्रने विषे भ० भरतनामे राजा चा०चार दिशिना अंतनो करणहार च० चक्रवृत (चक्रनो धरणहार). तं० ते भणी जी० जीत आचार छे मे० अमारो ती० अतित काले थइ प० वर्तमान काले छे म० अनागत् काले थाशे. मा० मागधतिर्थ कु० कुमार दे० देवतानो रा० राजा चक्रवृतने मु० भेटणुं क० करवानो आचार छे तं० तेभणी ग० जातं अ० हुं पण, भ० भरत राजाने उ० भेटणुं क० करुं. ति० एम कहीने ए० एवुं सम्यक् प्रकारे सं० विचारे, विचारीने हा० हैयानो हार मु० माथानो मुकुट कुं० कुंडल क० कडां तु० बाजुबंध व० देवदुष्य वस्त्र प्रमुख

-राण देवाण राइण सुवन्नाणिय करिएत्ता त गच्छामिण अ-हपि जरहसरणो उवन्नाणिय करेमि तिकट्टु एव संपेहेइ २ त्ता हार मउड़ कुम्मलाणिय कम्गाणिय तुम्याणिय व ञाणिय आजरणाणिय सरच णामायक मागहतिन्तो दग च गेण्हइ २ त्ता ताए उक्किठाए तुरियाए चवलाए सम्भए ठेयाए जयणाए उध्धुयाए सिग्घाए दिव्वाए देवगइए वीती-वयमाणे २ जेणेव जरहेराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अं तलिखपम्भिवणे सखिखणिआय पंचवणाइ वत्थाइ पवर परिहिए करयल परिगहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अ-जली कट्टु जरह राय जएण विजयण वधावेइ २ त्ता एव व-यासी अन्निजिएण देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे जरहेवासे पुरच्छिमेण मागह तित्थमेराएत अहण्ण देवाणुप्पियाण वि-सयवासी अहणं देवाणुप्पियाणं आणत्ती किंकरे अहण्ण देवाणुप्पियाण पुरच्छिमिल्लेणं अतवाले तंपडिच्छतुणं देवा-णुप्पिया मम इम एयारुवं पीयदाण त्तिकट्टु हार मउडं कु-म्मलाणिय कम्गाणिय जाव मागह तित्थोदग च उवणेइ. तएण से जरहेराया मागहतित्थकुमारस्स देवस्स इमेयारुवं पीयदाण पडिच्छइ २ त्ता मागहतित्थ-कुमारदेव सक्कारेइ स-म्माणेइत्ता पडिविसजेइ ॥

अर्थ —त० तेवारे से० ते स० बाण ज० जरत र० राजाए वि० मुक्युथकुं दि० उतावलु दु० बार जोजन सुधी गं० जइने मा० मागध ति० तीर्थना हि० अधीपति देवताना ज० जुवनमा णि० पड्युं त० तेवारे से० से मा० मागध तीर्थना हि० अधीपति दे० देवता पोतना ज० जुवनमां स० बाण पि० पड्युं पा० देखे, देखीने आ० कोपायमान

भावार्थः—हवे जुओ मागध तीर्थना देवताए विवादमां कोपथी भरतमहाराजाने एवां वचन कह्यांः"एवो कोण छे ? मरणने कोइ न वान्छे तेनो वांछणहार, माठा लक्षणनो धणी, तुटती चौदस कालीबोली अमावास्यानो जण्यो, लज्या लक्ष्मिए करीने रहित." ए वचन देवताए कह्यां. एवां वचन वरदाम अने प्रभासतीर्थना देवताए पण कह्यां अने एवांज वचन म्लेछ राजाए पण कह्यां, अने ते केवली गणधरे सूत्रमां गुंथ्यां. हे देवानुप्रीय ! तमारे लेखे तो भरत माहाराजा एवा हीण-पुन्या छे, तेथी देवताए पूर्वोक्त वचन कह्यां छे, ने गणधरे सूत्रमां गुंथ्यां छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "ए तो देवताए कोपमां वचन कह्यां छे, अने देवतानी कहेणी गणधरे सूत्रमां गुंथी छे. एतो अपेक्षाये वचन सूत्रमां घाल्यां छे, पण भरत महाराजा तो महा भाग्यवंत छे." त्यारे हे देवानुप्रीय ! जेम ए वचन देवताए तथा म्लेछ देशना राजाए कोपमां भरत माहाराजाने कह्यां तेवां गणधरे सूत्रमां गुंथ्यां, पण भरत माहाराजा एवा नथी तेम आर्द्रकुमारे पण विवादमां ब्राह्मणोने कह्युं के, तमारा सरखा धर्मना द्वेषी तथा हिंसा धर्मना स्थापनहार मंजारा सरीखाने ब्रह्म भोजन दे, तो नारकीमां जाय. ए आर्द्रकुमारे विवादमां वचन कह्यां; तेनुं कहेवुं गणधरे सूत्रमां गुंथ्युं छे. ए अपेक्षाय वचन छे, पण श्री तीर्थंकरना साधुनुं उपदेशीक वचन नथी. अपेक्षाय ओलख्या विना जे अर्थ करे तेने श्री तीर्थंकरनो चोर कहीये. शास्त्र सूत्र प्रश्न व्याकरणना बीजा संवरद्वारमां, दस प्रकारे साच कह्युं छे. बार प्रकारे भाषा, सोल प्रकारनां वचन, त्रण लिंग, त्रण काल, एक वचन, द्विवचनादिक सात विभक्ति, अपेक्षाय वचन, (ऊवणिए) स्तुति वचन, (अवणिय) निंद्या वचन, इत्यादिक सोल प्रकारनां वचन ओलखीने पछी सूत्रनो अर्थ करवो. (एय अरिहंताणुणाए) एवी अरिहंतदेवनी आज्ञा छे.

तमे अपेक्षाय वचन जाण्या विना कह्यां छे. ने वली कहो छो के, सूयगडांग सूत्रमां कह्युं छे, के ब्राह्मणोने जमाड्याथी नारकीमां जाय. एवां सूत्रनां जुठां नाम लइ अरिहंतनी आज्ञाना चोर केम थाओ छो ?

आ० अनेरा पण शरीरना आभरण म० ते वाण णा० नामांकित सहने मा० मागध तीर्थनु द० पाणी राज्याभिषेक जोग गे० ले, लेइने ता० ते देवतामा प्रसिद्ध उ० उत्कृष्टी शिवद्दार जोग्य गति तु० मननी उतावली गति च० कायानी उतावली गति च० क्रोधे करी जेवी उतावली गति छे तेवी छे० चाखवाना गुणमा निपुण छेक ज० अति वेग गतिए चाले, उ० शरीरना अवयव कपावती गति सि० शीघ्र गति दि० प्रधान दे० देवतानी उंची गति वी० हींको हींमो एवी उतावली गति करीने आ वतोथको जे० जीहां भ० भरत राजा छे ते० तीहां उ० आवे, आवीने अं० अधर आकाशे उभो रह्यो थको स० न्हानी घुघरी घमकावतो थको प० पाच वर्णना व० वस्त्र तथा प० उत्तम प० चीर पहेर्यां छे जेणे एवो क० करतल (हाथना तला) प० परिग्रहित सहित बे हाथना द० दश नख सि० माथे आवर्तन करीने तथा म० मस्तके अं० अजली करीने भ० भरत राजाने ज० जय वि० विजय शब्द करीने व० वधावे, वधावीने ए० एवु व० कहे, अ० जीत्यो आज्ञा वश कर्यो दे० हे देवानु प्रीय ! तमे के० केवल कल्प सघलु भ० भरत क्षेत्र पु० पूर्व दिशे मा० मागध तिर्थनी मे० मर्यादा लगी अ० हु तमारो विश्वासी दे० हे दे वानुप्रीय ! तमारा देशनो वि० वशणहार अ० हु तमारो आ० आज्ञा कारी किं० (शेवक) चाकर छु अ० हु तमारो दे० हे देवानुप्रीय ! पु० पुर्व दिशाना अं० अत (छेडा) नो पालक, पूर्व दिशाना माणसने उप द्रव्यादिकनो निवारणहार छुं त० ते माटे वान्छो दे० हे देवानुप्रीय ! म० मारु ए० एवु पी० (प्रीतीदान) भेटणु ल्यो ति० एवु कहीने हा० हार म० मुकुट कु० बे कुंडल क० कडानी जोडी जा० जावत् मा० मागधतीर्थनु द० पाणी उ० भेटणु आपे त० तेवारे से० ते भ० भरत राजा मा० मागध ति० तीर्थ कुमारनामे दे० देवतानुं इ० एवुं पी० प्रीतीदान (भेटणु) प० ले, लइने मा० मागध तिर्थकुमार देवताने स० वचने करी सत्कारे सम्मा० सन्मान करे, वस्त्रादिके सन्मानीने उठी जवो थाय प० प्रतिविसर्जे (पोताना स्थानके जवानी आज्ञा दे)

भावार्थः—हवे जुओ मागध तीर्थना देवताए विवादमां कोपथी भरतमहाराजाने एवां वचन कह्यांः"एवो कोण छे? मर्णने कोइ न वान्छे तेनो वांछणहार, माठा लक्षणनो धणी, तुटती चौदस कालीबोली अमावास्यानो जण्यो, लज्या लक्ष्मण करीने रहित." ए वचन देवताए कह्यां. एवां वचन वरदाम अने प्रभासतीर्थना देवताए पण कह्यां अने एवांज वचन म्लेछ राजाए पण कह्यां, अने ते केवली गणधरे सूत्रमां गुथ्यां. हे देवानुप्रीय! तमारे लेखे तो भरत माहाराजा एवा हींण-पुन्या छे, तेथी देवताए पूर्वोक्त वचन कह्यां छे, ने गणधरे सूत्रमां गुंथ्यां छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "ए तो देवताए कोपमां वचन कह्यां छे, अने देवतानी कहेणी गणधरे सूत्रमां गुंथी छे. एतो अपेक्षाये वचन सूत्रमां घाल्यां छे, पण भरत महाराजा तो महा भाग्यवंत छे." त्यारे हे देवानुप्रीय! जेम ए वचन देवताए तथा म्लेछ देशना राजाए कोपमां भरत माहाराजाने कह्यां तेवां गणधरे सूत्रमां गुंथ्यां, पण भरत माहाराजा एवा नथी तेम आर्द्रकुमारे पण विवादमां ब्राह्मणोने कह्युं के, तमारा सरखा धर्मना द्वेषी तथा हिंसा धर्मना स्थापनहार मंजारा सरीखाने ब्रह्म भोजन दे, तो नारकीमां जाय. ए आर्द्रकुमारे विवादमां वचन कह्यां; तेनुं कहेवुं गणधरे सूत्रमां गुंथ्युं छे. ए अपेक्षाय वचन छे, पण श्री तीर्थंकरना साधुनुं उपदेशीक वचन नथी. अपेक्षाय ओलख्या विना जे अर्थ करे तेने श्री तीर्थंकरनो चोर कहीये. शास्त्र सूत्र प्रश्न व्याकरणना बीजा संवरद्वारमां, दस प्रकारे साच कह्युं छे. बार प्रकारे भाषा, सोल प्रकारनां वचन, त्रण लिंग, त्रण काल, एक वचन, द्विवचनादिक सात विभक्ति, अपेक्षाय वचन, (उवणिए) स्तुति वचन, (अवणिय) निंद्या वचन, इत्यादिक सोल प्रकारनां वचन ओलखीने पछी सूत्रनो अर्थ करवो. (एय अरिहंताणुणाए) एवी अरिहंतदेवनी आज्ञा छे.

तमे अपेक्षाय वचन जाण्या विना कह्यां छे. ने वली कहो छो के, सूयगडांग सूत्रमां कह्युं छे, के ब्राह्मणोने जमाड्याथी नारकीमां जाय. एवां सूत्रनां जुठां नाम लइ अरिहंतनी आज्ञाना चोर केम थाओ छो?

एवा अपेक्षाय वचन तो सूत्रमा ठामठाम छे जेम सकेंद्र अने चमरेंद्र कोणिक राजानी पक्षे आव्या, अने अढार देशना राजा चेडा राजानी पक्षे आव्या, त्या धर्म स्हाज दीधी (दस्तस्ता) कह्यु ने ए पण इन्द्र तथा राजानुं केहेवुं सूत्रमा गुंथ्युं छे, ने ए पण अपेक्षाय वचन छे वळी भगवती सूत्र शतक पहेले, श्री पार्श्वनाथजीना सतानिया कालासवेसी-पुत्र-अणगारे श्री महावीर भगवंतना स्थिवरने कह्यु के, तमे सामायक न जाणो, तथा सामायकनो अर्थ पण न जाणो, इत्यादिक आठ प्रश्न पुछया पछी श्री महावीरजीना स्थिवरे अर्थ बताव्या, त्यार पछी कालासवेसी-पुत्रे प्रतिबोध पामीने कह्यु के, ए वचन में पूर्वे जाण्यां नही, सद्दह्यां नहिं, प्रतित्यां नहिं, रुचव्यां नाहिं, इत्यादिक घणा बोल कह्या पछी कह्यु के, हवे में जाण्या, साम्भळ्यां, सरदह्या, प्रतित्यां, रुचव्यां, एम कह्युं हवे जुओ ! सामायकादिक आठ बोल जाण्या विना तथा सरदह्या प्रतित्या तथा रुचव्या विना श्री पार्श्वनाथजीना सतानीया केम कहेवाय ? परन्तु ए अपेक्षाय वचन छे आ स्थिवरोने एवुं जाणपणु छे, एवुं पूर्वे कोइ पासे साम्भळ्यु, जाण्यु, सरदह्युं, प्रतित्यु के रोचव्यु नहोतु, पण ज्यारे स्थिवरे अर्थ कह्यो त्यारे जाण्यु के, आ स्थिवरोने एवु जाणपणु छे हवे जाण्यु, सरदह्यु, प्रतित्यु अने रुचव्यु, ए स्थिवरनी अपेक्षाये जेवा कालासवेसीए कह्यां तेवा अपेक्षाय वचन गणधरे सूत्रमा गुथ्या तेम आर्द्रकुमारे पण ज्यारे ब्राह्मणोए गुरुपणु जणाव्यु, अने ब्राह्मणोने जमाड्यामां पुन्यनो बंध तथा मोक्षनु अम छे एम जणाव्यु, त्यारे आर्द्रकुमारे तेनी कहेणीनी अपेक्षाए तेनो उत्तर दीधो के, जो एवु सरदहे तो नारकीमां जाय ए पण गुरुनी बुद्धे मोक्षने अर्थे दान देवा आश्री ना कही छे, पण अहोयां अनुकंपादाननो प्रश्न नथी

वळी तेरापंथी कहेछे के " उत्तराध्ययन सूत्रना चौदमा अध्ययनने बारमी गाथामा भृगुपुरोहीतने पोताना बेटाए कह्युं के, ब्राह्मणने जमाडे तो तमतमाए (सातमी नारकीमां) पहोंचे, एम कह्युं छे.ए न्याये अमे गरीब मागता भोखारी तथा ब्राह्मण प्रमुख सर्व असंजतिने अनु,

कंपा लावीने दान दीधामां पाप कहीये छीए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अहिं तो पहेलां नृगुपुरोहीते पोताना बेटाने संजम-तपनी व्याघात करवा वास्ते वेदनो मत बताव्यो छे, तथा घरमां राखवा सारु मिथ्यात परुप्युं छे. ते बापना अनिप्रायनो उत्तर दीधो छे के, हे पीताजी! तमे कह्युं एम जो सरदहे तो तमतमाए पहोंचे, एम कह्युं छे. तेनी शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन चौदमानी गाथा ७ थी १२ सुधी. ते पाठः—

अह तायर्ज तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी; इमं वयं वेद विदो वयंति, जहा न होइ असुयाण लोगो. ॥७॥ अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिठप्प गिहंसि जाया; नोच्चाण नोगे सह इत्थियाहिं, आरणगा होहि मुणि पसत्था. ॥८॥ सोयग्गिणा आय गुणिधणेणं, मोहानिला पज्जलणा हिएणं; संतत्त नावं परितप्पमाणं, लालप्पमाणं बहुहा बहुंच ॥१०॥ पुरोहियंतं कमसोणुणंतं, निमंतयं तंच सुए धणेणं; जह कम्मं कामगुणेहिं चेव, कुमारगति पसमिक्खवक्कं ॥ ११ ॥ वेया अहिया न हवंति ताणं, नुत्ता दिया नेति तमंतमेणं; जायाय पुत्ता नहवंति ताणं, कोनामत्ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥ १२ ॥

अर्थः—अ० अथ हवे ता० ते पिता त० त्यां (ते अवसरे) मु० नावमुनि ते० तेना त० तपने वा० व्याघातकारी वचन व० बोल्या. इ० ए व० वचन वे० वेदनां वि० जाण व० कहे छे. ज० जेम न० न होय अ० अपुत्रीयाने लो० परलोक (मोक्ष) ॥७॥ अ० ते माटे व० वेद नणो, प० जमाडो वि० विप्रने, पु० पुत्रने प० स्थापीने गि० घरने विषे जा० हे पुत्र! जो० नोगवीने नो० नोग स० इ० स्त्री संघाते नुक्त नोगी थइने पछी आ० उजाड अटवीमां हो० थाजो मु० मुनी प० प्रशस्त नला. ॥८॥ सो० पुत्रना वियोगनी चिंताथी उपन्यो जे शोक. ते शोक.

रुपी अग्निए करी आ० आत्माना गुण ज्ञानादिरुपी इंधणे करी मो० मोहरुपी वायराथो प० प्रजल्यो (बल्यो) अ० अधिक तेथी स० अनि धृत जा० अत करण प० सर्व प्रकारे बलतोथको प्रवर्ते छे, ला० अतिशे वचन बोलतोथको प्रवर्ते छे, ब० अनेक प्रकारे ब० घणा लाल्य पाल्य करतोथको प्रवर्ते छे ॥१०॥ पु० पुरोहित त० ते बे कुमारने क० अनुक्रमे कहेतो (देखाडतो) थको प्रवर्ते छे नि० आमंत्रतोथको त० ते सु० पुत्रने ध० धनेकरी ज० जेम कहेवानो पोतानो जाव हतो तेम अनुक्रमे का० कामजोगना जे गुण, ते मनोहर शब्दादिके करी आमंत्रतो थको प्रवर्ते छे कु० ते बे कुमार पुरोहित (तेना मोहाध पिता) प्रत्ये प० विचारीने वचन बोल्या ॥ ११ ॥ वे० वेद अ० जणाथी न० न थाय ता० शरण, तथा जु० जमाड्याथी वि० विप्रने पहोंचाडे त० नरके जा० जन्मेला पु० पुत्र न० न थाय ता० शरण को० कोण ए तमारु कह्यु हे तात ! अ० माने ? ए० ए कह्यु ते ॥१२॥

जावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमा तो पुत्रना तप संजमनी घात करवा तथा तेने घरमा राखवा वास्ते पहेलाथीज पीताए कह्युं के "हे पुत्र ! जे वेदना जाण मोटा रुषीश्वर छे ते पण एम कहे छे के, एटला कार्य कर्या विना मोक्ष न थाय 'असूयाण लोगो' अपुत्रियाने गति नथी " एवा मिथ्यात सूत्रमा जे वचन कह्या छे, ते वचन पोताना पुत्रने साचा सदहावे छे अने अगीकार करावे छे

वली नवमी गाथामा खोटो मिथ्यात मार्ग देखाडे छे के " हे पुत्रो ! मोक्षमार्गनी बुद्धे तमे वेद जणो, ब्राह्मणोने ब्रह्म जोज द्यो, स्त्रि साथे जोग जोगवो अने पुत्रने घरनो जार स्थापो पछी मुनीपणु लइ वनमा विचरवु ते श्रेष्ट छे, प्रशसनीक छे " एम कह्यु. " एटलां कार्य हे पुत्र ! तमे करा ए कार्य मोक्षना साधक छे पछी तमने मुनी पणु लेवुं श्रेय छे एटले एटला कार्य कर्या विना मुनिपणु लेवु श्रेय नथी " एवो अजिप्राय पिताए पुत्रने जणाव्यो ए पितानु केहेवु सां जलीने पछी पुत्र बोल्यो के " हे तात ! ए कार्य मुक्तिना अग छे अने

ए कार्य कर्याविना मुनिपणुं श्रेय नथी " एवुं जे कोइ सद्दहे, तेने मिथ्यात्व लागे, अने ते नारकी जाय तो अटके नही;" एम कह्युं छे, पण सहेजे वेद भणे तो मिथ्यात न लागे अने नारकी न जाय. वली संसारने हेते अनुकंपा लावीने ब्राह्मणोने जमाडे तो मिथ्यात न लागे. अने नारकी न जाय. वली न्हाये धोये धर्म जाणे तो मिथ्यात लागे, पण सहेजे संसारना हेते न्हाये धोये तो मिथ्यात न लागे; कारणके समद्रष्टि-श्रावक पण न्हाय धोय तो छे. ते माटे मिथ्यात न लागे अने नारकीमां पण न जाय. हे देवानुप्रीय ! मिथ्यातने कारणे करी मुक्तिनो हेतु जाणे, ते आश्री बापना कह्याना अभिप्रायनो उत्तर दीधो छे. वली इहां तो एम कह्युं छे के "वेद भण्याथी त्रांण (सरण) नथी, ब्राह्मणोने जमाड्याथी तमतमा पहोंचे, अने जाया पुत्र पण तारवा समर्थ नथी. माटे हे तात ! तमारां वचनने कोण माने ?" एम कह्युं छे; पण एम नथी कह्युं, के ब्राह्मणोने जमाड्याथी नारकीमां जाय. इहां तो 'भुत्तादियाणंति तमंतमेणं' एम कह्युं छे. णं शब्द तो अलंकारवाची छे, अने तमंतमे नाम मिथ्यात् अंधकारनुं छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन वीसमानी गाथा. ४५-४६-४७:—

जे लखणं सुविण पउंजमाणे, निमित्त कोउहल संपगाढे;
कुहेड विज्जा सवदार जीवी, न गछइ सरणं तंमिकाले.।४५।
तमंतमेणं वउसे असीले, सयादुही विप्परिया मुवेइ; संधावइ नरय तिरिखजोणि, मोणं विराहित्तु असाहुरुवे ॥४६॥
उद्देसियं कीयगडं नियागं, नमुंचइ किंचि अणेसणिज्जं;
अग्गीविवा सव्व भरकी भवित्ता इउ चुउं गछई कट्टुपावं।४७।

अर्थः—जे० जे वेशधारी ल० सामुद्रिके करी शरीरनां लक्षण सु० स्वप्ननो विचार प० लोकनी आगल कहेतो प्रवर्ते, नि० भूमिकंपादिक अतितकाल प्रमुखनुं निमित्त भाषे, को० पुत्रादिकने अर्थे स्त्री भरथारने एक पोतीआथी स्नान करावावाने विषे सं०अति आसक्त, कु०

कुको आश्चर्यकारी वि० विद्या मन्त्रादिके करी स० पापनी उपार्जन करे करी जी० जीवे, न० ते मन्त्रादिकथी न पामे स० सरण मन्त्रादिक आधार भुतन थाय त० अंतकालने विषे ॥ ४५ ॥ त० अति अज्ञानपणे करी द० द्रव्य यति (वेशधारी) अ० शील रहित स० सदाय दु० दु खी वि० विपरीतपणु मु० पामे परलोकने विषे सुख पामवानी आशा होय ते दु ख पामे स० निरंतर जाय न० नरक ति० तिर्यंच जो० योनिने विषे मो० चारित्र वि० विराधीने अ० असाधुरुप ॥ ४६ ॥ उ० आधाकर्मी कि० यतिने अर्थे मुले लाव्या होय ते नि० नित्य पिंड न० न मुके कि० काइ पण अ० सदोष अग्गी० अग्निनी परे स० सर्व ज० जाली न० ए० इसे इ० इहांथी चु० चवीने ग० जाय क० करीने पा० पाप कर्म ॥ ४७ ॥

भावार्थ —हवे जुओ ! अनाथीजी मुनीराजे श्रेणीक राजाने ए देखां तो द्रव्य अनाथपणु देखाड्यु अने पछी भाव अनाथपणु देखा- मणु के, हे राजन् ! साधुपणु लेइ शुद्ध संजम तथा पांच माहाव्रत न पाले, रसनो गृद्धि थइ आधाकर्म्यादिक आहार तथा स्थानकनी प्ररु- पणा करे, घणाना घटमा मिथ्यात् घाले, पांच सुमतिने विषे जतन न करे, अने घणा काल सुधी मस्तक मुंडावी तप नियमथी जे भ्रष्ट थाय, तेने पोली मुंठीनी उपमा दीधी जेम पोली मुठीमा कांइ नथी तेम भेख तो साधुनो छे, पण ज्ञान, समकित अने चारित्ररुपी धन नथी तेने खोटां नाणांनी (काचना कटकानी) उपमा दीधी ते असंजतियको सं जति नाम धरावे एज मिथ्यात्व तेने कालकुट विष सरखो कह्यो तेने विपरीत शस्त्र ग्रहे तेनी अने अविधे वेतालनो मन्त्र जपे तेनी उपमा दीधी ३० थी ४४ मी गाथा सुधीमा घणो अधिकार छे अने ४५ थी ४७ मी सुधी तो इहां लखी छे, तेमां कह्यु छे के, वेशधारी यति कुगुरु पनां लक्षण प्ररुपे अने स्वप्नानो विचार इत्यादिक प्ररुपे तेने ४६ मी गाथामां अज्ञानी, मिथ्यात्वी अने शील (आचार) रहित कह्यो ते सदाय सुखथी विपरीतपणु पामे, परलोके सुख पामवानी आशा होय त्यां दुःख पामे, अने निरंतर नर्क तिर्यंचनी योनीने विषे जाय. ते

चारित्र विराधीने असाधुरुप थाय. हवे जुन ! ४६ मी गाथाना पहेला पदमां तो अज्ञानपणुं तथा मिथ्यात्वपणुं कह्युं, अने त्रीजा पदमां नर्क तिर्यंचनी गति कही. ए न्याये तंमतमे नाम मिथ्यात्वनुं छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, इहां तो तंमतमे शब्दे अज्ञानपणुं कह्युं छे, पण मिथ्यात्व कह्युं नथी. तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! अज्ञानपणुं ने मिथ्यात्वपणुं ए बन्ने एकज छे. ज्यां अज्ञानपणुं त्यां निश्चे मिथ्यात्व छे, अने ज्यां ज्ञानपणुं त्यां निश्चे समकित छे. समद्रष्टीमां ज्ञाननी नियमा छे अने मिथ्याद्रष्टीमां अज्ञाननी नियमा कही छे. शाख सूत्र नगवती शतक आठमे उद्देशे बीजे. इत्यादिक ठामठाम सूत्रमां अज्ञान अने मिथ्यात्व एकज कह्युं छे. वली त्रीजा पदमां नर्क तिर्यंचनी गति कही छे अने चोथापदमां असाधुरुप कह्या छे, ते पण मिथ्यात्व आश्री कह्युं छे. जे दोषने निर्दोष स्थापे ने असाधुपणानां काम करीने साधुपणुं सद्दहावे, तेने छेतालीसमी गाथाना पहेला पदमां तंमतमे नाम अज्ञान मिथ्यात्व आवे. तेथी त्रीजा पदमां नर्क तिर्यंचनी गति कही, अने चोथा पदमां असाधुपणुं कह्युं. वली वीसमा अध्ययनमां कह्युं छे के, जे कर्मने वशे दोष लगावे पण स्थापना न करे अने दोषने दोष प्ररुपे, तेने तो निशिथसूत्रमां प्रायश्चित कह्युं छे; तथा तेने विराधक साधु छठे गुणठाणे कहीये; अने तेनी गति तो जघन्य नवनपति-देवतानी अने उत्कृष्टी पेहेला देवलोकनी कही. शाख सूत्र नगवती शतक पहेले उद्देशे बीजे. वली पचीसमा शतकना छठा तथा सातमा उद्देशामां छ नियंठा ने पांच चारित्रनो विस्तार छे. त्यां कह्युं छे के, आराधिक होय तो इंद्रपणुं १, सामानिकपणुं २, तायतिसगपणुं ३, कोटवालपणुं ४, अने अहमिंद्रपणुं ५, ए पांच मांहेली हरकोइ पदवी पामे. अने विराधिक होय तो चार जातना देवतामां जाय एम कह्युं छे.

वली श्री पार्श्वनाथजीनी २०६ आर्याओ तथा द्रौपदीना लारला (आगला) नवमां सुकुमालीका आद अनेक साधपणामां दोष लगावीने देवतामां गया कह्या छे; पण विराधिक साधुनी नर्कतिर्यंचनी गति

कोइ ठेकाणे कह्यी नथी सर्वथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी कुकरी-कन्ती पेठे जे भ्रष्ट थाय तेज नर्कमा जाय तेम इहां ४६ मी गाथाना त्रीजा पदमा नारकीनी गति कही ते दोषने निर्दोष स्थापे तथा असजमपणाना काम करीने साधुपणु सद्दहावे तेथी मिथ्यात्व लागे ते माटे ४६ मी गाथाना पहेला पदमा तमतमे नाम मिथ्यात्वनु छे अने तेथी त्रीजा पदमा नर्कतिर्यंचनी गति कही वली नारकीमा कोण जाय, ते ४६ मी गाथामा कह्यु के उद्देशीक मुलनु आण्युं, नित्य पिंडादिक, ए षणिक के अनेषणिक काइ पण छोडे नहीं अने अग्निनी परे सर्वभक्षी थाय, ते पापकर्म करीने दोषने निर्दोष स्थापे ते नर्कमां जाय ते आमी जाणवु जेम वीसमा अध्ययनमा तंमतमे नाम मिथ्यात्वनु छे तेम श्रेणीकने पुत्रे कह्यु, ते पण तमतमा नाम मिथ्यात्व अंधकारनु छे ए आपना कहेवाना अभिप्रायनो उत्तर दीधो छे वली तमतमे शब्द पुरुष लिंग वाची छे शास्त्र सूत्र अणुयोगद्वार, एकारान्त, ओकारान्त अने अकारान्त इत्यादिक शब्द पुरुषलिंग वाची कह्या छे ए न्याये तमतमे शब्दमां एकार अंतमा छे अने ए अधकार वाची छे ए न्याये तमतमे शब्द पुरुषलिंग वाची छे, अने नारकी तो स्त्रीलिंग वाची छे पाठमा पुरुष लिंग वाची शब्दनो स्त्रीलिंग वाची अर्थ शीरीते थाय ? ते न्याय ते विचारी जोजो त्रण लिंग जाणीने पछी अर्थ करवानी भगवंतनी आज्ञा छे त्रण लिंग जाण्या विना अर्थ करे ते भगवंतनी आज्ञा बाहार छे शास्त्र सूत्र प्रश्नव्याकरणना बीजा संवरद्वारमां तमे मतना लोपे तंमतमे शब्द पाठमा पुरुषलिंग वाची छे तेनो नारकी एवो स्त्रीलिंग वाची अर्थ करो छो, ते घणु अयुक्त छे

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "कोइक उत्तराध्ययनना टबार्थमा आचार्योने जमाल्या नारकी जाय एवो अर्थ लख्यो छे तेथी अमे कहीये छीए" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! अर्थ तो छदमस्थ आचार्यना मनमां जेम भाष्या तेम लख्या छे यथा पायचंदसुरीजीए, धर्मसींहजीए, लतसागरजीए, दोलतसागरजीए, अजयदेवसूरीजीए अने लक्ष्मीवल्लभजीए

केइक पाठनी टीका तथा अर्थ जुदी जुदी रीते कर्या छे. घणा सूत्रपाठना अर्थ अने टीका तो सर्व आचार्योए कर्यानो परमार्थ एक सरखो मळे छे, पण कोइक पाठना अर्थ अने टीकामां परमार्थ न्यारो छे. हवे तमे कया आचार्यना कर्या अर्थ प्रमाण करोछो ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "दस पूर्वधारीना कर्या अर्थ तो सर्व प्रमाणमां छे, अने बीजा अर्थ तो हमणा थोड़ा कालना कर्या छे. ते आचार्योने पूर्वनुं ज्ञान नहोतुं, पण ते अर्थ मुळ सूत्रना पाठ साथे मळे, अने केवलीनां वचन साथे मेलवतां विरुद्ध न पड़े तो प्रमाण छे. बाकी पोतपोताना मतना लीधे मनमां जेम जाण्या तेम कर्या, ते प्रमाणमां नथी. जो केवलीनां वचनथी मळे तो प्रमाण छे." तेनो उत्तर,

त्यारे हे देवानुप्रीय! भृगु प्रोहितने बेटे ब्राह्मणोने जमाड्याथी तंमतमा पहोंचाड़े कह्युं, तेनो अर्थ तंमतमे शब्दे नारकीमां जाय. ए अर्थ तमे मतना लीधे प्रमाण केम करो छो? केमके त्यां तो जो गुरुनी बुद्धे मोक्षने हेते जाणे तो मिथ्यात्व अंधकारमां पड़े, एज अर्थ साचो छे. वली तमे कहो छो के, ब्राह्मणोने जमाड्याथी नारकीमां जाय त्यारे अमे तमने पुछीए छीये के, तंमतमे नाम कइ नारकीनुं छे? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, सातमी नारकीनुं नाम तंमतमा छे. त्यारे हे देवानुप्रीय! परदेशी राजाए पोणा बे हजार गामना हांसलनुं, मागता भीखारी तथा ब्राह्मणादिकने दानशाळा मंडावी दान दीधुं, एम रायपश्रेणी सूत्रमां कह्युं छे. ए तमारे लेखे प्रदेशी राजा पण सातमी नारकीमां गयो जोइए. वली अनेक श्रावको जे अभंगद्वारे दान दीधा कह्या छे. ते सर्व तमारी कहेणीने लेखे सातमी नारकीमां गया जोइए. वली तमारा श्रावक न्याती, गोत्री, असंजति, अवृति छे तेने जमाड़े छे, गाय भेंस प्रमुख तिर्यंच असंजति अवृति छे तेने पोषे छे, तथा मागता भिखारी ब्राह्मणादिकने अंतकालमां पेटीयादिक दान दे छे. ते सर्व दान देवावाला तमारा श्रावक तमारी सद्दाहने लेखे तो सातमी नारकीमां गया जोइए. तेवारे सर्प बीलमां (दरमां) पेसतो सीधो थाय तेनी पेठे

तेरापंथी खीसाणा (शरमींदा) थइने कहे के, गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु (धर्म-पुन्य) जाणीने आपे तो नारकीमा जाय, अने ससारनो हेतु जाणीने आपे तो पण पाप तो लागे, पण सातमी नारकीमां न जाय तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! तमारी केहेणीने लेखे जिनमार्गी तो धर्म पुन्य जाणे, पण मिथ्यात्वी पहेला गुणठाणाना धणी तो, सर्व मागता भीखारी अने गरीब ब्राह्मणोने दान दीधामा धर्म पुन्य अने मोक्षनो हेतु जाणे छे, ते सर्व तमारी श्रद्धानी कहेणीने लेखे तो सातमी नर्कमा जवा जोइए, केमके तमे कहो छो के "सूत्रमा केवलीए कह्यु छे के, ब्राह्मणोने जमाड्यामा धर्म पुन्य जाणे तो सातमी नारकी (तमतमा) मा जाय" त्यारे केवलीनां वचन सत्य छे, संदेह जुठ नथी ब्राह्मणोने तथा असंजति अवृत्तिने दान दीधामा सर्व मिथ्यात्वी धर्म पुन्य जाणे छे ते सर्व तो तमारी कहेणीने लेखे सातमीए जाशे हवे छ नारकी खाली रही, तेमा तमारा साध श्रावक कोण जाशे ते कहो

अहो देवानुप्रीय ! "ब्राह्मणोने जमाड्याथी (तमतमा) सातमी नारकीए जाय एवा जुठा अर्थ करीने अणसमजु जीवोना घटमां घोचा केम घालो छो ? सूत्रमा वासुदेव चक्रवर्ती राज्य पद्धमा मरे, तेनी पण सात नारकीनी समच्चय गति कही, पण एक सातमीमाज जाय एवु कह्यु नथी सिंह मच्छादिक हिंसक जीव समच्चय नारकीमा जाए कह्यु, पण एक सातमीमाज जाय एवु कह्यु नथी वली नारकीमा जवाना चार कारण महा आरम्भादिक समच्चय कह्या तेनी शास्त्र सूत्र ठाणायांग ठाणे चोथे वली भगवती आदि बत्रीश सूत्रमा एवु क्याय पण कह्यु नथी, के फलाणु पाप कर्याथी सातमीमांज जाय त्यारे ब्राह्मणोने जमाड्या तमतमा सातमीमाज जाय, एवु एकान्त वचन केवली केम कहे ? काह्या हो ते वीचारी जोजो इहां तो भृगुप्रोहित ते पेहेला पोताना वेदाने वेदनो मत, तथा ब्राह्मणोने जमाड्यामा मोक्षनो हेतु तथा गुरुनी बुद्धीपणु जणाव्यु छे से बापना केहेवाना अभिप्रायनो उत्तर दीधो के, तमे कहोछो तेम सद्दहे तो तमतमे

नाम मिथ्यात्व अंधकारमां पडे. वली ब्राह्मणोने जमाड्यां नारकीमां जाय, एवुं चीवादवचनमां पापने कहे तोपण ग्रहस्थनुं वचन प्रमाणमां नथी; अने सूत्रमां तो गणधरे बाप बेटानी कहेणीनी अपेक्षानां वचन गुंथ्यां छे. ते विवादवचन अने अपेक्षाय वचननो उत्तर. आर्द्रकुमारनी चरचामां लख्या छे. ते रीते जाणवा. वली आर्द्रकुमारने तो ब्राह्मणोए तथा भृगुना बेटाने भृगु-प्रोहीते पहेलां जीन-धर्मथी दिक्षाथी प्रणाम नलारवा वास्ते (वेदनो मत) मिथ्यात्वपणुं स्थाप्युं छे, अने ब्राह्मणोनुं गुरुपणुं जणाव्युं छे. तथा ब्रह्मभोजनमां पुन्यनो बंध, मोक्षनो हेतु, जणावी जिनधर्म निषेध्यो छे. तेथी आर्द्रकुमारे अने भृगुप्रोहितना बेटाए ब्राह्मणोने जीनमतना द्वेषी जाणीने कह्युं के, तमे कहो छो तेम सद्दहीने ब्राह्मणोने जो जमाडे तो तमतमा (मिथ्यात्व अंधकार) मां पहोंचे अने नारकीमां जाय; एवुं विवादमां वचन कह्युं; पण ते ग्रहस्थनुं विवाद वचन प्रमाणमां नथी. केवली मुनीराजनुं उपदेशीक वचन नीस्पृहिपणानुं नथी. नीस्पृहिपणे उपदेश वचन तो नमिराज रुषीए उत्तराध्ययन सूत्रना नवमा अध्ययनमां कह्यां छे. इंद्रे ब्राह्मणनुं रुप बनावीने नमिराजना समकितना पारखा निमित्ते प्रश्न पुछ्या. ते ब्राह्मणने जमाड्या विषेनो नमिराज रुषीए उत्तर दीधो. ते पाठः—

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण माहणे;
दुच्चाय जिट्ठाय, तउ गच्छसि खत्तिया ॥ ३८ ॥
एय मट्ठं निसामित्ता, हेउ कारण चोइउ;
तउ नमिराय रिसि, देविंदो इण मब्बवी ॥ ३९ ॥
जोसहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवंदए;
तस्सावि संजमो सेउ, अदिंतस्स वि किंचणं ॥ ४० ॥

अर्थः—ज० जो वि० घणा विस्तीर्ण ज० यज्ञ भो० जमाडीने स० शाक्यादिक श्रमण मा० ब्राह्मणने द० (गायादिक सुवर्णादिक दान)

तेरापथी खीसाणा (शरमींदा) थइने कहे के, गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु (धर्म पुन्य) जाणीने आपे तो नारकीमा जाय, अने ससारनो हेतु जाणीने आपे तो पण पाप तो लागे, पण सातमी नारकीमां न जाय तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! तमारी केहेणीने लेखे जिनमार्गी तो धर्म पुन्य जाणे, पण मिथ्यात्वी पहेला गुणठाणाना धणी तो, सर्व मागता भीखारी अने गरीब ब्राह्मणोने दान दीधामा धर्म पुन्य अने मोक्षनो हेतु जाणे छे, ते सर्व तमारी श्रद्धानी कहेणीने लेखे तो सातमी नर्कमा जवा जोइए, केमके तमे कहो छो के "सूत्रमा केवलीए कह्यु छे के, ब्राह्मणोने जमाड्यामा धर्म पुन्य जाणे तो सातमी नारकी (तमतमा) मां जाय" त्यारे केवलीना वचन सत्य छे, संदेह जुठ नथी ब्राह्मणोने तथा असजति अवृत्तिने दान दीधामा सर्व मिथ्यात्वी धर्म पुन्य जाणे छे ते सर्व तो तमारी कहेणीने लेखे सातमीए जाशे हवे छ नारकी खाली रही, तेमां तमारा साध श्रावक कोण जाशे ते कहो

अहो देवानुप्रीय! "ब्राह्मणोने जमाड्याथी (तमतमा) सातमी नारकीए जाय एवा जुठा अर्थ करीने अणसमजु जीवोना घटमां घोचा केम घालो छो? सूत्रमां वासुदेव चक्रवर्ती राज्य पद्धिमा मरे, तेनी पण सात नारकीनी समचय गति कही, पण एक सातमीमाज जाय एवु कह्यु नथी सिंह मछादिक हिंसक जीव समचय नारकीमा जाए कह्या, पण एक सातमीमाज जाय एवु कह्यु नथी वली नारकीमा जवानां चार कारण महा आरम्भादिक समचय कह्यां तेनी शाख, सूत्र ठाणायांग ठाणे चोथे वली भगवती आदि बत्रीश सूत्रमां एवु पयाय पण कह्यु नथी, के फलाणु पाप कर्याथी सातमीमाज जाय त्यारे ब्राह्मणोने जमाड्या तमतमा सातमीमाज जाय, एवु एकान्त वचन केवली केम कहे? माटा हो ते वीचारी जोजो इहा तो भृगुप्रोहित ते पेहेला पोताना बेटाने वेदनो मत, तथा ब्राह्मणोने जमाड्यामा मोक्षनो हेतु तथा गुरुनी बुद्धीपणु जणाव्यु छे ते बापना के हेवाना अभिप्रायनो उत्तर दीधो के, तमे कहोछो तेम सद्दहे तो तमतमे

नरकम मिथ्यात्व अंधकारमां पडे. वली ब्राह्मणोने जमाड्यां नारकीमां जाय, एवुं वीवादवचनमां पापने कहे तोपण ग्रहस्थनुं वचन प्रमाणमां नथी; अने सूत्रमां तो गणधरे बाप बेटानी कहेणीनी अपेक्षानां वचन गुंथ्यां छे. ते विवादवचन अने अपेक्षाय वचननो उत्तर. आर्द्रकुमारनी चरचामां लख्या छे. ते रीते जाणवा. वली आर्द्रकुमारने तो ब्राह्मणोए तथा भृगुना बेटाने भृगु-प्रोहीते पहेलां जीन-धर्मथी दिक्षाथी प्रणाम उतारवा वास्ते (वेदनो मत) मिथ्यात्वपणुं स्थाप्युं छे, अने ब्राह्मणोनुं गुरुपणुं जणाव्युं छे. तथा ब्रह्मभोजनमां पुन्यनो बंध, मोक्षनो हेतु, जणावी जिनधर्म निषेध्यो छे. तेथी आर्द्रकुमारे अने भृगुप्रोहितना बेटाए ब्राह्मणोने जीनमतना द्वेषी जाणीने कह्युं के, तमे कहो छो तेम सद्दहीने ब्राह्मणोने जो जमाडे तो तमतमा (मिथ्यात्व अंधकार) मां पहोंचे अने नारकीमां जाय; एवुं विवादमां वचन कह्युं; पण ते ग्रहस्थनुं विवाद वचन प्रमाणमां नथी. केवली मुनीराजनुं उपदेशीक वचन नीस्पृहिपणानुं नथी. नीस्पृहिपणे उपदेश वचन तो नमिराज रुषीए उत्तराध्ययन सूत्रना नवमा अध्ययनमां कह्यां छे. इंद्रे ब्राह्मणनुं रुप बनावीने नमिराजना समकितना पारखा निमित्ते प्रश्न पुछ्या. ते ब्राह्मणने जमाड्या विषेनो नमिराज रुषीए उत्तर दीधो. ते पाठः—

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण माहणे;
दुच्चाय जिठाय, तउ गछसि खतिया ॥ ३८ ॥
एय मठं निसामित्ता, हेउ कारण चोइउ;
तउ नमिराय रिसि, देविंदो इण मबवी ॥ ३९ ॥
जोसहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवंदए;
तस्सावि संजमो सेउ, अदिंतस्स वि किंचणं ॥ ४० ॥

अर्थः—ज० जो वि० घणा विस्तीर्ण ज० यज्ञ भो० जमाडीने स० शाक्यादिक श्रमण मा० ब्राह्मणने द० (गायादिक सुवर्णादिक दान)

दक्षणा दइने भु० मनोज्ञ काम भोग भोगवीने जि० यज्ञ करीने त्यार पछी ग० जाजे तु ख० हे क्षत्रीराजा । ३८ ए० ए म० पूर्वोक्त अ नि० सात्रक्षीने हे० जे जे सुखकारी अहिंसादिक जेम धर्म तेम भोग दिक जाणवा इत्यादिक हेतु का० कारणे चो० प्रेर्योथका त० तेवा पछी न० नमिराज रुषी दे० शक्रेंद्र प्रत्ये इ० एम म० बोल्या ३९ जो० जे कोइ स० दसलाख मा० मासमास प्रत्ये ग० गायनु दान दे त एवा दातार होय तेने पण स० सयम श्रेय होय अ० (गायादिक) अणदेता होय तेने अथवा किं० थोडु पण न देतो होय तेने प सजम भलो ॥ ४० ॥

भावार्थ —हवे जुओ ! इहातो इंद्रे समकितनु पारखु करवा वास्ते प्रश्न पुछया के, "हे ! नमीराय ! तमे मोटा यज्ञ करीने, ब्राह्मणोने श्रमण शाक्यादिकने जमाडीने, दक्षणा दइने, अने मनोज्ञ भोग भो- गवीने पछी दिक्षा लेजो" तेवारे नमिराज रुषीश्वरे कह्यु के हे इंद्र ! दस लाख गायो महीने महीने दान दे, तेने पण सजम श्रेय छे, अने किंचीत मात्र दान न दे, तेने पण सजम श्रेय छे ए जुओ ! दानना देण हारने अने अणदेणहारने बन्नेने सजम श्रेय (भलो) कह्यो, पण ब्राह्म णोने दान देवु निषेध्युं नथी ए नमीराज रुषीनु वचन श्री केवलीनीपरे निस्पृहीपणानु छे हवे जुओ । जो जीनमार्गमा केवलज्ञानीए असजति, अव्रति अने ब्राह्मणोने दान दीधामा सूत्रमा कोइ ठेकाणे पाप कह्यु होत तो, नमिराजरुषी एम कहेता के "हे इंद्रे ! तु तो असजति अ व्रति अने ब्राह्मणोने दान देवामा पाप तथा नारकीनु कारण जाणे छ" पण एम नथी कह्यु केमके तमारा सरखी श्रद्धा नमीरायनी होत तो निषेधता, पण तेमनी तमारा सरखी श्रद्धा नहोती; तेथी तेमणे नि स्पृहीपणे वचन कह्यु ते केवलज्ञानी गणधरे सूत्रमा गुंथ्यु, ते वचन प्रमाण छे, पण आर्द्रकुमारना तथा भृगुना बेटाना विवाद वचन प्रमा णमा नथी वली अहीं तो ब्राह्मण गुरुनी बुद्धे पुजाये छे, तथा गुरुनी बुद्धे (मोक्षने हेते) दान ले छे, तेने धर्मना द्वेषी जाणी गुरुबुद्धे अमा-

ध्यामां पाप, मिथ्यात्व अने नर्कनुं कारण कह्युं; पण मागता भीखारी तथा दुर्बलने मरता देखी, अनुकंपा लावीने दान दे, तेमां तो आर्द्र-कुमार तथा भृगुप्रोहितना पुत्रोए पण पाप कह्युं नथी; वास्ते ए अनुकंपा दाननो प्रश्न नथी.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " मागता भीखारीने अनुकंपा लावीने दान देवामां लगार मात्र पुन्य होय तो, आणंद श्रावके असंजतिने दान देवानां पचखाण केम कर्यां ? एवो अभिगृह केम लीधो ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! आणंद श्रावके मागता भीखारीने अनुकंपा आणीने दान देवाना पचखाण नथी कर्यां. बलके आणंद श्रावके तो अनुकंपा दान दीधुं संभवे छे; कारण के तुंगियानगरी प्रमुखना श्रावकोना घणा गुण वखाण्या. ते मध्ये अभंगद्वारे दान देता कह्या. अने " विछड्डिय प-उरभत्तपाणा " भात पाणी खाधा पछी बचे ते बाहार नाखे छे, एवा गुण वखाण्या. वली सुयगडांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधमां समचय श्राव-कना गुण (विरद) वखाण्या, त्यां पण अभंगद्वार वखाण्यो छे. ते स-मचय श्रावकोमां आणंद श्रावक पण भेलो छे. ते आणंद श्रावकने पण अभंगद्वार छे. ते माटे अनाथ दुर्बलने तो आणंद श्रावक दान देछे; पण " अन्यतिर्थी, मिथ्यात्व मार्गना स्वामी, जिनमार्गना द्वेषी अने तथारुप पाखंडीने दान दउं नही " एवो सातमा उपाशकदशागना पहेला अ-ध्ययनमां अभिग्रह लीधो छे. ते पाठः—

तएणं से आणंदे गाहावइ समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिए पंचाणु-वतियं सत्तसिक्खा वइयं दुवालस्स विहं सावय धम्मं पडिवजती २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति एवं वयासि:-नो खलु मे भंते कप्पइ अजप्पभिइ अणउत्थियावा अणउत्थिय देवयाणीवा अणउत्थिय परि-गृहियाणिवा चेइयाइं वंदित्तएवा णमंसित्तएवा. पुविं अ-

णाववत्तेण आलवित्तएवा सलवित्तएवा, तेसिं असणवा दाउवा अणुप्पदाउवा णणत्थ रायाभिउगेणं गणाभिउगेणं वलाभिउगेणं देवाभिउगेणं गुरुनिग्गहेणं वितिकंतारेणं, कप्पति मे समणे निग्गंथे फासु एसणिजेणं असणपाण खाइम साइमेणं वत्थ पडिग्गह कंवल पायपुंछणेणं पिढ फलग सेज्य। संथारएणं उसह भेसज्जेण पडिलाभे माणस्स विहरित्तते तिक.॥

अर्थ —त० तेवारे से० ते आ० आणद गा० गाथापति स० श्रमण भगवंत म० महावीर स्वामीनी अं० समिपे सर्व विचार सांजलीने पं० पांच अणुव्रत स० सात शिक्षाव्रत (समकित पूर्वक) दु० वार वि० प्रकारे सा० श्रावकनो ध० धर्म प० अंगीकार करे, करीने स० श्रमण भगवंत श्री माहावीर स्वामीने व० वचने करीने वांदे न० मस्तके करीने नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने ए० एम व० कहे नो० नहिं ख० निश्चे मे० मुजने भं० हे भगवंत ! क० कल्पे अ० आज पछी (समकित पाम्या पछी) अ० अन्यतिर्थीना साधु, गुरु, शाक्यादिक योगी, सन्यासि, अन्य लिंगीना साधु अण० अन्यतिर्थी संवधीया देव जैन तिर्थंकर टाली हरिहरादिक देवता अ० अन्यतिर्थी समक्षा जैनमतिना साधु चे० अरिहंतनी आज्ञा विना निकल्या जमाली प्रमुख निनवादिक अन्यक तथा एकल विहारी उसन्नादिक पांच भेदे गुण रहित ढीला पासत्थाने वं० वांदवा ण० नमस्कार करवो पु० पहेला अ० अणबोलता प्रत्ये आ० बोलावबा, स० तेणे बोलाव्या पछी पण वारवार सन्नायण करवु ते परिग्राज्याकादिकने धर्म निमित्ते (कर्म क्षयने हेतुए) वांदवा, पुजवा, पंचांग प्रणाम के नमस्कार करवा न कल्पे ते० तेने पूर्वोक्त रीते धर्म पुन्य अर्थे अ० असन, पान, खादिम, सादिम ए चार जातनो आहार दा० देवो अ० परतिर्थीने वारवार देवो ते मुजने न कल्पे, ण० पण एटलु विशेष कार तीक शेठनी पेरे रा० राजादिकना आग्रहथी देवतो ग० ज्ञातीना पर

वशपणे करीने देउं तो, ब० बलात्कारे मनुष्यादिकने जोरे देउं तो, दे० देवतादिकना कारणे. गुलावेष्टितपणे देउं तो, गु० गुरु, माता, पितादिकना आग्रहथी देउं तो अने वि० अटवी अथवा दुर्भिक्षादि कारणे देउं तो व्रत न भागे. ए छ आगार. हवे क० कल्पे मे० मुजने स० श्रमण साधु नि० निर्ग्रंथने फा० प्रासुक ए० ४२ दोष रहित अ० अन्न पा० पाणी (द्राक्षादिकनुं) खा० खादिम (फलादिक) सा० स्वादिम (मुखवास लवींगादिक) व० वस्त्र प० पात्र कं० कांबली पा० पायपुछणुं (रजोहरणादिक) पी० पाटीउं फ० पुठनुं पाटीउं से० उपाश्रय सं० संथारो (दर्भ त्रणां परालादिकनो साथरो) उ० रोगापहारी औषध भे० भेषज पथ्य प्रमुख साधुने योग्य ग्राह्य वस्तु धर्म वृद्धिकारी निर्जरा (मोक्ष) ने अर्थे साधु प्रत्ये प० प्रतिलाभतो थको वि० विचरुं ति० एम कहे. एवो आणंद श्रावके अभिग्रह लीधो छे.

भावार्थः—हवे जुउ ! इहां तो "नोकप्पइ अजप्पभिइए," एटले आज पहेलां मिथ्यात्वपणामां मुजने कल्पता हता, (ए काम करतो हतो):-अन्यतिर्थीने (सामी सन्यासि तापसादिकने)१. अन्यतिर्थीना देवने (ब्रह्मा विश्नु महेश्वरादिकने)२ अने अन्यतिर्थीए ग्रह्या जैनमतिना चैत्यने (जैनमतोना साधु अन्यतिर्थीना भेला थया तेने)३, ए त्रणेने आज पहेलां वंदणा नमस्कार करतो हतो, विना बोलाव्यां बोलावतो हतो, वारंवार बोलावतो हतो, अलाप सलाप करतो हतो,असनादि चार अहार देतो हतो,तथा देवरावतो हतो ते हवे पछी वांदु नही, नमस्कार करुं नहि, पहेलां बोलावुं नहीं, वारंवार बोलावुं नहीं, अलापसलाप करुं नहीं, अने असनादिक चार अहार देउं नही, देवरावुं नही एवो अभिग्रह लीधो. हवे तमे ज्ञानदृष्टी दइने जुउ के आज पहेलां मिथ्यात्वपणामां आणंदजी श्रावक मागता भीखारीने वांदता हता, नमस्कार करता हता? के तथारुप अन्यतिर्थीने (मिथ्यात्वना स्वामीने) गुरु करीने मानता हता अने वंदणा नमस्कार करता हता? हवे श्रावकनां व्रत अंगिकार कर्या पहेलां, जेने वंदणा नमस्कार करता हता तेनेज वंदणा नमस्कार आज पछी

करवा छोड्या; तथा जेने पहेला बोलावता हता तेनेज बोलाववु छोड्युं अलापसलाप करवो छोड्यो, तथा असनादिक चार अहार देता इत्यादि पूर्वे करता, ते हवे छोड्या वली पण अन्यतिर्थीने दान देवु पडे तो छ का-रणे आगार छे. ते 'रायाभिओगेण' इत्यादिक छ कारणमा 'विचिकंतारेण' एवो पाठ छे. ए पाठनो अर्थ एम छे के, हु अनाथ दुर्बलने (कंतार) अटवीने विषे दुर्भिक्षादि कारणे दान देउ हु, तेमा जो कोइ अन्यतिर्थी क्षुधातृषातुर पीडाए व्यास थको आवी, मागतानी परे मागीने लइ जाय तो देवानो आगार छे एटले मागता भिक्षुकने आणंद श्रावक पण दान के छे. ए लेखे अन्यतिर्थी अन्यमतना स्वामीने पण अनुकंपा आणीने तो दान दे छे, पण गुरुनी बुद्धे नथी देता

वली मागता भिखारी तथा असजतिने दान देवानां पचखाण कर्यां होय तो, छ छींडीना आगारनु शु काम छे? मागता भिखारीने वास्ते काइ राजा, न्यातीला, माता, पिता, बलवंत, देवता, जबराइ करीने कहे के, तमे एने दान द्यो? अर्थात् नज कहे ए तो राजादिक तथा-रुप अन्यतिर्थीने गुरु करीने माने छे, तेने वास्ते जबराइ करीने पण कहे के, "अमारा गुरुने वंदणा नमस्कार करो, दान द्यो" एम जबराइ करीने राजादिक कहे तो अन्यतिर्थीना मतना मालेकने (मिथ्यात्वीने) वंदणा नमस्कार करवानो अने दानादिक देवानो आगार छे ए पांच तो जब-राइपणाना आगार छे, अने छठो अनुकंपा आश्री आगार छे के, एक अन्यतिर्थी-मतनो-स्वामी दुर्भिक्षादि कारणे अटवीने विषे दुर्बलपणे मागे तो दान देवानो आगार छे ए लेखे अनुकंपा दाननी करणी तो आणंद श्रावक करे छे, पण "अन्यतिर्थी मतना-स्वामी धर्मना द्वेषी छे तेने आपुं नहीं" एवो आणंद श्रावके अभिग्रह लीधो छे, पण आणंद श्रावकने काइ एवुं पचखाण नथी के "हु असजतिने आपु नहीं" वास्ते असजति अने अन्यतिर्थीमां घणो फेर छे अन्यतिर्थी तो ३६३ पा-खंड मतना देखाडणाहारा, जैनमार्गना द्वेषी, निंदक छे तेने आपतां वांदता अलापसलाप करतां जैनमार्गने लघुता लागे, पाखंडमार्ग दीपे.

अने लोक पण एम जाणे के, आणंद श्रावक एवा म्हाह्या छतां पाखंडी-ने माने छे, त्यारे ए पण कांइक श्रावकने वंदनीक पुजनीक दिसे छे. एम घणा जीवोने शंका पडे ते माटे अन्यतिर्थीने वांदवा, बोलावबा अने आहारादिक देवा, ए त्रण वानां मुक्यां छे. वली जो आणंद श्रावके सर्वथा प्रकारे दान देवुं छोड्युं होय तो 'अन्यतिर्थी' एवो पाठ न जोइए, पण असंजति, अव्रतिने दान दउं नहीं एवो पाठ जोइए. तेमां भीखारी पण भेला आव्या, पण एवो पाठ नथी. हवे जेवो आणंद श्रावकनो आचार हतो, तेवो १ लाख ५९ हजार सर्व श्रावकनो एज आचार हतो. अन्यतिर्थीना त्रण बोल सर्वने करवा न कल्पे. ए त्रण बोल तो सर्व श्रावक टाले छे. ते अन्यतिर्थी मिथ्यात्वना स्वामी आश्री छे, पण मागता भिखारी तथा दुर्बलने अनुकंपा दान आपे, ते तो पांचमा गुणठाणानी करणी छे.

वली तेरापंथी कहेछे के, मागता भीखारी दुर्बलने, अन्यतिर्थी नही त्यारे शुं स्वतिर्थी गणशो ? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! साधु श्रावक विना सर्व अन्यतिर्थी छे, पांच स्थावर पण अन्यतिर्थी छे, धानना दाणा पण अन्यतिर्थी छे, अने बेइंद्रियादिक जीव पण अन्यतिर्थी छे, पण जे गाममां घणा अन्यतिर्थी पाखंडी न होय त्यां साधुए चोमासुं रहेवुं कह्युं छे. हवे जो त्यां धानना कण क्रोड बे क्रोड होय तो शुं ? क्रोड बे क्रोड अन्यतिर्थी कहेवाशे ? हे देवानुप्रीय ! दाणा प्रमुख पाच स्थावर, बेइंद्रियादिक, रांक भीखारी, सर्व अन्यतिर्थी छे, पण आणंद श्रावके पचख्या तेज अन्यतिर्थी षट् दर्शनना धणी गणीए. जे वांदवा जोग्य लोकीकमां कहेवाय छे तेने वांदु नही, बतलावुं नही, मिथ्यात्वमां ए काम करतो हतो ते आज पछी करुं नही. मिथ्यात्वी हता तेवारे भिक्षुकने तो वांदता नहोता. ते म्हाह्या हो ते विचारी जोजो. वली मागता भीखारी आदि सर्वने अन्यतिर्थी भेला गणीने दान देवुं निषेधे, तेने पुछवुं के, निशिथ सूत्रमां साधुने कह्युं छे के, अन्यतिर्थी वा गृहस्थनो साथे विहार करे, गोचरी जाय तथा तेना भेलो एक जग्यामां

रहे तो मासिक प्रायश्चित आवे कह्युं वली आचारांगादिक अनेक सूत्रोमां गाम गाम अन्यतिर्थीना भेला रहेवुं तथा अलाप सलाप करवो मना कर्यो छे हवे तमे तो पांच स्थावर शुक्ष्म बादर, त्रण विगलेंद्रि, माछला मछर, चीडी, कबेडी (होलो), प्रमुख सर्व अन्यतिर्थी गणोछो, अने साध श्रावक टाली सर्व अन्यतिर्थीज छे, अने प्रभुए तो एकज रात अन्यतिर्थी भेला रहे तो चोमासो प्रायश्चित कह्युं छे हवे तमे स्थावर जाव जीव सुधी जाणी जाणीने अन्यतिर्थी भेला रहोछो पांच स्थावर शुक्ष्म बादर सर्व जीवने अन्यतिर्थी मानोछो त्यारे तमारी श्रद्धाने लेखे तमारा साधुओमां साधपणु छे के नही ते कहो

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " ए तो ३६३ पाखंडी अन्यतिर्थी छे तेनी संगत कीधे समकितमां शंका पडे, ने अलाप सलाप वधे ते आश्री कह्यु छे, पण सर्व जीव अन्यतिर्थी छे ते आश्री नथी कह्युं " त्यारे हे देवानुप्रीय ! आणंद श्रावके पण ३६३ पाखंडी, अन्यतिर्थी, मिथ्यात्वना स्वामी, तेने वंदणा नमस्कार करवानो तथा आहारादिक देवानो अभिग्रह लीधो छे, पण मागता भीखारी आदि सर्व अन्यतिर्थी छे, तेने अनुकंपा आणीने दान देवानो (नियम) अभिग्रह नथी लीधो ए भगवती सूत्रना त्रीजा पाठनो, आर्द्रकुमारनो, भृगुना बेटानो अने आणंद श्रावकनो, ए चारे आलावानो परमार्थ एकज छे एतो सर्व अन्यतिर्थी, ब्राह्मणो, मिथ्यात्व मतना मालीक, ते आश्री छे; कारणके तेने श्रावक दान आपे तो मिथ्यात्व लागे, परपाखंडीनो संसतो परचो लागे अने अलाप सलाप वधे तेथी तेनो निषेध कर्यो, पण रांक, मागता भीखारी अने दुर्बलने मरता देखीने अनुकंपा शुभजोग आणीने दान दे तेमां पाप कया सूत्रमां कह्यु छे ते बतावो तेवारे तेरापंथी कहेछे के " मागता भीखारी प्रमुखने अनुकंपा आणीने नंदनमणीयारे दान दीधुं तेथी देडको थयो " एवा साहस्य अनार्य वचन बोले छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! ज्ञाता सूत्रमां नंदनमणीयारनो अधिकार छे, त्यां तो एवो पाठ के अर्थ नथी के, ते दान दीधाथी देडको थयो तमे कया

सूत्रना पाठार्थथी कह्यो छो ते बतावो. जो दान दीधाथी देरूकापणुं पामे तो प्रदेशीराजा प्रमुख घणा श्रावक दानना देणहारा, सर्व दानना दातार, एवी अशुभ गति पाम्या जोइए. वली तमारा श्रावक पण संसारने हेते दान देछे, अंतकाले पेटीआ प्रमुख (दान) आपे छे, अने अंतकाले कुतराने लाडु नाखे छे, ते तमारो श्रद्धानी केहेणीने लेखे तमारा श्रावक दानना देणहारा सर्व देरूका थाशे अने एवी अशुभ गती पामशे. हे देवानुप्रीय ! मतना लीधे एवां असत्य वचन केम बोलोछो ? ए नंदनमणीयार दान दीधाथी देरूकापणुं नथी पाम्यो. एतो मूलथीज साक्षात् मुक्तिमार्ग मुकीने, मिथ्यात्वीजनी संगत कीधी, मिथ्यात्वी थयो, जैन मार्ग उत्थाप्यो अने पछी मिथ्यात्वपणुं भलु जाण्युं. तेने मुक्तिनो हेतु जाण्यो तेथी देरूकापणुं पाम्यो. दानथी एवी अशुभ गति थती नथी. तमे मतने लीधे एवां सूत्रनां जुठां नाम लइ अणसमजु लोकोना घटमां घोचा घालीने एवां कर्म केम बांधोछो ?

वली तेरापंथी कहे छे के "श्रावक असंजतिने दान तो दे छे, पण ते पडिकम्मवा जोग्य छे, अने पनरे करमादानमां पंदरमुं कर्मादान छे. जो असंजतिना भरण पोषण कर्यां होय तो 'आलोउं पडीकमुं मिच्छामि दुक्कडं' एटले ए दान देवुं तेपण कर्मादानमां छे, ते माटे देवा योग्य नथी." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! इहांतो कर्मादान शब्दनो अर्थ "ए पंदर प्रकारे व्यापार (वृति आजीविका) करी जीवुं नहीं" एवो अर्थ छे. ए पंदर कर्मादाननो तमे खोटो अर्थ करो नाहि. "असंजतिनुं भरण पोषण कीधुं होय" एवो जुठो अर्थ तमे मतना लीधे केम करो छो ? सूत्रमां एकज अक्षर जाणी जोइने उछो अधिको बतावे तो अनंत संसारी थाय. तमे ससा उपर अनुस्वारने जजो ए जाणीने बंने अक्षर एक बतावीने अनंत संसार केम वधारो छो ? सूत्रमां तो 'असइ जण पोसणया' एवा प्रगट अक्षर छे. एक अक्षर उछो अधिको बोलीए तो अर्थनो फेर घणो पडी जाय. जेम 'कुंति पुत्रो युधिष्टिरः' अने बींदुना आलोपथी 'कुति पुत्रो युधिष्टिरः' थाय. तमे पाठमां उछो अधिको अक्षर

बोलीने अर्थना अनर्थ केम करोछो ? सूत्रमां कह्या तेम अर्थ केम नथी करता ? सूत्रमां तो अर्थ एम छे के " इंगालकम्मे " कोयला करी वेची तेनो लाभ लइ पोतानी आजीविका करे ए काम श्रावक न करे, पण सहेजे घर काम माटे लावे तो इंगालकर्म न कहीए, एम यावत् पोस पोसे करी श्रावक पोतानी आजीविका करे नही तेम पदरमो बोल (असइजण पोसणया) हिंसानी बुद्धे हिंसक जीव कुर्कट, मजार, सुं भर (सुअर), अने कुकर (कुतरा) इत्यादिकने तथा भाडा लेवा माटे दासीने पोषे, तथा स्वार्थने (भोगने) हेते गुणिकाने पोषे, इत्यादिक पदर कर्मादाने करी पेट भरीए ते कर्मादान कहेवाय इहां कांइ दान देवुं ते पदरमु कर्मादान छे एम अर्थ नथी हवे जो दान देतां अने असं जतिना भरण पोषण करवामा कर्मादान लागे तो श्रावकने सातमुं व्रत मुलथीज रहे नही, कारण के श्री अरिहंतदेवना सर्व श्रावकोए पंदरे कर्मादान (सातमा व्रतना अतिचार जाणीने) त्रिविधे त्रिविधे त्याग्या छे शास्त्र सूत्र भगवती शतक ८ मे उद्देशे ५ मे ते पाठ —

किमग पुण जे इमे समणोवासगा भवति तेसिं नो कप्पइ इमाइ पनरस्स कम्मादाणाइ सयकरेत्तएवा कारित्तएवा करतवा अन्नन समणुजाणेत्तएवा त० इंगालकम्मे १ व णकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ द- तवाणिजे ६ लक्कवाणिज्जे ७ केसवाणिज्जे ८ रसवाणिज्जे ९ वीसवाणिज्जे १० जतपीलणकम्मे ११ निल्लंछणकम्मे १२ दवग्गिदावणया १३ सरदहतलाव परिसोसणया १४ असतीपोषणया १५ इच्चे ते समणोवासगा सुक्का सुक्का भिजा तिया भवया भविता कालमासे काल किच्चा अण यरेसु देवलोएसु उववत्तारो भवति ॥

अर्थ — कि० शु पु० वली जे० जे इ० ए स० श्रमणोपासक

श्रावक न० होय ते० तेने नो० न क० कल्पे इ० ए वक्ष्माण प० पंदर कर्मना (आदान) हेतु प्रत्ये स० पोते करवा अथवा का० अनेरा पासे करावना अने क० करतां प्रत्ये नलुं जाणवुं (अनुमोदवुं) तं० ते कहे छे:—इं० कोयला आदिक अग्निएकरी आजीविका निमित्ते वेपार करवो ते. १ व० वन कर्म वन छेदन विक्रयरुप बीज पोषणादिक ते. २ सा० सकटादिक वाहन घमावी वेचे, इत्यादिक ते. ३ ना० नामेकरी पारका ऊव्यने सकटादिकेकरी देशान्तरने विषे पहोंचामे अथवा बलध उंट नामे आपे ते. ४ फो० हल कोदाले करी नुमिकादिकनुं फोमवुं ते. ५ दं० दांत हाथीनो अने तेना उपलक्षणथी, चर्म, चामर, पुंछ, केशादिकनो वणज ते. ६ ल० लाक्षादिकनो व्यापार ते. ७ के० केश, वाल, ऊन इत्यादिकनो व्यापार ते. ८ र० मधादि रसनो व्यापार ते. ए वी० विष अने तेना उपलक्षणथी शस्त्रनो (हथियारनो) व्यापार ते. १० जं० जंत्रे (संचाए) करी इक्षुआदिक पीलवानो व्यापार ते. ११ नि० वृषन (आखला) ना वृषण (अंम) छेदन करवानो व्यापार ते. १२ द० दव देवानी बुद्धिए अग्नि सलगाववानो व्यापार ते. १३ स० सरोवर, ऊह, तलाव आदिकना पाणी शोषवानो व्यापार ते. १४ अ० दासदासीने नामे देवा अथवा वेचवा माटे पोषण करवानो व्यापार तथा कुकमां मंजारादिक जीवनुं वेपार अर्थे पोषण करवुं ते. १५ इतिद्रव्यं. इ० एवं प्रकारे ते० ते स० श्रमणोपासक श्रावक सु० शुक्ल (उजला) नावथी पोताना व्रतने विषे गाढा (ऊढ) अमत्सरी तथा कृतज्ञ सदाचारना आरंजक, सर्व उपर हितना चिंतक, ए का० कालना समयने विषे का० काल करीने अ० अनेरा कोइएक दे० देवलोकने विषे देवतापणे उ० उपजे एवा कह्या.

नावार्थः—हवे जुओ ! इहां तो एम कह्युं छे के, श्रमण नगवंत श्री महावीरदेवना सर्व श्रावकोए पंदर कर्मादान त्रिविधे त्रिविधे करी वोसराव्यां छे. एटले पंदरे कर्मादान सेवे नाहिं, सेवरावे नाहिं अने सेवतांने नला पण जाणे नाहिं. हवे तमे तो कहो छो के, असंजतिनां न-

रण पोषण करे तो पदरमु कर्मादान लागे त्यारे तो श्रावक प्रमुख सर्व श्रावक श्रारामोसर करता हता, न्याती-गोतीने जमाडता हता, गायो, भैंसो प्रमुख तिर्यंचने पोषता हता, अतकालादिक समये पेटीयां आपता हता अने कुतराने लाडु नाखता हता, दासदासी घरना टाबर (छोकरां) प्रमुखने पोषता हता अने संसारमा बेठा हता तेथी मागता भीखारीने पण दान देताज हशे ए पूर्वोक्त सर्व संजति के असंजति ? इत्यादिक असंजतिना भरण पोषण करवावालामा तमारी श्रद्धाने लेखे पदरमुं कर्मादान लागे, त्यारे तेमनामा श्रावकपणुं रहे के नहिं? कारण के साधु जाणी जाणीने साधुपणामा दोष (अतिचार) लगाडीने आव जीव सुधी प्रायश्चित न ले तो साधपणु रहे नहिं तेम पदरे कर्मादान श्रावकना सातमा व्रतना अतिचार कह्या छे एवा अतिचार असंजतिना भरण-पोषण करवाथी जाणी जाणीने लगाडे तो तेनुं श्रावकपणु अने सातमु व्रत केम रहे ? ते विवेकथी जुओ वली ए कर्मादान एवुं नाम केम थयु ? एवा व्यापारमा पाप घणुं छे तेथी तेने कर्मादान अथवा अनार्य वेपार कह्यो, अने केटलाक व्यापारमा पाप थोडुं छे-तेने आर्य व्यापार कह्यो शास्त्र सूत्र पन्नवणा पद पेहेले ते पाठ—

सेकिंत कम्मारिया अणेगविहा पणत्ता त० दोसिया सुतिया कप्पासिया सुत्तवेत्तीया भंडवेयालिया कोलालिया णरवा-विणिया जेयावण्णे तहप्पगारा सेत कम्मारिया से किंतं सिप्पायरिया २ अणेगविहा पं० तं० तुणागा तंतुवाया पट्टागारा वेयगा वरुम्न छक्किया कठपाउयारी मुंजपाउरा छतारा पजारा पोथारा लोप्पारा सखारा दत्तारा भंडारा जिन्होगारा सेलारा कोडीगारा जेयावण्णे तहप्पगारा से त सिप्पारिया ॥

अर्थ —से० ते कर्मआरजना हे भगवान! केटला भेद? इति प्रश्न उत्तर हे गौतम! क० ते कर्मआराजना अ० अनेक भेद प० परूप्या

तं० ते कहेछेः—दो० कपमाना व्यापार १, सु० सुतरना व्यापार २, क० कपास (रुइ) ना व्यापार ३, मु० मोती प्रमुख जवेरातना व्यापार तथा सराफ प्रमुख ४, जं० क्रियाणा विशेषना व्यापार ५, को० कांसी प्रमुखना तथा सोनारुपादिक (जांमा) वासणना व्यापार ६, ण० नरवावरणिका जाती विशेषनो व्यापार ७, जे० जे अनेरा पण एवा त० तथा प्रकारना आरज व्यापार ८, से० तेने क० आर्य कर्म कहीये. हवे शिल्पना जेद कहेछे. से० ते किं० शुं हे जगवान ! सि० शिल्प (विज्ञान विशेष) आरज ? ते शिल्प आरजना केटला जेद ? उत्तर. हे गौतम ! सि० शिल्प आरजना अ० अनेक जेद प० परुप्या तं० ते कहेछेः—तु० तुनारानो विज्ञान ते आरज, तं० वस्त्रना वणनारा, प० पटोलादिकना वणनारा, वे० वेपरूनामा कोइ वि० विज्ञान विशेष, ठ० ठक्रियानामा विज्ञान विशेष, क० काष्टनुं विज्ञान, मुं० मुज प्रमुखनुं विज्ञान, ठ० छत्री करवानुं विज्ञान, प० चित्रामण करवानुं विज्ञान, पो० पोथी लखवानुं विज्ञान, लो० लेप करवानुं विज्ञान, सं० शंखनुं विज्ञान, दं० दांतनुं विज्ञान, जं० घरवासणादिकनुं विज्ञान, जि० जीव्यारसनुं विज्ञान, से० सेल करवानुं विज्ञान, को० कोटकारनुं विज्ञान, जे० जे एवां अनेरां पण त० तथा प्रकारनां विज्ञान, ते सर्व शिल्प आरज जाणवा. से० तेने विज्ञान आरज कहीये. ५.

जावार्थः—हवे जुउ ! श्री पन्नवणाजीना पहेला पदमां नव प्रकारना आर्य कह्या, तेमां चोथुं कर्म आर्य कह्युं. तेमां नाणावटी, सुतरीआ, कपास रुइवाला, इत्यादिक वेपार करी पेट जरे, ते व्यापार आर्यमां गण्या. ते वेपारनुं नाम कर्मादान न कहीये. शामाटे के, ए व्यापारमां पाप थोकुं छे, ते माटे श्री वीतरागदेवे आर्य व्यापार कह्या; अने पंदर कर्मादान वर्ज्या ते शामाटे के, एवा व्यापारमां पाप घणुं छे. एवा कर्ममां सदाकाल हिंसाथी त्रस जीव हणाय छे ते माटे कर्मादान कहीये. ए काम करी पेट जरवुं वर्ज्युं, साचो अर्थ तो ए छे. वली जगवती तथा उपाशकदशामां सूत्रार्थ जोइ वांचजो. वली तेरापंथीने पुछीए के, दानमां एवकुं

शु ज्यारे पाप छे के तेने पदरमा कर्मादानमा लइने घाल्यु ? ज्यार कारणे जीव नारकी अने तिर्यंचनु आयुष्य बांधे, तेमा पण दान न घाल्युं ते मज अढार पापमां पण दानने न घाल्यु वली सुयगडांगना बीजा श्रु तस्कंधना बीजा अध्ययनमा अधर्मना (पापना) करणहारना लक्षण व खाण्या तेनां माठा लक्षण अनेक प्रकारे वर्णव्या छे, तथा अनेक पाप ना कर्तव्य नाम लइ लइने वर्णव्यां छे, तेमा पण दाननी करणी कही नथी वली नारकीना नेरियाने परमाधामी पाछला जवनां दुःकृत संभारीने पीडा देछे तेमा परदारागमन, जीवहिंसा, चोरी, कपट, आल, नींदा, प्रमुख कार्य संभारीने वेदना देछे, तेमा पण दानरुपी अधर्म संभारीने वेदना देता कह्या नथी त्यारे श्री वीतरागे एवु ज्यारे पाप दानमां शु दीठु ? के, दानने कर्मादानमा घाल्यु ? हे देवानुप्रीय! सूत्रमां तो 'असइजण पोसणया' ए पाठना अक्षर छे एनो अर्थ एम छे के, स्वार्थ हेते हिंसक जीव पोषवा नही अने दासी गुणिकाने कुशील सेवरावी पैसा लेवा नही एवा वेपारनी आजीविका श्रावके करवी नही, तथा घरमा जुवा प्रमुख जानवरोने चुगवा वास्ते कुकडांने पालवा नही तेमज घरमा उंदर थया होय तेनु भक्षण करवा माटे बीलाडी पालवी नही, आदि दुष्ट जानवर स्वार्थ निमित्ते पोषवा नही

वली ए अनुकंपा दाननी करणी अनर्थादंडमा तथा कर्मादानमां होय तो कोइ तीर्थंकरे, केवलज्ञानीए तथा साधुए, कोइ श्रावकने अनुकंपा आणीने दान देवाना पचखाण केम न कराव्या ? कराव्या होय तो पाठ बतावो वली तमे पण पचखाण नथी करावता जो दानमां अनर्थादंड अने कर्मादान जाणे तो साधु पचखाण केम न करावे ? कारण के पापना पचखाण तो साधुए कराववाज कह्या छे, पण जोगाजोग विचारे जेमके कोइ पुरुष साधु पासे आवीने कहे के "हे स्वामी! मुजने अणछाण्यु पाणी पीवानो सोगन करावो" तो सुखे करावे, पण कोई कहे के " मुजने छाणीने पाणी पीवाना पचखाण करावो " तो साधु न करावे शामाटे न करावे ? तमारे लेखे सामी छाणवानी हिंसा टली,

पण ए अजोग पचखाण साधु न करावे. तेम साधु पोताना खावापीवा-ना पचखाण करावे, पण अनुकंपा आणीने दानदेवाना पचखाण न क-रावे; कारणके श्री जिनमार्गना श्रावकनी करणीमां दानदेवुं निश्चे दीसे छे, ते माटे ए पचखाण न करावे. तमारी श्रद्धाने लेखे तो अनर्थादंड कर्मादानमां जाणीने ठाम ठाम सूत्रमां ए पचखाण करावावां जोइए; पण श्री वीतरागदेवनी एवी श्रद्धा नहोती. तमे मतने लीधे अणहुती कुजुक्ति लगाडोछो. वली प्रदेशीराजा केशीश्रमण कने धर्म पाम्या पहेलां मिथ्यात्वी (नास्तिक मति) हता, ते दिननां लक्षण वर्णव्यां, तेमां कह्युं के, लोही खरड्या हाथ रहेछे, दीठीने अणदीठी कहेछे, अणदी-ठीने दीठी कहेछे, इत्यादिक अनेक पापनां कर्तव्य करतो कह्यो; पण एम न कह्युं के, दान दया रुपी पाप करे छे. वली भगवतीजीना पंद-रमा शतकमां विमलवाहन राजानां लक्षण वर्णव्यां. तीहां 'श्रमणपिड-कुल' कह्यो, पण दान देतो दया पालतो कह्यो नथी. वली जंबुद्वीप-पन्न-तिमां अवाडचिलाया अनार्य वर्णव्या. ते वर्णनमां पण दान दया वर्णवी नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय! दान दयामां पाप होय तो क्यांकतो वीतराग-देव उपदेश पक्षमां पापमां वर्णव करत; पण वीतरागदेवनी तमारा सरखी श्रद्धा नहोती एम जाणजो.

वली तेरापंथी कहे छे के, "असंजति अव्रतिने दान देवुं क्यां कह्युं छे?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! प्रथम तो श्री तीर्थंकर माहाराजे दान देवानी रीती चलावी छे. पहेलां त्रणसोने अठ्यासी क्रोड एसी लाख सोनैया वरस दीवस सुधी वरसीदान दइने पछी दीक्षा ले छे. ते असंजति अव्रतिने दान दे तेमां जो पाप होय तो, ए पापनी स्थिति तीर्थंकरदेव केम राखे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "तीर्थंकर तो पहे-लां स्त्रीथी भोग भोगवे छे, राज्य करे छे तथा स्नानादिक अनेक पा-पनां काम करे छे, तेम ए पण पापनुं काम छे." तेनो उत्तर. हे देवानु-प्रीय! ए भोगादिक तो पूर्व भवना कर्मना उदयभाव (भोगावली कर्म) छे ते भोगवे छे. ए तो अर्थ-पापमां छे, पण दान देवुं ते कया कर्मनो

उदयभाव छे ते कहो वळी ए अर्थ पापमां छे के अनर्थ-पापमां छे ते कहो, अने ए अनर्थ पाप शी रीते भोगवे ते कहो तेवारे तेरापंथी कहे छे के "भगवत श्री महावीरजीए वरसीदान असजति अव्रतिने दीधुं तेनु पाप लाग्यु, तेथी तेमणे बार वरस दुःख दीठा" जे उपर मतना लीधे एवी खोटी जोडो कीधी छे, ते ढालनी गाथा —

लीआमे पाप ने दियामे धर्म, आप तो रेह गया कोरारे,
देवता कनासु ले मीनखाने दीधा, तरे वीरजीने पड़ गया फोडारे
चतुर विचार करीने देखो ॥ १ ॥

एवी खोटी जोडो करी छे "देवताकनेथी सोनैया भगवाने लीधा तेनु तो पाप लाग्यु, ने मनुष्यने दीधा तेथी धर्म थयु, तो पण आव्या तेम गया अने पोते तो कोराने कोरा रह्या, पण एटलु विशेष के, देवता कनेथी लइ मनुष्यने दीधा, तेथी भगवानने साडाबार वरस ने पंदर दीवस सुधी छद्मस्थपणामां फोडा पड्या" एवा अनर्थ वचन बोले छे पण जुओ! हे देवानुप्रीय! श्री महावीरजीए तो दानना फोडा भुगत्या (भोगव्या), पण दान तो अनंता तीर्थंकर थया ते सघलाए दीधु छे तेमज मल्ली नाथ भगवाने वरसीदान देइ दिक्षा लीधी, पछी सवा पोहोरे केवलज्ञान उपन्यु ए वरसीदान दीधु तेना फोडा मल्लीनाथ भगवान क्यारे भो गवशे ते कहो? हे देवानुप्रीय! तमे मतना लीधे प्रभु उपर एवां अ छता आल केम दो छो? तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के 'ए तो अनाद कालनी स्थिती छे' तो हे देवानुप्रीय! ए स्थिती पाप जाणीने राखे छे के काइ शुभ फल (गुण) जाणीने राखे छे? ए करणी आर्य पुरुषनी छे के अनार्य पुरुषनी छे ते कहो

वली तेरापंथी कहे छे के "आ जगतमां बे भेद छे, व्रत ने अव्रत असजतिने अने अव्रतिने दान आपे ए करणी अव्रतनी छे, माटे व्रतमां ए काम करवु नही अनुकंपा आणीने असजतिने अव्रतिने दान दे तेमां व्रत निपजे तो सवर निर्जरा थाय, पुन्य बधाय; पण व्रत नथी।

अव्रत छे तेथी पाप लागे." तेनो उत्तर. हे मंगलमूर्ति ! व्रतमां तो ए काम नथी ते सर्व जाणे छे, पण दाननी करणी केम निषेधो छो? ए तो अनुकंपा आणीने दे ते शुभ जोगनी करणी छे, पण अव्रत नथी. जेम साधुजी गुरुदेवनी वैयावच करे, आहार वस्त्रादिक आणी आपे, हाथ पगादि चांपे अने तेलादिक मसले, ए करणी व्रतनी के अव्रतनी? वली साधु श्रावक गुरुदेवनी सामा जाय, गुरुदेव आव्याथी उभा थाय, ए करणी व्रतनी के अव्रतनी? वली साधु श्रावक पांच प्रकारनी सझाय करे, वायणा१ पुछणा२ परियटणा३ अणुपेहा४ अने धर्मकथा५, ए करणी व्रतनी के अव्रत्तनी ? वली श्रावक व्याख्यान सांभले, ए करणी व्रतनी के अव्रतनी? ध्यान करे, धर्म उपदेश दे, ए करणी व्रतनी के अव्रतनी ? पडिले-हणादिक इत्यादिक अनेक शुभकाम श्रावक करे, तेने व्रतमां गणो के अव्रतमां ? जो व्रतमां गणो तो कयुं व्रत निपजे ते कहो, अने जो अव्रतमां गणो तो, तमारी श्रद्धाने लेखे तो एकान्त पाप लागवुं जोइए; कारण के अनुकंपा आणीने दान दे तेमां तमे कहो छो के, व्रत नथी तेथी पाप लागे. त्यारे पूर्वोक्त गुरु आदिकनी वैयावच करे, सामो जाय, अने सझायादिक करे, ए पण तमारी कहेणीने लेखे व्रतमां नथी, अ-व्रत छे, कारण के तमे जगतमां बेज बोल कहो छो, व्रत ने अव्रत. ए सझायादिक व्रतमां गणो के अव्रतमां ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " ए काम व्रतमां तो नथी, पण शुभ जोग निर्जरानी करणी छे, तेथी कर्म निर्जरा थाय, पुन्य प्रकृति बंधाय." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अनुकंपा आणीने दान दे, ते पण शुभ जो-गनी करणी छे. तेमां निर्जरा थवानो अने पुन्य बंधावानो नाकारो नथी. तमे व्रत अव्रतनुं नाम लेइ अणसमजु लोकोना घटमां घोचा केम घा-लो छो ? वली तेरापंथी कहे छे के "मागता भीखारीने जे कोइ अन्न-पाणी वस्त्रादिक आपे, तेणे अव्रत वधार्युं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! "क्षुध्या तृषातुर टाढे मरताने केटलुंक अव्रत घटतुं हतुं ते अन्नवस्त्रा-दिक देइने वधार्युं." एम तमे कहो छो, पण श्री भगवंते तो निगोदा,

दिक सर्व चोरासी लाख जीवाजोनने त्याग नथी, तेथी चौबे राकने अव्रत सघलाने सरखु खुल्लु कह्यु छे वली राकने तथा चक्रवर्त्यादिक राजाने सरखु अव्रत कह्यु छे शास्त्र सूत्र भगवती शतक पहेले उद्देशे नवमे ते पाठ —

भंतेति भगवगोयमे समणंभगव महावीर वंदइ नमसइ२ त्ता एव वयासी सेणुण भंते! सेठियस्सय तणुयस्सय कि वणस्सय खत्तियस्सय समाचेव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ? हंता गो० सेठियस्सय जाव अपच्चक्खाण किरियाकज्जइ सेकेणठेण भंते एव वुच्चइ? गो०! अविरइ पडुच्च सेतेणठे· ण गोयमा एववुच्चइ सेठियस्सय तणुयस्सय जाव कज्जइ।

अर्थ —भ० हे भगवंत! एवे आमंत्रणे अथवा गुरु प्रत्ये कल्याणकारी वचन कहीने पुछे, भ० भगवंत गोतम स० श्रमण (तपस्वी) भ० भगवंत श्री मा० महावीर प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने ए० एम व० कहेता हवा से० ते णु० निश्चे भं० हे भगवान! से० श्रीदेवीनी मूर्तीना पाटबंध जेना माथे बांध्या होय एवा शेठने, त० राक दरिद्रिने, कि० कृपण दरिद्रिने अने ख० क्षत्री राजाने स० सरीखी चे० निश्चे अ० अप्रत्याख्यान क्रिया एटले अप्रत्याख्यानथी उपन्या कर्मबंध रुप कि० क्रिया क० लागे? इति प्रश्न उत्तर हं० हा गोतम से० शेठने जा० यावत् अ० अप्रत्याख्यान कि० क्रिया लागे एटले शेठी, दरिद्रि, राक अने राजाने सरखी क्रिया लागे छे. से० ते के० शा छे० अर्थे भं० हे भगवान! ए० एम वु० कह्यु? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गोतम! अ० इच्छा सर्वने छे ते अव्रती प० आश्री से० ते ते० तेणे छे० अर्थ गो० हे गोतम! ए० एम वु० कह्यु के से० शेठने त० दरिद्रिने जा० जावत् प० अप्रत्याख्यान क्रिया लागे

भावार्थ —हवे जुवो! इहां अव्रतनो एक कणु मने मल्यानिकणो

एक तार मात्र पण न होय एवा मागता भीखारी रांक, कृपण, दरिद्रि, अने चक्रवर्तादिक राजा, सर्वने जोगनुं पाप अने परिग्रह तो वधतो घटतो छे, पण अव्रतनी क्रिया श्री वीतरागदेवे सर्वने सरखी कही. ते तमे जाणता थका ए पाठने छुपावीने "अन्नवस्त्रादिक नथी तेने अव्रत थोडी छे अने अन्नवस्त्रादिक देवावालाए अव्रत वधार्युं." एम मतना लीधे जुठु केम बोलोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अव्रततो वधे घटे नही, सदाय सरखुं छे, पण अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रादिक आपे, तेथी आपवावाले अव्रत सेवराव्युं कहीये." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अव्रत तो आश्रव छे. ते आश्रवने तमारा तेरद्वारमां अरुपी कह्यो छे. तेमां वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श एके नथी अरुपी छे. ते अव्रत (अरुपी वस्तुने) सेवरावे शीरीते अने अरुपी वस्तु कोइने शीरीते आपी शकाय ? अव्रततो मोहनी-कर्मना उदये अप्रत्याख्याननी चोकडीना जोगथी जीवने आशा, तृष्णा अने अत्यागभावनी लहेरो वर्ते, तेथी कर्म लागे तेने कहीए; अने ततो पोतपोतानी कनेज छे. सेवरावी सेवरावाय नही, तेम कोइने आपी शकाय पण नही. तमे मतना लीधे एवी कुयुक्ति केम लगावोछो ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "मागता भीखारी दुर्बल भुखे तरसे अने टाढे मरे तेथी तेनां कर्म कपाय, तेने अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रादिक देवावाले कर्म कपातां रोकी राख्यां अने अन्नपान वस्त्रादिक सेववाना जोगनुं पाप वधार्युं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! श्री भगवंते तो पुद्गल मेलववा चाहतो होय, ने पुद्गल न मले त्यारे घणुं आर्तध्यान करे, तेथी तेने आरंभ्यादिक पांच क्रिया जबरी कहीछे; अने ते वस्तुनो जोग मल्याथी पूर्वोक्त पांच क्रिया पातली कही छे. शाख सूत्र भगवती शतक पांचमे उद्देशे छठे. ते पाठः—

गाहावइस्सणं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेजा तस्सणं भंते ! भंडं अणुगवेसमाणस्स किं आरंभिआ किरियाकज्जइ परिग्गहिया किरियाकज्जइ मायावत्तिया

अपच्चक्खाणा मिच्छादंसणा ? गो० ! आरम्भिया किरिया कज्जइ परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाण किरियाकज्जइ मिच्छादंसण-किरिया सियकज्जइ सियनोकज्जइ अहसे भंडे अभिसमन्नागए भवई तओ से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुई भवइ॥

अर्थ —गा० गाथापतिने भ० हे भगवान ! भ० क्रियाणा प्रत्ये वि० वेचसाथकाने के० कोइएक भ० भंड प्रत्ये अ० चोरे त० तेने भ० हे भगवान ! भ० क्रियाणा प्रत्ये अ० गवेषणा करताने (जोताने) किं० शुं ? आ० आरंभनी कि० क्रिया क० लागे ? प० परिग्रहनी कि० क्रिया क० लागे ? मा० मायाप्रत्ययनी क्रिया लागे ? अ० अपच्चाख्याननी क्रिया लागे अने मिथ्या देसण प्रत्ययनी क्रिया लागे ? गो० हे गौतम ! ते भंड गवेषणाहारने आ० आरंभनी क्रिया लागे, तेमज प० परिग्रहनी मा० मायाप्रत्ययनी अने अ० अप्रत्याख्याननी क्रियातो लागेज, पण मि० मिथ्यादंसणप्रत्ययनो क्रिया सि० कदाचित क० जो ग्रहपति मिथ्या द्रष्टी होय तो लागे, ने सि० कदाचित न लागे (सम्यक्‌द्रष्टि होय तो न लागे). हवे क्रिया विषे विशेष कहेछे अ० अथ हवे जो ते भि० क्रियाणु अभि० गवेषणा करता लाध्यु भ० होय त० तेवार पछी (ते लाध्या पछी) से० ते ग्रहस्थने स० आरंभादि जे क्रियानो संभव छे ते सर्व प० पातली भ० थाय क्रियाणु लाध्या पछी उद्यम थोडो ते माटे.

भावार्थ —हवे जुओ ! इहां तो एम कह्यु के, गाथापतिनुं क्रियाणु (भंड परिग्रह) चोरादिक लइ जाय अने गाथापति गवेषणा (शोध) करे, तेवारे आकुलव्याकुल आर्तध्यान जोगादिकनो उद्यम घणो थाय तेथी आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया अने अपचखाणीया, ए चार क्रिया तो घणी जबरी लागेज, अने पांचमी मिथ्यात्वनी क्रिया समकिति होय तेने न लागे, अने मिथ्यात्वी होय तो जबरी लागे पछी जे परिग्रहादिक चोर लइ गयो छे ते गवेषणा करता पाछु आवी जाय, तेथी हासोपजाव थाय, आकुलव्याकुल आर्तध्यान मटी जाय, तेवारे वीतराग

देवे पांच क्रिया पातली कही. ए न्याये मागता भीखारी, दुर्बल, क्षुधतृषा शीतादिकथी पीडीत, आकुल व्याकुल आर्तध्यान घणुं करे, अन्नवस्त्रादिकनी गवेषणा करे के "हे दाता! कोइ अन्न वस्त्रादिक आपो" एम आशा सहित गवेषणा करे वचन बोले. ते ज्यां सुधी तेने न मले त्यां सुधी जोगादिकनो उद्यम घणो करे, तेथी आरंभादिक पांचे क्रीया तेने जबरी लागे; अने दातार दुःखी देखी अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रादिक आपे, तेथी संतोषभाव पामे, तेथी ए वस्तुनुं आकुलव्याकुल (आर्तध्यान) पणुं मटयुं अने जोगनो उद्यम घटयो. तेवारे श्री वीतरागदेवनी कहेणीने लेखे तो आरंभादिक पांचे क्रिया पातली लागे. हवे तमे "अन्न वस्त्रादिक देवावाले परिग्रहनुं तथा जोगनुं पाप वधार्युं" एम कये न्याये कहोछो? तमारे लेखे तो गाथापतिनुं धन (अनर्थनुं मुल) चोर लइ गयो, तेथी आरंभादिक पांच क्रिया पातली लागे केहेवी जोइए; अने धन (पाप करावववावालुं) पाछुं आव्युं तेथी पांच क्रिया आरंभादिक जबरी लागे कहेवुं जोइए; पण भगवंतनी श्रद्धा तमारा सरखी नहोती. भगवंत तो मुर्छादिक आर्तध्यानथी जोगनो उद्यम घणो होय तेनेज जबरुं पाप माने छे; माटे मागता भीखारीने अन्न वस्त्रादिक देइ आर्तध्याननुं जबरुं पाप टलावे, तेने पाप कये न्याये लागे? माह्या हो ते वीचारी जोजो. वली धान्य, क्रियाणादिक देवुं कर्युं, ते घरमां पड्युं होय त्यां सुधी धान्यादिक क्रियाणानी पांच क्रिया गाथापतिने जबरी लागे कही, अने रुपीआ न लीधा तेथी रुपीआनी पांचे क्रिया पातली लागे कही, अने धान्य क्रियाणुं लेवावाले नथी लीधुं त्यां सुधी तेने धान्य क्रियाणानी पांचे क्रिया पातली लागे कही, अने रुपीया न दीधा त्यां सुधी रुपीयानी पांचे क्रिया जबरी लागे कही; अने धान्यादिक क्रियाणुं लेवावालाने तोली दीधुं अने रुपीया लइ लीधा, तेवारे धान्यादिक क्रियाणानी तो पांच क्रिया पातली कही अने रुपीयानी क्रिया जबरी कही; अने लेवावाले क्रियाणुं तोलावी लइ लीधुं, अने रुपीया परखावीने आपी दीधा, तेवारे क्रियाणानी पूर्वोक्त पांच क्रिया जबरी लागे कही

अने रुपीया दीधा तेथी रुपीयानी पाच क्रिया पातली कही

हवे जुओ! ज्यारे वस्तु घरमा पडी होय, तेवारे ते उपर मुर्छा होय तेथी तेनो जापतो राखवानो उद्यम करे तेवारे पाचे क्रिया जबरी कही, अने आगलाने वस्तु आपी दीधी, पोतानी मुर्छा मटी ने जापतो राखवानो उद्यम मट्यो, तेवारे पाचे क्रिया पातली लागे कही तेम दातारना घरमा अन्न वस्त्रादिक पड्या होय त्या सुधी ते उपर पोतानी मुर्छा छे तेथी पाचे क्रिया जबरी लागे, अने मागता भिखारीने दुर्बल दुखीने भुख्या तरसा टाढे मरता देखीने अनुकपा आणीने अन्नवस्त्रादिक आपे, तेथी पोतानी मुर्छा मटी तेने श्री वीतरागदेवना वचनने लेखे तो पाचे क्रिया पातली लागे तेम वीतरागदेवना वचन उत्थापीने दातारने छ लट्ठ पाप कइ रीते लगाडो छो? तेवारे तेरापथी कहे छे के "ग्रहस्थीना अन्न वस्त्रादिक परिग्रहमा छे अढार पापनो, छवीस बोलनो अने अन्न वस्त्रादिकनो त्याग करे तेटलु तो व्रत छे, अने जे राखे ते सर्व अन्नवस्त्रादिक अव्रत परिग्रहमा छे ते पोते सेवे तो पाप, बीजाने सेववाने आपे तो पाप अने सेवताने भलु जाणे तो पाप ए लेखे दातार मागता भीखारीने अनुकपा आणीने अन्न वस्त्रादिक आपे,तेणे तेने अव्रत परीग्रह सेवराव्यो कहीये" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! परिग्रहनेतो भगवते रुपी चोफर्सी कह्यो छे, अने अन्न, वस्त्र, सोनु, रुपु प्रमुख सर्व पुद्गलने रुपी आठ फर्सी कह्या छे शास्त्र सुत्र भगवती शतक बारमे उद्देशे पाचमे ते पाठ—

रायगिहे जाव एव वयासी अह भंते! पाणाइवाए मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे५ एसणं कइ वण्णे कइगंधे कइरसे कइफासे प? गो! पचवण्णे दुगंधे पचरसे चउफासे अहभंते! कोहे१ कोवे२ रोसे३ दोसे४ अखमा५ सजलेणा६ कलहे७ चडिके८ भंडणे९ विवादे१० एसणं कइवण्णे जाव कइफासे प? गो! पचवण्णे पंचरसे दुगंधे चोफासे पं० ॥ अहभंते! माणे मदे दप्पे थंभे गवे अनुकोसे

परपरिवाए उक्कोसे अवकोसे उन्नय उनामे डन्नामे एसणं कइवणे पं.? गो.! पंचवणे जहा कोहे तहेव ॥ अह भंते ! माया उवहि नियम्हि वलए गहणे णुमे कक्के कुरुए जीमे किव्विसे आयरणया गुहणया वंचणया पलिउंचणया साइजोगेय एसणं कइवणे पं.? गो.! पंचवणे जहेव कोहे॥अह भंते ! लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेहि तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणया पच्छाणया लालपणया कामासा भोगासा जीवीयासा मरणासा नंदी रागे एसणं कइवणे पं? गो.! जहेव कोहे॥अहभंते! पेज्जे दोषे कलहे जाव मिछा दंसणसल्ले एसणं कइवणे? गो.! जहेव कोहे तहेव चौ फासे ॥

अर्थः—रा० राजग्रहि नगरीने विषे जा० जावत् गोतम ए० एम कहेछे. अथ हवे भं० हे भगवान ! पा० प्राणातीपात मु० मृखावाद अ० अदत्तादान मे० मैथुन अने प० परिग्रह ५. ए पांच ए० एने विषे क० केटला व० वर्ण क० केटला गं० गंध क० केटला र० रस अने क० केटला फा० फर्स पं० कह्या? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ते कर्मने पुद्गलरुपपणाथी(पुद्गलात्मक छे तेथी) वर्णादिक होय. एटला माटे पं०पांच वर्ण दु० वे गंध पं० पांच रस अने च० चार फर्स (स्निग्ध, रुक्ष, शीत अने उष्ण. ४) शुक्ष्म परिणामी पुद्गलने होय. कर्म शुक्ष्म परिणामी छे ते माटे. अ० अथ हवे भं० हे भगवान ! कोहे० कर्म उपार्जनहार सामान्यरुप प्रणाम ते क्रोध १, अने को० विशेषरुप ते कोप २, रो० क्रोधनो अनुबंध ते ३, दो० स्वात्म अने परात्मने दोषे ते ४, अ० परायो अपराध न सहे ते ५, सं० वारंवार क्रोधरुपी अग्नि बले ते ६, क० मोटा शब्देकरी भुंडा वचन बोले ते ७, चं० क्रोधेकरी रुद्र आकार करे ते ८, भं० दंडादिकेकरी युद्ध करे ते ए अने वि० अविनय बोले ते १०. ए इहां कलहादिक क्रोधनां कार्य छे ए सर्व एकार्थ छे. ए० एने विषे क०

केटला वर्ण, केटला गंध, केटला रस, जा० यावत् क० केटला स्पर्श प० कह्या ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! प० पांच वर्ण प० पांच रस दु० बेगंध अने चो० चार स्पर्श प० पूर्वे कह्या ते अ० अथ हवे ज० हे भगवान! मा० मान प्रणाम उपार्जनहार कर्म त्यां मान सामान्य नाम छे अने मदादिक विशेष नाम छे १, म० मद हर्ष २, द० दर्प ३, थ० नमे नही ४, ग० निःशंकपणु ५, अ० अनेरा पासे गुण कीर्तन करावे ६, प० पराया अवगुणवाद बोले ७, उ० पोते पोतानी रिद्धि उपार्जे ८, अ० अभिमानेकरी आत्माने तथा परने कषाय प्रतिभावे ९, उ० ऊंचो भाव (अहंकारे करी) १०, उन्ना० जे आवीने नमे तेने गर्वे प्रवर्ते ११ दु० दुष्ट पणे नमे १२ ए सर्व मानना बार बोल कह्या इहां स्वभाविक मानना कार्य छे ए सर्व मानवाचक छे ए० एने विषे क० केटला वर्ण, केटला रस, केटला गंध अने केटला स्पर्श प० कह्या ? गो० हे गौतम! प० पांच वर्ण इत्यादिक ज० जेम को० क्रोधने कह्या त० तेम कहेवा अ० अथ हवे ज० हे भगवान ! मा० माया सामान्यपणे नाम उपधि इत्यादिक तेना भेद -उ० परने वचन (ठगवा) निमित्ते समीप जाय १, नि० घणो आदर करी परने ठगे २, व० जेने भासे वांकी चेष्टा, वांका वचने बोले ३, ग० आगलाने वचन अर्थे वचन जाल करे ४, णु० परवचन अर्थे नीचो प्रवर्ते ५, क० मायाए करी अनेराने मारे ६, कु० माया विशेषे भरू कुचेष्टा करे ७, की० परने (वचन) ठगवा निमित्ते क्रिया अवलवे ८, कि० मायाएकरी भवान्तरे अथवा एज भवने विषे किल्विषि थाय ९, आ० मायाएकरी काइक वस्तु आदरे १०, गु० पोतानु स्वरुप गोपवे ११, व० आगलाने ठगे १२, प० वचन अर्थे सरलपणु करी देखाडे १३, सा० रुडा द्रव्यने पाडुवा (खोटा) द्रव्य साथे जोडे १४ ए सर्व मायाथी एकार्थ छे ए० एने विषे क० केटला वर्ण, केटला गंध, केटला रस अने केटला स्पर्श प० कह्या ? गो० हे गौतम ! प० पांच वर्ण इत्यादि ज० जेम को० क्रोधने विशे कह्या तेम मायाने विषे केहेवा अ० अथ हवे ज० हे भगवान ! लो० लोभ ए सामान्य नाम अने इच्छादि विशेष १, इ० अभिलाष २, मु०

रक्षण अनुबंध ३, कं० अप्राप्तिनी वान्छा ४, गे० प्राप्त अर्थने विषे आशक्त ५, त० पाम्या अर्थने विषे तृष्णा न जाय ६, भि० विषयनुं ध्यान ७, अ० द्रढ अभिनिवेश विषय चित्त ८, आ० मारा पुत्र तथा शिष्यने एम होजो एवी आशीस ए, प० प्रार्थना (इष्ट अर्थनी याचना करे ते) १०, ला० लालपाल करीने वारंवार मागे ११, का० शब्द रुपनी आशा करे १२, भो० भोगरुपनी (गंध-रस-स्पर्शनी) आशा करे १३, जी० जीवीतव्यनी आशा करे १४, म० कोइ अवस्थाए मर्ण वान्छे १५, नं० समृद्धियकां राग हर्ष ते नंदीराग वाजां विशेष १६. ए सोल ए सर्व लोभ वाचक छे. ए० एने विषे भं० हे भगवान ! क० केटला वर्ण, केटला गंध, केटला रस अने केटला स्पर्श प० कह्या ? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ज० जेम को० क्रोधने विषे कह्या तेम लोभने विषे पण कहेवा. अ० अथ हवे भं० हे भगवान ! पे० पुत्रादि विषे स्नेह १, दो० दोष (अप्रिती) २, क० प्रेम हास्य (कलह) जा० यावत् अभ्याखान, पैशुन, रतिअरति, परपरिवाद, मायामोसो मि० मिथ्यात-दर्शन-सल्य इत्यादि पापस्थान. ए० एने विषे क० केटला वर्ण, केटला गंध, केटला रस अने केटला स्पर्श कह्या ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पं० पंच वर्ण इत्यादि ज० जेम क्रोधना कह्या तेमज चार फर्स अढार पापने विषे जाणवा.

भावार्थः—हवे जुओ ! ए पाठमां तो प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह, ए पांचे रुपी चोफरसी कह्या छे. तेमज क्रोधना दस भेद, मानना बार भेद, माया-कपटाइना पंदर भेद, लोभना सोल भेद, अढार पाप अने आठ कर्म, ए सर्व बोलने रुपी चोफरसी कह्या छे. जेम आठ कर्म चोफरसी पुद्गल पोतपोतानी कनेज रहे, पण कोइने आपी शकाय नही, तेम पांचमा पाप परिग्रहने पण रुपी चोफरसी कह्यो छे. अन्न, वस्त्र, सोनुं, रुपुं प्रमुख अठफरसी पुद्गल उपर मुर्छा ममता होय तेने परिग्रह कहीये. ते रुपी चोफरसी छे ते पोतानो पोतानी कनेज रहे, कोइने आपी शकाय नही. तमे, "परिग्रह रुपी चोफरसी छे" ए सूत्रनां वचन जाणता थका कहो छो के "मागता

जिखारीने अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रादिक जे आपे, तेणे परिग्रह से-वराव्यो, परिग्रह दीधो," एवी मतना लीधे सूत्रना वचन मरोडी अ-ठति परूपणा केम करो ठो ? वली एज बारमा शतकना पांचमा उदे-शामा अन्न वस्त्रादिकने पुद्गलास्तिकाय कही ठे ते पुद्गलास्तिकाय रुपी अठफरसी ठे, अने परिग्रह (पांचमा पाप) ने रुपी चोफरसी कह्यो ठे हवे तमे अन्नवस्त्रादिकने अठफरसी पुद्गल जाणता ठता परिग्रह केम कहो ठो ? तेवारे तेरापंथी कहे ठे के "अन्न, वस्त्र, सोनु, रुपु, वे उपर मुर्छा ममता होय तेने जाव परिग्रह कहीये, अने तेने रुपी चो-फरसी कह्यो ठे ते तो सेवराव्यो न सेवरावाय, पण सोनु, रुपु, अन्न, वस्त्रादिक द्रव्य परिग्रह ठे, ते द्रव्य परिग्रह दातारे सेवराव्यो "तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! द्रव्य परिग्रहथी कर्म बधाय के जाव परिग्रहथी बधाय ते कहो जो द्रव्य परिग्रहथी कर्म बधाय तो, जरत महाराजने जंबुद्वीपपन्नति सूत्रमां आरीसा जुवनमा घरेणा कपडा पहेर्यां थकां केवलज्ञान उपन्यु केम कह्यु ? तथा ऋखजदेव जगवाननी मारुदेवी माताने हाथीने होदे बेठा, लाखो क्रोडो रुपीयाना घरेणा पहेर्यां थकां, ग्रहस्थपणाना वेषमा केवलज्ञान केम उपन्यु ? वास्ते द्रव्य परिग्रह कर्म बधनु कारण नथी

तेवारे तेरापंथी पण कहे ठे के, "कपडा घरेणा उपर मुर्छा ममता होय तेने जाव परिग्रह कहीये ते कर्मबधनु कारण ठे ते ममता मुर्छा मटी गइ, तेथी जरत महाराजने तथा मरुदेवी माताने केवलज्ञान उपन्यु, अने घरेणा कपडां तो अजीव पुद्गल ठे, ते कहेवा मात्र द्रव्य परिग्रह ठे, पण कर्मबधनु कारण नथी ते कपडा घरेणा अव्रत परिग्रह न कहे-वाय" त्यारे हे देवानुप्रीय ! मागता जीखारीने अनुकंपा आणीने मुर्छा ममता मटवाथी, अन्नवस्त्रादिक अजीव पुद्गल अठफरसी दीधा, तेणे परिग्रह (कर्मबधनु कारण ते) सेवराव्यो, एम मतना लीधे जुठ केम बोलो ठो ? तेवारे वली तेरापंथी एम कहे ठे के "अन्न वस्त्रादिक अजीव पुद्गल अठफरसी दीधा तेने तो तमे पाप नथी मानता, पण

काचुं धान दे अने काचुं पाणी पाय तेमां एकेंद्री जीवनी हिंसानुं तो पाप लाग्युं के नही ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एकेंद्री जीवोनी हिंसानुं तो पाप तमे बताव्युं, पण अनुकंपा शुभ जोगथी पंचेंद्रि जीवना प्राण जता राख्या, तेनुं तमे पाप केम कहो छो ? कारण के ए अनुकंपादि कार्योमां जेटली हिंसा थाय ते तो पाप खातेज छे, पण जे जीव उगर्यो तेनो गुण जाणवो. एवा मिश्रस्थानना दाखला सूत्रोमां घणे ठेकाणे छे. जेम चित्तप्रधाने घोडा दोडावीने कपटाइ करीने प्रदेशीराजाने समजाववानो उपाय कर्यो, तेथी चित्तप्रधानने अजयणानुं तथा कपटाइनुं पाप लाग्युं; पण राजाने समजाव्यो तेनी धर्मदलाली कही छे पण पाप दलाली नथी कही. वली ज्ञातासूत्रमां सुबुद्धि-प्रधाने जीतशत्रुराजाने पाणीनी अजयणा करीने समजाव्यो. तेथी तेने पाणीनी तो हिंसा लागी, पण राजाने समजाव्यो तेनुं पाप नथी कह्युं. तमे, धान कणुंका देइ काचुं पाणी पाइ अनुकंपा शुभ जोगथी पंचेंद्रि जीव मरताना प्राण राख्या तेने, भेलुंज पाप केम कहो छो ?

वली तमारी वाणी सांभलीने तमने कोइ रजपुतादिक कहे के "हे स्वामी ! आपनी मरजी होय तो धान कणुंका अने काचापाणीनो हिंसाना त्याग करावो, अने आपनी मरजी होय तो पंचेंद्रिजीवनी हिंसाना त्याग करावो, बेमांनुं एक त्याग करवाना मारा भाव छे. घणुं पाप जाणो तेना त्याग करावो." तेवारे तमे शेना त्याग करावशो ते कहो. तमारी श्रद्धाने लेखे तो धान कणुंका अने काचा पाणीना त्याग कराववा जोइए; (घणा जीवनी हिंसा टले माटे) पण भगवंते तो पंचेंद्रि जीवनी हिंसामां घणुं पाप कह्युं छे, नर्कनुं आयुष्य बांधे कह्युं छे, कारणके एकेंद्रथी अनंतगणी पुन्याइ पंचेंद्रिनी वधती छे, तेथी तेमां घणुं पाप मान्युं, अने श्रावकना पहेला व्रतमां पण त्रस-जीवनी हिंसानो त्याग करवो कह्यो. त्यारे हे देवानुप्रीय ! पंचेंद्रि जीवनी हिंसानुं पाप घणुं हशे तो, पंचेंद्रि जीवने अनुकंपा शुभजोग आणीने तेना प्राण राख्यानो घणो गुण केम नही हशे ? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली अ-

नुकपा आणीने दान दे, तेमां श्री वीतरागदेवे तो धर्म अधर्म एके पण कहेवुं नथी कह्यु शास्त्र सूत्र ठाणायाग ठाणे दसमे उद्देशे पहेले ते पाठः-

दस विहे दाणे प०तं० अणुकंपा १ सग्गह २ चेव जय ३ कालुणिएतिय ४ लज्जाए ५ गारवेणाच ६ अहमेपुण सतमे ७ धम्मे अठमेवुत्ते ८ काहीश्य ९ कयतिय १० ॥

अर्थ —द० दस वि० प्रकारे दा० दान परुप्यु त० ते कहेछे अ० अनुकपा (कृपाकरीने दीन अनाथने देवु ते) १, स० समहदान (क-ष्टादिकने विषे साय्यने अर्थे दे ते) २, ज० जयना लीधे दान आपे ते ३, का० पुत्रादिकना वियोगने समये दान दे ते तथा मुआनी पछवाडे ध-रादिकनु करवुं ते शोकदान ४, ल० घणा जणानी लाजे करी दान आपे ते ५, गा० गर्वे खरचे ते गर्वदान (नाटकिया मल्लादिने तथा विवाह-सादीने विषे आपे ते) ६, अ० अधर्मने पोपणहारु दान ते (गणिका-दिकने आपे ते) ७, ध० धर्मनु कारण से धर्मदान (ते सुपात्रे दान) ८, का० मुजने काइक उपकार करशे एवी बुद्धिए जे दे ते कार्यिकहेतदान ९, अने क० एणे मुजने घणीवार उपगार कीधों छे, माटे हु एव उशींगण थवा काजे काइक आपु, एम धारीने दे ते १० ॥

जावार्थ —हवे इहा तो दस दान कह्या तेमा सातमु अधर्म दान कह्युं ते पोताना विषय हेते तथा स्वार्थ हेते वेश्यादिकने आपे तेने अधर्म-दान कहीये, अने आठमु धर्मदान ते नियाणादिक दोषरहित, विच, वित्त अने पात्र शुद्ध जे साधुने आपे तेने धर्मदान कहीए, अने बाकीना आठ शेष रह्या, तेना फल विषे श्रीवीतरागदेवे पण मौन राखी, पुन्य पापनां फल एके कह्या नहीं, त्यारे आपणने शुं ज्ञान छे के, प्रभुना विना कह्या न्यारा निर्णय करीए ? वली केटलाक इहा पुन्य स्थापे छे, केटलाक मिश्र स्थापे छे, पण ते वीतरागनी आज्ञा बहार छे वली आ-ठमुं दान साधुने देता पुन्यनिर्जरा रुप लाज थाय, पण अरणीकरणीनी पेरे विषय हेते दे तो अधर्मदान पण थाय जेम चोरने मोरी करवानी

साज्य (मदद) आपे तो अधर्मदान कहीए; केमके तेमां पोतानो पण स्वार्थ भेलो छे ते माटे. एम करतां ए चोर बंधणमां पड्यो, तेने दुःखी देखीने अनुकंपा आणीने खानपान आपे तो ते अनुकंपा दान थाय. जेवा पोताना प्रणाम (दान आपतां) होय तेवुं दान कहीए. फल पण पोताना प्रणाम शुद्ध अशुद्ध होय तेवां लागे. जेम पात्र तो धर्मरुचि घणा शुद्ध हता, पण नागश्रीना जेवा प्रणाम हता तेवां फल लाग्यां. ते माटे दान, तप, जप, क्रिया अने दया, ए सर्व पदार्थनां फल पोताना प्रणाम पक्के लागे छे. जेम कोइ अभव्य छे, ते साधु भेलो रहे छे अने साधु जेवुं खावुं पीवुं करे छे, पण जेवा पोताना प्रणाम होय तेवांज फल लागे छे. वली साधुनी परे कोइ शुद्ध व्यवहार देखी साधुनी बुद्धे वांदे तो तेने साधु वांद्यानां फल लागे के असाधु वांद्यानां फल लागे? एम पोताना प्रणाम उपर घणी वार्ता छे. बाकीनां आठ दान श्री वीतरागदेवे एकान्त धर्ममां पण नथी गण्यां, तेम एकान्त अधर्ममां पण नथी गण्यां. ए आठ दानमां एकान्त धर्म छे के एकान्त अधर्म छे, एम साधुए कांइ पण कहेवुं नही, मौन भाव राखवो. ए दान प्रशंसवां पण नही अने निषेधवां पण नही. एम जाणवुं जे, आगल श्रावके दान दीधां छे तेनां जे फल थयां हशे ते आज पण आपनारने थशे. वली श्री वीरप्रभुना अंतेवासी श्रावके जे कार्य कर्यां, ते जो अनर्थदंड पाप कर्मादान होत तो केम करत? वास्ते ए करणी निषेधवारुप अथवा पाप कहेवारुप नथी. ए वातनो श्री वीतरागदेवे पण चोखी रीते निर्णय न कर्यो त्यारे आपणने शुं ज्ञान छे? एनो तो घणो विचार छे. वली सूयगडांग सूत्रना श्रुत्स्कंध पहेलाना अध्ययन अग्यारमामां सावद्य दानमां मौन राखवुं कह्युं छे, पण पाप कहेवुं कह्युं नथी. ते गाथाः—

हणंतं णाणु जाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए;
ठाणाइसंति सड्ढिणं, गामेसु नगरेसुवा. ॥ १६
तहागिरं समारंभं, अत्थिपुन्नंति णोवए;

अहवा नत्थि पुन्नति, एव मेय मह ब्भयं ॥ १७ ॥
दाणठयाय जेपाणा, हम्मंति तसथावरा,
तेसिं सारक्कणाठाए, तम्हा अत्थिति नोवए ॥ १८ ॥
जेसिंतं ठवकप्पंति, अन्नपाण तहा विह,
तेसिं लाभंतरायति, तम्हा णत्थि तिनोवए ॥ १९ ॥
जेयदाण पस्ससति, वह मिछति पाणीणं,
जेयण पडिसेहति, वित्तिछेय करत्तिते ॥ २० ॥
दुहउ वित्तेण भासंति, अत्थिवा णत्थिवा पुणो,
आयरयस्स हेच्चाण, निवाण पाउणातिते ॥ २१ ॥

अर्थ –पुर्ववत् जुओ प्रश्न वीजो पाने १३९ में

भावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमा एम कह्यु छे के, गाम या नगरमां गयाथी साधुने कोइ दाननो अर्थी, अक्तावंत महस्थी तथा राजादिक पुछे के, हे स्वामी ! हु तलाव कुवादिक खोदावु या सत्तु कारादि दउ तथा पाणीनी परब वधावु ? ए अनुष्ठानमा पुन्य छे के नहि ? एवी सावध (आरंभ कारणी) वाणी सांभळीने ' ए अनुष्ठानमां पुन्य छे ' एम पण साधु न कहे, अने ' तमने पुन्य नथी ' एम पण साधु न कहे, कारण के ए बन्ने भाषा महा भयनुं कारण छे अ हीयां तेरापथी एम कहेछे के, " जो पूर्वोक्त कार्योमा पुन्य होय तो ' तमने पुन्य थशे ' एवु केम न कहे ? " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! दानने अर्थे त्रस स्थावर हणाय, ते जीवोनी रक्षाने अर्थे साधु एम न कहे के, तमने पुन्य थशे, कारण के साधु एम जाणे के, जो हु ए परब तथा सतुकारादिक दानने प्रशसीश तो मारा वचनथी त्रसस्थावर-जीवनी घात थाशे, एम जाणीने पुन्य न कहे, पण एम तो नथी कह्यु के, हे साधु ! " ए दानमां पाप छे, तेथी तुं पुन्य मत कहीश. " जेम श्रावक साधुजीना सामा जाय तेमा निर्जरा कही, पण मेह वरसतां सा

धुजीने पुछे के, हुं फलाणा साधुजीना सामो जाउं तेमां मने शुं फल थशे ? तेवारे साधुजी जवानुं कहे नही, मौन राखे. हवे गुरु-देवना सामा जवामां (विनयमां) निर्जरारुप लाभ जाणे छे, पण जवानुं कहे नही; कारण के ते एम जाणे के, मेह वरसतां गुरुदेवना सामा जवामां निर्जरारुप लाभ कहीश तो मारी भाषा-सुमतिमां कसर लागशे, अने जो ना कहीश तो विनय भागशे, एम जाणीने मौन राखे. इत्यादिक सामा आववानी, साधु-साधवी वास्ते जग्या, औषध लाववानी, अने उठी भना थवानी आज्ञा मागे तो साधुजी मौन राखे; पण ग्रहस्थने आववा जवानुं कहे नही. तेम ए सावध-दानमां त्रस-स्थावर जीवनी रक्षाने अर्थे, पोसतुकारमां तमने पुन्य छे, एम प्रशंसे नही; अने मागता भीखारीने अंतराय पडे तेथी, तमने पुन्य नथी, एम पण न कहे. जे ए दानने प्रशंसे तेने छकायनी वधनो वंछणहार कहीए; अने जे ए पोसतुकार दानने निषेधे तेने मागता भीखारीनी (वृत्ति) आजीवीकानो छेदनहारो कहीए. एम जाणीने साधु ए सावध पोसतुकार दानमां, तमने पुन्य छे अथवा नथी, ए बेमांनी एके भाषा न बोले; मौन राखे. वली ए सावध-दानमां मौन राखवुं कह्युं छे. तेनी शाख सूत्र सुयगडांग श्रुतस्कंध बीजे अध्ययन पांचमे. ते गाथा ३३ मीः-

दक्खिणाए पडिलंभो, अत्थिवा नत्थिवा पुणो;
णवियागरेज मेहावी, संति मग्गं च वूहए ॥३३॥

अर्थः—द० दाननो प० प्रतिलाभकाले ग्रहस्थने देवा अने लेवावालाने लेवा, एवो वर्तमान व्यापार देखी अ० इहां पुन्य छे एम न कहे, कहे तो असंजमनी अनुमोदना थाय. वा० अथवा न० इहां पुन्य नथी ण० एम पण न कहे, कहे तो वृति छेद थाय. मे० ए कारणे पंडित अस्ति नास्ति न कहे. हवे साधु केम बोले ते कहे छे. सं० ज्ञान दर्शन चारित्ररुप म० मोक्षमार्गनी वृद्धि थाय तेम वु० बोले.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां पण एम कह्युं छे के, ए साव-

भदानमां पुछयां थका " तमने गुण छे अथवा गुण नथी " एम साधु एके वचन न कहे बुद्धिवंत साधु तो जेम ज्ञान, दर्शन अने चारित्र वधे तेम बोले ए बन्ने ठामे प्रभुए मध्यस्थ भाव राखवो कह्यो पुन्य, पाप के, मिश्र, एके न कहेतां मौन राखवु कह्यु तेवारे तेरापंथी कहे छे के पुछया थका मौन राखे, पण मनमा शु जाणे ? तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! सूत्रमां प्रभुए जे वस्तुनो परमार्थ कह्यो होय तेज प्रकार कहेवो, अने सूत्रमां ज्यां प्रभुए मौन राखवानु कह्यु होय त्यां मौन राखवो, अने मन मांतो एम जाणे के, जेटली अनुकंपा शुभजोग छे तेटलो रुडो पुन्यनो भाग जाणवो, अने जेटली हिंसा अशुभजोग छे तेटलो भुडो पापनो भाग जाणवो

तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के "पोसतुकारमा तथा सावद्यदानमा शुभजोगनुं पुन्य अने हिंसानुं पाप, ए बन्ने वात केम श्रद्धोछो ? कांतो पुन्य श्रद्धो के पाप श्रद्धो "तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! साधुने कोइए उघाडे मोंडे बोलतां, वायुकायना असंख्यात जीवनी घात करता उत्कटभावथी दान दीधु तेने शु थयु ? धर्म के पाप ते कहो वायुकायना जीव मुआ तेनु पण धर्म अने उत्कट भावे दान दीधु तेनु पण धर्म ? के वायुकायना जीव मारीने दान दीधु तेमा पाप ? तेवारे तेरापंथी पण कहेछे के "वायुकायनी हिंसा थइ तेतो पाप, पण उत्कट भावे दान दीधु तेमा हिंसानो भाव नथी तेथी धर्म घणु छे " त्यारे हे देवानुप्रीय! ए दानमां पण हिंसानु तो पाप लागशे, पण शुभजोगनु अने अनुकंपानु पाप केम कहोछो ? ए दानमा हिंसा तो छे, अने अनुकंपा शुभजोग पण छे तेथी एकान्त पुन्य अथवा एकान्त पाप, एम एकान्त वचन न कहेवु तेथीज श्री वीतरागदेवे मौन राखवी कह्यो छे वली दान तो अनेक प्रकारना छे कोइमां एकान्त मोक्ष हेतु छे १, कोइमा एकान्त नर्क हेतु छे २, कोइमां पोतपोताना प्रणाम उपर पुन्य पापना फल छे ३, अने कोइमां पात्र कुपात्र उपर पुन्य पापना फल छे ४, पण दानरुपी समुद्रनो गणधरदेवे पण निकाल नथी कर्यो. यत —

आकाशे ताराणां संख्या, त्रण संख्याद्‌ महि तले;
श्रावणे बिंदुनां संख्या, पात्र संख्या न विद्यते ॥१॥ स्पष्टार्थ.

मांटे एम जाणजो जे, एनो विचार घणो छे. श्रीवीतराग वदे ते खरुं.

वली तेरापंथी कहे छे के, साधु विना पुन्यनुं क्षेत्र क्यांय नथी. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! साधु तो धर्मनुं पुन्यनुं क्षेत्र छेज तेमां शुं कहेवुं ? पण बीजाने दीधाथी पोताना अनुकंपा भावे शुभ जोगथी कदाचित गुण थाय तो ना कहेवाय नही. वली साधु विना पुन्यना क्षेत्रनी ना कहे तेने पुछीए के, साधु तो साडीपचीस आर्य देशमां छे. तेमां तो नव प्रकारे पुन्य निपजे; पण अनार्य क्षेत्रना लोकोने नव प्रकारे पुन्य निपजे छे के नहि ? जो निपजे तो केवी रीते निपजे;? केमके त्यां साधु तो नथी, अने बीजाथी तमे पुन्य मानता नथी. हवे अनार्य देशमां नव प्रकारे पुन्य कइ रीते थाय ? त्यां अढार प्रकारे पाप तो निपजे छे, पण पुन्य केटला प्रकारे निपजे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "नव प्रकारे पुन्य निपजे एवा तो त्यां (अनार्य देशमां) पात्र नथी; पण मन, वचन, कायाना जोग शुभ वर्ते, तेथी पुन्य निपजे छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अढार प्रकारे पाप तो सर्व जगतमां छे, पण नव प्रकारे पुन्य एक आर्य-क्षेत्रमां ज छे, एवुं तमे कया सूत्रथी कहो छो ते पाठ अमने देखाडो; अने अनार्य-क्षेत्रमां त्रण जोग संबंधीआ पुन्य छे, शेष नथी ते पण सूत्रपाठ अमने बतावो. वली तमे कहो छो के, अनार्य-क्षेत्रमां जोग भला प्रवर्ते तेनुं पुन्य छे शेष नथी. त्यारे जीव उगारवाना प्रणाम अने मरताने अनुकंपा आणीने दान देवाना प्रणाम, ए करणीमां कयुं ध्यान, कइ लेश्या अने कया प्रणाम? शुभ के अशुभ ते कहो. साधुश्रावकना दानमां पुन्य होय तेवुं तो नथी; पण अनुकंपा आणीने दुर्बलने मरता देखीने दान आपे, तेमां शुभ जोग छे के अशुभ जोग छे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "सावजदान (जीवहिंसा सहित) मां तो तमे पण मौन राखवी कही कहो छो, पण निर्वध

रोटी, शेक्या चणा, सिरणी (मिठाइ) अने प्रासुक (उनु) पाणी, मा गता भीखारीने अनुकपा आणीने आपे, तेमा कोइ ठेकाणे सूत्रमा, गुण कह्यो होय तो बतावो " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! सूत्रमातो प्रासुक दानमा तथा अनुकपा दानमा ठाम ठाम गुण कह्यो छे, पण तमारा सरखा अदृष्ट कल्याणीकोनी दृष्टीमा आवतु नथी प्रथम तो ठाणायांग सूत्रना नवमा ठाणाना पहेला उद्देशामा नव प्रकारे पुन्य कह्यु छे ते पाठः—

नव विहे पुन्ने प० त० अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ वत्थपुन्ने ३ लेणपुन्ने ४ सयणपुन्ने ५ मणपुन्ने ६ वयपुन्ने ७ कायपुन्ने ८ नमोकार पुन्ने ९ ॥

अर्थ —न० नव वि० प्रकारे पु० पुन्य प० परुप्यु त० ते कहे छे. अ० पात्रने विषे जे अन्नादिक देवु तेथी तीर्थंकरनामादि पुन्य प्रकृतिनो बध, ने तेथी अनेराने देवु ते अनेरी पुन्य प्रकृतिनो बध १ पा० पाणी पुन्य २ व० वस्त्र पुन्य ३ ले० घर ४ स० सथारो ५ म० गुणवत उपर हर्ष ६ व० वचननी प्रशसा ७ का० पर्युपासना (सेवा) ८ न० नमस्कार पुन्य उतपन ९.

अन्न पान च वस्त्र च, आलय शयनाशन,
शुश्रुषा वदन तुष्टि, पुन्य नव विध स्मृत ॥ १ ॥

भावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमा श्री वीतरागदेवे एमतो नथी कह्यु के, एक साधुनेज दीधे पुन्य बधाय अहीं तो समचय कह्यु छे के, अन्नदीधे पुन्य, पाणीदीधे पुन्य, जग्यादीधे पुन्य, इत्यादिक नव प्रकारनां पुन्य कह्यां छे साधुजीने दीधा तीर्थंकर गोत्रादि पुन्य प्रकृति बधाय, अने अनेराने दीधे अनेरो पुन्य प्रकृति बधाय हवे पुन्यनी बेताळीस प्रकृति छे तेमा साधुजीने दीधाथी तो तीर्थंकरादिक प्रकृति बधाय अने अनेराने दीधाथी अनेरी पुन्यप्रकृति बधाय शातावेदनी पंचेंद्रिनी जात, मनुष्यनी गति, मनुष्यनु आयुष्य, त्रस नाम, बादर नाम अने प्रजाप्त नाम इत्यादिक पुन्यप्रकृति बधाय हवे तमे कहेशो के,

साधु विना बीजा कोइने दीधे पुन्य न बंधाय. त्यारे साधुने दीधां तो तीर्थंकरादिक पुन्यप्रकृति बंधाय एम कह्युं छे; पण बाकीनी पुन्यप्रकृति केहेने दीधां बंधाय ते कहो. वली तिर्यचनुं शुभ दीर्घ आयुष्य पुन्यप्रकृतिमां कह्युं छे. ते तमारा साधुने दीधाथी उंट, घोडा, हाथी प्रमुख तिर्यंच थाय के बीजाने दीधाथी थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी पण सीधुं कहेछे के " साधुने समद्रष्टी श्रावक दान आपे, तेथी विमानीक देवतानुं आयुष्य बंधाय, तथा शातावेदनी उंच गौत्र इत्यादिक शुभ पुन्यप्रकृति बंधाय; पण साधुने दीधां तिर्यचनुं आयुष्य तो बंधाय नही. " तो हे देवानुप्रीय ! जुओ ! ए तिर्यंचादिकनुं आयुष्य, इत्यादिक पुन्यप्रकृति अनेराने दीधां बंधाय के नही ? अन्न-पुन्ने इत्यादिक अकेका प्रकारथी बेतालीस पुन्यप्रकृति बंधाय के नही ? न्यारी न्यारी अकेका प्रकारथी बंधाय एम सूत्रमां कह्युं होय तो बतावो. अहीं तो टीका तथा टबामां कह्युं छे के, साधुने दीधाथी तीर्थंकर नामादिक प्रकृति बंधाय, अने अनेराने दीधाथी बेतालीस मांहेली अनेरी पुन्यप्रकृति बंधाय. साधुनेज दीधे पुन्य बंधाय, अने बीजाने दीधे पुन्य न बंधाय, एवुं कोइ ठेकाणे ठाणायांगनी टीकामां अथवा टबार्थमां कह्युं होय तो बतावो. तमे एवा पुरातन आचार्यनी कीधेली टीका तथा टबार्थ उत्थापीने कहोछो के "एक साधुनेज दीधां पुन्य बंधाय अने अनेराने दीधां पुन्य न बंधाय, एकान्त पाप लागे. " एवा मनमां आवे तेवा खोटा अर्थ करीने अनंत संसार केम वधारो छो ? वली साधु विना पण दान देवामां गुण चित्तप्रधाने केशीश्रमण मुनीराज पासे बताव्या छे. तेनी शाख सूत्र रायप्रशेणी. ते पाठः—

तं जइणं देवाणुप्पिया पयसीसरन्नो धम्म माइक्खेजा बहु गुणतरं फलं होजा. तेसिं बहुणं समण माहण भिक्खूयाणं तंजइणं देवाणुप्पिया पएसिस्स बहुणं गुणत्तरं होजा जणवयस्स. १ अर्थः—जुओ पाने १९९.

भावार्थ.—हवे जुठ ! चित्तप्रधान सरीखो श्रावक, जैन मार्गनो तथा नव तत्त्वनो जाण, तेणे केशीश्रमण मुनीराजकने विनती करी के, हे स्वामी ! तमे प्रदेशीराजाने धर्म सत्नखावो तो श्रमण शाक्यादिकने, ब्राह्मणने अने मागता भिखारी भिक्षुकने घणो गुण थाशे एम सूत्र पाठमां कह्यु हवे श्रमण ब्राह्मण अने भिक्षुकने शो गुण थशे कह्यो ते कहो शु प्रदेशीराजा समज्याथी "श्रमण ब्राह्मण अने भिक्षुक तरी जाशे" ए गुण कह्यो के "राजाप्रदेशी समज्याथी श्रमण ब्राह्मण भिक्षुकने भिक्षा सहेलाइथी मलशे" ए गुण कह्यो ? तमे मतनो कदाग्रह छोडीने विचारो ए पाठनुं साचु रहस्य तो एम देखाय छे के, पहेलां प्रदेशीराजा नास्तिक मतनो (मिथ्यात्वि) हतो त्यारे परलोक, पुन्य, पाप मानतो न होतो, तेमज धनने सार जाणीने सचय करतो, पण दान पुन्य करतो नहोतो तेथी चित्तप्रधाने केशीश्रमणने विनती करी के, हे स्वामी ! प्रदेशीराजाने धर्म संभळावीने समजावो तो, द्रव्य अस्थिर जाणे, परलोक, पुन्य पाप माने, अने उदार चित्त थाय तेथी समण ब्राह्मणादिकने दान आपे, अने ए समण ब्राह्मण, भिक्षुकने भिक्षा सोहेली मले ए गुण थाशे एम कह्युं, पण जो चित्तप्रधाननी तमारा सरखी श्रद्धा होत, ने दान आपवामां पाप मानतो होत तो एम कहेवु जोइए के, हे स्वामी ! राजा प्रदेशी असंजतिने तथा श्रमण ब्राह्मणादिकने दान आपीने पाप करे छे, माटे आप तेने धर्म सत्नखावीने समजावो के, आजपछी असजति अव्रतिने दान आपे नही, ने एवु पाप करे नही „ तेम कहेवु जोइए, पण तमारा सरखी श्रद्धा चित्तप्रधाननी नहोती तेमज केशीश्रमण मुनीराजनी पण तमारा सरखी श्रद्धा नहोती जो होत तो चित्तप्रधानने एम केहेत के "हे चीत्त ! तमे अवलु समजाववानी विनंती केम करोछो ? हु तो समण ब्राह्मणादिकने दान देवामां राजाप्रदेशीने पाप सधावीश, के आज पछी एवुं पाप करे नही," पण केशीश्रमणनी तथा चित्तप्रधाननी दानमां पाप मानवानी तमारा सरखी श्रद्धा नहोती वली केशी

मुनीराज आगल प्रदेशीराजा श्रावकनां बार व्रत अंगिकार करी वंदणा नमस्कार करीने घेरे जवा लाग्या, तेवारे केशीश्रमण मुनीराजे कह्युं के "हे राजाप्रदेशी! तमे हमारी पासे रसीलो धर्म पाम्याछो ते धर्मने विषे रमणिक रहेजो. अरमणिक थशो मत." पछी इक्षु क्षेत्रादिकनां चार दृष्टान्त दीधां. पछी प्रदेशीराजाए कह्युं के, हे स्वामी! अरमणिक नही थाउं, पण ए रीते रमणिक रहीश. ते रीतमां कह्युं के, "श्रमण ब्राह्मण अने भिक्षुकने (मागता भिखारीने) दान दइशुं अने श्रावकनां बार व्रत चोखां पालीशुं." एम केशीश्रमण मुनिराजने कह्युं. ते रायप्रश्नेणी सूत्रनो पाठः—

अहणं सेयंविया पामोक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि. एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि. एगं भागं कोठागारे छेस्सामि. एगं भागं अंतेउरं दलइस्सामि. एगेणं भागं महइमहालियं कुडागारसालं करिस्सामि. तछणं बहु पुरिसेहिं दिणभत्ति भत्तवेयणेहिं विउलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता बहुणं समण माहण भिक्खूयाणं पंथिये पहियाणय परिभायमाणे २ बहुहिं सीलवय पञ्चक्काण पोसहो ववासेहिं जाव विहरिस्सामि त्तिकट्टु जामेव दिसं पाउभूए तामेव दिसिं पडिगए. तत्तेणं पएसिराया कल्लं पाउं जाव त्तेयस्सा जलंते सेयंविया पामोक्खाइं सत्तगाम सहस्साइं चत्तारि भाए करेइ. एगंभागं बलवाहणस्स दलयइ जाव कुडागारसालं करेइ. तछणं बहुहिं पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता बहूणं समणं माहणाए जाव परिभायमाणे विहरइ॥

अर्थः—अ० हमणांथीज हुं से० स्वेताम्बिका नगरी पा० प्रमुख आदी स० सात हजार गाम मारां खालसानां छे, च० तेना चार भा०

जाग क० हुं करीश तेमा ए० एक जा० जाग व० हाथी घोडा आदिक वाहनने द०दइश ए प्रथम जाग ए०एक जाग को० कोठार (जंडार) ठा० निमित्ते मुकीश ए बीजो जाग ए० एक जाग अ० अंतेउरने द० देइश ए त्रीजो जाग ए० एक जा० जागनी म० घणीज मोहोटी कु० (कुटा गार) दानशाला क० मंडावीश त० तिहां व० घणा पु० पुरुषने वि० दिधु छे जेने जरण पोषणादिक ज० जात जमणरुप वेतन (चाकरी) ले तेनी पासे वि० विस्तीर्ण अ० अन्न, पाणी, खादीम, सादिम, उ० निपजावीने व० घणा स० श्रमणने (पांच प्रकारना सन्यासी योगीने) मा० ब्राह्मणने जि० जीखारीने प० पथी (मार्गे चाले ते) ने प० पडु णादिकने (महेमानने) प० प रहेंचो देशु व० घणा सी० स्वजाव, आचार, व्रत प० पच्चखाण नवकारसी प्रमुख पो० पोषध व० उपवास साथे जा० यावत् वि० विचरशु ति० एम कहीने जा० जे दि० दिशाथी पा० आव्यो हतो ता० ते दिशाए प० पाछो गयो त० तेवार पछी, प० प्रदेशीराजा क० काल पा० प्रजात थयो जा० जावत् ते० तेजे करी ज० जाज्वल्यमान सूर्य उग्यो से० स्वेतांबिका नगरी पा० प्रमुख स० सात सहस्र गांम प्रत्ये च० चार जा० जाग क० करे, करीने ए० एक जाग व० हाथी, घोडा, रथ, निमित्ते द० दे, जा० जावत् पूर्ववत् दानशाला क० करे त० तीहा व० घणा पु० पुरुषने जा० यावत् अस्नादिक चार आहार उ० निपजावीने व० घणा स० सन्यासी योगी प्रमुखने मा० ब्राह्मणने जा० जावत् प० जिक्षाचरादिकने वहेंचीदेतोथको वि० विचरे छे

जावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमा तो एम कह्युं छे के, हे स्वामी! मारे सात हजार गाम खालसानां छे तेना चार जाग करीश तेमां एक जाग तो हाथी घोडा निमित्ते, एक जाग राणीउं निमित्ते तथा एक जाग खजाना निमित्ते राखीश, अने एक जाग समण शाक्यादिक, ब्राह्मण तथा मागता जिखारीने दान देवा निमिते राखी अस्नादिक चार आहार निपजावीने दांन दइश तथा श्रावकनां बारे व्रत पोखां पालीश, पण अरसणिक नही थाउं ए बे बोल दान अने व्रत रमणिक

पणामां बताव्या. हवे जुन ! हाथी घोमाने आगल पण पोषतो हतो, राणीउने पण पोषतो हतो अने खजानामां पण नाखतो हतो. ए त्रण काम तो आगल ज्यारे नास्तिक मतमां (मिथ्यातपणामां) हतो त्यारे पण करतो हतो, अने पहेलां परलोक, पुन्य पाप नहोतो मानतो तेवारे दान नज देतो देखाय छे. तेथी चित्तप्रधाने केशीश्रमण मुनिराजने कह्युं के, हे स्वामी ! तमे प्रदेशीराजाने समजावो तो समण, माहण, भिक्षुकने भिक्षा सोहेली मले. ए लेखे पहेलां भिखारीने दान नहोतो देतो एम जणाय छे. ए काम तो राजाप्रदेशीए धर्ममां समज्या पछी कर्युं जणाय छे; कारण के धनने अस्थिर जाणी उदार चित्ते पांचमा गुणगणानी करणी जाणी दान दीधुं छे. ते गुण जाण्या विना एवुं पाप केम करे ? माहा हो ते विचारी जो जो. वली आठमा व्रतमां अनर्थ दंड पाप करवाना राजाप्रदेशीने त्याग छे. जो दान देवामां पाप होय तो राजाप्रदेशी धर्ममां समज्या पछी पाप केम करे ? हाथी घोमाने पोषवा, राणीउने पोषवी अने खजानामां धन नाखवुं, ए त्रण कामतो आगल पण करतो हतो, अने एतो अर्थ-पापमां छे; पण दान देवामां पाप होय तो, राजाप्रदेशी धर्ममां समजीने ए अनर्थादंड पाप जाणीने नवुं केम करे ? ए जाणीने अनर्थदंड पाप करे तो तेनुं आठमु व्रत केम रहे ? माह्या हो ते वीचारी जो जो.

वली पहेलांथीज केशीश्रमण मुनीराजे कह्युं के, हे प्रदेशीराजा ! तुं अरमणिक थाजे मत. तेवारे राजाप्रदेशीए कह्युं के, हुं श्रमण, ब्राह्मण, मागता भिखारीने दान दइश; लीधां व्रत चोखां पालीश अने अरमणिक थइश नही. ए बे बोल केशीश्रमण मुनीराजना मोढा आगल रुबरुमां कह्या; पण केशीश्रमण मुनीराजे तेने वर्ज्यो नहि. तमे हेतु दृष्टांन्त कुयुक्ति भेलवीने लोकोना हृदयमांथी दाननी श्रद्धा काढोछो, तेम जो केशीश्रमण मुनीराजनी दान देवामां पाप मानवानी श्रद्धा होत तो, अग्यार दृष्टांन्त आगल दीधा तेम एक दृष्टांन्त वली देत के, हे राजा ! धर्म पामीने आगलनुं पाप छोमे छे तो, ए दान देवानुं नवुं

अनर्थ पाप केम करेछे ? वली तमे कहोछो के, " देती लेती वेला मौन रहेवु, ने पछी पाप छंघलावी देवु " तो हे देवानुप्रीय ! ज्यारे केशीश्र-मण मुनीराजने प्रदेशीराजाए दान देवा बाबतमां निवेदन कर्यु, ते वखते राजा केहेने दान दइ रह्यो हतो अने कोण लइ रह्यो हतो के जेथी श्री केशीश्रमण मुनीराजे निषेध न कर्यो ? पण एम जाणजो के, श्री जैनमार्गमा प्रत्यक्ष अने परोक्ष पूर्वोक्त दानविषयमा मुनीए मध्य-स्थ रहेवुं जो एम न होय तो एटला द्रष्टान्त आप्या तेम एक द्रष्टान्त वली वइने दान देवामां पाप केम न सरखाव्युं ? पण जाणजो जे श्री वीतरागदेवनी, केशीश्रमण मुनीराजनी अने प्रदेशीराजानो तमारा सरखी श्रद्धा नहोती के, दानमां पाप मानी निषेधे वली तुंग्या नग रनीना श्रावक परमविवेकी, जैन मार्गना जाण, प्रभुना हस्त दिक्षित लघु पुत्रसमान, तेमनो आलावो वर्णव्यो, त्यां दान आपी त्रण आलावा कह्या छे तेनी शास्त्र सूत्र भगवती शतक बीजे उद्देशे पाचमे ते पाठः—

तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगियानाम नयरी होछा वणाउ तीसेणं तुंगियानयरीए बहिया उत्तरपुरछिमे दिसि भाग पुप्फवइएणामं चेइए होछा वणाउ तछणं तुंगियाएनयरिए बहवे समणोवासगा परिवसइ अढा दित्ता विछिण विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइणा बहु धण बहू जाय रुवयवया आउग पउग सपउत्ता विछिम्यि पउर भत्त पाणा बहुदासि दास गो महिस गवेलग प्पप्पभूया बहु जणस्स अपरिभूया अभिगय जीवाजीवा उवलद्ध पूण-पावा आसव सवर णिज्जर किरिया हिगरण बध मोक्ख कुसला १ असहेज्जा देवासुर नाग सुवण जक्ख रक्खस्स किन्नर किंपुरुष गरुल गधव महोरगादिएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा त्तिगंथेपावयणे त्तिस्सकिया

निक्कंखिया निवित्तिगिच्छा लद्धठा गहियठा पुच्छियठा अ-
भिगयठा विणिच्छियठा ॥ ५ ॥ अठि मिंजपेमाणु रागरत्ता
अय माउसो निग्गंठे पावयणे अठे अयं परमठे सेसेअ-
णठे ओसियफलिहा अवंगुय-डुवारा चियत्तं तेउर परघर
प्पवेसा बहुहिं सीलवय गुणवय वेरमणं पच्चरकाण पोसहो-
ववासेहिं चाउद्दसठ मुद्दिठ पुणमासिणिसु पम्पिपुणं पोसहः
सम्मं अणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासु एसणिज्जेणं
असणं पाणं खाइमं साइमेणं वत्थ पडिग्गह कंबल पाय-
पुच्छणेणं पीढ फलग सेज्जा संथारएणं उसह भेषजेणं प-
म्पिलाभे माणा अहा परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं
भावे माणे विहरइ ॥

अर्थः—ते० ते काले (अवसर्पणी चोथा आराने विषे) ते० ते स० समयने विषे तुं० तुंग्यानामे न० नगरी हो० हती. तेनुं व० वर्णन चंपानी परे जाणवुं. ती० ते तुं० तुंग्यानगरीनी ब० बाहार उ० उत्तर पूर्वनी वच्चे इशान खुणने विषे पु० पुष्पवतिनामे चे० चैत्य (यक्षाय-तन) हो० हतुं. व० तेनुं वर्णन चंपानगरीनी परे जाणवुं. त० त्यां तुं० तुंग्यानगरीने विषे ब० घणा स० साधुना शेवक प० वसेछे. अ० धनधा-न्यादिके परिपूर्ण दि० दीपता वि० विस्तार सहित वि० घणा छे भ० भुवन (घर) स० शयन, आसन जा० गाम्पां वा० वाहन, घोम्पा, आदि ब० घणा ध० धनादिक ब० घणुं अणघम्पयुं सोनुं रुपुं आ० वमणा त्र-गणानो प० व्यापार सं० तेणे करी सहित छे. वि० घणा लोक जमतां प० प्रचुर (घणा) अन्नादिक जुठा नखाय छे भ० भात पाणी; तथा ब० घणी दा० दासी दास गो० गाय म० भेंश ग० बकरी गाम्पर प्रमुख प० घणा छे जेने. ब० घणा ज० लोकोथी पण अती धनवंत माटे अ० पराभव्या (गांज्या) जाय नही. ए लोकीक गुण कह्या. हवे लोकोत्तर

गुण कहेछे अ० जाण्या छे जेणे जी० जीव अजीव उ० ठंखख्या छे पु० पुन्य पापना फल आ० आश्रव स० संवर णि० निर्जरा कि० क्रियादि कना पचीस न्नेद अ० गाम्री यन्त्रादिक शस्त्र अधिकरण ब० प्रकृत्यादि बंध, चार न्नेदे मो० मोक्षना न्नेदना जाणपणामां कु० कुशल छे अ० कोइनी साज थठे नही दे० देवता वैमानिक अ० असुरकुमार ना० नागकुमार, न्नवनपति विशेष सु० ज्योतिषि ज० जक्ष र० राक्षस किं० किन्नर (वाणव्यंतरा) किं० गरुड किंपुरिष, ए व्यंतर नीकायना देव जाणवा ग० गरुडनुं चिन्ह छे जेने, एवा सुवर्णकुमार न्नवनपति विशेष ग० गंधर्व म० महोरग देवता, ए पण व्यंतर विशेष जाणवा ए आदि दे० देवताना ग० समुह नि० निर्ग्रंथ साधुना पा० वचन सिद्धान्तथी अ० अतिक्रमावी न शके एटले श्रावके निर्ग्रंथना प्रवचन मजबुत करी ग्रह्या छे तेमज जबाब देवा समर्थ छे एतावत्ता जैनमार्गने विषे नि० शंकारहित नि० अनेरामतनी वान्छा न करे नि० साधुनी डुगंछा न करे तथा फलनो संदेह न आणे ल० सिद्धान्तनो अर्थ लह्यो छे ग० अर्थ ग्रह्या छे न्नगवतना मुखथी पु० पुछीने निर्णय कीधा छे अ० हेतुथी जाण्या छे वि० वारवार पुछीने अर्थ निर्णय कर्या छे अ० हाडमानी मिं० मींजा (धातु) पे० धर्मरुपी प्रेमरथी रगाणी छे अ० पोताना सज्जन परिवार गुमास्ता विगेरेने नि० निर्ग्रंथ प्रवचनरुप मार्ग बतावे छे अ० एज अर्थने ए० एज परमार्थ, से० शेष संसाररुप सर्व अनर्थ छे ऊ० हृ- दय फ० फटकनी परे निर्मल छे, अ० सदाय घरना बारणा दान देवा वास्ते उघाडां राखे छे, चि० छाड्या छे अ० अतेउर प० पराया घरमां प० प्रवेश करवो ब० घणा सी० शीलव्रत गु० गुणव्रत बे० पापनां प० पच्चखाण कर्यां छे पोसो उपवास सहित चा० चौदस अष्टमी सु० अमा- वास पु० पुनम प० प्रतिपूर्ण पोसा सम्यक् प्रकारे अ० आज्ञासहित पालता थका स० साधु नि० निर्ग्रंथने फा० प्रासुक (अचेत) ए० शुद्ध (४२ दोष रहित) अ० अन्न पा० पाणी खा० खादिम सा० स्वादिम एम च्यारे आहार व० वस्त्र प० पात्र क० कांबलो पा० पायपुंछणु,

तथा उंचो गुच्छो पी० पीढ, आसन फ० उठींगणनुं पाटीउं से० वस्तु स्थानक सं० मोटो संथारो ज० औषध ते एक वस्तु जे० घणां औषध जेलां होय ते. ए चौद प्रकारनुं दान प० प्रतिलाज्नता (देता) थका अ० जेवां प० आदर्यां छे तेवां त० तप कर्म क्रियाए करी अ० पोतानी आत्माने जा० (ज्नावता थका) देव, गुरु, धर्म एम त्रण तत्व अनुमोदता थका वि० विचरे छे.

ज्नावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां पहेलां तो घरनी संपदा, रिद्धि, मातबरी वर्णवी; पछी श्रावकना नव तत्वनुं जाणपणुं तथा ज्ञान वर्णव्युं; पछी समकितनी गाढाइ (दृढता) वर्णवी; पछी पांचमा गुणठाणानी श्रावकनी मातबरी रहेवानी उदार चीत्तनी करणी वर्णवी; अने पछी श्रावकनां बारे व्रत वर्णव्यां. हवे घरनी मातबरीमांतो 'विछड्डिय-पउरज्नत्तपाणा' एवो घरनो आचार छे. अन्नपाणी पुष्कल निपजे छे, ने खातां पीतां वध्युं होय ते बहार नांखी दे छे; ते कागडा, कुतरां, पशु पक्षी प्रमुख खाय छे. ए रीते विस्तीर्ण ज्नात पाणी रंधाय छे. पछी ज्ञान ने समकितना गुण वर्णव्या. पछी पांचमा गुणठाणानी करणी वर्णवी तेमां कह्युं के, फटक रत्ननी पेरे हृदय निर्मलां छे अने ज्निक्षुकादिकने दान देवा सारु घरनां कमाड उघाड्डां राखे छे. पछी बारे व्रत वर्णव्यां, तेमां त्रीजो बोल बारमा व्रतमां साधुने दान देवानो न्यारो कह्यो छे. जो दान देवामां पाप-कर्मादान जाणे तो दानदेवा सारु घरनां बारणां उघाड्डां केम राखे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "ए अज्नंगद्वार तो साधुने प्रवेश करवा सारु छे, केमके बंध बारणे साधु आवे नही ते माटे." तेनो उत्तर: हे देवानुप्रीय! साधुनुं दान तो आगल बारमा व्रतमां न्यारुं वर्णव्युं छे अने ए अनुकंपा अथवा उचित्त दान तो पांचमा गुणठाणानी श्रावकपणानी करणीमां वर्णव्युं छे. वली अम्मड श्रावकनो जीव दृढपइन्नापणुं पामसे, तेनां घर उववाइ सूत्रमां वखाण्यां. त्यां 'विछड्डिय ज्नत्तपाणा' ए गुण घरना आचारनो छे ते तो कह्यो; पण अज्नंगद्वार न

कह्यो एटले श्रावकपणु न्होतु त्यां सुधी तो श्रावे बारणे अने तोरण अटकाव नही, पण श्रावकपणु पाम्यो ते दीवसथी अनंगद्वार पण केके वलग्यो श्रावक जेन मार्ग पाम्या ते दिवसथी उदारपणु अधिक अधिक वर्ध्युं, अने द्रव्य अस्थिर जाण्युं तेथी अधिक अधिक दान देवा लाग्या वली तेरापथी कहेछे के, अनंगद्वार साधुने माटे राखे छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! साधुनुं दान तो आर्य-क्षेत्रमाज छे, कारण, के अनार्य-क्षेत्रमा साधु नथी तेथी त्या तेनुं दान पण नज होय हवे कोइ श्रावक अनार्य क्षेत्रमां रहेछे, तेने साधुने दान देवानो तो समय न आवे त्यारे श्रावकने अनंगद्वार केम निपजे ते कहो वली आर्य क्षेत्र मां कोइ गाम नगरमां साधुए चोमासु नथी कर्युं, अने बीजो कोइ साधु चोमासामां आवे नही हवे ते श्रावकने अनंगद्वार केम निपजे? वली उत्तम कुली श्रावकने घरे तो साधु वोहोरे छे, पण अधर्म कुलमा साधु वोहोरता नथी हवे अधर्मकुली श्रावकने अनंगद्वार केम निपजे?

तेवारे तेरापथी कहे छे के, एतो तुंगीयानगरीना उत्तम कुलना श्रावक छे तेने घेर साधु वोहोरे छे, ते माटे तेने अनंगद्वार कह्या छे तेनो उत्तर सुयगडांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधमा तथा उववाइजी सूत्रमां, गाम, नागर, पुर, पाटण, जावत् सोल ठेकाणाने विषे रहे एवा सर्व श्रावकनी गति जघन्य पहेला देवलोकनी अने उतकृष्टी बारमा देवलोकनी कही, अने तेमने आराधिक कह्या एवा गुणना धणी श्रावक होय तेनो तुंगियानगरीना श्रावकनी परे पहेलो बोल ऋद्धिनो छोडीने ज्ञान तथा जाणपणुं (सर्व श्रावकनु) वर्णव्युं, समकितनी गाढाइ वर्णवी, तथा पांचमा गुणठाणानी श्रावकपणानो प्रकार चितवी करणी 'उसियफलहा अवंगुयदुवारा' इत्यादि करणी वर्णवी वली श्रावकपणाना बार व्रत वर्णव्यां, त्यां बारमा व्रतमा साधुनुं दान वर्णव्यु तेमां सर्व श्रावकना अनंगद्वार कह्या हवे ए उंच नीच कुलमां जे श्रावक होय ते सर्वे आराधिक होय के नहिं अने ते देवतामां जाय के नही ते कहो

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, त्यां तो साधुने दान देवुं कह्युं छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! निषिथ, आचारांग, दसवैकालीक, आदि अनेक सूत्रमां ठामठाम साधुने तो बार कुल टालीने अनेरा नीच कुलनो आहारादिक वोहोरवो तथा ते नीच कुलमां प्रवेश करवो पण वर्ज्यो छे. तेम ए पण बतावो के, " उत्तम कुल जेमां साधुजी वोहोरे छे ते श्रावकने तो अभंगद्वार छे, अने अधर्म कुल जेमां साधुजी न वोहोरे ते श्रावकने अभंगद्वार नथी. " एवो पाठ कोइ सूत्रमां होय तो बतावो. अहीयां सुयगडांग तथा उववाइ सूत्रमां तो सर्व नाम मात्र श्रावकने अभंगद्वार कह्या छे; पण उत्तम कुल अथवा अधर्म कुल एके टाल्युं नथी; अने तिर्यंच-श्रावकने दानदेवानी योग्यताइ नथी तेथी तिर्यंच-श्रावकने अभंगद्वार उववाइ सूत्रमां कह्या नथी. ए न्याये अधर्म कुलमां साधुजी तो वोहोरे नही. तेथी अभंगद्वार अनुकंपा आणी मागता भीखारीने दान देवा सारु राख्युं छे एम स्पष्ट सिद्ध छे. डाह्या हो ते वीचारी जोजो. वली भगवती, सुयगडांग तथा उववाइ सूत्रमां अभंगद्वारनो टीका तथा टबार्थमां शुं कह्युं छे? ते वीचारी जोजो. वली तेरापंथी कहे छे के, " अभंगद्वार अने साधुनुं दान ए एकज छे. " तेनो उत्तर. अम्मडजीश्रावक साधुने तो दान आपे छे, पण तेने अभंगद्वारनो श्री उववाइ सूत्रमां नाकारो कह्यो छे. ते पाठः—

पभुणं भंते ! अम्मडे परिवायए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडिए भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइत्तए? णो इणठे समठे.गो०! अम्मडेणं परिवायगे समणोवासए अभिगय जीवाजीवे उवलधं पुणपावे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरंति नवरंग उसिय फलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तं तेउर परघर पवेसी एवं ण वुच्चइ. ॥

अर्थः—प० समर्थ छे भं० हे भगवान् ! अ० अम्मड प० परिव्राजक दे० हे पुज्य ! तमारी अं० समीपे मुं० मुंड भ० थवा ? आ० आ-

गारपणाथी अ० अणगारपणुं प० आदरवा ? उत्तर णो० नहिं इ० ए अर्थ समर्थ गो० हे गौतम ! अ० अम्मडपरिव्राजक स० श्रमणोपासके अ० जाण्या छे जी० जीव अजीवना भेद, उ० लाध्या छे पु० पुन्य पापना फल, जा० यावत् तुंगीयानगरीना श्रावकनी करणीवत् अ० पोतानी आत्माने भा० भावतोथको वि० विचरे छे, न० एटलु विशेष अं० धारने विषे भोगल नथी अ० घर नथी ते माटे उघाडा बार सदाय रहे अतिथी माटे चि० प्रतितकारी अंत पुर प० परघरने विषे अर्थ न पडे, अतिथी माटे ए० ए त्रण बोलनो श्रावकने प्रयोग पडे, पण अम्मडने प्रयोग न पडे माटे ए त्रण बोल नथी

भावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमा तो अम्मडश्रावकने जीव अजीवनो जाण कह्यो, पुन्य पापना फल ओलख्या लाध्यां कह्यां अने 'जाव विहरे' कह्यो ते जाव शब्दथी तुंगीयानगरीना श्रावकना गुण वर्णव्या तेम अम्मडश्रावकमा सर्व गुणनो पाठ कहेवो ते निर्ग्रंथसाधुने चौद प्रकारनुं दान देता विचरे छे त्या सुधी केहेवु, पण तुंगीयानगरी ना श्रावकोना घरनी रिद्धि, संपदा अने मातबरो वर्णवी ते एने नथी तेथी पेहेलो बोल रिद्धि संपदानो छोडीने 'अभिगय जीवाजीवे' (जाण्या छे जीवअजीवना भेद) ए पाठथी लइने सर्व तुंगीयानगरीना श्रावकना गुणनो आलावो वर्णव्यो तेम वर्णन केहेवु अम्मडश्रावकना चार बोलमा 'एटलु विशेष के, चोथा बोलमा पांचमा गुणठाणानी श्रावकपणाना उदार चित्तनी करणी वर्णवी, तेमां एक तो फटक रत्ननी पेरे हृदय निर्मल, अने दान देवा सारु अभंगद्वार, ए बोल न कह्या, अने एक प्रतितकार्या अंत पुरमा प्रवेश न करवो अतिथीपणा माटे, ए बे बोल वर्ज्या बाकी सर्व तुंगीयानगरीना श्रावकनी पेरे आलावो केहेवो हवे तमे कहो छो के, 'अभंगद्वार अने साधुनु दान ए एकज छे त्यारे अम्मडश्रावकने अभंगद्वार तो वर्ज्या छे, अने साधुने दान देता कह्या छे तेटला माटे साधुनुं दान अने मागता भीखारीनु दान जुदु छे ए अभंगद्वार'तो भीखुकना दान माटेज

छे, अने माहापुरुष पधारे तो मोक्षनो हेतु पण थाय. ए सर्व श्रावकोने अभंगद्वार कह्या छे, अने तेउ अनुकंपा-दान मागता भीखारीने देता दीसे छे. पछी फल तो पेला श्रावकने जेवां लाग्यां तेवां हालना श्रावकने पण लागशे. ज्ञानी वदे ते सत्य. वली दानने निषेधे तेने प्रश्नव्याकरणना बीजा आश्रवद्वारमां जुठाबोला तथा त्रीजा आश्रवद्वारमां चोर कह्याछे.ते पाठः—

पघायए हेउ वित्ति छेइंकरेह मादेह किंचिदाणं सुठुहणा॥

अर्थः—प० हणवा हे० निमित्ते वि० व्रत्ति छे० छेद करे, के फलाणाने एक पण ग्रास (कोलीउ) मा० म देशो. किं० कोइने किंचित मात्र दान न देशो. एवां परपीडाकारी वचन बोले तथा वली सावध वचन बोलवानो सु० प्राणातिपात करो, इत्यादिक वचन कहे.

भावार्थः—हवे जुउ! आ पाठमां एम कह्युं के, व्रत्तिनो (आजीवीकानो) छेद करे तथा फलाणाने एक पण ग्रास मत द्यो एम कहे, अथवा कोइने किंचित् मात्र दान देशो नाहिं, एवां वचन कहे तेने जुठाबोला तथा चोर कह्या. ए जुउ! जो दान देवामां पाप होय तो वर्जवावालाने भगवंत जुठा-बोला तथा चोर केम कहे? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली त्रीजा आश्रवद्वारमां एम कह्युं छे के, दान दीधाथी गुण थाय. ते गुणनो नाश करे तो चोरी लागे. हवे जो दान दीधामां पाप होय तो दानना गुणनो नाश करे. तेने चोर केम कह्या? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली कोइपण सूत्रमां अनुकंपा आणीने दुर्बलने मरता देखी दान आपे तेने पाप कह्युं होय तो पाठ बतावो. तमे एटला सूत्रना पाठ उथापीने खोटा अर्थ करी कुयुक्ति मेलवीने अनुकंपादान केम उठावो छो.

वली तेरापंथी श्रावकोने पण दान दीधामां पाप परुपे छे. एम कहे छे के, श्रावकने मुलायजे नोंतरीने जमाडे ते तो संसारनो व्यवहार छे, तेने दान न कहीये. तेमां कदापी पाप कहे ते तो जाण्युं, पण कोइ श्रावक सामायक तथा व्याख्याननी अंतराय पाडी रसोइ करतो होय, तेने कोइ पुन्यवंत श्रावक रसोइनो आरंभ टलावीने, सीधी रसोइ तथा सु-

स्त्री प्रमुखनी सहाय वइ सामायक करावे तथा व्याख्यान सजलावे तेमां पण पाप कहे छे एमज कोइने तपस्या करवाना भाव होय ने धारणा (अंतरवारणुं) पारणानी जोगवाइ न होय, तेने सिधी रसोइ वइ तपस्या करावे तेमा पण पाप कहे छे तेमज सामायक पोसाने वास्ते जग्या, कपडा, नवकारवाली, पुजणी अने मुहपत्ति आपे तेमा पण पाप कहेछे पण भगवते चतुर्विध सघने शाता दीधामां तथा हित वान्छयामां मोटो पुन्यरुप लाभ कह्यो छे तेनी शाख सूत्र भगवती शतक त्रीजे उद्देशे पहेले, सनत्कुमार इन्द्रने अधिकारे ते पाठ —

अत्थिणं भंते! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवरायाणं विवादा समुप्पज्जइ ? हंता अत्थि सेकहं मिदाणि पकरेइ ? गो०! ताहे चेवणं सक्कोसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमार देविंद देवराय मणसिकरेइ तएणंसे सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्किसाणेहिं देविंदेहिं देवराइहिं मणसी कएसमाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराइणं अतिय पाउब्भवइ जसे वदई तस्स आणा उववाय वयणा निद्देसे चिठइ ✻सणंकुमारेणं भंते! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए, अभवसिद्धिए, सम्मदिठीए मिच्छादिठीए परितससारिए अणतससारिए सुलभबोहिए दुलभबोहिए आराहिए विराहिए चरिमे अचरिमे ? गो०! सणंकुमारेण देविंदेदेवराया भवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए एव सम्मदिठी परितससारी सुलभबोहिए आराहिए चरिमे पसत्थ नेयव्व सेकेणठेणं गो०! सणंकुमारे देविंदे देवराया बहुणं समणाणं बहुणं समणीणं बहुणं सावयाणं बहुणं

✻"सण कुमारेण भंते" थी "नो अचरीमे" सुधीनो अर्थ जुओ पाने ५६ मे.

सावियाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए अणुकंपिए निस्सेयस्सिए हियसुह निस्सेसकामए सेतेणठेणं गो० ! सणंकुमारे देविंदे जवसिद्धिए जाव नो अचरिमे.❋ सणंकुमारस्सणं जंते ! देविंदस्स देवरणो केवइय कालं ठिइ पं० गो०! सत्तसागरोवमाणि ठिइ पं० सेणं जंते ! ताउ देवलोगाउ आउरकएणं जाव कहं उववज्जिहि? गो० महाविदेहे वासे सिज्जिहिइ जाव अंतं करेहिइ सेवं जंते २ त्ति.

अर्थः—अ० ठे जं० हे जगवान ! ते० ते स० शक्र अने इशान दे० देवेंद्र दे० देवराजाने मांहोमांहि वि० विवाद स० उपजे ? संवाद करे ? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा गौतम अ० ठे. से० ते केम? इ० विवाद अवसरे विवाद करे तो कोण मटाडे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! ता० तेमज चे० निश्चे स० शक्र अने इशान बन्ने दे० देवेंद्र देवराजा स० सनतकुमार दे० देवेंद्र देवराजा (त्रीजा देवलोकना इंद्र) प्रत्ये म० मनमां धारे के, सनत्कुमार आवे तो विवाद मटे इत्यर्थ. त० तेवारे से० ते स० सनत्कुमार देवेंद्र देवराजा ते० ते स० शक्र अने इशान बंने ए म० मनमां धार्या थका खि० उतावला स० शक्र अने इशान इंद्रनी अं० समिपे पा० प्रगट थाय. जं० जे सनत्कुमार व० कहे (वचन निदेश कहे) त० ते आ० आज्ञा उ० उत्पात व० वचन नि० निर्देशे चि० रहे. एटले ते शक्र अने इशान-इंद्रने जेवी आज्ञा आपे तेवी प्रमाण करे. स० सनत्कुमार जं० हे जगवान ! दे० देवेंद्र देवराजानी के० केटला का० कालनी ठि० स्थिति पं० कही ? गो० हे गौतम ! स० सात सागरोपमनी ठि० स्थिति पं० कही. से० ते सनत्कुमार जं० हे जगवान ! ता० ते दे० देवलोकथी आ० आउखुं पुरुं करीने जा० जावत् क० क्यां उ० उपजशे ? इति प्रश्न. गो० हे गौतम ! मा० माहाविदेह वा० क्षेत्रने विषे सि० सीजशे, बुजशे, मुकाशे परिनिव्रत थशे जा० जावत् अं० सर्व दुःखनो अंत करीने मोक्ष जाशे. से० तहत् जं० हे जगवंत ! पूर्वे कह्युं ते प्रमाणवे,

भावार्थ—हवे जुओ ! आ पाठमा एम कह्यु के, ज्यारे, पहेला अने बीजा देवलोकना इन्द्रने युद्ध थाय, त्यारे त्रीजा देवलोकनो सनत्कुमार नामे इन्द्र आवीने बन्ने इन्द्रने कहे "म करो एवु काम" एम कहे, तेवारे बन्ने इन्द्र तेनु वचन प्रमाण करे अने तेनी आज्ञा प्रमाणे रहे वली गौतमे पुछ्यु के, त्रीजा देवलोकनो इन्द्र भवी छे? इत्यादिक चार प्रश्न पुछ्या तेवारे भगवते कह्यु के, ए भवी छे, समद्रष्टि छे, परित संसारी छे, सुलभ बोधी छे, आराधिक छे अने चरमशरिरी छे ए छ बोल भगवते भला कह्या तेवारे गौतमे पुछ्यु के, त्रीजा देवलोकना इंद्र सनत्कुमारनां वचन शक्रेंद्र तथा इशानेंद्र बेउ प्रमाण करे अने वली ते भव्य यावत् चरमशरिरी छे, एवु पुन्य तेने शाथी बधाणु के तेने एवी पदवी मली तेवारे भगवते कह्युं के, सनत्कुमार इंद्र, साध साधवी, श्रावक श्रावीका ए चतुर्विध संघना हितनो वछणहार छे १, सुखनो वछक छे २, दु:खमाण एटले क्षुधा, तृषा, उपसर्गादिक दु:खथकी रालणहार छे ३, अने ते संघने दु:खी देखी अनुकंपा दयानो करणहार छे ४ ए चार प्रकारे मोक्षनो वछणहार छे एणे चतुर्विध संघनु हित तथा सुख वान्छ्यु, दु:खनु निवारण वान्छ्यु अने अनुकंपा करी तेथी पुन्य बधायुं तेथी बन्ने इन्द्र तेना वचन प्रमाण करे छे, अने छ बोल भला कह्या ए जुओ ! श्री वीतरागदेवे तो श्रावकने सुखशाता दीधाना फल भला कह्यां छे तमे पाप कया न्याये कहोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, ए पुछासो इन्द्रना भवनी छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! इन्द्रना भवनीज पुछा छे, तोपण अहीं तो गौतमे पुछ्यु छे के, हे भगवत ! एवां पुन्य बधाया अने छ बोल भला कह्या ते कइ करणीना प्रयोगथी ए अर्थ कहो ? ते उपरथी भगवते कह्यु के, चार संघनु हित सुख वान्छ्यु तेथी पुन्य बधाया त्यारे मनुष्य श्रावक चार संघनु हित सुख वान्छशे, दु:ख निवर्तावशे अने चतुर्विध संघनी अनुकंपा करशे तेने भला फल केम नही लागशे ? ते विचारो.

वळी तेरापंथी, श्रावकना खावा पीवा, कपडां अने घरेणां, सर्वने अव्रतमां गणे छे अने कहे छे के, पोते सेवे तो पाप, बीजा पासे सेवरावे तो पाप, अने सेवताने जलुं जाणे तेमां पण पाप. एम कहे छे. ते उपर मतना लीधे सूत्रनां जुठां नाम लइने खोटी जोडो करी छे. ते ढाळः—

श्रावकनो खाणो पीणो ने गेहणो, अव्रत मांही घाल्योरे;
सुयगडांग ने उववाइ सूत्रमां, पाठ उघाडो चाल्योरे.
चतुर विचार करीने देखो ॥ १ ॥

ए जुठ ! श्रावकना खावा पीवा अने घरेणांने सुयगडांग तथा उववाइ सूत्रनां जुठां नाम लइ अव्रतमां कहे छे तेना उत्तरनी ढाळः—

खाणो पीणो गेहणो ने कपडो, ए तो पुद्गल होइरे;
व्रत ने अव्रत परणामारी, बहु सूत्र ल्यो जोइरे;
चतुर विचार करीने देखो ॥ १ ॥

खान पान ने गेहणो कपडो पुद्गल, एही अव्रत थायोरे;
तो भरत मरुदेवी आभरण पहेर्यां, केवल ज्ञान केम पायोरे.
चतुर विचार करीने देखो ॥ २ ॥

हवे जुओ ! खान पान घरेणुं ने कपडुं, ए तो अठ-फरशी रुपी पुद्गल छे, अने व्रत अव्रतने तो तेरापंथीना बनावेला तेर द्वारमां पण अरुपी कह्युं छे. तेमज सूत्रमां पण ठामठाम जीवनी आशा तृष्ना अने अत्यागभावना प्रणामने अव्रत कह्युं छे. छतां तेरापंथी अन्न-वस्त्रादिक रुपी पुद्गलने अव्रतमां बतावे छे. माटे तेमने पुछवुं के, हे देवानुप्रीय ! "मारुदेवीमाता हाथीना होद्दा उपर घरेणां कपडां पेहेरीने बेठां, तेमने केवलज्ञान उपन्युं सूत्र ठाणायांगमां कह्युं छे; अने भरतमाहाराजने पण घरेणां कपडां पहेर्यां केवलज्ञान उपन्युं छे अने ते पछी घरेणां कपडां उतार्यां एम सूत्र जंबुद्धिपपन्नत्तीमां कह्युं छे. ए घरेणां कपडां पहेर्यां थकांने अव्रतमां केवलज्ञान केम उपन्युं ?" तेवारे तेरापंथी कहेछे के " घरेणां कपडां तो रुपी पुद्गल छे. ए तो अव्रत नथी, पण तेना उपर ममतभाव

प्रवर्ते तेने अव्रत कहीये ते ममता मटी गइ तेथी केवलज्ञान उपन्युं" त्यारे हे देवानुप्रीय! श्रावकना खावा पीवा घरेणा ने कपडाने अव्रतमां घाल्या छे, एवो जुठो जोगो तमे मतने खीधे केम करो छो? वली श्रावकना खावा पीवा घरेणा कपडा अने जग्याने अव्रत कहे छे, अने सुयगडांग तथा उववाइ सूत्रना जुठां नाम ले छे तेज उववाइ सूत्रनो पाठः—

सेजेइमे गामागर णगर जाव सण्णिवेसेसु मणूया जवति त० अप्पारज्ञा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया धम्मिठा धम्मक्खाइय धम्मपञ्जोइ धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेण चेव वितिकप्पेमाणा सूसीला सुवया सुपम्यिाणदा साहु एगच्चाओ पाणाइवायाओ पम्विरया जावजीवाए एगच्चाओ अपम्विरया एवं जाव परिग्गहाओ पम्विरया एगच्चाओ अपम्विरया. एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोज्ञाओ पेजाओ दोसाओ कलहाओ अज्ञक्खाणाओ पेसुणाओ परपरिवायाओ अरति रतिओ मायामोसाओ मिच्छा दंसणसल्लाओ पम्विरिया जावजीवाए एगच्चाओ अपडिविरिया एगच्चाओ आरंज्ञ समारंज्ञाओ पम्विरिया जावजीवाए एगच्चाओ आरंज्ञ समारंज्ञाओ अपम्विरिया एगच्चाओ करण करावणाओ पम्विरिया जावजीवाए एगच्चाओ अपम्विरिया एगच्चाओ पयणपयावणाओ पम्विरिया जावजीवाए एगच्चाउ पयणपयावणाओ अपम्विरिए एगच्चाउ कूट्टण पीट्टण तज्जण तालण वहवध परिकिलेसाउ पम्विरिया जावजीवाए एगच्चाउ अपम्विरिया एगच्चाउ एहाणु मद्दण वणग विलेवण सद्द फरस रस रुव गंध मल्ला.

लंकाराउ पमिविरिया जावजीवाए. एगच्चाउं अपमिविरिया. जेयावणे तहप्पगाराउ सावज्ज जोगाउ वहियाकम्मंता परिपाण परितावण कराकज्जंति ततोवि एगच्चाउं परिविरिया जावजीवाए. एगच्चाउं अपमिविरिया तंजहा सेजहा णामए समणो वासगा जवंति ॥

अर्थः—से० ते जे ए गा० गाम, आगर ण० नगर जा० जावत् स० सनिवेसने विषे म० मनुष्य-श्रावक स्त्री पुरुषादिक ज० होय तं० ते कहेछेः-अ० थोमा आरंजी अ० थोमा परिग्रहवंत ध० धर्मी छे धम्मा० धर्मने केमे चाले धम्मि० धर्म वाहालो छे जेने धम्म० शुद्ध धर्मना परुपक धम्मप० धर्मने विषे वारंवार नजर राखे धम्मस० धर्मने रंगे रंगाणा छे तथा लज्जावंत, धर्मने कोइ उलंघी दइ शके नाहिं धम्मे० धर्मने विषे हर्ष सहित आचार छे जेनो ध०धर्मेंकरी चे० निश्चे वि० वृत्ति आजीवीका क० करताथका प्रवर्ते सु० जलो आचार छे जेनो सु० जला व्रत छे जेनां सु० अत्यंत जलु आनंद सहीत चित्त छे जेनुं सा० धर्म पदे साधु ए० बे जातीना प्राणीमांथी पा० त्रसजीवने हणवाथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी. ए० एक स्थावरनी हिंसाथी अ० निवर्त्या नथी. ए० एम जा० जावत् प० मोटा जुठ, अदत्तादान, परदारा अने परिग्रहथी प० निवर्त्या छे. ए० अकेक नाना जुठ, चोरी, कुशील, अने परीग्रहथी अ० निवर्त्या नथी. ए० अकेक अनंतानुबंधिआदिक मोटा को० क्रोधथी मा० मान मा० माया लो० लोज पे० राग दो० द्वेष क० क्लेश अने अ० आल देवाथी पे० मोटी चामीथी प० पारका अवर्णवादथी अ० अरति रतिथी मा० माया सहित मृषाथी मि० मिथ्यात्व दर्शन शल्यथी कूप्रावचनिक वा लोकोत्तर, ए मिथ्यात् मूलथकी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी. ए० एकेक थोमा नाना क्रोधादिक तथा लोकीक मिथ्यात्वथी (संसारना आरण कारणादिकथी) अ० नथी निवर्त्या. ए० एकेक मोटा आ० आरंज स० समारंजथी, पंदर क-

मोदानादिकथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीवसुधी ए० एकेक नाना आ० आरम्भ स०समारम्भथी अ० नथी निवर्त्या ए० एकेक क०करवुं क० अनेरा पासे करावबु, तेथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी ए० एकेक करवा करावबाथी अ० नथी निवर्त्या ए० एकेक प० पचवबा पचवाव वाथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी ए० एकेक प० पचवबा प० पचवाववाथी अ० नथी निवर्त्या ए० एकेक कु० कुटवाथी पी० पीट वाथी त० तर्जवाथी ता० ताडवाथी व० मारवाथी ब० बाधवाथी प० क्लेश करवाथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी ए० ए पूर्वोक्त ए केकथी अ० नथी निवर्त्या ए० एकेक मोटका नदि प्रमुखना एहां० स्नान करवाथी म० मर्दन चगटणाथी व० वरण अबीरादिक सुगंधीथी वि० विलेपन करवाथी स० शब्दथी फ० फर्शथी र० रसथी रु० रुपथी ग० गंधथी म० पुष्पनी माळाथी अ० आभुषणथी, आभरणथी प० नि वर्त्या छे जा० जावजीव सुधी नाना अघुलादिकथी ए० एकेक मोटा अघुलादिकथी अ० नथी निवर्त्या जे० जे कोइ वळी त० तथा प्रका रना सा० पापना (मन वचन कायाना मांठा) जोगनु प्रवर्तन व० मोटा कपटना क० कर्मना व्यापार प० अनेरा प्राणीने प० परितापना क० करे छे त० ते एकेकथी पण प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी ए० केटे लाएक सावद्य कर्तव्यथी अ० नथी निवर्त्या त० ते कहे छे से० ते यथानाम उदाते स० साधुना उ० (उपासक) शेवक श्रावक भ० छे

भावार्थ —हे देवानुप्रीय! आ पाठमा तो एम कह्यु छे के, प्राणा तिपातादिक अकेका पापथी श्रावकजी निवर्त्या छे अने अकेका पापथी नथी निवर्त्या, एम सर्व बोलमा कह्यु छे, पण श्रावकना खान, पान, धरेणां अने कपडाने अव्रतमा कया कह्यां छे? कह्यां होय तो बतावो

तेवारे तेरापथी कहेछे के "शब्द,रुप,रस, गध अने स्पर्श, ए अकेकाथी निवर्त्या कह्या अने अकेकाथी नथी निवर्त्या कह्या ते कानमां शब्द, सारा सुरा, राग रग, गीत गान सांभळवाथी निवर्त्या तेने तो व्रत कहीए अने नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए १ एम आंखोथी बाग, बगीचा,

कुवा, वावरी, तलाव, गढ अने कोठादिक सर्व रुप देखवाना त्याग कर्या तेने तो व्रत कहीये अने सर्व वस्तु देखवाथी नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. २ तेमज नाकनी वासनाथी निवर्त्या तेने तो व्रत कहीए, अने नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. ३ एम रसेंद्रिना विषयथी निवर्त्या तेने व्रत कहीये, अने नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. ४ एम स्पर्श इन्द्रिना आठ फरसथी घरेणां कपरां पहेरवाथी निवर्त्या तेने व्रत कहीए अने स्पर्श इन्द्रिना विषयथी नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. ५ एज रीते शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्शना श्रावक त्याग करे ते तो व्रत, बाकी सर्व अव्रत जाणवुं. ए न्याये श्रावकना खान, पान, घरेणां अने कपरांने अव्रत कहीये छीए." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! तमारे लेखे तो कानेकरी श्रीवीतरागदेवनी वाणी, स्तवन, सझाय तथा धर्म उपदेश सांभले ते पण पुद्गल छे, तेथी निवर्त्या नथी वास्ते ए पण अव्रत पाप हशे. तेमज आंखोथी देवगुरुनां दर्शन करे, श्रीवीतरागदेवनी वाणी, सझाय, स्तवन प्रमुख धर्मना अक्षर वांचे. ए रुप देखवाथी निवर्त्या नथी तेथी ए पण अव्रत पाप हशे. तेमज नाकथी जीवादिक उपज्या जाणवाने तथा वस्तुनो रस चल्यो जाणवाने जीवनी जतना करवा माटे अथवा साधुजीने वोहोरावंवा माटे हरेक पुद्गल सुंघवाथी निवर्त्या नथी, ए पण अव्रत पाप हशे. तेमज रसेंद्रिथी देवगुरु धर्मना गुणग्राम करे तथा बोलचाल; सामायक, पडिक्कमणुं, स्तवन, सझाय प्रमुख शीखे, संभलावे तथा श्री वीतरागदेवनी वाणीनो (धर्मनो) उपदेश करे, ए पण भाषाना पुद्गल छे. तेथी निवर्त्या नथी ए पण अव्रत पाप हशे. तेमज सरस आहार त्यागीने निवी, आयंबिलादिक माटे नरस आहार करे. ए नरस आहारथी निवर्त्या नथी ते पण तमारे लेखे तो अव्रत पाप हशे. वली स्पर्शेंद्रिथी (कायाथी) शीत ताप सहे, विनय वैयावच्च करे, सामायक पोषानां उपगर्ण, बिछावनुं, मुहपत्ति, नवकारवाली अने पुंजणी प्रमुख राखे तथा धर्म-शास्त्रनी पोथीपाना वांचवा वास्ते राखे. ए थकी पण निवर्त्या नथी. ए पण तमारे

लेखे तो अव्रत पाप हशे ए जला काम पांच इन्द्रिए करी शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्शनां श्रावक करे, करावे अने करताने जलुं जाणे ए सर्व तमारे लेखे तो अव्रत पाप हशे वली ए पूर्वोक्त कामथी साधु पण निसर्या नथी तमारे लेखे तो साधुने पण पाप केहेवु पडशे

तेवारे तेरापंथी पण कहे छे के "मोहकर्मने उदये जला शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्श उपर राग अने माठा उपर द्वेष प्रवर्ते तथा अत्याग-जावथी (आशा, वंछा, जीवना प्रणामथी) निवर्त्या नथी तेने अव्रत कहीए, अने ए जला काम पांच इंद्रिए करीने करे ते तो शुन्न योग निर्जरानी करणी छे तेथी कर्म तुटे अने पुन्य बंधाय " त्यारे तेमने कहेवु के हे देवानुप्रीय ! तमे रागद्वेषने, अत्याग जावने (जीवना अरुपी परणामने) अव्रत सरधीने अणसमजु लोकोने जरमावथाने श्रावकना खान, पान, घरेणां अने कपडांने अव्रत कहीने अनंत संसार केम वधारोछो ? अव्रत तो रागद्वेषे करी पुद्गल उपर ममत (अत्यागजाव) राखे तेने कहीए, अने ते अत्याग जावने (जीवना प्रणामने) तो अरुपी कहोछो, ते तो पोतपोतानी पासे छे बीजाने आप्यां आपी शकाय नही, अने अन्न, वस्त्र, जग्या प्रमुखतो रुपी पुद्गल छे, ते सामायक, पोसा, अने तपश्या करावावानी साह्याजे आपे, ते शुन्नयोग निर्जरानी करणी छे तेने अव्रत केम कहोछो ? एज अन्न, वस्त्र, जग्या प्रमुख उपर रागद्वेष अत्याग जाव (जीवना प्रणाम) तेनी ममता त्यागे तेने जोगना पापथी अने अव्रतथी निवर्त्या कहीए, अने तेनी ममता राखे अने रागद्वेषथी जोवे तेने जोगना अव्रत पापथी निवर्त्या न कहीये, अने एज अन्न, वस्त्र, जग्या प्रमुखनी साह्याजथी तपश्या, सामायक, पोसा, प्रमुख ध्यान करे तथा अनेरा श्रावकने तपश्या, सामायक, पोसा, प्रमुख धर्मध्यान करावानी साह्याजे जग्या, उपगर्ण आपे से पण शुन्नयोग निर्जरानी करणी छे एम जाणवु हवे श्रावकना खान, पान, घरेणां अने कपडांने (रुपी अठ फरसी पुद्गलने) अव्रत-कया सूत्रमा कह्यु छे ते पाठ बतावो ए सूयगडांग अने उववाइ सूत्रनां जुठां नाम केम ल्योछो ?

वली तेरापंथी, श्रावकने सामायक पोसानां उपगर्ण, वस्त्र, जग्य तथा सामायक पडिक्कमणुं, बोल चाल, स्तवन अने सझाय प्रमुख ज्ञाननी पोथी इत्यादिक सर्वने अव्रतमां बतावे छे, अने बीजा श्रावकने सामायक पोसानां उपगर्ण आपे तथा वांचवाने पोथी आपे तेने अव्रत दीधुं कहे छे. तेने पुछीए के, साधुजी श्रावकने वांचवाने पोतानुं पानुं आपे तेमां साधुजीने शुं थाय अने वांचवावाला श्रावकने शुं थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, साधुजीने पण धर्म छे अने वांचवावालाने पण शुभ जोग निर्जरारुप धर्म छे. तेवारे तेने कहेवुं के, साधुजी श्रावकने वांचवा पानुं आपे तेमां धर्म छे, त्यारे श्रावक श्रावकने वांचवाने पानुं पोथी आपे तेमां धर्म केम नही थाय? अने पोथी वांचवा आप्याथी धर्म थशे तो सामायक पोसा वास्ते उपगर्ण, नवकारवाली, पुंजणी, मुहपत्ति तथा जग्यानी सहाज देवावालाने शुभ योग निर्जरारुप धर्म केम नही थाय? माहा हो ते विचारी जोजो. वली तेरापंथी श्रावकना खावा, पीवा, कपडां, घरेणां अने जग्या प्रमुख सर्वने अव्रतमां बतावे छे, अने बीजाने आपे तेमां अव्रत सेवराव्युं कहे छे, तेने पुछवुं के, "तमे अव्रत केने कहो छो अने व्रत केने कहो छो ते बतावो."

तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अढारे पापना, खावा पीवाना अने कपडां घरेणां पहेरवा तथा राखवाना त्याग करे तेने तो व्रत कहीए; अने सेववानो आगार राखे तेने अव्रत कहीए. अढारे पापना त्रिविधे त्रिविधे जावजीव सुधी सर्वथा प्रकारे त्याग करे तेनेतो सर्वव्रति साधु कहीए; कारण के तेने लगारमात्र पापनो आगार नथी. तेनुं खावुं पीवुं सर्व काम धर्ममां छे, अने तेने आहारादिक आपे, वंदणा करे तेने पण धर्म छे; अने अढार पापमांथी कांइक त्याग करे अने कांइक आगार राखे तेने देसव्रति श्रावक कहीए. ते त्याग व्रततो धर्म छे अने पापनो आगार ते अव्रत छे. ते श्रावकनुं खावुं पीवुं अने पहेरवुं ते सर्व अव्रतमां छे. तेमज तेनुं शरीर पण अव्रतमां छे. तेथी आरादिक आपे, वंदणा नमस्कार करे तेने पाप लागे एम कहीये छीए." त्यारे तेमने पु-

वळी के, कोइ श्रावके सर्वथा प्रकारे अढार पापना जावजीव सुधी त्रिविधे त्रिविधे त्याग करी दीक्षा होय तेने चार अहार, वस्त्र पात्र तथा आशा आपे अने सवाणा नमस्कार करे तेने शुं थाय ते कहो

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "श्रावकने अढार पापना त्याग सर्वथा प्रकारे जावजीव सुधी थायज नहीं कांइक पण पापनो आगार रहेज, तेथी तेने देशव्रति श्रावक कहीये छीए, अने जेने आगार न होय तेने तो सर्वव्रतिज कहीए ते श्रावक न कहेवाय" एम कहेछे, पण सूत्रमांतो श्रावकने सर्वथा प्रकारे पापना त्याग कह्या छे श्री जगवतीजी सूत्रना सातमा शतकना नवमा उद्देशामा वर्णनागनतुवे सर्वथा प्रकारे अढारे पापना त्याग जावजीव सुधी कर्या कह्यु छे वळी अम्मडजी संन्यासी (श्रावक) ना सातसें चेला श्रमणोपासके पण सर्वथा प्रकारे अढार पापना त्याग त्रिविधे त्रिविधे जावजीव सुधी कर्या, अने तेमने श्री वीतरागदेवे अंत समय सुधी देसव्रति श्रावक कह्या छे, ते सूत्र उववाइजीनो पाठ —

पुर्विपिणं अम्हेहिं अमडस्सपरिवायगस्स अंतिए थुलग पाणाइवाए पच्चरकाए जावज्जीवाए, थुलए मुसावायाए पच्चरकाए जावजीवाए, थुलए अदिन्नादाणे पच्चरकाए जावज्जीवाए, सबे मेहुणे पच्चरकाए जावजीवाए, थुलए परिग्गहे पच्चरकाए जावजीवाए, इदाणिं-पिणं अम्हे समणस्स-जगवंत-महावीरस्स अंतिए सबं पाणाइवाय पच्चस्कामो जावज्जीवाए एव जाव सबं परिग्गहं पच्चस्कामो जावज्जीवाए५ सबंकोहं६ माणं७ मायं८ लोभंए रागं१० दोसं११ कलहं१२ अप्नस्काणं१३ पेसुणं१४ परपरिवायं१५ अरतिरति१६ मायामोसं१७ मिछादसणसल्लं१८ अकरणिज्जं-जोगं पच्चस्कामो जावजीवाए सबं असणं पाणं खाइमं

साइमं चउविहंपि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए जंपियं इमं सरिरं इठं कंतं पियं माणूणं मणामं धिज्जं विसासियं समयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंमगसमाणं माणंसियं माणंउन्हा माणंखूहा माणंपिवासा माणंवाला माणंचोरा माणंदंसमसा माणं वाइयं पित्तीयं संभियं सन्निवायं विवीहा रोगा तंका परिसहोवसग्गा फासा फुसंति तिकट्टु एयंपियणं चरिमेहिं उस्सास निस्सासेहिं वोसिरामि तिकट्टु संलेहणा झुषणा झुसिया भत्तपाण पभ्यिा इक्यिा पाउवगया कालं अणवकंक्खमाणा विहरंति. ततेणं से परिवायगा बहुइं भत्ताइं अणसणाइं छेदंति छेदित्ता आलोइय पभ्कित्ता समाहिपत्ता कालमासे कालंकिच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ना तेहिं तेसिं गइ तहिं तेसिं ठित्ती दससागरोवमाइं ठित्ती पणंत्ता. परलोगस्स आराहणा सेसं तंचेव.॥

अर्थ—पु० पहेलां पण अ० अमे अ० अम्मड परिव्राजकनी अं० समिपे थु० मोटा पा० प्राणीनी हिंसानुं प० पचखाण कर्युं छे जा० जावजीव सुधी. थु० मोटा मु० मृषावादनुं प० पचखाण जा० जावजीव सुधी. थु० मोटा अ० अणदिधुं लेवाना प० पचखाण जा० जावजीव सुधी. स० सर्व मे० मैथुननुं प० पचखाण कर्युं छे जा० जावजीव सुधी. थु० मोटा प० परिग्रहना प० पचखाण कर्या छे जा० जावजीव सुधी. इ० हमणां पण अ० अमे स० श्रमण भगवंत श्री माहावीर देवनी अं० समिपे स० सर्व पा० प्राणीनी हिंसानुं प० पचखीए छीए जा० जावजीव सुधी. ए० एम जा० जावत् स० सर्व प० परिग्रहनुं प० पचखाण करीए छीए जा० जावजीव सुधी. स० को० सर्व क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ रा० राग दो० द्वेष क० क्लेश अ० आल पे० चाडी प० निंदा अ० खुशी नाखुशी मा० (माया) कपट सहित जुठ मि० खोटा

देव, गुरु, धर्मनु सर्दहवु ते अ० करवा योग्य नही एवा जो० मन आ विना व्यापारनु प० पच्चखाण जा० जावजीव सुधी कर्युं छे स० सर्व अ० असन पा० पाणी खा० खादिम सा० साविम मुखवास च० चार प्रकारना आ० आहारना प० पच्चखाण जा० जावजीव सुधी करीए छीए ज० जे वली इ० ए स० शरीर इ० वाहालु छे क० कान्तीकारी पि० प्रीयकारी म० मनने गमतु म० विशेष मनने गमतु धि० धीर्यकारी वि० विश्वासनो हेतु स० रुडु करी मानवा योग्य ब० घणु मानवा योग्य अ० अवगुण करे तोपण बहुज्ञ मानवा योग्य भ० रत्नना करंडीया समान मा० रखे सि० ताढ लागे मा० उ० रखे ताप लागे मा० खु० रखे भुख लागे मा० पी० रखे तृषा लागे मा० मा० रखे सर्पादिक करडे मा० चो० रखे चोर पराभव करे मा० द० रखे दस मसक करडे मा० वा० रखे वायु प्रजावे पि० पितना प्रभावे स० सलेखम स० सन्निपात दोष प्रजावे वि० वि विध प्रकारना रो० रोग (थोडा कालनो) अ० मर्यान्तक रोग प० परिसह उ० उपसर्ग फा० एटला बोल रखे फरसे ति० एवो वाहालो करीने ए० एवा शरीरने पण च० छेल्ला उ० उचो स्वास लइए ते णी० नीचो स्वास मुकीए ते वो० वोसरावु छु ति० एम कहीने स० संलेखणा तपे करीने झु० सेववे करी झु० सेवीने भ० भात पाणी प० पचखीने पा० पादोप- गमन (वृक्षनी डालनी परे) अणसण करीने का० मरणने अ० अणवांछ ता थका वि० विचरे छे त० तेवार पछी से० ते प० सातसो सन्यासी ब० घणा भ० भक्तनु अ० अणसण छे० छेदे, छेदीने आ० आलोवी प० पडि- कमी स० समाधि प० पामीने का० कालने अवसरे का० काल करीने बं० ब्रह्मलोक क० देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपन्या त० त्यां ते० तेनी ग० गती त० त्यां ते० तेनी ठि० स्थिति द० दस सागरोपमनी प० कही प० परलोकना आ० आराधिक (समकित सहित करणीना कर णहारा ते माटे) से० शेष बाकी (मोटा कुलमां उपजसे संजम लइ मोक्ष पामशे) त० तेमज जाणवुं ॥१३॥

भावार्थः—हवे जुओ । आ पाठमां अमडजीना शिष्योए सर्वथा

प्रकारे अढार पापना तेमज सर्व अकरवा जोग कामो करवाना त्रिविधे त्रिविधे त्याग जावजीव सुधी कर्या छे छतां तेमने देशव्रति श्रावक कह्या छे; अने तमे तो आगारने अव्रत कहो छो. हवे एमने कया पापनो आगार रह्यो ते बतावो. कदाचित खावा पीवाना आगारने अव्रत कहेता हो तो एमणे तो चार आहारना पण सर्वथा प्रकारे त्रिविधे त्रिविधे जावजीव सुधी त्याग कर्या छे. हवे शो आगार रह्यो ते बतावो. वली कदाचीत शरीर उपर ममता होय तेने अव्रत कहेता हो तो, एमणे तो शरीरनी ममता पण सर्वथा प्रकारे त्रण करण त्रण जोगे करीने वोसरावी छे. हवे शो आगार रह्यो ते बतावो. वली तमे कहोछो के, जे सर्वथा पापना त्याग जावजीव सुधी करे तेने आहारादिक आप्यामां तथा वंदणा नमस्कार कर्यामां धर्म छे. त्यारे पूर्वोक्त श्रावकोए सर्वथा पापना त्याग कर्या छे तेमने वंदणा नमस्कार कर्यामां पाप केम थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " तेमनामां कांइक अव्रत रह्युं हशे, मांटे जगवंते तेमने देशव्रति कह्या छे, ते माटे तेउ वंदणा नमस्कार करवा योग्य नथी. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जगवंते तेमने देशव्रति कह्या एमतो सूत्रमां छेज; पण तमे आगारमां अव्रत कहोछो ते आगार बतावो. तमे व्रत अव्रतमां समजता देखाता नथी, तेथी एम कहोछो के आगारने अव्रत कहीए. पण हे देवानुप्रीय! अव्रत तो मोहनीकर्मनी बीजी चोकमी अप्रत्याख्यानीना क्रोध, मान, माया, लोज, राग अने द्वेषना उदयजावमां छे. तेना जोगथी समे समे पुद्गल आवीने जीवने राग द्वेषनी चीकणाइथी चोटे अने जोगना व्यापार विना पण ए पुदगल कर्मपणे परगमे तेने अव्रत कहीये;अने मोहनीकर्मनी त्रीजी चोकमी प्रत्याख्यानीना क्रोध, मान, माया अने लोज उदयजावमां छे, तेना जोगथी जीवने अत्याग जावना प्रणाम राग, द्वेष अने अशुज जोग पापमां वर्ते तेने जोगनुं अव्रत कहीए. हवे बन्ने चोकमीनां कर्म लागे तेने तो एकान्त अव्रत कहीए; अने बन्ने चोकमीनो क्षयोपशमजाव, उपशमजाव तथा क्षायकजाव वर्ते तेने सर्व व्रति साधु कहीए; अने बीजी चोकमीनो क्षयो-

पशम थयो अने त्रीजी चोकडी उदयभावमा छे तेने देसव्रति श्रावक कहीए तमे ए सूत्रनी रेसना अजाणथा थका आगारने अव्रत कहोछो, पण संथारामां श्रावकने पापनो शु आगार रह्यो ते बतावो वली अप्रवि साधुने व्यवहारमा सर्वथा पापना त्याग छे अने तेने केवली सर्वथा अव्रति सर्वहे। छे हवे अप्रवि साधुने कया पापनो आगार रह्यो ते बतावो इहांतो चोकडीना उदयभावने अव्रत कह्यु छे हवे ओ बीजी चोकडीना उदयभावने अव्रत कहीए तो, ते अव्रततो श्रावकने मुल थीज नथी, (शास्त्र सूत्र भगवतीजी सतक पहेले) अने त्रीजी चोकडी उदयभावमां छे तेना जोगथी पुद्गल उपर ममत-भाव, राग द्वेष अने अशुभ जोग प्रवर्ते, से जोगना पाप आश्री सूयगडांग तथा उववाइ सूत्रमां कोइक पापथी निवर्त्या कह्या, अने कोइक पापथी नथी निवर्त्या कह्या त्यातो अशुभ जोगना पाप आश्री कह्या छे तमे सूयगडांग तथा उववाइ सूत्रना जुठां नाम लेइ श्रावकना खावा, पीवा, पहेर्वा अने कपडा प्रमुखने मतने लीधे अव्रत केम कहो छो ? वली ए उपगर्ण धर्मनी लाज निमीत्ते सेवे सेवरावे तो शुभजोग निर्जरानी करणी कहीए तेमा पाप कया सूत्रमा कह्युं छे ते पाठ बतावो

वली श्रावकना खावा पीवामां तथा खवरावबामा पाप कहे छे तेने पुछवुं के, जीव सहित वस्तु खाय पीए अथवा छ कायनो आरंभ करीने खाय अथवा बीजाने खवरावे, ते आरंभनु तो पाप छेज; पण कोइ श्रावक साधुनी परे ससारथी विरक्तभावे श्रावकपणु पालवाने अर्थे अ जीव पुद्गल खाय, प्रासुक पाणी पीए, तेना खावा पीवा अने पहेरवा मा शु तथा तेने कोइ खवरावे तेमां शुं ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, अचेत खाय तोपण तेनुं खावु पीवुं पापमाज छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीया पाप तो अढार छे तेना तो संथारामा सर्वथा प्रकारे त्रण करण अने त्रण जोगे करीने जावजीव सुधीना त्याग कर्या, तेमा सर्व पापनी वस्तुनो तो त्याग सर्व काम अढार पापना त्याग भेगा थइ गया त्यारे वर्णनागनतुवे तथा खंधकजीना शिष्योए चार अहारना न्यारा त्याग केम कर्या ? ए कर्म;

णीसमुं पाप कयुं ते बतावो. हे देवानुप्रीय! अढार पापना त्याग तो साधुजीने मूल-गुणव्रतमांज छे; अने आहारना पचखाण करे तो उत्तर गुणव्रत निपजे. तेम श्रावकना अढार पापना त्याग तो मूल-गुणव्रत छे, अने आहारना त्याग करे तो उत्तर--गुणव्रत निपजे. तेथी अढार पाप अने चार आहारना पचखाण न्यारा न्यारा कर्या. वली तमे श्रावकना खावा पीवा प्रमुखमां पाप कहो छो, तो ते खावा प्रमुख अढार पाप मांहेलुं कयुं पाप ते कहो अने अढार पापना त्याग करीने पछी आहारना न्यारा त्याग केम कर्या ते पण कहो. हे देवानुप्रीय! सिद्धांतनो न्याय तो एम दीसे छे के, साध श्रावकने आहारना त्याग न होय त्यारे तो उत्तर-गुणना अपचखाण कहीए, अने अहारना त्याग करे तो उत्तर-गुण पचखाण निपजे. साधु तथा श्रावक बंनेने उत्तरगुण-अपचखाणी पण कह्या छे अने उत्तरगुण-पचखाणी पण कह्या छे. तेनी शाख सूत्र भगवतीजी शतक सातमे उद्देशे बीजे. ए न्याये तो साध-श्रावक बंनेनुं खावुं पीवुं उत्तरगुण-अपचखाण छे; केमके शरीरनी ममताने अर्थे अशुभ जोगथी खाय तो बंनेने पाप लागे; अने संजम तपनी सहायता अर्थे खाइने शुभ भावना भावे तो शुभ योगथी बंनेने निर्जरा थाय. वली जो श्रावकना खावा पीवामा पाप होय तो सूत्र उववाइजीमां अंमडजी श्रावकने सो घरे पारणुं करता कह्या छे. ते अंमडजी श्रावक नव तत्वना जाण एकावतारी सो घरे पारणुं केम करे? एक घरे तो पारणुं कर्या विना सरे नहिं तेथी करे; पण सो घरे पारणुं करी सहुरने अनर्थ पाप केम लगाडे? ते पाठ श्री उववाइजीनोः—

बहु जणेणं भंते! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवंभासइ एवंपन्नवेइ एवंपरूवेति एवंखलु अम्मडेपरिव्वायए कंपिल्ल-पुरे-णयरे घरसत्ते. आहारमाहरेति घरसए वसहिउवेइ. से कहयं भंते! एवं? गो० ! जणंसे बहुजणो अन्नम-न्नस्स एवमाइक्कंति जाव परूवेति एवंखलु अम्मडेपरि-

वायए कंपिल्लपुरे जाव घरसए वसहि उवेति सच्चाण एस-मठे अहं पिण गो० ! एवमाइक्खामि एवं जाव परूवेमि एवंखलु अम्मडे परिवायए जाव वसहिउवेति सेकेणठेणं भंते ! एव वुच्चइ अम्मडेपरिवायए जाव वसहिउवेति गो० ! अम्मडस्सणं परिवायगस्स पगइ भद्दयाए जाव विणीयत्ताए छठ्ठछठेण अणिखीत्तेण तवोकम्मेण उड्ढबा-हाउ परिगिज्झइ २ सुराभिमुहस्स आयावण भूमिए आ-यावेमाणस्स सुभेण परिणामेण पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुझमाणीहिं अन्नयाकयाइ तदा-आवरणिज्जाणं कम्माणं खउवसमेणं इहा अपूह मग्गणं गवेसण करे-माणस्स विरियलद्धिए वेउव्वियलद्धिय उहिणाणलद्धि समु-प्पणे ततेणसे अम्मडेपरिवायए ताए विरियलद्धिए वेउ-वियलद्धिए उहिणाणलद्धिए समुप्पणाए जण विमावणाहेउ कंपिल्लपुरेणयरे घरसए जाव वसहिंउवेति सेतेणठेणं गो० ! एवंवुच्चइ अम्मडेपरिवायए कपिल्लपुरेणयरे घरसए जाव वसहिं उवेति ॥

अर्थ —ब० घणा ज० लोक भं० हे पुज्य ! अ० मांहोमांही ए० एम कहेछे प०भा० एम एकवचने बोले छे प०प० एम जणावे छे मांहो-मांही समजावे छे प०प० एम परुपे छे विस्तारथी कहेछे ए० एम ख० निश्चे अ० अम्मड-सन्यासि क० कपीलपुर नगरने विषे घ० सो घरे आ० आहार करेछे घ० सो घरने विषे व० रात्रे वसे छे ? से० ते क० केम छे भ० हे भगवान ! ए० एम ? गो० हे गौतम ! ज० यदि ते ब० घणालोक अ० माहोमांही ए० एम कहेछे जा० यावत् प० परुपे छे ए० एम निश्चे अ० अम्मड परिब्राजक क० कपिल्लपुर नगरने विषे जा० यावत् घ० सो घरने विषे आहार करे, यावत् व० वासो वसे स० साचो ए० ए अर्थ;

अ० हुं पि० पण गो० हे गौतम ! ए० एम कहुं बुं ए० एम जा० यावत् प० परुपुं बुं ए० एम निश्चे अ० अम्मरू-संन्यासि जा० यावत् व० सो घरे रात्री रहेवुं करे छे. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान ! ए० एम बु० कहोछो के अ० अम्मरू-संन्यासि जा० यावत् व० सो घरे रात्री वसे छे रहे छे ? गो० हे गौतम ! अ० अम्मरू-संन्यासिने प० स्वभावे भ० भद्रिकपणे जा० यावत् वि० वनितपणे करीने छ० छठ छठने पारणे अ० आंतरा रहित त० तप कर्तव्ये करी उ० उंची बांह (हाथ) प० करी करीने सु० सूर्य सांमा आ० आतापनानी भू० भूमिने विषे आ० आतापना लेतां थकां सु० भला प० प्रणामे करी प० भला अ० अधवशाये करीने ले० लेश्या वि० निर्मल (विशेष शुद्ध) तेणे करी अ० एकदा प्रस्तावे त० ज्ञानावरणी (ज्ञानने आवरी रह्या ते) क० कर्मना ख० क्षयोपशमे करीने इ० विचारणा अ० निश्चय करवो म० मार्गनी ग० गवेषणा क० करता थकाने वि० जीवनी शक्ति ल० लब्धि वे० विक्रय रुप करवानी लब्धि, ओ० अवधिज्ञाननी लब्धि स० सम्यक् प्रकारे उपन्या थका त० तेवारे ते अ० अम्मरू-संन्यासि ता० ते वि० वीर्य लब्धि वे० विक्रय रुप करवानी लब्धि ओ० अवधिज्ञाननी लब्धि स० सम्यक् प्रकारे उपनी. तेणे करीने ज० लोकने वि० विस्मय पमाडवाने अर्थे कं० कंपीलपुर नगरने विषे घ० सोघरने विषे जा० यावत् व० रात्रे वसवुं करे छे. से० तेणे अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम कह्युं के, अ० अम्मरू-संन्यासि कं० कंपीलपुर नगरे घ० सोघरने विषे जा० यावत् व० रात्रे वसवुं उ० करे छे.

भावार्थः—हवे जुओ. आ पाठमां तो भगवंते कह्युं छे के, अम्मरूजी-परिव्राजके संन्यासिपणानो मत छोडीने श्रावकपणुं लीधुं छे, संन्यासीना वेशमां श्रावकनां व्रत पाले छे, बेलेबेले पारणुं करे छे अने सूर्य सांमी आतापना ले छे. ए तप करतां थकां भली लेश्या तथा भला अधवशाये करीने ज्ञानावरणी--कर्मनो क्षयोपशम थयो, अवधिज्ञान प्राप्त थयुं अने वैक्रिय रुप बनाववानी लब्धि उपनी. तेथी लोकोने विस्मय उपजाववाने अर्थे सो घेरे पारणुं करे छे. हवे एक घेरे तो पारणुं कर्यो

बिना चाले नहि तेथी पाप लागे तो पण करवु पडे ते अर्थ-पापमां छे, पण श्रावकना खावा पीवामा पाप होय तो अम्मडजी श्रावक ओ पापथी डरता हता तेउ आधाकरमी (मूल आपीने लावेलु), मीश्र अने उधारे लावेलु, इत्यादिक दोष टालीने अहार लेता कह्या छे. एवा समजवार श्रावक सो घरे पारणु करीने अनर्थ पाप केम ल- गाडे तेमज पारणुं करावषावालाने पाप लागे तो सो घरवालाने अणजुता अनर्थ पाप लगाडीने केम डुबोवे ? डाह्या हो ते वि- चारी जोजो वली आ पाठना आगला पाठमा उववाइजी सूत्रमां कह्यु छे के, अम्मडजी श्रावकने अनर्थ पाप करवा करावधाना त्याग छे. हवे जुउ ! श्रावकना खावा पीवामा पाप होय तो, पूर्वोक्त अनर्थ पाप लगा- डयु तेनु आठमु व्रत केम रह्यु अने ते आराधिक केम थया ते कहो

हे देवानुप्रीय ! साधश्रावकनु खावु पीवु पापमां नथी, पण उदय जावमां छे जो तेउ शरीरनी ममताने अर्थे राग द्वेषथी अशुन्न जोगथी खाय तो साध श्रावक बन्नेने पाप लागे, पण जो साध श्रावकपणु नि- न्नावषाने अर्थे अचेत पुदगलनु न्नाडु आपे, अने शुन्न न्नावना न्नावे तो साध श्रावक बन्नेने शुन्न योगथी निर्जरा थाय वली अहींयां तो एम कह्यु छे के, अम्मडजी श्रावकने वैक्रियलब्धि तथा अवधिज्ञान उप न्युं, तेथी लोकोने जैन धर्मनो विस्मय उपजावषाने अर्थे सो घेरे पारणुं करे छे हवे विचारो ! एवा समजवार श्रावक पाप करीने जैन धर्म केम लजावशे ? डाह्या हो ते विचारी जोजो वली आणदजी श्रावक आदि घणा श्रावक पडिमाधारी थया तेउ आठमी पडिमामा सचेत आर न्ननु पाप करे नही, नवमीमा करावे नहि, दसमीमा करताने न्नलो जाणे नही अने अग्यारमी पडीमामा सर्वथा प्रकारे आरंन्न त्यागीने तथा आधाकरम्यादिक दोष टालीने, साधुनी पेरे इरिया जोइने, सुज तो अहार पाणी लावीने, देइने न्नाडु आपी, तपश्या धर्म ध्यान करे तेने दान देवामा शुं ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " सर्वथा प्रकारे पापना त्याग श्रव क-

रण नें त्रण जोगेथी होय तेने साधु कहीए. तेने दान देवामां तो एकान्त धर्म छे, पण श्रावकने संथारा विना सर्वथा प्रकारे त्याग होय नही; अने पडिमाधारीने कांइक पापनो आगार रह्यो हशे तेथी श्रावक कह्या छे. जो सर्वथा प्रकारे पापना त्याग होय तो साधु केम न कह्या?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! संथारामां वर्णनागनतुवे अने अम्मडजीना सातसो शिष्ये (श्रावके) सर्वथा प्रकारे अढार पापना, सर्व अकरवा योग्य कामना तथा चार आहारना त्रण करण अने त्रण जोगथी जावजीव सुधीना त्याग कर्या अने शरीरनी ममता सर्वथा प्रकारे जावजीव सुधी उतारी; तोपण तेमने श्रावक कह्या छे. तेनी शाख सूत्र भगवतीजी सतक सातमें उद्देशे नवमें तथा उववाइ सूत्रमां. वासते एम समजवुं के, त्रीजी चोकडी उदयभावमां वर्ते छे माटे श्रावक कहीये छीये. बाकी सर्व पापजोग करवा, कराववा अने भला जाणवाना मन वचन अने कायाए करीने त्यागा छे. तेमज पडिमाधारी श्रावकने पण जोगथी त्रिविधे त्रिविधे पाप करवाना त्यागछे; पण त्रीजी चोकडी उदयभावमां बाकी छे तेथी श्रावक कह्या छे; अने तमे तो सूत्रनी शैलीना अजाण थका कहोछो के, पडिमाधारी श्रावकने कांइक पाप करवानो आगार रह्यो छे तेथी श्रावक कह्या छे. वली श्रावकने त्रण करण अने त्रण जोगथी सर्वथा पापना त्याग कर्या कह्या छे. शाख सूत्र भगवती सतक ८ में उद्देशे ५ मे. ते पाठः—

समणोवासगस्सणं भंते! पुव्वामेव थुलग्ग-पाणाइवाए अपच्चक्खाए-भवइ सेणं भंते! पच्छा पच्चक्खायमाणे किं-करेइ? गो० ! तिय पडिक्कमइ पडुपन्नं संवरेइ अणागयं पच्चक्खाइ. तीयं पडिक्कममाणे किं तिविहं-तिविहेणं पडिक्कमइ, तिविहं-दुविहं पडिक्कमइ, तिविहं-एगविहेणं पडिक्कमइ, दुविहं-तिविहेणं पडिक्कमइ, दुविहं-दुविहेणं पडिक्कमइ, दुविहं-एगविहेणं पडिक्कमइ, एगविहं-तिविहेणं पडि-

कमइ, एगविह डुविहेण पडिक्कमइ एगविहं एगवि- हेणं पडिक्कमइ ? गो० ! तिविहं वा तिविहेणं पडिक्कमइ, तिविहवा दुविहेण पडिक्कमइ, तचेव जाव एकविहवा एकविहेण पडिक्कमइ तिविह तिविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करतनाणु जाणइ मणसा वयसा कायसा.

अर्थ —स० श्रमणोपासक (श्रावक) ज० हे भगवत ! पु० पूर्वे काले सम्यक् पडिवज्यों पहेला तथा भवान्तरे थु० स्थुल प्राणातिपात अ० पहेला देशप्रति प्रणामना अभावथी पचख्या नथी से० ते श्रम णोपासक ज० हे भगवत ! प० पठी प० पचखतोथको किं० शुं करे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! ति० अतित कालनां कृत्य प्राणाति पातने प० निंदे (गया कालनु प्रतिक्रमण करे), प० वर्तमान काले प्रा- णातिपात स० संघरे (वर्तमान काले सवर सामायक करे), अ० भ- विष्य काले प० प्राणातिपात नही करशु एवी प्रतिज्ञा करे (आगमिक कालनु पचखाण करे) हवे ती० अतित काल कृत्य प्राणातिपात प० पडिक्कमतो थको किं० शु ति० त्रिविध त्रिविध (करवा कराववा अनु- मोदन भेदथी) प्राणातिपात योग्य प्रत्ये एवुं कहीए ? ति० त्रिविध जे मन, वचन, काय, लक्षण करवे करी प० निंदवे करी विरमे ? १ के ति० त्रिविध करणादि भेदथी डु० मन टेमीने बेहु करीने प० विरमे ? २ ति० त्रिविध करणादि भेदथी ए० एक विधे मन प्रमुख एके करीने प० विरमे ? ३ डु० द्विविध करण आदि अनेरा बंने ति० त्रिविध मन प्रमुख जोगे करी प० विरमे ? ४ दु० द्विविध करण आदि दु० मन प्रमुख अनेरे बे जोगे करी प० विरमे ? ५ दु० द्विविध करण आदि ए एक योगे करी प० विरमे? ६ ए० ति० एक करण अने त्रण योगे करी प० विरमे ? ७ ए० दु० एक करण अने बे योगे करी प० विरमे ? ८ के ए० ए० एक करण ने एक योगेकरी प० विरमे ? ९ इति नव प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! ति० त्रिविधे त्रिविधे प० पडिक्कमे अथवा तिण्डु०

त्रिविधे द्विविधे प० पडिक्कमे (विरमे). तं० जेम पूर्वे कह्युं तेम जा० जावत् ए० एक करण अने ए० एक जोगथी प० पडिक्कमे विरमे. इहां नवे प्रश्ननो उत्तर. हवे ति० ति० त्रिविधे त्रिविधे प० पडिक्कमतो थको विरमतो थको इहां एक विकल्प कहे छेः—न० प्राणातिपात पोते न करे नका० बीजा पासे न करावे अने क० करता प्रत्ये जलो न जाणे म० मन व० वचन अने का० कायाएकरी. इत्यादि अधिकार घणो छे ते श्री जगवतीथी जाणवो.

जावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां तो कह्युं छे के, ४९ जांगाए करी गया कालनुं सर्व पाप पडिकमे, विद्यमान कालनुं सर्व पाप संवरे अने ज-विष्य कालनां सर्व पाप पचखे. एम पांच आश्रवना ७३५ जांगा कह्या छे. हवे जुओ! ३३ में आंके त्रण करण त्रण जोगथी पापना त्याग श्रावकने कह्या छे. ते पडिमाधारी-श्रावकने न होय तो बीजा कया श्रावकने हशे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, ए तो प्राणातिपातादिक पांच आश्रवना त्याग कह्या छे, पण सर्व पापना त्याग नथी कह्या. तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! साधुजीने पांच आश्रवना त्रिविधे त्रिविधे त्याग छे, तेथी सर्व पापना त्याग थइ चुक्या. तेमज आ श्रावकने पांच आश्रवना त्याग तेज मूल-गुणव्रत छे अने उपलां सात व्रत ते उत्तर-गुण कह्यां छे; केमके पांच अणुव्रतमां पापनो आगार रह्यो, ते आगलां सात व्रतमां संकोचाय छे; अने पांच आश्रवना त्रिविधे त्रिविधे त्याग कर्या, तेवारे उपरना व्रतना त्यागमां समाइ गयां. जेम अनुयोगद्वार सूत्रमां ऋजुसूत्र-नयनो धणी एक अहिंसानेज व्रत माने. जेणे त्रिविधे त्रिविधे हिंसा त्याग करी तेने पांचे महाव्रत थयां अने सर्व पापना त्याग थइ चुक्या कह्या छे. तेम इहां पण पांच आश्रवज उलखाव्या तेमां सर्व पापना पचखाण जाणवा. जेणे पांच आश्रवना त्याग त्रण करण अने त्रण जोगथी कर्या हशे, तेने बीजा पापना त्याग केम नही हशे? तमे तो कहो छे के, श्रावकने त्रिविधे त्रिविधे त्याग होय नही; पण जगवतीजी सूत्रना आ पाठमां समचे श्रावकने तेत्रीस आंके पापना त्याग थाय कह्या

छे त्यारे आणंदजी सरखा पडिमाधारी श्रावक साधुनी पेरे सुझतो आहार प्रमुख खावीने खाय तेने त्याग केम नही थशे ? एवा आण दजी सरीखा श्रावक, जे चार क्रोड सोनैयानी दोलत त्यागी, छकायनो मटको करवो त्यागीने, तपस्या धर्मध्यान करीने, आत्माने उजाले, अने वेदनी-कर्मना उदये ज्यारे चुस सेहवा असमर्थ होय त्यारे साधुनीपेरे सुझतो आहार पाणी खावी, आत्माने साजु रहने, धर्मध्यान (अग्यारमी पडिमामां) तपस्या करे, एवा जे उत्तम श्रावकना मतना गुणने अनुमोदी उत्कट भावथी हाथे दान आपे तेने शु थाय? तेवारे तेरापथी कहे छे के, एनु खावुं पीवु अव्रतमा छे तेथी देववावाने अव्रत लागे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! भगवते तो पाचमे गुणठाणे सर्व श्रावक एकज मतना धरणहार होय तेमने पण अव्रतनी क्रिया वर्जी छे तेनी शाख सूत्र भगवती शतक पहेले उद्देशे बीजे ते पाठ —

मणुस्साणं भंते ! समकिरिया ? गो०! णो तिणठे समठे से केणठेणं भंते ! एव वुच्चइ ? गो० ! मणुस्सा तिविहा पं० तं० समदिठी मिच्छादिठी सम्मामिच्छादिठी तत्थण जेते समदिठीते तिविहा प०तं० सजया असजया सजयासंजयाय तत्थणं जेते सजयाते दुविहा प० तं० सरागसजयाय वियरागसजयाय तत्थण जेते वियरागसंजयाय तेण अकिरिया तत्थण जेते सरागसजया ते दुविहा प०तं० पम्मत्तसंजयाय अप्पमत्तसंजयाय तत्थणं जेते अप्पमत्तसंजया तेसिण एगामायावत्तियाकिरिया कज्जइ. तत्थणं जेते पम्मत्तसजया तेसिण दो किरियाउ कज्जति तं० आरंभियाय मायावत्तियाय तत्थणं जेते सजयासजयाय - तेसिणं आदिमाउ तिन्नि किरियाउ कज्जंति:-आरंभिया १ परिग्गहिया २ मायावत्तिआ ३ असजयाणं चत्तारि कि-

रियाउ करंति. मिच्छादीठीणं पंच. सम्मामिच्छादीठीणं पंच.

अर्थः—पुर्ववत्. जुउ प्रश्न बीजो पाने १५३ में.

भावार्थः—हवे जुउ! आ पाठमां चोवीस दंडकना मिथ्यात्वी जीवने तो आरंभनी, परिग्रहनी, मायाप्रत्ययनी, अपचखाणनी अने मिथ्या-दर्शन प्रत्ययनी ५ ए पांच क्रिया कही; अने अव्रति समदृष्टि चोथे गुणठाणे, तेने मिथ्यात्वनी वर्जीने चार क्रिया कही; अने पांचमे गुणठाणे श्रावक, तेने अव्रतनी अने मिथ्यात्वनी वर्जिने त्रणज क्रिया कही; अने प्रमादी साधु छठे गुणठाणे, तेने आरंभनी अने मायावत्ति-यानी बे क्रिया कही; अने अप्रमादी साधु सातमे गुणठाणेथी लइ द-समा गुणठाणा सुधी, तेने एक मायावत्तिया-क्रिया कही; अने वीतरा-गसंजमी अग्यारमा गुणठाणाथी लइ तेरमा गुणठाणा सुधी, तेने एक इरियावहि क्रियाज लागे छे. वास्ते ए पांच क्रिया आश्री अक्रिय कह्या. हवे जुउ! आ पाठमां तो भगवंते सर्व श्रावकने अव्रतनी क्रिया टाली कही छे. तमे मतने लीधे आणंदजी सरखा पडिमाधारी श्रावकनुं खावुं पीवुं अव्रतमां केम कहो छो अने देवावालाने अव्रत लागे केम कहो छो?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ए तो खंध आश्री टाली कही छे, पण देश आश्री तो लागे छे ते गणी नथी. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! साधुजीने आरंभिया अने मायावत्तिया क्रिया कही, ते खंध आश्री कही छे के देश आश्री कही छे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "साधु-जीने तो विना उपयोगे अजाणपणे किंचित मात्र लागे ते आश्री कही छे." त्यारे जुउ. ए किंचित मात्र लागे तेने पण गणी, त्यारे श्रावकने देशथकी अव्रतनी क्रिया होय तो केम न गणे?; पण अव्रत तो मोह कर्मनी बीजी चोकडीना अप्रत्याख्यानना उदयभावमां होय तेना जो-गथी कर्म लागे तेने कहीये. ते अव्रत तो श्रावकने मुलथीज नथी, तेथी अव्रतनी क्रिया भगवंते टाली कही.तमे मतने लीधे ए सूत्रनां वचन उत्था-पीने आणंदजीश्रावक जेवाने अव्रत कहीने अनंत संसार केम वधारो छो?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "आणंदजी सरीखा पडिमाधारी-श्राव कने अव्रत नही, ने दान दीधामा गुण (व्रत) होय तो कोइए पण पडि माधारी-श्रावकने दान दइने संसार परित कीधो, एवु सूत्रमा चाल्यु होय तो पाठ बतावो, तथा कोइने बारमु व्रत निपन्यु चाल्यु होय तो बतावो सूत्रमा कह्या विना वात शी रीते मानीए" तेनो उत्तर :- हे देवानुप्रीय ! घणा सूत्र तो विछेद गया अने बत्रीस सूत्र रह्यां तेमां पण घणी वातो मोघम कही छे तमे सूत्रमा चाल्यानु पुछो छो तो, साधवीने दान देइ कया श्रावके संसार परित कीधो ते मूल पाठ तमेज बतावो तथा केवलीने दीधाथी कोइने बारमु व्रत निपन्यु होय तो ते पण बतावो ए सूत्रमा चाल्या विना केम मानो छो तमारी कहे वीने लेखे तो ए पण न मानवु जोइए तेवारे तेरापंथी कहे छे के "केव लीना तथा आरज्याना गुण तो साधु सरीखा छे ते साधुनु दान बारमा व्रतमा सूत्रमा ठाम ठाम चाल्यु छे ए सरखापणाथी मानीए छीए "

त्यारे हे देवानुप्रीय ! दसाश्रुतस्कधमां आणंदजी सरखा पडिमाधा री श्रावकने 'श्रमण भूय (साधु जेवा)' कह्या छे ते अग्यारमी पडिमानु नामज श्रमण भुय छे एटले पडिमाधारीने साधु सरीखा कहीए जो साधुने दान दीधा ससार परित करता हशे तथा बारमु व्रत निपजतु हशे तो अग्यारमी पडिमाधारी श्रावकने साधु सरखा कह्या छे, तेमने दीधानु फल साधुने दान दीधा सरखु केम नही हशे ? ए सरीखा कह्या ए अनुमानथी जाणवु जोइए वली पडिमाधारी-श्रावकने दान दीधामा पाप होय तो पडिमामा तो साधुनी पेरे मागी खावुज कह्यु छे पडिमाधारी तरे अने दान दइने घणा जीव डुबे, एवी करणी श्री वीतरागदेव केम बतावी ?

आ तो एवु थयु जेम ढाके, बंगाले अने कामरुदेशमा अनेक ठग (धूर्त) मित्र छे, पण एथीए उपर खखो श्रद्धावाला गुरुनु आश्चर्य छे के, ए धर्म करवो शीखव्यो के धाडु पाडवा शीखव्यु ? वली पडि-माधारीने दान दीधामा पाप होय तो पडिमाधारी चोर करतां पण

अधिका कहेवाय; कारण के चोरतो धणीनुं धन चोरीने लइ जाय, पण धनना धणीने पाप तो न दइ जाय ? अने पडिमाधारी तो अन्न वस्त्र प्रमुख माल लइ जाय अने पाप दइ जाय. वली चोर तो झाड फाडीने जातां असंधारी (खानदान) होय तो जतावो (खबर) दे के "में तमारुं झाड फाडीने माल काढयो छे माटे तमे कारी देजो; केमके रखे तमारुं झाड डुबी जाय" एम जतावो करे; पण पडिमाधारी तो जतां जतावो पण न करे के "अरे भाइ! तमे मने उलट भाव करीने दान देइ धर्म सर्दह्यो होय तो तेनुं पाप मिथ्यात तमने लागे छे. तेनी आलोवणा करी प्रायछित लइ शुद्ध थाजो." एम जतावो पण न करे. एवा विश्वासघाती आप मतलबीआ तमारे लेखे आराधिक शी रीते थया हशे ? वली पडिमाधारीने दान दीधामां पाप होय तो ते डाकण सरीखा कहेवाय. जेम डाकणने वीर वलगे त्यारे ते घरनां बालक छोडीने परायां बालक जोती फरे, तेम पडिमाधारीने भुख लागे त्यारे घरनुं पाप छोडीने लोकोने पाप लगावीने डुबोवता फरे. वली जेम डाकणने बालक मारवानुं कहे तो नही, पण मंत्र शीखवे तेने पाप लागे. तेम भगवंत खावा खवराववानी आज्ञा तो न आपे; पण पडिमा वहेवानी विधि शीखवे. तेमां तमारे लेखे तो भगवंतने पण पाप लाग्युं हशे; पण एम जाणवुं जे, पाप होत तो एवी करणी केम बतावत ?

वली पडीमाधारीने दान दीधामां पाप कहे छे तेने पुछवुं के, पडिमाधारीने तो पाप करवा, करावचा अने अनुमोदवाना त्याग छे, अने ते आगला पासे जइने मागे तेवारे जो दातारने पाप लागे तो पडिमाधारीने पाप कराव्याथी पडिमा भागे. त्यारे हवे पडिमा शी रीते साधी शकाय ते कहो. तेवारे तेरापंथी जवाब देवा असमर्थ; पण मनथी एवां कुहेत मेलवे छे के "साधु अहार पाणी वधे तो अथवा काल, क्षेत्र उपरान्त रही गयो होय तो ते धरती उपर परठवे; पण ते पडिमाधारी श्रावकने आपे नही. जो तेने आप्यामां धर्म होय तो साधु केम न आपे ? केमके साधुने पाप करवाना तो त्याग छे, पण एतो ध-

र्मनु काम छे ते केम नथी करता ? जो साधुने धर्म न थाय, तो श्रा वकने धर्म केम थशे ? " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! साधु आहार को तो अथवा काल मर्यादा (त्रण पहोर) उपरान्त अने क्षेत्र मर्यादा (बे कोश) उपरान्त रहीगयो होय तो धरतीए परठवे, पण ठीय क ल्पी अठोय कल्पीने माहोमाही आपे नही, अने स्थिवर कल्पी अने जिन-कल्पी पण मांहोमाही आपे नही ते पाप जाणीने न आपे एम न जाणवु, पण तेमनो कल्प नथी तेथी न आपे जो 'पाप जाणीने न आपे' एवोज तमारे हठवाद छे, तो कहो श्री महावीरस्वामीना श्रावक श्री पार्श्वनाथजीना (अठीय कल्पी) साधुने दान आपे तेमने शु फल थाय ? तेवारे तेरापथी कहे छे के, तेमा तो एकान्त धर्म छे वली साधवीने साधु ऊठ्ये वदणा न करे, पण श्रावक श्राधीका आरजाने वदणा करे तेमने शु फल थाय ? तेवारे 'कहे छे के धर्म छे' त्यारे जुओ ! ज्यारे श्रावकने धर्म थशे, तो साधु ए धर्मनु काम केम न करे ते कहो तेवारे तेरापथी कहे छे के, एतो साधुनो कल्प नथी तेथी नथी करता

हे देवानुप्रीय ! ज्यारे असजोगी साधुने देवानो तथा वदणा क रवानो कल्प नथी त्यारे पडिमाधारीने देवानो कल्प क्याथी होय ? वली तमे कहोछो के 'जेने साधु न आपे तेने आप्यामा पाप छे' तो ठियकल्पी स्थिवर कल्पी साधुने अठिय कल्पी साधु अथवा जिन-क ल्पी साधु नथी आपता हवे ए तमारी कहेणीने लेखे तो, स्थिती कल्पी स्थिवर कल्पी साधुने दीधानु पण पाप थवु जोइसे हे देवानु प्रीय ! एम तो घणा बोलनो साधुनो कल्प नथी, तेथी तेवा काम तेओ न करे, पण जो श्रावक करे तो धर्म छे ए रीते पडिमाधारीने साधुनो तो देवानो कल्प नथी, पण श्रावकने पाप केम कहो छो ?

वली तेरापथी कहे छे के " पडिमाधारीनी पडिमा पुरी थइ जाय त्यारे पाछा घरमा आवे, अने जे कायाने पोषी छे तेज कायाथी पाप करे, ते पाप दातारने आवे " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! ए तमारी कहेणीने लेखे तो श्रावक साधुने दुध, घृत, वहोरावे तेमा कीडी, पतगीया प्रमुख

पडीने मरे, तेनुं पाप दातारने लागवुं जोइए. तेमज साधु कर्मने उदये भ्रष्ट थइने पाप करे, ए पाप पण ऐटला दीवस दानदइ जेणे कायाने पोषी तेने लागवुं जोइए. वली कदाच श्रावकने तो साधु भ्रष्ट थशे एवी खबर न होय, पण केवलज्ञानी तथा अवधज्ञानी मुनीराज तो जाणे छे के, ए साधु एक मास अथवा एक वरस पछी भ्रष्ट थशे; छतां तेने चेलो राखे छे, आहार पाणी लावीने आपे छे अने चाकरी करे छे. हवे ते भ्रष्टथनार तेज कायाथी पाप करशे. तमारी कहेणीने लेखे तो तेने चेलो राखवो न जोइए तथा आहार पाणी पण आपवुं न जोइए.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " विद्यमान काले साधपणुं पाले छे तेनी सहाज देवाना कामी छे, तेने तो धर्मज थशे अने पछी भ्रष्ट थइने पाप करशे तो करवावालोज भोगवशे.

हे देवानुप्रीय ! पडिमाधारीने पण विद्यमान गुण जाणीने दान आपे छे अने पछी पाप करशे तो तेज भोगवशे; पण दातारने पाप केम लागशे ? वली श्रावकने साधु धर्म शीखावे तथा त्याग पचखाण करावे तेथी देवतामां जाय, अने पल सागरो सुधी देवतानां सुख भोगवे तथा अव्रत पाप कर्म सेवे, तेनुं पाप तमारी कहेणीने लेखे तो भगवंत, केवली अने साधुने लागवुं जोइए; केमके सुपचखाण कराव्युं तेथी देवता थयो. हवे ते पाप करीने डुबत तो तेनुं पाप तो भगवंत, केवली के साधुने लागतुं नथी. ए त्यागना टंटामां पडीने केम डुबे ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "साधु तो धर्म (मुक्तीमार्गना आराधिकपणा) माटे शीखवे छे अने पुण्य बंधाय तेथी देवतामां जाय छे; पण साधु तो देवतामां मोकली सुख भोगवराववाना कामी नथी." त्यारे हे देवानुप्रीय ! दातार पण पडिमाधारीने धर्म स्हायता अर्थे दान आपे छे, पण घरमां आवीने पाप करशे एम जाणीने नथी आपता; केमके पाप कराववाना कामी नथी. वली आणंदजी आदि दस श्रावके उपासकदशा सूत्रमां पडिमावहि, तपश्या करी, काया शोषी, संलेखणा करी, संथारो करी पहेला देवलोकमां गया. तेमने एकावतारी कह्या छे, पण पडिमावहिने घरमां

पाछा आव्या कह्या नथी तेमज कार्तिक शेठ श्रावक पाचमी पडिमा सोवार वह्या कह्या छे, पण अग्यारमी पडिमा वहीने साधुनी पेरे सुजती गोचरी करीने, आहार मागी खाइने पाछा घरमा आवे एवो पाठ तो सूत्रमा कोइ ठेकाणे कह्यो नथी

तेवारे तेरापथी कहे छे के "पडिमानो काल जघन्य अतर्मुहूर्त तथा एक दीवसनो कह्यो छे अने उत्कृष्टो अग्यार मासनो कह्यो छे ते पुरो थया पछी शु करे ?" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीया आवश्यक निर्युक्तिमा कह्युं छे के, केटलाक तो अतर्मुहूर्त पछी, केटलाक एक दीवस पछी तथा केटलाक यावत् अग्यार मास पछी का तो सलेखणा करीने सथारो करे, कां तो दिक्षा ले, पण् घरमा न आवे, केमके आवे तो लोकमां जैन-मार्गनी लघुता थाय अने पोतानी निंदा थाय लोको कहे के, हवे करणी करता थाकी गया तेथी भ्रष्ट थइने घरमा आवी बेठा छे, तेटला वास्ते घरमा न आवे एम कह्यु छे हवे तमे कया सूत्र, पाठ, टीका, निर्युक्तिना न्यायथी कहो छो के, अग्यारमी पडिमा वहीने पाछा घरमा आवे ते बतावो अरे भाइ! तमे मतने लीधेज "पडिमाधारी पाछो घरमा आवीने पाप करे ते दातारने लागे " एवी जुठी कुयुक्ति लगावीने ससार केम वधारो छो ? तेवारे तेरापथी कहे छे के, "पडिमाधारी श्रावकने दान आपे तेमा धर्म होय तो साधुजी, भगवत जी, अने केवली तेने दान देवानी आज्ञा केम नथी आपता ?" तेनो उत्तर हे

हे देवानुप्रीय ! पडिमाधारी श्रावकने पडिमानी विधि भगवंते, केवलीए अने साधुए बतावी छे तेवारे उपदेशमा तो आज्ञा [illegible] पडुतुकी, अने आदेशमा तो आज्ञा एक पोताना संजोगी टाली बीजा कोइने अहार पाणीनी आज्ञा आपे नही जेम पोसामां पलेवण करवानु साधुजी शीखवे छे ए उपदेशमा तो आज्ञा छे पण, विद्यमान पलेवण करतीवेला आज्ञा आपे नहिं पण पाप न जाणे जो पलेवणमां पाप होय तो पोसामा पाप करवा करावयाना त्याग छे, ते पलेवण कर्यां भी केलो

लागे, अने पलेवण न करे तो अतिचार लागे. ए अतिचार टाल्यामां धर्म छे छतां आदेशमां आज्ञा आपे नही. वली साधुजी आव्याथी श्रावक उठ्ठो थाय, साधुजीना सांमो जाय तथा घरमांथी वस्तु लावीने वहोरावे, एटला कामनी आदेशमां आज्ञा आपे नहिं; पण उपदेशमां तो धर्म बतावे. ए उपदेश-आज्ञा छे. वली स्वसंजोगी साधुनेज बे आज्ञा छे, अने असंजोगी साधुने तथा श्रावकने कोइक बोलमां बे आज्ञा छे. तेमां कोइक बोलमां उपदेश-आज्ञा छे अने आदेश-आज्ञा नथी. तमे आज्ञा कल्पना जेदना अजाण्या थका कहो छो के " पडिमाधारी श्रावकने दान देवानी साधुजी आज्ञा न आपे, तेथी ए काम आज्ञा बहार छे. " एवां आल केम द्यो छो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " पडिमाधारी श्रावकने दान दीधामां सूत्रमां कयांय धर्म के व्रत कह्युं होय तो ते पाठ बतावो. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जगवती सूत्रना आठमा शतकना छठा उद्देशमां कह्युं छे के, श्रमणो-पासक श्रावक, तथारुप श्रमण कहेतां साधु प्रत्ये, वा कहेतां अथवा, माहण कहेतां श्रावक प्रत्ये प्रासुक एषणिक बेतालीस दोष रहित प्रतिलाजे तो एकान्त कर्मनी निर्जरा थाय; पण लगार मात्र पाप नथी.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " समणंवा माहणंवा कह्या छे ते बंने नाम साधुनांज छे. ते सूत्र सूयगडांगमां कह्या छे. तेमने दीधांमां निर्जरा कही छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! साधुनां नाम तो समण, माहण, जिखू, संजइ, मुनि, ऋषी इत्यादिक घणां कह्यां छे; पण एक कार्यमां बे नाम आवे नही. समणंवा, संजयंवा, जिखुवा, ए रीते बे नाम एक कार्यमां बत्रीस सूत्रमां कोइपण ठेकाणे आव्यां होय तो बतावो. ए पुनरुक्त वचनरुप दोष श्री वीतरागनी वाणीमां आवे नही. समणं कहेतां साधुप्रत्ये, ने वा अथवा माहणं कहेतां साधु प्रत्ये, एम अर्थ न होय. ए शब्द वचमां छे ते तो विकल्प अर्थ वास्तेज छ. समण साधु प्रत्ये अथवा माहण श्रावकप्रत्ये. इहां माहण शब्दनो अर्थ श्रावकज

समजवे छे तेवारे तेरापथी कहे छे के, " इहांनो माहण प्रत्ये, एवो समच्चय अर्थ कर्यो छे, पण श्रावकनो अर्थ कर्यो नथी " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! श्री भगवती सूत्रना पहेला शतकना सातमा उद्देशामां अभयदेवसूरिजीए गर्भना अधिकारमा, समणवा माहणवा शब्द आव्यो छे त्यां, समण नाम तो साधुनो अर्थ कर्यो छे, अने माहण शब्दनो अर्थ श्रावक कर्यो छे, तथा दोलतसागरजी कृत भगवतीजीना टबामा पण पुर्वोक्त रीते अर्थ कर्यो छे तेवारे तेरापथी कहे छे के, पहेला शतकना सातमा उद्देशामां माहण शब्दनो श्रावक अर्थ कर्यो, त्यारे आठमा शतकमां माहण शब्दनो श्रावक अर्थ केम न कर्यो? तेनो उत्तर

हे देवानुप्रीय ! सूत्रनो टीकानी शेली एवीज छे के, एकजवार शब्दनो अर्थ करे एज शब्द वारवार आवे तो बीजीवार टीकामां अर्थ न करे तेमज बीजा शतकना पांचमा उद्देशामां एज पाठ आव्यो छे, तेमा तथारुप समण माहणनी सेवा कर्याथी ' सवणे नाणे विनाणे ' इत्यादिक दस बोलनी प्राप्ती थाय हवे जुओ ! श्रावकनी सगत अने सेवा कर्याथी दस बोलनी प्राप्ती थाय के नही? इहा पण माहण शब्दनो अर्थ श्रावक जाणवो एम सर्वत्र जग्योए भगवतीमां " समणवा माहणवा " शब्द आव्यो त्यां ' माहण ' शब्दनो पहेलीवार टीकामां श्रावक अर्थ कर्यो तेज जाणवो वली ठाणायांग सूत्रमां पहेलो ' समण वा माहणवा ' शब्द आव्यो त्या पण अभयदेवसूरीजीए टीकामां ' माहण ' शब्दनो अर्थ श्रावक कर्यो छे एम सर्व सूत्रमां ' समण वा माहणवा ' शब्दनो अर्थ कोइ ठेकाणे तो न्यारो न्यारो कर्यो छे अने कोइ ठेकाणे मोघम कर्यो छे समण साधु प्रत्ये, वा अथवा माहणवा कहेतां श्रावक प्रत्ये, एमज कर्यो छे, पण सर्व जग्याए भगवतीना पहेला शतकना सातमा उद्देशामां पहेलीवार टीकार्थ कर्यो तेम जाणवो एज ' समणवा माहणवा ' पाठ भगवतीजीना पांचमा शतकना छठा उद्देशामां कह्यो छे तथारुप समण साधु प्रत्ये अथवा माहण प्रत्ये हीले, निंदे अने अप्रीयकारी दान आपे तो अशुभ-दीर्घायुष्य पामे, अने तथारुप समण

माहण प्रत्ये वांदे, नमस्कार करे अने प्रीयकारी दान आपे तो शुभ-दीर्घ-आयुष्य वांधे. एमज तथारुप समणने दान दीधाथी अशुभ-दीर्घ-आयुष्य अने शुभ-दीर्घ-आयुष्य सूत्र ठाणायांगने त्रीजे ठाणे कह्युं छे. एमज साधुनुं तथा पडिमाधारी श्रावकनुं दान घणा सूत्रमां भेलुं कह्युं छे अने तेनां फल सरखां कह्यां छे. समणं वा माहणंवा एवो पाठ एक कार्यमां आवे अने वा शब्द वचमां आवे त्यां समण कहेतां साधु, वा अथवा माहण कहेतां श्रावक, एवोज अर्थ संभवतो छे. 'वा' शब्द विकल्प अर्थने वास्ते छे. तमे कहो छो के "समणं कहेतांए साधु वा अथवा अने माहणं कहेतांए साधु." तो एवो 'समणंवा माहणंवा' एक कार्यमां पाठ कोइ सूत्रमां होय तो बतावो, के जेमां साधुनोज अर्थ थाय अने श्रावकनो अर्थ न थाय.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "बीजी तो अनेक जग्याए 'समणं वा माहणंवा' पाठ आव्यो त्यां तमे माहण शब्दनो अर्थ श्रावक करी देशो, पण ठाणायांगमां त्रीजे ठाणे, तथा-रुप समण माहणने अतिशय-ज्ञान उपजे कह्युं छे. ते अतिशय-ज्ञान तो साधुनेज उपजे. त्यां पण वा शब्द वचमां छे. समणंवा माहणंवा एवो पाठ छे. इहां साधुनोज अर्थ संभवे छे. तेम दानमां पण बंने शब्दनो साधुज अर्थ संभवे छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्र भगवतीना अग्यारमा शतकमां, शीवराज ऋषिश्वरने विभंग ज्ञान उपन्युं तेने अतिशय-ज्ञान कह्युं छे. ते अतिशय-ज्ञानना त्रण भेद कह्या छेः-अवधि १ मनःपर्यव २ अने केवल ३. हवे जुओ! मिथ्यात्वीना विभंग-ज्ञानने पण अतिशय-ज्ञान कह्युं छे त्यारे श्रावकने अवधिज्ञान उपजे तेने अतिशय-ज्ञान केम न कहीये? केमके अतिशय-ज्ञान तो आश्चर्यकारीतुं छे. ते अवधज्ञानरुप अतिशय-ज्ञान श्रावकने उपजे छे, ते भणी इहां पण माहण शब्दनो अर्थ श्रावकज छे; कारण के वा शब्द वचमां छे.

तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के "ठाणायांगने त्रीजे ठाणे तथा-रुप समण माहणने केवलज्ञान उपजे कह्युं छे. इहां पण समणंवा माहणंवा

एवो पाठ छे अने वा शब्द वचमां छे इहां तो माहण शब्दनो अर्थ साधुनोज हशे, कारण के केवलज्ञान तो श्रावकने उपजतुं नथी " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! ठाणायाग ठाणे त्रीजे उद्देशे चोथे त्रण प्रकारना जिन कह्या छे—उहीनाणजीण १ मनपर्यवनाणजीण २ केवलनाणजीण ३ एज रीते त्रण अरिहंत केवली कह्या छे अवधज्ञानी केवली १, मन पर्यवज्ञानी केवली २, अने केवलज्ञानी केवली ३ ए अवधज्ञानीने केवली कह्या छे ते अवधज्ञान श्रावकने पण उपजे छे ते माटे इहां पण माहण शब्दनो अर्थ 'वा' शब्द वचमां छे माटे श्रावकज थाय, अने इहां तो समचय समण माहणने केवल उपजे कह्युं छे वली ज्यां पांचमु केवलज्ञान उपन्युं कह्युं, त्यां तो 'कसिणे पडिपुने निरावरणे अपडिहय केवल वरनाणदंसणे समुपजेजा' एवो पाठ छे वली एवो पाठ एक कार्यमां कोइ सूत्रमा दीसतो नथी के समणवा माहणवा शब्दमां साधु नोज अर्थ थाय अने श्रावकनो न थाय, पण 'वा' शब्द वचमां होय अने एक कार्यनो पुछा होय त्यां माहण शब्दनो अर्थ श्रावकज थाय ए सूत्रनो न्याय जोतां साधु श्रावकने दानना फल सरखांज कह्यां दीसे छे वली सूयगडांग तथा उववाइ सूत्रमा एवो पाठ छे के, एगंतसमेसुसाहु एटले श्रावकने एकान्त पक्षमा भला साधुज कहीये हवे साधुने दान दीधामां लाभ थशे तो श्रावकने पण साधु कह्या छे, तेमने दीधामां लाभ केम नही थाय ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "इहां तो माहण शब्दमां समचय श्रावकनो अर्थ कर्यो छे त्यारे तो सर्व श्रावकने दान दीधामां साधुना दान सरखां फल कहो पडिमाधारीनेज केम कहोछो ? " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! दानना पाठ कह्या त्यां सर्व पाठमां 'तहारुवं समणंवा माहणंवा' एवो पाठ छे ते तथारुप समण ते साधु ओघो, मुहपत्ति, वस्त्र, पात्रा सहित स्वलिंगी, अने तथारुप माहण ते पडिमाधारी श्रावक तेने प्रासुक एषणिक अचित बेतालीस दोष रहित दाननी पुछा छे ते माटे पडिमाधारी श्रावक लेवे छे, अने सुजता दाननो लेवावालो अने सम,

पजूए (साधु सरीखो) पडिमाधारीनेज दसा श्रुतखंधमां कह्यो छे. वली अनेरा पण कोइ उत्तम श्रावक संसारथी विरक्तभावे पापना त्यागी सुझतुं खाय छे, तेमने दानदेवावाला दातारने पण चोखांज फल लागशे. तेमज अनेरा उत्तम श्रावकनो आरंभ टलावीने अचित तैयार रसोइ, सीरणीना (मिठाइना) पुद्गलनी साज देइ, तपसा सामायक पोसा करावशे तेने पण धर्म दलालीनां चोखां फल लागशे.

वली तेरापंथी कहे छे के " श्रावक तो झेरना वाटका छे, कुपात्र छे. ते कुपात्रने दान दीधामां अने वंदणा कर्यामां मुक्तिनो मार्ग(धर्म) क्यां कह्यो छे ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! भगवंते तो श्रावकने तीर्थ (जेथी तराय ते तीर्थ) कह्या छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक २० मे उद्देशे ८ में. ते पाठ लखो छीए:—

तिछ भंते ! तिछंकरेइ तिछं ? गोयमा ! अरहा ताव नियमं तिछंकरेइ तिछंपुण चाउवणे समण संघे पंन्नते तं० समणा समणिउ सावय सावियाउ ॥

अर्थः—ति० तीर्थ भं० हे भगवान ! ति० तिर्थकरने कहीये ? के ति० चतुर्विध संघने तीर्थ कहीए ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! अ० अरिहंत ता० यावत् नि० नियम करीने पहेलां ति० तीर्थंकर तीर्थ प्रवर्तावणहार छे, पण तोर्थ नथी. ति० तोर्थ तो वली चा० चार वर्ण जीहां चतुर्वर्ण कहीये, ते क्षमादि गुणे करी व्याप्त स० श्रमण सं० संघ पं० कह्या, तं० ते जेम छे तेम कहे छेः– स० साधु स० साधवी सा० श्रावक अने सा० श्रावीका.

भावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां अरिहंतने चार तीर्थना कर्ता तीर्थंकर कह्या; अने साध साधवो श्रावक अने श्रावीका, ए चारने सरखां तीर्थ (तरवानां ठाम) कह्यां वली सूयगडांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां पुंडरिक कमल उधरवाने अधिकारे, चार तीर्थने संसार समुद्रनो तीर (कांठो) कह्यो. वली सूयगडांग सूत्रना

बीजा श्रुतस्कधना बीजा अध्ययनमा त्रण पक्ष कह्या छे प्रथम पक्षमा मिथ्यात्वी अव्रती अने अपचखाणी १, धर्म पक्षमा साधुजी सर्व पापना त्यागी २, अने मिश्र पक्षमा श्रावक ३. तेमा श्रावकने तो मिश्र पक्षे धर्माधर्मी कह्या ए त्रण पक्षना वर्णवनो घणो पाठ छे ते सूयगडांगमा जोइ लेवो त्या श्रावकने धर्मी, सुव्रति, आर्य अने एकान्त साचा साधु कह्या छे पछी त्रण पक्षना बे पक्ष कर्या एक धर्म पक्ष अने बीजो अधर्म पक्ष त्या उदय जाववर्ती अव्रतगुणतो तुच्छसमान, ते गौणतामा राख्यो गण्या नही, अने क्षयोपशमजावना गुण मेरुसमान, ते मुख्यतामां गण्या ते माटे श्रावकने विशेष पक्षे धर्म पक्षमा गण्या छे हवे जुओ ! ए पाठमां श्रावकने साधु, धर्मी, सुव्रति अने आर्य कह्या छे, अने तमे कुपात्र कहाछो, तो पूर्वोक्तगुण कुपात्रमां शी रीते होइ शके ! वास्ते श्रावक सुपात्रज छे वली उववाइ सूत्रमां साधु श्रावक बंनेना गुण (बिरद) सरखा कह्या छे ते श्रावकना गुणनो पाठ —

सेजेइमे गामागर णगर जाव सन्निवेसेसु मणुया जवंत्ति त० अप्पारम्जा अप्पपरिग्गहा धम्मीया धम्माणुया धमिठा धम्मक्खाइय धम्मपलोइ धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्तीकप्पेमाणा सुसीला सुव्वया सुपडिणंदा साहू ॥

अर्थ —से० ते जे इ० ए गा० गाम, आगर, नगर जा० यावत् स० सनीवेषने विषे म० मनुष्य श्रावक ज० होय त० ते जेम छे तेम कहे छे अ० थोडा आरम्भी अ०प० अल्प परिग्रहावत, पण लोकोत्तर पक्षे श्रुत चारित्र सहित छे ध० धार्मिक ध० श्री वीतरागना धर्मनी केडे चाले धमि० धर्म वहालो छे जेने धम्म० शुद्ध धर्मना परुपक छे (सुबुद्धि प्रधानवत्) धम्मप० धर्मने विषे वारंवार नजर राखे ध० धर्मने रगे रंगाणा छे तथा लज्जावत ध० धर्मने कोइ छोडावी दइ न शके ध० धर्मने विषे हर्ष सहित आचार छे जेनो ध० अल्प व्रत पचखाण पालता थका वि० आ

जिवोका (वृत्ति) करता थका प्रवर्ते. सु० नला आचार छे जेना सुव० नलां व्रत छे जेनां सु० धर्मने विषे आणंद सहित चित्त छे जेनुं ते सा० धर्म पक्के साधु.

नावार्थः—हवे जुन ! आ पाठमां अल्प आरंनी अने अल्प परिग्रही, ए बे बोल तो श्रावकना न्यारा कह्या. बाकी आठ बोल श्रावकना कह्या तेमज साधुना कह्या. ते पाठः—

सेजेइमे गामागर जाव सणिवेसेसु मणुया नवंति तजहाः- अणारंना अप्परिग्गहा धम्मिया धमिठा जाव धम्मेणं चेव वित्तिकप्पेमाणा सुसिला सुवया सुपडियाणंदा साहू॥

अर्थः—से० तेजे गा० गाम, आगर जा० जावत् स० सनिवेशने विषे म० मनुष्य साधु न० होय तं० ते जेम छे तेम कहे छे. अ०आरंन रहित अ० परिग्रह रहित ध० सर्वधर्मी ध० धर्म वाहालो छे जेने जा० यावत् ध० चारित्र धर्मे करी वि० संजमनो आजिवीका (व्रति) पालता थका सु० नला शीयलवंत सु० सुव्रत सु० नलां आनंदनां चित्त छे जेनां सा० एवा साधु साहु.

नावार्थः—हवे जुन ! आ पाठमां अणारंनो अने अपरिग्रही ए बे बोल साधुना श्रावकथी न्यारा कह्या. बाकी आठ गुण साधुना अने श्रावकना सरखा कह्या छे. धम्मिया धम्माणुया इत्यादिक. हवे आ सूत्रना पाठमां "धर्मी, धर्मनी केडे चाले, धर्म वल्लन, शुद्ध धर्मना परुपक, धर्मने विषे द्रढ, धर्मना रंगे रंगाणाथका, लज्जावंत, धर्मने विषे हर्ष सहित आचार छे जेनो, धर्म व्रत राखीने आजिवीका (वृत्ती) करता थका प्रवर्ते, नलो आचार छे जेनो, नलांव्रत छे जेनां, आनंद चित्त छे धर्मने विषे, धम पक्क साधु." एटला गुणना विरद साधु अने श्रावकना श्री वीतरागदेवे बराबर कह्या छे. आ गुणे करीने साधुने सुपात्र कह्या छे. त्यारे एज गुण साधुना सरखा श्रावकना कह्या छे माटे श्रावक पण सु-

बीजा श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां त्रण पक्ष कह्या छे अधर्म पक्षमां मिथ्यात्वी अव्रती अने अपच्चखाणी १, धर्म पक्षमां साधुजी सर्व पापना त्यागी २, अने मिश्र पक्षमां श्रावक ३ तेमां श्रावकने तो मिश्र पक्षे धर्माधर्मी कह्या ए त्रण पक्षना वर्णवनो घणो पाठ छे ते सूयग डांगमां जोइ लेवो त्यां श्रावकने धर्मी, सुव्रति, आर्य अने एकान्त साचा साधु कह्या छे पछी त्रण पक्षना बे पक्ष कर्या एक धर्म पक्ष अने बीजो अधर्म पक्ष त्यां उदय भाववर्ती अव्रगुणतो बुंदसमान, ते गौणतामां राख्यो गण्या नहीं, अने क्षयोपशमभावना गुण मेरुसमान, ते मुख्यतामां गण्या ते माटे श्रावकने विशेष पक्षे धर्म पक्षमां गण्या छे हवे जुओ! ए पाठमां श्रावकने साधु, धर्मी, सुव्रति अने आर्य कह्या छे, अने तमे कुपात्र कहाछो, तो पूर्वोक्तगुण कुपात्रमां शी रीते होइ शके! वास्ते श्रावक सुपात्रज छे वळी उववाइ सूत्रमां साधु श्रावक बंनेना गुण (बिरद) सरखा कह्या छे ते श्रावकना गुणनो पाठ —

सेजेइमे गामागर णगर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंत्ति त० अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मीया धम्माणुया धमि ठा धम्मक्खाइय धम्मपलोइ धम्मपलज्जणा धम्मसमुदा-यारा धम्मेण चेव वित्तीकप्पेमाणा सुसीला सुव्रया सुप-डिया णदा साहू ॥

अर्थ —से० ते जे इ० ए गा० गाम, अगर, नगर जा० यावत् स० सनीवेषने विषे म० मनुष्य श्रावक भ० होय त० ते जेम छे तेम कहे छे अ० थोडा आरंभी अ०प० अल्प परिग्रहावंत, पण लोकोत्तर पक्षे श्रुत चारित्र सहित छे ध० धार्मिक ध० श्री वीतरागना धर्मनी केडे चाले धमि० धर्म वहालो छे जेने धम्म० शुद्ध धर्मना परुपक छे (सुबुद्धि प्रधान पत्) धम्मप० धर्मने विषे वारंवार नजर राखे ध० धर्मने रगे रंगाणा छे तथा लज्जावंत ध० धर्मने कोइ डेलवो थइ न शके ध० धर्मने विषे हर्ष सहित आचार छे जेनो ध० अक्षरु व्रत पच्चखाण पालता थका वि० आ

जिवीका (वृत्ति) करता थका प्रवर्ते. सु० भला आचार छे जेना सुव्र भलां व्रत छे जेनां सु० धर्मने विषे आणंद सहित चित्त छे जेनुं ते सा धर्म पक्षे साधु.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां अल्प आरंभी अने अल्प परिग्रही, ए बे बोल तो श्रावकना न्यारा कह्या. बाकी आठ बोल श्रावकना कह्या तेमज साधुना कह्या. ते पाठः—

सेजेइमे गामागर जाव सणिवेसेसु मणुया भवंति तजहाः- अणारंभा अप्परिग्गहा धम्मिया धम्मिठा जाव धम्मेणं चेव वित्तिकप्पेमाणा सुसिला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू॥

अर्थः—से० तेजे गा० गाम, आगर जा० जावत् स० सनिवेशने विषे म० मनुष्य साधु भ० होय तं० ते जेम छे तेम कहे छे. अ० आरंभ रहित अ० परिग्रह रहित ध० सर्वधर्मी ध० धर्म वाहालो छे जेने जा० यावत् ध० चारित्र धर्मे करी वि० संजमनो आजिवीका (व्रति) पालता थका सु० भला शीयलवंत सु० सुव्रत सु० भलां आनंदनां चित्त छे जेनां सा० एवा साधु साहु.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां अणारंभी अने अपरिग्रही ए बे बोल साधुना श्रावकथी न्यारा कह्या. बाकी आठ गुण साधुना अने श्रावकना सरखा कह्या छे. धम्मिया धम्माणुया इत्यादिक. हवे आ सूत्रना पाठमां "धर्मी, धर्मनी केडे चाले, धर्म वल्लभ, शुद्ध धर्मना परुपक, धर्मने विषे द्रढ, धर्मना रंगे रंगाणाथका, लज्जावंत, धर्मने विषे हर्ष सहित आचार छे जेनो, धर्म व्रत राखीने आजिवीका (वृत्ती) करता थका प्रवर्ते, भलो आचार छे जेनो, भलांव्रत छे जेनां, आनंद चित्त छे धर्मने विषे, धम पक्ष साधु." एटला गुणना बिरद साधु अने श्रावकना श्री वीतरागदेवे बराबर कह्या छे. आ गुणे करीने साधुने सुपात्र कह्या छे. त्यारे एज गुण साधुना सरखा श्रावकना कह्या छे माटे श्रावक पण स-

पात्रज छे वली पालतजी श्रावकने जगवते मोटी आत्माना धणी शिष्य कह्या छे शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २१ में ते पाठ —

चंपाए पालिएनाम, साविए आसी वाणिए,
महावीरस्स जगवउ, सीसो सोउ महप्पणो ॥ १ ॥
निग्गथे पावयणे, साविए सेवि कोविए,
पोहणे ववहरंते, पिहुर्ण-नगर मागए ॥ २ ॥

अर्थ —च० चंपानगरीने विषे पा० पालीतनामा सा० श्रावक आ० छे वा० वाणीयो वेपार करे म० जगवत श्री महावीर स्वामीनो सि० शिष्य (श्री महावीरे समजाव्यो माटे शिष्य) सो० ते म० महंत आत्मानो धणी नि० निर्ग्रंथ सवधि पा० प्रवचन सिद्धान्तने विषे सा० श्रावक से० ते विशेष को० कोवीद जाण विचीक्षण पो० वाहाणे करी व० व्यापार करतो थको पि० पीहुन्ड नगरे मा० आव्यो ॥ २ ॥

जावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमां पालतजी श्रावकने जगवंतनो शिष्य, मोटी आत्मानो धणी कह्यो तथा जगवतना वचननो रसिक परतीत कह्यो हवे जुओ ! जगवंतनो शिष्य कह्यो ते कुपात्र के सुपात्र ? वली अढार पापने सफल करे ते तो मोटुं पाप मिथ्यात्व, ते तो श्रावकने नथी वली अपचखाणनी क्रिया मूलथीज टाली छे अने अशुज जोगनुं अल्प पाप, ते नथी गण्युं, तेथी साधुना सरखा विरद कह्या एटला वीरदमा एके वीरद हीणु नथी ते माटे श्रावक सुपात्रमां छे सेमारे तेरापंथी कहे छे के "एटला सूत्रमां गुण वखाण्या ते तो मतना पक्षथी क्षयोपशम जावना गुण वखाण्या छे" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीया साधुने पण मतना क्षयोपशम जावना गुणथी वखाण्या छे के शरीर, इंद्रि, जोग, आहार कषाय इत्यादिक उदयजाव, तेथी वखाण्या छे ? जे गुणथी साधुने वखाण्या छे तेज गुणथी श्रावकने पण वखाण्या छे आरंजीयाक्रिया, उपयोगे-रहितपणु, विक्रयँ शरीरपणु, लब्धिस्फोरण, संजलना क्रोध, मान, माया, लोजनो उदय अने राग द्वेष, ए पण आभी

साधुने धम्मीआदि नथी कह्या. क्षयोपशम भाव आत्मिक गुणआश्री साधुने पण 'धम्मिआ' सुपात्र कह्या. तेमज श्रावकने पण क्षयोपशम भावना गुण (ज्ञान, दर्शन, व्रत) प्रगट्या ते आश्री धम्मीआ सुपात्र कह्या. वली उत्तराध्ययन सूत्रना सातमा अध्ययननी वीसमी गाथामां, ग्रहस्थ भद्रीक प्रणामी अनुकंपा सहित होय तेने पण सुव्रती कह्यो छे. ते गाथा:—

वेयमायाहिं सिस्काहिं, जे नरा गिरि सुव्वया; उवेति माणुसं जोणिं कम्म सच्चाहु पाणिणो. ॥

अर्थ:—वे० अनेक प्रकारे सि० भद्रिक प्रणामादिक शिक्षाए जे० जे न० मनुष्य गि० ग्रहस्थ छतां सु० अनुकंपादिकथी सुव्रतपणे उ० पामे मा० मनुष्यनी जो० जोनी क० कर्म ते करणी. स० सत्य वचन बोले तथा दयावंत, एवा पा० प्राणी होय ते मनुष्यपणुं पामे.

भावार्थ:—हवे जुओ ! आ गाथामां मनुष्य मरीने मनुष्य थाय तेने भद्रिकपणाना अनुकंपाना गुण आश्री ग्रहस्थपणामां सुव्रति भगवंते कह्यो. त्यारे श्रावकने सुव्रति सुपात्र केम नही कहेशो ? शाह्या हो ते वीचारी जो जो. वली साध श्रावक बंनेने भगवंते रत्ननी माला कही छे ते माटे बंनेने सुपात्र कहीए.

तेवारे तरांपथी कहे छे के, " साधुने अने श्रावकने रत्ननी माला कही तो छे, पण साधुने मोटी अने श्रावकने नानी कही छे. " एम कहे छे. पण भगवंते तो छोटी मोटी कही नथी. एक सरखी कही छे. शाख सूत्र भगवंती शतक १६ में उद्देशे. छठे ते पाठ:—

जेणं समणे भगवं महावीरे एगं महं दाम दुगं सव्व रयणामयं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे. तएणं समणे भगवं महावीरे दुविहे धम्मे पणवेई तं० आगार धम्मंवा अणगार धम्मंवा ॥ ४ ॥

अर्थ —जे० जे स० श्रमण जगवत श्री महावीरस्वामी ए० एक म० मोटी दा० मालानो जु० जोमो स० सर्व र० रत्नमय सु० स्वमने विषे पा० देखीने प० जाग्या त० ते स० श्रमण जगवत श्री महावीर देवे दु० वे प्रकारे ध० धर्म प० परुप्यो त० ते कहे छे -आ० ग्रहस्थनो सम्यक पूर्वक बारव्रतरुप धर्म अने अ० साधुनो ध०पच महाव्रतरुप धर्म

जावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमा तो कह्यु छे के, जगवत श्री महावीर स्वामीए एक मोटी मालानो (जुगल) जोमो दीठो तेना प्रजावे जगवते बे प्रकारनो धर्म परुप्योः श्रावकनो अने साधुनो इहा तो एक माला बे सेरनी देखी, एवो परमार्थ दीसे छे ठोटी मोटी तो कही नथी हवे ठोटी मोटी बे माला कहे छे तेने पुछीए के, रत्न समकितने कहीए के व्रतने कहीए ? सूत्रमा केवी रीते छे ? ए देखता तो तमे व्रतने रत्न कहेता देखाओ छो, पण सूत्रमा तो समकितने रत्न कह्यु छे प्रथम तो ज्ञाता सूत्रना पहेला अध्ययनमा मेघकुमारने श्री वीरजगवाने " अपमिलद्ध समत्तरयण लजेण " कह्यु छे, पण क्रियारुप धर्मने तो रत्न कह्यु नथी हमणाना चार तीर्थ पण एम कहे छे के " मारा समकित रुपी रत्नने विषे जे अतिचार लाग्यो होय ते आलोठ " एम कहे छे, पण व्रतने तो रत्न कहेता देखाता नथी माटे समकित तेज रत्न छे, कारण के जेने प्राप्त थये शुक्लपक्षी अने अर्धपुद्गलमां निश्चे मोक्षगामी थवाय, पण क्रिया रत्न नथी जो क्रिया रत्न होय तो अज्ञानीने मुक्ति केम नथी ? वली सूत्र जगवतीमा समकितने पमा कही छे अने क्रियाने तो अपमा कही छे क्रिया तो जीवे अनतीवार करी, पण गरज न सरी, ते माटे रत्न नथी वली क्रिया तो स्त्रीरुप छे अने ज्ञान तो जरथाररुप छे वली अनुयोगद्वारमां क्रियाने आंधली कही छे अने ज्ञानने पागलो कह्यो छे जेम रथ एक पइमाथी न चाले, पण बे पइमाथी चाले, तेम ज्ञान अने क्रियाने सयोगे फलनी सिद्धि कही वली दस वैकालीक सूत्रना चोथा अध्ययनमा 'पढमनाण तओदया' ए गाथाथी लइने चोथी गाथा सुधी समकित सहित क्रियाने सजम कह्यो छे, अने

मिथ्यात्वी अन्नव्य, व्यवहारमां उत्कृष्टो संजम पाले तोपण समकित रहित ठे तेथी असंजमी कह्यो. इत्यादिक अनेक सूत्र पाठमां समकितने रत्न कह्युं ठे अने साधु श्रावक बंनेने सरखुंज ठे. साध श्रावकने रत्ननी माला पण समकित आश्री कही ठे ते बंने सरखी ठे. नानी मोटी सूत्रमां कोइ ठेकाणे कही नथी. वली साधुने तो सुपात्र कहीए अने श्रावकने न कहीए, एवो खुल्लो पाठ तो सूत्रमां कोइ ठेकाणे कह्यो दीसतो नथी. साधु साधवीने क्षयोपशम न्नावना गुणे करीने सुपात्र कहो गो, त्यारे आणंदजी सरखा श्रावकने क्षयोपशम न्नावना गुण प्रगटया तेथी श्रमण सरखा कह्या; तेने एटला सूत्रना पाठ नत्थापीने मतना लीधे कुपात्र कहीने अठतां आल केम द्यो गो ?

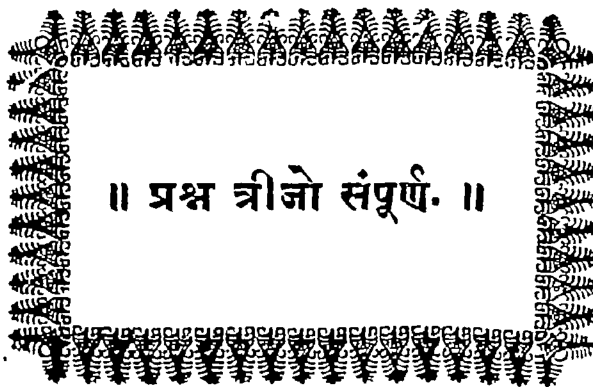
वली तेरापंथी कहे ठे के "श्रावक खावा पीवाना, कपमा घरेणां पहेरवाना तथा सर्व वस्तुना त्याग करे तेने व्रत कहीये. ते नपवास व्रत करे तो धर्म, बीजाने करावे तो धर्म, अने करताने न्नलो जाणे तो धर्म; पण तेनो आहार अपचखाणमां अने आगारमां ठे. तेथी पारणाना दीवसे पोते खाय तो पाप, बीजाने खवरावे तो पाप, अने खाताने न्नलुं जाणे तो पाप." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एम तो साधु एक पठेमी तथा एक पात्रा उपरान्त त्याग करे तो ते न्नत्तर-गुणव्रत पचखाण निपजे; अने आहारनो त्याग करे तो उपवासनो न्नत्तर-गुण पचखाण निपजे; अने आहारादिकनो त्याग न होय त्यारे न्नत्तर-गुणना अपचखाण कहीए. हवे तमारी कहेणीने लेखे तो साधुना खावामां पण पाप हशे; पण न्नगवंते तो साधु श्रावक बंनेने आहारादिकना त्यागने न्नत्तर-गुणव्रत पचखाण कह्या ठे, अने त्याग न होय त्यारे आहारादिकना न्नत्तर-गुण अपचखाण साध श्रावक बंनेने कह्या ठे. माटे हे देवानुप्रीय ! अव्रत तो साधु के श्रावक एकेने नथी. साधु तो सर्व व्रति ठेज, अने श्रावकने पण अव्रतनी क्रीया टाली ठे; अने तेने पचखाणापचखाणी कह्या ते तो शुन्नाशुन्न [illegible] आश्री ठे. ते साध श्रावक बंनेने शाख सूत्र न्नगवतीजी शतक सातमे नद्देशे बीजे. ते पाठः—

कइविहेणं भंते ! पच्चक्खाणे प०? गो०! दुविहे पच्चक्खाणे पं० त० मुलगुणपच्चक्खाणेय उत्तरगुणपच्चक्खाणेय मुलगुणपच्चक्खाणेणं भंते! कइ विहे प० ? गो०! दुविहे प० तं० सव्वमुलगुणपच्चक्खाणे देसमुलगुणपच्चक्खाणे सव्वमुलगुणपच्चक्खाणेणं भंते! कइविहे प० ? गो०! पंचविहे प० त० सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं जावसव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं देसमुलगुणपच्चक्खाणेणं भंते! कइविहे प० ? गो०! पंचविहे पं० त० थुलाउपाणाइवायाउवेरमणं जावथूलाउपरिग्गहाउवेरमणं उत्तरगुणपच्चक्खाणेणं भंते कइविहे प० ? गो० ! दुविहे प० त० सव्वउत्तरगुणपच्चक्खाणेय देसुत्तरगुणपच्चक्खाणेय सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणेणं भंते कइविहे पं०? गो० ! दसविहे प० त० गाहा अणागय १ मइक्कंतं २ कोडिसहिय ३ नियंटियचेव ४ सागार ५ मणागार ६ परिमाणकडं ७ निरवसेस ८ सकेयंचेव ९ अद्धाइ १० पच्चक्खाणेणं भवे दसविहा ॥ देसुत्तरगुणपच्चक्खाणेणं भंते! कइविहे प० ? गो० ! सत्तविहे प० तं० देसियवयं उवभोग परिभोग परिमाण अणठदण्डवेरमणं सामाइयं देसावगासिय पोसहोववासो अतिहिसविभागो अपछिममारणांतिय सलेहणा जुसणा राहणाया ॥

अर्थ —पुर्ववत् गुरु प्रश्न पहेले पाने चोथे

भावार्थ —हवे गुरु ! आ पाठमां बे प्रकारना पचखाण कह्यां मूलगुण-पचखाण अने उत्तरगुण पचखाण मूलगुण पचखाणना भेद —सर्व मूलगुण-पचखाण अने देश मूलगुण पचखाण उत्तरगु पचखाणना बे भेद —सर्व उत्तरगुण-पचखाण१ अने देश उत्तरगु

पचखाण२. सर्व मूलगुण-पचखाण तो पांच आश्रवना सर्व त्याग करे तेने कहीए, ते तो साधुजीनेज होय. वली वर्णनागनतुवे अने अंबडजीना शिष्य प्रमुख अनेक श्रावकोए संथारा कर्या तेमने तथा पडिमाधारी प्रमुख श्रावकने पण त्याग थया; अने हिंसादिक पांच आश्रवना देश थकी त्याग करे ते श्रावकने देश-मूलगुण-पचखाण थाय; अने सर्व उत्तरगुण-पचखाण नवकारसी, पोरसी, पुरिमढ, एकासणुं, एकलठाणुं, नीवी, आयंबील, उपवास, बेला,तेला, जावत् संथारो, ए साधु श्रावक सर्वथा आहारादिकना त्याग करे तेनेज निपजे; अने श्रावकनां उपलां सात व्रत (छठाथी लइने बारमा सुधी) ए देश उत्तरगुण-पचखाण श्रावकने तो छेज; अने साधुने केटलाक तो पचखाण पांच आश्रवना सर्वथा त्याग छे तेमां आवी गया अने केटलाक साधुना वेशना व्यवहारनी साथे आवी गया. बाकी द्रव्यादिक अहार, उपगर्ण, वस्त्र अने पात्रादिकना देशथकी त्याग करे त्यारे साधुजीने देशथकी उत्तरगुण-पचखाण निपजे. वली हिंसादिक पांच आश्रवना सर्वथकी त्याग अथवा देशथकी त्याग न होय तेने मूल-गुणना अपचखाणी कहीए; अने आहार वस्त्रादिकनो सर्वथकी अथवा देसथकी त्याग न होय तेने उत्तरगुणना अपचखाणी कहीए. ए लेखे श्रावक सुपात्रमां छे अने तेना दानमां प्रणामानुसारे दातारने फलनी प्राप्ती थाय छे. तमे श्रावकने कुपात्र कहीने श्रावकनी अशातना-रुप अबोध पाप केम उपार्जन करो छो ?



॥ प्रश्न त्रीजो संपूर्ण. ॥

प्रश्न चोथो.

साधुनो आहार, हालवुं, चालवुं इत्यादि, व्रतमां (धर्ममां) छे, एम कहे छे ते बाबत.

हवे जुओ! ए सातमा शतकना बीजा उद्देशामां साधु श्रावक बंनेने आहार वस्त्रादिकना त्यागने उत्तरगुण-पचखाण कह्या; अने आहार वस्त्रादिकनो त्याग न होय तो उत्तरगुणना अपचखाण कह्या. हवे तमे (तेरापंथी) कहो छो के "श्रावकने पारणाने दीन आहारादिकनो त्याग नथी. आहारनो आगार छे. तेने अव्रत अपचखाण कहीए. तेथी श्रावकनुं खावुं पीवुं पापमां छे." ए लेखे तो साधुजीने पण पारणाने दीन आहारनो त्याग नथी. ते आगारने भगवंते तो साधु श्रावक बंनेने उत्तरगुणना अपचखाणी कह्या छे, ए तमारी केहेणीने लेखे तो साधु पारणाने दीन खाय तेमां पण पाप हशे. कोइ श्रावक आरंभ करीने खाय ते आरंभनुं पाप तो न्यारुं छे, पण आहारना अपचखाण आश्रीतो साध श्रावक बंनेने सरखा कह्या छे, ते उदयभावमां छे. जेम उंच गोत्र, मनुष्यनी गति, पंचेन्द्रिनी जात अने पांच शरीर, इत्यादि उदयभावमां छे. ते धर्म पाप एकेमां नथी. एथी धर्म करे तो धर्म निपजे अने पापनां काम करे तो पाप निपजे. तेम साध श्रावकने आहारादिकनुं खावुं उदय-भावमां छे. ते धर्म पाप एकेमां नथी. जो शरीर वधारवा निमित्ते रागद्वेष अने अशुभजोगथी खाय तो साध श्रावक बन्नेने पाप लागे; अने ज्ञान, दर्शन अने व्रत नभाववाने अर्थे खाइने शुभ भावना भावे तो बन्नेने निर्जरा थाय.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " साधुनुं तो हालवुं, चालवुं, आहार करवो, निहार करवो, बोलवुं, सर्व काम व्रतमां छे धर्ममां छे. एम कहां-

वैकालीक सूत्रमा कह्यु छे " एवु सूत्रनु जुदु नाम लेछे ते दशवैकालीक सूत्रना पाचमा अध्ययनना पहेला उद्देशानो पाठ —

उज्जुपणो मणुव्विग्गो, अविक्खित्तेण चेअसा,
आलोय गुरु सग्गासे, जं जाहा गहिय जवे ॥ ए० ॥
नसम्म मालोइयं हुज्जा, पुव्वं पछा वजा कडं,
पुणो पमिक्कमे तस्स, वोसठो चिंतए इम ॥ ए१ ॥
अहो जिणेहिं असावद्या, वित्ति साहुण देसिया,
मोरकसाहण हेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥ ए२ ॥
नम्मुकारेण पारित्ता, करित्ता जिण सथव,
सज्झाय पंठवित्ताण, विसमिद्य खण मुणी ॥ ए३ ॥

अर्थ —उ० सरल मतिवंत म० उद्वेग रहित थतो अ० एकाग्र चित्ते आ० आलोवे गु० गुरुनी समिपे ज० जे जा० जेम ग० जात पाणी लीधु ज० होय तेम न० जो सम्यक् प्रकारे मा० आलोव्युं हु० न होय पु० पुर्व कर्म प० पश्चात कर्म क० अतिचार कीधो होय पु० ते वली प० पमिक्कमामि गोयरियाए इत्यादिक पाठ कहीने काउसग्ग करे. त० ते सुक्ष्म अतिचारनु पाप टालवाने अर्थे कायोत्सर्ग करे वो० ते कायोत्सर्गमा चिं० चिंतवे इ० आगल कहेशे तेम अ० आश्चर्य जि० ती र्थंकरे अ० पाप रहित वि० आजीविका सा० साधुने दे० देखाडी कही छे मो० मोक्ष साधवाना हे० हेतुजणी सा० साधुनी दे० देहने धा० आ धार देवाने अर्थे न० नमो अरिहंताणं कहीने पा० काउसग्ग पारीने, क० करीने जि० जिन सस्तव (लोगस्स) कही स० एहेठे बेठा पछी जघन्य तो गाथा त्रणनो सज्झाय प० करीने वि० विसामो ले ख० क्षण एक मु० साधु

जावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमां तो एम कह्यु छे के, साधु गो चरीथी पाछा आवीने आहारना अतिचार एषणिक अणेषणिक आलो व्या, कोइ शुक्ष्म दोष भुली गया होय तो ते टालवाने अर्थे, काउसग्ग

मां एवी चिंतवणा करे " अहो इति आश्चर्ये ! श्री तीर्थंकरे मोक्ष साधवाना हेतु भणी साधुनी देहने आधार देवाने अर्थे पाप रहित आजीविका साधुने देखाडी. " पछी 'नमो अरिहंताणं' कहीने काउसग्ग पारे. पछी (जीन स्तवन) लोगस्स कहीने, जघन्य त्रण गाथानी सज्झाय करीने साधु क्षण एक विसामो ले. ए त्रण गाथामां तो साधु ध्यानमां एवी चिंतवणा करे, एवो अधिकार कह्यो छे; पण साधुनो आहार व्रतमां क्यां कह्यो छे ते पाठ बतावो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, बाणुमी गाथाना बीजा पदमां 'वित्ति-साहुणदेसिया' एवुं पद कह्युं छे तेथी साधुनो आहार व्रतमां कहीए छीए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अहीयां तो 'वित्ति' नाम आजीविकानुं कह्युं छे. बेतालीश दोष टालीने ले तेथी साधुनो आजीविका पाप रहित छे. जो वित्ति शब्द कह्यो तेथी साधुनो आहार व्रतमां कहो तो एवा पाठ तो सूत्रमां घणा कह्या छे. सूत्र भगवतीजी शतक बारमे उद्देशे बीजे, भगवंते अधर्मी जीवने सुता भला कह्या. तेमां 'वित्तिकप्पेमाणा विहरइ' एवो पाठ छे. अधर्मी जीव अधर्मनी आजीविका करता विचरे छे. ए वित्ति शब्द आजीविकानो कह्यो छे. तमारे लेखे तो इहां पण वित्ति शब्दनो अर्थ व्रत हशे. ए अधर्मी जीव सुता भला कह्या, एनो पण आहार व्रतमां हशे. वली उववाइ सूत्रमां स्त्री विना मन शील पाले ते पाठमां पण 'वित्तिकप्पेमाणा विहरइ' छे. इहां पण 'वित्ति' शब्द छे. तमारे लेखे तो एनो पण आहार व्रतमा हशे. वली उववाइ सूत्रमां श्रावकना गुणमा 'धम्मेणं चेव वित्तिकप्पेमाणा विहरइ' कह्युं छे. इहां पण वित्ति शब्द छे. ए श्रावकनो पण आहार व्रतमा हशे.

वली सूयगडांग सूत्रमां अधर्म पक्षमां 'अहम्मेणं चेव वित्तिकप्पेमाणा विहरइ' कह्युं छे. इहां पण 'वित्ति' शब्द छे. माटे ए अधर्मी पुरुषोनो पण आहार व्रतमां हशे. जेम दशवैकालीक सूत्रमा वित्ति शब्दे साधुनो आजीविका कही अने आजीविकाने आहार कह्या. तेम एटली जग्योए पण वित्ति शब्दनो अर्थ आजीविका कीधो, ते सधानो आहार

मतमा हशे ए विति नाम तो आजीविकानु छे तमे ए शब्दथी साधुनो आहार मतमा कहीने एवा खोटा अर्थ केम करोछो ? वली साधुजीनो आहार मतमा धर्ममा कहे तेने पुछवु के, साधुजीजे आहार करवाथी क्यु व्रत निपजे ते कहो केमके साधुजी तो सर्व व्रती छे, अने तेमणे ज्यारे साधुपणु लीधु त्यारे क्यु व्रत अधुरु राख्यु के तेछ आहार करी करीने पुरु करे ते कहो साधुजी तो मूलगुणना सर्व व्रति छे अने ज्यारे आहारना त्याग करे त्यारे उत्तरगुण व्रत निपजे वधी साधुजीनो आहार मतमा धर्ममा कहेछे, तेने पुछवुं के, व्रत धर्म छ भाव माहेला कया भावमां छे? अने आहार करवाना प्रणाम, ए कया भावमाछे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "व्रत धर्म तो उपशमभाव, क्षयोपशमभाव तथा क्षायक भावमा छे, अने अहार करवाना प्रणाम तो उदय भावमा छे" त्यारे हे देवानुप्रीय! व्रत धर्म तो छठे गुणठाणे बहुलताए क्षयोपशम भावमा छे, अने साधुनु हालवु, चालवु, बोलवुं, आहार करवो, उंघवु अने नदी उतरवी, ए सर्व कार्य तो योगनी चपलतानो छे अने ते तो सर्व उदय भाववर्ति छे ए उदय भावना कामने व्रत धर्म केम कहो छो ? केमके धर्म तो क्षयोपशमभावे छे वली आहारने धर्म कहो तो, अनुयोगद्वार सूत्रमा उपशम भाव तो मोहनीकर्मनुं उपशमाववु तेने कहीये ते उपशम निपन्नना अग्यार बोल कह्या क्षयोपशम ते चार घातिक कर्मनो क्षयोपशम ते क्षयोपशम निपन्नना पचास बोल कह्या क्षायक भाव ते आठ कर्मनो क्षय ते क्षायक निपन्नना सात्रीस बोल कह्या हवे साधुनो आहार कया बोलमा छे ते कहो ए उदयभावने व्रतना मार्यां धर्म केम कहोछो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "ए आहार करवाना प्रणाम तो क्षयोपशम भावमां नथी, उदयभावमा छे, पण साधु आहार करतां मुक्तिना सारनी (ज्ञानादिक विनय वेयावचनो) चितवणा करे अने भला भाव वर्तावे, ते शुभ योगथी निर्जरारुप धर्मनिपजे" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! साधुनो आहार करवो, हालवु, उघवु, एतो पूर्व कर्मना उदयभावना

जोगथी छे. एमां पूर्व कर्मनी सत्ता जेम रस दे छे तेम जोगनी चपलताइ वर्ते छे. तेमां तो लगार मात्र पण क्षयोपशम धर्म निर्जरारुप लाभ नथी; अने आहारादि करतां ज्ञानादिकनी चिंतवणा भला भाव प्रवर्तावे छे ते शुद्ध उपयोग आत्मिकभाव जाणवो. एतो आत्मानुं मूल लक्षण छे. ए शुद्ध उपयोग आत्माना घरनो छे ते न्यारो छे. आहारादिक करवाना भाव ते जोग प्रवर्तन पुदगलना घरनो छे, ते उदयभाव वर्त्ते छे ते न्यारो छे. वली जो साधु आहारादि करतां भला भाव वर्तावे तेमां निर्जरारुप धर्म कहो छो, त्यारे श्रावकना आहारादिकमां पण धर्म कहेवो पडशे; कारण के श्रावक पण आहारादिक करतां आत्मनिंदा करे, रागादिक दोषरहित प्रणामे आहार करे अने आहार करतां भली भावना भावे, ते शुद्ध उपयोग क्षयोपशम भावनो छे. ते शुद्ध उपयोगथी श्रावकने पण निर्जरारुप धर्म थशे. ए लेखे तो साधु श्रावक बंनेने उदयभाव भोगवतां राग द्वेष अशुभ जोग वर्तशे तो पाप लागशे; अने धर्मनो साहाज जाणीने रागद्वेष रहित खाशे, भली भावना भावशे अने शुभ जोग वर्तावशे तो बंनेने निर्जरारुप लाभ थशे. वली कोइ श्रावक आरंभ करीने खाय ते आरंभनु पाप न्यारुं छे, पण खावा आश्रीतो शुभाशुभ योग वर्तशे तेवां फल बंनेने लागशे. जेम साधु उदयभावना काममां राचे तो साधुने पाप लागशे, अने उदय भावमां नहिं राचे तो तेमां गुण छे. तेमज श्रावक पण उदयभावमां नही राचे तो गुण थशेज; पण श्रावकनुं खावुं तो पापमां अने साधुजीनुं खावुं व्रत धर्ममां, एम कया सुत्रना आधारे कहो छो ते पाठ बतावो.

वली साधुनो आहार जो धर्ममां होय तो ते हर्ष प्रणामे करवो जोइए; पण भगवंते तो जेवा प्रणामथी धनासार्थवाहे पोताना पुत्रना मारणहार विजय चोरने आहारनो भाग दीधो, तेवा प्रणामथी साधुए आहार करवो कह्युं छे. शाख सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन बीजे. ते पाठः—

तएणांसे धन्नेसछवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवाग-

उइ २ त्ता ततेणं सा भद्दासत्थवाहि धणसत्थवाहं एज्जमाणं पासइ २ त्ता नो-आढाइ नो-परियाणाइ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परमुही सचिठति. ततेणं से धणेसत्थवाहे भद्द भारियं एव वयासी किन्नं तुब्भ देवाणु-प्पिया नतुठीवा नहरीसोवा नाणंदोवा जए मए सएणं-अठ सारेण रायकज्जाउ अप्पाणं विमोइए ततेणं सा भद्दा धणसत्थवाह एववयासी कहण देवाणुप्पिया! मम तुठिया जाव आणंदेवा भविस्सइ जेण तुम्म मम पुत्त घायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताउ विउलाउ असण ४ सविभागे क-रेसि ततेणं से धणेसत्थवाहे भद्द भारियं एववयासी नो खलु देवाणुप्पियाए धम्मोतिवा त्तवोत्तिवा कयपडिकइयावा लोग-जत्ताइवा नायपडियावा सघाडियएत्तिवा सुहाएत्तिवा, सुहीत्तिवा ततो विउलाउ असण ४ सविभागेकए, ननत्थ सरिरचिंताए ततेण सा भद्दा धणेणंसत्थवाहेणं एव वुत्ता-समाणी हठतुठा जाव आसणाउ अब्भूठेइ २ त्ता कंठा-कंठिय अवयासेइ खेमकुसल पुछइ २ त्ता न्हाया जाव पायछिन्ना विउलाइ भोग भोगाइ भुंजमाणी विहरइ ज-हाण जंबु! धणेणंसत्थवाहेण नो-धम्मोतिवा जाव विजयस तक्करस्स ताउ विउलाउ असण ४ सविभाग कए ननत्थ सरिर सारक्खणठाए एवामेव जंबु! जेण अम्ह निग्गंथेवा निग्गंथिवा जाव पव्वइए-समाणे ववगय ण्हाणु मद्दणु पुप्फ गंध मल्लालंकार विभूसिए इमस्स उरालिय-सरिरस्स णो-वणहेउवा रुवहेउवा विसयहेउवा तविउल असण ४ आहारमाहरंति ननत्थ णाण दसण चरित्ताणं वहणठयाए

सेणं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणय बहूणं सावीयाणय अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे भवइ. परलोइवियणं नोबहुणि हत्थछेयणाणिय कन्नछेयणाणिय णासाछेयणाणिय. एवं हियउप्पायणोणिय वसणुप्पायणाणिय उलंबणाणिय पाविहिंति अणाइयं- चणं अणवदग्गं दीहमधं जाव विइवइस्संति. ॥

अर्थ—त० तेवारे से० ते ध० धनोसार्थवाह जे० ज्यां भ० भद्रा भार्या छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने त० तेवारे सा० ते भद्रासार्थवाही ध० धनासार्थवाहने ए० ए आवता पा० देखे, देखीने नो० आदर न दे नो० प० भलो न जाणे अजाणयानी पेरे ओलखे नही. अ० अण आदर करती अप० अजाणती तु० अणबोलती प० उपरांठी थइ सं० उभी रही. त० तेवारे से० ते ध० धनोसार्थवाह भ० भद्रा भार्याने ए० एम कहे:-किं० शा माटे तु० तमे दे० हे देवानुप्रीय ! नतु० संतोष न पामी नह० हर्ष न पामी नाणं० आनंद न पामी ? जं० जे म० में स० पोताना अर्थे स० द्रव्य आपीने रा० राजकार्यथी अ० मारा आत्माने वि० मुकाव्यो. त० तेवारे सा० ते भ० भद्रा ध० धनासार्थवाहने ए० एम कहे: क० क्यांथी दे० हे स्वामी ! म० मुझने तु० शंतोष होय जा० जावत् आ० आनंद भ० होय ? जे० जे तु० तमे म० मारा पु० पुत्र घा० घातकने जा० जावत् प० वेरीने ता० ते वि० विस्तीर्ण अ० अस्नादि चार सं० संविभाग कर्यो. आहारादिक आप्यो. त० तेवारे से० ते ध० धनोसार्थवाह भ० भाद्रा भार्याने ए० एम कहे:-नो० नही ख० निश्चे दे० हे देवानुप्रीया ! ध० धर्म हेते, त० तप हेते, क० परभवमां फल थशे एम जाणीने, लो० लोक लज्याए ना० नातीलाना मेलानो प्रवर्तक जाणीने, सं० सहचारी जाणीने, सु० सखाइयाना कार्य करवाने विषे जाणीने, के सु० सुखाइया सुखी मित्रपणुं जाणीने, त० ते वि० विस्तीर्ण अ० अस्नादि चार सं० व्हेंची आप्यो (नथी); पण न० एटलुं विशेष

स० शरीरनी चिंताने अर्थे अन्नादि दीधु छे ए सर्व वात कही त० तेवारे सा० ते ज० जद्रा ध० धनासार्थवाहनु ए० एम वु० कहेवु सा जली साधु माने, मानीने एवा बोलथी ह० हर्ष संतोष पामी जा० जावत् आ० आसनथी अ० उठे, उठीने क० कोटे कोट वलगाडीने अ० आलिंगन दीधु पठी खे० क्षेम कुशल पु० पुछे, पुछीने न्हा० न्हाइ जा० यावत्० पा० प्रायश्चित छेद्या वि० विस्तीर्ण न्नो० मनुष्य सबधी कामन्नोग जु० न्नोगवती थकी वि० विचरे ज० जेम ज० हे जबु! ध० धनासार्थवाहे नो० धर्मने अर्थे नही जा० जावत् वि० विजय त० चोरने सा० ते वि० विस्तीर्ण अ० अस्नादि चारमाथी स० सविन्नाग कर्यो, न० पण एटलु विशेष स० शरीरनी सा० रक्षाने अर्थे अन्नादिक दीधुं ए० एम ज० हे जबु! जे० जे अ० अमारा नि० निर्ग्रंथ साधु साधवी जा० जावत् प० चारित्र लीधे थके, व० रहित एहा० स्नान म० मर्दन पु० फुल ग० गध म० माला अ०अलकार वि० विजुषा रहित इ० ए प्रत्यक्ष उ० उदारिक सरीरनो णो०व० वर्ण रुपो थाय ए हेते नही ई० रुप हेते नही तेमज वि० विषय हेते पण नहिं त० ते विस्तीर्ण अ० अस्नादि चार आ० आहार करे, पण न० एटलु विशेष णा० ज्ञान द० दर्शन अने च०चारित्रना व० निर्वाहने अर्थे आहार करे से० ते इ० ए लोके चे० निश्चे व० घणा स० साधुने व० घणी सा० साधवीने व० घणा सा० श्रावकने व० घणी सा० श्रावीकाने अ० अर्चनिक जा० जावत् प० सेवा करवा योग्य ज० थाय प० परलोके पण नो० नही व० घणा ह० हाथ छेदाय क० कान छेदाय णा० नासिका छेदाय ए० एम हि० हैयानु उ० उपाडवु न थाय व० गुह्य अवयवनु उपाडवु न थाय उ० उंलन्नाना वचन न कहे पा० दुःख न पामे अ० अनादी अ० अत रहित दी० दीर्घ लाबा पथरुप जा० यावत् वि० ससारने उल्लघीने पार पामे

न्नावार्थ —हवे जुओ! आ पाठमा कह्यु छे के, धनासार्थवाहे न्नद्रासार्थवाहीने एम कह्युं के, पुत्रना मारणहार विजय चोरने मारा

आहारमांथी जाग दीधो, ते सज्जन, मित्र, बंधव जाणीने तथा धर्म तप जाणीने दीधो नथी; पण एक खोडामां बंनेना पग हता ते विजय चोर मारी साथे मारा शरीरनी चिंता टालवाने वास्ते चाले नही, ते शरीरनी अबाधा टाळवाने वास्ते दीधुं छे एम कह्युं. हवे तेना उपर श्री सुधर्मास्वामी जावार्थ मेलवे छे के, हे जंबु ! धनासार्थवाहनी पेरे मारा साध साधवीए आहारादि करवो. जेम धनासार्थवाहे चोरने आहारादिक देवामां धर्मतप जाण्यो नही, तेम साधु साधवीए आहारादिक करवामां धर्म तप मानवो नही; तथा शरीरनी शोजा तेमज रुप, वर्ण वधारवाना जावथी करवो नही, पण जेम धनासार्थवाहे शरीरनी चिंता टालवाने अर्थे विजयचोरने आहारादिक दीधो, तेम साध साधवीए फक्त ज्ञान, दर्सन अने चारित्रना निर्वाहने अर्थे आहारादि करवो; तथा शरीरने पुत्रना मारणहारा सरीखो जाणीने उदासीन प्रणामे अहार करवो. हवे जो आहारादिक करवामां धर्म होय तो हर्ष प्रणामथी करवो एम केहेत. माह्या हो ते विचारी जोजो.

वली बीजा धनासार्थवाहे जेम बेटीनुं मांस खाधुं, तेनी परे साधुए निरुछ्गाह जावे आहारादिक करवो कह्यो छे. तेनी शाख सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन अढारमें. ते पाठ लखीये छीयेः—

ततेणं से धणेसछवाहे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछठेहिं चिलाःयंतिसे आगामियाए सवंउस्समंता परिघाम्मेमाणा तण्हाए छुहाएय परज्जत्तेसमाणे तीसे आगामियाए सवउ सम्मंता उदग्गस्स मग्गणं गवेसणं करेति संते तंते परितंते णिवत्ते तीस्से आगामियाए सवउ-सम्मंता उदगं अणासाएमाणे जेणेव सूसूमा जीवियाउ ववरोविया तेणेव उवागछइजेठं पुत्तं धणेसछवाहे सद्दावेई एवं वयासी एवं खलु पुत्ता सूसूमाए दारियाए अठाए चिल्लायं तक्कर सव उसम्मंता

परिघासेमाणे तण्हाए छुहाएय परऊहेसमाणे तीस्से आ-
गामियाए छुहाए अभिभूयासमाणा इमीसे आगामियाए
अरुविए उदगस्स मग्गण गवेसण करेमाणा णो चेवण
उदग आसाएमो उदग आणासाएमाणा णोसचाएमो राय-
गिह सपावित्तए तएण तुऊे मम देवाणुप्पिया जीवियाउ
ववरोवेह मम मसच सोणियच आहारेह तेणं आहारेण
अवथद्धासमाणा ततोपच्छा इम आगामिय अरुवि णिच्छ-
-रह रायगिह सपावेहिह मित्तणाइ अभिसमगच्छिह
अभिस्सय पुणस्सय आभागी भवीसह ततेणंसे जेठे पुत्ते
धणेणंसछवाहेणं एवंवुत्तेसमाणे धणसछवाह एवं वयासी
तुम्भेण ताउ अम्हं पिया गुरुजणाया देवयभूया ठवप्पा
पत्तिठवप्पा संरक्कणा सगोवगा त कहयं अम्हे ताउतुम्भे
जीवियाउ ववरोवेमो तुम्भेण मंसं च सोणियंच आहारेमो
तं तुम्भेण ताउ मम जीवियाउ ववरोवेह मसच सोणियंच
आहारेह आगामिय अरुविं णिच्छरह तचेव सर्व भणाइ
जाव अह आभागी भविसह ततेणं धणंसत्थवाहं दोचे
पुत्ते एवंवयासि माण ताउ अम्हे जेठ भायरं गुरुदेवय
जीवियाउ ववरोवेमो तुम्भेण ताउ मम जीवियाउ ववरोवेह
जाव आभागी भविस्सह एव जाव पंचमे पुत्ते ततेणं
से धणेसत्थवाहे पच पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता ते
पंचपुत्ते एववयासी माणं तुम्हे पुत्ता एगमवि जीवियाउ
ववरोवेमो एसण सूसूमाए दारियाए सरिरए णिप्पाणे
जावजीव विप्पजहे त सेयं खलु पुत्ता अहं सूसूमाए
मसंच सोणियच आहारित्तए ततेण अम्हेतेणं आ-

हारेणं अवधट्ठासमाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो. ततेणं ते पंचपुत्ता धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्तासमाणा एयमट्ठं पडिसुणेत्ति. ततेणं धणेसत्थवाहे पचहिंपुत्तेहिंसद्धि अरणिंकरेइ २ त्ता सरगं करेइ २ त्ता सरएणं अरणि महेइ २ त्ता अग्गिपाडेइ २ त्ता अग्गिसिंधुकेइ २ त्ता दारुयाइं पक्खिवइ २ त्ता अग्गिपज्जालेइत्ता सूसुमा दारियाए मंसंच सोणियंच आहारेइ तेणं आहारेणं अवधट्ठासमाणा रायगिहं णयरि संपत्ता मित्तणाइ अभिसमणागया तस्सय विउलस्स धण कणग रयण जाव आभागी जायाविहोत्था. ततेणंसे धणेणंसत्थवाह सूसुमा दारियाए बहुइं लोगयाइं जाव विगयसोए जाएयाविहोत्था. तेणं कालेणं २ समणे भगवंमहावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे ततेणं धणेसत्थवाहे सपुत्ते धम्मेसोचा पव्वइयो एकारसंगवि मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववणे महाविदेहवासे सिज्झिहिंति. जहा वियणं जंबु! धणेणंसत्थवाहेणं णो वणहेउवा नो रुवहेउवा णोबलहेउवा नोविसयहेउवा सूसूमाएदारियाए मंसंसोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए. एवामेव समणाउसो जो अम्हं णिग्गंथोवा णिग्गंथिवा इमस्स उरालिय सरिरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्स विप्पजहियव्वस्स नोवणहेउवा नोविषयहेउवा आहारंआहारेत्ति नन्नत्थ एगाए सिद्धि गमणं संपावणट्ठयाए. सेणं इह भवे चेव बहुणं समणाणं बहुणं समणीणं बहुणं सावयाणं बहुणं सावियाणं अवचणिज्जे जाववीतीवस्सती॥

अर्थ.—त० तेवारे से० ते ध० धनोसार्थवाह प० पांच पु० पुत्र अने अ० पोते छहा चि० चिलाइती चोर प्रत्ये आ० ते अटवीमां स० सघले प० धाता दोडताथका त० तृषा छु० क्षुख लागी प० तेणे पराभ व्या थका ती० ते आ० वस्ती रहित अटवीमा स० सघला उ० पाणीना म० कुवा, सरोवर, वेरडा प्रमुखनी ग० गवेषणा करतां स० थाक्या त० ते विशेष थाक्या प० थाकीने थाक्या णि० निवर्ते ती० ते आ० अटवीमा स० सघले उ० पाणी अ० अणलाध्याथी जे० ज्या सू० सुसुमाने जी० जीवतव्यथी व० जुदी कीधी छे ते० ते शरीर पासे उ० आवे, आवीने जे० वडा पुत्रने ध० धनोसार्थवाह स० साद करे ए० एम कहे—ए० एम निश्चे पु० हे पुत्र! सु० सुसुमा दा० बालीकाने अ० अर्थे चि० चिलाइति त० चोरने पकडवा स० सघले प० दोडता धाताथका त० तृषाए करी छु० क्षुखे करी प० पराभव्या थका ती० ते आ० अटवीमां छु० क्षुखे तृषाए करी अ० पराभव्या थका इ० ए प्रत्यक्ष आ० वस्तीरहित अ० अटवीने विषे उ० पाणीना म० मार्ग प्रमुखनी ग० गवेषणा क० करता थका णो० नही चे० निश्चे उ० पाणी आ० लाध्यु उ० ते पाणी अ० अण लाध्याथी णो० असमर्थ रा० राजग्रह स० पामवाने त० ते माटे तु० तमे म० मुजने दे० हे देवानुप्रीय! जी० जीवतव्यथी व० जुदो करी मारीने म० मारु म० मास सो० लोही आ० जकण करो ते० ते आहारे अ० तृप्त थया थका त० तेवार पछी इ० ए आ० आगामिक अ० अटवी णि० उतरो, रा० राजग्रहने स० पामो, मि० मित्र णा० न्यातिने अ० जाइ मली अ० अर्थना धर्मना पु० पुन्यना आ० जागी ज० थाउ त० तेवारे ते जे० वडो पु० पुत्र ध० धनासार्थवाहे ए० एम कहे थके ध० धनासार्थवाहने ए० एम कहे—तु० तमे ता० हे तात! अ० अमने पि० पीता गु० गुरुने ठामे दे० देवसरखा ठ० थाप्या, प० स्वामी करी स्थाप्या, स० कष्टथी राख्या, स० अवगुण गोपवता त० ते माटे क० केम आ० हमे ता० हे तातजी! तु० तेमने जी० जीवतव्यथी व० अलगा करी तु० तमारा म० मास सो० लोहीनो आ० आहार करीए? त० ते माटे तु० तमे ता० हे तात! म० मुजने

जी० जीवितव्यथी व० अलगो करी मं० मांस सो० लोहीनो आ० आहार करो, आगामिक अ० अटवी णि० निस्तरो (पार पामो.) तं० तेमज स० सर्व न० कहे. जा० जावत अ० अर्थना आ० भागी न० थाउ. त० तेवारे ध० धनासार्थवाहने दो० बीजो पुत्र ए० एम कहेः-मा० रखे ता० हे तात! अ० अमे जे० वडा भा० भाइने गु० गुरु समान, देवसान, तेने जी० जिवीतव्यथी व० जुदा करीए. तु० तमे ता० हे तात! मु० मुजने जी० जीवितव्यथी व० जुदो करो जा० जावत् आ० भागी न० थाउ. ए० एम जा० जावत पं० पांचमो पु० पुत्र. त० ते वारे ते ध० धनासार्थवाहे पं० पांच पुत्रनी हि० हैयानी इ० इच्छा, (भाव) जा० जाणीने ते० ते पं० पांच पुत्रने ए० एम कहेः-मा० रखे तु० तमने पु० हे पुत्र! ए० एकने पण जी० जीवितव्यथी व० जुदा नहि करीए. ए० ए सु० सुसुमा दा० बालीकानुं स० शरीर णि० प्राणरहित जा० जावत् जीव वि० छांमेलुं मृत्यक शरीर छे तं० ते माटे से० श्रेय भलुं ख० निश्चे पु० हे पुत्र! अ० आपणे ते सु० सुसुमा बालीकाना शरीरनुं मं० मांस सो० लोही आ० खाइए. त० तेवारे अ० अमे ते० ते आ० आहारे अ० तृप्त थया थका रा० राजग्रहने सं० पामशुं. त० तेवारे ते पं० पांच पुत्र ध० धनासार्थवाहे ए० एम कह्ये थके ए० ए अर्थ सांभलीने प० प्रमाण करे. त० तेवारे ध० धनासार्थवाहे पं० पांच पुत्र साथे अ० अरणी काष्ट आणे, आणीने, स० सरु करे, करीने स० बाणे करी अर० अरणीने म० मथे, मथीने अग्गि० अग्नि पाडे, पाडीने अ.सं० अग्नि संधुके, संधुकीने दा० लाकडां प० प्रक्षेपे नाखे, नाखीने अ० अग्नि प्रजाले, प्रजालीने सु० सुसुमा दा० पुत्रीनुं मं० मांस सो० लोही आ० आहारे. ते० ते आ० आहारें करी अ० तृप्त थया थका रा० राजग्रह ण० नगरने सं० पाम्या. मि० मित्रने, न्यातीने अ० पाम्या. त० ते वि० विस्तीर्ण ध० धनना क० सुवर्णना र० रत्नना जा० जावत् आ० भागी जा० थया. त० तेवारे से० ते ध० धनासार्थवाहे सु० सुसुमा दा० पुत्रीनां ब० घणां लो० लोकिक कार्य कीधां जा० जावत् वि० सोग रहित

जा० केटलेक दीवसे थया

ते० ते काले ते समये स० श्रमण भगवंत श्री महावीर गु० गुण शील चे० वनमां स० समोसर्या (पधार्या) त० तेवारे ध० धनासार्थ वाहे स० पुत्र सहित ध० धर्म सांभलीने प० दिक्षा लीधी ए० अग्यारे अंग भण्या मा० एक मासनी स० सलेखणा (सथारो) करी सो० सौधर्म देवलोके उ० उपन्या ते म० महाविदेहमा अवतरी सि० मोक्ष जाशे एम सुधर्मा स्वामी जंबु स्वामी प्रत्ये कहे छे ज० जेम ज० हे जंबु ! ध० धनासार्थवाहे णो० रुपा वर्णने हेते नही नो०रु० रुपने हेते नही णो०ब० बलने हेते नही तेम नो०वि० विषयने हेते पण नही सु० सुसुमा पुत्रीनु म० मास सो० लोही आ० आहार्यां, पण न० एटलुं विशेष के ए० एक रा० राजगृह स० पामवाने अर्थे ए० एवी परे स० श्रमण आउस्सावत् जो० जे अ० अमारा णि० निर्ग्रंथ साधु णि० निर्ग्रंथ साधवी इ० ए उ० उदारीक स० शरीर व० वमननु ठाम पि० पित्तनु स्थानक सु० वीर्यनु ठाम सो० लोहीए भर्युं जा० यावत् अ० अवश्यमेव वि० छांडवु पडे माटे नो० वर्ण हेते नही नो०वि० विषय हेते नही आ० आहार आहारे, पण ण० ए विशेष ए० एक सि० मुक्ति जावु स० ते पामवाने अर्थे आहार करे से० ते इ० आ भ० भवने विषे चे० निश्चे ब० घणा स० साधु ब० घणी स० साधवी ब० घणा सा० श्रावक अने ब० घणी सा० श्राबीकाने अ० अर्चवा योग्य जा० यावत् वी० ससारतो पार पामी मोक्ष जाशे

भावार्थ—हवे जुओ ! आ पाठमा तो एम कह्यु छे के, जेम धनावा शेठ अने तेना बेटाए नगरीए पहोंचवाने वास्ते, केटलाक उवास प्रणामे, बेटीना मासनो आहार कीधो, तेम साधु साधवी छकायना जीवने बेटा बेटी समान जाणीने, तेना पुद्गलोनो आहार, मुक्तिनगरीए पहोंचवाने वास्ते बेटीना मासनीपरे निरुत्साह भावे आहार करे, एम कह्युं हवे जुओ ! साधुना आहार करवामां धर्म होय तो निरुत्साह

भावे करवो केम कह्यो ? धर्म तो उल्लास प्रणामे करवो जोइए. शाह्या हो ते विचार जोजो. वली साधुने छ कारणे आहार करवो कह्यो छे, अने छकारणे छोरूवो कह्यो छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अ० छवीसमें. ते गाथाः—

तइयाए पोरसिए, भत्त पाणं गवेसए,
छन्नमन्नय-रागंमि, कारणंमि समुठिए. ॥ ३२ ॥
वेयण वेयावच्चे, इरियठाएय संजमठाए,
तह पाणवत्तियाए छठं पुण धम्म चिंताए. ॥ ३३ ॥
निग्गंथो धिईमंतो, निग्गंथिवि नकरेज्ज छहिंचेव,
ठाणेहिंतु इमेहिं अणइक्कमणाय सोहोइ. ॥ ३४ ॥
आयंके उवसग्गे, तितिक्कया बंभचेर गुत्तीसु,
पाणीदया तवहेउ सरीर वोच्छेयणठाए. ॥ ३५ ॥

अर्थः—पूर्ववत्. जुओ प्रश्न पेहेलो पाने १० में.

भावार्थ—हवे जुओ ! आ पाठमां साधुने छ कारणे आहार करवो कह्यो. जो धर्म होय तो छ कारणे करवो केम कहे ? धर्म तो वारंवार सदैव करवोज जोइए. वली पांत्रीसमी गाथामां छ कारणे आहार छोरूवो कह्यो छे; पण धर्मने कोइ ठेकाणे छोरूवो कह्यो होय तो पाठ बतावो. ए जो धर्म होय तो छोरूवो केम कह्यो ? शाह्या हो ते विचारी जोजो. वली सूत्र उत्तराध्ययनना सत्तरमा अध्ययनमां, वारवार खाय तेने पापी श्रमण कह्यो छे. त्यारे जुओ ! साधुनो आहार धर्ममां होय तो धर्मनुं काम वारंवार करे तेने पापी साधु केम कहे ? वली सूत्र दसाश्रुतखंधना पहेला अध्ययनमां, वारंवार आहार करे तेने असमाधियो कह्यो छे ? एमज आहार कर्यामां धर्म होय तो, वारंवार खाय तेने असमाधि जो तमे तो साधुनो आहार करवो, उंघवुं, हालवुं, चालवुं, बोलवुं, जंगल जवुं, मात्रा करवी अने नदी उतरवी वीगेरे साधुनां सर्व काम, व्रत धर्ममां कहो छो; पण जो एवी श्रद्धा श्रीवीतरागदेवनी होत तो जे वारंवार

खाय तेने पापी श्रमण अने असमाधियो न कहेता तमारे लेखे तो एम कहेवुं जोइए के, "जे घणीवार खाय तेने घणो धर्म जे घणी निंद ले तेने घणो धर्म तेमज घणी वार जुलाब लइने झाडे जाय, घणीवार मातरु करे, घणीवार वायसरे, तथा घणी वार नदी उतरे तेने घणो घणो धर्म, अने थोडीवार ए काम करे तेने थोडो धर्म" एम कहेवुं जोइए, पण आहार करवामा धर्म मानवानी श्रद्धा भगवतनी नहोती ते जाणजो वली सूत्र प्रश्नव्याकरणना सवरद्वारमा ठ कारणे आहार करवो कह्यु ठे, अने ठकारण विना आहार करे तो अदत्तादान लागे कह्यु ठे हवे जुओ ! जो आहार करवामा धर्म होय तो अधिकु खाता अदत्तादान केम कह्यु ? वली अनुयोगद्वार सूत्रमा धर्मने क्षयोपशम भावमा कह्यो ठे, अने आहारने तो उदय भावमा गण्यो ठे वली सभोगनां, उपगर्णनां अने भातपाणीना पच्चखाण करवा कह्या ठे तेनी शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २९ में ते पाठ —

सभोग पच्चक्खाणेण भते ! जीवे किं जणयइ ? सभोग पच्चक्खाणेणं आलवणाइ खवेइ निरालवणस्सय आयतठिया जोगाभवति सएण लाभेण सतुसइ परलाभ नोआसाएइ नोतकेइ नोपीहेइ नोपत्थेइ नोअभिलसइ परलाभ अणासाएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थमाणे अणभिलसमाणे दोच्चे सुहसेज उवसपज्जिताणं विहरइ ॥ उवहि पच्चक्खाणेण भते ! जीवे किं जणयइ ? उवहि-पच्चक्खाणे [illegible] लिमथ जणयइ निरुवहिएणा जीवे निकंखे उवहि[illegible]णय नसकिलिस्सइ ॥ आहार पच्चक्खाणेण भते ! जीवे किं जणयइ ? आहार-पच्चक्खाणेण जीविया ससपओग वोछिंदइ जीवियाससप्पओग वोछिंदित्ता जीवे आहारमतरेण नसकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥

तेना ये टीना

अर्थः—सं० पोतानो आहार होय ते अने बीजा जतीए (साधुए) आहार आण्यो होय ते एकठो करीने वेहेंची ले तेने संजोग कहीये. ते संजोगनुं प० पच्चखाण करवाथी ज्नं० हे पुज्य ! जी० जीव किं० शुं ज० उपार्जे ? एम शिष्य पुछये थके गुरु कहे छेः सं० संजोग पच्चखाण करवाथी आ० रोगी असमर्थ होय ते बीजा यतिनो आहार वान्छे तेने आलंबन कहीए, एवा आलंबनने खे० (क्षेपे) छोडे. नि० आलंबन रहितने आ० मोक्ष तथा संजम, तेनो अर्थ छे जेने, एवा यतिने जो० संयमनो व्यापार थाय. स० पोताना ला० लाभे करी सं० शंतोष पामे. प० परं बीजा यतिना लाभनी नो० आशा न करे. नो० ए मुझने आपे एम मनमां कल्पना न करे. नो० पोताना आत्मानी वान्छा वचने करी बीजा यतिने जणावे नही. नो०प० बीजा यतिकने जाचे नही. नोअ० अभिलाषा (वान्छा) न करे. प० बीजा यतिना लाभनी अ० आशा अण करतो थको अत० कल्पना अणकरतो थको अपी० पातानी वान्छा अणजणावतो थको अप० बीजा यति कने अणयाचतो थको अण० अभिलाषा अणकरतो थको दो० बीजी सु० सुख सेज्या उ० अंगीकार करीने वि० विचरे. उ० उपधि उपगर्णनुं प० पच्चखाण करवे करी ज्नं० हे पुज्य ! जी० जीव किं० शुं० ज० उपार्जे ? एम शिष्ये पुछये थके गुरु कहे छे. उ० उपधि उपगर्णनुं पच्चखाण करवे करी अ० स्वाध्यायादिकनुं व्यासपणुं ज० उपार्जे. नि० उपधि रहित पणे करी जी० जीव नि० वस्त्रादिकनी अभिलाषा रहित थको उ० उपधि मं० विना न० शारीरिक मानसिक संबंधि क्लेश पीडा न पामे. आ० आहार लेवाना प० पच्चखाणे करी ज्नं० हे पुज्य ! जी० जीव किं० शुं ज० उपार्जे ? एम शिष्ये पुछये थके गुरु कहे छे. आ० आहार लेवाना पच्चखाणे करी जी जीवीतव्यनी सं० वान्छानुं करवुं छि० छेदे. जी० जीवीतव्यनी वांछानुं करवुं वो० छेदीने जो० जीव आ० आहार वीना न०सं० क्लेश न पामे.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां संजोग, उपगर्ण अने आहा-

रनां पच्चखाण करवा कह्या जो आहारादिकमां धर्म होय तो धर्मनां पच्चखाण करवा केम कह्या ? सजोग, आहार अने उपधिनां पच्चखाण करवावाळा साधुने आशा वान्छा अने (पलीमथ) अभिलाषानो टाळवावाळो कह्यो, अने ते क्लेश (पीडा) न पामे एम कह्यु, एटले आहार अने उपगर्णने क्लेशना कारण कह्या, अने आशा, वान्छा, तृष्णाने अभिलाषाना कारण कह्या, एटले आहारादिकना त्याग नही तेथी आशा वान्छा करे, ते आशा वान्छाने लोभ कह्यो छे शास्त्र सूत्र भगवती शतक १२ मे उद्देशे ५ मे वळी लोभ ते मोहीनीनो उदयभाव छे तेथी तेने धर्म कया न्याये कहीए ? एतो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र नथी नहिं तथा मुक्तिनगर पहोंचाय नही तेटला माटे आहार करे अने उपगर्ण राखे जेम माल ठेकाणे पहोंचाडवाने अर्थे हुंडी, भाडु, बोलाइ खर्चे ते समान ए पण छे वळी उत्तराध्ययनना २९ मा अध्ययनमा आगळ घणा बोल कह्या छे जोगना पच्चखाण करे तो साधु अजोगीपणु पामे कह्युं ए जोगमा बोलवाना पण त्याग कह्या, अने जो शरीरनु पच्चखाण करे तो सिद्धपणु पामे कह्युं हवे जो साधुनुं शरीर धर्ममा होय तो तेने त्यागवु छोडवुं केम कह्यु ? वळी आगळ कह्यु के, सर्वथा भातपाणीना पच्चखाण करे तो अनेक भव खपावे कह्युं. एम सूत्रमां ठामठाम आहार त्यागवाना फल तो कह्यां छे, पण "घणो घणो आहार कर्याथी धर्म थाय" एवो पाठ होय तो बतावो ए आहार तो उदयभाव छे अने ते पूर्व भवना कर्मनो प्रेर्यो रस देछे, अने रत अभव तो वर्तमान काळना छे ते उदयभावने धर्म केम कहोछो ?

तेवारे वळी तेरापंथी कहेछे के " आहार उदयभावमां छे, त्यारे साधुने आहारनी आचार्य, उपाध्याय अने तीर्थंकर आज्ञा केम देछे?" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! आज्ञा तो कल्पमाथी देखीने आपे ' जेम वरसाद वरसता दिशा मात्रो जवानी अने परठवा परठावबानी आज्ञा आपे छे तथा नदी उतरवानी आज्ञा आपे छे तो शु ? दोढाए जई

मात्रा करवो अने नदी उतरवी, ए शुं? क्षयोपशमभावमां गणाशे. ए आहारादिक तो सर्व उदय भावे छे, पण ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररुपी माल नभाववाने अर्थे आज्ञा आपे छे. जेम राजाजी चतुरंगनी सेनाना तात कहेवाय छे. ते कामेतीने दाणो, चारो, रातव विगेरे जतन करवा सारु रुपीया खरचवानी आज्ञा आपे छे. वली शेठ गुमास्ताने माल निभाववाने अर्थे, हुंडी, भाडुं, वोलावुं वीगेरे खरच करवानी आज्ञा आपे छे, तथा पोतानी मातबराइ राखवा निमित्ते दुकाननुं खर्च लागे तेनी पण आज्ञा आपे छे; पण ते खरचने लाभ नथी जाणता. जो खरच लाग्या वीना माल पुगे तो अने मातबराइ रहेतो खरच लगावे नही; पण खरच लाग्यावीना माल पुगतो दीसे नही तेथी खरच लगावे छे. वली कोइ संसारमां भय (भयनी) जग्याए माल लइने जातो होय तेने कोइ भलो आदमी मले, ते कहे के "अरे भाइ! मार्गमां आगल भय-भय छे, माटे तुं वोलाइ खरची वोलावाने लइने आगल जजे." एम संसारमां पण भला आदमी होय ते पण उपगार निमित्ते आवी शीखामण देछे, त्यारे श्री तीर्थंकर, आचार्य अने उपाध्याय समान भला अने उपकारी बीजा कोण छे? ए उपकार निमिते शिष्य शिष्यणीने ज्ञानादिक माल निभाववाने अर्थे, आहारादिक उदय भावमां छे तोपण आज्ञा आपे छे; कारण के श्री तीर्थंकर चार तीर्थना कर्ता छे; अने तीर्थंकर, आचार्य अने उपाध्याय, ए चार तीर्थना मालीक छे. तेमणे साध-साधवीरुप चतुर्विध संघने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररुपी धन सोंप्युं छे; तेनुं जतन करवा तथा निभाववाने वास्ते मोक्ष नगरीए पांहोंचाववाने वास्ते, आहारादिक उदयभावमां छे तोपण आज्ञा आपे छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "साधुने आहार करतां सात आठ कर्म निर्जरे कह्यां छे." तेनो उत्तर. अरे देवानुप्रीय! इहांतो प्रासुक एखणिक आहार पूर्वोक्त बंने धनाना दृष्टांन्ते लुखा प्रमाणे करे, ते लुखा मणाम क्षयोपशमभावमां छे, ते आश्री सात आठ कर्म निर्जरे एम

कह्यु छे, पण खावु पीवुं तो सर्व उदयभावमा छे वली जो श्रावक एवा शुभभावे साधुनीपरे खाय तो तेने निर्जरा थाय के नही ते कहो केमके ए शुभ प्रणाम तो क्षयोपशमभावे छे तेथी साध श्रावक बनेने निर्जरा थाय छे जो आहार करवाथी निर्जरा धर्म थाय तो, एक साधु तो पांच रोटी खाय, अने एक साधु पाच रोटीनी खुराकवालो अ णोदरी तपने वास्ते जाणीने बेज रोटी खाय हवे खावामा धर्म होय त्यारे तो पाच रोटीनी खुराकवालो, जाणीने छ रोटी खाय तेने तमारे लेखे तो, घणो धर्म थवो जोइए, पण भगवते तो, श्री प्रश्नव्याकरणमा थोडु खाय तेने अणोदरी तप कह्यो छे, अने अधिको आहार करे तो अदत्तादान कह्यु छे वली सूत्र उत्तराध्ययनना १७ मा अध्ययनमा वा रंवार खाय तेने पापी श्रमण कह्यो छे वली सूत्र दशाश्रुतस्कधना पहे ला अध्ययनमा, वारवार खाय तेने असमाधियो कह्यो छे, अने सूत्र उत्तराध्ययनना २९ माअध्ययनमा आहारना पचखाण करवा कह्यां छे इत्यादिक अनेक सुत्र पाठमा आहारने उदयभावमा कह्यो छे तमे एटला सूत्रना पाठ उत्थापीने, साधुना खावामा, निंद लेवामा, दिशाए जवामा, वाय सचरवामा, इत्यादिकमा धर्म कहीने अणहुती स्थापना केम करोछो ?

वली तेरापथी कहे छे के "सामायकमा श्रावकनी आत्माने अधि करण कह्यु छे तेथी श्रावकने आहार दीधामा अने वदणा कर्यामां पाप कहीये छीये" तेनो उत्तर सूत्र भगवती शतक सातमें उद्देशे पहेले, श्रावकनी आत्माने अधिकरण केवी रीते कह्युं छे ते पाठः—

समणोवासगस्सणं भंते ! सामाइय कडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स तस्सणं भंते ! किं इरियावहियाकिरियाकज्जइ सपराइयाकिरियाकज्जइ ? गो० ! नोइरियावहियाकिरियाकज्जइ सपराइयाकिरियाकज्जइ सेकेणठेणं भंते ! जाव

संपराइयाकिरियाकज्जइ ? गो० ! समणोवासयस्सणं सामा-इय कम्मस्स समणोवासए अच्छमाणस्स आया अहिग-रणी भवइ आयाअहिगरण वत्तीयंचणं तस्सणं नो इरि-यावहियाकिरियाकज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ सेतेणठेणं॥

अर्थः—स० श्रमणोपासक श्रावकने भं० हे भगवान ! सा० सामायक क० कर्युं छे जेणे अ० सामायक नेश्राये रह्या त० ते भं० हे भगवान ! किं० शुं ? इ० इरियावही क्रिया करे ? के सं० संप्राइयाक्रिया करे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! नो०इ० इरियावही क्रिया न करे, पण सं० संप्रायनी क्रिया करे. से० ते के० शा अर्थे भं० हे भगवान ! एम कह्युं जा० यावत् सं० संप्रायनी क्रिया करे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! स० श्रमणोपासकने सा० सामायक कर्याने (उपाश्रयें रह्याने) सामायक नेश्राए रह्यो छे तेनो आ० आत्मा जीव अ० हल शकटादि कषायना आश्रयभुत जेने छे ते अधिकरणी कहीये. आ० आत्मानो जे अधिकरण तेज प्रत्यय कारण ते क्रिया कारणने छे. ते आत्माधिकरण प्रत्यय कहीये. त० ते नो०इ० इरियावही क्रिया न करे. सं० संप्राइयाक्रिया करे. से० तेणे अर्थे हे गौतम ! एम कह्युं.

भावार्थः—हवे जुवो ! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, श्रावकने सामायकमां इरियावही क्रिया न लागे, संप्राइया (क्रोधादिकनी) क्रिया लागे; कारणके क्रोधादिक अधिकरण सहित छे ते माटे संप्राइयाक्रियाज लागे; अने इरियावही क्रिया तो क्रोधादिक रहित होय तेनेज ११ मा गुणठाणाथी १३ मा गुणठाणा सुधी लागे. इहां तो क्रियानी पुछा छे. हवे तमेज कहो के, इरियावही क्रिया केने अने कया गुणठाणे लागे ? अने संप्राइयाक्रिया केने लागे ? तवारे तेरापंथी कहे छे के "संप्राइया क्रिया तो क्रोधादिक अधिकरणथी लागे; अने इरियावहि क्रिया क्रोधादिक रहितने लागे." त्यारे जुवो ! देवानुप्रीय ! संप्राइयाक्रिया क्रोधादिकथी लागे, तेथी श्रावकनी आत्माने अधिकरण

कह्युं हवे जो श्रावकनी आत्माने अधिकरण कह्यु तेथी तेने वचवा करवामा पाप कहोछो, तो ए लेखे तो साधुने पण वचवा करवामा पाप मानवु पडशे, कारणके सूत्र भगवती शतक सातमे उद्देशे पहेले, साधुने पण सपरायनी क्रिया लागे कह्यु छे ते पाठ —

अणगारस्सण भंते ! अणागच्छमाणस्सवा चिट्ठमाणस्सवा णिसियमाणस्सवा तुयट्टमाणस्सवा अणाउत्तवत्थ पडिग्गह कंबल पायपुछण गिण्हमाणस्सवा निक्खिवमाणस्सवा तस्सण भंते ! किं इरियावहियाकिरियाकज्जइ सपराइयाकिरियाकज्जइ ? गो० ! नोइरियावहियाकिरियाकज्जइ सपराइयाकिरियाकज्जइ सेकेणट्ठेण भंते ! गो० ! जस्सण कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवइ तस्सण इरियावहियाकिरियाकज्जइ जस्सण कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवइ तस्सण सपराइयाकिरियाकज्जइ अहा सुत्तंरीयमाणस्स इरियावहियाकिरियाकज्जइ उसुत्त-रीयमाणस्स सपराइयाकिरियाकज्जइ सेण उसुत्तमेवरियंति सेतेणट्ठेण ॥

अर्थ —पूर्ववत् जुओ ! प्रश्न बीजे पाने ८५ में

भावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमां एम कह्यु के, जे उपयोग विना चाले, उभो रहे, बेसे, सुवे, उपगर्ण ले, मुके अने क्रोधादिक सहित होय, अने सूत्रमा कह्यु तेथी विपरीत चाले तेने सपरायनी क्रिया लागे, अने क्रोध, मान, माया, लोभ विछेद गया होय अने सूत्रमां कह्यु ते रीते चाले तेने इरियावहि क्रिया लागे, एटले क्रोधादिक रहित होय तेना सपूर्ण कामो उपयोग सहित कहीए अने तेनु यथाख्यात चारित्र (अहासुय) कहीए अने तेने इरियावहि क्रिया कहीए अने क्रोधादिक सहित होय तेने सपरायनी क्रिया दसमा गुणठाणा सुधी लागे, अने ए पाठमाथी आगल इरियावही क्रिया लागे यथी अधिकरण

नाम शस्त्रनुं छे. ते कर्म बंधननुं शस्त्र क्रोधादिकने कहीए. तेथी क्रोधादक सहित होय तेनी आत्माने अधिकरणी कहीए. ते तो दसमा गुणठाणा सुधी साधुने पण छे. पहेला चार नियंठा अने पहेला चार चारित्रना धणी साधुने संप्रायनी क्रिया लागे छे. वली सूत्र भगवती शतक दसमें, उद्देशा बीजामां पण कषाय सहितने संप्रायनी क्रिया लागे कही छे.त्यां कह्युं छे के, साधु कषाय सहित आगल, पाछल, पडवाडे, जुए तो संप्राया क्रिया लागे. ते दसमा गुणठाणा सुधी साधु कषाय सहित छे तेथी तेने संप्राया क्रिया लागे; अने कषाय रहितने इरियावहि क्रिया लागे. हवे श्रावकने संप्रायनी क्रिया सामायकमां लागे ते आश्री श्रावकनी आत्माने अधिकरण कह्युं छे; अने हलसकटादिक सर्व श्रावकने क्रोधादिकथीज अधिकरण कहीए छीए. वली सामायकमां श्रावकनी आत्माने अधिकरण कह्युं तेम साधुजीनी आत्माने पण अधिकरण कह्युं छे. शाख सूत्र भगवती शतक १६ मे उद्देशे पहेले. ते पाठः—

कइणं भंते ! सरीरगा पं०गो०! पंचसरीरगा पं०तं० उरालिय जाव कम्मए. कत्तिणं भंते ! इंदिया पं०गो० ! पंचेंदिया पं०तं० सोइंदिए जाव फासिंदिए. कत्तिणं भंते ! जोए पं०गो० ! तिविहे जोए पं०तं० मणजोए वयजोए कायजोए. जीवेणं भंते ! उरालिए-सरीरं निवित्तमाणे किं अधिकरणी अधिकरण ? गो० ! अधिकरणिवी अधिकरणंपि. सेकेणठेणं भंते ! एवंवुच्चइ अधिकरणीवि अधिकरणंपि गो० ! अविरइं पडुच्च सेतेणठेणं जाव अधिकरणंपि. पुढविकाइएणं भंते ! उरालिएसरीर निवत्तेमाणे किं अहिगरणी-अहिगरणं? एवं चेव एवं जाव मणुसे एवं वेउव्वियसरीरंपि नवरं जस्स-अछि. जीवेणं भंते! आहारगसरीर निवत्तेमाणे किं अधिकरणि पुछा.गो० ! अहिगर-

णीवि अधिगरणवि सेकेणठेण जाव अधिकरणवि गो०! पमाय-पडुच्च सेतेणठेण जाव अधिकरणवि एवं मणुसेवि तेयासरीर जहा उरालिय नवर सव जीवाण नाणियव एव कम्मग-सरीरपि जीवेण भंते! सोइंदि निवत्तेमाणे किं अधिकरणी अधिकरण एव जहेव उरालिय-सरीर तहेव सोइंदियपि नाणियव नवर जस्सअत्थिसोइंदीय एव च-क्खिंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियाणवि नाणियव जस्सज अत्थि जीवेणं भंते! मणजोग निवित्तेमाणे किं अधिकरणि अधिकरण? एव जहेव सोइंदिय तहेव निरव सेस वइजोग एव चेव णवर एगिंदिय वज्जाण एव कायजो गेवि णवर सव जीवाण जाव वेमाणिए सेव भंते! २ त्ति॥

अर्थ—क० केटला भ० हे भगवान! स० शरीर प० परूप्यां? ए प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम! प० पाच शरीर प० परूप्यां तं० ते कहे छे उदारीक १ जा० यावत् विक्रय २ आहारीक ३ तेजस ४ अने क० कारमण ५ क० केटली भ० हे भगवान! इ० इन्द्रि पं० कही? गो० हे! गौतम प० पाच इन्द्रि प० परूपी त० ते कहे छे -सो० श्रोतेंद्रि १ जा० जावत् चेक्षु इन्द्रि २ घाणेन्द्रि ३ रसेंन्द्रि ४ अने फा० स्पर्शेन्द्रि ५ क० केटला भ० हे भगवान! जो० जोग प० परूप्या? ए प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम! ति० त्रण प्रकारे जो० जोग कह्या त० ते कहे छे -म० मनजोग व० वचन जोग अने का० कायजोग जी० जीवने भ० हे भगवान! उ० उदारिक शरीर प्रत्ये नि० निपजावतो थको किं० शु अ० अधिकरणि कहीए? के अ० अधिकरण कहीए? गो० हे गोतम! अ० अधिकरणी पण कहीए, अ० अधिकरण पण कहीए से० ते शा अर्थे भ० हे भगवान! ए० एम कहु? अ० जीवन अधिकरणी पण कहीए, अने अ० अधिकरण पण कहीए? गो० हे गोतम! अ० अव्रत

प० आश्रीने से० ते तेणे अर्थे जा० यावत् जीव अ० अधिकरण पण छे. पु० पृथ्विकायने भं० हे भगवंत ! ज० उदारीक शरीर प्रत्ये नि० निपजावती थकी किं शुं अ० अधिकरणी कहीए ? के अ० अधिकरण कहीये ? ए० एमज कहेवुं, ए० एम जा० यावत् म० मनुष्यने विषे, ए० एम वे० वैक्रिय शरीरने पण कहेवुं; पण ण० एटलु विशेष ज० जे जीवने वैक्रिय शरीर छे तेने कहेवुं. जी० जीवने भं० हे भगवान ! आ० आहारीक शरीर नि० निपजावतो थको किं शुं ? अ० अधिकरणी कहीए के अधिकरण कहीए ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! अ० अधिकरणी पण कहेवो अने अ० अधिकरण पण कहेवो. से० ते शा अर्थे एम कह्युं जा० जावत् अ० अधिकरणी पण कहेवो ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! प० प्रमाद आश्रीने. कारण के आहारीक शरीर संजति साधुनेज होय. त्यां अव्रतना अभावथी प्रमाद अधिकरणपणुं जाणवुं. से० तेणे अर्थे जा० यावत् अ० अधिकरण पण कहीये. ए० एम म० मनुष्यने पण कहेवुं. आहारिक शरीर मनुष्यनेज होय ते माटे. ते० तेजस शरीर ज० जेम उ० उदारीकनी पेरे केहेवुं. न० एटलुं विशेष तेजस शरीर स० सर्व जीवने होय ते माटे सर्व पद भा० कहेवुं. ए० एम क० कारमण शरीर पण कहेवुं. जी० जीवने भं० हे भगवान ! सो० श्रोतेंद्रिय प्रत्ये नि० निपजावतो थको किं० शुं ? अ० अधिकरणी कहीए के अ० अधिकरण कहीए ? ए० एम ज० जेम उ० उदारीक स० शरीर कह्युं त० तेम सो० श्रोतेंद्रिय पण कहेवी. न० एटलुं विशेष ज० जेने अ० श्रोतेंद्रिय छे तेने कहेवुं. ए० एम च० चखुइंद्रि घा० घाणेंद्रि जी० जीभेंद्रि फा० स्पर्शेंद्रि छे तेने ते कहेवुं. ज० जेने जे इंद्रि अ० छे तेने तेज कहेवुं. जी० जीवने भं० हे भगवान ! म० मनजोग प्रत्ये नि० निपजावतो थको किं० शुं ? अ० अधिकरणी कहीए के अ० अधिकरण कहीये ? ए० एम ज० जेम सो० श्रोतेंद्रियने कह्युं तं० तेमज निर्विशेषपणे कहेवुं. व० वचनजोग पण ए० एमज; ण० एटलुं विशेष. इहां ए एकेंद्रिय व० वर्जवी. ए० एम का० कायजोग पण कहेवो. ण०

पटमु विशेष स० ए जोग सर्व जी० जीवने कहेवो जा० यावत् वे० वै मानिक सुधी कहेवो से० तहत न० हे भगवान !

भावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमा पाच शरीर, पांच इंद्रि अने त्रण जोगने तो अधिकरण कह्या, अने ए बोल निपजावता आत्माने अधिकरणी कह्यो साधुजी पण वैमानिक देवतानु आयुष्य बाधे त्यारे आ माहेला केटलाक बोल निपजावे छे, ते आश्री साधुजीनी आत्माने पण अधिकरण कहीए, तथा मन वचनादिकनो जोग निपजावे छे ते आश्री अधिकरणी कहीए, तथा आहारीक शरीरने अधिकरण कहीए, अने निपजावे ते आश्री आत्माने अधिकरणी कहीए ए आहारिक शरीर नियमा कषाय कुशीलनियठाना धणी (साधु)नेज होय ए आहारीक शरीर आश्री अने प्रमाद आश्री साधुजीनी आत्माने अधिकरणी कही छे वली छठे गुणठाणे साधुजी प्रमादिज छे ए प्रमाद आश्री सा धुजीनी आत्माने पण अधिकरणी कही छे हवे तमे कहोछो के "सा मायकमा श्रावकनी आत्माने अधिकरणी कही छे, तेथी तेने दान दी धामा अने वदणा कर्यामां पाप कहीए छीए " ए तमारी कहेणीने लेखे तो साधुजीनी आत्माने पण अधिकरणी कही छे वास्ते साधुजीने पण दान देवामा अने वदणा करवामा पाप लागशे

हे देवानुप्रीय ! अधिकरणपणु, कषाय उदयभावमा छे तेथी स आयनी क्रिया लागे ते आश्री कह्यु छे, अने वादवावाळो तो साधुजीने क्षयोपशम भावना गुण प्रगट्या तेथी वदणा करे छे, पण उदयभावने नथी करतो तेमज श्रावकने पण क्षयोपशम भावना गुण प्रगट्या तेने वदणा करे छे वली सूत्रमा श्रावकोने वदणा करी ठाम ठाम चाली छे इशी भद्र श्रावकने आलभीया नगरीना सर्व श्रावकोए भगवतना मोंढा आगल वदणा करी छे शाख सूत्र भगवती शतक ११ में से पाठ —

ततेणते समणोवासगा समणस्स ३ अतिय धम्मसोच्चा निसम्म हठतुठा उठाएउठेइ २ त्ता समण ३ वदति नमं-

संति वंदी २ त्ता एवंवयासी एवंखलु भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्मं एवमाइक्खई जाव परुवेइ देवलोएसुणं अज्जो देवाणं जहणेणं दसवाससहस्साइं ठिइ पं० तेणपरं समयाहिया जाव तेणपरं वोछिन्ना देवाय देवलोगाय सेकहमेयं भंते ! एवं अज्जोति समणेभगवं महाविरे ते समणोवासगाणं एवंवयासी जणं अज्जो इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुज्झं एवमाइक्खइ जाव परुवेइ देवलोगेसुणं अज्जो देवाणं जहणेणं दसवास-सहस्साइ ठिइ पं० तंचेव समयाहिया जाव तेणपरं वोछिन्ना देवाय-देवलोगाय सच्चेण एसमठे. अहंपुण अज्जो एवमाइक्खामि जाव परुवेमि देवलोगेसुणं अज्जो देवाणं जहणेणं दसवाससहस्सं तंचेव जाव तेणपरं वोछिन्ना देवाय-देवलोगाय सच्चेणं एसमठे. तएणं से समणोवासग्गा समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतियाउ एयमठं निसम्म समणं ३ वंदंति नमंसंति वंदित्ता जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासग्गं वंदइ नमंसइ एयमठं सम्मं विणएणं भूजो २ खामेइ ॥

अर्थः—त० तवारे ते स० श्रमणोपासक स० श्रमण भगवत श्री माहावीर देवना अं० समिपथी ध० धर्मकथा सांभलीने नि० हृदये धारीने ह० हर्ष शंतोष पाम्या. उ० उठी उभा थाय, उभा थइने स० श्रमण भगवंत श्री माहावीर देव प्रत्ये वं० वांदीने न० नमस्कार करे, करीने ए० एम कहेः-ए० एम निश्चे भं० हे भगवान ! इ० ऋषीभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक अ० अमने ए० एम मा० कहे (सामान्यथी) जा० यावत् एम प० परुपे (विशेषथी):-दे० देवलोकने विषे अ० अहो

आर्यो ! दे० देवनी ज० जघन्यथी द० दस सहस्र वर्षनी ठि० स्थिति प० कही ते० तेमज स० समयाधिक जा० जावत् उत्कृष्टथी ३३ सागर ते० तेना उपरान्त वो० विछेद गया दे० देवता अथवा दे० देवलोक. से० ते क० केम भं० हे भगवत ! ए० ए वार्ता ? अ० अहो आर्यो इति आमत्रणे स० श्रमण भगवत श्री महावीर देव ते० ते स० श्रमणो पासक प्रत्ये ए० एम व० कहे -ज० जे भणो अ० अहो आर्यो ! इ० ऋषीभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक तु० तुम प्रत्ये ए० एम भा० कहे जा० यावत् एम प० परुपे दे० देवलोकने विषे अ० अहो आर्यो ! दे देव तानी ज० जघन्यथी द० दस हजार वर्षनी ठि० स्थीती प० कही त० तेमज स० समयाधिक जा० जावत् ते० ते उपरान्त वो० विछेद गया दे० देव तथा देवलोक स० साचो ए० ए अर्थ कह्यो अ० हु पण अ० अहो आर्यो ! ए० एम भा० कहु हु जा० यावत् एम प० परुपुं हु दे० देवलोकने विषे अ० अहो आर्यो ! दे० देवनी ज० जघन्य द० दस स हस्र वर्षनी इत्यादिक त० तेमज जा० यावत् ते० ते उपरान्त वो० विछेद गया दे० देव तथा देवलोक, स० साचो ए अर्थ कह्यो त० तेवारे से० ते स० श्रमणोपासक स० श्रमण भगवत श्री माहावीर देवना अ० समिपथी ए० ए अर्थ नि० सांभळीने स० श्रमण भगवत श्री माहा वीरदेव प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे व० वांदीने, नमस्कार करीने जे० ज्यां इ० ऋषीभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने इ० ऋषीभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक प्रत्ये व० वांदे न० नम स्कार करे ए० एणो अर्थ स० सम्यक् प्रकारे वि० विनये करी पु० वारवार खा० खमावे ।

भावार्थ —हवे पुछे ! आ पाठमा पहेला ऋषीभद्र श्रावके देव- तानी स्थितीना ठकाणां कह्या, पण श्रावकोने प्रतीत आवी नही, तेवारे श्री भगवत पधार्या त्यारे पुछयु भगवते रुषीभद्र श्रावकनी कहेली वात स्वीकारी अने रुषीभद्रनी प्रशशा कीधी पछी श्रावकोए भगवं- तनी उपर रुषीभद्रपुत्रने वंदणा नमस्कार करी खमाव्या, पण भगवंते

निषेध्या नही. पछी पोते पोतानो अपराध खमाव्यो. तेमज वली संख- जीनी स्त्री उत्पलाए (नव तत्वनी जाण) पोष्कलीजी श्रावकने वंदणा नमस्कार कर्यो छे; अने पोष्कली श्रावके इरियावही पडिक्कमि पापथी निवर्तीने पछी संखजी श्रावकने पोसामां बेठाने वंदणा नमस्कार कर्यो छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक बारमे उद्देशे पहेले. ते पाठः—

तएणं सा उप्पलासमणोवासिया पोक्कलि समणोवासगं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हठतुठ आसणाउ अब्भुठेइ २ त्ता सतठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता पोक्कलिसमणोवासगं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता आसणेणं उवनिमंतेइ २ त्ता एवंव० संदिसं-तुणं देवाणुप्पिया! किमागमणप्पउयणं. तएणंसे पोक्कलेसमणोवासए उप्पलंसमणोवासियं एवं वयासी कहिणं देवाणुप्पिया ! संक्केसमणोवासए. तएणं सा उप्पला समणोवासिया पोक्कलिं समणोवासग्गं एवंवयासी एवंखलु देवाणुप्पिया ! संक्के समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारि जाव विहरइ. तएणंसे पोक्कलिसमणो-वासए जेणेव पोसहसालाए जेणेव संक्केसमणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गमणागमणाए पडिक्कम्मइ २ त्ता संक्कंसमणोवासगं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासि एवं-खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे से विउले असण जाव साइमे उवक्कडावेइ तंगच्छामोणं देवाणुप्पिया तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरा-मो. तएणं से संक्केसमणोवासए पोक्कलिसमणोवासग्गं एवंवयासि णो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया तं विउलं असणं ४ असाएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स विहरित्तए

कप्पइमे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए तण्णं देवाणुप्पिया तुब्भे त विउलं असणं ४ आसाएमाणा जाव विहरइ ॥

अर्थ —त० तेवारे सा० ते उ० उत्पल्लानामे श्रमणोपासिका पो० पोष्कली श्रमणोपासक प्रत्ये ए० आवता पा० देखे, देखीने ह० हर्ष संतोष पामीथकी आ० आसनथी अ० उठे, उठीने स० सात आठ पग अ० सामी जाय, जइने पो० पोखली श्रमणोपासक प्रत्ये व० वांदे न० नमस्कार करे व० वांदीने न० नमस्कार करीने आ० आसने करी मा० आसननी उ० निमन्त्रणा करे, करीने ए० एम व० कहे-स० आज्ञा दो दे० अहो देवानुप्रीय ! किं० शु आववानो प्रयोजन ?, एटले शा कार्ये आव्या छो ? त० तेवारे से० ते पो० पोष्कली श्रमणोपासक उ० उत्पलाश्रमणोपासीका प्रत्ये ए० एम व० कहे -क क्यां छे दे० हे देवानुप्रीय ! स० शख श्रमणोपासक ? त० तेवारे सा० ते उ० उत्पल्ला श्रमणोपासीका पो० पोष्कली श्रमणोपासक प्रत्ये ए० एम कहे छे-ए०ख० एम निश्चे दे० हे देवानुप्रीय ! स० सख श्रमणोपासक पो० पोषधशालाए पो० पोसह सहित ब० ब्रह्मचर्य सहित जा० यावत् वि० वीचरे छे त० तेवारे से० ते पो० पोष्कली श्रमणोपासक जे० ज्या पो० पोषधशाला छे जे० ज्यां स० शख श्रमणोपासक छे ते० त्या उ० आवे, आवीने ग० इरियावहि पडिकमे, गमणागमणे इत्यादिक कहे, कहीने सं० शंख श्रमणोपासक प्रत्ये व० वांदे न० नमस्कार करे, वांदीने, नमस्कार करीने ए० एम व० कहे ए० एम ख० निश्चे दे० अहो देवानुप्रीय ! अ० अमे से० ते वि० विस्तीर्ण अ० असन जा० जावत् सा० स्वादिम उ० रधाव्या छे त० ते माटे ग० आववु जोइए दे० हे देवानुप्रीय ! त० ते वि० विस्तीर्ण अ० असन जा० यावत् सा० स्वादीम, ए चार आहार प्रत्ये आ० थोडो स्वादतायका जा० यावत् प० अनुपालता थका वि० विचरीए त० तेवारे से० ते स० शख श्रमणोपासक पो० पोष्कली श्रमणोपासक प्रत्ये ए० एम

व० कहे:-णो० नही ख० निश्चे क० मुझने कल्पे दे० हे देवानुप्रीय! तं० ते वि० वीस्तीर्ण अ० असन, पान, खादीम, स्वादिम, ए चार आहार प्रत्ये आ० थोडो आस्वादतो जा० यावत् प० पाखी पोषह अनुपालतां वि० विचरवुं. क० ते माटे कल्पे मुझने हे देवानुप्रीय! पो० पोषहशालामां पो० पोषध युक्तने जा० यावत् वि० विचरवुं. तं० ते जणी तमारी इछा; (पण इहां माहारी आज्ञा नथी). दे० हे देवानुप्रीय! तु० तमे तं० ते वि० विस्तीर्ण अ० असनादि चार आ० आस्वादता थका जा० यावत् वि० विचारो.

भावार्थः—हवे जुउ! उत्पल्ला श्रावीका एवी विचीक्षण नव तत्वनी जाण, तेणे पोष्कलीजी श्रावकने आवता देखीने हर्ष संतोष पामीने, साधुनी पेरे सात आठ पग सामी जइने वंदणा नमस्कार कर्यो. पछी पोष्कलीजी श्रावके शंखजीने पोषामां बेठा छे त्यां जइने गमणा गमणे पडिकमणी, पापथी निवर्तीने पछी वंदणा नमस्कार कर्यो. जो तमारा सरखी भगवंतनी श्रद्धा होत अने पाप श्रद्धाव्युं होत तो ए वंदणा केम करत? वली एज बारमा शतकना पहेला उद्देशामां शंखजी श्रावकने सर्व श्रावकोए भगवंतना रुबरु वंदणा नमस्कार कर्यो छे. ते पाठ.

तएणं से संखसमणोवासए समणंभगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी कोहवसट्टेणं भंते! जीवे किं बंधइ किंपकरेइ किंचिणइ किंउवचिणइ? संखा कोहवसट्टेणंजीवा आउयवज्जाउ सत्तकम्म पगडिउ सिढिल बंधण बंधाए धणियबंधणबंधइ जहा पढमेसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ ॥ माणवसट्टेणं भंते! एवं चेव एवं मायावसट्टेवि एवं लोभवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ. तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवउ माहावीरस्स अंतिए एयमठं सोच्चा निसम्म भिया तठा तसिया. संसारभयु-

विग्ग समण ३ वदइ नमसइ वंदित्ता नमसित्ता जेणेव संखेसमणोवासए तेणेव उवागच्छति २ त्ता सखसमणोवासग वदति नमसति एयमठ सम्म विणएण जुजो २ खामेइ।

अर्थ —त० तेवारे से० ते स० शख श्रमणोपासक स० श्रमण भगवत श्रीमहावीर प्रत्ये व० वादे न० नमस्कार करे, वांदीने नमस्कार करीने ए० एम कहे-को० क्रोधने वशे पीडित भ० हे भगवान ! जी० जीव कि० ब० शु बाधे? कि० प० शु पुष्ट करे? किंचि० शु चीणे? किंउ० शुं उपचय करे? ए प्रश्न उत्तर स० हे शख ! को० क्रोधने वशे पीडित जीव आ० आयुकर्म वर्जीने स० सात कर्म प्रकृति सि० सिढल बधवे बांधी होय ते ध० दृढ बधणे करे (कठोर बाधे) ज० जेम पहेला शतकने विषे अ० असवुरू अणगारना अधिकारे कह्यु तेम इहा पण केहेवु जा० जावत् अ० ससारमा भमे मा० मानने वशे पीडीत जीव भ० हे भगवान! इत्यादिक ए० एमज ए० एम मा० मायाने वशे पीडीत जीव पण ए० एम लो० लोभने वशे पण कहेवा जा० यावत् अ० ससारमां परिभ्रमण करे त० तेवारे से० ते स० श्रमणोपासक स० श्रमण भगवत श्री माहावीरना समिपथी ए० ए अर्थ सो० सांभलीने नि० हृदये धा रीने भि० भय पाम्या त० (त्रास मनने विषे उद्वेग पाम्या) स० ससारना भयथी उद्विग्न थया थका स० श्रमण भगवत श्री माहावीर प्रत्ये व० वांदे न० नमस्कार करे व० वादीने न० नमस्कार करीने जे० ज्यां स० शख श्रमणोपासक छे ते० त्या उ० आवे, आवीने स० शख श्रमणो पासकने व० वादे न० नमस्कार करे ए पूर्वोक्त अर्थ स० भले प्रकारे वि० विनये करी भु० वारवार खा० खमावे

भावार्थ—हवे जुओ! आ पाठमा शखजी श्रावके क्रोध मानथी श्रावकोने निःसल्ल करवा माटे भगवतने क्रोध, मान, माया अने लोभनां फल पुछयां तेवारे भगवते कह्यु के, सात कर्म ढीलां बांध्यां होय ते गाढां बांधे, यावत चार गतिमां वारवार परिभ्रमण करे ते वचन सां

जक्तीने श्रावक कर्या, उद्वेग पाम्या. पछी शंखजीकने आवीने वंदणा नमस्कार कर्यो. पछी पोतानो अपराध खमाव्यो. ए जुओ! श्रावकने वंदणा नमस्कार कर्यामां पाप होय तो, ते समजवार श्रावकोए जगवंतना रुबरु वंदणा केम करी अने जगवंते तेमने केम न निषेध्या?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पूर्वे रिषिभद्र श्रावकनो देवतानी स्थिती जघन्य दस हजार वर्षथी एक समय अधिकथी मांडीने तेत्रीस सागरना समा सुधी देवतानी स्थितीनां ठेकाणां कह्यां तेनो उंडो दीधो हतो ते अप्राध माटे खमाव्या छे, अने शंखजी श्रावक उपर श्रावकोनो क्रोध-जाव रह्यो ते अपराध माटे खमाव्या छे. एम कहे छे तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! अप्राध कर्या माटे वंदणा नमस्कार तो न करवो जोइए, पण साचाने जुठा पाड्यानो अप्राध तो जेम आणंद श्रावकने गौतम स्वामीए खमाव्या तेम खमाववा जोइए. ए 'वंदइ नमंसइ' तो वंदणानो पाठ छे अने अप्राध तो वंदणा नमस्कार करीने पछी खमाव्या छे. वली हालमां तमारा श्रावक खमत खामणां तो रीस मटाडवा माटे करता हशे, पण 'वंदइ नमंसइ' तो करता दीसता नथी. जो तमारा सरखी श्रद्धा जगवंते शीखवी होत तो तमारा श्रावक करे छे तेमज ते पण करत. वली अप्राधनी कुयुक्ति देखाडी, पण उत्पल्ला श्राविकाए पोष्कलीजीने वांद्या, तथा पोष्कलीजी श्रावके पहेलां शंखजी श्रावकने पोसामां वांद्या, एमणे कयो अप्राध कर्यो हतो के जेथी वांद्या? वली सुबुद्धि प्रधाने जितशत्रु राजाने धर्ममां समजाव्यो, ते माटे तेनो धर्माचार्य थयो, तेथी तेणे वंदणा नमस्कार कर्या, एम तमे कहो छो; पण त्रण प्रकारना आचार्य कह्या छे. तेमां ए सुबुद्धि प्रधान, जितशत्रु राजानो कयो आचार्य कहेवाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "एटले ठामे 'वंदइ नमंसइ' एटलोज पाठ छे; पण तिखुत्तानो बधो पाठ नथी." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! जगवतीजीना त्रीजा शतकना पहेला उद्देशामां, तामली तापसे रातनी

चिंतवणामा चिंतव्यु के, ए मारु कुटुंब मुजने " वंदइ नमंसइ समाणेई कल्याणं मंगलं देवोय चेइयं पज्जुवासन्ति " इहां तामलीए "देवीयं चेइयं " कह्यु, त्यारे तेथी श्रावक थ्यु ? हींश ठे वली सूत्र जगवतीमां सातमा देवलोकना देवता जगवत श्री माहावीर देव कने आव्या, त्यां " वंदइ नमंसइ " एटलोज पाठ कह्यो ठे एम घणे ठेकाणे सूत्रमा ज गवतने तथा साधुने " वंदइ नमंसइ " ज कह्या ठे त्यारे थ्यु ? जगवतने तथा साधुने " वंदइ नमंसइ " शब्दथी वांद्या न कहेवाय ? हे देवानु प्रीय ! वंदणा नमस्कारमा पंच अंग नमाव्या, त्यां सघळो तिखुत्तानो पाठ आवी गयो पुरा तिखुत्तानु थ्यु कारण ठे ? ए वंदणा नमस्कार श्रावके कर्यां तेमां थ्यु थयु ?

तेवारे तेरापंथी कहे ठे के "ए तो संसारना हेते कीधा हशे, पण धर्म जाणीने कीधा तो नथी चाल्युं " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! संसारमा तो रामराम, जुहार, मुजरो, पगे लागवु करवानी रीत ठे ते तो कर्यां वीना संसारमा वेगा तेने चाले नही, पण पाप जाणे तो ए "वंदइ नमंसइ" नी नवी रीत, धर्म पामीने पापनी केम चलावी ? वली हा लमा पण संसारना हेते "वंदइ नमंसइ" तो कोइ करता देखाता नथी तेम आगल पण संसारना हेते रामराम जुहार आदि करता हसे, पण ए "वंदइ नमंसइ" तो धर्म पाम्या पठी विनयरुप लाज्ज जाणीने करता दीसे ठे वली रुबरुमा तो संसारना हेते, मुलायजाथी तथा लोक ला जथी रामराम, जुहार, मजरो अने पगेलागणु करे ठे, अने वेष्णव वलीने रामराम, नमोनारायण, जेश्रीनाथजीनी, जय श्री गोपालजीनी, इत्या दिक करे ठे, पण एकलो घरमां एकान्त जग्याए वेसीने सामायक पोसा करे त्यां वंदणा नमस्कार केने करे ते कहो

तेवारे तेरापंथी कहे ठे के " अरिहंतने, सिद्धने अने साधुजीने धर्म जाणे तेने करे, अने जेने वंदणा कीधां पाप थाय तेने न करे, अने सामायक पोसा एकान्ते करे त्यां कोइ रुबरु न होय तेने पूर्वोक्त राम

रागादि करे तो तेने अणसमज मिथ्यात्वी कहीये." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! अंमरुजी संन्यासी (श्रमणोपासक)ना सातसो शिष्य श्रमणोपासक, तेमने वहेतुं पाणी आज्ञा लइने पीवानो अभिग्रह हतो. तेमणे जेठ महीने कंपीलपुरथी पुरमताल तरफ विहार कीधो त्यारे तेमने मार्गमां तृषा लागी, पण पाणीनी आज्ञा देवावालो कोइ दातार मल्यो नही, तेथी तेमणे गंगा नदीने कांठे संथारा उपर बेसी पूर्वजणी मोढुं करीने त्रण नमोथ्थुणं कह्यां छे. ते उववाइ सूत्रनो पाठः—

तिदंडिएय जाव एगंते एमंति २ त्ता गंगामहाणइउग्गाहित्ति गंगामहाणइउग्गाहित्ता वालुया-संथारए संथरंति २ त्ता वालुयासंथार ड्रुरुहंति २ त्ता पुरछाभि-मुहा संपलियंका निसणा. करयल जाव कट्टु एवंवयासी नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं समणस्स भगवउ महावीरस्स जाव संपाविउं कामस्स नमोत्थुणं अमम्मस्सपरिवायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स ॥

अर्थः—ति० त्रण दांडो प्रमुख जा० यावत् चौद उपगर्ण ए० एकान्त ए० ठांडे, ठांडीने गं० भेखडथी हेठा उतरी गंगा नदीनी वेलुमां उ० आवे गं० गंगा नदीनी वेलुमां आवीने वा० वेलुना संथारा सं० संथरे, संथारीने वा० वेलुना संथारा उपर दु० बेसे, बेसीने पु० पूर्व दिशा सामुं मुख राखी सं० पलांठी वाली नि० बेठा. क० बे हाथ जोडीने माथे चडावी जा० यावत् ए० एम कहेः-न० नमस्कार थाउं अ० समचय अरिहंतने जा० यावत् सं० मुक्तिए पोहोंच्या अरिहंतने, सिद्धने, एम तीर्थंकरने अने सिद्धजीने नमस्कार करीने, पछे वली ण० नमस्कार होजो स० श्रमण भगवंत श्री माहावीरने नाम लइने जा० यावत् सं० मुक्ति पामवाना कामीने, ण० वली नमस्कार होजो अ० अम्मड परिव्राजकने अ० अमारा धं० धर्माचार्यने ध० धर्म उपदेशना देणहारा अंमडगुरुने.

भावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमा संथारो करती वेला, बे हाथ जोडी अंजली करी मस्तक नमावीने एक नमोथ्थुणं तो पहेला सिद्धजीने कर्युं, बीजु नमोथुणं भगवंत श्री माहावीर देवने कर्युं, अने त्रीजी वारे नमोथुणं नमस्कार अमरूजी सन्यासीने (श्रमणोपासक श्रावकने) पोताना धर्माचार्य धर्म उपदेशना देणहारा जाणीने कर्युं ए जुओ ! वनमा एकान्त जगाए संथारो करतो वेला अरिहंत, सिद्धनी जोडे अमरूजी श्रावकने पण नमस्कार कर्यो, अने ते सातसो, पांचमे देवलोके गया अने एकावतारी आराधीक थया वली अमरूजी श्रावक रुबरु होय तो मुखायजाधी कर्या क्हेवाय, पण अमरूजी रुबर हाजर नहोता ए पर पुठे संथारो करता धर्म न जाणे, तो ए अनर्थ पापनु काम केम करे अने समकित केम रहे ? माटा छो ते विचारी जोजो वली श्रावकना विनयने धर्मनु मूल कह्युं छे शास्त्र सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन पांचमे ते पाठ—

तेणंकालेणं तेणंसमयेणं थावच्चापुत्तस्स समोसरणं परिसानिग्गया सुदंसणोवि निग्गए. थावच्चापुत्तं वंदइ नमसइ वंदित्ता नमंसित्ता एववयासी तुम्हेणं किं मुलए धम्मे पन्नते ततेणं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्तेसमाणे तं सुदंसणं एववयासी सुदंसणा ! विणयमुलेधम्मे पन्नते सेवि य विणए दुविहे पन्नते त० आगारविणएय अणगारविणएय तत्थणं जेसे अणगारविणए सेणं पंचअणुव्वयाइं सत्तसिख्खावयाइं एकारस उवासग्गपडिमाउ तत्थणं जेसे अणगारविणए सेणं पंचमहव्वयाइं तंजहा सव्वाउंपाणाइवायाउविरमणं सव्वाउमुसावायाउविरमणं सव्वाउअदिन्नादाणाउविरमणं सव्वाउमेहुणाउविरमणं सव्वाउपरिग्गहाउविरमणं सव्वाउराइभोयणाउविरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाउविरमणं दसविहे पच्चख्खाणे बारस भिख्खुपडिमाउ

इच्चेएणं दुविहेणं विणयमुलेणं धम्मेणं अणुपुवेणं अठ-कम्मपगमीउं खवेत्ता लोइगा पइठाणा नवंति ॥

अर्थः—ते० काले ते० समये था० थावरचापुत्र स० त्यां सोगंधिका नगरीए आवी नतर्या (समोसर्या). प० प्रखदा वांदवा नीसरी. सु० सुदर्शन पण नि० वांदवा निकल्यो. ते था० थावरचापुत्रने वं० वांदे न० नमस्कार करे वं० वांदीने, नमस्कार करीने ए० एम कहेः-तु० तमारा किं० धर्मनो मूल शुं प० कह्यो छे? त० तेवारे था० थावरचापुत्र सु० सुदर्शनना ए० वु० एम कह्याथी तं० ते सु० सुदर्शनने ए०व० एम कहे सु० हे सुदर्शन! अमारे वि० विनयमूलधर्म प० कह्यो. से० ते पण वि० विनय मूल धर्म दु० बे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते कहे छे. आ० ग्रहस्थ विनय धर्म अने अ० अणगार (यतिनो) विनय धर्म. त० तीहां जे० जेते अ० ग्रहस्थ विनय धर्म से० ते पं०अ० पांच अणुव्रत स०सि० सात शिक्षाव्रत ए० अग्यार उ० श्रावकनी पडिमा. ए ग्रहस्थनो विनय धर्म. त० तीहां जे० जे अ० (अणगार) साधुनो विनय धर्म से० ते पं०म० पांच महाव्रत कह्यां तं० ते कहे छे. स० पा० सर्वथा प्राणातिपात जीव मारवाथी निवर्तवुं ते, स०मु० सर्वथा जुठुं बोलवाथी निवर्तवुं ते, स०अ० सर्वथा अदत्तादान लेवाथी (चोरी करवाथी) निवर्तवुं ते, स०मे० सर्वथा मैथुनथी निवर्तवुं ते, स०प० सर्वथा परिग्रहथी निवर्तवुं त, स०रा० सर्वथा रात्रीनोजनथी निवर्तवुं ते जा० यावत् मि० क्रोध, मान, माया, लोन, रागद्वेष इत्यादिक मिथ्यात्व दर्शन शल्य अढारपाप स्थानकथी निवर्तवुं ते, द० दस प्रकारे प० पचखाण बा० बार प्रकारे नि० यतिनी पडिमानो विनय धर्म इ० इत्यादिक. दु० बे प्रकारे वि० विनय मूल ध० धर्म अ० अनुक्रमे अ०क०प० ज्ञानावरणी आदिक आठ कर्मनी प्रकृतिने ख० खपावीने लो० लोकाग्र प० मोक्षमधे प्रतिष्ठान न० थाय.

नावार्थः—हवे जुउ! आ पाठमां एम कह्युं छे के, थावरचापुत्रे सुदर्शन शेठने धर्मनुं मूल विनय कह्यो. ते विनयना बे नेद कह्या. आ-

गार विनय अने आगार विनय आगार विनय ते श्रावकनो विनय करवो, अने अणगार विनय ते साधुनो विनय करवो ए शुद्ध! ताप श्रावक घनेनो विनय ते धर्मनु मूळ ठे एम कह्युं तेवारे तेरापंथी कहे ठे के "श्रावकना पाच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत, सामायक, पडिकमणु, पोसा, पाखा, आदि शीखवाडे तेने विनय कहीये".
तेनो उत्तर

हे देवानुप्रीय! श्रावकने तो तीर्थंकर, आचार्य, उपाध्याय अने साधुजी ज्ञान शीखवाडे ठे ते तमारी केहणीने लेखे तो तीर्थंकर, के वळी, आचार्यादिक सर्वने श्रावकनो विनय करवावाळा थनिस कहीये. हे देवानुप्रीय! शीखवे तेने विनय कहीए एम केम कहोगो? विनय तो लघुपद ठे आव्या उठी उभो थाय, सामो जाय, जाताने पहोंचाडे आसन बेठवी आपे, हाथ जोडे, शीष नमावे आदि बहु विनयना १३४ भेद कह्या ठे तेनी शाख सूत्र उववाइ तथा भगवती शतक २५ में ते आगळथी नमता भावमा रहे तेने विनय कहीए, अने शीख वाडे तेने तो ज्ञानना दातार, गुरु अथवा धर्माचार्य कहीये इत्यादिक अनेक सूत्र पाठमां श्रावकनो विनय तथा वंदणा नमस्कार करवो कह्युं ठे वळी श्रावकने वंदणा-नमस्कार कर्यांमा पाप कहे तेने पुछवु के, श्रावकने वंदणा, नमस्कार, विनय करे ते उदयभावमा के क्षयोपशम भावमा ते कहो वळी श्रावक साधर्मि उपर हेत, प्यार तथा राग राखे ते उदयभावमा के क्षयोपशमभावमा ते कहो वळी सनतकुमार इन्द्रनी पेरे चार तीर्थना 'हियाए सुहाए खमाए निसेसाए' प्रवर्ते ए गुण उदय भावमां के क्षयोपशम भावमा ते कहो

तेवारे तेरापंथी कहे ठे के, हियाए सुहाए केने कहीये तेनो उत्तर सूत्र भगवतीजीना पदरमा शतके, चार वाणीयाना दृष्टान्ते तेमां चोथो पुरुष वाणीयो भेदे तेने पुरुषनो हियाएसुहाए थको एवो बुद्धिए वरज्यो ठे, ते 'हियाए सुहाए' इहां पण जाणजो इहा पण भक्तिभाव करे, एवो अर्थ भासे, पण वाणीयाना प्रहार कर्याथी कांइ 'हियाएसुहाए'

नही थाय. ए विनय-वंदणा, नमस्कार करवाना प्रणाम उदय भावमां के क्षयोपशम भावमां? जो उदयभावमां कहेशो तो कया कर्मनो उदय छे? अने ए प्रणामे अशुभ कर्म बंधाय तो कयुं कर्म बंधाय? ए कया कर्म बांधवाना कारणमां भळे ते निर्णय कहो. वळी चतुर्विध संघनी वैयावच करवी तो सूत्रमां घणे ठामे कही छे. तमे आटला सूत्रना पाठ उत्थापीने पडिमाधारी प्रमुख विरक्त श्रावकना विनय, वैयावच, वंदणा, नमस्कार, कर्यामां मतना लीधे पाप केम बतावो छो?

वळी तेरापंथी कहे छे के, "साधु वसे ते जग्यामां ते ठामे रात्रे, अरधि रात के बधी रात ग्रहस्थने के श्रावकने राखवो न कल्पे, अने राखे तो चोमासी प्रायश्चित आवे, एम सूत्र नषितना आठमा उद्देशामां कह्युं छे." ए तेमनुं (तेरापंथीनुं) कहेवुं सूत्रार्थना अजाणपणानुं छे, कारण के नषितनी चूर्णिकामां ए अर्थ एम कह्यो छे के, जे स्त्री तथा परिग्रह सहित कलेश करी तथा राज अपराधी चोर इत्यादिक अपराध करी आव्यो छे तथा सारंभी, सपरिग्रही छे, तेनी ना कही छे. वळी नषितमां तो एम कह्युं छे के, राखे, रखावे अने राखताने भलो जाणे तो चोमासो प्रायश्चित आवे. एनो परमार्थ ए छे के, पोताना स्वार्थे ग्रहस्थीने कहे "तुं मारी कने रहे." एम कहीने राखे तो, तथा अनेरा साध तथा ग्रहस्थ श्रावकने कहे के, "तमे मारा पासे ग्रहस्थीने राखो" एम कहीने रखावे तो, तथा कोइ साधु श्रावक, ग्रहस्थने रातना पोताना स्वार्थने अर्थे राखे, त्यारे एम जाणे के "ए रुडुं काम करे छे, मारे वास्ते ग्रहस्थीने राखे छे;" एवी रीते राखे, रखावे अने राखताने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे कह्युं छे; पण एम नथी कह्युं के, साधु सेहेज स्वभावे ग्रहस्थना भेलो रहे तो चोमासी प्रायश्चित आवे. ए तो साधु पोताना मतलब काजे राखे, रखावे अने राखताने भलो जाणे तो चोमासी प्रायश्चित कह्युं छे; पण सेहेजे धर्मध्यान, सामायक, पोसा, संवर प्रमुख करे तथा रात्रे साधुजीनी सेवा भक्ति करे तेने निषेध्यो नथी. तेनो शाख सूत्र ब्रहतकल्प उद्देशो पहेले. ते पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथीण सागारिए अणिसाए वड़ए २२ कप्पइ निग्गंथीण सागारि णिसाए वड़ए २३ कप्पइ निग्गथाण सागारिय णिसायवा अणिसाएवा वड़ए २४ नोकप्पइ निग्गंथाणवा सागारिय उवस्सए वड़ए २५ कप्पइ निग्गंथाणत्रा २ अप्प-सागारिय उवस्सए वड़ए २६ नोकप्पइ निग्गंथाण इत्थिसागारिय उवस्सए वड़ए २७ कप्पइ निग्गथाण पुरिससागारिय उवस्सए वड़ए २८ नोकप्पइ निग्गथिण पुरिससागारिय उवस्सए वड़ए २९ कप्पइ निग्गंथीण इत्थिसागारिय उवस्सए वड़ए ॥ ३० ॥

अर्थ —नो० न कल्पे नि० साधवीने सा० प्रतितकार्यो ग्रहस्थनी अ० नेश्राय विना व० रहेवु क० कल्पे नि० साधवीने सा० प्रतितकार्यो ग्रहस्थनो णि० नेश्राये व० रहेवुं क० कल्पे नि० साधुने सा० प्रतितकार्यो ग्रहस्थनी णि० नेश्राये अ० अनेश्राये पण व० रहेवु नो० न कल्पे नि० साधुने तथा साधवीने सा० ग्रहस्थनां धन आजर्ण होय तेवा उ० स्थानकने विषे व० रहेवुं ज्ञान न थाय तथा शका पण आवे जे, एणे लीधु हशे, माटे एवा स्थानकने विषे न रहेवुं क० कल्पे नि० साध साधवीने अ० धन आजर्ण रहित उ० स्थानके व० रहेवु नो० न कल्पे नि० साधुने इ० सागारिकनी स्त्री रहेती होय ते उ० स्थानकने विषे व० रहेवुं क० कल्पे नि० साधुने पु० सागारीक पुरुष रहेतो होय (पुरुषपणे साधुने पण घर आगण ठे से मध्ये पुरुषने वस्तु लेता मुकता, आव्यानो प्रजोग पड़तो होय तेवो पुरुष त्या रहे) एवा उ० स्थानकने विषे व० रहेवु नो० न कल्पे साधवीने पु० पुरुष रहेतो होय ते उ० स्थानकने विषे व० रहेवु क० कल्पे नि० साधवीने इ० स्त्री रहेती होय ते उ० उपाश्रयने विषे व० रहेवु

भावार्थ —इहां एम कह्यु के, स्त्री सहित स्थानक साधवीने कल्पे,

अने पुरुष सहित स्थानक साधुजीने कल्पे. ए सूत्र पाठमां ग्रहस्थने भेलुं रहेवुं कह्युं. तेवारे तेरापंथी खोटी युक्ति मेलवे छे के " ए नेश्राय कही ते स्त्री तथा पुरुष राज करता होय तेनी नेश्राये रहेवुं." एम अर्थ करे छे, पण ते खोटो छे; कारण के पांच नेश्रायमां राजानी नेश्राय कही छे. ते राजानी नेश्राये तो साधवी वर्ते छे ते केम मले ? अने ज्यां स्त्री राज करती होय ते गामे स्त्रीनी नेश्राये साधु वर्ते छे ए केम मले ? हे देवानुप्रीय! इहां तो 'उवसए वछए' उपाश्रयमां भेला रहेवुं ते माटे पाठ कह्यो छे.

वली तेरापंथी कहे छे के, " साधुने पुरुषनी नेश्रायनी जग्या होय अने पुरुषनी आज्ञा होय त्यां रहेवुं; अने साधवीने स्त्रीनी नेश्रायनी आज्ञानी जग्यामां रहेवुं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्र भगवती शतक बारमें उद्देशे बीजे कह्युं छे के, वीर प्रभुना साध-साधवीने, जयंती श्रावीका प्रथम स्थानकनी दातार छे त्यां 'अरिहंताण पुव्वसिजायरिए' एवो पाठ छे. ते पाठनी नेश्राये तो सुख कल्पे; अने व्यवहारजीनो ए पाठ तो एक उपाश्रयमां भेला रहेवा आश्रीज छे. वली वीरप्रभुना निर्वाण काल समयने विषे, अढार देशना राजाए प्रभुनी पासे पोसा कर्या ते केम कल्प्या ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ए तो तीर्थंकर छे, वास्ते एमने कल्पे छे. त्यारे तेरापंथीने वली कहीए के, ए तो प्रभु छे तेथी तेमने दोष न लागे; पण साधु प्रभुनी पासे छे तेमने चोमासी प्रायश्चित आवे, ते काम प्रभु केम करे ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " अढार देशना राजाने केम खबर पडी के प्रभुनो निर्वाण समय छे, तेथी प्रभु पासे आवीने पोसा कीधा ? " एम पुछे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्र भगवतीना पंदरमा शतकमां, भगवंते गोशालाने कह्युं के, हुं सोल वर्ष सुधी गंधहस्तिनी पेरे विचरीश, तथा सिंहा अणगारने साडा पंदर वर्षनो निश्चय बताव्यो. तेथी साध साधवी, श्रावक श्रावीका, देवता देवी, नरनारी, सर्व ए कारण जाणे छे. तेथी अढार देशना राजाए प्रभु पासे आवीने पोषा कर्या छे. वली प्रभुए छेल्ली देशना सोल पोहोर लगी दीधी, अने

दुःख विपाकना अध्ययन ५५ सुख विपाकनां ५५ तथा उत्तराध्ययननां छत्रीस परुप्या, ते लोकनो प्रश्नवा आगल परुप्यां के पोताना मनमेळे परुप्या ? मार प्रश्नदा हती के नही ? वली प्रभु छद्मस्तपणे बीजे चोमासे राजग्रही नगरीना नालंदा पाडामा ततुवाइनी शालामा रह्या ते शालाने एक देश आगे गोशालो आवीने उतर्यो ए लेखे साधुने ग्रहस्थ साथे रहे तो सुखे कल्पे अनेक सूत्र पाठना न्याय जोतां साधु ग्रहस्थना जेलो रहे तो रहेवानो नाकारो नथी, अने नशितमा तो सआरम्भी, सपरीग्रही तथा अपराधी आश्री निषेधु दोसे छे, अने पोताना स्वार्थ हेते राखे ते आश्री ना कही छे, पण श्रावक सामायक, पोसा, सवर, धर्मध्यान करताने तो वर्जवो तो कोइ पण सूत्रमा कह्यु नथी

वली तेरापंथीउ, लोकोने भेळेकाववाने अर्थे, ग्रहस्थोना जेळा रहेवुं निषेधे छे, पण पोते तो ग्रहस्थोना जेला रहे छे मांहेली दुकानमां तो पोते सुवे अने बारली दुकानमा श्रावकोने पोषा सवर करावे छे एक लक्कीनी जग्यामां एक शालामा तो पोते सुवे छे, अने एक शालामां श्रावकोने पोसा, सामायक तथा सवर करीने सुवाडे छे; अने पुछे त्यारे कहे छे के क्षेत्र जुदु छे हे देवानुप्रीय ! ए तमारी केहणीने लेखे तो एक शालामां स्त्री रहे, अने एक शालामां साधुने रहेवुं कल्पे एक लक्कीमा एक शालामां पुरुष रहे, अने एक शालामां आरजाने रहेवुं कल्पे, ए पण क्षेत्र जुदु छे वली एक शालामां आरजा सुवे, अने एक शालामां साधु सुवे, एम पण तमे सुवता हशो, कारण के तमारी कहेणीने लेखेतो ए पण क्षेत्र जुदु छे

ज्यारे तेरापथी कहे छे के "स्त्री रहेती होय ते जग्यामां तो साधुने सर्वथा रहेवु न कल्पे " त्यारे हे देवानुप्रीय ! एक शालामां साधु सुवे अने एक शालामा श्रावक सुवे तेने मतना लीधे क्षेत्र जुदुं कही एवी जुठी स्थापना केम करोछो ? वली नशितमा ग्रहस्थने जेळा राखवामा प्रायश्चित कह्यु, तेमज ग्रहस्थने विहारमां साथे राखे, रखावे अने राखताने भलो जाणे तेनु पण प्रायश्चित कह्युं छे; अने गोचरीमां

ग्रहस्थीने साथे राखे, रखावे अने राखताने जलो जाणे तेने पण प्राय-श्चित कह्युं छे. तमारा साध साधवीउं, ग्रहस्थी पोचारूवाने आवे तेनी साथे विहार केम करे छे ? आदमीने साथे लइने केम फरे छे ? वली ग्रहस्थीने आहारादिक तथा पातरांना रोगान प्रमुखनी दलालीने वास्ते तथा घर बतावदाने वास्ते गोचरीमां साथे केम राखे छे ? ए चोमासी प्रायश्चितनां काम केम करे छे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " श्रावक निर्जरा वास्ते पोताना मनथी साथे पहोंचारूवाने आवे छे, आदमी मोकले छे, पोतानी इछाथी आहारादिकनी दलाली वास्ते तथा घर बतावदा वास्ते आवे छे, तेथी तेनुं प्रायश्चित आवे नहीं. ए तो ज्यारे साधु पोताना स्वार्थे पोते आमना जणावीने साथे ले तेनुं प्रायश्चित कह्युं छे. " तेवारे तेमने कहेवुं के, जेम ए आमना जणावीने साथे ले तेनुं प्रायश्चित कह्युं छे, तेम ग्रहस्थने जेलुं रहेवानुं पण आमना जणावीने पोताना स्थार्थे कहीने राखे, रखावे तथा राखताने जलो जाणे तेनुंज पायश्चित कह्युं छे. तमे मतना लीधे खोटा अर्थ केम करोछो ?

वली तेरापंथी कहे छे के, " साधु पोताना हाथे बारणानां कमारू उघारूे तथा वासे तेनां पांच माहाव्रत जागे. " एवां जुठां आल दे छे, पण सिद्धान्तमां तो साधुने पोताने हाथे कमारू वासवुं उघारूवुं कल्पे कह्युं छे. शाख सूत्र आचारांग श्रुतस्कंध बीजे पिंकेखणा अध्ययन पहेले उद्देशे पाचमे. ते पाठः—

से भिक्खूवा २ गाहावइकुलस्स दुवारवाहिं कंटकवोदियाए पमिपेहिय पहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुणवित्तं अपमिलेहिय अप्पमजीय नोअवंगुणिज्जवा पविसेजवा निक्कमेजवा तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुणविय पमिलेहिय २ पमजिय २ ततो संजयामेव अवंगुणेजवा पविसेजवा णिक्कमेजवा ॥

अर्थ —से० ते नि० साध साधवी गा० ग्रहस्थीना घरना दु० द्वारना भाग (बारणां) क० कटक शिखाए करी प० ढांक्युं पे० देखीनें जइ त्या रहेवाने जे ग्रहस्थनु घर होय, तेनो पु० पहेलां उ० अवग्रह आज्ञा अणु० अणजाणया विना पटखे के, तेना कने अणुज्ञा माग्या विना अप० वण पडिलेह्या अप्प० वण प्रमार्ज्यां नो०अ० ते बा रणु उघाडे नही प० ते घरने विषे प्रवेश करे नही। नि० ते घरथी निकळे नहीं ते० ते ग्रहस्थनो पुं० पहेला उ० अवग्रह अणु० तेनीकने अनुज्ञा मागीने प० पडिलेही पडिलेहीने प० प्रमार्जी प्रमार्जीने तं० तेवार पछी स० सजति जयणार्थी अ० ते बारणुं उघाडे प० ते घरने विषे प्रवेश करे णि० ते घरथी निकळे

भावार्थ —इहां एम कह्यु के, साधु विना आज्ञाए कंटकबोधी या नाम फळसो उघाडे नही, विना पडिलेह्यां तथा विना पुंज्यां आडुं दे नही, तथा उघाडे नही, पण आज्ञा लइनें पडिलेही पुंजीने वासें उघाडे ए शास्त्र कही जेम छापो चुखीआ सहित, तेम कमाड अजे- यणाए तो सर्व स्थानके हिंसा थाय पर जयणाए खोलवा वासवानी विधि कही विधि ते आज्ञा एमां जे पापे परुपे तेने शास्त्र रहस्यना अजाण जाणवा

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " छापो नथी, त्यां तो कंटकबोधीया कह्या छे ते कांटानो केरो छे जो छापो होय तो, " फलीह " एवो शब्द कहेवो जोइए " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय । कांटाने शुं पुंजीए? इहीं तो जीवघातनुं स्थान यंत्रज छे ते यंत्र (चुखियानी) विधि कही वळी छापानु नाम फळी शब्द कहे छे ते मृषा जाणवु, कारणके श्री अनु योगद्वार सूत्रमा एवी गाथा कही छे ते गाथाः—

पुरवरकवाडभुया, फलिह भुया दुंदुहि थवियनिघोसा सिं-
रिवछकियवसा, वंदामिजिणा चउवीस ॥

ए गाथामा एम कह्युं छे के, " फलिह भुया " अगेळा सरखी भु

जाउ. इत्यादिक घणे ठेकाणे फलीह शब्द (अर्गला) भुंगलनो छे; पण जे फलीह शब्द नामा फलसानुं कहे छे, ते मृषावादी जाणवा. फलीह शब्द खाइनुं छे, पण फलसानुं नथी; अने फलसा शब्दे कंटक बोधिकाज छे. तमे टीका, भाष, चुर्णि अवलोकी लेजो. वली लघुनित, वडीनित परठववा तथा अबाधा टालवा वास्ते कमाड खोलीने साधु गाथापतीना घरनी बाहार नीकले, एवो अधिकार कह्यो छे. शाख सूत्र आचारांग श्रुतष्कंध बीजे, सेज्या अध्ययनने बीजे उद्देशे. ते पाठः—

से भिख्खूवा २ उच्चारपासवणेण उच्चाहिंजमाणे राउवा वियालेवा गाहावइकुलस्स दुवारवाहु अवंगुणेज्जा तेणोय तस्ससंधिचारी अणुपविसेज्जा तस्स भिख्खूस्स णोकप्पइ एवं वदित्तएवा अयं तेणे पविसइवा नोपविसेइ उवलियत्तिवा नोवाउवलियत्तिवा आयवपत्तिवा णोवावदइ. णोवावदइ तेणहडं अणेणहडं अयंतेणे अयंउवचरए अयंहत्ता अयएछं मकासी तंतवस्सी-भिख्खू अतेणं-तेणं तिसंकंति अह भिख्खूणं पुव्वोवदिठ्ठा एसपइना ४ जंतहप्पगारं उवस्सए नोठाणंवा ३ चेतेज्जा ॥

अर्थः—से० ते भि० साध साधवी ते ग्रहस्थ सहित शंसर्ग वस्तिने विषे उ० वडीनोत, लघुनीत उ० अबाधाए पोड्यो थको रा० रात्रे अथवा वि० अकाले गा० ग्रहस्थना दु० घरनुं कमाड अ० उघाडे. ते० ते वेलाए चोर त० ते द्वारे छिद्र देखी अणु० पेसे. त० ते पेसतो देखी भि० साधुने णो० न कल्पे ए० एवुं बोलवुं अ० ए ते० चोर प० पेसे छे अथवा नो०नथी पेसतो उ० (लुको) छुपो रहे अथवा नो०छुपी नथी रहेतो. आ० ए उपरःथको चोर पडे अथवा णो० नथी पडतो. णो० ए बोले अथवा नथी बोलतो, ते०ह० तेणे चोर्युं अथवा अ०ह० अनेरे चोर्युं, अ० अथवा तेणे हर्युं, अनेरे हर्युं. अ० ए चोर उ० उपकर्मनो करणहार

अ० ए मारणहार हथियार सहित दीसे छे, अ० एवे ए० इहां म० एम कर्युं, इत्यादिक साधु वदे नहिं, कारण के एम कहेता ते चोरनो विनाश उपजे, अथवा ते चोर एम कहाथी रीशाणो थको ते साधुने विणासे इत्यादिक दोष उपजे अथवा जो एम न कहेतो ते गृहस्थीना मनमां त० ते तपस्वी साधु अ० चोर नथी तोपण ति० चोरनी शंका आवे ए कारणे अ० अथ हवे भि० साधु पु० पूर्वोपदिष्ट तीर्थंकर भाषित ए० ए प्रतिज्ञा छे ज० जे त० तथा प्रकारना (तेवा) उ० उपाश्रये नो० म कायोत्सर्ग, ध्यान, सज्झायादिक चे० करे

भावार्थ —हवे जुओ! इहां एम कह्युं के, साधु गृहस्थीना भेळो रहे तो रात्रे साधुने उच्चार पासवणने वास्ते कमाड उघाडवुं पडे ते कमाड उघाडता चोर घरमा पेसे तेवारे साधुने कहेवुं न घटे के "तारा घरमां चोर आवे छे" जो एम कहे तो चोर रीसाणो थको साधुने मारे अथवा चोरने कोइ मारे, ते माटे न कल्पे एम कह्युं, पण एम न कह्युं जे "साधुने उच्चार पासवणने काजे कमाड उघाडवु वासवु पडे ते कमाड साधुने वासवु उघाडवु कल्पे नही ते माटे साधु गृहस्थीना भेळो न रहे" एम तो नथी कह्युं इहां तो चोरने वास्ते ना कही छे जो कमाड उघाडे नही तो चोर शी रीते पेसे? पण प्रभुए तो कह्युं के, कमाड उघाडीने साधु बाहार जाय तेथी पछवाडेथी चोर पेसे जो कमाड खोलवु उघाडवु न कल्पे तो चोर शी रीते पेसे? रहेवुं तो सुखेथी कल्पे, पण साधुए चोरनु नाम लेवुं नही, तेथी साधु त्यां न रहे, पण कमाडने तो खोलीने मात्रादिक परठववानी प्रभुए आज्ञा दीधी छे कदाच कोइ कमाडने अर्थे वर्ज्या कहे, तो तेनो उत्तर "से भिक्खु वा भिक्खुणिवा" एवो पाठ छे ते साधसाधवी बनेने वर्जवाज जोइए, पण इहां तो बननी जग्या चोरादिकने कारणे वर्जी छे ए साधसाधवी बनेनो भेळो पाठ छे वर्जी तो बनेने वर्जी अने कमाड खोलवानी वासवानी आज्ञा छे तो बनेने छे बनी आज्ञा मागीने कमाड खोलीने गृहस्थीना घरे गोचरी जवुं कह्यु शास्त्र सूत्र दसवेकालीक अध्ययन पांचमे उदेशी पहेले ते गाथा —

पडिकुठकुलं नपविसे, मामग्गं परिवज्जए;
अचियत्तं-कुलं नपविसे, चियत्तं पविसे कुलं. ॥ १७ ॥
साणिपावारपिहियं, अप्पणा नावपंगुरे;
कवाडं नोपणोलिज्जा, उग्गहं से अजाइया. ॥ १८ ॥

अर्थः—प० लोकमां जे निषेध कुल होय अथवा सिद्धांतमां निषेध कुल छे ते कुले न० (साधु) न पेसे. मा० जे घरनो धणी एम कहे के, मारे घेरे मां आवशो, ते घर प० साधु वर्जे. अ० जे कुलने विषे साधु पेसवाथी क्रोध उपजे ते कुले न० साधु पेसे नही. चि० जे कुले साधुना पेसवाथी प्रीती उपजे ते कुले प० साधु पेसे. सा० त्रापडे करी, वस्त्रादिकना (पेच) पडदाए करी बारणुं ढांक्युं होय ते त्रापडादिक अ० आपणपे स्वयमेय पोते ना० उघाडे नही. क० कमाड दीधुं होय ते नो० उघाडे नही. तेवारे शुं करे? उ० अवग्रह से० ते घरना धणीनी अ० विना जाच्यां न जाय. कारण उपन्ये छते अवग्रह मांगीने उघाडे.

भावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां एम कह्युं के, लोकमां तथा सिद्धांतमां निषेदनिक कुलमां साधु प्रवेश न करे, अने घरनो धणी वरजे तथा जे घरमां गयाथी साधुनी अप्रतित उपजे ते कुलमा साधु न जाय; पण जे घरमां गयाथी प्रीती उपजे ते घरमां साधु जाय. ते प्रवेश करवानी विधि कहे छे. सणनुं तापडुं, परेच, के कांबलो बांध्यो होय तो साधु उघाडीने मांही जाय नही. तेमज कमाड वास्युं होय तो ते घरना धणीनी अवग्रह आज्ञा माग्या विना उघाडी घरमां जाय नही; पण प्रयोजन होय तो आज्ञा मागीने शणनुं तापडुं, परेच, कांबलो तथा कमाड खोलीने माहे जाय. ए जुउ ! आ वीतरागदेवे तो कमाड खोलवानी आज्ञा दीधी छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " सणनुं तापडुं, परेच तथा कांबलो तो पोताना हाथे न खोलवो कह्यो, ते तो आज्ञा मागोने खोले; पण कमाड तो नज खोले. " तेनो उत्तर, हे देवानुप्रीय ! जो एम छे तो

" उगइसे अजाइया "नु त्रीजु पद कहेवु जोइए अने " कमाडनो पणो सिज्जा " ए चोथुं पद कहेवु जोइए, पण भगवते तो शणनु तापडं परेघ, कामलो अने कमाड, त्रणे विना आज्ञाए खोलवानी निषेध कीधो, अने चोथापदमा त्रणेनी आज्ञा मागीने खोलवु कह्यु तमे मतना खींचे आघा पाछा खोटा अर्थ केम करो छो ?

तेमारे वली तेरापथी कहे छे के " एतो उघाडे कमाडे साधुजी माहे गया होय अने पाछु आडु आवी गयु होय तो आज्ञा मागीने कमाड खोलीने पाछा बाहार नीकले ए निकलवा आश्यो छे " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! कोइ एकली स्त्री साधुनु रुप देखीने मोहने वशे आडु कमाड वासी दे, तथा कोइ साधुना द्वेषीए आडु कमाड दीधु होय ते खोलीने बाहार नीकलवानी आज्ञा आपे नही हवे तमारी केहेणीने लेखे आज्ञा विना खोलवानी भगवतनी आज्ञा नथी हवे एकली स्त्री थका बध कमाडथी नेलाज रहे के आज्ञा विना खोलीने बाहार निकले ते कहो तेवारे कहे छे के " एकली स्त्री थका, गहस्थना घरमा वासे कमाडे क्षणमात्र रहेवु न कल्पे " त्यारे हे देवानुप्रीय ! नीकलती वखते आज्ञा मागी आडु खोलवानो शु प्रयोजन रह्यो ? त्यां तो आज्ञा दे तोपण कमाड खोलीने नीकलवु अने न दे तोपण निकलवु, वास्ते एतो घरमा जवाना वखतनोज पाठ छे - '

तेवारे तेरापथी कहे छे के " जो मनुष्य कमाड खोलवानी आज्ञा दीधी छे, तो गहस्थीना घेरे गयाथी आडु कमाड देखी पाछा केम फरोछो ? आज्ञा लइने माहे केम नथी जता ? " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! प्रभुए कह्यो ते पाठ तो प्रमाण छे आज्ञा लइने खोलीने जावु कल्पे, पण आचार्योए व्यवहार बाध्यो छे के, गहस्थीने घेरे आडुं कमाड खोलावु नही, केमके गहस्थो अजयणाथी खोले, तथा आज्ञा मागे तेवारे उघाडे मोंहोडे बोले, तथा कोइ आज्ञा देयामा समजे, कोइ न समजे, तथा बाहारथी कोइ गहस्थे आज्ञा दीधी, अने साधु खोलीने मांहे गया, अने आगल स्त्री आदिक बेमरजादा बेठी होय, तथा कोइ

द्वेष पामे इत्यादिक कारणोथी गृहस्थीने घरे आरुं कमाड न खोलावबुं; पण प्रजुए कह्युं ते रीते होय तो खोलवुं कल्पे. वली प्रजुए आहार करवो कह्यो छे, पण अपवास करे तो अवगुण न थाय; तेम गृहस्थीने घेरे कमाड न खोलावे तो शुं ? ए पाठ जुठो कहेवाशे ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "जेम आहार करवो कह्यो छे, पण अपवास करे तो गुण थाय; तेवी रीते अमे कमाड वासवुं, खोलवुं छोड्युं तेमां अवगुण शुं थयो ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जगवंते आहार करवो कह्यो छे, तेम अपवास पण करवो कह्यो छे. हवे आहार छोडीने अपवास करे तो मोटो लाज छे; पण अपवास करीने एम कहे के, "जे कोइ साधु आहार करे तेमां साधुपणुं नही." एम कहे तेने जुठाबोला अनंत संसारी कहीए. तेम तमे कहो छो के, हमे तो कमाड वासवुं जडवुं छांड्युं छे, अने बीजा कोइ साधु कमाड उघाडे, वासे तेनां पांच माहाव्रत जागे. एवां तीर्थंकरनां वचन उत्थापीने जुठां आल द्यो छो, तेथी तमने छोड्यानो तो गुण नथी; पण अनंत संसार वधशे अने बोध बीज पण अनंते काले मलवुं डुर्लज थाशे; केमके तमे तीर्थंकर देवना वचनना उत्थापक छो.

वली साधुने कमाड उघाडवुं निषेधे तेने पुछवुं के, आरजाने कमाड वासवुं उघाडवुं, साधु विना न्यारुं क्यां कह्युं छे ? केमके माहाव्रत तो साध, साधवीने सरखां छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "बृहत् कल्पमां साधुने कमाड न वासवुं, अने आरजाने तो वासवुं चाल्युं छे." एवुं सूत्रनुं जुठुं नाम ले छे. ते बृहत्कल्पना पहेला उद्देशानो पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथिणं अवंगुयदुवारिय उवस्सए वत्थए. एगं पत्थारं अंतो किच्चा एगंपत्थार वाहिकिच्चा उहाडिय चिलिमिलीयागंसि एवण्ण कप्पइ वत्थए. कप्पइ निग्गंथाणं अवंगुय डुवारिय उवस्सए वत्थए ॥

"उगाहसे अजाइया "नु त्रीजु पद कहेवु जोइए अने " कमाडनो पणो छिद्धा " ए चोथु पद कहेवुं जोइए, पण भगवते तो शणनु तापडुं परेच, कामलो अने कमाड, एणे विना आज्ञाए खोलवानी निषेध कीधी, अने चोथापदमां एणेनी आज्ञा मागीने खोलवु कह्यु तमे मतना कीधे आघा पाछा खोटा अर्थ केम करो छो ?

तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के " एतो उघाडे कमाडे साधुजी मांहे गया होय अने पाछु आडु आवी गयु होय तो आज्ञा मागीने कमाड खोलीने पाछा बाहार नीकले ए निकलवा आख्यो छे " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! कोइ एकली स्त्री साधुनु रुप देखीने मोहने वशे आडु कमाड वासी दे, तथा कोइ साधुना द्वेषीए आडु कमाड वाघु होय ते खोलीने बाहार नीकलवानी आज्ञा आपे नही हवे तमारी के हेणीने लेखे आज्ञा विना खोलवानी भगवतनी आज्ञा नथी हवे एकली स्त्री थका सघ कमाडथी भेलाज रहे के आज्ञा विना खोलीने बाहार निकले ते कहो तेवारे कहे छे के " एकली स्त्री थका, ग्रहस्थना घरमा वासे कमाडे क्षणमात्र रहेवु न कल्पे " त्यारे हे देवानुप्रीय! नीकलती वखते आज्ञा मागी आडु खोलवानो शु प्रयोजन रह्यो ? त्यां तो आज्ञा दे तोपण कमाड खोलीने नीकलवु अने न दे तोपण निकलवु, वास्ते एतो घरमा जवाना वखतनोज पाठ छे "

तेवारे तेरापथी कहे छे के " जो प्रभुए कमाड खोलवानी आज्ञा दीधी छे, तो ग्रहस्थीना घेरे गयाथी आडु कमाड देखी पाछा केम फरोछो ? आज्ञा लइने मांहे केम नथी जता ? " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! प्रभुए कह्यो ते पाठ तो प्रमाण छे आज्ञा लइने खोलीने जाइ कल्पे, पण आचार्योए व्यवहार बांध्यो छे के, ग्रहस्थीने घेरे आडु कमाड खोलावबु नही, केमके ग्रहस्थो अजयणाथी खोले, तथा आज्ञा मागे तेवारे उघाडे मोंहोडे बोले, तथा कोइ आज्ञा वेवामां समजे, कोइ न समजे, तथा बाहारथी कोइ ग्रहस्थे आज्ञा दीधी, अने साधु खोलीने मांही गया, अने आगल स्त्री आदिक वेमरजादा बेठी होय, तथा कोइ

भावार्थः—हवे इहां एम कह्युं छे के, साधवीने चौटा, शेरीने विषे, बे मार्ग मले त्यां, त्रण मार्ग मले त्यां, बे हाटनी वचाले, इत्यादिक सात स्थानकने विषे रहेवुं न कल्पे; अने इत्यादिक स्थानकने विषे साधुने रहेवुं कल्पे कह्युं छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो साधुने चौटामांज रहेवुं कल्पे, बीजे ठेकाणे रहेवुं नज कल्पे. वली वृहत् कल्पना बीजा उद्देशामां, पांच बोल साधवीने न कल्पे, अने साधुने कल्पे कह्युं छे. ते पाठः—

नो कप्पइ निग्गंथीणं अह आगमण गिहंसिवा वियम्म-गिहंसिवा वंसिमुलंसिवा रुक्कमुलंसिवा अन्नावगासियं सिया वत्थए. कप्पइ निग्गंथाणं अहआगमण गिहंसिवा वियम्मगिहंसिवा वंसिमुलंसिवा रुक्कमुलंसिवा अन्नावगा-सियं सिवा वत्थए.

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साधवीने अ० अथ आ० पंथी आवी उतरता होय गि० ते घरने विषे वि० चार दिशाए उघाडुं वं० वांसना खपेडाना मुले रु० वृक्षना मुले अ० कांइक ढांकीने बाकी उघाडी लघु भींत (कोइ मांही उतरी आवी ते माटे) ए ठामे व० रेहवुं. क० कल्पे नि० साधुने अ० अथ हवे आ० पंथी आवी उतरता होय गि० ते घरने विषे वि० चारे दिशाए उघाडुं वं० वांसना खपेडाना मुले रु० वृक्षना मुले अ० कांइक ढांकी बाकी उघाडी लघु भिंते (कोइ मांहे उतरी आवे ते माटे) एवे ठामे व० रहेवुं.

भावार्थः—हवे जुओ! ज्यां पंथी आवीने उतरता होय ते घरने विषे, चार दिशे उघाडुं होय त्यां, वांसना खपेडाना मुले, वृक्षना मुले, अने कांइक ढांक्युं कांइक उघाडुं छबो भिंत इत्यादिक स्थानकने विषे साधवीने रहेवुं न कल्पे; अने साधुने इत्यादिक स्थानकने विषे रहेवुं कल्पे. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो ज्यां पंथी उतरता होय ते स्थानके यावत् वृक्षना मुलेज साधुने रहेवुं कल्पे, बीजी जग्याए न कल्पे; अने

अर्थ—नो० नकल्पे नि० साधवीने अ० अजंगद्वारे (उघाडे बार णे) उ० स्थानकने विषे व० रहेवु ए० एक कको (पडदो) अं० मांही बांधे ए० एक कको वा० बाहार बांधे उ० बांधीने रहे चि० चेल बल नी चिलमणी (परेच) राखे अवश्य ए० एणी विधे क० रेहेवु कल्पे क० कल्पे नि० साधुने अ० उघाडे बारणे उ० उपाश्रये व० रहेवु

भावार्थ—इहां तो एम कह्यु छे के, साधवीने उघाडे बारणे रहेवु न कल्पे, पण एक पडदो माहे अने एक पडदो बाहार बांधीने रहेवु कल्पे एम चौदमा सूत्रमा कह्यु छे, अने पनरमा सूत्रमां कह्युं छे के, साधुने उघाडे बारणे रेहेवु कल्पे, पण एम नथी कह्यु के, साधुने कमाड वासवु न कल्पे इहांतो एम कह्यु छे के, उघाडु स्थानक मले तो आरजाने पडदो बांधीने रहेवु कल्पे अने साधुने पडदो बांध्या विना रहेवु कल्पे हवे तमे कहोछो के "अजगद्वारे कल्पे कह्यु तेथी वासवु न कल्पे" पण बृहत्कल्पना पहेला उद्देशामा एवी रीतना घणा बोल कह्या छे के, साधवीने न कल्पे अने साधुने कल्पे ते पाठ—

नो कप्पइ निग्गथीणं आवणगिहंसिवा रथामुहंसिवा सघाडगसिवा तिकसिवा चउक्कसिवा चचरसिवा अतरावणसिवा वछए कप्पइ निग्गंथाण आवणगिहंसिवा रथामुहंसिवा सघाडगसिवा तकंसिवा चउक्कसिवा अत्तरावणसिवा चचरसिवा वछए ॥

अर्थ—नो० न कल्पे नि० साधवीने आ० हाट चोटाने विषे र० शेरीना रस्ता माहीं स० सींघोडाने आकारे थे पथने विषे ति० त्रीकने विषे च० चोपथने विषे च० घणीघाट एकठी मले त्या अं० बे हाटनी वचाले व० रहेवु क० कल्पे नि० साधुने आ० हाट चोटाने विषे र० शेरीना रस्तामां स० सींघोडाने आकारे थे पथने विषे त० त्रिकने विषे च० चोपथने विषे च० घणी घाट एकठी मले त्यां अं० बे हाटनी वचाले व० रहेवुं

वली साधुने कमाड वासवुं उघाडवुं उत्थापे छे, तेने पुछीए के, आरजाने पण व्रहतकल्पमां कमाड देवुं तो कह्युं नथी. त्यां तो बे प्रेच बांधीने रेहेवुं कह्युं छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " साधवीने शीलनी रक्षा माटे, कमाड न होय तो प्रेच बांधीने रहेवुं कह्युं छे, पण कमाड उघाडवा वासवानो ना नथी कह्यो. " त्यारे हे देवानुप्रीय ! शीयल तो साध साधवी बंनेने सरखुंज छे. साधुने पण शीयलनी जतना माटे नव वाड कही छे. पहेली वाडमां स्त्री, पसु अने पंडग रहित स्थानक सेववुं कह्युं, त्रीजी वाडमां एक आसन वजर्युं अने पांचमीमां भिंत-प्रेचने आंतरे रहेवुं वर्ज्युं. हवे जुओ ! कमाड विना, मदनो छकी स्त्री तथा कुतरी प्रमुख भेली आवीने सुवे तो वाड शीरीते रहे ? डाह्या होते वीचारी जोजो.

वली तेरापंथी कहे छे के " आरजाने कमाड वासवुं कह्युं छे. " तेने कहीये के, प्रभुनी आज्ञा तो प्रेच बांधोने रहे तोपण पलाय छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे कमाड वासवाथी पेहेलुं माहाव्रत भागे, त्यारे पेहेलुं माहाव्रत भांगीने चोथुं राखवुं एमां शी अधिकाइ ? माहाव्रत तो पहेलुं अने चोथुं सरखांज छे. वास्ते पहेलुं माहाव्रत भांगोने चोथुं माहाव्रत राखवुं एवो आज्ञा प्रभु कदी आपेज नही. वली शीयल भागवाने कोइ अनार्य तो कोइ कर्मना जोगे कोइ वखतेज आवे, अने परवशपणे शीयल भागे एवुं काम तो कवचितज पडे; पण कमाड वासीने जाणी जाणीने रोज रोज पहेलुं माहाव्रत भागे तेनो परलोक शीरीते सुधरशे ? तमारी केहेणी ए छे के, प्रभुनी आज्ञाथी काम करतां जीव मरे तोपण व्रत भागे नही. वली "चोथुं माहाव्रत मारे राखवुं, जीवनी हिंशा थती होय तो भले थाय " एवी रीतनी श्रद्धा होय तो ए द्रष्टान्ते आरजा अटवीमां गइ, तेवारे कोइ अनार्ये आवीने एक साधवीनो हाथ पकड्यो. तेवारे बाकीनी साधवीओए मलीने शीयल राखवाने वास्ते ते पुरुषने डुंगो दइ मार्यो. ते तमारी श्रद्धाने लेखे, नित्यनुं शीयल राखवाने कारणे कमाडथी हिंसा तो करती अने काडी कंथवा

तमे तो पूर्वोक्तनी प्रतिपक्षि जग्या जोगवो छो ए केवी रीते छे ते कहो वळी साधवीने विकट (दुर्भिक्ष) देशने विषे विहार करवो न कल्पे, अने साधुजीने कल्पे हवे तमारी केहणीने लेखेतो साधुने सुभिक्ष देशमा न रहेवुं जोइए वळी एकली साधवीने विहार करवो न कल्पे, अने साधुजीने एकला विहार करवो कल्पे हवे तमारी केहणीने लेखे साधुए घणा साधुमां रहेवु न जोइए तेमज साधवीने अटवीने विषे रहेवु न कल्पे अने साधुने अटवीने विषे रहेवुं कल्पे ए पण तमारी केहणीने लेखे तो साधुने अटवीमाज रहेवुं जोइए पण वस्तीमां के गाममां रहेवु न जोइए वळी पुरुष रहेतो होय ते जग्यामां साधवीने रहेवु न कल्पे, अने साधुने ते जग्यामां रहेवुं कल्पे ते पण तमारी केहणीने लेखे तो साधुने सुनी जग्यामां न रहेवु जोइए वळी बृहत्कल्पना पांचमा उद्देशामां कह्यु छे के, साधुने उपाली दांडीनो रजोहरणो कल्पे, अने साधवीने न कल्पे ते पण तमारी केहेणीने लेखे तो साधुने उपाली दांडीनोज रजोहरणो राखवो जोइए. तमे कहो छो के, साधवीने अन्नगद्वार न कल्पे, अने साधुने कल्पे ए पाठ वासे कमाड उघाडे तेने अटवि आदिकने विषेज रहेवुं, गामने विषे न रहेवु, ए बोल पण प्रमाण करवा जोइए पण हे देवानुप्रीय ! ए पाठ तो एम छे के, जो गाम नगर न होय तो साधुने अटवीमां रहेवु कल्पे, अने जग्या न मळे तो, वृक्ष हेठे रहेवु कल्पे, इत्यादिक सर्व बोल कारणे काम पडयाथी साधुने कल्पे कह्या छे, अने आरजाने कारणे काम पडयाथी पण न कल्पे, मोटुं मेहेलु सजादिक पडया पण वस्तीमाज जइने रहेवुं कल्पे एम सर्व बोल जाणवा उपाय करीने रहेवु पणे आरजाने ए बोल काम पडयाथी पण न करवा, अने साधुने काम पडयाथी कल्पे कह्या छे तेमज कमाड न होय तो अन्नगद्वारे कल्पे एम कह्युं छे जो कमाड वासवुं उघाडवु न कल्पे तो " नोकप्पइ निग्गंथीणं सकवाडं उवस्सए वथ्थए " एवो पाठ जोइए, पण प्रभुए तो, कमाड वर्ज्युं नथी, अने जे वरजे छे ते भ्रम बुद्धिया वर्जे छे.

वली साधुने कमाड वासवुं उघाडवुं उत्थापे छे, तेने पुछीए के, आरजाने पण व्रहतकल्पमां कमाड देवुं तो कह्युं नथी. त्यां तो बे प्रेच बांधीने रेहेवुं कह्युं छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " साधवीने शीलनी रक्षा माटे, कमाड न होय तो प्रेच बांधीने रहेवुं कह्युं छे, पण कमाड उघाडवा वासवानो ना नथी कह्यो. " त्यारे हे देवानुप्रीय ! शीयल तो साध साधवी बंनेने सरखुंज छे. साधुने पण शीयलनी जतना माटे नव वाड कही छे. पहेली वाडमां स्त्री, पसु अने पंडग रहित स्थानक सेववुं कह्युं, त्रीजी वाडमां एक आसन वजर्युं अने पांचमीमां भिंत-प्रेचने आंतरे रहेवुं वर्ज्युं. हवे जुउ ! कमाड विना, मदनो छकी स्त्री तथा कुतरी प्रमुख भेली आवीने सुवे तो वाड शीरीते रहे ? डाह्या होते वीचारी जोजो.

वली तेरापंथी कहे छे के " आरजाने कमाड वासवुं कह्युं छे. " तेने कहीये के, प्रभुनी आज्ञा तो प्रेच बांधीने रहे तोपण पलाय छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे कमाड वासवाथी पेहेलुं माहाव्रत भागे, त्यारे पेहेलुं माहाव्रत भांगीने चोथुं राखवुं एमां शी अधिकाइ ? माहाव्रत तो पहेलुं अने चोथुं सरखांज छे. वास्ते पहेलुं माहाव्रत भांगीने चोथुं माहाव्रत राखवुं एवी आज्ञा प्रभु कदी आपेज नही. वली शीयल भागवाने कोइ अनार्य तो कोइ कर्मना जोगे कोइ वखतेज आवे, अने परवशपणे शीयल भागे एवुं काम तो कवचितज पडे; पण कमाड वासीने जाणी जाणीने रोज रोज पहेलुं माहाव्रत भागे तेनो परलोक शीरीते सुधरशे ? तमारी केहेणी ए छे के, प्रभुनी आज्ञाथी काम करतां जीव मरे तोपण व्रत भागे नही. वली "चोथुं माहाव्रत मारे राखवुं, जीवनी हिंशा थती होय तो भले थाय " एवी रीतनी श्रद्धा होय तो ए दृष्टान्ते आरजा अटवीमां गइ, तेवारे कोइ अनार्ये आवीने एक साधवीनो हाथ पकड्यो. तेवारे बाकीनी साधवीउए मलीने शीयल राखवाने वास्ते ते पुरुषने ठुंगो दइ मार्यो. ते तमारी श्रद्धाने लेखे, नित्यनुं शीयल राखवाने कारणे कमाडथी हिंसा तो करती अने काडो कंथवा

मारती, अने आज शीयल राखवाने वास्ते एक पुरुषनी घात करी त मारी केडेणीने लेखे ए आरजाने किंचीतमात्र प्रायश्चित आवतु न जोइए तेवारे तेरापथी, जवाब देवानी शक्ति नहिं तेथी क्रोध करे, पण मुरख एम न समजे के, प्रभुए तो कमाड खोलवा वासवानी साध साधवी धनने आज्ञा आपी छे जो कमाड न होय तो आरजाने मेष बांधीने रहेवुं अने साधुने उघाडामा रहेवुं कल्पे, पण प्रभुए एम नथी कह्युं के, साधवीए तो हींसा करवी अने साधुए न करवी साधसाधवी धंनेने जयणाथी काम करतां किंचीत मात्र प्रायश्चित नथी हवे प्रभुनां वचन उत्थापीने पोतानी श्रद्धा स्थापवाने कारणे कमाड उत्थापे छे ते अनत ससार वधारे छे वली जे जग्यामा धान्य तथा सुखडी प्रमुख पड्या होय तथा मदीरा प्रमुखना घडा उघाडा होय ते जग्यामां साधुने उतरवुं कह्युं शास्त्र सूत्र वृहत्कल्प उद्देशो बीजे ते पाठ —

उवस्सयस्स अंतोवगडाए सालीणिवा विहिणिवा मुग्गाणिवा मासाणिवा तिल्लाणिवा कुलत्थाणिवा गोधूमाणिवा जवाणिवा उक्खित्ताणिवा विक्खित्ताणिवा विकिन्नाणिवा विप्पकीनाणिवा नोकप्पइ निग्गथाणांवा २ आहाछंदमवि वत्थए ॥ अहपुण एवजाणेजा नोउक्खित्ताइ ४ रासिकडाणिवा पुजकडाणिवा भित्तिकडाणिवा कुलियकडाणिवा लछियाणिवा मुदियाणिवा पिहीयाणिवा कप्पइ निग्गंथाणावा २ हेमत गिम्हासु वत्थए ॥ अहपुण एवजाणेजा नोरासिकडाइ नोपुजकडाइ नोभित्तिकडाई नोकुलियकडाई कोठाउत्ताणिवा पल्लाउत्ताणिवा मचाउत्ताणिवा मालाउत्ताणिवा उलित्ताणिवा विलित्ताणिवा लछियाणिवा मुदियाणिवा पिहीयाणिवा कप्पइ निग्गथाणावा २ वासावासं वत्थए ॥ उवस्सयस्स अतोवगडाए सुराविथड कुंभे वा

सोविरवियडकुंभेवा उवणिक्खितेसिया नोकप्पइ निग्गंथा-
णंवा २ अहालंदमवि वत्थए; हुरत्थाए उवस्सयं पडिले-
हमाणे नोलभेज्जा एवंसेकप्पइ एगरायंवा दुराइंवा वत्थए.
नो से कप्पइ परं एगरायंवा दुराइंवा वत्थए; जेतत्थ एग-
याउवा दुरायाउवा परंवसेज्जा सेसंतरा छेएवा परिहारेवा
॥२॥ उवस्सयस्स अंतोवगडा सीउदग वियडकुंभेवा उ-
सिणोदग्ग वियडकुंभेवा उवनिक्खित्तेसिया नोकप्पइ नि-
ग्गंथाणंवा २ आहालंदमवि वत्थए; हुरत्थाय उवस्सयं
पडिलेहमाणे नोलभेज्जा एवंसे कप्पइ एगरायंवा दुरायंवा
वत्थए; नो से कप्पइ परं एगरायंवा दुरायंवा वत्थए. जेतत्थ
एगरायाउवा दुरायाउवा परंवसेज्जा सेसंत्तराछेएवा परिहा-
रेवा ॥३॥ उवस्सयस्स अंतोवगडाए सव्वराइए जोइज्जी-
याएवा नोकप्पइ निग्गंथाणंवा २ अहालंदमवि वत्थए;
हुरत्थाय उवस्सयं पडिलेहमाणे नोलभेज्जा एवंसेकप्पइ
एगरायंवा दुरायंवा वत्थए. नोसेकप्पइ परं एगरायाउवा
दुरायाउवा वत्थए. जेतत्थ एगरायाउवा दुरायाउवा परंवेज्जा
सेसंतराछेएवा परिहारेवा ॥४॥ उवस्सयस्स अंतोवगडाए
सव्वराइए पइवे पदीवेज्जा नोकप्पइ निग्गंथाणंवा २ आ-
हालंदमवि वत्थए; हुरत्थाय उवस्सय पडिलेहमाणे नोल-
भेज्जा एवंसेकप्पइ एगरायंवा डुरायंवा वत्थए. नोसेकप्पइ
परं एगरायाउवा दुरायाउवा; परंवसेज्जा सेसंतराछेएवा
परिहारेवा ॥५॥ उवस्सयस्स अंतोवगडाए पिंडएवा लोय-
एवा खीरंवा दधिंवा नवणियंवा सप्पिवा तेल्लंवा फाणियंवा
पुयंवा संकुलंवा सिहरणिवा उक्खितागिवा ४ नोकप्पइ

मारती, अने आज शीयल राखवाने वास्ते एक पुरुषनी घात करी त मारी केडेणीने लेखे ए आरजाने किंचीतमात्र प्रायश्चित आववु न जोइए तेवारे तेरापथी, जवाब देवानी शक्ति नहिं तेथी क्रोध करे, पण मुरख एम न समजे के, प्रभुए तो कमाड खोलवा वासवानी साध साधवी बंनने आज्ञा आपी छे जो कमाड न होय तो आरजाने भेष धारीने रहेवुं अने साधुने उघाडामा रहेवुं कल्पे, पण प्रभुए एम नथी कह्युं के, साधवीए तो हींसा करवी अने साधुए न करवी साधसाधवी बनेने जयणाथी काम करतां किंचीत मात्र प्रायश्चित नथी हवे प्रभुनां वचन उत्थापीने पोतानी श्रद्धा स्थापवाने कारणे कमाड उत्थापे छे ते अनत संसार वधारे छे वली जे जग्यामा धान्य तथा सुखडी प्रमुख पड्यां होय तथा मदीरा प्रमुखना घडा उघाडा होय ते जग्यामां साधुने उतरवुं कह्यु शास्त्र सूत्र वृहत्कल्प उद्देशे बीजे ते पाठ —

उवस्सयस्स अतोवगडाए सालाणिवा विहिणिवा मुग्गाणिवा मासाणिवा तिल्लाणिवा कुलत्थाणिवा गोधूमाणिवा जवाणिवा उक्खित्ताणिवा विक्खित्ताणिवा विकिन्नाणिवा विप्पकीनाणिवा नोकप्पइ निग्गथाणवा २ आहालंदमवि वत्थए ॥ अहपुण एवजाणेजा नोउक्खित्ताइ ४ रासिकडाणिवा पुजकडाणिवा भित्तिकडाणिवा कुलियकडाणिवा लछियाणिवा मुदियाणिवा पिहीयाणिवा कप्पइ निग्गंथाणवा २ हेमत गिम्हासु वत्थए ॥ अहपुण एवजाणेजा नोरासिकडाइ नोपुजकडाइ नोभित्तिकडाइं नोकुलियकडाइं कोठाउत्ताणिवा पल्लाउत्ताणिवा मचाउत्ताणिवा मालाउत्ताणिवा उलित्ताणिवा विलित्ताणिवा लछियाणिवा मुदियाणिवा पिहीयाणिवा कप्पइ निग्गथाणवा २ वासावासं वत्थए ॥ उवस्सयस्स अतोवगडाए सुरावियड कुंभे वा

बुहार्यां छे, वि० बारणां माटीथी लीप्यां छे, लं० उपर रेखा कीधी छे, मु० मों उपर मुद्रा कीधी छे अने पि० लुगडे बांधी छे, एवे स्थानके कल्पे नि० साधु साधवीने वा० चोमासे व० रहेवुं. उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां सु० मदिराना अचेत कुंभ सो० खाटा मदीराना अचेत कुंभ उ० ग्रह-स्थे मुक्या छे, तेवा स्थानके नो० न कल्पे नि० साध साधवीने अ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो जघन्य काल पण व० रहेवुं. हु० बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां थकां नो० जो बीजुं स्थानक न मले न पामे तो ए० एम पूर्वोक्त स्थानकमां क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं (जरुर कारणे). नो० न कल्पे तेमने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं; कारण के जे० जे तीहां ए० एक रात्री दु० बे रात्रो प० उपरान्त वसे तेने से० तेटला दीनना छे० चारित्रनो छेद प० ते विशेष प्रायश्चित आवे ॥२॥ उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां सि० शीतल पाणी वि० अचेत पाणीना कुंभ उ० उंना पाणीना वि० कुंभ अंघोल करवाना उ० मुक्या थाप्या होय, तीहां नो० न कल्पे नि० साधु साधवीने अ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो जघन्य काल पण व० वसवुं. हु० बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां जोतां थकां नो० न मले (बीजु स्थानक) तो तेने ए० ए क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं (जरुर माटे). नो० न कल्पे तेमने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं. जे० जे तीहां ए० एक रात्री दु० बे रात्रो प० उपरान्त जेटलुं अधिकुं रहे से० तेटला दीवसना चारित्रनो छेद थाय तथा प० तप प्रायश्चित पामे ॥ ३ ॥ उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां स० आखो रात्री जो० अग्नि बलतो होय एवे स्थानके नो० न कल्पे नि० साध साधवीने आ० हाथनो रेखा सुकाय तेटलो काल पण व० रेहेवुं. बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां (जोता) थकां नो० न मले न पामे (बीजुं स्थानक), ता ए० ए पूर्वोक्त स्थानकमां क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं (जरुर माटे). नो० न कल्पे से० तेने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० वसवु रेहेवुं. जे० जो

निग्गथाणवा २ आहालदमवि वत्थए ॥ अहपुण एवंजा-णेज्जा नोउक्खित्ताइ ४ रासकमाणिवा पुंजकमाणिवा भि-त्तियकमाणिवा कुलियकमाणिवा लंछियाणिवा मुद्दिया-णिवा पेहीयावा कप्पइ निग्गथाणवा २ हेमंत गिम्हासु वत्थए ॥ अहपुण एवजाणेज्जा नोरासिकमाइ ४ कोठाउ-त्ताणिवा पल्लाउत्ताणिवा मंचाउत्ताणिवा मालाउत्ताणिवा कुंभिउत्ताणिवा करभिउत्ताणिवा उल्लित्ताणिवा विलित्ता-णिवा लंछियाणिवा मुद्दियाणिवा पिहियाणिवा कप्पइ निग्गथाणवा २ वासावास वत्थए ॥६॥

अर्थ—उपाश्रयनी विधि कहेछे —उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामा सा० सालि (चावल) वि० वृहि मु० मग मा० अडद ति० तल कु० कुलथ गो० गहु ज० जव, एटला जातना धान्य उ० विखर्या होय वि० विशेषे करी विखर्यां होय विकि० सघले प्रसर्यां होय विप्प० पग मु कवाने पण ठाम न होय, एवे स्थानके नो० न कल्पे नि० साधु साधवीने आ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो (आहालद) जघन्य काल पण व० वसवु अ० अथ हवे वली ए० एम जाणे नोउ० नाख्या नथी, विखर्या नथी, सघले प्रसर्या नथी, पग मुकवाने ठाम छे, रा० एक पासे ढगलो कीधो छे, पु० उंचो ढगलो कीधो छे, भि० भितने लगतो ढगलो कीधो छे, कु० कुंभाराने आकारे ढगलो कीधो छे, लं० उपर राख रखेली छे, मु० माटी प्रमुख मुद्रा छाप कीधी छे, पि० ढांकणे ढांकी मुक्या छे, एवा स्थानके क० कल्पे नि० साधु साधवीने हे० शियाले गि० उन्हाले व० रहेवु अ० अथ हवे वली ए० एम जाणे के ज्यां लगी नोरा० रास नथी कीधी, नो०पु० नथी ढगलो कीधो, नोभि० नथी भींते उंची कीधी, नोकु० नथी कुंभालु कीधु, को० कोठीमा प० पालामां म० वासना कामां के मा० उपरले माले घाल्या छे, उ० ते कोठी प्रमुखनां बारणां छाणी

बुहार्यां छे, वि० बारणां माटीथी लीप्यां छे, लं० उपर रेखा कीधी छे, मु० मों उपर मुद्रा कीधी छे अने पि० लुगडे बांधी छे, एवे स्थानके कल्पे नि० साधु साधवीने वा० चोमासे व० रहेवुं. उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां सु० मदिराना अचेत कुंभ सो० खाटा मदीराना अचेत कुंभ उ० ग्रह-स्थे मुक्या छे, तेवा स्थानके नो० न कल्पे नि० साध साधवीने अं० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो जघन्य काल पण व० रहेवुं. हु० बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां थकां नो० जो बीजुं स्थानक न मले न पामे तो ए० एम पूर्वोक्त स्थानकमां क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं (जरुर कारणे). नो० न कल्पे तेमने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं; कारण के जे० जे तीहां ए० एक रात्री दु० बे रात्री प० उपरान्त वसे तेने से० तेटला दीनना छे० चारित्रनो छेद प० ते विशेष प्रायश्चित आवे ॥१॥ उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां सि० शीतल पाणी वि० अचेत पाणीना कुंभ उ० उंना पाणीना वि० कुंभ अंघोल करवाना उ० मुंक्या थाप्या होय, तीहां नो० न कल्पे नि० साधु साधवीने अ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो जघन्य काल पण व० वसवुं. हु० बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां जोतां थकां नो० न मले (बीजु स्थानक) तो तेने ए० ए क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं (जरुर माटे). नो० न कल्पे तेमने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं. जे० जे तीहां ए० एक रात्री दु० बे रात्री प० उपरान्त जेटलुं अधिकुं रहे से० तेटला दीवसना चारित्रनो छेद थाय तथा प० तप प्रायश्चित पामे ॥ २ ॥ उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां स० आखो रात्री जो० अग्नि बलतो होय एवे स्थानके नो० न कल्पे नि० साध साधवीने आ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो काल पण व० रहेवुं. बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां (जोता) थकां नो० न मले न पामे (बीजुं स्थानक), ता ए० ए पूर्वोक्त स्थानकमां क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं (जरुर माटे). नो० न कल्पे से० तेने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० वसवुं रहेवुं. जे० जो

तीहा ए० एक रात्री दु० बे रात्री प० उपरान्त रहे तो से० तेटला दी वसना चारित्रनो छेद थाय प० तपनु प्रायश्चित आवे ॥ ४ ॥ उ० उपाश्रयनी अ० मर्यादामा स० आखी रात्री प० दीवो प० बलतो होय तो नो० न कल्पे नि० साध साधवीने आ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो काल मात्र व० रहेवु हु० जो आहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां जोता थका नो० न मले न पामे बीजु स्थानक, तो ए० पूर्वोक्त तेमने क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवु नो० न कल्पे तेमने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री रहेवुं प० ते उपरान्त जेटलु अधिकुं रहे से० तेटला दीवसना चारित्रनो छेद प० तपनु प्रायश्चित आवे ॥ ५ ॥ उ० उपाश्रयनी अ० मर्यादामां पि० लाडु प्रमुख लो० लुची प्रमुख खी० दुध द० दही न० मालण स० घी ते० तेल फा० गोल पु० पुडा प्रमुख स० साकली (तलनी) सि० सीरणी उ० वीखरी होय, माटली भरी मुकी होय, विशेषे करी ज्रीजी होय, सांकडी ज्रीजी होय, तेवे स्थानके नो० न कल्पे नि० साध साधवीने आ० हाथनी रेखा सुके तेटलो काल पण व० रहेवु अ० अथ हवे वली एम जाणे नो० नथी विखर्या रा० एक पासे करी मुक्या छे पु० एके पासे उपा कर्या छे भि० एक पासे भिंते नाख्या छे कु० एक पासे कुडाली कर्या छे ल० ते पण लांछया छे मु० मुद्रा कीधी छे पे० ढुगले ढांक्या छे, एवा स्थानके क० कल्पे नि० साध साधवीने हे० शियाले गि० उन्हाले व० रहेवु अ० अथ हवे वली ए० एम जाणे नो० नथी रासी कीधी ४ को० कोठामां प० पालामां म० मांचा उपर तथा मा० उपरले माले मुक्या छे कु० कुज्रीने आकारे ज्राजनमा तथा क० घडामा मुंक्या छे उ० ढाणे लींपी छे वि० माटीए बारणा बुर्यां छे लं० लांछया छे मु० मुद्रा कीधी छे पि० ढुग ढाना ढाकणे ढाक्या छे, ते स्थानके क० कल्पे नि० साधु साधवीने वा० चोमासे व० रहेवु ॥ ६ ॥

ज्रावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमा एम कह्यु छे के, धान्य, सुखडी प्रमुख वीखर्यां होय ते जग्यामां तो हाथनी रेखा सुकाय तेटलो वार

पण साध साधवीने रहेवुं न कल्पे; अने धान्य सुखडी प्रमुख वीखर्यां न होय, जिंतादिकनी पासे दाबी दीधेलां होय, एक बाजुए ढगला करी दीधा होय, लुगडादिके करी ढांकी दीधा होय अने राख आदिके करी रखेली दीधा होय तो शीयाले उन्हाले मास कल्पादिक रहेवुं कल्पे; पण चोमासे रहेवुं न कल्पे; अने जो कोठा, माटलां प्रमुखमां घालीने ठांण माटी प्रमुखथी मोढां बुरी दीधां होय तथा मुद्रा कीधी होय तो चोमासे रहेवुं कल्पे कह्युं. वली लाडु प्रमुख सुखडी, दुध, दही, मांखण प्रमुख पड्यां होय अने एक पासे ढगला कीधा होय तेवी जग्यामां सीयाले उन्हाले महीनो रहेवुं कल्पे कह्युं. हवे जुव ! एटली वस्तु जे जग्यामां होय ते कमाड विना शी रीते होय ? अने साधु कमाड वास्या विना शी रीते रहे ? जो उघाडां कमाड साधु राखे तो चोर, कुतरां प्रमुख रंजाड करे, ते ग्रहस्थने नुकसान करीने साधुने रहेवुं न कल्पे; अने जो ग्रहस्थी रखवालो वास्ते रातना भेलो रहे तो तमे कहो छो के, चोमासी प्रायश्चित आवे, एटले कदाच ग्रहस्थी जापता सारु कमाड आडुं दइ जाय तो ते रातना मात्रादिक परठववा सारु साधुने खोलवुंज पडे. एवी जग्यामां भगवंते शीयाले उन्हाले महीनो रहेवुं कह्युं छे, ते साधुने कमाड वासवुं उघाडवुं कल्पे छे तेथीज कह्युं छे. वली जे जग्यामा घृत, तेल, गोल, खांड, दुध, दही, मांखण तथा लाडु प्रमुख सुखडीना ढगला करेला पड्या होय ते जग्यामां भगवंते शीयाले उन्हाले महीनो रहेवुं कह्युं छे. हवे तमे कमाड उघाडवा वासवानी ना शी रीते केहेशो ?

ते वारे तेरापंथी कहे छे के "बीजी जग्या न मले त्यारे एवी जग्यामां रहे; अने ग्रहस्थी पोताना जापता सारु कमाड वासे ते साधुने मात्रादिक परठववा वास्ते खोलवुं पडे, तेतो जेम मेह वरसतां पण देह चिंता टालवानी भगवंतनी आज्ञा छे तेम ए पण जाणवुं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! बीजी जग्या मले नही तेथी कह्यु होय तो एक बे रातनुं केहेवुं जोइए. जेम आ पावमां कह्युं तेम दारुना के काचा

ठंना पाणीना घमा पमया होय तथा आखी रात अग्नि के दीवो बळतो होय तेवी जग्यामां हाथनी रेखा सुकाय तेटली वार पण न रहेवु, पण गवेषणा करता क्यांय जग्या न मळे तो बे रात रेहेवु कल्पे, अने जो ते उपरान्त रहे तो जेटला दीवस रहे तेटला दीवसनुं छेद प्रायश्चित आवे कह्यु छे तेम खाजु प्रमुख पमया होय ते जग्यामा पण एक बे रात रहेवानु केहेवु जोइए, पण भगवते तो महीनो रहेवु कह्यु छे ते कमाम वासवु उघामुं कल्पे छे माटेज कह्यु छे, अने जो कोठा माट-ला प्रमुखमां घालीने मोंढां बुरी दीधां होय तथा मोहोर छाप करी दीधी होय तो चोमासे पण रहेवु कल्पे कह्यु छे आ सूत्रना न्याय जोतां प्रभुनी कमाम वासवा उघामवानी आज्ञा छे, अने जे प्रभुनां वचन उथापीने कमाम वासवु उघामवु उत्थापे छे ते पोतानी मती कल्पनाए करी उत्थापे छे वली उत्तराध्ययना पहेला अध्ययननी पांत्रीसमी गाथामा चारे दिशाए कमामादिके करी ढांकेली जग्यामा आहार करवो कह्यो छे वली तेरापंथी कहे छे के " साधुजीए पमिकमणामां कमामनो चोमोए सघटो कर्यो होय तथा गोचरीमा अधखागु कमाम उघाम्युं होय तेनु मिच्छामि दुक्कम आपे छे " एम आवश्यक सूत्रनु नाम लइ भोला लोकोने भेहेकावे छे ते आवश्यक सूत्रनो पाठ —

पमिक्कमामि गोयरियाए भिक्खायरियाए उघामकम्माम उ-
ग्घामणाए साणा वच्छा दारा संघ पाए ॥

अर्थ —प० निवर्तुं छुं, अतिचारने आलोवु छु, गो० गायनी परे चर्या ते धर्म गोचरीए परने पीमा रहित थोमो थोमो आहार लेतां भि० भिक्षा मागीने आहार उ० अर्ध कमाममां पेसतां थका, उपयोग विना गाढे शब्दे चुचु करतु छेलोने उघाम्यु होय तथा उ० सर्व गाढे जुरे खोलतु कमाम उघामता अजयणा कीधी होय सा० कुतरा व० वाछमां दा० वालीकानो स० संघटो थयो होय तो

भावार्थ—हवे जुओ ! इहां तो एम कह्यु छे के, गोचरीमां गयां

थकां, ग्रहस्थीना घरनुं अर्ध उघाडुं कमाड, मांही पेसतां उपयोग वीना गाढे शब्दे चुंचुं करतुं ठेलीने उघाड्युं होय तथा गाढ सुरे बोलतुं कमाड उघाडतां अजयणा कीधी होय तेनुं मिछामि दुक्कडं दीधुं छे. हे देवानुप्रीय! इहां तो कमाडनी अजयणा थइ होय तेनुं मिछामि दुक्कडं दीधुं छे. तमे आ पाठथी कमाड उथापो छो, पण ए रीते तो साधुना आवश्यक पडिकमणामां घणी जग्याए अजयणाना मिछामि दुक्कडं दीधा छे, ते सर्व काम उथापवां जोइए. आ गोचरीनी पाटीथी पेहेली पाटी इछामि पडिकमियानी छे. तेमां "उप्पइ संघट्टणाए" एवो पाठ छे. तेनो एवो अर्थ छे के "जुनो संघटो करवाथी के चांपवाथी अजयणा थइ होय तेनुं मिछामि दुक्कडं." हवे जुने तमे कपडामां केम राखो छो तथा संघटो केम करो छो? वली चोवीस्तवनी पेहेली पाटीमां, हालतां चालतां गमणागमण करतां अजयणा थइ होय तेनुं मिछामि दुक्कडं दे छे. ते पाठः—

इछामि पडिकमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसाउतंग पणगदग मट्टीमक्कडा संताण संकमणे जेमेजीवा विराहिया एगंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभिहया वत्तिया लेसीया संघाया संघट्टीया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाउठाणं संकामिया जीवीयाउ ववरोविया तस्स मिछामि दुक्कडं ॥

अर्थ—इ० वांछुं छुं प० हिंसाथी निवर्तवुं इ० हमणांना तथा साधुना आचारने विषे व० वेहेता पंथने विषे वि० जीवनी विराधना थइ होय ते थकी ग० जावने आववे करी पा० जीवने चांपवे करी बी० बीजने चांपवे करी ह० वनस्पतिने चांपवे करी उ० ऊंधा तथा कीडी प्रमुखनां दर प० पंच वर्णी फुल द० पाणी म० माटी म० करोलीया सं० जाली तथा पड, सं० ए आठ वानां चांपवे करी जे० जे कोइ जीव

मे वि० विराध्या होय ए० एकडी पृथ्व्यादिक पाच स्थावर बे० बेइन्द्रि छटादिक ते०कीडी प्रमुख च०चौरेंद्रि माखी प्रमुख प० पचेंद्रि अखपराह्नि प्रमुख अ० सामा आवता हण्या होय, व० धाटमा कीधा होय, धुले करी ढगला कीधा होय, ढांक्या होय ले० भुमि साथे मसल्या होय, स० माहे मांहे शरीर मेलव्या होय, स० एक पासे फर्सवे करी पीडा उपजावी होय, प० सघले पासे फर्सवे करी परितापना उपजावी होय, कि० कीलामना गिलानता उपजावी होय, उ० (उदवेग) त्रासको पा म्यो होय, ठा० तेने पोताना रहेवाना स्थानकथी बीजे स्थानके सं० मु क्या होय जी० जिवीतव्यथी मुकाव्या होय त० ते दु कृत्य मिथ्या थाओ

भावार्थ—हवे आ पाटीमा "गमणागमण करतां प्राणी, बीज, जावत् एकिंद्रियी पचेंद्रि जीवने पीडा, कीलामना, उदवेग उपजाव्यो होय यावत् जीव रहित कीधा होय तो मिछामिदुकरु" कह्यु हवे जुओ! इरिया जोइने हालता अजयणा थइ होय तेनु पण मिछामिदु करुं कह्यु छे तमे हालोचालोछो केम? वली आवस्यक सूत्रमां भरू उपगर्ण, बाजोठ अने पाटीयानी अजयणा थइ होय तेनु पण मिछामि दुकरुं (प्रायश्चित) कह्युं छे तमे बाजोठ, पाटीया उपगर्ण केम राखो छो? वली नदी उतरता निश्चे असख्याता जीवनी घात थाय छे तेनी इरियावही पडिकमि मिछामिदुकरु दे छे तमे नदी केम उतरो छो? तमे तो कहो छो के "कमाकथी अजयणा थइ होय तेनु मिछामिदु करु कह्यु छे ते माटे हमेशा जाणी जाणीने कसारू थासे उधारू तेमां साधपणु नथी" त्यारे तमे पूर्वोक्त काम जाणी जाणीने करोछो अने मिछामिदुकरुं द्यो छो हवे तमारी केहेणीने लेखे तमारामा साधपणु शो रीते सरधीए?

तेवारे तेरापथी कहे छे के "जुओ भेखी राखवानी, इरिया जोइने हालवा चालवानी, भरू, उपगर्ण, बाजोठ अने पाटीयां राखवानी, ए टलां काम करवानी तो भगवतनी आज्ञा छे, पण ए काम करता अज-यणा थइ होय तेनु मिछामिदुक्करु दे छे" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय!

जेम ए काम करवानी भगवंतनी आज्ञा छे, तेम कमाड वासवा उघाडवानी पण आज्ञा छे. तेनी अजयणा थइ होय तो मिछामिदुक्करूं अपाय छे. वळी 'उघाडकमाड उघाडणाए' ए पाठ तो साध साध्वी बन्नेनो बन्ने वखत पडिकमणामां केहेवानो छे के, कमाडनी अजयणा थइ होय तो तेनुं मिछामिदुक्करूं. हवे सांजना तो ग्रहस्थीना घेरे गोचरीमां अधखांगुं कमाड उपयोग विना उघाड्युं होय तेनुं मिछामिदुक्करूं कह्यो छो; पण पाछली रातना पडिकमणामां साधुजी कमाडनी अजयणा थइ होय तेनुं रोज मिछामिदुक्करूं दे छे. जो कमाड खोलवुं न कल्पे तो हंमेशां पाछली रातना कमाडनी अजयणानुं मिछामिदुक्करूं केम आपे ? पण भगवंते शीयलनी पेहेली वाडनी जतना माटे कमाड वासवा उघाडवानी आज्ञा दीधी छे; केमके स्त्री उपाश्रयमां आवी जाय तथा कुतरी प्रमुख भेळी आवीने सुए, तेनी जतना माटे कमाड वासतां उघाडतां अजयणा थइ होय तेनुं मिछामिदुक्करूं देवुं कह्युं छे. जो कमाड वासवुं उघाडवुं न कह्युं होय तो हंमेशां बे वखत पडिकमणामां अछता मिछामिदुक्करूं देवानुं केम कहे ? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वळी तेरापंथी " सूत्र उत्तराध्ययनना ३५ मा अध्ययनमां साधुने कमाड वर्ज्युं छे. " एम जुठुं नाम ले छे. ते गाथाः—

मणोहरं चित्त घरं, मल्ल धूवेण वासिइं;
सकवाड पंडुरुल्लोय, मणसावि नपत्थए ॥ ४ ॥
इंद्रियाणि भिक्खूस्स, त्तारिसंमि उवस्सए;
दुक्कराइं निवारेउ, कामराग विवद्धणं ॥ ५ ॥

अर्थः—म० मनोहर चि० चित्रामण सहित घ० घर म० गुंथ्यां फुल अने धू० अगरादि धूपे करी वा० वासना सहित कीधुं होय ते घर स० कमाड सहित होय पं० श्वेत वस्त्रे करी विभूषित उपाश्रय अथवा बहु मुल्या चंद्रवा सहित जे घर होय ते म० मने करी पण न० न वान्छे जे, एवुं घर रेहेवाने मळे तो रुडुं. सेले करी एम चिंतवे ? इं० पांच

इंद्रिना विषय ज्ञि० साधुने ता० पूर्वे कह्या तेवा ७० उपाश्रयने विषे फु० वोहीसा नि० निवारवा का० काम सबधीया रागनो वि० वधारणहार छे ते उपाश्रय

भावार्थ—हवे जुओ ! आ पाठमा एम कह्यु छे के "मनोहर घर चित्रामण सहित छे, तेमा फुलमाला लटके छे, सुगध धुप क्षेपव्यो छे, सुगंधु वासना फुली रही छे, कमाडे करी सहित छे, कलश बुंटी छे अने चदवा बांध्या छे, एवी जग्या हे साधु ! तु मने करने वांछीश नही. एवी जग्या मने मलेतो ठीक एम मने करीने चिंतवणा करीश नही" ए चिंतवणा आर्त्तध्यान छे ते वास्ते प्रभुए कह्यु के "मणसावि नपथ्थए" एटले ए जग्या मने करीने पण न वाछवी कही जेम साधु गृहस्थने घेरे गोचरी गया थका एम न चिंतवे के "मुजने सरस ज्ञारे आहार सुखडी प्रमुख आपे तो ठीक" जो एम चिंतवे तो निषित सुत्रमां प्रायश्चित कह्यु छे, पण सेहेजे दातार आपे अने सेहेजे मले तो भोगवे तेम ए सात बोल सहित जग्यानी मने करी चिंतवणा न करवी, पण सेहेजे मले तो भोगवे, अने ते सेहेजे मले तो छतानी ममता न करे अने अछतानी वछा न करे, कारण के छतानी ममता, अने अछतानी वांछा, एज अकल्पनिक छे जे ए स्थानके कमाड अकल्पनिक कहे छे तेना लेखे शुद्ध दान, विनय, वदणा अने सत्कार सन्मानादिक सर्व अकल्पनिक थशे, कारण के श्री उत्तराध्ययनजीना ३५ मा अध्ययनमां दान, विनय अने वदणादिकने पण मने करी न वांछवु कह्यु ते पाठ—

अच्चण रयणं चेव वदण पूयण तहा,
इढी सकार सम्माण मणसावि न पथ्थए ॥१८॥

अर्थ—पूर्ववत् जुओ प्रश्न बीजे पाने १४२ में

भावार्थ—हवे जुओ ! कमाडादिक सात बोलनी जग्या मने करी पण न वांछवी कही तेम आ पाठमां पण शुद्ध दान विनय, वदणा, सत्कार सन्मानादिक सर्व बोल मने करी न वांछवा कह्या त्यारे हे देवानु

प्रीय! तमे ए काम केम करावो छो तथा उपदेश केम द्यो छो? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "त्यां तो एम छे के, ए मुजने वंदणा करे तो ठीक, उठी उभो थइने आदरमान दे तो ठीक, एवी पोताना महीमा वास्ते वांछा न करे. ए वांछा एज आर्तध्यान छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! एवी मनोहर चित्रामणादिक सहीतनी जग्यानी वांछा करवी एज आर्तध्यान छे. ते सूत्र उपर चित्त दइ स्वापेक्षा तजी विचारी जोजो. वली इहां तो एवुं स्थानक मने करी न वांछवुं कह्युं, पण 'कमाड उघाडवुं वासवुं नही' एवुं कमाडनुं नाम तो मुलथीज देखातुं नथी; अने मने करी न वांछवुं कह्युं ते तो काम (विषय) भोगनो राग वधे तेथी कह्युं छे. ते चोथा व्रतनो दोष देखाड्यो छे. जो कमाडने वास्ते ए स्थानक निषेध्युं होय तो प्रभुए एम केहेवुं जोइए के "ए जग्या मने करी न वंछे; कारण के कमाडथी हींसा थाय तेथी दोष लागी पेहेलुं माहाव्रत भागे." पण एम तो नथी कह्युं. प्रभुए तो कामभोगनो राग वधे ए वास्तेज कह्युं छे. हवे जुओ! कामभोगनो राग चित्रामणथी वधे के कमाडथी वधे? डाह्या हो ते वीचारी जोजो. वली त्यां चित्रामण तथा फुलमालादिक सर्व बोलनी जग्या मने करी न वांछवी कही, ते तो कामभोगना विकार कारी चोरासी भोगना आसनादिकनां चित्रामण मांड्यां होय ते आश्री कही छे; पण सेहेजनां चित्रामण होय ते जग्याए तो साधुने उतरवुं सूत्र उववाइ मधे कह्युं छे. ज्यां पुरणभद्र चैत्यमां पृथ्वीशीला छे ते उपर प्रभु बीराज्या छे. ते पाठः—

तस्सणं आसोग वर पायवस्स हठा इसी षंधा सल्लीणे एछणं महं एगे पुढविसीला पट्टए पणत्ते विखंभा याम उस्सेहिं सुप्पमाणे कण्हे अंजणग घण कवाण कुवलय हलधरकोसेद्या आगास केस कद्यलगी खंजणं सिंगभेद रिठय जंवफल असणक सण बंधण णीलुप्पलपत णिकरे अयसिकुसुम प्पगासे मरकत मसार कलित्त णयणकीय

रासिवर्णे णिद्धघणे अठसिरे अंयसय तलोवम्म सुरम्मे
इहा मिय उसभ तुरग णर मंकर विहंग वालग किंणर
रुरु सरभ चमर कुंजर वणलय पउमलय जंतचित्ते आ-
इणय रुय वुर णवणीय तुलतुल्लफासे सिहासण संठाण-
सठीए पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे- ७

अर्थ —त० वली ते अ० अशोक व० प्रधान पा० वृक्षनी हे० हेठे ई० इशानकोणे पं० खधथी स० वेगलेरो ए० इहा म० मोटो ए० एक पु० पृथ्वीशीलारुप प० पट प० कह्यो वि० पोहोलपणे आ० लांबपणे उ० उंचपणे सु० प्रमाणुपेत छे ते केवो छे -क० पृथ्वीशीलानो पट काळे वर्णे छे अं० अजंन, तरवार घ० मेघ क० कवान कु० लीलुं कमल हृ० वर्णे देवने वस्त्र लीलुं होय आ० आकाश कालुं के० मस्तकनी वेण क० काजलनी कुंपली ख० गारुलाना लगण सि० भेंसना सींगडानी प्रभा रि० रिष्टरत्न जं० जंबु वृक्षनु फल अ० बीयालु वृक्ष स० सणनां वृक्षना फुलनी वींटणी णी० निलोत्पल कमलनां णि० समुह अ० अलसीनां फुल ए सोलनी जेवी काली लीली व० प्रभाकांति होय ने सरखो पट छे- म० मरकत रत्न १, म० इन्द्र निलमणी २, क० कर्कब व्याघ्र ३, णा० आंखनी कीकी ४, ए चारनी रा० रासी समुहना सरखो वर्ण णि० घणो सतेज अं० आठ खुणा अय० आरिसाना त० तलाना जेवो सुहालो तथा तेम सु० अति रमणिक इ० करगमा मि० मृगनी जात १, उ० वृषभ २, तुं० अश्व ३, णा० मनुष्य ४, म० मछ ५, वि० पक्षी ६, वा० सर्प ७, कि० व्यंतर देव ८, रु० मृग ९, स० अष्टापद १०, च० चमरी गाय ११, कु० हाथी १२, व० वननी लता १३, प० पद्मनी लता १४, ए चौद प्रमुख ना० आंतिरुप चित्रामण लग्या छे आ० चर्मनु वस्त्र १, रु० रुंउं २, बु० वनस्पतिनु बुर ३, णा० मांखण ४, तु० अर्क तुल प्रमुखनो सरखो फर्स छे सि० सिंघासनने स० संस्थाने सम्यीत् छे पा० मनने प्रसन्नकारी द० देखवा योग्य अ० मनोहर प० जुदां जुदां रुप दीसे छे

भावार्थः—हवे जुर्ड ! आ पाठमां एवी चित्रामणकारी, कलीए घुंटी, घटारीमठारी, एवा शीलाना वर्ण, रुप, गंध, स्पर्श वखाण्या छे अने अनेक प्रकारनां फुल बागमां छेः एवा स्थानके प्रभु उतर्या छे. ए मने करी न वंछवी, त्यारे कल्पी केम ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ए तो वीतराग छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! प्रभु तो वीतराग छे, पण पासे साधु तो सरागी छे ? तेमने चित्रामण सहितनुं काम केम कल्पे? वली ते वागमां बीजा साधु उतरता के नही ते कहो. प्रभुए तो संजोगनी रचना मांडी होय ते आश्री मने करी न वांछवी कही, पण कमाड वासवा उघाडवानुं तो नाम नथी. वली आ पाठ लारे (वांसे) जे कमाड उथापे छे तेने कहीये के, त्यां तो एटला बोल सहित जग्या न वांछवी कही छे; पण कमाड वासवा उघाडवानुं तो नाम नथी. तमारी केहेणीने लेखे तो कमाड होय ते जग्यामां उतरवुंज न जोइए. हवे तेरापंथी कमाडने उत्थापे छे, पण पोताने तो अंधारुं छे; केम के कोठानां अने आलीयांनां कमाड उघडावीने आहार ले छे.

हवे जुर्ड ! कमाड उघाडवुं नही, त्यारे ए कमाडीयां उघडावीने आहार लेवो क्यां कह्यो छे? जो चुलीयाथी जीवनी हींसा मानो तो (कमाडथी मोटा जीव उंदरादिक मरता हशे, तो) कमाडीयांथी नाना जीव कंथवादिक मरताज हशे. हवे प्रभुनो एवो तो मार्ग नथी के, मोटा जीवने न मारवो अने नाना जीवने मारवो. ए रीते तो तमारीज देखीए छीए के, नाना बारणानो आगार. ए लेखे तो कमाड पण उथापाय नही. हवे जो कमाडमां पाप अने कमाडीयां निर्दोष होय तो श्री ऋषभदेव भगवानना साधु तथा महाविदेह क्षेत्रना साधु, जेमनी पांचसो धनुष्यनी अवगाहना हती, तेमनी कायाना प्रमाणमां दरवाजा सरीखां कमाडीयां हशे. एवां मोटां कमाडीयां खोलावीने आहार लेता, तेमनां तो महाव्रत भाग्यां नही अने मोक्ष गया. वली पण एवी रीते अनंता मोक्ष जाशे. त्यारे हवे तेमनां कमाडीयांथी तो हमणांनां कमाड पण

रासिवर्णे णिद्धघणे अंठसिरे अयसय तवोवम्म सुरमे इहा मिय उसञ्ज तुरग णर मकर विहंग वाखग किणर रुरु सरञ्ज चमर कुजर वणलय पउमलयं ञतविते आ- इसय रुय वुर णवणीय तुलतुल्लफासे सिहासण संठाण- सठीए पासाइए दरिसणिज्जे अभिरुवे पडिरुवे - ७

अर्थ —स० वसी ते अ० अशोक व० प्रधान पा० वृक्षनी हे० हेठे ठं० सगारेके प० खधथी स० वेगलेरो ए० इहा म० मोटो ए० एक पु० पृथ्वीशीलारुप प० पट पं० कह्यो वि० पोहोलपणे आ० लांबपणे उ० ऊंचपणे सु० प्रमाणपेत ठे ते केवो ठे -क० पृथ्वीशीलानो पट काळो वर्णे ठे अं० अंजन, तरवार घ० मेघ क० कृपान कु० लीलुं कमल ह० बलदेवने वस्त्र लीलु होय आ० आकाश कालुं के० मस्तकनी वेण क० काजलनी कुंपली ख० गारुलाना ठगण सि० जेसना सींगमांनी भर्मा रि० रिपूरत्न जं० जवु वृक्षनु फल अ० बीयानुं वृक्ष स० सणना वृक्षना फुलनी बींटणी णी० निलोत्पल कमलना णि० समुह अ० अलसीनां फुल प० सोलनी जेवी काली लीली प० प्रज्ञाकांति होय ते सरखो पट ठे म० मरकेत रत्न १, म० छुद्र निलमणी २, क० करुवष व्याघ्र ३, णा० आंखनी कीकी ४, प चारनी रा० रासी समुहना सरखो वर्ण णि० घणो सितल अं० आठ खुणा अय० आरिसाना त० तलाना जेवो सुहालो तथा तेज सु० अति रमणिक- इ० वरगमा मि० मृगनी जात १, उ० वृषभ २, तुर० अश्व ३, ण० मनुष्य ४, म० मछ ५, वि० पंखी ६, सा० सर्प ७, कि० व्यतर देव ८, रु० मृग ९, स० अष्टापद १०, च० चमरी गाय ११, कुं० हाथी १२, व० वननी लता १३, प० पद्मनी लता १४, ए चोद प्रमुख ज० ज्ञांतिरुप चित्रामण करुया ठे आ० चर्मनु वस्त्र १, रु० रुंपीजुं रु २, बु० वनस्पतिनु वुर ३, ण० माखण ४, तु० अर्कनी तुल प्रमुखनो सरखो फर्स ठे सि० सिंघासनने स० सस्थाने संस्थीत् ठे पा० मनने प्रसन्नकारी द० देखवा योग्य अ० मनोहर प० जुदा जुदा रुप दीसे ठे

भावार्थः—हवे जुर्ठ ! आ पाठमां एवी चित्रामणकारी, कलीए घुंटी, घटारीमठारी, एवा शीलाना वर्ण, रुप, गंध, स्पर्श वखाणया छे अने अनेक प्रकारनां फुल वागमां छेः एवा स्थानके प्रभु उतर्या छे. ए मने करी न वंछवी, त्यारे कल्पी केम ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ए तो वीतराग छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! प्रभु तो वीतराग छे, पण पासे साधु तो सरागी छे ? तेमने चित्रामण सहितनुं काम केम कल्पे? वली ते वागमां बीजा साधु उतरता के नही ते कहो. प्रभुए तो संभोगनी रचना मांमी होय ते आश्री मने करी न वांछवी कही, पण कमाम वासवा उघाडवानुं तो नाम नथी. वली आ पाठ लारे (वांसे) जे कमाड उथापे छे तेने कहीये के, त्यां तो एटला बोल सहित जग्या न वांछवी कही छे; पण कमाड वासवा उघाडवानुं तो नाम नथी. तमारी केहेणीने लेखे तो कमाड होय ते जग्यामां उतरवुंज न जोइए. हवे तेरापंथी कमाडने उत्थापे छे, पण पोताने तो अंधारुं छे; केम के कोठानां अने आलीयांनां कमाड उघडावीने आहार ले छे.

हवे जुर्ठ ! कमाड उघाडवुं नही, त्यारे ए कमाडीयां उघडावीने आहार लेवो क्यां कह्यो छे? जो चुलीयाथी जीवनी हींसा मानो तो (कमाडथी मोटा जीव उंदरादिक मरता हशे, तो) कमाडीयांथी नाना जीव कुंथवादिक मरताज हशे. हवे प्रभुनो एवो तो मार्ग नथी के, मोटा जीवने न मारवो अने नाना जीवने मारवो. ए रीतो तो तमारीज देखीए छीए के, नाना बारणानो आगार. ए लेखे तो कमाड पण उथापाय नही. हवे जो कमाडमां पाप अने कमाडीयां निर्दोष होय तो श्री ऋषभदेव भगवानना साधु तथा महाविदेह क्षेत्रना साधु, जेमनी पांचसो धनुष्यनी अवगाहना हती, तेमनी कायाना प्रमाणमां दरवाजा सरीखां कमाडीयां हशे. एवां मोटां कमाडीयां खोलावीने आहार लेता, तेमनां तो महाव्रत भाग्यां नही अने मोक्ष गया. वली पण एवी रीते अनंता मोक्ष जाशे. त्यारे हवे तेमनां कमाडीयांथी तो हमणांनां कमाड पण

नाहाना छे तेथी माहावृत केम जागे? ए न्याये प्रत्तुए तो कमारु वर्ज्युं नथी समेज भ्रमबुद्धिथी आल थो छो

वली तमे कमारु तो उत्थापो छो, पण एम नथी वीचारता के कमारुथी हिंसा थशे तो कमारीयाथी पण थशेज वली सूत्रमा तो कमारु अने कमारीया जुदा नथी कह्या जो कमारु वर्ज्युं हशे तो कमारीया पण वर्ज्यां हशे जेम "सजोएस मणुसाण जाव लोगमि इथीउं" इत्यादिक जेम सूत्र दसवैकालीक तथा उत्तराध्ययनना बीजा अध्यय्ने आठमा परिसामां तथा बीजा सूत्र पाठमां, साधुने स्त्रीनो संघटो वर्ज्यो तेमां नानी मोटी सर्व स्त्री आवी गइ, तेम कमारुमा नानां कमारीयां अने मोटा कमारु बन्नेना दोष सरखा छे जो मोटाथी मत भग थाय तो नानाथी केम न थाय? पण तमोने वर्तमान काले घणा आहारनी अंतराय परे अने सारी वस्तु दुध, दही, घृतादिक कमारीया खोल्या विना मले नही तेथी तमे कमारीयांनी स्थापना करी देखाय छे, केमके श्री वीतरागदेव, साधपणु अने जीवदया क्यारे आरां आवे? तेथी जीव्हना स्वादने अर्थे कमारीयांनी स्थापना करीने कमारुने उथापो छो तेथी तमारी केहेणी अने रेहेणी जुदी जुदी दीसे छे प्रत्तुए तो साधुने के मारजाने एकेने कमारु वर्ज्यां नथी वली स्थिवर कल्पी साधुने कमारु उघारुवा वासवानी स्थापना नथी तेनी शाख सूत्र सुयगडांग प्रथम श्रुतष्कधना बीजा अध्ययने, जीनकल्पी साधुने चार बोल वर्ज्या छे ते पाठ —

एगे चरे ठाण मासणे, सयणे एगे समाहिएसिया,
भिख्खु उवधाण विरिए, वइगुत्ते अझत्त संवुडे ॥ १२ ॥
णोपीहे णाव पंगुणे-दार, सुन्नघरस्स संजए
पुठेण उदाहरेवयं, णसमुच्छे णोसथरेत्तणं ॥ १३ ॥
जत्थ्ठमिए अणाउले, समविसमाइ मुणी-हियासए,
चरणा अदुवावि भेरवा, अदुवा तत्थ सरिसि वासिया ॥१४॥

तिरिया मणुयाय दिव्वग्गा, उवसग्गा तिविहादियासिया;
लोमादीयं-नहरिसं, सुन्नागारगते महामुणी ॥ १५ ॥
नोअभिकंखेव्व जीवियं, नाविय पूयणं पत्थएसिया;
अव्वत्थ मुविंति भेरवा, सुन्नागार वस्स भिक्खूणो ॥ १६ ॥

अर्थः—ए० एकाकी (द्रव्यथी एकल विहारी, भावथी राग द्वेष रहित थका) च० विचरे, ठा० स्थानके काउसग्ग एकलो करे, मा० आसने पण राग द्वेष रहित थका बेशे, स० सुवे तोपण एकाकीपणे रहे एटले ते क्रिया समाधि करे ते एकलोथको होय, भि० साधु शुद्ध आहारनो लेणहार उ० उपध्यान तपने विषे वि० बल वीर्यनो फोरवणहार व० विमासीने बोलणहार अ० मन संजम स्थीर करतो होय सं० संवर सहित साधु. णो० कोइ सयणादिक कारणे सुंना घरमां रह्यो साधु घर द्वार ढांके नही, पं० तेम द्वार उघाडे पण नही स० जिन-कल्पी साधु. पु० कोइए धर्म पुछयां थकां उ० सावद्य वचन न बोले, जिनकल्पी निर्वद्य पण न बोले, ण० ज्यां रहे त्यां कचरादिक प्रमार्जे नही, णो० तृणादिक पाथरे पण नही. ए आचार जिन-कल्पीनो छे. ज० चारित्रीयो ज्यां सूर्य आथमे त्यांज रहे. अ० परिसह उपन्थे आकुल चित्र रहित स० सज्यादिक अनुकुल प्रतिकुलादिक मु० मुनीश्वर संसार स्वरुपना जाण समताए खमे च० पंखी आदिना दंस मसादिक. अ० वली भे० सिंहादिक बीहामणा जीवना कीधा अ० अथवा त० (त्यां) सुने घेरे स० सर्प विछीना दीधा उपसर्ग सहे. ति० तिर्थंचना म० मनुष्य संबंधीना अने दि० देवतादिकना उ० उपसर्ग (परिसह) सहे. ति० ए त्रण प्रकारे क्रोधना अभावे क्षमाए करी अहियाशे. लो० परिसह देखीने ऊकांटो न चडे, भयकारी पण न थाय. सु० साधु सुना घरने विषे रहेतो उपलक्षणथी पर्वतादिकने विषे स्थित थको म० जे एम न करे ते जिन-कल्पादिक महासुनी. नो० नही ते चारीत्रीयो जे उपसर्गे पीडयो थको अ० वंछे जिवीतव्य अने मर्ण. परिसह सहे, ना० न थाय पू०

परिसहने सही पुजानो प० अभिलाषी अ० आत्माने विषे मु० परिसह उपजे ते केवा जे० जयकारी पिशाचादिकना सु० सुना घरने विषे रहाने जि० चारित्रीयाने जीवीत मरणनी वान्छा रहित, एवा साधुने उपसर्ग सेहेतां सोहेला थाय

भावार्थ —इहां एम कह्युं के, स्थिवरकल्पीपणु छोडीने जिनकल्पीपणुं आदरे तेवारे ए चार बोल छोडे- प्रथम तो कमाड वासे नही, बीजे बोले पुछया छता प्रश्ननो उदाहरण करे नही, त्रीजे बोले जग्या मा (पुस) कचरो काढे नही, अने चोथे बोले त्रणादिक पाथरे नही, ए चार बोल जिनकल्पीपणु आदरे तेवारे छोडे हवे जुओ। स्थिवरकल्पी पणे पूर्वोक्त चार बोल करता हता त्यारे छोडया कह्या जो न करता होत तो छोडेज शु ? माटे हो ते विचारो जो जो प्रभुए तो कमाड वासवा उघाडवानी ठाम ठाम विधि कही छे छतां तेमनां वचन उथा पीने कमाड वासवु उघाडवु निषेधे छे तेमने असत्य-भाषी जाणवा

वली तेरापंथी कहे छे के, साधुने चलमां राखवा वर्ज्या छे ते बाबत प्रश्न व्याकरण सूत्रनुं जुठुं नाम ले छे ते पांचमा संवर द्वारनो पाठ —

> पायावि छअय तउय तव सीस कंस रयय जाव रुव मणि मोत्ताधार पुडक सष दंत मणि सिंगे सेल काय वर चेल चमपत्ताइ महारिहाइ परस्स अज्झोववाय लोभजणणाई परियट्टिउं गुणवयो ॥

अर्थ—पा० पात्रो न लेवु ते शुं अ० लोह त० तरवु त०त्रांबु सी० सीसु क०कांसु र० रुपु जा०यावत् रु० रुपुं, सोनु म० चंद्रकान्तादि मणी मो० मोतीहार पु० छीप, सपुट, स० शंख प्रसिद्ध द० हाथीनो प्रधान दांत अथवा दांतनी निपनी म० मणी स० सिंग से० पाषाण क० काच व० प्रधान चे० वस्त्र प्रधान च० चामडु, पटला सधधिया जे पात्र म० (महरय) महु मुल प० अनेराने लेवा भणी अ० एकाग्र चिंतना कर

णहार लो० लोभना उपजावणहार प० परावर्तिवा अथवा परिग्रहवा न कल्पे गु० ते गुणवंतने.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां तो साधुने काचनां, पाषाणनां अने चामडानां वस्त्र पात्र वर्ज्यां छे; पण चश्मानुं तो नामे नथी. तमे सूत्रनुं जुठुं नाम केम ल्यो छो? लोह, कथीर, तांबु, सीसुं, कांसुं,सोनुं रुपुं, प्रमुख धातु तो कोइ पण साधुए राखवी नही, सूत्रमां ठाम ठाम वर्जी छे; अने अहीयां तो एटली जातनां पात्रांज वर्ज्यां छे. चश्मा कया सूत्रमां वर्ज्यां छे ते पाठ बतावो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "काच पाषाणनां पात्रां वर्ज्यां तेम कोइ पण उपगर्ण न राखवां. जेम सोनानी वींटी न राखवी, तेम सोनानी मरकी, कंठी पण न राखवी." एवा अछता दृष्टान्त आपे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सोनुं प्रमुख सात धातु तो सूत्रमां ठाम ठाम वर्जीज छे, पण अहियां तो एटली जातनां पात्रां वर्ज्यां छे; अने तमे तो कहो छो के, काच पाषाणनां पात्रां वर्ज्यां तेम कोइ पण उपगर्ण न राखवां; तेम चश्मा पण काच पाषाणना छे. त्यारे जुओ! हे देवानुप्रीय ! इहां तो कपडानां अने चामडानां पात्रां पण वर्ज्यां छे. तमे कपडानां बीजां उपगर्ण केम राखो छो ? वली कपडानी अंगरखी, पाघडी, दोवड, सुथण प्रमुख साधुने वर्ज्यां छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे कपडाना चोलपटा मुहपत्ती आदि बीजां पण उपगर्ण न राखवां जोइए. हे देवानुप्रीय ! जे रीते सूत्र-पाठमां कह्युं होय ते रीते अर्थ केहेवो जोइए. तमे मतना लीधे, हरेक जग्याए, आवी आवी कुयुक्ति केम लगाडो छो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "कपडानां तथा चामडानां तो पात्रांज वर्ज्यां छे, अने काच, पाषाण तो सर्वथा वर्ज्यों छे. माटे काच पाषाणनां कांइ पण उपगर्ण न राखवां." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अहियां तो सर्व सोल तथा सत्तर जातनां पात्रां वर्ज्यां छे. तमे चश्मो निषेधवाने वास्ते कहोछो के, काच, पाषाण सर्वथा वर्ज्यां छे. त्यारे तमे हिंगलो, हरताल केम राखोछो ? ए पण पृथ्वीकायनी जात छे, पाषाण छे. तमारे

देखे तो ए पण न राखवा जोइए तेवारे तेरापंथी कहे छे के, अमे तो हिंगलो, हरताल अचित (वाटेला) राखीए छीए " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! चश्मो पण क्यां सचित्त छे? जेम हिंगलो, हरताल राखे छे तेमज चश्मा राखे छे वली काचमां, पाषाणमां, पाणीमां अने तेलमां मोंढु देखे तो अतिचार कह्यो छे ते मोंढु देखवाने काच तो ठामठाम वर्ज्यो छे, पण पाना वांचवाने चश्मो तो राखवो क्याय वर्ज्यो नथी

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " चश्मा विना अक्षर न सुझे तेने साढा त्रण हाथ छेटे उज्जाने कीडी, कंथवादिक जीव शी रीते सुझे? तेवाने तो आहार, पाणी लेवा जवु तथा विहार करवो कल्पे नही " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! जो चश्माथी सुझे तो आधलाने पण सुझवु जोइए चश्माथी तो नाना अक्षरनो मोटो देखाय, अने तेथी करी घणी वार वाचतां नजर न ताणवी पडे तेथी चडावे छे तेवारे तेरापंथी वली कहे छे के " नाना अक्षर चश्मा विना न देखाय तो नाना जीव मार्गमां शी रीते सूझे?" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! सूत्रना अर्थनुं नाना अक्षरनु पानुं साडात्रण हाथ आघु राखे तो तमाराथी पण वंचाय नही, अने अक्षर न वचाय त्यारे कीडी, कंथवादिक जीव तो घणा नाना छे, ते साडा त्रण हाथ छेटे उज्जा थका शी रीते सुझे? तमारी केहेणीने लेखे तो तमने पण आहार, पाणी लेवा जवु तथा विहार करवो कल्पे नहि, कारणके तमने साडात्रण हाथथी अक्षर तो सुझे नही हवे तमे विहार करोछो तथा आहार पाणीने वास्ते जाओ छो, ते तमारी केहेणीने लेखे तो तमे पण श्री वीतरागदेवनी आज्ञा बाहार छो

हे देवानुप्रीय! एवा खोटा चोज लगावीने अणसमजु जीवोना घटमां घोचा केम घालो छो? जीव तो चेतनपणाथी हाले चाले छे, तेथी साडा त्रण हाथ छेटेथी देखाय छे, पण अक्षर तो (जड) स्थिर छे, तेथी साडा त्रण हाथ छेटेथी सुझे नही वली तमे कहो छो के "जीवादिक न सुझे तेथी हालवुंज नही" त्यारे चार स्थावरनी अवगाहना जघन्य उत्कृष्टी आंगुलना असंख्यातमा भागे छे, त्रण विगलेंद्रिनी अ

वगाहना जघन्य तो आंगुलना असंख्यातमा नागे छे अने पंचेन्द्रिनी पण अवगाहना जघन्य तो आंगुलना असंख्यातमा नागे छे. तेना जीव, वृक्षनां बीज तथा सरसवना दाणा प्रमुख, मार्गमां धुलमां पड्या देखाय नही, तेथी तमारी केहेणीने लेखे तो चालवुं न जोइए; पण नगवंते तो कह्युं छे के, जयणाथी चालतां पाप कर्म बंधाय नही. तमे मतना लोधे, चश्मा निषेधवाने वास्ते एवी कुयुक्ति लगावो छो.

तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के, “सूत्रमां नगवंते चश्मो राखवो क्यांय कह्यो नथी, माटे राखवो नही.” तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! सूत्रमां तो साही, हींगलो, हरताल, सफेतो, लेखण, पीछी, पाटीयां, सूत्रनी लखेली प्रतो अने पोथीने बांधवानी दोरीउ इत्यादिक क्यां राखवां कह्यां छे ते बतावो. सूत्रमां कह्या विना राखो छो ते तमारी केहेणीना लेखे तो तमे नगवंतनी आज्ञा बाहार छो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ए तो तमे पण राखो छो. एम कहे छे तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अमे तो चश्मो पण राखीए छीए, तेमज पोथी प्रमुख सर्व ज्ञाननां उपगर्ण साही, लेखण अने हिंगलो प्रमुख पण राखीए छीए, ते यथायोग्य समजीने राखीए छीए; कारण के सूत्रमां पांच व्यवहार मानवा कह्या छे. शाख सूत्र व्यवहार उद्देशे दसमे. तथा नगवती सूत्र शतक आठमे उद्देशे आठमे. ते पाठः—

कइ विहेणं नंते! ववहारे पं० ? गो० ! पंचविहे ववहारे पं०तं०:—आगमे १ सूए २ आणा ३ धारणा ४ जीए ५. जहासेतछ आगमेसिया आगमेणंववहारंपठवेद्या. णोय- सेतछ आगमेसिया जहासेतछ सुएसिया सुएणंववहारं- पठवेद्या. णोयसेतछ सुएसिया जहासेतछ आणासिया आणाएववहारंपठवेद्या. णोयसेतछ आणासिया जहासे- तछ धारणासिया धारणाएववहारंपठवेद्या. णोयसेतछ धा-

रणासिया जहासेतञ्च जीएसिया जीएणववहारपठवेश्चा इच्चेएहिय पचहिंववहारपठवेश्चा त० आगमेणं १ सूए- णा २ आणाए ३ धारणाए ४ जीएणा ५ जहाजहासे आ- गमे १ सूए २ आणाए ३ धारणा ४ जीए ५ तहातहा पठवेद्या सेकिमाहु नंते ! आगमवलिया समणानिग्गंथा इच्चेश्य पचविहववहार जयाजया जहिंजहिं तयातया त- हिंतहिं अणिस्सि उवसिय सम्मंववहारमाणे समणे निग्ग- थे आणाए आराहए नवइ ॥

अर्थ —पूर्ववत् जुठ प्रश्न बीजे पाने १७१ में

नावार्थ —हवे आ पाठमां तो आगमव्यवहार मानवो कशो तीर्थंकर, गणधर, केवली, मनपर्यव ज्ञानी, अवधज्ञानी, चौद पूर्वधारी अने दस पूर्वधारी, एटलाने आगमव्यवहारी कहीये तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवु, हवे ते आगमव्यवहारी न होय तो तेमना परुप्यां सूत्र (ते सूत्रव्यवहार) प्रमाणे वर्तवु २ हवे सूत्रमा बोलनो जे निर्णय न होय ते आज्ञाव्यवहार प्रमाणे करवो ३ आज्ञा देवावालो न होय तो धारणाव्यवहार मानवो (जेम धारणा होय तेम करवु), ४ अने धारणा न होय तो पांचमो जितव्यवहार मानवो (जेम वडा वडेरा करता होय तेम करवु) ५ ए पाच व्यवहार मानतो थको आज्ञानो आरा धक थाय कह्युं

हवे जुठ ! सूत्रमा जे बोलनो निर्णय न कर्यो होय ते पांचमा जित-व्यवहारे मानवो जेम वडेरा करता आव्या तेम करतो थको आज्ञानो आराधक थाय कह्यु त्यारे जुठ ! हे देवानुप्रीय ! सूत्र, पोथी साही, हींगलो, हरताल अने लेखण प्रमुख सर्व बोलनो "साधुए रा खवुं के न राखवु," एवो सूत्रमां निर्णय कर्यो नथी, अने देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, जगंवतने सत्तावीसमे पाटे थया तेमणे सूत्र लख्यां, पुस्त- पानी साही, हींगलो अने पदमा प्रमुख ज्ञानना उपगर्ण, साधु सौ पुस्त-

लाग्या. वास्ते सर्व ज्ञाननां उपगर्ण राखवां ते जितव्यवहारमां छे; अने ज्यारे सूत्रव्यवहार न होय त्यारे जितव्यवहार मानवानी भगवंतनी आज्ञा छे. ए न्याये चश्मा, हिंगलो, साही, हरताल, लेखण, पोथी अने पाना प्रमुख सर्व ज्ञाननां उपगर्ण सूत्रमां नथी कह्यां, छतां अमे राखीए छीए; पण तमे चश्मा तो उथापो छो अने साही, हिंगलो, लेखण, पोथी, पानां प्रमुख घणी वस्तु सूत्रमां कह्या विना राखोछो. ऐ चश्मा जितव्यवहारमां छे तेने मतना लीधे उथापीने तमे साधु माथे जुठां आल थोछो.

वली तेरापंथी, कमाड वासवा उघाडवानी तथा चश्मो राखवानी भगवंतनी आज्ञा छे ते तो, भगवंतनां वचन उथापीने निषेधे छे, अने ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापे छे; पण भगवंते, ग्रहस्थीना घेरे बेसे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे. शाख सूत्र दसवैकालीक अध्ययन छठे. ते गाथाः-

दस अठय ठाणाइ, जाइं बालो विरवइ;
तछ अन्नयरे ठाणे निग्गंथा ताउ भस्सइ ॥ ७ ॥
वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं;
पलियंक निसिद्याय, सिणाणं सोभ वद्यणं ॥ ८ ॥

अर्थः—द० दस अने अ० आठ एम अढार ठा० स्थानक जा० जे बा० अजाण वि० विराधे त० ते अढार स्थानक मांहीलुं अ० अनेरुं कोइएक ठा० स्थानक विराधते थके नि० निग्रंथपणाथी ता० ते भ० भ्रष्ट थाय. हवे ते अढार स्थानक कहे छेः–व० व्रत छ का० काय छ अ० अकल्पनिक वस्तु गि० ग्रहस्थीनां भाजन थाली प्रमुख प० पलंक (ढोलीउं) नि० कारण विना ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं ते सि० स्नान अने सो० विभुषा (शरीरनी शोभा) व० वर्जवां. ए १८ स्थानक.

भावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां कह्युं के, अढार मांहेलो एके बोल सेवे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कहीये. तेमा सोलमो बोल ग्रहस्थीना घेरे बेसवानो छे. तेनुं वर्णन ५७ मी गाथाथी ६० मी गाथा सुधी छे. त्यां ग्रहस्थीना घेरे बेसवाथी साधुने जे दोष उपजे ते कह्या छे. ते गाथाः—

गोयरग्गा पविठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ,
इमेरीस मणायार, आवज्जइ अबोहिय ॥ ५७ ॥
विवत्ती बम्भचेरस्स, पाणाणच वहे वहो,
वणिमग्ग पडिग्घाउं, पडिकोहो अगारिणं ॥ ५८ ॥
अगुत्ती बम्भचेरस्स, इत्थिउवावि सकरू,
कुसील वड्ढण ठाण, दुरउ परिवज्जए ॥ ५९ ॥
तिन्ह मन्नय रागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ,
जराए अभिभूयस्स, वाहियस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥

अर्थ—हवे सोलमु स्थानक कहे छे गो० गोचरी प० गयां थका नि० गृहस्थना घरने विषे बेसवु ज० जे यतिने क० कल्पे तेतो बेसे, पण जे यतिने बेसवु न कल्पे ते बेसे तो तेने इ० एवो म० अनाचार लागे अने आ० पामे अ० मिथ्यात्वनु फल ॥ ५७ ॥ वि० विनाश थाय ब० ब्रह्मचर्यनो अने पा० प्राणीनो व० वध पण थाय (त्या यतिने गृहस्थना घरने विषे बेसता आधाकरमी प्रमुख आहार नीपजवानो सम्भव छे तेथी) व० संयमनो पण वध थाय व० त्या भिक्षाचरने प० अतराय पडे प० त्या यति उपर क्रोध उपजे अ० गृहस्थने (घरना धणीने) ॥ ५८ ॥ अ० नव वाड भागे ब० ब्रह्मचर्यनी इ० स्त्रीने पण स० शका उपजे कु० कुशील व० वधवानु ठा० स्थानक (गृहस्थने घेरे बेसवु ते) दु० दुरथी प० वर्जे ॥ ५९ ॥ हवे गृहस्थोने घेरे बेसवुं जे यतिने कल्पे छे ते अधिकार कहे छे—ति० ए त्रणमा कोइ एक यतिने नि० गृहस्थीना घरे बेसवु ज० जेने क० कल्पे ते कहे छे ज० गढपणे पराभव्यो होय ते यतिने वा० रोगी यतिने अने त० तपस्वीने, ए त्रण प्रकारना यतिने गृहस्थना घेरे बेसवु कल्पे ॥ ६० ॥

भावार्थ—हे गुरु ! आ पाठमा जणवे, गृहस्थोना घेरे बेसे ते साधुने आठ अवगुण मोटका कह्या तेमा मिथ्यातनुं फल पामे

ब्रह्मचर्यनो विनाश थाय १, प्राणीनो वध थाय २, ग्रहस्थी धन कणुंका, लीलोत्री, पाणी वीगेरे आघुं पाछुं करी आधाकर्मी आहार निपजावे तो प्राणीनो वध थाय, तेवारे संजमनो पण वध थाय ३, भिक्षाचरने अंतराय पडे ४, घरनो धणी क्रोध करे ५, ब्रह्मचर्यनी वाड भागे ६, स्त्रीने शंका उपजे ७, अने कुशील वधवानुं ठाम छे ८. ए आठ दोष जाणीने साधु ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं दुरथी वर्जे, अने अपवादमार्गमां त्रण जणाने ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं कल्पे कह्युं. तेमां एक तो जराए करी पराजव्यो (बुढो स्थिवर) तेने, एक व्याधिआने (रोगीने) अने एक तपस्वीने. ए त्रण वीना बीजो ग्रहस्थीना घेरे बेसे तो तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे. तमे पोताना स्वार्थने वास्ते ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं केम स्थापोछो ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "एतो गोचरीए गयांथकां ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं नही ते आश्री कह्युं छे; अने अमे तो धर्म-उपदेश देवाने वास्ते मोटा घरोमां पडदावाली बाइउने तथा रजपुतोना रावलामां वखाण संभलाववाने जइए छीए तथा हाटोमां उतरीए त्यारे बाइउने वखाण संभलाववा माटे ग्रहस्थीना घेरे जइने बेसीए छीए. ए तो धर्म वधारवानुं कारण छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ज्हेजे गोचरीए गयाथका ग्रहस्थीना घेरे बेसे तोय साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे, त्यारे (उदीरीने) जाणी जोइने तो जइ बेसवुं कल्पेज केम ? जेम गोचरीए गयां ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं छे तेम उपदेश देवो पण वर्ज्यो छे. शास्त्र सूत्र ब्रहत्कल्प उद्देशे त्रीजे. ते पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथाणंवा २ अंतरागिहंसिवा चिठित्तएवा निसिइत्तएवा तुयट्टीत्तएवा निद्दाइत्तएवा पयलाइत्तएवा असणंवा ४ आहारमाहरित्तएवा उच्चारंवा ४ परिठवित्तए सद्यायंवा करित्तए जाणंवाजाइत्तए काउसग्गंवा ठाणंवाठाइत्तए ॥ अहपुण एवं जाणेज्जा वाहिए थेरे तपसी दुवले किलंत्ते जराजुण्णे जजरिए मुच्छेज्जवा पवडेज्जवा एवंसे कप्पइ

अतरागिहसि चिठ्ठित्तएवा जाव ठाणंवा ठाइत्तए ॥ नोकप्पइ निग्गंथाणवा २ अतरागिहंसिवा जाव चउग्गाहंवा पंचगाहवा आइखित्तएवा विभावित्तएवा कीट्टीत्तएवा पवेइत्तएवा ननढ एगनाएएवा एगवागरणेणवा एगगाहाएवा एग सिलोएणवा सेविए ठिञ्चा नोचेवणं अठिञ्चा ॥ नो कप्पइ निग्गथाणवा २ अतरागिहसि इमाइं पचमहव्वयाइं सभ्भावणाइं आइखित्तएवा विभावित्तएवा किट्टित्तएवा पवेइत्तएवा ननढ एग नाएणवा एगवागरेणवा एगगाहाएवा एगसिलोएणवा सवियठिचा नोचेवणं आठिञ्चा ॥ २३ ॥

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साध साधवीने अ० ग्रहस्थना घरने विषे चि० उर्जु रहेवु नि० बेसवु तु० सुवु नि० निंद्रा लेवी प० विशेष निंद्रा लेवी अ० असन, पाणी, खादिम, स्वादिम, ए चार आ० आहार करवो उ० वडीनीत १, लघुनीत २, बलखो ३, अने नाकनो मेल ४ प० परठववो स० सजाय करवी झा० ध्यान ध्यावर्वु का० काउसग्ग ठा० ठाववो अ० हवे वली ए० ओ एम जा० जाणे वा० रोगी थे० स्थिवर त० तपस्वी डु० दुर्बल कि० किलामना पामी ज० जराए जुनो अ० ज जेरी वेहे मु० मुर्छा पामी प० पडतो होय ए० तेने क० कल्पे अ० ग्रह स्थीना घरने विषे चि० उभु रहेवु, बेसवु, सुवु जा० यावत् ठा० काउस ग्ग ठा० इरियावही पडिकमवो नो० न कल्पे नि० साध साधवीने अ० ग्रहस्थीना घरने विषे वेसोने जा० यावत् च० चार गाथा प० पांच गाथा आ० कहेवी वि० जुदी जुदी कथवी की० विस्तारे केहेवु (प्रश्नव्याकरणमा गुण कह्या ते), प० विशेषे केहेवु (माहामतनां फल निर्जरानां फल मुक्तिपद पामवा), न० पण एटलु विशेष ए०ना० एकज न्याय दृष्टान्त कहे ए०वा० एकज प्रश्नोत्तर कहे ए०गा० एकज गाथा कहे

ए० सि० एकज श्लोक कहे; से० ते पण ठि० उभा रहीने, पण नो० नही अ० बेसीने कहे. नो० न कल्पे नि० साध साधवीने अं० घर वचाले बेसीने इ० ए पं० पांच माहाव्रत स० पचीस भावना सहित आ० केहेवां, वि० अर्थ जुदा जुदा कथी प्राणातिपात वेरमणादिक कि० विस्तारी केहेवा (प्रश्नव्याकरणमां गुण कह्या ते), प० विशेष केहेवा (मुक्तिपद पामवा रुप माहाव्रत (निर्जरा)नां फल), न० पण एटलुं विशेष ए०ना० एकज न्याय दृष्टान्त ए०वा० एकज प्रश्नोत्तर ए०गा० एकज गाथा ए०सि० एकज श्लोक केहेवो; से० तेपण ठि० उभा रहीने; नो० पण बेसीने न केहेवो.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां श्री वीतरागदेवे एम कह्युं छे के, साधसाधवीने ग्रहस्थीना घेरे उभुं रेहेवुं १, बेसवुं २, सुवुं ३, निद्रा लेवी ४, विशेष निंद्रा लेवी ५, असनादिक चार आहार करवा ६, उच्चारपासवण खेल परठववां ७, सज्झाय करवी ८, ध्यान करवुं ए, अने काउसग्ग करवो १०, ए दस काम ग्रहस्थीना घेरे जइने करवां नही; अने अपवाद मार्गमां बुढो (स्थिवर), रोगी तथा दुर्बल होय, मुर्छा आवती होय अने हेठो पडतो होय तेने ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं कल्पे. वली आगल आ पाठमांज एम कह्युं छे के, ग्रहस्थीना घेरे चार पांच गाथा केहेवी नही, पांच माहाव्रत पण केहेवां नही, तेम पांच माहाव्रतनी पचीस भावना पण केहेवी नही. कदाचित कोइ पुछे तो एक प्रश्ननो उत्तर देवो तथा एक गाथा अथवा एक श्लोक केहेवो; ते पण उभा रहीने केहेवो, पण बेसीने केहेवो नही. ए जुओ ! भगवंतनी तो आज्ञा एवी छे के, ग्रहस्थीना घेरे काम पड्यां केहेवुं पडे तो एक श्लोक के गाथा उभा रहीने केहेवी; पण बेसीने कहेवानी आज्ञा नथी. त्यारे घणी वार ग्रहस्थीना घेरे बेसीने उपदेश देवो क्यां थकी ? तमे प्रभुनां वचन उत्थापीने ग्रहस्थीना घेरे बेसीने वखाण वांचवुं तथा उपदेश देवो केम स्थापो छो ?

तेवारे तेरापंथी, ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापवाने अर्थे एम कहे

छे के " सूत्र दसवैकालीकमा ग्रहस्थीना घेरे बेसे तो साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो, अने आ ग्रहस्तकल्पना त्रीजा उद्देशामा ग्रहस्थीना घेरे बेसवु वर्ज्युं ते अंतर घर कह्यु छे ते अतर घर तो रसोइ करे तेने, तथा वली धणीयी सुवे ते मेड्खात तथा ढेरमा प्रमुख जितर जग्याने कहीये ते अंतरघरमा तेर बोल करवा वर्ज्या छे, पण परसाल (वरसाली) मां, चोकमा, कचेरीमा अने अघायली (एकान्त) जग्यामा रहेवु, बेसवु तथा उपदेश देवो नथी वर्ज्यो " एम पोताना स्वार्थने अर्थे खोटा अर्थ करे छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! जे जग्यामा सुखे समाधे साधुने बेसवु वर्ज्युं, तेज जग्यामा बुढा स्थिवरने, व्याधिरोगीने तथा तपस्वीने रहेवानी, बेसवानी, सुवानी, चार आहार करवानी, वडीनीत लघुनीत प्रमुख परठववानी जावत् तेर बोल करवानी आज्ञा छे एवे जुठे स्थिवर, रोगी अने तपस्वी, ग्रहस्थीना घेरे रसोइ करवानी जग्यामा, सुवाना मेडेखमां, सेज्यामां, तथा जितर-ढेरमा प्रमुखमां आहार पाणी करे तथा वडीनीत लघुनीत परठवे के अघायली ज ग्यामां परठवे से कह्यो

तेवारे तेरापथी पण कहे छे के " अघायली जग्यामा, जितादिकने ढंढे तथा नोहोरा प्रमुखमां आहारादिक करे तथा लघुनीत, वडीनीत परठवे, पण रसोइ तथा सुवानी जग्यामा तो स्थिवर, रोगी अने तप स्वी पण आहार पाणी करे नहीं तथा दिसा मात्रे पण जाय नहीं " हे देवानुप्रीय ! तमे रसोडानी तथा सुवानी जग्याने अंतर घर केम कहोछो ? एवा खोटा अर्थ केम करोछो ? अहीया तो 'गिह' केहेता घर अने ' अतर ' केहेता माहे साधुने बेसवु नही तथा उपदेश देवो नही," प्रभुए तो एम कह्यु छे तेवारे तेरापथी कहे छे के "सूत्र उत्तराध्ययननी बारमा अध्ययनमां हरकेशी मुनीराजे ब्राह्मणोना पाडामां उपदेश दीधो छे, तथा तेज सूत्रना पचीसमा अध्ययनमा जयघोष मुनीए विजयघो षने ब्राह्मणना पाडामा उपदेश दीधो छे, तथा सूत्र ज्ञाताजीमा पोटी लाने दानशालामां आरज्याए मोटे मडाणे उपदेश दीधो छे, तथा वली

तेज ज्ञाताजीना सोलमा अध्ययनमां गोपालकाजी आर्जाए सुखमालीकाने उपदेश दीधो छे. तेथी अमे पण ग्रहस्थीना घेरे बेसीने उपदेश दइए छीए." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! एवी जग्यामां तो काम पड्याथी साधुने रेहेवुं पण कल्पे छे, त्यारे उपदेशनी शी चर्चा छे ? अने ग्रहस्थीना घेरे साधुने बेसवुं तथा उपदेश देवो वर्ज्यो ते तो स्त्रीआदिक रेहेती होय, परिंडो पाणी होय, रसोइ थती होय अने छोकरा छोकरी वेखेरा सहित होय ते आश्री वर्ज्यो छे. हवे उतर्या होय ते जग्या छोटी होय तथा अवखाइनी होय तेथी बीजी जग्या साधुजीने रेहेवा जोग्य होय एवी जग्यामां जइने उपदेश दे तो साधुने हरकत (अटकाव) नहीं. वली साधुजी रहे ते घर सर्व ग्रहस्थीनांज छे, पण ग्रहस्थीने रेहेवासनी जग्यामां साधुजीने उपदेश देवो तथा बेसवुं वर्ज्युं छे. वली हरकेशीजी तथा गोपालकाजी प्रमुखे तो पाडामां तथा दान देवानी जग्यामां उपदेश दीधो छे; पण ग्रहस्थीनी रहेवासवाली जग्यामां नथी दीधो. ए हरकेशीजी मुनीराज अने आर्याजी गोपालकाजी प्रमुखे ग्रहस्थीना पाडामां जइने उपदेश दीधो ते तो सर्व अछीय-कल्पी छे; पण पेहेला अने छेला तीर्थंकरना साधुने ग्रहस्थीना घेरे जइने उपदेश देवो कयांय चाल्यो होय तो ते सूत्र पाठ बतावो. तेवारे वली तेरापंथीउ, ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापवाने काजे कहे छे के " वचन-लब्धिना धणीने ग्रहस्थीना घेरे बेसीने उपदेश देवो सूत्र सूयगडांगना प्रथम श्रुतस्कंधना नवमा अध्ययनी २९ मी गाथाना अर्थमां क्यांक कह्युं छे. ते पाठः—

नन्नत्थ अंतराएणं, परगेहेण णिसियए;
गाम कुमारिय किड्डं, नातिवेलं हसेमुणी. ॥ २९ ॥

अर्थः—न० एटलुं विशेष अं० जरा, रोगादिक कारण टालीने बेसे, तथा कोइ वचन-लब्धिवंत धर्म उपदेशादि कारणे पण बेसे. प० ए कारण विना ग्रहस्थीना घेरे णि० न बेसे. गा० ग्रामने विषे कुं० कु-

मारनी परे कि० हास्यक्रिया न करे, ना० मर्यादा मुकीने न हसे सु० साधु पडिलेहणादिक वेला मर्यादा उलघीने न हसे वीतरागनी आज्ञा उलघीने हरूहरू साधु न हसे

भावार्थ —हे देवानुप्रीय ! अहीयांतो एम कह्यु छे के ' रोगादिकना कारण विना ग्रहस्थीने घेरे साधुए बेसवुं नही, अने वचन-लब्धीवत होय तो उपदेशादिक कारणे बेसे' एम अर्थमा कह्युं छे हवे वचन लब्धीवत केने कहीये ते कहो जो वचन बोले तेने वचन—लब्धीवत केहेता होतो गुंगा साधु कया छे के, जेमने सूत्रमां ठाम ठाम ग्रहस्थीना घेरे बेसवु वर्ज्युं ? अहियां वचनलब्धी तो दस पूर्वथी चउदे पूर्व पर्यंत ज्ञानना धणी होय अने जेना वचन खाली न जाय तेने कहीये तेने तथा आगम—व्यवहारी होय तेने बेसवु अर्थमा कह्युं छे हवे तमारामा कइ लब्धी छे ते कहो एतो तमे वधाए पेट भराइने वास्ते ग्रहस्थना घेर बेसता देखाओ छो वली प्रभुए तो सूयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कधना नवमा अध्ययननी एकवीसमी गाथामां ग्रहस्थीना घेरे साधुने बेसवु वर्ज्युं छे ते पाठ —

आसदी पलियकेय, णिसिज्जं च गिहंतरे,
संपुच्छण सरणावा तं विज्जं परिजाणिया ॥ २१ ॥

अर्थ —आ० माची प्रमुख आसने प० पलंकादिके णि० बेसवु गि० ग्रहस्थीना घरमा बेसवुं, सुयु न कल्पे (आत्म संजमनी विराधना थाय तेथी) स० ग्रहस्थीने क्षेम कुशलनुं पुछवु तथा स० पूर्व क्रिडानुं संभारवुं तं० ते सर्व ससार भमवानो हेतु जाणीने वि० पंडीत प० परिहरे २१

भावार्थः—हवे जुओ ! इहा पण ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं छे वली दसवैकालीक सूत्रना त्रीजा अध्ययनमा ग्रहस्थीना घेरे बेसे तेने अणाचारी कह्यो छे इत्यादिक अनेक ठेकाणे सूत्रमा ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं छे छतां तमे एटला केवलीना वचन उथापीने, पेट भराइना वास्ते ग्रहस्थीना घेरे बेसवु केम स्थापो छो ?

वळी टोटावाळा सराफनी माफक लोकोमां सफाइ दर्शाववाने वास्ते तेरापंथी कहे छे के "सूत्रमां कह्या सिवाय किंचीत मात्र काम करीने प्रायश्चित न ले तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे." एवी परुपणा करे छे; पण पोतेतो सूत्रमां कह्या वीना घणां कर्तव्य करे छे. ते ए के प्रथम तो ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापे छे, अने पात्रांने रोगान तथा रंग लगाडवा माटे रोगान वासी राखवानी स्थापना करे छे. माटे तेरापंथीने पुछवुं के, तमे पात्रांने रोगांन लगावो छो तथा साथे लइने गामोगाम फर्या करो छो तथा वासी राखो छो, अने वळी तोटो छुपाववाने अर्थे तथा अणसमजु लोकोने ठगवाने वास्ते कहो छो के, सूत्रमां कह्या विना किंचीत्त मात्र काम करे तेनामां साधपणुं नथी. त्यारे पातरांने लगाववा सारु रोगान वासी राखवो कया सूत्रमां कह्युं छे ते बतावो. तमे तो ए काम सूत्रमां कह्याविना करो छो. हवे तमारी केहेणीने लेखे तमारामां साधपणुं छे के नहि ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "जेम तमारा बावीस संघाडाना साधु पात्रांने रंग रोगान लगावे छे तेम अमे पण लगावीए छीए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! बावीस सिंघाडाना साधुतो चश्मा पण राखे छे, रोगान पण पात्रांने लगाडे छे, अने सोय भाग्याना प्रायश्चितनुं बेलुं तथा सोय गुमाव्यानुं तेलुं करे छे, अने काचा पाणीनो छाटो लागे तो अपवासनुं प्रायश्चित ले छे; इत्यादिक घणां कामनो सूत्रमां निर्णय नथी ते जेम जितव्यवहारमां कह्युं अने जेम वडा वडेरा करता आव्या तेम करे छे. ते जितव्यवहार मानवो कह्यो छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक आठमे उद्देशे आठमे, तथा व्यवहार सूत्र उद्देशे दसमे. ए न्याये अमारा बावीस टोलाना समुदायना साधु तो जे कामनो सूत्रमां नीर्णय नथी ते सर्व जितव्यवहारथी करे छे; अने जितव्यवहारथी वर्ते तेने भगवंते आज्ञाना आराधक कह्या छे. ए न्याये अमे तो जीतव्यवहारथी सर्व काम करीए छीए; अने तमे तो जीतव्यवहारनां बीजां तो प्रायश्चित प्रमुख सर्व काम उथापी दीधां; अने रोगान

प्रमुखनी वेखाए बीजा सघाराना साधुनु ठंठु स्यो ठो के "जेम तमे करो ठो तेम अमे पण करीए ठीए" अहो देवानुप्रीय ! श्री निषित सूत्र प्रमुखमा पात्राने त्रण पसली तेल लगाम्बुं कह्यु ठे तथा त्रण पसली लोढ प्रमुखनो रग लगाम्बो कह्यो ठे ते तेल तथा लोढनो रोगान बने ठे, तेथी पम्रेरा आचार्योये पात्राने रोगान लगाववो स्थाप्यो ठे. ते जीत व्यवहार ठे ते तेलनी नेश्राये जीतव्यवहारथी अमे रोगान लगावीए ठीए वली तेल रोगान वासी राखवो न जोइए ठता केटक सिंघाम्मां वासी राखे ठे, पण ते तमारी पेठे स्थापना करता नथी तमे तो कहो ठो के सूत्रमा कह्या सीवाय काम करे तेनामा साधपणु नथी, अने वली रोगान वासी राखवानी तो स्थापना करो ठो, पण जगवते तो तेल, रोगान प्रमुख वासी राखे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो ठे तथा ग्रहस्थी सरखा कह्या ठे शास्त्र सूत्र दशवैकालीक अध्ययन ठठे अढार बोल मांहेला पाचमा बोलमा ते पाठः—

विम्मुचे इम लोण तिल्लं सप्पिं च फाणिय नेतें,
सनिहीं मिठति नायपुत्त वठ रया ॥ १७ ॥
लोजस्ससम णुफासे मन्ने अन्नय रामवि
जे सिया सनिहिकामी गिही पवइए नसे ॥ १९ ॥

अर्थ —हवे पांचमा स्थानकनी विधि कहे ठे वि० बिड लवण समुद्रादिकनु इ० एवा प्रकारनु लो० लुण ति० तेल स० घीइ फा० गोलो गोल न० एटला घाना से यति स० वासी राखवा मि० न वान्ठे मा० श्री माहावीरदेवना व० वचने र० जे रक्त तत्पर होय ते लो० लोभनु अणु० थोडु पण सेववु (जे वासी खावु) ते, अने म० अनेरी कोजी वस्तु थोडी पण जे० जे यति सि० कदाचीत स० स्निग्ध खावानी वस्तु वन्ठे ते गि० ग्रहस्थी पण नही अने प० यति पण नही ।

भावार्थः—हवे आ पाठमा एम कह्यु ठे के, वीर वचनमा रक्त थयो होय ते साधुए लुण, तेल, गोल, घृत प्रमुख वासी राखवानी म-

न्भा करवी नही; अने जे कोइ किंचीत मात्र वस्तु वासी राखवानी वान्भा करे तेने लोन्नो सेवणहार तथा पांच माहाव्रतनो विराधक ग्रहस्य केहेवो; पण प्रवर्जित साधु न केहेवो. हवे जुउ ! आ पाठमां तेल वासी राखे तेने न्नगवंते ग्रहस्थी सरखो कह्यो छे. ते तेलनी नेश्राये रोगान लगावीए छीए. तमे रोगान वासी राखवानी स्थापना केम करोछो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " अहीयां तो खावाने वास्ते तेलादिक वासी राखे तेने ग्रहस्थी सरखो तथा साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे; पण पात्रांने लगाडवा वास्ते तेल रोगान वासी राखवो क्यां वर्ज्यो छे? तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! श्रीवीतरागदेवनुं वचन उत्थापीने एवी ढीलाइ केम स्थापो छो ? जुन्न नषिथ सूत्रमां, गुमडांने लगाववानो मलम तथा गोबर प्रमुख वासी राखे तेने चोमासी पायश्चित कह्युं छे. त्यारे तेल रोगान वासी राखशे तेने दोष केम नही लागशे ? अने तेल रोगान वासी राखवानी स्थापना करशे तथा दोषने निर्दोष स्थापशे तेनामां (सम्यक्त) साधपणुं केम रहेशे ? वली तेल, अलसी, रोगन, मीण अने साबु प्रमुख वासी राखे ते तो कर्मनो उदयन्नाव छे; पण वासी राखवानी स्थापना करो छो ते घणुं अजुक्तुं करो छो. वली तमे कहो छो के " खावानी वस्तु वासी राखे तेने ग्रहस्थी सरखो कह्यो छे, पण रोगान, तेल, ए खावानी वस्तु नथी तेथी वासी राखीए छीए. " ए लेखे तो आंखोमां घालवानो उसो (सुरमादिक), गुंबडांने लगाववानो मलम तथा डुखता शरीरे लगाडवानुं तेल, घृत, पुगं प्रमुख करवाने चावल तथा गहुंनी लाही अने साही हींगलो प्रमुखमां नाखवाने गुंद इत्यादिक खावा वीना अनेक कामने वास्ते अनेक वस्तुउ तमारी केहेणीने लेखे वासी राखताज हशो; पण दस वैकालीकना त्रीजा अध्ययनमां दसमा अणाचारमां तेलादिक वासी राखे तेने अणाचारी कह्यो छे तथा नषित सूत्रमां चोमासो प्रायश्चित कह्युं छे. तेमज दसाश्रुतस्कंध, उत्तराध्ययन अने प्रश्नव्याकरण प्रमुख घणा सूत्रमां ठाम ठाम तेलादिक वासी राखवुं वर्ज्युं छे. ते जाणजो.

हवे तेरापंथी साधवी साथे ससतो परिचय करे छे अने स्थापे छे तेनुं वर्णन —

वळी ढीला, पासत्था, सुखसेलीआ अने जीजना घोसपी, साध वीनां आहारपाणी ले छे पण ठाणायांग सूत्रना त्रीजा ठाणामा काम पड्याथी त्रण प्रकारे साधवीने भोळाववुं कह्युं तेमां काम पड्याथी आहारादिक देवो देवरावयो कह्यो, पण साधवीनो आहार पाणी लेवो तो, बत्रीस सूत्रमा क्याय कह्यु नथी छतां तेरापंथीना साधुओ आर जानो आण्यो आहार पाणी ले छे हवे ठाणायांगमा आर्जाने देवो देवराववो कह्यो छे, ते पण काम पड्यां अशातादिक कारणे कह्यो संभवे छे, कारण के सुखे समाधे साध साधवीने मांहोमांही आलोवणा लेवी तथा मांहोमांहे आहार पाणी प्रमुखनी वैयावच करवी, एके कल्पे नही शास्त्र सूत्र व्यवहार उद्देशे पांचमें ते पाठ —

जे निग्गंथाय निग्गंथीउय सभोइयासिया णोप्पईक-प्पति अन्नमन्नस्स अत्तिए आलोइए अत्थिया इछएह केइ आलोयणारिहे कप्पतिण तस्स अत्तिए आलोइत्तए णत्थि इछएह केइ अप्पहे आलोयणारिहे एवण कप्पत्ति असमणस्स अतिए आलोइत्तए जे निग्गंथाये निग्गंथि-उय संभोइयासिया नोन्हकप्पति असमणस्स अतिए वे-यावच करितए अत्थियाइणं वयाइणा वयावच्चकरेइ क-प्पतिणह् तेण वेयावच्च करावित्तए णत्थियाइणा केइ वेयावच्चकरे एवण कप्पत्ति असमणेण वेयावच्च करावित्तए॥

अर्थ —जे० जे कोइ नि० साधु नि० साधवी स० बार प्रकारना संभोगी छे तेमने णो० न कल्पे अ० मांहोमांही एकेकनी अ० समिपे आ० आलोयणा लेवी अ० छे इ० एमने के० जो कोइ आ० आलोयण-नो देणहार आचार्य तो क० कल्पे ति० ते साध साधवीने त० ते आलोय ण

देणहार आचार्यनी अं० समिपे आ० आलोयणा लेवी. ण० नथी इ० ए साध साधवीने के० कोइ अ० अनेरो आ० आलोयणनो देणहार आचार्य ए० एम होय तो क० कल्पे अ० मांहोमांही एकेकनी अं० समिपे आ० आलोयणा लेवी. ज० जे कोइ नि० साधुने नि० साधवीने सं० बार प्रकारना संभोग छे णो० तेमने न कल्पे अं० मांहोमांही अं० साधु साधवीनी समिपे अने साधवी साधुनी समिपे जइने वे० वैयावच करवी. अ० छे इ० इहां कोइ अनेरा साध साधवी व० वैयावचना करणहार क० कल्पे ते साध साधवीने ते० ते कने वे० वैयावच क० करावची. ण० नथी इहां क० कोइ अनेरा वे० वैयावचना करणहार ए० जो एम होय तो क० कल्पे अ० मांहोमांही वे० वैयावच क० करावची.

अर्थः—हवे जुओ ! इहां एम कह्युं के, बार प्रकारना संभोगी होय ते साध साधवीने कदाचित दोष लागे तो ते दोषनी आलोयण लेवी जोइए; पण ते मांहोमांही लेवी न कल्पे. अनेरो कोइ गुणसंपन्न आलोयणा देवा योग्य आलोयणाचार्य होय तो तेनी कने आलोयण लेवी कल्पे. हवे जो एवा गुण संपन्न आलोयणना देणहार त्यां न होय तो ते कारणे मांहोमांही पण आलोयणा लेवी कल्पे एम कह्युं. हवे जेम आलोयण लेवानी विधि कही, तेम वैयावच पण मांहोमांही एकेक पासे करवी करावची नही. ते वैयावच ठाणायांगना त्रीजा ठाणे त्रण प्रकारनी कही छेः— आहार, पाणी, वस्त्र, उपगरणादिकनुं देवुं १, मात्रादिकनुं परठववुं २, अने तेलादिक मसलवुं, दाबवुं तथा चांपवुं ३. वली श्री प्रश्नव्याकरणजीमां घणा प्रकारनी वैयावच कही छे. ते वैयावच साध साधवीए मांहोमांही करवी नही. हवे कोइ रोगादिक कारण उपजे तो वैयावच करवा योग्य कोइ अनेरा पासे वैयावच करावची; अने वैयावच करवा योग्य न होय तो अपवादमां मांहोमांही पण वैयावच करवी कल्पे कह्युं. एम करतां संघटादिकनी शंका उपजे ते भांजवा भणी चोवीसमुं सूत्र कहीये छीये. ते पाठः—

णिग्गंथचणं राओवा वियालेवा दीह पुठो लुसेज्जा तं इ-
त्थिएवा पुरिसो ओमच्चेज्जा पुरिसोवा इत्थिए ओमच्चेज्जा एवं
से कप्पति एव चिठत्ति परिहारच णो पाउणत्ति एसकप्पो
थेर कप्पीयाणं एव से नोकप्पत्ति एव मे नो चिठंत्ति प
रिहारंच पाउणाइ एसकप्पो जिणकप्पीयाणं

अर्थ —णि० साधु साधवीने रा० रात्रे वि० पडिकमणादिकनी वेलाए तथा बपोर इत्यादिक वीकट वेलाए दी० दीर्घ सर्प पु० स्पर्श थको लु० लुसे, डस दे, करडे, एवो डस्यो होय त्यारे त० ते इ० साध्वीने ते डसे तो पु० पुरुष गृहस्थ तेने हाथे करी ओ० डंसनी चिकित्सा करावे, अने पु० पुरुषने (साधुने) डसे तो इ० ते गृहस्थणीना (स्त्रीनी जातना) हाथे करी ओ० डंसनी चिकित्सा करावे ए० एम से० ते स्थिवर-कल्पीने क० कल्पे (अपवाद मार्गे) ए० ए प्रकारे चि० रहे स्थिवर-कल्पी ते भ्रष्ट न थाय प० परिहार तप पण ते न पामे ए० ए कल्पाचार थे० स्थिवर कल्पीनो कह्यो हवे जिन-कल्पीनो आचार कहे छे.—ए० एम स्थिवर कल्पीनी परे से० ते जिन-कल्पीने नो० न कल्पे ए० एस से० ते जिन-कल्पीपणु नो० न रहे प० पायश्चित पण पामे ए० ए आचार जिन-कल्पीनो केहेवो ए प्रकारे वैयावचनुं कराववु जिन कल्पीने न कल्पे (ते उत्सर्ग मार्गे प्रवर्ते छे ते माटे).

भावार्थ —हवे जुओ ! साध साधवीने माहोमांहे अपवादे वैयावच करवी कही त्यां संघटानी शंका उपजे ते टाळवा माटे कह्युं के सर्पादिके दंष दीधो होय तो साधु साधवी स्त्री पुरुषकने झाडो देवरावे ए झाडो देवराववानो कल्प स्थिवर कल्पीनो छे, तेथी ते प्रायश्चित न पामे, पण जीन-कल्पीने झाडो देवराववो कल्पे नही, तेथी जो झाडो देवरावे तो प्रायश्चित पामे वळी अपवादमां अणसरते वैयावचने अर्थे संघट्टादिक करता भगवतनी आज्ञा अतिक्रमे नही शास्त्र सूत्र बृहत्कल्प उद्देशो छठे ते पाठ —

निग्गंथस्सय अहेपायंसि खाणुवा कंटएवा हिरएवा सकरेवा परियावजेजा तंच निग्गंथे नोसंचाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तंच निग्गंथी निहरमाणीवा विसोहेमाणीवा णाइक्कमइ. निग्गंथस्स अछिंसि पाणेवा बीएवा रएवा परियावजेजा तंच निग्गंथे नोसंचाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तं निग्गंथी निहरमाणीवा विसोहीमाणीवा णाइक्कमइ. निग्गंथीए अहेपायंसि खाणुवा कंटएवा बाहिरेवा सकरेवा परियावजेजा तंच निग्गंथी नोसंचाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तंच निग्गंथे निहरमाणेवा विसोहेमाणेवा णाइक्कम्मइ. निग्गंथीए अछिंसि पाणेवा बिएवा रएवा परियावजेजा तंच निग्गंथी नोसंचाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तंच निग्गंथे निहरमाणेवा वीसोहेमाणेवा णाइक्कम्मइ. निग्गंथे निग्गंथी दुगंसिवा विसमंसिवा पवयंसिवा पखलमाणंवा पवडमाणंवा गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कम्मइ. निग्गंथे निग्गंथी सेयंसिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उकसमाणींवा उवुझमाणेवा गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कम्मइ. निग्गंथे निग्गंथी नावं आरोहमाणंवा उरोहमाणंवा गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कम्मइ. खित्तचित्त निग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कम्मइ.॥

अर्थः—पूर्ववत्. जुओ प्रश्न बीजे पाने २२४ में.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां कह्युं के, साधुना पगमां खीलो, कांटो, प्रमुख भांग्यो होय तथा आंखमां प्राणी, बीज, रज प्रमुख पड्यां होय अने पोते काढवा समर्थ न होय त्यारे साधवी काढे

तो आज्ञा अतिक्रमे नहीं,अने साधवीना पगमां खीलो काटो,प्रमुख जाग्यो होय तथा आखमा माणी, रज, बीज प्रमुख पड्यु होय ते पोते काढवा समर्थ न होय त्यारे साधु काढे तो आज्ञा अतिक्रमे नहीं वली, ब-समी जग्यांथी तथा पर्वतादिकथी पडती साधवीने तथा अंध काद आदिकमां खपसती, पडती तथा डुबती साधवीने तथा (नावा) वा हाथे चढता उतरता पडती साधवने, साधु ग्रहतो थको आज्ञा अति-क्रमे नहीं आगल वली कदर्प चित्ते करी, लोजादिके करी अने अहा धिपे करी जाती साधवीने साधु झाली राखतो थको आज्ञा अतिक्रमे नहीं। जेम पग तथा आंखमा खीलो, कांटो, रज, बीज प्रमुख साध साधवी पोते काढवा समर्थ न होय त्यारे साधु साधवीने अने साधवी सा धुने काढतां आज्ञा अतिक्रमे नहीं, पण जो साधु पासे साधु अने साधवी पासे साधवी काढनार होय तो मांहोमाहे कढावबु कल्पे नहीं तेमज आहारादिक त्रण प्रकारनी वैयावच्चनी बाबतमां पण व्यवहार सूत्रना पांचमा उद्देशामा कह्यु छे के, साधु पासे साधु करवा वालो होय अने साधवी पासे साधवी करवा वाली होय तो साधुने साधवी पासे अने साधवीने साधु पासे वैयावच्च करावबी कल्पे नहीं ते छता तमे शुं समाधे आर्यानो लाव्यो आहारादिक केम ल्यो छो अने आर्याने केम आपो छो ? वली पुजखुं, पलेववुं, सीववुं, पात्रां प्रमुखनु रंगवु अने धोवुं आद दइ अनेक काम आर्या कने केम करावो छो ? थोका जिनितव्यने कारणे प्रभुनां वचन उत्थापीने आर्याथी अलाप सलाप, ससतो परिचय अने आहारादिक लेवो देवो केम स्थापो छो ?

वली आर्या साथे विहार करे तो निषित सूत्रना आठमा उद्देशामा चोमासी प्रायश्चित कर्युं छे तेमज साध साधवीने एक दरवाजे दिशा मात्रे पण जवु वर्ज्युं छे तथा एक दरवाजे एक दिशे विहार करवो व र्ज्यो छे छतां तमे सूत्रनां वचन उथापीने आर्या साथे विहार केम क-रोछो ? एवी ढीलाइ ढंढा जीवीतव्यने कारणे अंगीकार केम करोछो ? वली आर्याने साधुजी रहेता होय ते उपाश्रयमा ज्ञानादिकना, प्रयोग,

विना बेसवुं उठवुं कल्पे नही. एक तो (समोसरणमां) व्याख्यानमां आववुं कह्युं, ते प्रखदामां चार हाथ पगानो पछेडी प्रमुख उढीने, सर्व हाथ पग प्रमुख अंग उपांग ढांकीने बेसवुं कह्युं, अने एक पोतानी पासे नणाववावाली गीतार्थ आर्या न होय तो साधुजी पासे वांचणी लेवा सारु आववुं कल्पे कह्युं. ए बे ज्ञानना प्रयोगने अर्थे आर्याने साधुना उपाश्रये आववुं कह्युं छे. ए ज्ञानादिकना प्रयोग विना साधु रहेता होय ते जग्यामां आर्याने आवीने उज्जुं रहेवुं, बेसवुं, सुवुं के आहारादिक कांइ पण काम करवुं कल्पे नही; अने साधुने साधवी रहेती होय ते जग्यामां उज्जुं रहेवुं, बेसवुं, सुवुं तथा चार आहार करवा कल्पे नही; तेम कांइ पण काम करवुं कल्पे नही. शाख सूत्र बृहत्कल्पना त्रीजा उद्देशामां. ते पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथाणं निग्गंथीणं उवस्सयंसि चिठित्तएवा निसित्तएवा निद्दाइत्तएवा तुयट्टित्तएवा पयलाइतएवा असणंवा ४ आहारं आहारित्तए उचारंवा ८ पासवणंवा खेलंवा सिघाणंवा परिठवित्तए सज्झायंवा करित्तए झाणंवा झाइत्तए काउसग्गंवा ठाणंवा ठाइत्तए. नोकप्पइ निग्गंथीणं निग्गंथाणं उवस्सयंसि चिठित्तएवा निसिइत्तएवा तुयटित्तएवा निद्दाइत्तएवा पयलाइत्तएवा असणंवा४ आहारमाहरित्तएवा उचारंवा ४ परिठवित्तए सज्झायंवा करित्तए काउसग्गंवा ठाणंवा ठाइत्तए. ॥

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साधुने नि० साधवीना उ० उपाश्रयने विषे चि० सहेजे उज्जुं रहेवुं १ नि० बेसवुं २ तु० सुवुं ३ नि० निंद्रा लेवी ४ प० विशेष निंद्रा लेवी ५ अ० असनादि चार आहार करवा ६, उ० वडीनीत ७ पा० लघुनीत ८ खे० बलखो ९ अने सि० नासिकानो मेल १० प० परठववां, स० सझाय करवी ११ झा० ध्यान ध्याववुं

१२ का० सेहेजे काउसग करवो १३ अने ठा० बारमी पडिमा ठाववी ए पटखा वानां करवां न कल्पे नो० न कल्पे नि० साधवीने नि० साधुना उ० उपाश्रयने विषे चि० उभु रहेवु नि० बेसवुं तु० सुवुं नि० निंद्रा लेवी प० विशेष निंद्रा लेवी, अ० असन, पान, खादीम, स्वादिम ए चार आ० आहार करवा, उ० वडीनीत आदि चार प० परठववा, स० सज्झाय करवी का० काउसग करवो ठा० (पडिमा) मर्यादानो काउसग ठा० करवो पटखां वाना करवा न कल्पे

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमा तो एम कह्युं छे के, साधुजीने साधवीना उपाश्रये जइने उभु रहेवुं नही १, बेसवु नही २, सुवु नही ३, निंद्रा लेवी नही ४, विशेष निंद्रा लेवी नही ५, अस्नादिक चार आहार करवा नही ६, उचार ७, पासवण ८, सिंघांण ९ अने खेल १०, परठववा नही, सझाय करवी नही ११, ध्यान धरवु नही १२, सेहेजनो काउसग करवो नही १३, अने भिखुनी पडिमा ठाववी नही ए चौद बोल अने आहारना बाकीना त्रण गणीये तो सतर थाय ए बोल साधुने साधवीना उपाश्रये जइने करवा कल्पे नही, तेमज साधवीने साधुना उपाश्रए जइने करवा कल्पे नही श्री वीतरागदेवनी आज्ञा तो एम छे, अने तमे तो सूत्रना वचन तथा वीतरागदेवनी आज्ञा उथापीने आरजाने आखो दीवस घणीवार सुधी बेसारी राखो छो, आहार पाणी स्थानकमा बेसीने करो छो, आरजा पण तमारे स्थानके बेसीने आहार पाणी तथा सझाय करे छे, खंखार प्रमुख परठवे छे, मांहोमाही वातो करो छो अने पुजवुं पलेवण प्रमुख आर्याकने करावो छो एवी रीते आरजाथी सस्तव परिचय राखो छो ते घणुज अयुक्त काम करो छो वली उत्तराध्ययनना १६ मा अध्ययनमा ब्रह्मचर्यनी नव वाड कही छे त्यां स्त्री रेहेती होय ते जग्यामा ब्रह्मचारी साधुने रेहेवु नही, स्त्रीना सामु नजर मेलवीने जोवुं नही तथा स्त्रीनां अंगोपांग नीरखवां नही, कारण के नव वाड मांहेली एक वाड भांगे तो तेना ब्रह्मचर्यने विषे शंका कंखा तथा वितिगिच्छा उपजे, अने ब्रह्मचर्य पालु के न पालुं एवा

प्रणाम थाय, अने संयमथी, संवरथी तथा केवली-पुरुष्या धर्मथी भ्रष्ट थाय, एम कह्युं छे. तमे आखो दीवस आर्याने पासे लइने बेठा रहो छो, वातो करो छो अने तेना सामुं जोया करो छो. हवे तमारी वारू शी रीते रेहेशे ? वली स्त्रीनो परिचय तो ठाम ठाम निषेध्यो छे. तमे उंछा जिवितव्यने कारणे एटलां सूत्रनां वचन उथापीने, आर्यानी साथें विहार करीने, आर्यानो लाव्यो आहार पाणी लइने अने आर्यानो संस्तव परिचय करीने, जैन (धर्म) मार्ग केम लजावो छो ?

हवे तेरापंथीउनी नीत्य-पिंड लेवानी लीला कहीए छीए. वली सरस आहरना गृद्धि, रसना लोलपी, पेहेले दीवसे तो घेरे वहोरे, अने बीजे दीवसे तेज श्रावकना हाटे तथा रस्तामां घृत, सुखडी प्रमुख रोजनां वोहोरी ले छे; पण सूत्रमां तो नित्य-पिंड लेवो ठामठाम वर्ज्यो छे. हवे तमे नित्य नित्य केम वोहोरो छो ? वली बीजा केटलाक संघाडामां नित्य धोवण ले छे, ते बाबतमां तमे कहोछो के, सूत्रमां वर्ज्यो ते एक पण बोल सेवे तेमां साधपणुं नथी. त्यारे तमे नित्यने नित्य सरस आहार घर, हाट अने रस्तामां वोहोरो छो तेथी तमारुं साधपणुं शी रीते रहेशे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " सूत्रमां तो एक घरनो नित्य लेवो वर्ज्यो छे, पण पेहेले दीन जे घेरें वोहोर्युं ते धणीनुं बीजे दीवसे हाटमां तथा रस्तामां वोहोरवुं क्यां वर्ज्युं छे ? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! कोइ मेला तथा फोजमां पाल (तंबु)मां रसोइ करे छे. कोइ दुकानमां, कोइ छत्रीमां तथा कोइ वृक्ष हेठे रसोइ करे छे. इत्यादिक ठेकाणाने घर तो न कहेवाय. हवे तमे कहोछो के, एक घरनुं नित्य वोहोवुं वर्ज्युं छे. त्यारे तमे पूर्वोक्त पाल प्रमुखमां नित्य केम नथी वोहोता ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " घरनुं कांइ कारण नथी. ग्रहस्थ रहे तेज घर छे. जे जग्याए पेहेले दीवसे वोहोर्युं होय ते जग्याए बीजे दीवसे वोहरवुं नही; पण घरनुं क्षेत्र अने हाट तथा रस्तानुं क्षेत्र जुदां छे.

तेथी अमे पेहेले दीवसे घेरे वोहोरीए छीए अने बीजे दीवसे हाट र स्तामां वोहोरीए छीए, केमके क्षेत्र जुदां छे तेथी अटकाव नही. एक क्षेत्रमां नित्य वोहोवुं नही " एम कुयुक्ति लगावे छे तेनो उत्तर हे दे वानुप्रीय ! एक बारणामां बीजे घेरे बीजे दीवसे वोहोरो के नही ? जो रसोडा, परसाल तथा ओरडाने बीजु क्षेत्र गणता हो तो, जे रसोडा प्रमुखमां पेहेले दीवसे वोहोर्युं होय, तेज रसोडा प्रमुखमा बीजे दीवसे बीजानो कटोरदान पड्यो होय अने असनादिक वोहोरावे तो वोहोरो के नही ते कहो

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " पहेले दीवसे वोहोर्युं होय ते धणीनुं बीजे दीवसे न वोहोरवुं, पण बीजा धणीनो माल होय तो तेज जग्यामां वोहोरवानो अटकाव नहीं ? " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! तमे केहेता हता के, एक क्षेत्रमा नित्यनुं न वोहोरवुं, त्यारे ए एक क्षेत्रमा केम वोहोरो ? तमे ए धणीनो माल टाल्यो के क्षेत्र टाल्युं ? तमे पेट भरा इना वास्ते अणसमजु लोकोने घरनु, हाटनुं अने रस्तानुं क्षेत्र जुदुं - जुदु केम कहो छो ? वली घरनुं अने हाटनु क्षेत्र जुदुं जुदुं कहीने नित्य वोहोरे छे, तेने पुछवुं के, बेतालीस दोषना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव कह्या अने नित्य-पिंडना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव कह्या हवे द्रव्यथकी तो चार आहार एक धणीना नित्य न लेवा, क्षेत्र थकी क्यांय न लेवा, कालथकी नित्यना नित्य न लेवा, अने भावथकी उपयोग सहित त्रण करण अने त्रण योगे करीने लेवा हवे तमे पेट भराइ (वोहोरवा) ने वास्ते घरनु अने हाटनुं क्षेत्र जुदु केम स्थापो छो? कारण के नित्य एक घरनु वोहोरे तो दसवैकालीक सूत्रना त्रीजा अध्ययनमां त्रीआ अणाचारमा अणाचारी कह्यो छे, अने तेज सूत्रना छठा अध्ययनमां अढार बोल माहेलो एक पण बोल सेवे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे तेमा तेरमा बोलमा नित्य एक घरना चार आहार ले तो तेने साधप णाथी भ्रष्ट कह्यो छे वली नषित सूत्रमा नित्यना चार आहार वोहोरे तो चोमासी प्रायश्चित कह्यु छे इत्यादिक सूत्रमां ठाम ठाम नित्यनुं

वोहोरवुं वर्ज्युं छे. एटलां सूत्रनां वचन उत्थापीने आहारना प्रद्धिथका घरनुं, हाटनुं अने रस्तानुं क्षेत्र जुदुं स्थापीने नित्य एक घरनुं वोहोरवानी स्थापना करीने अनंत संसार केम वधारो छो? वली पूर्वोक्त आरजा साथे विहार करवो, तेमनुं आहार पाणी लेवुं तथा तेमनो संस्तव परिचय राखवो, ए तो व्यवहारज अशुद्ध छे; अने जिनमार्गमां तो शुद्ध व्यवहारनेज प्रधान कह्यो छे.

दाखलाः—भरत माहाराजे केवलज्ञान उपन्या पछी वेश पालटयो, ते वेश पालट्या विना केवलज्ञान कांइ पाछुं तो नहोतुं जातुं; पण व्यवहार राखवा माटे ग्रहस्थीनो वेश उतार्यो. वली जुगलीयामां भाइ भगनी भोग करीने मरीने देवलोकमां जाय छे. ते काम आज कोइ करे तो व्यवहार मार्ग लोप्या माटे माहा अनार्य केहेवाय. बाकी जीव हिंसा तो सरखीज छे. वली श्री वीरप्रभु जाणता हता के, बे साधु मरशे, तोपण व्यवहार राखवा माटे तेमने बोलवा वर्ज्या. वली श्रावक आरंभमां (परिग्रहमां) तो बेठा छे, पण लोक लज्या माटे चोराइ वस्तु न लेवी कही. वली माहावीर भगवान जाणता हता के, मारा रोगनी थिती पाकी छे तेथी जाशे, तोपण व्यवहार राखवा माटे तथा बीजा साधुने औषधनो उपगार जणावा माटे औषध लीधुं छे. वली साधु मेह वरसतां स्थानकमां आवे, पण एकली स्त्रीना घेरे उभा रहे नही. मार्गमां चालतां जो बीजो मार्ग न होय तो हरिकायनुं पाप करे, पण लोकीक व्यवहार अशुद्ध तेथी स्त्रीनो संघटो न करे. वली राजा प्रमुखना मर्णनी असझाय कही, ते पण लोक विरुद्ध माटे. वली केवली रात दीन सरखुं देखे छे, पण व्यवहार राखवा माटे रातना न चाले. वली स्नेह बंधण थाय तेना भयथी मास चोमास उपरान्त साधु न रहे, पण जो स्नेह बंधणहार होय तो रेहेनेमिने राजेमतीनो एक क्षणमां स्नेह थइ गयो; पण व्यवहार राखवा माटे अधिको रहे तो व्यवहार भंग थाय अने मोटुं पाप लागे. वली सतुकारमां सो जणाने अर्थे निपन्यो तेमांथी शेर आहार न ले; पण घरमां दस जणाने निमित्ते आहार निपन्यो ते-

नीनी मे समयनी स्थितीनी बधाय बाकी सर्व पुन्य पापना बंध छे, तेथी विहारादिक करी इरियावही पण पडिकमता न नदी उतरीने पण केवली इरियावही पडिकमे नही तथा पण करे नही, कारण के केवलीने सर्व कार्य करता पापनो तेथी केवली नदी उतरे तोपण तेमने पाप लागे नही, अने साधुने तो विहारादिक करता पण पाप लागे छे अने सात कर्म छे, तेथी इरियावही पडिकमे छे, तथा गोचरीमां पण पाछा आवीने इरियावहि पडिकमे छे तेमज नदी उतरतां साधुने पाप लागे छे, तेथी नदी उतरीने इरियावही पडिकमे छे चोवीसथो करे छे वली नदी उतरता सरागी छद्मस्थ साधुने छ तथा आठ कर्मनो बंध थाय छे ज्ञानावरणी आदिक पाप कर्म नदी रतां बधाय छे, तेथी नदी उतरवामा आज्ञा धर्म नथी वली जो नदी मामां आज्ञा धर्म होय तो वारवार नदी उतरे तो शबलो ते केम केहत? शास्त्र सूत्र दसाश्रुतस्कंध अध्ययन बोजे ते

अंतोमासस्स तउ उदगलेवे करेमाणे सवले ॥ सस्स तउ माइठाणो करेमाणो सवले ॥ अंतो ७१ दस उदग लेवे करेमाणो सवले ॥ अंतोसवछरस्स दसमा इठाणाई करेमाणोसवले

अर्थ —अं० एक मासमां त० त्रण वार उ० नदी उतरे तो लेप (जे नाभि प्रमाण जल अवगाहे ते) करे तो स० सबलो लागे अं० एक मासमां छल वचन बोले, प्रतित उपजावे, यथा णने कहे के "ए आहार तो छे पण तमने खपे अथवा न खपे" पोते खावानी बुद्धे कहे, ए मायानु स्थानक एवां त० त्रण मा० स्थानक क० करतो थको जेवो करण योग होय तेवो स० सबलो लागे अ० एक स० वर्षमा द० दस वार नदी उतरे तो उ० लेप (नाभि प्रमाणे जल अवगाहे ते) लगाडतो थको स० सबलो,

लागे. अं० एक वर्षमां द० दस माया-स्थानक शेवे तो स०
दोष लागे.

भावार्थः—आ पाठमां एम कह्युं छे के, एक महीनामां त्रण अने एक वर्षमां दस नदी उलंघे तो सबलो (जबरो) दोष लागे. ह जुओ ! नदी उतर्यामां धर्म होय तो महीनामां त्रण नदी उतर्याथी वमो सबलो दोष केम कहे ? अने वर्षमां दस नदी उतरे तो १ए सबलो दोष केम कहे ? जो धर्म होय तो वारंवार हर्ष करीने उतरवुं जे

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, महीनामां त्रण नदी उतरे तो दोष कह्यो, पण बे नदी उतरे तेमां तो धर्म छे. तेनो उत्तर. हे मीथ ! महीनामां बे नदी उतर्यामां आज्ञा धर्म क्यां कह्यो छे ? भगवंते तो ज्ञानादिकनी जतनाने अर्थे भाषा टालीने कल्प छे. जेम श्रावकने साधु कहे के, अणगल पाणी पीवामां तथा त्रसजीवने हण्यामां मोटुं पाप छे. हवे गलेलुं पाणी पीवुं बाकी रह्युं तथा स्थावरनी हींसा करवी बाकी रही तेमां साधुनो आज्ञा-धर्म नथी. अण छाण्युं पाणी पीवा करतां छाण्युं पाणी पीवामां अने त्रस-कायनी हिंसा करतां पांच स्थावरनी हिंसामां पाप थोडुं छे, पण धर्म तो नथी; तेम महीनामां त्रण नदी उलंघे तो तथा वर्षमां दस नदी उलंघे तो सबलो दोष लागे कह्युं. हवे महीनामां बे नदी अने वर्षमां नव नदी उलंघवी बाकी रही. तेमां त्रण नदी उतर्यामां सबलो दोष छे, तेनी अपेक्षाये बे नदी उतरवामां नबलो दोष छे. ए भगवंते तो भाषा टालीने कल्पनी विधि उलखावी छे; पण एम तो नथी कह्युं के " हे साधु ! महीनामां तुं बे नदी उलंघजे. मारी आज्ञा छे. " वली कदाच महीनामां त्रण नदी उलंघवी वर्जी, तेथी तमे बे नदी उलंघवामां आज्ञा धर्म मानता हो तो, दसमा सबला दोषमां एक महीनामां त्रण माया स्थानक (कपटाइ) सेवे तो सबलो दोष लागे कह्युं छे; तथा वर्ष दीवसमां दस माया-स्थानक सेवे तो वीसमो सबलो दोष लाग कह्युं छे.

हवे तमारी केहेणीने लेखे तो महीनामा बे नदी उतर्यामां आज्ञा

नीनी बे समयनी स्थितीनी बधाय बाकी सर्व पुन्य पापना बंध छे, तेथी विहारादिक करी इरियावही पण पडिकमता न नदी उतरीने पण केवली इरियावही पडिक्कमे नही तथा पण करे नही, कारण के केवलीने सर्व कार्य करतां पापनो तेथी केवली नदी उतरे तोपण तेमने पाप लागे नही, अने साधुने तो विहारादिक करता पण पाप लागे छे अने सात कर्म छे, तेथी इरियावही पडिक्कमे छे, तथा गोचरीमां पण । पाछा आवीने इरियावहि पडिक्कमे छे तेमज नदी उतरता साधुने पाप लागे छे, तेथी नदी उतरीने इरियावही पडिक्कमे छे चोवीसथो करे छे वली नदी उतरता सरागी छद्मस्थ साधुने छ तथा आठ कर्मनो बंध थाय छे ज्ञानावरणी आदिक पाप कर्म नदी रता बंधाय छे, तेथी नदी उतरवामां आज्ञा धर्म नथी वली जो नदी वामां आज्ञा धर्म होय तो वारवार नदी उतरे तो शबलो दोष लागे ते केम केहस? शास्त्र सूत्र दसाश्रुतस्कंध अध्ययन बोजे ते

अंतोमासस्स तउ उदगलेवे करेमाणे सवले ॥ सस्स तउ माइठाणे करेमाणे सवले ॥ अंतो ७९ दश उदग लेवे करेमाणे सवले ॥ अंतोसवछरस्स दसमा इठाणाई करेमाणेसवले

अर्थ —अं० एक मासमां स० त्रण वार उ० नदी उतरे तो, लेप (जे नाभि प्रमाण जल अवगाहे ते) करे तो स० सबलो लागे अं० एक मासमां छल वचन बोले, प्रतित उपजावे, यथा पाने कहे के "ए आहार तो छे पण तमने सदे अथवा न सदे" पोते खावानी बुध्धे कहे, ए मायानु स्थानक एवा त० त्रण मा० स्थानक क० करतो थको जेवो करण योग होय तेवो स० सबलो लागे अं० एक स० वर्षमां द० दस वार नदी उतरे तो उ० लेप (नाभि प्रमाणे जल अवगाहे ते) लगाडतो थको, स० सबलो,

लागे. अं० एक वर्षमां द० दस माया-स्थानक शेवे तो स०
दोष लागे.

ज्ञावार्थः—आ पाठमां एम कह्युं छे के, एक महीनामां त्रण अने एक वर्षमां दस नदी उलंघे तो सबलो (जबरो) दोष लागे. जुओ ! नदी उतर्यामां धर्म होय तो महीनामां त्रण नदी उतर्याथी वमो सबलो दोष केम कहे ? अने वर्षमां दस नदी उतरे तो १ए सबलो दोष केम कहे ? जो धर्म होय तो वारंवार हर्ष करीने उतरवुं जे

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, महीनामां त्रण नदी उतरे तो दोष कह्यो, पण बे नदी उतरे तेमां तो धर्म छे. तेनो उत्तर. हे मीय ! महीनामां बे नदी उतर्यामां आज्ञा धर्म क्यां कह्यो छे ? ज्ञगवंते तो ज्ञानादिकनी जतनाने अर्थे ज्ञाषा टालीने कल्प छे. जेम श्रावकने साधु कहे के, अणगल पाणी पीवामां तथा त्रसजी वने हणवामां मोटुं पाप छे. हवे गलेलुं पाणी पीवुं बाकी रह्युं तथा स्थावरनी हींसा करवी बाकी रही तेमां साधुनो आज्ञा-धर्म नथी. अण छाणयुं पाणी पीवा करतां छाणयुं पाणी पीवामां अने त्रस-कायनी हिंसा करतां पांच स्थावरनी हिंसामां पाप थोडुं छे, पण धर्म तो नथी. तेम महीनामां त्रण नदी उलंघे तो तथा वर्षमां दस नदी उलंघे सबलो दोष लागे कह्युं. हवे महीनामां बे नदी अने वर्षमां नव नदी उलंघवी बाकी रही. तेमां त्रण नदी उतर्यामां सबलो दोष छे, तेनी अपेक्षाये बे नदी उतरवामां नबलो दोष छे. ए ज्ञगवंते तो ज्ञाषा टाली- ने कल्पनी विधि उलखावी छे; पण एम तो नथी कह्युं के "हे साधु ! महीनामां तुं बे नदी उलंघजे. मारी आज्ञा छे." वली कदाच मही- नामां त्रण नदी उलंघवी वर्जी, तेथी तमे बे नदी उलंघवामां आज्ञा धर्म मानता हो तो, दसमा सबला दोषमां एक महीनामां त्रण माया स्थानक (कपटाइ) सेवे तो सबलो दोष लागे कह्युं छे; तथा वर्ष दीवसमां दस माया-स्थानक सेवे तो वीसमो सबलो दोष लाग कह्युं छे.

हवे तमारी केहेणीने लेखे तो महीनामां बे नदी उतर्यामां आज्ञा

धर्म छे त्यारे तो मही नामा बे माया-स्थानक तथा वर्षमा नव माया स्थानक सेवे तेमां पण आज्ञा धर्म हशे जेम मही नामा त्रण नदी उलंघे तो नवमो सबलो दोष लागे कह्यु छे, तेमज मही नामां त्रण माया कपटाइनां स्थानक सेवे तो दसमो सबलो दोष लागे कह्यु छे हवे जेम एक मही नामा बेवार माया-कपटाइ सेव्यामा पाप छे, तेम मही नामां बेवार नदी उतर्यामां पण पापज छे, पण छद्मस्थ साधुने ज्ञाना दिकनी जतना माटे नदी उतरवानो दोष लाग्या विना रहे नही अने मोहकर्मने उदये कपटाइ पण लाग्या विना रहे नही तेथी भगवते वा रंवार नदी उतरवानो अने माया कपटाइनो भय उपजाववाने कह्यु छे के " हे साधु ! तु मही नामां त्रण नदी उतरीश तो अने मही नामां त्रणवार माया-कपटाइ करीश तो सबलो दोष लागशे ' एम भाषा टाळीने कह्यु छे, पण " मही नामा बेवार तु नदी उल्लघजे अने बेवार माया कपटाइ करजे " एम नथी कह्यु वळी पांच मोटी नदी मही नामां बे त्रणवार उतरवी न कल्पे तेनी शास्त्र सूत्र बृहत्कल्प उ देशो चोथे ते पाठ —

नोकप्पइ निग्गथाणवा २ इमाउ पचमहण्णवाउ महाणइउ उद्दिठाउ गणियाउ विजियाउ अंतोमासस्स दुक्खुत्तोवा तिक्खुत्तोवा उतरित्तएवा सतरित्तएवा तजहा-गगा १ जमुणा २ सरउ ३ कोसिया ४ मही ५. अहपुण एवं जाणेजा एरावइ कुणालाए जथ चकिया एगपाय जलेकिच्चा एगपाय थलेकिच्चा एव से कप्पइ अंतोमासस्स दुक्खुत्तोवा तिक्खुत्तोवा उत्तरित्तएवा सतरित्तएवा जउ नो एव चकिया एव से नो कप्पइ अंतोमासस्स दुक्खुत्तोवा तिक्खुत्तोवा उत्तरित्तएवा सतरित्तएवा ॥

अर्थ—नो० न कल्पे नि० साधु साधवीने इ० ए आगळ कहेशे

ते. पं० पांच माहानदी (प्रधान-विस्तीर्ण देखाती गणी दीधी. ते घणुं पाणी उतरतां दोहीलुं एवी मोहोटी नदीउ) दुर्भिक्षादि कारणे उ० उतरवी पडे ते, एक मास मध्ये एकवार पण सेहेजना विहारे न संभवे. अं० एक मासमां दु० बे वार ति० त्रण वार उ० उतरवी के (कुंभादिके अथवा नावादिके) सं० वारंवार उतरवी न कल्पे तं० ते कहे छेः-गं० गंगा१, ज० जमुना २, स० सरजु ३, को० कोसिया ४, अने म० मही नदी ५ न कल्पे. अ० अथ हवे वली ए० एम जाणे के जो ए० ऐरावती नामा नदी कु० कुणाला नगरी समिपे ज० ज्यां च० शक्तिवंत अर्ध जंघा प्रमाणे ए० एक पग ज० पाणीमां अने बीजो ए० एक पग थ० स्थल भुमिकाए मुंकीने ए० एम करीने चाले से० तेने क० कल्पे अं० एक मासमां दु० बे वार ति० त्रण वार उ० उतरवी, सं० वारंवार उतरवी. ज० ज्यां नो० एवी रीते न उतराय त्यां ए० एम से० तेने न कल्पे अं० एक मासमां दु० बे वार ति० त्रण वार उ० उतरवी, सं० वारंवार उतरवी.

भावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, गंगा १, जमना २, सरजु ३, कोसिया ४ अने मही ५, ए पांच मोटी नदी महीनामां बे तरण वार उतरवी कल्पे नही; अने ऐरावती नदी, जे कुणाला नगरीनी समीपे वहे छे, तेमां एक पग जलमां अने एक पग थलमां धरीने उतरवा समर्थ होय तो महीनामां बे त्रण वार उतरवी कल्पे, अने समर्थ न होय तो उतरवी न कल्पे एम कह्युं; पण भगवंते एम नथी कह्युं के "हे साधु! तुं एक वार तो उतरजे मारी आज्ञा छे." पण भगवंते तो भाषा टालीने कह्युं छे. तमे नदी उतरवामां भगवंतनी आज्ञा अने धर्म कया न्याये कहो छो ते कहो.

तेवारे तेरांपंथी कहे छे के " कुणाला नगरीनी समीपे ऐरावती नदी वहे छे, तेमां एक पग जलमां अने एक पग थलमां देइ उतरवा समर्थ होय तो, महीनामां बे त्रण वार नदी उतरवी कल्पे छे. ते कल्पइ कहो अने भावे आज्ञा कहो. कल्प अने आज्ञा एकज छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! कल्प अने आज्ञा एक होय त्यारे तो परिव्राजक संन्या-

सोओने, ज्नगवते काचु पाणी पीवा माटे, हाथ, पग, चाटुरी प्रमुख धोवा माटे अने स्नानने अरथे सेवु कल्पे कह्युं छे शास्त्र सूत्र गण वाइजीमा ते पाठ.—

तेसिणं परिवायगाणं णोकप्पइ अगलुइएणवा चंदणेणवा कुंकुमेणवा गाय अणुलिंपित्तए णणत्थ एगाए गंगामट्टियाए तेसिणं परिवायगाणं कप्पइ मागहपत्थए जलस्स पडिगाहित्तए सेविय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे सेविय थिमिउदए नोचेवणं कदमोदए सेविय बहुपसण्णे नोचेवणं अबहुपसण्णे सेविय परिपूए नोचेवणं अपरिपूए सेवियणं दीणे नोचेवणं अदिण्णे सेविय पिवित्तए नोचेवणं हत्थ पाय, चरुचम पक्खालणट्ठयाए सिणाइत्तएवा. तेसिणं परिवायगाणं कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स पडिगाहित्तए सेविय वहमाणे णोचेवणं अवहमाणे जाव नोचेवणं अदिण्णे सेविय हत्थ पाय चरुचम्मस पक्खालणट्ठाए नोचेवणं पिवित्तएवा तेसिणं परिवायगाणं कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिगाहित्तए सेविय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे जाव नोचेवणं अदिण्णे सेविय सिणाइत्तए नोचवणं हत्थपाय चरुचम्मस पक्खालणट्ठाए पिवित्तएवा तेसिणं परिवायगा एयारुवेणं विहारेणं विहरमाणा बहुइं वासाइं परियाइं पाउणन्ति ॥

अर्थ—से० ते परिव्राजकने णो० न कल्पे अ० अगर च० सुखड प्रमुख कु० कंकु केशर प्रमुख गा० शरीरे अ० विलेपन करवा, ण० पण एटलु विशेष ए० एक ग० गोपीचंदन कल्पे ते० ते परिव्राजकने क० कल्पे मा० मागध देश संबंधी पायामा माय एटलु पीवाने अर्थे

ज० पाणी नदीमांथी प० लेवुं; से० तेपण व० वहेतुं थकुं, नो० नही निश्चे अ० अणवहेतुं; से० तेपण थि० कादव रहित, नो० नही निश्चे कं० कादववाळुं; से० तेपण ब० बहु निर्मळुं, नो० नहि निश्चे अ० मॉ-हॉळुं; से० तेपण प० गळेळुं, नो० नही निश्चे अ० अणगल; से० तेपण दी० दीधेळुं, नो० नही निश्चे अ० अणदीधुं; से० तेपण पि० पोवाने अर्थे, नो० नही निश्चे ह० हाथ पग चं० चरु हांमी, थाली, चाटुली प० धोवाने अर्थे; तेम सि० स्नानने अर्थे पण न कल्पे. ते० ते परिव्राजकने क० कल्पे मा० मागध देशनुं अ० अरधुं आढा माप जेटलुं ज० पाणी प० लेवुं; से० तेपण व० वेहेतुं, पण णो० नही नीश्चे अ० अणवेहेतुं; जा० यावत् नो० नही निश्चे अ० अणदीधुं; से० तेपण ह० हाथ, पग च० थाली, चाटुली, चाटुवो सं० धोवाने अर्थे कल्पे; पण नो० निश्चे पीवुं न कल्पे. ते० ते परिव्राजकने क० कल्पे मा० मागध देशनुं आ० एक आढा प्रमाण ज० पाणी प० लेवुं; से० तेपण व० वेहेतुं, नो० नही निश्चे अ० अणवेहेतुं; जा० यावत् पूर्वे कह्युं तेम, नो० नहि नीश्चे अ० अणदीधुं; से० तेपण सि० स्नानने अर्थे, नो० नही निश्चे ह० हाथ पग च० चाटुली थाली प० धोवाने तथा पि० पोवाने न कल्पे. ते० ते परी-व्राजक ए० एवी रीते वि० विचरता थका ब० घणां वा० वर्ष सुधी प० परीव्राजकनी पा० प्रवर्जा पाले.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां कह्युं छे के, ते परिव्राजकोने मागधदेश संबंधी पाथामां माय तेटलुं पाणी पीवाने लेवुं कल्पे. ते पण वेहेतुं थकुं, कादव रहित, निर्मळुं, गळेलुं अने दातारनुं दीधेलुं ले. एज रीते एवुंज पाणी मगधदेशनुं अर्ध आढुं प्रमाण, हाथ, पग, प्रमुख धोवाने लेवुं कल्पे कह्युं. वळी एज रीते एवुंज पाणी मगध देशनुं एक आढा प्रमाण स्नानना अर्थे लेवुं कल्पे कह्युं. हवे जुओ ! जो कदाग्रह अने आज्ञा एक होय तो आ पाठमां [illegible] सन्यासीने काचुं पाणी पीवुं, काचा पाणीथी स्नान करवुं तथा हाथ पग धोवा कदर्शे कह्यु छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो संन्यासीने काचुं पाणी पीवानी आज्ञा

साधुपणु नथी " एवी वज्र भाषा बोले छे, पण पोताने तो पुरुं अधारु छे, केमके सूत्रमा तो ग्रहस्थीना घेरे बेसवु वर्ज्यु छे, अने पोते तो ग्रहस्थीना घेरे बेसवु स्थापे छे, तेमज ग्रहस्थीना घेरे बेसीने व्याख्यान वांचे छे वली सूत्रमा आर्या साथे विहार करवो वर्ज्यो छे, अने पोते आर्या साथे विहार करे छे, आर्यानो लाव्यो आहार पाणी लेवो वर्ज्यो छे, अने पोते आर्यानो लाव्यो आहार पाणी ले छे, अने आर्या पासे सुखे समाधे वेयावच करावबी वर्जी छे, अने पोते आर्या पासे वेयावच सुखे समाधे करावे छे तेमज आर्या पासे पुंजवु पडेवतुं प्रमुख अनेक कामो करावे छे वली रोगान वासी राखवो सूत्रमा क्याय कह्यु नथी, छता पोते वासी राखे छे अने राखवानी स्थापना करे छे तेमज पेहेले दीवसे जेना घरथी वोहोर्युं होय तेना पासेथी बीजे दीवसे हाटे अथवा रस्तामा वोहोरवानी स्थापना करे छे एटलां काम करे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे, अने ए एटलां काम सूत्रमा कह्यां ते सिवाय करे छे

वली सूत्र उत्तराध्ययनना २६मा अध्ययनमां रातना पेहेला पोहोरमा सझाय करवी कही छे, बीजा पोहोरमा ध्यान करवुं कह्यु छे, त्रीजा पोहोरमां निंद्रा मुकवी कही छे अने चोथा पोहोरमा सझाय करवी कही छे, पण एक पोहोरथी वधती निंद्रा लेवी बत्रीस सूत्रमा क्यांय कह्यु नथी हवे तमे पोहोर सीवाय निंद्रा ल्यो छो ते तमारी केहेणीना लेखे तमारामा साधपणु छे के नही ? वली एज अध्ययनमां कह्युं छे के, कोइ आवे नही तेमज कोइ देखे नही एवी जग्याए साधुए मात्रादिक परठवु, पण उघाडी रीते लोकोना देखता मात्रादिक परठवु बत्रीस सूत्रमा क्याय कह्यु नथी हवे तमे उघाडी रीते लोकोना देखतां मात्रादिक परठवो छो ते तमारी केहेणीना लेखे तमारामां साधपणु छे के नही ?

वली आपमतलवी कहेछे के "धजारमा श्रावके सामायक करी होय ते सामायक छतां घेरे जइने साधुने वोहोरावे तो अटकाव नही, धर्म छे, तथा घरमाज सामायकमा बेठा छे तेने बीजा छुटा द्रव्यनी आज्ञा लीधा विना वोहोरावबु कल्पे छे " एम कहे छे, पण भगवते

तो श्रावकने सामायकमां सर्व द्रव्य वोसराव्या कह्या छे. तेथी सामायकमां आहार वस्त्रादिक पोताना नथी एम कह्युं छे. तेनो शास्त्र सूत्र भगवती शतक आठमे उद्देशे पांचमें. ते पाठः—

रायगिहे जाव एवंवयासी आजीवियाणं भंते! थेरे भगवंते एवंवयासी समणोवासगस्सणं भंते! सामाइकडस्स समणोवासए अछमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा सेणं भंते! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं सभंडं अणुगवेसइ परायगंभंडं अणुगवेसइ? गो० ! सभंडं अणुगवेसइ नोपरायगं भंडं अणुगवेसइ. तस्सणं भंते! तेहिं सीलवय गुणवय वेरमण पचक्काण पोसहोववासेहिं सभंडे अभंडे भवइ? हंता भवइ. सेकेण खाइणं अठेणं भंते! एवंवुच्चइ सभंडं अणुगवेसइ नोपरायगंभंडं अणुगवेसइ? गो० ! तस्सणं एवं भवइ णोमेहिरणे नोमेसुवणे णोमेकंसे णोमेदुसे णोमे विपुल धण कणग रयण मणिमोत्तिय संष सिल प्पवाल रत्त रयण मादिए संत्त सारसावद्येवे ममतभावपुणसे अपरिणाए भवइ. सेतेणठेणं गो० ! एवं वुच्चइ सभंडं अणुगवेसइ नोपरायगं भंडं अणुगवेसइ. ॥

अर्थः—रा० राजग्रही नगरीने विषे श्री गौतमस्वामी भगवंत श्री माहावीर स्वामी प्रत्ये जा० यावत् ए० एम कहे—आ० गौशालाना शिष्य भं० हे पुजय! थे० स्थिवर साधु समीपे, श्रावकनी अपेक्षाए ए० एम कह्युं. ते श्री गोतमस्वामीए भगवंत श्री माहावीर देव प्रत्ये पुछयुं. क्यां सुधी के ज्यां सुधी श्रावकना पचखाणना ७२५ भांगा कह्या त्यां सुधी पुछयुं, पण पछी एम कह्युं के, एवा गोशालाना श्रावक न होय. हवे श्रमणोपासक केवा होय ते जाणवा देखाडे छे. स० श्रमणो पा-

सक भं० हे भगवान ! सा० कृत सामायकना एटले पेहेलु शिक्षाव्रत स० सामायकरुप आदरीने अ० बेठा छे तेनुं के० कोइ पुरुष भं० भांड (वस्त्रादिक वस्तु) प्रत्ये अ० लइ जाय ते सामायक पुरु थया पछी जोतो थको भं० हे पुज्य ! शु स० ते भं० (भांड) पोतानी वस्तु अ० ग वेषे के० प० पारकी वस्तु अ० जुए ? इहां पुछणाहारनो अभिप्राय स्वकिय ते कहीये जे स्वसबंधी होय परंतु सामायक पडिवज्यां परि ग्रहना पचखाण भणी पोतानु न होय एटला माटेज प्रश्न कर्यो इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! स० पोतानो भांड (वस्तु) सामायक पुरुं थया पछी अ० गवेषे, पण नो० परायो भांड गवेषे नही (त्या अ कार्ण जे ममत्व भाव छे, ते छेदाणो नथी अने सामायक छता गवेषणा करवी ए अयुक्त) त० तेने भं० हे भगवान ! ते० ते विविक्षित करीने जेम क्षयोपसम ग्रह्या तेणे करीने सी० अणुव्रत गु० गुणव्रत, रागादिकनी व्रत्ति प० नवकारसी पोरसी सहित पो० पर्वदीनने विषे पोषध सहित उपवास तेणे करी (इहा सीलादिकने ग्रहणे पण सावद्यजोग वृत्ति करी विरमण शब्द करी प्रयोजन तेनेज परिग्रहने अपरिग्रहपणु निमित्त करी) स० पोतानी वस्तु अ० अपहरया थकी पारकी भं० थाय ? इति प्रश्न उत्तर हं० हा गौतम ! थाय छे से० ते कये हेते खा० (ख्याति) प्रसिद्ध अ० कये अर्थे (शे प्रयोजने) भं० हे भगवान ! ए० एम कह्यु स० पोतानो भंड उपगर्णं अ० गवेषे नो० परायो भांड उप गर्णं न गवेषे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गौतम ! त० तेने ए० एवुं मन प्रणाम भं० होय ते कहे छे हिरण्यादि परीग्रहने द्रौविध त्रीविध पणे पचख्या छे वास्ते णो० नथी मारुं हि० रुपु नो० सु० नथी मारुं सुवर्ण नो० क० नथी मारु कासु णो० कु० नथी मारु (कुप्य) वस्त्र णो० नथी मारु वि० विस्तीर्ण ध० धन गणिमादिक अथवा गवादिक क० कनक, रत्न, कर्केतनादिक म० मणी चन्द्रकान्तादिक मो० मोती शुक्तिकादिकना उपज्यां स० शंख दक्षिणावर्त ए पेठ प्रसिद्ध सि० सिल, प्रवाल, विद्रुम अथवा स्फटीक शीला प्रवाली र० राता रत्न पद्मरागादिक, ए सर्व सं० से

विद्यमान सा० प्रधान साव० स्वापेत्य द्रव्य मम० इत्यादि परिग्रहादिकने विषे मन, वचन, कायानु, करवुं कराववुं ते पचख्या नही ते ममत्व भाव रह्यो. वली ते हिरण्यादि विषयने विषे जे ममता प्रणाम पु० वली अ० अपरिज्ञात प्रत्याख्यान थाय ते अनुमतीना अप्रत्याख्यानपणाथी ममत्व भावने अनुरुपपणाथी. से० तेने अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम कह्युं स० स्वकीय पोतानु भं० भंड, उपगर्ण अ० जुवे छे पण नो० नथी पारकुं भंड उपगर्ण जोता. ॥

भावार्थ—हवे जुउ ! आ पाठमां एम कह्युं छे के, श्रावक सामायक पोसामां बेठो छे. ते वेला धन, भंड उपगर्ण चोर लइ जाय, ते सामायक पोसो पाल्या पछी गवेषणा करे तो पोतानुं भंड गवेषतो कहीये के पारकुं भंड गवेषतो कहीये ? तेनो उत्तर भगवंते कह्यो के हे गौतम ! पोतानो भंड गवेषतो कहीये. तेवारे फरी गौतमस्वामीए पुछ्युं के श्रावक सामायक पोषामां बेठो ते वखते भंड, उपगर्ण, धन, पोतानां नथी त्यारे सामायक पाल्या पछी पातानां भंडनी गवेषणा करतो केम कहो ? तेना जवाबमां भगवंते कह्युं के, हे गौतम ! सामायक पोषामां बेठो ते वारे सोनुं, रुपुं, वस्त्र आदि सर्व द्रव्य वोसराव्या छे तेथी ते श्रावकना नथी; पण सामायक पाल्या पछी भंडनो सोज (प्रेम बंध) तुटयो नथी ते माटे सामायक पाल्या पछी तेने पोतानुं भंड गवेषतो कहीए. हवे आ पाठमां कह्युं के, सामायकमां बेठो त्यारे श्रावके सोनु रुपुं प्रमुख सर्व द्रव्य वोसराव्या छे के मारु सोनुं नथी, मारुं रुपुं नथी, तेमज मारुं अन्नवस्त्रादि कांइपण नथी. हवे जुउ ! ज्यारे पोतानुं नथी त्यारे सामायकमां साधुने शी रीते वोहोरावे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " सामायकमां सावद्यजोगना (संसारनां काम करवाना) त्याग छे; पण साधुजीने वोहोरावदुं तेतो नवमा व्रतमां बारमुं व्रत निपजे. तेतो निर्वद्य धर्मनुं काम घणुं चोख्खुं छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सामायकमां पोतानी पासे वस्त्र होय ते साधुजीने वोहोरावीने नवमा व्रतमां बारमु व्रत निपजावे तेतो घणुं

चोख्खु काम छे, पण जे द्रव्य सामायकमा वोसरावी दीधा ते पोताना नथी ते द्रव्य शी रीते वोहोरावी शकाय ? वली तमे कह्यु के, सामायकमां संसारने हेते सावद्य जोगना त्याग छे, पण धर्म करवाना तो त्याग नथी ए लेखे तो त्रीजा व्रतथी बारमु व्रत अधिकु छे हवे तमारे लेखे तो संसारने हेते सावद्यजोगना चोरीना त्याग छे, ते साधुजोने पराधु वस्त्रादिक चोरीने वोहोरावे तो अटकाव नही, केमके एतो तमारा केहेवा प्रमाणे निर्वद्य धर्मनुं काम छे पण हे देवानुप्रीय ! जिन मार्गमां तो पेहेला नियम कर्यो होय ते राखीने पछी अधिको धर्म करवो जेम गुरुदेव आव्याथी उठी उभा थवु अने विनय भक्ति करवी तेमां मोटो लाभ (निर्जरानु कारण) छे, पण शिष्ये पेहेलां काउसग्ग करी पहोर पर्यंत लगी काया वोसरावी होय ते गुरुदेवनो विनय न करे, तेम सामायकमां जे द्रव्य वोसराव्या छे ते पोताना नथी, ते माटे सामायकमा साधुने वोहोरावयु कल्पे नही तमे प्रभुनां वचन उथापीने पोताना मतलबने अर्थे सामायकमां वोहोराववु केम स्थापो छो ?

वली तेरापंथी कहे छे के, " पुन्य पाप बंने बुरां छे अने छांडवा योग्य छे, केमके धन्ना अणगारनां पुन्य वध्यां तेथी ते अनुत्तर विमाने गया पण मुक्तिए जइ शक्या नही " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! चार कर्म तो एकान्त अशुभ छे तेनां नाम ज्ञानावर्णी १, दर्शनावर्णी २, मोहनी ३ अने अंतराय ४ ए चार कर्म (घातिक) बलीष्ट छे तेनो क्षयोपशम न थयो तेथी मुक्तिए जइ न शक्या तमे 'पुन्य वध्याथी मुक्तिए जइ न शक्या ' एवी कुयुक्ति केम लगाडो छो ? पुन्य तो मुक्ति मार्गनुं एकान्त घातक नथी केमके श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां कह्यु छे के, क्षयोपशम भावे जीव धर्म पामे, अने ते क्षयोपशम भावने " चउण्हं घाइकम्माइण " एवो उघाडो पाठ कह्यो छे चार एकान्त अशुभ कर्मना क्षयोपशमथी चार चारीत्र अने चार ज्ञान मध्यम घणा बोल पामे, अने ए चार अशुभ कर्मना क्षयथी क्षायक भावे अनंत चतुष्टय पामे, पण पुन्य प्रकृतिने घातक नथी कही वली कर्म ग्रंथमां घाति

अघाति प्रकृति अधिकारे वीस प्रकृति सर्व-घाती कही. ते सर्व-घाती कर्मनी कही, पण शुभ कर्म पुन्य प्रकृति मोक्ष जाताने अटकावे एम कह्युं नथी. वली पुन्यने मोक्ष मार्गनो घातक बत्रीस सूत्रमां क्यांय कह्युं नथी. तमे 'धना अणगारानां पुन्य वध्यां तेथी मुक्ति न गया' एवां अछतां वचन बोलीने अनंत संसार केम वधारो छो? वली पुन्य भोगववानी वांछा तो साधु श्रावकने करवीज नही. पण मोक्ष मार्गना साहज माटे पुन्यनी वांछा श्रावकने करता कह्या छे. शास्त्र सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन आठमे, अरणीक श्रावकना अधिकारे. जे वखते देवताए अरणीक श्रावकने कह्युं के "तमे केवा छो? 'धम्मकामिया' धर्मना कामी 'पुन्नकामिया' पुन्यना कामी 'सग्गकामिया' स्वर्गना कामी 'मोक्खकामिया' मोक्षना कामी, ए चार. एमज धर्मना इच्छक, पुन्यना इच्छक, स्वर्गना इच्छक, अने मोक्षना इच्छक. एमज धर्मादि चार बोलना (पीवासा) लालसावंत छो." ए रीते बार बोल कह्या.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के एतो मिथ्यात्वी देवताए एम वखाण्या छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! मिथ्यात्वी देवताए एवा कह्या ते शुं? जुठा कह्या के साचा कह्या? वली 'पुनकामीया पुनकंखिया पुनपिवासा' ए बोल मिथ्यात्वी देवताए कह्या तेम 'धम्मकामिया धम्मकंखिया धम्मपिवासिया' ए पण मिथ्यात्वीएज कह्या छे. जो साचा कह्या तो सर्व साचा; अने जुठा कह्या तो सर्व जुठा. एम उपाशकदशाना बीजा अध्ययनमां कामदेव श्रावकने देवताए तथा आठमा अध्ययनमां महासतकजी श्रावकने रेवतीए पण एवाज बार बोल कह्या छे. वली गर्भना जीवने प्रभुए पोते वखाण्यो, त्यां पण बार बोल एमज छे. तेनो शास्त्र सूत्र भगवती शतक पेहेले उद्देशे सातमे. ते पाठः—

जीवेणं भंते! गब्भगएसमाणे देवलोएसुउववजेज्जा? गो०! अत्थेगइएउववजेजा अत्थेगइएनोउववजेजा. सेकेणट्ठेणं? गो०! सेणं सण्णिपंचंदिए सव्वाहिं पज्जत्तिहिं पज्ज-

त्तए तहारुवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अंतिए एग-
मवि आयरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म तर्ज भ-
वति संवेग जायसड्ढे तिव्वधम्माणुरागरत्ते सेणजीवे धम्म-
कामए पुण्णकामए सग्गकामए मोस्ककामए धम्मकखिए
पुस्सकखिए सग्गकखिए मोखकखिए धम्मपिवासिय पु-
ण्णपिवासिए सग्गपिवासिए मोस्कपिवासिए तच्चित्ते तम्मणे
तल्लेसे तदज्झवसिए तव्वज्झवसिए तदठोवउत्ते तदपियकरणे
तब्भावणाभाविए एयसिणं अंतर कालंकरेज्जा देवलो-
एसु उववज्जइ से तेणठेण ॥

अर्थः—जी० जीव भ० हे भगवान ! ग० गर्भमां रह्यो थको मरीने दे० देवलोकमां देवतापणे उपजे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गोतम ! अ०उ० कोइक जीव गर्भमांथी मरीने देवलोकने विषे देवतापणे उपजे अने अ०नो० कोइक जीव न उपजे से० ते के० शा कारणे हे भगवान ! एम कह्यु ? कोइक जीव उपजे अने कोइक जीव न उपजे ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे गोतम ! से० ते जीव स० सन्नी पचेंद्रि स० सघली प० पर्याप्ते करी प० पर्याप्त भाव प्रत्ये पाम्यो थको त० तथा विधि उचित योग स० श्रमण तपस्वीनी अथवा मा० मा हणो मा हणो एवुं कहे ते साधु अथवा स्थुल प्राणातिपातथी निवृत थयो ते श्रावक, तेना अ० समिप थकी ए० कोइ एक पण आ० आर्य भलुं ध० धर्मनु सु० भलु वचन सो० सांभलीने नि० निश्चे हैये धरीने त० ते वार पछी भ० थाय स० भवभये करी जा० धर्मादिक करवानी श्रद्धा उपजे ति० तिव्र धर्मने रागे रंगायु छे मन जेनु, से० ते जीव ध० (श्रुत चारित्र रुप) धर्म, तेना विषे वान्छा छे जेनी, पु० तेना फलभुत शुभ कर्मनो वांछक, स० स्वर्ग देवलोकनो वांछक, मो० समस्त कर्म क्षयरुप मोक्षनो वांछक, भ० धर्मनी आसक्ति छे जेनी, पु० पुन्यनी आसक्ति छे जेनी, स० स्व-

र्गनी आसक्ति छे जेनी, मो० मोक्षनी आसक्ति छे जेनी, ध० धर्मने विषे अतृप्तिवंत, पु० पुन्यने विषे अतृप्तिवंत, से० स्वर्गने विषे अतृप्तीवंत, मो० मोक्षने विषे अतृप्तिवंत एटला पदार्थने विषे त० चित्त छे जेनुं, त० तेने विषे मन छे जेनुं, त० तेने विषे लेश्या छे जेनी, त० तेज अधवसाय छे जेना, त० ते अर्थे करी उपयुक्त (सहित) छे, त० तेज अर्थने विषे दीधी छे इंद्रियो जेणे, त० तेज भावनाए करी भाविक छे, ए० एवा अं० अंतरने विषे एटले एवी भावना भावतो थको जीव का० काल करीने मरण पामे तो ते जीव दे० देवलोकने विषे देवतापणे उ० उपजे. से० ते माटे हे गौतम ! एम कह्युं. (कोइ जीव उपजे अने कोइ जीव न उपजे.)

भावार्थ—हवे जुओ ! आ पाठमां तो प्रभुए श्रीमुखथी गौतमने कह्युं के, गर्भ मांहेलो कोइक जीव सन्नी पंचेंद्रिनो पर्यातो तथारुप श्रमणनी (साधुनी) अथवा माहण केहेतां श्रावकनी पासेथी कोइ एक (आर्य भलुं) धर्मनुं वचन सांभलीने हैये धारीने वैराग्य पाम्यो तथा तिव्र धर्मने रागे रंगाणो ते जीव धर्मनो वंछणहार, धर्म करवानी, पुन्य करवानी, स्वर्गनी अने मोक्षनी वंछा करीने तथा धर्मादिक चार बोलना आसक्तपणे करीने, तेमज ए चार बोलना अतृप्तपणे करीने, एज चार बोलने विषे चित्त छे जेनुं, मन छे जेनुं तथा लेश्या अध्यवसाय छे जेना, तेज अर्थे करी सहित छे, तेज अर्थने विषे इंद्रि दीधी छे जेणे, ए चार बोलनी भावना भावतो थको एवा अध्यवसाये वर्ततां थकां काल करीने देवतामां जाय. हवे जुओ ! भगवंते तो धर्म अने पुन्य ए बे प्रकारनी करणी कही तथा स्वर्ग अने मोक्ष ए बे तेनां फल कह्यां. पुन्यनी करणीथी देवतामां जाय अने धर्मनी करणीथी मोक्षमां जाय. हवे जुओ ! पुन्य धर्मनी वांछा करेत्तो देवतामां जाय कह्युं. ए न्याये पुन्यने आदरवा योग्य कहीये. वली चितमुनीए ब्रह्मदत्त चक्रवर्तीने सूत्र उत्तराध्ययनना तेरमा अध्ययननी एकवीसमी गाथामां कह्युं के, हे राजा ! ए जीवितव्य तो असास्वतुं छे, अने धर्म अने पुन्यना अणकरवावाला मनुष्य मरणने मुखे

पर्होंच्या थका (सिवावसे) पस्ताशे इहां पण पुण्यने सरणांगत (करवा योग्य) वखाण्यु वळी पुण्यने धर्मनु कारण कह्युं शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन १८ मानी गाथा ३४ मीः—

एयपुन्नपय सोच्चा अत्थ धम्मोव सोहिय,
भरहोवि भारहवासं चिच्चाकामाइ पवइए ॥ १८ ॥

अर्थ —प० ए ज्ञान सहित आशीष छे ए चारीत्र धर्म ते केवो छे, के कायरने आचरता दोहीलो अने तम सरखा शूराने सोहीलो ए ज्ञान सहित क्रिया धारीने भरतादिके ससार मुक्यो पु० पुन्य पवित्र पदने एटले शुद्ध जिनमतने सो० सांभळीने अवधारीने ससार मुक्यो अ० अर्थ ते मुक्तिरुप फल ध० धर्म ते जिनशासनरुप ज्ञानदर्शन सहित चारीत्र धर्म, ए थने करी भ० भरत चक्रवर्ती भा० भरत क्षेत्रने विषे चि० छांडीने, वळी का० काम भोग छांडीने प० सजमवत थया ॥३४॥

भावार्थः—हवे जुओ! आ उपरनी गाथामा पण चारीत्रने पुन्य पद कह्यो बोलाव्यु वळी अतगडमा श्री कृष्णे कह्युं के, "धन्य, पुन्य, कृतार्थ जालीकुमार प्रमुखने, के जेणे चारीत्र लीधु हुं अधन्य, अ पुन्य, के चारीत्र मुजने न आवे" हवे जुओ! देवानुप्रीय! चारित्र पण पुण्यवंत जीवनेज आवतु कह्यु छे वळी प्रश्न व्याकरणमां प्रथम सवरद्वारे "चउगय पखदे काहिंति अणत्ते अकय पुन्नेजे नसुणति ध म्मसो उणजे पमायति" कह्यु के, चारगतिमा कोण फरे? अकृत्य पुन्या, पुन्य रहित, अभागिया अने पापीआ जीव होय ते (रुले) भमे, अने सभागीया, भाग्यवत अने पुन्यवत जीव चार गतिमा न भमे वळी सू यगडाग सूत्रना बीजा श्रुतस्कधना बीजा अध्ययनमा कह्यु के, हिंसामां धर्म कहे ते श्रमण-माहण चार गतिमां "कलकली भागीणा भविसइ" अभागीया थाशे एम कह्यु, अने जे श्रमण माहण शुद्ध धर्म कहे ते चार गतीमा "कलकली भागीणो न भविसइ" अभागीया नही थाय एम कह्युं, वळी उत्तराध्ययनना १६ मा अध्ययनमां कह्यु के "ता

सिद्धा महा नागा लोयगोय पयडिया " शुभ कर्म सिद्धे खपाव्यां छे तोपण तेमने माहाभाग्यवंत कही बोलाव्या. वली उत्तराध्ययनना २३ मा अध्ययनमां केशीस्वामी गौतम स्वामीने कहे छे के " पुछामिते महा-भागा " हुं पुछुंछुं हे भागवान ! तथा केशीए गौतम प्रत्ये पुछयुं के, तमे शंसारसमुद्र शीरीते तरोछो ? तेवारे गौतमे कह्युं के, शरीररुपी नावाए करीने संसारसमुद्र तरुंछुं. ते सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २३ मानी गाथा. ७३ मीः—

सरीर माहु नावत्ति, जीवो वुच्चइ नाविउ;
संसारो अणवोवुत्तो, जंतरंति महेसिणो ॥ ७३ ॥

अर्थः—स० शरीररुप मा० कहे तीर्थंकर ना० नावा. जी० जीव ते वु० कहीये ना० नावानो खेडणहार. सं० संसाररुपी अ० समुद्र वु० कह्यो. जं० जे संसार त० तरे छे ते म० मोक्षना गवेषणहार एवा मोटा साधु ॥ ७३ ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! इहां कह्युं छे के, शरीररुपी नावाए करीने संसारसमुद्र तरुं छुं. ए शरीररुपी नावा ते पुन्य-प्रकृति छे. हवे ते संसारसमुद्रमां बेठो त्यां सुधी मुक्ति–साधक जीवने सरीररुपी नावा आदरवा योग्य के छांडवा योग्य ? ए शरीर तथा पंचेंद्रिनी जाती तथा त्रसनो दसको, मनुष्यनी आनुपूर्वी, मनुष्यनुं आयुष्य, सातावेदनी, उंच गोत्र इत्यादिक पुन्यनी प्रकृति छे. ए पुन्यनी प्रकृति विना मुक्ति न मले, अटकाइ रहे. हवे ते मले एटले मुक्ति-गामी जीवने ए प्रकृति साधक छे के बाधक छे ? ए व्यवहारमां आदरवा योग्य छे के छांडवा योग्य छे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, उत्तराध्ययननी छेल्ली गाथामां पुन्य पाप बंनेने खपाववां कह्यां छे. ते पाठः—

दुविहं खविउणय पुणपावं निरंगणे सवउ विप्पमुक्के, तरित्ता
समुद्दंच महाभवोहं समुद्दपालो अपूणागमंगए तिवेमि. ॥

अर्थः—दु० बेहु प्रकारे शुभ अने अशुभ प्रकृति ख० खपावीने

पु० पुन्य पापनी नि० गति रहीत सलेशी अवस्थाए कायादिकना व्यापार रहित अयोगी केवली थइने स० सर्व कर्मथी वि० मुकाणो त० तरीने स० समुद्रनीपेरे स० संसार समुद्ररुप मोटो अहवा स० समुद्र पाल मुनी अ० वली संसार मांही आवे नही एवी गतिए ग० पहोंच्या

भावार्थः—हवे आ पाठनु नाम लइ तेरापंथी, पुन्य पापने छांडवा योग्य कहे छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! इहा छांडवा जोग्य तो नथी कह्यु छांडवा जोग्य कह्यु होय तो हिलवुं निंदवु जोइए, पण पुन्यने हिल्यु निंद्यु नथी तेथी छांडवा जोग्य कह्यु न कहवाय, पण इहां तो एम कह्यु छे के, एणे समये चौदमे गुणठाणे आव्या तेवारे पुन्य पाप बंने खपावीने (छांडीने) समुद्रपालजी मुक्तिए गया एतो ठीकज छे सिद्ध दशा पामे तेवारे तो सर्व कार्य सिद्ध थया पछी पुन्यनु शुं काम छे ? हवे अहिया पुन्य पाप छुटया तेम तप चारीत्र पण छुटयां तेथी शु क्षायिक अवस्थामां तप संजम पण छांडवा योग्य केहेवाशे ? जेम तप संजम छांडवा योग्य नथी तेम पुन्य पण छांडवा योग्य नथी वली साधु प्रिछत लेछे तेवारे तो कारणथकी अने बंध थकी पाप मुंके छे, पण पुन्य मुंकता नथी पाप प्रकृतिनु कारण सेवीने पायश्चित लेछे तेम पुन्य प्रकृतिनु कारण सेवीने पायश्चित नथी लेता वली पुन्य पाप बंने शुभ अशुभ पुद्गल छे, पण साधिक भाविकमां फेर छे, केमके सूत्रमां ठाम ठाम उच्चार पासवण प्रमुख अशुभ पुद्गलनी तो असज्झाय कही, पण छाण, पाणी, फुल, फल प्रमुखनी असज्झाय नथी कही एटलो फेर पुद्गल दशामा पण छे वली गौतमस्वामीने तथा हरकेशी सरीखा जीवने ज्ञान, दर्शन, चारीत्र अने तपना गुण तो सरीखा छे, मुक्ति पण बन्ने पामे, पण पुन्याइमां फेर तेथी गौतम स्वामीने गणधर पद आव्युं, पण हरीकेशी सरीखाने न आवे वली दसाश्रुत स्कधना चोथा अध्ययनमां, आठ आचार्यनी संपदा कही ए आचार्य पदवीनी शाभकमांही रुपसंपदा कही ते पुन्यथकी मले अने आचार्य

त्रण नवथी अधिका न करे. शास्त्र सूत्र नगवती शतक पांचमे उद्देशे सातमे. ते आचार्यपणुं पुन्यथी मले.

हवे जुर्ज ! पुन्य ते मुक्तिने नजीक करे छे के वेगली करे छे ? वली तीर्थंकर–पद्वी, गणधर–पद्वी, चक्रवर्ती–पद्वी, बलदेव, वासुदेव, जंघाचार्य अने पुलाक लब्धी, एमांनी एके लब्धी स्त्री न पामे. हवे जुर्ज ! ए संजम संवरमां फेर के पुन्यमां फेर ? वली पृथ्वी, पाणी अने वनस्पति, ए त्रण उत्तम जातना स्थावर छे. एमांथी नीकल्या मुक्ति जाता कह्या, अने एमां देवता पण उपजता कह्या; पण तेउ वायुना अपुन्या जीवमां देवता पण आवीने न उपजे, अने एमांथी नीकल्या अपुन्या जीव मुक्तिमां पण न जाय. एमज विकलेंद्रिना नीकल्या अपुन्या जीव मुक्तिमां न जाय. वली मोक्षगामि जीव मुक्तिमार्गने विषे दृढ रह्या तेमने देवताए तथा मनुष्ये धन्य, पुन्य, कृतार्थ कहीने बोलाव्या छे. वली कामदेव तथा कुंडकोलियादि श्रावकोने श्री माहावीरदेवे धन्य, पुन्य, कृतार्थ कहीने बोलाव्या छे. वास्ते पुन्य प्रसंशनिक छे. जेटलुं पुन्य नडुं तेटलो मुक्तिनो मार्ग वेगलो जाणवो.

वली अहीयां एम जाणवुं जे, उदयनाव अने क्षयोपशमनाव ए बंनेमां जे मुक्तिमार्गने साधक अवस्था छे ते उदयनावनी अने क्षयोपशमनावनी ए बंनेनी अवस्था आदरवा योग्य छे; अने बाधिक अवस्था छे ते बंनेनी छांमवा योग्य छे. जेम उदयनावमां विषय कषाय आदी घणा बोल बाधक छे; अने तेज उदयनावमां प्रभुनुं दर्शन तथा आहार विहार करवो ए करणी साधिक पण छे. हवे क्षयोपशमनावमां त्रण अज्ञान अने १ए पाप-सूत्र तथा अन्य दरसनी गोशाला जमाली प्रमुखनां कृत्य, चार वेद, चौद विद्या इत्यादिक सर्वनुं नणवुं, ते मुक्तिमार्गनो बाधिक छे; अने तेज क्षयोपशमनावमां श्री जिन–प्रणित द्वादशांगीनुं नणवुं तथा चारित्रनुं पालवुं इत्यादिक साधिक छे. ते माटे जे जे कारणे मुक्ति नजीक थाय ते ते कारण आदरवा योग्य छे अने जे जे कारणे मुक्ति वेगली थाय ते ते कारण छांमवा योग्य छे. वली नगवंते

लोकोत्तर पक्षमा त्रण वाणीयानी उपमा दीधी, त्यां पण पुण्यने लाभ कह्यो छे जेणे पुण्य उपार्ज्युं तेणे लाभ उपार्ज्यो शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ७ मानी गाथा १४ मी तथा १५ मी —

जहाय तिन्नि वणिया, मुलघितुण निग्गया
एगोत्थ लहए लाभ, एगो मुलेण आगउ ॥ १४ ॥
एगउ मुलपि हारिता, आगउ तउ वाणिउ,
ववहारे उवमा एसा एव धम्मे वियाणिह ॥ १५ ॥

अर्थ —ज० जेम ति० त्रण व० वाणीया मु० मुलगी पुजी रासी घि० लइने प्रदेशे व्यापार भणी नीकल्या ए० ए त्रणमाथी एक ल० लाभ लइ आव्यो ए० एक मु० मुलगी रासी पुंजी लइने घेरे आव्यो ए० एक मु० मुलगी रासी पण हा० जुगटे रमता हारीने धन खाइने आ० आव्यो त० ज्यां पीता घर हतुं त्यां व० वाणीयो व्यापारी व० व्यापारने विषे उ० ए उपमाए ए० एणी पेरे ध० धर्मने विषे वि० जाणवु

भावार्थः—हवे जुवो ! कोइ एक (व्यापारीने) व्यवहारीआने त्रण पुत्र हता तेणे पोताना पुत्रोना भाग्यनी परिक्षा जोवा निमित्ते अकेकाने सहस्र सहस्र मोहोरो आपी देशान्तरे मोकल्या अने कह्युं के, हे पुत्रो ! तमोने द्रव्य आप्युं छे तेनाथी व्यापार करी लाभ उपार्जी वेहेला आवजो तेवारे त्रणे साहुकारना पुत्रो जुदा जुदा देशान्तरे गया तेमां वडो पुत्र चाकर नफर राखी भाव्या गयाने तृप्त करी व्यापारमां घणु धन कमाणो बीजे पुत्रे विचार्युं के, मारा पीता पासे घणुं धन छे माटे मुलगी पुजी सामील राखु एम चींतवी जे कांइ लाभ उपार्जे ते गीत वाजींत्र, खादिम स्वादिम चारे प्रकारे भोगवे, अने त्रीजे पुत्रे मनमां चिंतव्युं जे, मारा पीता वृद्ध थया छे अने धनना भोगवनावाला तो अमेज छीए ते भ्रमने प्रदेशे काढ्या अने द्रव्य तो सात पेढी सुधी खाय तोपण खुटे तेम नथी, माटे धन मेलववा सारु कष्ट शामाटे भोगववुं ? एम धारी मुलगी पुजी पोताए आपी हती ते सर्व खाधी

हवे केटलाक दीवसे त्रणे पुत्र देशान्तरथी घेरे आव्या त्यारे पीताए त्रणे पुत्रनी वात जाणी. तेमां जेणे मुलगी पुंजी खाधी तेने घरनो हाली कर्यो अने कह्युं के, घरनुं कामकाज करो ने पेट भरो. जेणे मुलगी पुंजी राखी तेने द्रव्यथी व्यापार करवामां लगाड्यो; अने जेणे लाभ उपार्ज्यो तेने सर्व घरनो भार आपी मालीक स्थाप्यो. तेम धर्मने विषे पण जाणवुं. ते एम—इहां मुलगी राशी ते मनुष्यनो भव. हवे एकेक जीव तो धर्म क्रिया करी ज्यां असंख्याता सुख छे एवी देवतानी गति पामे. बीजा जेणे मुलगी पुंजी साबीत राखी ए द्रष्टान्ते एवी कमाइ करे, तेथी ते मरीने फरी मनुष्यनो अवतार पामे. हवे त्रीजी जातना जे मुलगी रासी खाय ते, मुलगी रासी गमावे ते देवालीयो थाय तेनी माफक घणा माठां कर्म करीने नर्कथी तिर्यंच अने तिर्यंचथी निगोदमां जइ पडे. एम व्यवहार राशीथी गयो तेनो संबंध सूत्रमां छे. ते आगल कहे छे. ते पाठः—

माणुसत्तं भवे मुलं, लाभो देवगइ भवे;
मुल छेएण जीवाणं, नरगं तिरिक्खत्तणं धुवं ॥ १६ ॥
दुहओ गइ बालस्स, आवइ वह मुलिया;
देवत्तं माणुसत्तंवा, जं जिए लोलुया सढे ॥ १७ ॥

अर्थः—मा० मनुष्यपणुं ते भ० थाय मु० मुलगी राशी. ला० देवगती थाय ते लाभ जाणवो. मु० (मनुष्यपणानो) मुलगी रासीनो छे० हानी थावे करी ज० जीवने न० नर्क ति० तिर्यंचपणुं धु० निश्चे थाय. दु० बे प्रकारनी ग० गति (नर्क अने तिर्यंच) बा० अज्ञानीने थाय. आ० ते अज्ञानीने बे गति आवे—नर्क अने तिर्यंच. ते गति केवी छे ? व० वध बंधादिक वध मुलिका छे अथवा छेदनभेदनादिक बंध मुलिका. नर्क तिर्यंचमां एवी पदवी पामे. दे० देवतापणुं ने मा० मनुष्यपणुं जि० जे हार्यो लो० मांसादिकना लोलुपपणे ते देवतापणुं हार्यो पछी नारकी थयो. स० धुर्तपणे मायाए करी मनुष्यपणुं हार्यो पछी तिर्यंचपणे थयो.

भावार्थ —हवे जुओ ! ए पाठमा एम कह्युं के, जे मनुष्य मरीने मनुष्य थाय तेणे मुखगी पुजी राखी, नर्क तिर्यंचमां जाय तेणे मुखगी पुंजी खोइ कर्मनुं देवालु काढयु, अने देवतामा जाय तेणे व्याज उपा र्ज्यो ए जुओ ! देवगति उदयभावमां छे ते वली त्यारे वीतरागे तेने व्याजना पक्षमा गण्यो ए उदयभाव पण उपदेश आश्रीने शुरु कह्यो वली हरकेशी मुनीने ब्राह्मणोए कह्युं के, हे मुनी ! ताहारु शरीर सर्व पुजनिक छे शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन बारमे ते पाठ गाथा ३३,३४

अत्थंच धम्मच वियाणमाणा, तुब्भे नविकुप्पह भूइपन्ना,
तुब्भंतु पावे सरण उवेमो, समागया सव जणेण अम्हे ॥
अच्चेमुत्ते महाभागा, नत्ते किंचि न अच्चिमो,
भुजाहि सालिमं कुर, नाणा वंजण संजुय ॥

अर्थः—हवे विप्रो बोल्या-अ० शास्त्रना अर्थ अने ध० यतिना धर्मने वि० विशेष जाणताथका तु० तमे न० न कोपो भू० जीवदयानी तमारी प्रतिज्ञा छे तु० तमारा पा० पगनु स० सरण उ० करवाने स० सर्व एकठा मल्या छीए ज० परिवार सहित अ० अमे अ० पुजवा योग्य तमारुं सर्व अग म० हे माहाभाग ! न० नथी ताहारुं किं० काइ पण न० अणपुजनिक पगनी रज आदि भु० भोगवो सा० सालीमय कुर० कुर ना० अनेक विधनां व० (व्यजन) साख स० सहित ॥ ३४ ॥

भावार्थ —हवे जुओ ! उपरना पाठमा ब्राह्मणोए हरिकेशी मुनी राजने कह्यु के, हे माहा भाग्यवत पुन्यवत माहामुनि ! तमारुं शरीर सर्व अर्चनिक छे, लगार मात्र अणअर्चनिक नथी अहीयां उदयभाव आ श्रीत शरीरने अर्चनिक कह्यु त्यारे ए साधिक छे के बाधिक छे ते वो चारजो वली नंदी अने अनुजोगद्वार सूत्र मध्ये भावथकी लोकोत्तर पदना अधिकारे कह्यु छे, प्रभु केवा छे ? "तिलोक महिय निरखिय" प्रभुना सामु सुर नर जुए छे तेने आनदरस प्रमाद आंसु चाले छे ए शरीर निरखणा उदयभाव वर्तना छे, पण भक्तिभावना प्रेर्या जोइने

इर्षे छे. वली भगवती सूत्रना १५ मा शतकमां प्रभुए साधुने वर्ज्या के, गोशाला साथे कोइ बोलशो नही. एवामां बे साधु धर्माचार्यनी भक्तिभावना प्रेर्याथका बोल्या. हवे ए साधुने आज्ञा विराधी तेनो दोष लाग्यो के भक्तिभावे उपदेश दीधो तथा भक्तिरागे बोल्या तेथी गुण थयो? हवे ए बोल्या ते करणी उदयभावनी छे, पण ते साधिक छे के बाधिक छे ते जुओ.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "सूत्र उतराध्ययनना दसमा अध्ययनमां 'एवं भवइ संसारे संसरइ सुहा सुहेहिं कम्मेहिं.' एम कह्युं. एटले जीव भम्यो ते शुभाशुभ कर्मे करीने भम्यो. ए जुओ! पुन्य पाप बेउथी रुलतो कह्यो. त्यारे पुन्य मुक्तिनो साधक कयांथी?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! एम शाने भुलो छो? एमां तो प्रभुए खरुं कह्युं छे के, जे जीव संसारमां रुले छे ते शुभाशुभ कर्मथी रुले छे. ए केहेवानो परमार्थ एवो छे के, शुभाशुभनो जोडो छे. ते शुभाशुभ समय मात्र छुटतो नथी, सहवृत्ति छे ते माटे शुभाशुभ भेला कह्या; पण शुभथी धर्म नजीक छे अने अशुभथी धर्म नजीक नथी. जो अशुभ कर्मनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो जीव मुलथी धर्म न पामे, अने शुभकर्मनी उतकृष्टी स्थिति बांधे तो जीव धर्म सुखे पामे, एम सूत्रमां ठाम ठाम कह्युं छे. वली सूयगडांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां तेर क्रिया कही. तेमां तेरमी क्रिया इरियावहि शातावेदनी पुन्य प्रकृतिनी. ते इरियावहि क्रियाने अधर्म पक्षमां कही; सावद्य कही; पण एम कह्युं के, ए इरियावहि-क्रियामां वरतीने सेवीने गया काले अनंता मुक्ति गया, वर्तमानकाले महाविदेह क्षेत्र प्रमुखमां संख्याता जाय छे अने आगमीए काले अनंता मुक्ति जाशे. ए जुओ! इरियावहि क्रिया पुन्य प्रकृति छे ते सेवीने मुक्तिमां जावुं कह्युं. ए इरियावह क्रिया लाग्या पछी जीव निश्चे मोक्षगामि थइ चुक्यो. ए जुओ! एकलुं पुन्य इरियावहि क्रियामांज छे. ते आव्या पछी अने बांध्या पछी निश्चे मोक्ष जावुंज कह्युं; अने शुभाशुभथी रुलवुं कह्युं. ते सहचारी

जोके छे तेथी पुन्य भोगववानी वांछा अने मोहकर्म अशुभ तेथी पुन्य भोगववामां प्ररूपणु छे ते आश्री रुडवु कह्यु छे, पण मुक्तिमार्गना सा जने अर्थ त्रसनो वसको, पंचेन्द्रि जात अने उदारिक शरीर, ए पुन्यरुपी नावा ससार समुद्रमां बेठा त्यां सुधी संसाररुपी समुद्र तरवा माटे आदरवा योग्य छे, अने समुद्र तरीने तीरे आव्या पछी नावा छोडवा लायक छे जेम वस्त्रमां मेल छे त्या सुधी तो साबु आदरवा लायक छे, पण मेल तुटया पछी साबु छोडवा लायक छे, तेम जीवने अशुभ कर्म रुपी मेल छे त्यां सुधी तो पुन्य (शुभकर्म) रुपी साबु आदरवा लायक छे, अने अशुभकर्म तुटया पछी पुन्य (शुभकर्म) रुपी साबु छोडीने मुक्ति जाय छे इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे व्यवहार नयमा पुन्य आदरवा लायक छे तमे मतना खोंचे एटला सूत्रनां वचन उथापीने पुन्य एकान्त छांडवा योग्य केम स्थापोछो ?

वली तेरापथी (जो ग्रहस्थी सूत्र भणशे तथा वांचशे तेथी वीतरागना वचनथी वाकेफ थइ जशे तो पछी अमारो कपटाइ चालशे नही एम धारी) खोटो मत स्थापवाने अर्थे कहे छे के “ ग्रहस्थीए सूत्र भणवु नही जो साधु ग्रहस्थीने सूत्र भणावे तो नषित सूत्रमा चोमासी प्रायश्चित आवे कह्यु छे ” तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! त्यां तो “ अणउत्थिएवा गारत्थिएवा वायइवा वायइंतंवा साइज्जाइ ” एवो पाठ छे ते अन्यतिर्थी मिथ्यात्वि अने अन्यतिर्थीना ग्रहस्थी तथा मिथ्यात्वी आश्री कह्युं देखाय छे, पण श्रावकनुं तो नामज नथी वली शिष्यनी पेरे ग्रहस्थीने वांचणी देवी नही तेम अन्यतिर्थी-ग्रहस्थो पासे साधु वांचणी ले तोपण चोमासी प्रायश्चित कह्यु छे हवे तमे ग्रहस्थी पासे दुहा, उपदेसीक ढालो, सवैया, व्याकरण प्रमुख केम सीखो छो

तेवारे तेरापथी कहे छे के “ अमे तो मोंढे सीखीए छीए, पण वीनय करीने शिष्यनी पेरे पानांथी वाचणी लेता नथी ” तो हे देवा नुप्रीय ! चोथा आरामां तो सर्व ज्ञान मोंढेज शीखता हता जेम अन्य तिर्थी ग्रहस्थी कने शीखे तेम शीखवाने तो अटके नही, पण शिष्यनी

माफक विनय करीने शीखे नहि, तेम शीखवे पण नही. एवी रीते साधुने वांचणी अन्यतिर्थी-ग्रहस्थीए देवी नही; अने जो दे तो प्रायश्चित कह्युं; पण श्रावक सूत्र भणे अथवा वांचे तो श्रावकने प्रायश्चित आवे एम तो नथी कह्युं. श्रावकने सूत्र भणवुं तो ठाम ठाम सूत्रमां चाल्युं देखाय छे. प्रथम तो आवश्यक सूत्रमा श्रावकने सूत्रज्ञानना चौद अतिचार टालवा कह्या छे; अने नित्य श्रावक पडिकमणामां "सुतागमे अथागमे तदुभयागमे एवा श्री ज्ञानने विषे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय तो आलोउं:—जंवाइद्धं इत्यादिक" चौद अतिचारनो मिछामि दुक्कडं आपे छे. ए जुओ ! जो श्रावकने सूत्र भणवुं वर्ज्युं होय तो ज्ञानना चौद अतिचार केम परुप्या ? अने श्रावक नित्य पडिकमणामां केम पडिकमे ? डाह्या हो तो विचारी जोजो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "आवश्यक सूत्र (श्रावकनुं पडिकमणुं) श्रावक शिखे छे ते तेनुं सूत्र कहेवाय, तेथी तेना अतिचार पडिकमे छे; पण बीजां सूत्र श्रावकने भणवां नही." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! बार अतिचार तो पडीकमणाना कहो तोय मलशे, पण "असझाए सझाए, सझाए न सझाए" एतो दस उदारीक शरीरनां हाड, मांस लोही, विष्टा प्रमुखनी अने दस आकाशनी विजली झबके, तारा तुटे, आकाशमां गाजे, (धुंहर) झाकल पडे, इत्यादिक असझाय थकां सझाय करवी नही. हवे जो पडिकमणा-सुत्रनाज चौदे अतिचार कहोतो, साधु श्रावकना शरीरमां दुषणा (गुंबडा) होय तेमां पडुं लोही चडता होय तथा विष्टा, राध, लोही, हाड, कलेवर, पड्यां होय तो पडिकमणुं करे के नही ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "साध श्रावक पडिकमणुं तो सांज सवार बंने टंक अवश्यमेव करे. तेमां जो साधुजी बंने वखत पडिकमणुं न करे तो तेने प्रायश्चित लागे कह्युं छे, अने श्रावकने प्रायश्चित तो नही, पण पडिकमणुं करतां असझायनो अटकाव नही." हवे जुओ ! हे देवानुप्रीय ! श्रावकने वीस असझायमां सझाय करवी नही, ते

करी होय तो, अने सज्झायमां सज्झाय न करी होय तो मिछामिदुक्कड आपे छे हवे जो श्रावकने सूत्र न जणवुं एम होय तो पूर्वोक्त असज्झायमां सज्झाय करवानुं तथा सज्झायमां सज्झाय न करवानुं मिछामि डुक्कड जगवते श्रावकने केम देवु कह्युं ? ते मध्यस्थ बुद्धिथी विचारी जुठ वली श्रावकने तो सूत्र जणवु कह्यु छे तेनी शाख सूत्र समवायांगमां अग्यार अंगनी नोंध कीधी तेमां तथा उपाशक दशांगमां अंगना वर्णनमां श्रावकोना नगरना नाम, नगरनां उद्याननां नाम, जक्षना चैत्यनां नाम, श्रावकना धर्माचार्यनां नाम, श्रावकना व्रतनी मर्यादानुं वर्णन, श्रावकनी अग्यार पडिमानु वर्णन अने श्रावकने सुत्र जणवानुं वर्णन छे त्यां " सुयपरिगहा तवोवहाणा " एवो पाठ छे एटले श्रावक उपध्यान तप करीने सुत्र जणे छे, एम समवायांगमां कह्यु छे हवे जुठ ! देवानुप्रीय ! उपध्यान तप करीने श्रावकने सुत्र जणवु प्रजुए कह्यु छे तमे श्रावकने सूत्र जणवु केम उथापो गे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के ' सूयपरिगहा ' श्रावकने कह्या ते सूत्र शांजलवा आश्री कह्या छे " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! जेम उपाशक दशांगनी नोंधमां श्रावकने 'सूयपरिगहा तवोवहाणा' कह्या, तेम अंतगड तथा अनुत्तरोववाइनी नोंधमां साधुने पण ' सूयपरिगहा तवोवहाणा' कह्या छे हवे तमे कहो छो के, सूयपरिगहा श्रावकने सूत्र सांजलवा आश्री कह्या छे ए तमारी केहेणीने लेखे अंतगड तथा अनुत्तरोववाइमां साधुजीने 'सूयपरिगहा' कह्या ते पण सूत्र सांजलवा आश्री पण जणवा आश्री नहीं, एम कहेवु पडशे, पण त्यांतो साध श्रावक बनेने माटे एक सरखो पाठ छे ते सूत्र जणवा आश्रीज छे तमे मनना लोधे खोटा अर्थ केम करो छो ? वली 'सुयपरिगहा तवोवहाणा' ए पाठ तो श्रावकने सूत्र सांजलवा आश्री छे एवो अर्थ तमे करो गो, तो हमणां श्रावक सूत्र सांजले छे ते कया कया उपध्यान-तप करे छे ते कहो वीतरागदेवे तो उपध्यान तप करीने सूत्र ग्रहवु कह्यु छे, पण तमे तो तमारी केहेणीना लेखे श्री वीतरागदेवना वचन लोपीने उप

ध्यान-तप कराव्या विना सूत्र संभलावो छो. ए प्रभुनी आज्ञाना विराधक केम थाउं छो ?

वली तुंगिया नगरी प्रमुखना श्रावक आदि अनेक श्रावकोने "लद्धठा गहियठा पुछियठा इत्यादिक" पांच बोल कह्या छे. ते श्रावकोए सूत्र पाठना अर्थ लाध्या छे, ग्रह्या छे तथा अर्थ पुछी पुछीने निश्चे निर्णय कर्या छे, इत्यादिक पांच बोलना जाण श्रावकने कह्या छे. त्यारे जुओ ! सूत्र-पाठ शिख्याविना अर्थ शो रीते सुधारशे ? कया पाठनो अर्थ पुछीने निर्णय करशे ते कहो. कदाच जो नव तत्वादिकना जाण-पणा उपर पूर्वोक्त पांच बोल उतारशो तो नव तत्वना बोलचाल जीव अजीवना जाणपणानुं वर्णन तो पेहेलांज कर्युं छे, पछी समकितना गाढापणानुं वर्णन कर्युं छे, अने पछी विशेष सूत्रना जाणपणा आश्री ए पांच बोल कह्या छे. जेम भगवती सूत्रना ११ मा शतकना ११ मा उद्देशामां, माहाबल कुंवरनी माताए सिंहनुं स्वप्न दीठुं त्या स्वप्नपाठकने बोलाव्या. त्यां पहेलां तो निमित्त शास्त्रना सूत्र पाठ अने अर्थना जाण कह्या छे; अने पछी राज्य सभामां माहोमांही चोलणा करीने प्रश्न पुछीने विशेष निर्णय कर्यो, त्यां 'लद्धठा गहियठा' इत्यादिक पांच बोल कह्या छे; पण जेम ए स्वप्न-पाठक स्वप्नशास्त्रना पाठ अने अर्थ बंनेना जाण छे, तेम श्रावक पण सूत्र अने अर्थ बंनेना जाण छे. एम सूत्रपाठमां ठाम ठाम श्रावकने सूत्र भणवां कह्युं दीसे छे. तमे मतने लोधे सूत्रमां कह्यां ते वचन केम उथापो छो ?

वली तेरापंथी, नव तत्वमां पांच तत्वने तो एकान्त नये जीव कहे छे अने चारने अजीव कहे छे. ते एकान्त नय परुपे छे. तेमां एक तो जीवने जीव कहे छे अने अजीवने अजीव कहे छे. ते अजीवतो अजीव छेज. ए बे तत्व तो मुलगा छे. शेष सात तत्वमां पुन्य, पाप अने बंध, ए त्रणने अजीव कहे छे, अने आश्रव, संवर, नीर्जरा अने मोक्ष, ए चारने जीव कहे छे. हवे पुन्य, पाप अने बंध, ए त्रणने एकान्त अजीव कहे छे; पण सूत्रमा ठाम ठाम व्यवहार नय आश्री पुन्य, पाप

शुभाशुभ कर्म पुद्गल छे ते जीवने लोलीभुत छे त्यां सुधी तेने जीव कह्या छे

हवे पुन्य, पाप अने बंधने जीव कया न्याये कहीये ते कहे छे — पुन्य, पाप अने बंध, व्यवहारमा जीवनु लक्षण छे, कारण के एनो कर्ता जीव छे, ए त्रणे जीव पणे प्रणम्या छे अने ए त्रणे जीवने लोलीभुत छे ए न्याये ए त्रणने जीव कहीये (१) वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव कया न्याये कहीये —अनुयोग द्वारमा सात नयने पाया उपर उतारी छे तेमा उपली त्रण नयना धणी, जीवना उपयोगने पायो माने ए दृष्टान्ते उपली त्रण नयना धणी जीवना उपयोगने पुन्य, पाप अने बंध माने, कारणके उपयोग आत्मा छे अने आत्मा नाम जीवनुं छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए (२) वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीये —चारगति, पांचजाति इत्यादि पुन्य, पाप अने बंधनी प्रकतिओ छे ते चार गति अने पाच जाति इत्यादिमां जीव कह्या छे तेनी शाख सूत्र आवश्यक, दसवैकालीक, भगवती अने पन्नवणा आदि अनेक सूत्रमा ए न्याये पण पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये (३) वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीये — पुन्य पाप शुभाशुभ कर्म छे अने बंध पण शुभाशुभ कर्म प्रकृतिनो छे अने आठ कर्मने अने जीवने एकज कह्या छे, तेम अढार पापने अने जीवने एक कह्यो छे तेमज पाच शरीरने अने जीवने पण एकज कह्यो छे शाख सूत्र भगवती शतक सत्तरमे उद्देसे बीजे ते पाठ —

अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खइ जाव परुवेइ एवखलु पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अन्नेजीवे अण्णेजीवाया पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गह-वेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अन्नेजीवे अण्णेजीवाया उप्पत्तियाए जाव परिणामियाए वट्टमाणस्स अन्नेजीवे अण्णेजीवाया उग्गहे ईहा अवाए

धारणाए वट्टमाणे अन्नेजीवे अणेजीवाया उठाणे जाव परिक्कमे वट्टमाणस्स अन्नेजीवे अणेजीवीया नेरइयत्ते तिरिक्ख मणुस्स देवत्ते वट्टमाणस्स अणे० णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए वट्टमाणे जाव जीवाया एवं कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेसाए समदिठिए ३ एवं चक्खूदंसणे ४ आभिणीबोहियनाणे ५ मइअनाणे ३ आहारसणाए ४ एवं उरालियसरीरे ५ एवं मणजोगे ३ सागारोवउगे अणागारोवउगे वट्टमाणे अन्नेजीवे अणेजीवाया से कहमेयं भंते! एवं खलु गो०! जणंते अणउत्थिया एवमाइक्खइ जाव मिछंते एवं माहंसु अहंपुण गो० ! एवमाइक्खामि जाव परुवेमि एवं खलु पाणाइवाए जाव मिछादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेवजीवे सच्चेवजीवाया जाव अणागारोवउगे वट्टमाणस्स सच्चेवजीवे सच्चेवजीवाया. ॥

अर्थः—अ० अन्यतिर्थी भं० हे भगवान ! ए० एम कहे छे जा० यावत् ए० एम परुपे छे ए० एम ख० निश्चे पा० प्राणातिपात मु० मृषावाद आदि जा० यावत् मि० मिथ्यात्व दर्सन अने शल्ल, ए १८ पाप स्थानकने विषे व० वर्तमान देहधारक जीव अ० ते जीव अनेरो अने अणे० जीवात्मा अनेरो. पा० (प्राणातिपातादिक विषे वर्तमान सरीर दीसे पण आत्मा नथी दीसतो ते जणो) प्राणातिपात वेरमण जा० यावत् प० परिग्रह वेरमण को० क्रोध विवेक जा० यावत् मि० मिथ्यात्व दर्सन शल्ल विवेक, एने विषे व० वर्तमाननो अ० जीव अनेरो अने अणे० जीवात्मा अनेरो कहीए. उ० उत्पातनी बुद्धि जा० यावत् प० परणामनी बुद्धिने विषे व० वर्तमानने अ० अनेरो जीव अने अ० अनेरो जीवात्मा कहीए. उ० अवग्रह ई० (ईहा) विचारणा अ० निर्णय करवो धा० धारणाने विषे व० वर्तमानने अ० अनेरो जीव अ० अनेरो जीवात्मा

उ० उगाण जा० यावत् प० पराक्रम एने विषे व० वर्तमान ते अ० जीव अनेरो अने अणे० जीवात्मा अनेरो कहीए ने० नारकी ति० तिर्यंच योनिक म० मनुष्य अने दे० देवपणे व० वर्तमानने अ० अनेरो जीव अने अनेरी जीवात्मा कहीये णा० एम ज्ञानावर्णी जा० यावत् अ० अतरा यने विषे व० वर्तमानने अ० अनेरो जीव अने अनेरी जीवात्मा कहीए ए० एम क० कृष्ण लेश्या आदी जा० यावत् सु० शुक्ल-लेश्याने विषे वर्तमानने अनेरो जीव अने अनेरी जीवात्मा कहीये स० सम्यक्दृष्टि इत्यादिक ३ ए० एम चक्षु दर्शन आदि ४ केहेवा आ० एम मतिज्ञानादि ५ केहेवा म० एम मतिअज्ञानादिक ३ केहेवा आ० आहार शज्ञादिक ४ केहेवा ए० एम उ० उदारीक शरीरादि ५ केहेवा म० एम मन जोगादि ३ केहेवा सा० साकारोपयोग अ० अने अनाकारोपयोगने विषे व० वर्तमानने अ० अनेरोजीव अणे० अनेरी जीवात्मा कहीए एम अन्यतिर्थी कहे छे से० ते क० केम भ० हे भगवान ! प्रश्न उत्तर ए० एम निश्चे गो० हे गोतम ! ज० जे भणी अ० ते अन्यतिर्थी ए० एम कहे परुपे जा० यावत् मि० मिथ्या जुठु ए० तेमनु ए केहेवु अ० हुवली गो० हे गोतम ! ए० एम कहु हु जा० यावत् प० एम परुपुं हु ए० एम ख० निश्चे पा० प्राणातिपात आदि जा० यावत् मि० मिथ्यात्व दर्शन शल्यने विषे व० वर्तमाननो स० तेज जीव स० तेज जीवात्मा इत्यर्थ कथचित्त एवु जाणवु नही एने माहोमाही असत भेद ते माटे जा० यावत् अ० अनाकारोपयोगने विषे व० वर्तमान स० तेज जीव म० तेज जीवात्मा इत्यादिक सर्व केहेवु

भावार्थ —हवे जुठ ! आ पाठमा १८ पाप, १८ पापनु वेरमण, ४ बुद्धि, अवग्रहादि चार मतिज्ञानना भेद, ५ उठाणादिक, ४ गति, ८ कर्म ६ लेश्या, ३ द्रष्टी, ४ दर्शन, ५ ज्ञान, ३ अज्ञान, ४ सज्ञा, पाच शरीर, ३ जोग अने १२ उपयोग, 'सागारवउत्ता मणागारवउत्ता' ए ए६ बोलमां वर्तवावालो जीव न्यारो अने ए बोल न्यारा, एम अन्यतिर्थी कहे छे, तेने भगवते जुठा बोला कह्या, अने भगवने ए ए६ बोल अने जीवने

एकज कह्या. हवे जुउ ! १८ पापनुं वेरमण अने १२ उपयोग इत्यादिक केटलाक तो संवर, निर्जरा अने मोक्षना भेद छे; अने १८ पाप, ८ कर्म, ५ शरीर, ४ गति अने ३ जोग इत्यादिक शुभाशुभ पुद्गल जीवने लोली-भुत छे त्यां सुधी पुन्य, पाप, बंधनी प्रकृतिउ छे. ते माटे आ सर्व बोलने अने जीवने एकज कह्यो छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "१८ पाप, ८ कर्म अने ५ शरीर, ए तो जीवथी न्याराज छे; अने एने विषे वर्तवावालो जीव अने जीवनी आत्मा तेने भगवंते एक कही छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! इहां तो १८ पापनुं वेरमण, १२ उपयोग अने ३ द्रष्टी इत्यादिकमां वर्तवा-वाला जीवने अने जीवात्माने अन्यतिर्थी न्यारा कहे छे, पण भगवंते एक कह्या छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो इहां पण त्रण बोल हशे. ए बोल न्यारा, ए बोलमां वर्तवावालो जीव न्यारो, अने जीवात्मा न्यारी एम मानवुं पडशे.

तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के "१८ पापनुं वेरमण अने १२ उ-पयोग, ए तो जीवथी न्यारा नथी. ए बोल अने जीव तो एकज छे." त्यारे हे देवानुप्रीय! भगवंते तो ए६ बोलमां एक सरखो पाठ कह्यो छे. ए बोलमां वर्तवावालो तो जीव कह्यो, अने ए६ बोलने आत्मा कही ते एकज छे. अहीयां तो ए६ बोल अने जीव ए बे बोल छे. तमे मतने लोधे ए ए६ बोल न्यारा, जीव न्यारो अने जीवात्मा न्यारी, एम त्रण बोल केम करो छो? जो त्रण बोल करो तो कहो. आत्मा केने कहो छो अने वर्तवावालो जीव केने कहो छो? तमे शुं आत्मा अने जीवने जुदा जुदा मानो छो ? जो एम मानता हो तो ए तमारुं मानवुं सूत्र विरुद्ध छे. हवे अहीयां तो अन्यतिर्थीउए एकान्त निश्चे नयनो पक्ष लइने ए६ बोलने अने जीवने न्यारा कह्या. तेवारे भगवंते व्यवहार नयनो पक्ष लइने, ए-कान्त पक्ष निषेधवाने अर्थे ए६ बोल अने जीवने एक कह्या. वली राय-प्रशेणी सूत्रने विषे प्रदेशीराजाए एकान्त व्यवहार नयनो पक्ष लइने, शरीर अने जीव एक छे, ए रीते परलोकनी नास्ति स्थापी. जीव अने

शरीर ५ तस्वनु पुतळुं छे ते भेळुज उपजे छे अने भेळुज विणशे छे एवो एकान्त व्यवहार स्थाप्यो तेवारे केशीश्रमण मुनीराजे परलोकनी आस्ति देखाडवाने माटे निश्चे नयनो पक्ष लइने कह्यु के, हे प्रदेशी! तुं जुठो छे जीव न्यारो छे अने शरीर न्यारु छे जीव परलोकमां पुन्य पाप लइ जाय छे अने शरीर अहींयांज विणशे छे ए जुओ! सतरमा शतकना बीजा उद्देशामा, अन्यतिर्थीए शरीरने अने जीवने न्यारो कह्यो, तेम रायप्रशेणी सूत्रमा केशीश्रमण मुनीराजे कह्यो, अने रायप्रशेणीमां प्रदेशी राजाए जीव अने शरीरने व्यवहारनय एकान्त खेंचीने एक कह्यो तेम सतरमा सतकना बीजा उद्देशामा श्री भगवते पण जीव अने शरीरने एक कह्युं छे

हवे रायप्रशेणीमा तो प्रदेशी राजाए एकान्त व्यवहार नय स्थाप्यो तेथी केशी स्वामीए तेने निश्चे-नयनो पक्ष लइने जुठो कह्यो, अने भगवतीमा अन्यतिर्थीओए एकान्त निश्चनय स्थाप्यो तेथी भगवते व्यवहारनो पक्ष लइने तेमने जुठा बोला कह्या ए जुठा कह्या ते एकान्त नय स्थाप्यो तेथीज कह्या छे, कारण के भगवंतनो स्याद्वाद् मत छे तमे अन्यतिर्थीओनी पेरे एकान्त निश्चे-नयनो पक्ष लइने ८ कर्म, १८ पाप, ५ शरीर अने जीवने न्यारा केम कहो छो? भगवतेतो ८ कर्म, १८ पाप, ५ शरीर अने जीवने एक कह्यो छे ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए (५). वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीये - पुन्य, पाप अने बंध ए शुभाशुभ कर्म छे ते कर्मना बे भेद उदय १ अने उदय निष्पन २ तेनी शाख सूत्र अनुयोगद्वार उदय ते आठ कर्मनो उदय, अने उदय निष्पनना बे भेद जीव—उदयनिष्पन १ अने अजीव उदय निष्पन २ तेमा जीव-उदयनिष्पनना ३३ बोल, ४ गति, ६ काय, ६ लेश्या, ४ कषाय, ३ वेद, मिथ्यात्वि, अनाणि, असन्नी, आहारीक, अव्रति, सजोगी, ससारस्था, छद्मस्थ, असिद्ध अने अकेवली एव ३३ ए तेत्रीस जीव-उदयनिष्पनना बोल ए जीवज छे ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए (६)

वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः—गुरु लघु पर्यंव अठफरसी रुपी पुद्गल जीवने लोलीभुत जीवे ग्रह्या तेने, तथा अगुरु लघु पर्यंव कारमण शरीर चोफरसो पुद्गल जीवे कर्मपणे ग्रह्या तेने भाव जीव कह्या छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक बीजे उद्देशे पेहेले, खंधकजीना अधिकारमां. ते पाठः—

जेवियणंते खंदया ! जाव सअंतेजीवे अणंतेजीवे तस्सवियणं अयमठे एवं खलु जाव दव्वउणं एगेजीवे सअंते खेतउणं जीवे असंखेज्जपएसोगाढे. अछिपुणे सअंते कालउणंजीवे णकयाइनआसि निच्चे णछि पुण सेअंते भावउणंजीवे अणंताणाणपजवा अणंतादंसणपजवा अणंताचरित्तपजवा अणंतागुरुलहुयपजवा अणंताअगुरुलहुयपजवा णछिपुणसेअंते सेतं दव्वउजीवे सअंते खेत्तउ सअंते कालउ जीवे अणंते भावउ जीवे अणंते ॥

अर्थः—जे० जे पण वली खं० हे खंधक ! जा० यावत् स० जीव अंत सहित छे अथवा जीव अ० अंतरहित पण छे त० तेनो अ० एवो अर्थ जाणवो. ए० एम निश्चे जा० यावत् द० द्रव्यथकी ए० एक जीव स० अंत सहित छे खे० क्षेत्रथकी जी० जीव अ० अशंख्याता प्रदेशात्मक छे, अशंख्याता प्रदेश अवगाह्या छे. अ० छे वली ते स० अंत सहित का० कालथी जीव ण० नथी कदी थयो (एतावत्ता अतित काले हतो, वर्तमान काले छे, अने अनागत काले रहेशे,) नि० नित्य छे. ए० नथी पु० वली से० तेनो अंत (अनंत छे). भा० भावथकी जीव अ० णा० अनंता ज्ञानना पर्याय अ०दं० अनंता दर्शनना पर्याय अ० च० अनंता चारित्रना पर्याय अ० अनंता गुरु लघु पर्याय ते उदारिक शरीर आश्रीने अ० अ० अनंता अगुरु-लघु पर्याय ते कारमण द्रव्य अथवा जीव स्वरुप आश्रीने. ण० वली तेनो अंत नथी (अनंत छे). से० ते एवी रीते द० द्रव्यथकी

जी० जीव स० अत सहित ठे खे० क्षेत्रथकी पण स० अत सहित ठे का० कालथकी जी० जीव अ० अत रहित ठे अने भा० भावथकी पण जी० जीव अ० अतरहित ठे

भावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमा अनत ज्ञानना, अनत दर्शनना अने अनत चारित्रना पर्यायने भावजीव कह्या, अने एतो संवर, निर्जरा अने मोक्षना भेद ठे वली अनता गुरु लघु पर्याय, उदारीक शरीर, अठ फरसी पुदगल, पुन्य, पाप, वध, शुभाशुभ कर्मनी प्रकृति अने अगुरु-लघु पर्याय, आठ कर्म, कारमण शरिरादिक, रुपी चोफरसो पुदगल, शुभाशुभ कर्मनी प्रकृति, ए गुरु लघु पर्यायने तथा अगुरु लघु पर्यायने भावजीव कह्या ठे, अने आठ कर्मने कारमण शरीर कह्यु ठे तेनी शाख सूत्र भगवती शतक ८ में ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए वली पुन्य, पाप अने बधने जीव ए न्याये कहीये -काया कर्मनो प्रकृति ठे अने कायाने जीव कह्यो ठे शाख सूत्र भगवती शतक १३ में उद्देशे ७ में ते पाठ —

आया भते काए अन्नेकाए ? गो० ! आयाविकाए अन्ने-विकाए रुवि भंते! काए अरुविकाए ? गो०! रुविविकाए अरुविविकाए एव एकेक पुच्छा गो०! सचित्तेविकाए अ-चित्तेविकाए जीवेविकाए अजीवेविकाए जीवाणविकाए अजीवाणविकाए पुर्विं भते! काए पुच्छा गो०! पुर्विंपिकाए काइज्जमाणेविकाए कायसमयवित्तिक्तेविकाए पुर्विंपिकाए-भिज्जइ काइज्जमाणेविकाएभिज्जइ कायसमयविइक्कंतेविका-एभिज्जइ कइविहेणं भंते! काए प० ? गो०! सत्तविहेकाए प० त० उरालिय उरालियमिसिए वेउव्विय वेउव्वियमिसिए आहारए आहारमिसए कम्मए ॥

अर्थ —पूर्ववत् जुठ प्रश्न बीजे पाठल पाने सत्यासीमें

भावार्थः—हवे शुभ! आ पाठमां एम कह्युं के, जीवसहित कायाने जीव कहीये, अने जीव छोड्या पछी मुवा कलेवरने अजीव कहीये. ते कारमण शरीर व्यवहारमां नजरे न आवे ते आश्री कायाने अरुपी कहीये. तेमज कायाने उदारिकादि शरीर आश्री रुपी पण कहीए. जीव सहित कायाने सचित्त कहीये अने जीव छोड्या पछी मुवा कलेवरने अचित कहीये. जीवसहित कायाने आत्मा कहीए अने जीव छोड्या पछी मुवा कलेवरने अनात्मा कहीए. ए शुभ! काया कर्मनी प्रकृति छे तेने जीव कह्यो छे. तेज रीते पुन्य, पाप अने बंध पण शुभाशुभ कर्म छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "कारमण शरीरने तो सूत्रमां ठाम ठाम रुपी कह्युं छे. अहीयां कारमण शरीर आश्री कायाने अरुपी केम कही हशे?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! कारमण शरीरने सूत्रमां ठाम ठाम रुपी कह्युं छे ते तो अमे पण जाणीए छीए; पण प्रभुनां वचन सात नये करीने छे. इहां व्यवहारमां कारमण शरीर नजरे न आवे ते आश्री अरुपी कह्युं छे. जेम दस-वैकालीक सूत्रना आठमा अध्ययनमां आठ वस्तु बादर छे पण सुक्ष्म कही छे. ते पाठः—

> अठ सुहुमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए;
> दयाहिगारी भूएसु, आस चिठ सएहिवा. ॥१३॥
> कयराइं अठ सुहुमाइं, जाइं पुछिज्ज संजए;
> इमाइं ताइं मेहावी, आइखिज्ज वियरकणे. ॥१४॥
> सिणेहिं पुप्फ सुहुमंच, पाणुतिंग तहेवय;
> पणगं बीय हरियंच, अंमं सुहुमंच अठमं. ॥१५॥
> एवमेआणि जाणित्ता, सव्व भावेण संजए;
> अप्पमत्तो जए निच्चं, सव्विंदिय समाहिए. ॥१६॥

अर्थः—अ० आठ सुक्ष्म जे आगल कहेशे ते पे० जोइने जा०

जे सुक्ष्मने जा० जाणीने सं० सजति द० दयानो पालणहार थाय जू० प्राणीने विषे आ० येशे चि० उनो रहे अथवा स० जयणायें सुवे क० कया अ० ते आठ सुक्ष्म ? जा० यवि पु० पुछे सं० सजति शिष्य गुरु समिपे, तेवारे गुरु शिष्य प्रत्ये कहे इ० ए ता० ते आठ सुक्ष्म मे० मर्यादावत यति ते विचक्षण शिष्य प्रत्ये आ० कहे सि० उस प्रमुखनु सुक्ष्म पाणी १, पु० सुक्ष्म फुल पा० अनुद्धरी कथवादिक सुक्ष्म प्राणी कीडी नगरा प्रमुख ल० तेमज प० पांच वर्णी लीलफुल बी० वड प्रमुखनां सुक्ष्म बीज ह० नवा उगता अकुरा (सुक्ष्म हरी) अ० माखी, कीडी प्रमुखनां इंडा सु० ते आठमो सुक्ष्म प० एणी पेरे ए आठ सुक्ष्म जा० जाणीने स० सर्व प्रकारे आठ सुक्ष्मनी रक्षा करवाने जावे स० यति अ० निंद्रादिक प्रमाद रहित उतो ज० जयणाए करीने कार्यादिक करे नि० सदाय स० सर्व इंद्रिने विषे स० समाधिवत रागद्वेष रहित यति

जावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमां उस प्रमुखनु पाणी १, फुल २, नाना कथवा ३, कीडीनगरां प्रमुख ४, पचवर्णी फुल ५, वड प्रमुखनां बीज ६, नवा उगता हरीकायना अकुरा ७, अने माखी, कीडी प्रमुखनां इंडा ८, ए आठ वस्तुने सूत्रमां ठाम ठाम बारर कही छे, अने अहींयां व्यवहारमा कोमलपणा आश्री वीतरागदेवे सुक्ष्म कही छे तेम फार मण काया रुपी छे, पण व्यवहारमां नजरे न आवे ते आश्री तेने अरुपी कही देखाय छे

वली तेरापथी कहे छे के " अहींया काय कही ते धर्मास्ति कायादिक पाच आश्री जाणवी तेमा केटलीक अरुपी छे, केटलीक रुपी छे, केटलीक जीव छे अने कटलीक अजीव छे ते आश्री कह्यु छे " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! अहींया तो कायाना सात जेद कह्या छे उदारिक १, उदारिक मिश्र २, वैक्रिय ३, वैक्रिय मिश्र ४, आहारीक ५, आहारीक मिश्र ६, अने कार्मण ७ ए सात जेद कायाना कह्या छे तेनो ज पुछा छे, कारणके आगला पाठमां चार मनना अने चार वचनना जेदनो पुछा

छे, तेथी तेनी जोगे उदारिकादिकज कायानी पुण संजवे छे. वली आ पाठनी टीका अजयदेवसुरीजी कृत छे तेमां तथा आ पाठना टबामां पण पूर्वोक्त अर्थ छे. तमे मतना लीधे " पांच आस्तिकाय आश्री कह्युं छे " एम जुठुं केम बोलो छो ? अहीयां तो व्यवहार नय आश्री जीव सहित कायाने जीव कह्यो छे, अने काया कर्मनी प्रकृति छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए.

वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः—चार गति अने चार कषाय ए कर्मनी प्रक्रति छे. (शाख सूत्र पन्नवणा पद २३ में तथा सूत्र उत्तराध्ययन तथा कर्मग्रंथमां.) अने तेने जीवना प्रणाम कह्या छे. शाख सूत्र ठाणायांग ठाणे १० मे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये. वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीएः— त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, अपर्याप्तनाम, शुक्ष्मनाम, स्थावरनाम, पांच इंद्रिनी जात, चार कषाय, त्रणवेद, इत्यादिक शुभाशुन कर्मनी प्रक्रतीओ छे, ए प्रक्रतिओने जीव कह्यो छे. शाखसूत्र ठाणायांग, पन्नवणा, कर्मग्रंथ इत्यादिक अनेक सूत्रमां. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये. वली आ प्रक्रतिमां ज्ञान कह्युं छे. शाख सूत्र जगवती शतक ८ मे उद्देशे बीजे. जीवमां ए प्रक्रतिओ लोलीजूत रहे त्यांसुधी जीव ज्ञान पामे नही. तेथी व्यवहारमां तेने जीवज कहीये. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव ज कहीये. वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः—आठ कर्म, अढार पाप अढार पापनुं विरमण, चारगति, चोवीस दंरुक, पांच शरीर, त्रण दृष्टी अने बार उपयोग इत्यादिक ११७ बोलने आत्मापणे प्रणमे कह्युं छे. तेनी शाख- सूत्र जगवती शतक वीसमे, उद्देशे त्रीजे. जीवपणे प्रणमे तेने व्यवहा- रमां जीवज कहीये. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये.

वली तेरापंथी कहेछे के "४ गति, १८ पाप, २४ दंरुक अने ५ शरीर, इत्यादिक प्रक्रतिओने तमे जीव स्थापोछो. ते ए प्रक्रतिओ तो अजीव छे

अने जीवने प्रगमे छे ए चार गतिना शरीर तो अजीव छे, तेथी पुन्य -पापनां पुद्गल पण अजीव छे, पण तेना माहे जीव छे ए न्याये एटला पाठमां जीव कही बोलाव्या छे, पण पाच शरीरादिक कर्मनी प्रकृति अने पुन्य पापादिक शुभाशुभ कर्म पुद्गल छे ते जीव नथी" एम कहे छे तेना उत्तर हे देवानुप्रीय तमारे लेखे तो मनुष्य, तिर्यंच, गाय भेंस उंट तथा पक्षी प्रमुख सर्वने जीव न केहेवा जोइए, कारण के एनी गती अने काया तो अजीव छे अने एनामा जीव छे, तेथी तमारे लेखे तो मिश्र केहेवा जोइए, पण भगवते तो गाय,भेंस,पसु,हाथी,उंट तथा गाडर प्रमुखने एकात सचित जीव कह्या छे वखषो सहित हाथीने मिश्र कही छे, अने छत्र, दड प्रमुखने अचित कह्या छे तेनी शाख सूत्र अणुजोगद्वारमा ते पाठ —

सेकिंत्त सजोगे? सजोगेणा चउविहे पणत्ते त० दवसजोगे खेत्तसजोगे कालसजोगे भावसजोगे.सेकिंतदवसजोगे? त्ति-विहे पन्नते तजहा -सचित्ते अचित्ते मिसए सोकिंतसचित्तए २ गोहिंगोमिए पसुहिंपसुइए महिसीहिं महिसिए उरणीहिं उरणीए उट्टीहिं उट्टीवाले सेत सचित्ते सेकित्त अचित्ते २ छत्तेणा छत्ती दण्डेणादण्डी पडेणपडी घडेणाघडी सेत्त अचित्ते सेकित मिसए २ हलेणा हालिए सगडेणा सागडिए रहेणा रहिए नावाए नाविए सेत्त दव सजोगे ॥ १ ॥

अर्थ —से० ते कया ए स० संजोग ? स० ते सजोग च० चार प्रकारे प० कह्या त० ते कहे छे —द० द्रव्यने सजोगे खे० क्षेत्रने सजोगे का० कालने सजोगे अने भा० भावने सजोगे नाम नीपन्यु ४ से० द्रवे द्रव्यने संजोगे नाम निपन्यु ते शु ? ते ति० त्रण प्रकारे प० कह्यां त० ते कहे छे स० सजीव अ० अजीव अने मि० मिश्र ३ से० ते कयो सचित द्रव्य सजोग ? सचित द्रव्य सजोग ते ए गो० जेने गाय छे तेने

गोमान कहीये, प० पसु छे ते माटे पसुमान कहीये, म० भेंसना धणीने महिसीए कहीये, ऊ० बकरी (छाली) ना चारणहारने ऊरणीए कहीये अने ऊ० ऊंटना चारणहारने ऊंटवाल कहीये. से० ए सचित द्रव्यने संजोगे नाम निपन्यां जाणवां. से० ते कयो अचित द्रव्य संजोग? ते अचित्त द्रव्य संजोगे नाम निपन्यां ते ए. छ० छत्रीनो धरावनार ते छत्री-राजा. दं० दंडनो धरणहार ते दंडी. प० वस्त्रनो धरणहार ते पडी. व० घडानो धरणहार ते घडी. सं० ए अचित्त द्रव्य संजोगे नाम जाणवां. अथ हवे से० मिश्र द्रव्य संजोगे नाम निपन्यां ते कयां? ते ए-ह० हल खेडे तेने हाली कहीए. हल अचित्त अने बलध सचित्त ए मिश्र संजोग. स० गाडी खेडे तेने सागडी कहीये. र० रथ खेडे तेने रथिक कहीये. ना० नावा (वाहाण) खेडे तेने नाविक कहीये. से० ते द्रव्य संजोगे नाम निपन्यां ते कह्यां. ॥

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां चार प्रकारनो संजोग कह्योः-द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव ४. ए द्रव्य संजोगना त्रण भेदः-सचित्त, अचित्त अने मिश्र ३. हवे सचित्तना पांच भेद कह्याः-गायो चारे तेने गोवाल (गोमिक) कहीये १, पसुना धणीने पसुमान २, भेंसना धणीने महिषिए ३, छालीना (बकरीना) चारणहारने ऊरणीए ४ अने ऊंटना चारणहारने ऊंटी अथवा ऊंटवालो कहीये. ५. ए सचित्त द्रव्य-संजोगे नाम निपन्यां. हवे अचित्तना चार भेद कह्याः-छत्र धरावे तेने छत्री १, दंड धरे तेने दंडी २, वस्त्रना धरणहारने पडी ३ अने घडाना धरणहारने घटी कहीये. ४. हवे मिश्र संजोगे चार नाम निपन्यां ते कहे छेः-हल खेडे तेने हाली कहीए; हल अचित्त अने बलध सचित्त, ए मिश्र १; गाडी खेडे ते सागडी २; रथ खेडे ते रथिक ३; अने नावा खेडे ते नाविक (नावडीओ). ४. ए मिश्र संजोगे नाम निपन्यां.

हवे जुओ! गोवाल, पशुमान, महिषीए, ऊरणीए अने ऊंटीए, गाय, भेंस प्रमुख सचित्त छे ते माटे सचित्त संजोग नाम कह्यां.

छत्र, दन्न, वस्त्र अने घट अचित्त छे ते जणी छत्री, दन्नी, पन्नी अने घटी ए अचित्त सजोगे नाम कह्यां छ्थ, गाम्नी अने रथ अचित्त छे तथा बलध सचित्त छे ते जणी हाली, सागरी, रथिक अने नाविक, ए मिश्र सजोगे नाम निपन्या कह्यां ए जुओ ! गाय, जेंस, बलध प्रमुखना शरीरने अने जीवने जेलाज सचित्त कह्या ए गाय, जेंस, बलध प्रमुखना शरीर, कर्म, पुन्य, पाप अने बंधनी प्रकृति छे अने ते पुद्गल छे, पण जीवे गह्या अने जीव सहित छे ते जणी स चित्त कह्या सचित्त ते जीव छे ते जणी पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए वली जीव प्रह्या जीव सहित पुद्गलने जीव-पर्यवा कह्या छे नारकी, देवता, मनुष्य अने तिर्यंच ए चार गतिने, प्रदेशने, अवगा हना पुद्गलथी निपनी तेने, स्थितिने, पाच वर्णने, पाच रसने, बे ग धने, आठ स्पर्शने, बार उपयोगने, पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञानने अने चार दर्शनने, ए छत्रीस बोलने जीवपर्यवा कह्या छे शास्त्र सूत्र पन्नवणा पद पांचमें ए जुओ ! अवगाहनापणे पुद्गल प्रणम्या तेने तथा वर्ण, रस, गध, स्पर्श, पुन्य पाप अने बंधपणे प्रणम्या पुद्गल जीवे गह्या जीवने पोगसापणे लोलीभुत रह्या तेने जीवपर्यवा कह्या छे, अने जीव छोड्या पछी मिसापणे प्रणम्या वर्ण, रस, गध अने स्पर्शने तथा वीसा पुद्गलने अजीवपर्यवा कह्या छे ए जीव प्रह्या पुद्गलने जीवपर्यवा कह्या ए न्याये पुन्य, पाप अने बधने जीव कहीए वली क्रोध, मान, माया, लोज्ञ, राग, द्वेष अने आठ कर्मने जीव समोयार कह्या छे शास्त्र सूत्र अनुजोगद्धारमां ए न्याये पुन्य पाप अने बधने जीव कहीए

तेवारे तेरापथी कहे छे के " पुन्य, पाप अने बध तो शुजाशुज कर्म छे ते रुपी पुद्गल छे, अने जीव तो अरुपी छे ते पुन्य पाप अने बध रुपी छे तेने जीव शीरीते कहो छो ?" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! जीवने पण सरुपी कह्यो छे सकर्मी, सरागी, सवेदी, सलेशी अने सस रीरी कह्यो छे शास्त्र सूत्र जगवती शतक १७ में उद्देशो वीजे तेवारे तेरापथी कहे छे के " जीवने रुप सहित कह्यो छे, पण जीव रुपी नथी,

जेम कपडाने रंग तेम जीवने शरीर, वेद, रागरुप छे तेथी सरुपी सकर्मी कह्यो छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! कपडाने कसुंबल रंग होय तेने कसुंबल कपडुं कहीए अने पीलो रंग होय तेने पीलुं कपडुं कहीए. जेवो कपडाने रंग होय तेवुं कपडुं कहीए. तेम कर्म सहित जीवने रुपी कहीए. वली तमे (तेरापंथी) कहो छो के " जीवने सरुपी कह्यो छे पण जीवने रुपी नथी कह्यो. " त्यारे एम तो जीवने "ज्ञान सहित" सनाणी कह्यो छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक आठमें उद्देशे बीजे तथा ३० मे तथा अनेक सूत्र-पाठमां. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो जीवने सनाणी कह्यो तेने ज्ञान सहित कहीए; पण ज्ञानी न कहीए.

हे देवानुप्रीय ! एम केम कहो छो के, सरुपी कह्यो तेने रुप सहित कहीए पण सरुपी न कहीए ? ज्ञान सहित कहो अने भावे ज्ञानी कहो. रुप सहित कहो अने भावे रुपी कहो. वली अनुयोगद्वार सूत्रमां भाव संजोगमां कह्युं छे के, ज्ञान सहित होय तेने ज्ञानी कहीए, समकित सहितने दर्शनी कहीए, चारित्र सहितने चारित्रीउं कहीए; अने क्रोध, मान, माया अने लोभ सहित ने क्रोधी, मानी, मायी अने लोभी कहीए. जेम रुप सहित होय तेने रुपी कहीए, अने वर्णादिक पुद्गल सहित जीवने रुपी कहीये. तेम जीव सहित पुद्गलने जीव कहीये. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए. इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे करी व्यवहार-नयमां पुन्य, पाप अने बंधने दुध-पाणीना द्रष्टान्ते जीव कहीए. जेम शेर दुधमां पासेर पाणी नांखे तेने व्यवहारमां सवा शेर दुध कहीए. तेम पुद्गल जीवने लोलीभुत थया तेने व्यवहारमां जीवज कहीये. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए.

हवे पुन्य, पाप अने बंधने अजीव कया न्याये कहीएः—पुन्य ते शुभ कर्म छे, पाप ते अशुभ कर्म छे, अने बंध ते शुभाशुभ कर्म प्रकृतिनो छे. ते कर्म रुपी पुद्गल छे. ते रुपी पुद्गलने नश्चेनयमां जीवे छोडया पछी, हंसनी चांचथी दुध पाणी न्यारां थाय ते द्रष्टान्ते

अजीव कहीए वली तेरापंथी आश्रव तत्वने एकान्त नये करी जीव कहे छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! आश्रव ते जीवनु मूल लक्षण छे के संसार अवस्थामा रह्या जीवने उपाधिरुप छे? ते विचारी जुओ

वली तेरापंथी कहे छे के, "हवेली अने बारणु ते एक, सोय अने नाकु ते एक, तलाव अने घरनालु ते एक, तथा नावा अने छीद्र ते एक, तेम जीव अने आश्रव एक छे" एवी कुयुक्ति देखाडे छे तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय! हवेली, सोय, तलाव अने नावातो पुद्गलास्तिकाय छे अने बारणु, नाकु, घरनालु अने छीद्र तो आकाशास्तिकाय छे तेम जीवने आश्रव ए रीते प्रत्यक्ष जुदा छे वली उत्तराध्ययनना २३ मा अध्ययननी ७३ मी गाथामा, कायारुपणी नावा कही छे, अने जीव रुपी नावकीओ कह्यो छे कायानो जोग व्यवहारनयमा जीव छे, तेने आश्रवरुपी छीद्र छे, पण निश्चेनयमा जीव अरुपी छे तेथी तेने आश्रव रूपी छीद्र नथी हवे जेम कायारुपणी नावा अने छीद्र व्यवहारमा एक छे, पण नावकीओ अने छीद्र एक नथी, तेम जीव अने आश्रव एक नथी हवेली अने बारणु व्यवहारमा एक छे, पण हवेलीनो धणी अने बारणु एक नथी सोय अने नाकु व्यवहारमा एक छे, पण सोइ अने नाकु एक नथी तलाव अने घरनालु व्यवहारमा एक छे, पण तलावनो धणी अने नालु एक नथी तेम जीव अने आश्रव एक नथी वली कर्म पुद्गल अने जीव ए बंनेना सजोगथी सात तत्वना नाम बन्यां छे जेम कर्म कायारुपी तलावमा केवल-ज्ञानरुपी रत्न ढकायलु छे ते तलावमा पुन्य-पापरुपी पाणी आश्रवरुपी छीडे करी आवे छे, तेने संवररुपी थपे करी रोके छे, अने बंधरुप कच्चु पाणी छे तेने निर्जरारुपी (कर्मस पोशाकी) पाटकोए करी देशथकी उलेची काढे छे, अने मोक्षरुपी त्यारो तलाव ज्यारे सर्वथा कर्म पाणी रहित थाय त्यारे जेम शेठ नालु, कचरु (बधु), कर्दम, मोरी अने तलाव छोडीने पोतानु रत्न लेइ घेरे जाय, तेम जीव सहजानंदी केवल ज्ञानरुपी रत्न लइने सिद्धगतिमां

जाय, अने पुद्गलदशा पुद्गलमां मले त्यारे सात तत्वना नामनो वि. नाश थाय. ए तलावनुं द्रष्टान्त सूत्र उत्तराध्ययनना ३० मा अध्ययनमां छे. वली कायारुपी नावाने छीद्र छे अने कायारुपी तलावने नालुं छे. ते काया जेम निश्चे-नयमां अजीव छे तेम आश्रवरुपी छीद्र पण अजीव छे. पाणी ते पाप, काया सहित जीव ते व्यवहार-नयमां रुपी छे ते तलाव, संवर ते पाल, अने मिथ्यात्वादिक छीद्रद्वारे करी चोफरसी शुभ अशुभ पुद्गलनो संग्रह थयो ते माटे आववुं ए क्रियानुं नामज आश्रव छे. ए जीव संबंधी पुद्गलनी करणी छे.

हवे मिथ्यात्व प्रमुख १८ पाप तो चोफरसी पुद्गल छे. तेना विवसायमां जीव द्रव्यनो उपयोग वर्ते तेवारे जीव अशुद्ध उपयोगे नवां कर्म-पुद्गलने आकर्षे. ते आश्रव पण ए पुद्गल ग्रहण-लक्षण करणी जीवने अशुद्ध अवस्थानी छे. ते ज्यारे शुद्ध दशा आवे त्यारे जीवनो उपयोग शुद्ध थाय अने पोताना रुपमां प्रणमे. जेम धर्मास्तीकाय पोते चालती नथी, पण जीव अने पुद्गल चाले छे तेने साहाज आपे छे. तेम विश्रसा पुद्गलना मलवा वीखरवाना प्रणाम छे. तेमां जीवनो उपयोग प्रवर्त्यो तेवारे प्रयोगसा प्रणाम थयो. जो ए जीवना उपयोगने आश्रव कहीये तो आत्मानो सहजाती गुण थाय. त्यारे तो सिद्ध दशामां पण आश्रव केहेवो जोइए. वास्ते ए आश्रव ते पुद्गलनोज स्वभाव छे. वली द्रव्य छ अने गुण छ छे. तेमां एकेक द्रव्यने एकेक गुण, ते सर्व द्रव्यने सहजाती छे. हवे जीव-द्रव्यने कर्मनो कर्त्ता ठरावीए तो जीव उपयोगी छे; पण एक द्रव्यमां उपयोग अने कर्त्ता ए बे गुण न होय. एक द्रव्यमां एकज गुण होय. ए निश्चयनयनुं स्वरुप जाणवुं; अने व्यवहारनयमां आत्मा कर्त्ता केहेवाय, ए पण सत्य छे. जीव कर्त्ता छे, पण मुल रागादिक दुषण पुद्गल जनित अनित्य छे ते माटे नवा कर्मोने पण ग्रहे छे. ते पण मुल पुद्गलनी नेश्राय थकी ग्रहे छे. हवे पुद्गल पुद्गलने ग्रहे ए तो निश्चे-नय, अने जीव पुद्गलने ग्रहे ते

व्यवहार-नय, पर्ण सुख पुद्‌गलनी सगत ठे तेथी जीव द्रव्यनी बे दशा ठे ससारिक अने सिद्ध तेमा एवम्भुत-नयनो धणी शुद्ध जीव दशा सिद्धनी तेज शुद्ध माने, अने नैगमादिक-नय ठे ते अशुद्ध वस्तु शुद्ध सत्ताना अश सहित होय ते वस्तुने पण शुद्ध वस्तु माने जेम निगोद वासी जीव ठे तेने पण नैगमनय-मतानुसारी सिद्ध समान माने ठे, तेम जीव ग्रह्या पुद्‌गलने जीव गणीए ए न्याये पुन्य, पाप, आश्रव अने बध एने पण जीवे समझ्या ते माटे जीव गणीये ए पण वली जीवे वाध्या ठे ते लेखे जे प्रयोगसा पुद्‌गल, इन्द्रिय–विषय, कषाय अने जोग प्रमुख सर्वने जीव कहीये, केमके जेम नालु आवता पाणीनुं आधारभुत थयु तेम थालु पण आधारभुत ठे पाणी तेज सहभावे वर्ते ते तेमज पापरुपी पाणी आवता ग्रहणद्वारे जीवे ग्रह्या पठी अशुभपणे प्रणम्यु त्यारे बध जावे रह्युं हवे ए आश्रवमा अने बधमां शुं फेर ? आश्रव ग्रहण समये प्रत्यक्ष ठे अने बध अपठम समये सिद्ध ठे जेम नालानु अने मांहीलु पाणी एक ठे तेम पुन्य, पाप आश्रवदशामा अने बधदशामां एक रुप ठे वली तेरापथी आश्रव कर्म ग्रहण रुप अशुद्ध उपयोगने जीव माने ठे ते उत्तर सूत्र उतराध्ययन अध्ययन अठावीसमानी गाथा बतावे ठे ते पाठ —

> वत्तणा लक्खणोकालो, जीवो उवउग लक्खणो,
> नाणेणं दंसणेणाच सुहेणाय दुहेणाय ॥ १० ॥
> नाणन्च दसण चेव, चेरित्तच तवोतहा,
> विरिय उवउगोय, एव जीवस्स लक्खण ॥ ११ ॥

अर्थ —व० हेमत रुतु प्रमुख रुतुने विषे शितादिक प्रवर्ते ते व र्तमान कालनु ल० लक्षण जी० जीवने उ० ज्ञानना उपयोगनु लक्षण ना० ज्ञाने करी द० दर्शने करी सु० सुख वेदने करी दु० दुःख वेदवे करी, एमे जाणीने ना० ज्ञान अने द० दर्शन चे० निश्चे च० चारित्र अने त० तप, तेमज वि० समर्थाइ उ० ज्ञानादिकनो उपयोग ए० ए

पूर्वोक्त जे ज्ञानादिक कह्या ते जी० जीवनुं ल० लक्षण जाणवुं.

भावार्थः—आ पाठना न्याये उपयोग ते जीवनो गुण छे, अने गुण ते द्रव्यमां अंतर भवे. ते माटे आश्रवने जीव कहीये छीए. एम तेरापंथी कहे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! द्रव्य छे ते गुण सहित वर्ते छे. ते द्रव्य अने गुण जुदा नथी, पण द्रव्य द्रवभावे अने गुण गुण भावे रह्या छे. वली जीवना जे जे गुण छे ते मांहीला जे कोइ गुण सिद्ध अवस्थामां रहे, ते तो द्रव्यनो सहजाति गुण कहेवाय; अने संसार अवस्थामां जे जे गुण अशुद्ध उपयोगे समल भावे छे, ते ते विजातिय गुण केहेवाय; कारण के शुद्ध अवस्था आव्याथी उपयोग ते उपयोगमां समाय, अने पुद्गलकृत चेष्टा ते पुद्गलमां मले. ए बेहु जुदा छे. वली जीव-द्रव्यना मुल आठ गुण छे तेने आठ कर्मे आवर्या छे. ते कर्म क्षय थयाथी गुण प्रगटे ते आत्माना सहजाति गुण जाणवा. ज्ञानावरणी-कर्मने क्षये अनंतगुण ज्ञान प्रगटयुं १, दर्शनावरणीने क्षये अनंत दर्शन प्रगटयुं २, वेदनीने क्षये अव्याबाध सुख प्रगटयुं ३, मोहनीकर्मने क्षये स्वाभाविक सम्यक्त चारित्र प्रगटयुं ४, आयुष्यने क्षये अनंत स्थिति प्रगटी ५, नामकर्मने क्षये अमूर्तिकपणुं प्रगटयुं ६, गोत्र-कर्मना क्षये अगुरु लघुपणुं ७ अने अंतराय कर्मना क्षये अनंत पंडीत वीर्य गुण प्रगटयो ८. ए आठ गुण प्रगटया ते आत्माना सहजाति गुण छे. ते एकएकथी मलो रह्या छे, पण गुण छे ते द्रव्य थकी जुदा नथी. हवे ए पूर्वोक्त गुणने जीवना गुण कहीए; पण संपूर्ण जीव द्रव्य न कहीये.

जेम सूत्र भगवतीना सोलमा शतकमां, गौतमस्वामीए पुछयुं के, हे भगवान ! पुर्वादिक दस दिशाने अंते " जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, " ए त्रण मांहेलुं शुं पामीए ? तेवारे श्री वीर प्रभुए कह्युं के, हे गौतम ! पुर्वादिक दसदिशाने अंते जीव नथी, पण जीवना देश अने जीवना प्रदेश छे. तेनो घणो विस्तार छे. इहां प्रभुए जीवना

प्रदेशने प्रदेश कह्या, पण जीव न कह्या ए जुओ ! जीवना परिणाम छतां पण जीव न केहेवाणा त्यारे फक्त उपयोग तेतो गुण छे ते जीव क्यम केहेवाय ? उपयोगने तो उपयोगज कहीये वली आश्रव तो कर्मना उदये जीवनो अशुद्ध उपयोग, ते नवा कर्मोने ग्रहे तेने कहीए जे मल-ग्रहणरुप चीगट ते आश्रवरुप वस्त्रने छे, पण आश्रव चीगटरुप वस्त्र नथी तेम आश्रव जीवने छे, पण ते जीव नथी एम जाणवुं वली आश्रवमा मिथ्यात आश्रव तेतो चोफरसी पुद्‌गल छे अने मिथ्या द्रष्टी ते मिथ्यात्व सर्धीत आत्मानो उपयोग छे ए उपयोग ते तो आत्मा ना घरनो छे, अने मिथ्यात्व ते पुद्‌गलना घरनु छे जो जीवने उप योगें अवगाह्या माटे जीव थाय तो, १० पाप, वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने पुद्‌गल ए सर्वे जीव थाय वली आश्रवने खपाववो कह्यो छे जो जीव होव तो खपाववो केम कह्यो ? अने ते खपाव्यो केम खपे ? शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन १८ में ते पाठ –

> अह केसरमि उज्जाणे, अणगारे तवो धणे
> सज्झाय झाण सजुत्ते, धम्मझाण झियायइ ॥४॥
> अफोव मण्डवमि, झायइ जवियासवे,
> तस्सागए मिएपास, वहेइ से नरा हिवे ॥५॥

अर्थ —अ० अथ हवे के० केशरी नामे उ० उद्यानने विषे अ० (घर रहित) अणगार त० तप रुपी धन सहित स० स्वाध्याय झा० धर्म ध्यानादिक ध्यान स० सहित ध० धर्मध्यान झि० एकाग्र चित्ते करी ध्यावे छे ॥ ४॥ अ० वृक्षे करी व्याप्त म० नागरवेलना मरूपने विषे झा० धर्मध्यान ध्यावे छे ज० आश्रव खपावीने त० ते मुनीनी पासे आव्यो मि० मृग व० जेनो वध करे छे ते, अने से० ते न० राजा (मृगनो वध करनार सजति)

भावार्थ —हवे जुओ ! आ पाठमां एम कह्यु के, गर्दभाली मुनी ध्यान करे छे ते आश्रव रुपी उपाधि खपावे छे, एवु ध्यान करे छे हवे

खपाववावालो जीव छे, अने खपे ते कर्म-पुद्गल जीवने उपाधि रुप आश्रव निश्चेनयमां अजीव छे. ते आश्रव रुपी जीव उत्पन्न उपयोगे पुद्गलमां प्रवेश कर्यो त्यारे कर्मनुं कारण ग्रहण जोग कही देखाडयुं छे; पण आश्रव जीव नथी, अजीव छे.

वली आश्रवने अजीव कये न्याये कहीयेः-शुभाशुभ कर्म आवे तेने आश्रव कहीये, अने आवे ते कर्म-रुपी पुद्गल निश्चेनयमां अजीव छे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये.(१)वली आश्रवने अजीव कया न्याये कहीयेः-पुन अने पापने आश्रव कह्या छे, (शास्त्र सूत्र उत्राध्ययन अध्ययन २८में.)अने पुन्य पाप ते शुभाशुभ कर्म छे.ते कर्मने रुपी कह्यां छे.(शास्त्र सूत्र भगवती सतक १२ में) अने रुपी पुद्गलने बीजा शतकमां अजीव कह्या छे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. (२) वली आश्रवने अजीव कया न्याये कहीयेः-जीव निश्चेमां अरुपीज छे रुपी नथी; अने आश्रवनी क्रियाना पांच भेद कह्या छे. शास्त्र सूत्र समवायांगमां. अने ते पांच भेदने रुपी कह्या छे. मिथ्यात्व, कषाय, अने मन वचनना जोगने रुपी चोफरसी कह्या छे, अने कायाना जोगने तो रुपी आठ फरसी कह्या छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक १२ में. अने अवृत ते अपचखाणी क्रियाने रुपी कही छे. शास्त्र सूत्र ठाणायांगमां. प्रमादना पांच भेद कह्याः-मद १, विषय २, कषाय ३, निंद्रा ४ अने विकथा, ए पांच भेद रुपी छे. तेम आश्रवना पण पांच भेद रुपी छे. रुपी पुद्गल निश्चे-नयमां अजीव छे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीए. (३) वली आश्रवने अजीव कया न्याये कहीयेः-पांच इंद्रि तथा त्रण जोग मोकला मेले ते आश्रव छे अने तेने अजीव कह्या छे अने जीवने भोग आवता कह्या छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक २५ में उद्देशे बीजे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. (४)

वली तेरापंथी कहे छे के " कर्मने खेंचवावालो तथा ग्रह वालो आश्रवने कह्यो छे, अने कर्म खेंचवानी तथा ग्रहवानी शक्ति जीवनी छे. ए न्याये आश्रवने जीव कहीये छीए. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! जेम चीपीउ कांटाने ग्रहे छे तेम आश्रव कर्मने ग्रहे छे. हवे चीपीउ

अने आश्रव पने अजीव पुद्गल छे ते पनेने विषे उठाण, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार अने प्राक्रम जीवना छे, पण ते मुखगा बेने अजीव छे ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये वली सूत्र भगवतीजीमा आश्रवना पांच भेदने रुपी कह्या छे ते रुपी पुद्गल जीवने ज्यां सुधी लोली भुत रहे त्यां सुधी व्यवहारमा तेने जीव कहीये, अने जीव छोड्या पछी नि श्चे-नयमां अजीव कहीये वली आश्रवने अने आश्रवना पांच भेदने सूत्रमां कोइ ठेकाणे अरुपी कह्या नथी

तेवारे तेरापथी कहे छे के, "मिथ्यादृष्टि अरुपी छे तेथी आश्रवने अरुपी तथा जीव कहीये छीए" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! प्रथम तो मि थ्यादृष्टिने आश्रव सूत्रमा क्यांय कह्यो नथी पतो मिथ्यात्व थायुं तेथी मिथ्यादृष्टी नाम जीवनु छे जेम दंड धार्यो तेने दंडी कहीये, छत्र धार्युं तेने छत्री कहीये अने पुद्गल धार्युं तेने पुद्गली कहीये शास्त्र सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशे १० मे हवे जेम दंड, छत्र अने पुद् गल, ए त्रणे अजीव छे तेम मिथ्यात्व अने आश्रव अजीव छे, अने जेम दंडी, छत्री अने पुद्गली नाम जीवनुं छे तेम मिथ्यात्व धार्युं तेथी मिथ्यादृष्टी नाम जीवनुज छे, पण मिथ्यादृष्टी आश्रव नथी मिथ्यात पथीत् जीवनो उपयोग क्षयोपशम भाव, तेने मिथ्यादृष्टी क हीये वली तेरापथी कृत तेर द्वारमा आश्रवमां बे भाव कह्या छे उदय अने प्रणामिक, पण सूत्र अनुयोगद्वारमां मिथ्यादृष्टीने क्षयो पशम भावे कही छे हवे जुओ ! तेरापंथीओनी बुद्धिनी अर्जारणता, के आश्रवमां क्षयोपशम भाव तो मानता नथी अने मतने लीधे मिथ्या दृष्टी क्षयोपशम भावे छे तेने आश्रव कहे छे

वली तेरापथी एम कहे छे के, "कषाय अने जोग आश्रव छे अने तेने आत्मा कही छे ते आत्मा अरुपी छे ए न्याये आश्रवने अरुपी तथा जीव कहीये छीए" तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! तमे आत्मा नाम एकान्त अरुपीनु कहो छो पण सूत्र भगवतीमा रत्नप्रभादिक पृथ्वीने तथा रुपी जीव पुद्गलने आत्मा कही छे शतक १२ मे उद्देशे १० मे

तमे आत्माने एकान्त अरुपी केम कहो छो ? वली कषाय अने जोगने आत्मा कही तेथो ते अरुपी छे एम तेरापंथी कहे छे, पण ते जुठुं छे; कारण के सूत्रमां कषाय-आत्माने तथा जोग-आत्माने अरुपी क्यांय कही नथी. कषाय तथा जोग रुपी पुद्गल जीवने ज्यां सुधी लोली भुत रहे त्यां सुधी आत्मा शब्दे पुन्य पापनी पेरे व्यवहारमां जीव कहीये, अने निश्चेनयमां जीव छोड्या पछी अजीव कहीये. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. (१) वली आश्रवने अजीव कया न्याये कहीएः-आश्रव छोरुवा योग्य छे, कारण के जीव सिद्धगतिमां जाय त्यारे आश्रवने अहिंज छोरुी जाय छे. हवे जीवथी छुटे ते कर्म पुद्गल निश्चेनयमां अजीव छे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. (२) इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे करी निश्चे-नयमां आश्रवने अजीव कहीये.

हवे व्यवहारनयमां आश्रवने जीव कया न्याये कहीएः-त्रण उपरली नय उदयभावना जोगथी जीवना अशुद्ध उपयोगने आश्रव माने, पाधाने द्रष्टान्ते. ते उपयोग आत्मा छे अने आत्मा नाम जीवनुं छे. ए न्याये आश्रवने जीव कहीये. (१) वली आश्रवने जीव कया न्याये कहीयेः-आश्रव जीवनुं लक्षण छे, आश्रवनो कर्ता जीव छे, अने आश्रव जीवपणे प्रणम्यो छे. ए न्याये आश्रवने जीव कहीये. (२) बाकी उदाहरण पुन्य पापनी पेरे जाणवां.

हवे संवरने जीव कया न्याये कहीयेः-भाव संवर ते उपरली त्रण नय जीवना उपयोगने संवर माने छे, पाधाने द्रष्टान्ते. ते उपयोग आत्मा छे अने आत्मा नाम जीवनुं छे. ए न्याये संवरने जीव कहीए. (१) वली संवरने जीव कया न्याये कहीएः—संवर जीवनुं लक्षण छे, अने संवरनो कर्ता जीव छे. ए न्याये संवरने जीव कहीये. (२) वली संवरने जीव कया न्याये कहीयेः—संवरनी क्रिया पांच भेदे. समकित १, व्रत २, अप्रमाद ३, अकषाय ४ अने अजोग ५. शाख सूत्र समवायांगजी. ए पांच भेदने जीवनी पर्याय कही छे. शाख सूत्र भगवती शतक बीजे उद्देशे पेहेले, खंधकजीना अधिकारमां. अनंता ज्ञानना पर्याय

अनंता दर्शनना पर्याय अने अनंता चारित्रना पर्यायने ज्ञावजीव कह्यो छे तेने व्यवहारनयमा जीव कहीये, अने निश्चे-नयमां पर्यायने पर्याय कहीये, पण जीव न कहीये शास्त्र सूत्र ज्ञगवती शतक बीजे उ दसमे ते पाठ.—

एगे ज्नते! धम्मत्थिकायप्पदेसे धम्मत्थिकाएति वतव्वंसिया? गो० ! णो इणट्ठे समट्ठे एवं दोण्णि तिण्णि चत्तारि पच छ सत अठ नव दस संखेज्जा असखेज्जा ज्नते! धमत्थिकाए-पएसा धमत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया ? गो० ! णो तिणट्ठे-समट्ठे एगपदेसुणे-वियण ज्नते ! धमत्थिकाए धमत्थिका-एति वत्तव्वसिया ? गो० ! णो तिणट्ठे समट्ठे सेकेणट्ठेण ज्नते ! एव वुच्चइ एगे धम्मत्थिकाएपएसे नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वंसिया जाव एगपदेसुणे-वियण धम्मत्थिकाए नो ध-म्मत्थिकाएति-वत्तव्वंसिया ? सेणुण गो० ! खमेचक्के सगले-चक्के ? ज्नगव ! नो-खमेचक्के सगलेचक्के एव छत्ते चम्मे दमे दूसे आउहे मोयए से तेणट्ठेण गो० ! एववुच्चइ एगे धम्मत्थिकाएपएसे णोधमेत्थिकाएति-वतव्वंसिया जाव एग-पदेसूणे वियणं-धम्मत्थिकाए नो-धम्मत्थिकाएति-वत्तव्वसिया सेकिंत खाइएणं ज्नते ! धम्मत्थिकाएति-वतव्वंसिया गो० ! असंखेज्जा धम्मत्थिकाएपएसा ते सव्वेकसिणा पमिपुणा निरवसेसा एगग्गहणगहिया एसण गोयमा ! धम्मत्थिका-एति-वत्तव्वसिया एव अहमत्थिकाएवी आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पोगलत्थिकाएवी एवचेव णवर तिणप्पि प्पएसा अणंताज्नाणियव्वा सेस तचेव ॥

अर्थ—ए० एक ज्नं० हे ज्नगवान ! ध० धर्मास्तिकायनो प्रदेश ते प्रत्ये ध० धर्मास्तिकाय पखु केहेवाय ? इति प्रश्न उत्तर गो० हे

गोतम! णो० ए अर्थ समर्थ नही युक्त नही. ए० एम दो० बे ति० त्रण च० चार प० पांच छ० छ, सात, आठ, नव, दस सं० संख्याता अने अ० असंख्याता भं० हे भगवान! ध० धर्मास्तिकाय-प्रदेशने ध० धर्मास्तिकाय व० एवुं केहेवाय? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! णो० ए अर्थ समर्थ नही. ए० एक पण प्रदेशे उणो भं० हे भगवान! ध० धर्मास्तिकायने ध० धर्मास्तिकाय व० एवुं केहेवाय ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! णो० ए अर्थ समर्थ नही. तेवारे गौतम स्वामी वली कहे छे. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान! ए० एम कह्युं ए० एक धरमास्तिकायनो प्रदेश नो० धर्मास्तिकाय न केहेवाय. जा० यावत् ए० एक पण प्रदेशे उणो ध० धर्मास्तिकाय होय तेने नो० धर्मास्तिकाय एवुं केम न केहेवाय ? इति प्रश्न. उत्तर. से० ते निश्चे गो० हे गौतम ! खं० चक्रना खंडने चक्र कहीये के स० सघला चक्रने चक्र कहीये ? एवुं वचन भगवंते पुछयुं त्यारे गौतम बोल्या. भ० हे भगवान ! नो० चक्रना खंडने चक्र न कहीये. स० संपूर्ण चक्रने चक्र कहीए. ए प्रथम व्रतान्त. ए० एम छ० छत्रना खंडने च० चमरना खंडने दं० दंडना खंडने डु० वस्त्रना खंडने आ० आयुधना खंडने अने मो० एम मोदकना खंडने मोदक कहीये के संपुर्ण मोदकने मोदक कहीये ? त्यारे गौतम बोल्या-मोदकना खंडने मोदक न कहीए, पण संपुर्ण मोदकने मोदक कहीये. एम पूर्वोक्त सर्व व्रतान्तमां जाणवुं. से० ते माटे गो० हे गौतम ! ए० जेम चक्रना खंडने खंडज कहीये पण चक्र न कहीए तेम ए० एक धर्मास्तिकाय प्रदेशने णो० धर्मास्तिकाय न केहेवी. इत्यादिक सघला चक्रने चक्र कहीये. ते अर्थे हे गौतम ! एम कह्युं. जा० यावत् ए० एक प्रदेशे उणो धर्मास्तिकाय होय तेने पण नो० धर्मास्तिकाय न कही. ए निश्चे-नयना मते कह्युं; पण व्यवहारनयना मते एक पण प्रदेशे करी न्युन वस्तु होय तेने वस्तुज कहीये. जेम खांडा घडाने घडोज कहीये. तेमज छेद्या कानना कुतराने कुतरोज कहीये. से० ते शा माटे भं० हे भगवान! ध० धर्मास्तिकाय एवुं केहेवाय ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! अ० अ-

सख्याता ध० धर्मास्तिकायना प्रदेश, ते स० सर्व कसीण समग्र प० प्रतिपूर्णक आत्म स्वरुपे विकस्पे नही ते पण नि० प्रदेशान्तरथी पण स्वभावे करी हीन नही एटले एक प्रदेशनो पण अंतर नही ए० एक शब्दे धर्मास्तिकाय एवा लक्षणे करी जे सर्व शब्द एकार्थ छे ए० एने गो० हे गौतम ! ध० धर्मास्तिकाय कहीये अहीया ए भावार्थ धर्मास्तिकायना असख्यात प्रदेश छे ते मांहीलो एक पण प्रदेश ऊंछो होय तेने धर्मास्तिकाय न कहीये ए० एम अ० अधर्मास्तिकायनु पण स्वरुप धर्मास्तिकायनी पेरे जाणवु आ० आकाशास्तिकाय जी० जीवास्तिकाय अने पो० पुद्‌गलास्तिकाय पण ए० एमज धर्मास्तिकायनी परे जाणवी ण० पण एटलु विशेष के ति० धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ए बेहना प्रत्येके अ० असख्याता (अनता) प्रदेश चा० केहेवा अने ए त्रणना अनता प्रदेश केहेवा से० शेष त० तेमज जाणवु

भावार्थ —हवे आ पाठमा एम कह्युं के, एक प्रदेशने तेमज बे त्रण यावत् सख्याता असख्याता प्रदेशने पण धर्मास्तिकाय न कहीए तेमज एके प्रदेश ऊणो होय तेने धर्मास्तिकाय न कहीए असख्याता धर्मास्तिकायना सपूर्ण प्रदेश (एके प्रदेश ऊणो नही ते प्रतिपूर्ण) द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, गुण अने पर्याय सर्व एक महत्वे भला तेने धर्मास्ति-काय कहीये एम धर्मास्ति-कायने, आकाशास्ति-कायने अने जीवास्तिकायने एमज केहवी

हवे जुओ ! अहींयां एम कह्युं के, एक पण प्रदेश ऊणो होय तेने जीव न कहीए, पण सपूर्ण प्रतिपुर्ण प्रदेश गुण पर्याये करी सहित होय तेने जीव कहीये आ पाठमा एक पण प्रदेश ऊणो होय त्यां सुधी प्रमुख द्रव्यने द्रव्यमा न गण्यो, त्यारे जे वस्तु (उपयोग ते) मुलगोज ज गुण छे तेने एकान्त नये जीव शी रीते कहीये ? वली जे चार उपयोगने आत्मा कह्यो छे, ते तो आत्माए करी जीवपणु (चैतन्यपणु) जणावे छे इहां जीवने अने उपयोगने न्यारो कह्यो छे, तेने जीव केम कहीये ? पर्यायने पर्यायज कहीये मनुष्य अने वृक्षनी छायाना दृष्टान्ते मनुष्य अने वृक्षनी छाया कहीये, पण छायाने मनुष्य के वृक्ष न कहीये

तेम जीवना गुणपर्यायने गुणपर्यायज कहीये, पण जीव न कहीये. वली नैगमादिक नयना मते जेम अंश वस्तुने वस्तु माने, तेम नैगम व्यवहारनयमां पर्यायने जीव कहीये. ए न्याये संवरने जीव कहीये.

हवे संवरने अजीव कया न्याये कहीयेः-निश्चेनयमां कर्मने रोक्यां तेने संवर कहीये. रोक्यां ते कर्म-पुद्गल अजीव छे. ए न्याये संवरने अजीव कहीये. संवरनो कर्ता जीव छे, क्रिया पर्याय छे, अने कर्मपणुं ते अजीव छे. जीवने तो संवुडो कहीये, अने कर्म रोक्यां तेने संवर कहीये. कोइ कहे छे के, संवरना पांच भेदने संवर कहीये, पण एम नथी; कारण के समकित तो पांच स्थावर वरजी उगणीस दंडकमां पावे; पण कर्म रोक्यां नहीं तेथी मनुष्य तिर्यंच विना बावीस दंडकने असंवुडा कह्या छे. शाख सूत्र भगवती शतक १६ में उद्देशे छठेः—

जीवाणं भंते ! किं संवुडा असंवुडा संवुडासंवुडा ? गो० ! जीवा संवुडावि असंवुडावि संवुडासंवुडावि एवं जहा सुत्ताणदंडउ तहेव भाणियव्वो. ॥

जी० जीव भं० हे भगवान ! किं० शुं ? सं० संव्रत अ० असंव्रत के सं० संव्रता संव्रत ? (संव्रत एटले संवरवंत, असंव्रत एटले संवर रहित अने संव्रतासंव्रत एटले संवर रहित तथा संवर सहित) इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! जी० जीव सं० संव्रत पण होय अ० अ-असंव्रत पण होय अने सं० संव्रतासंव्रत पण होय. ए० एवी रीते ज० जेम पूर्वे सूत्रमां सु० सुतानो दंडक कह्यो त० तेम ए पण भा० केहेवो.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां कह्युं छे के, तिर्यंच अने मनुष्य वर्जीने बावीस दंडकने समकित छतां पण व्रत नही तेथी असंवुडा कह्या छे. जेने मिथ्यात अने अव्रत प्रमुख पापना सर्वथा त्याग होय तेने बाल-पंडीत कह्या छे, अने जेने एके पापनो त्याग न होय तेने अव्रति बाल कह्या छे. वली मनुष्य अने तिर्यंच विना बावीस दंडकने अधर्मी कह्या छे. शाख सूत्र भगवती शतक सत्तरमें उद्देशे बीजे. ए जुओ ! कर्म

रोक्यां तेने सवर, पकीत तथा वर्मी कह्या, अने कर्म रोक्या विना सव रनी क्रियाना पांच भेद सम्यक्तादिकने सवर न कहीए ए सम्यक्तादिक पांच भेद सिद्धमां पण होय, पण कर्म रोकवानो स्वभाव नही तेथी तेमने "नो सवुका, नो असवुका" कहीये विद्यमान काले जीवनो शुद्ध उपयोग प्रवर्तनो तेने अने कर्म रोक्यां तेने संवर कहीये जीवनो उपयोग सम्यक्तादिक पांच मोक्षनो छे तेने तो निश्चेनयमां जीवना भाव पर्याय कहीये, अने निश्चेनयमां कर्म रोक्या तेने संवर कहीये ए न्याये सवरने अजीव कहीये (२)

हवे निर्जराने अजीव कये न्याये कहीये -निश्चेनयमां कर्म निर्जरीने जीवथी अलगां थाय तेने निर्जरा कहीये जे निर्जरी गयां ते कर्मपुद्गल निश्चेनयमां अजीव छे ए न्याये निर्जराने अजीव कहीये (१), वली नीर्जराने अजीव कया न्याये कहीये निर्जरानो कर्ता तो जीव छे पण वारे भेदे क्रिया पर्याय छे, अने कर्मपणुं अजीव छे ते कर्म अलगां थाय त्यारे जीव निर्मल थाय तेने निर्जरा कहीये ए न्याये निर्जराने अजीव कहीये

हवे मोक्षने जीव कया न्याये कहीए -त्रण उपरली नय जीवना उपयोगने मोक्ष माने ते पायाने दृष्टान्ते ते उपयोग आत्मा छे अने आत्मा नाम जीवनु छे ए न्याये मोक्षने जीव कहीये (१) वली मोक्षने जीव कया न्याये कहीये मोक्षनो कर्त्ता जीव छे अने मोक्ष जीवनु लक्षण छे ए न्याये मोक्षने जीव कहीये (२) वली मोक्षने जीव कया न्याये कहीये -मोक्षनी क्रियाना चार भेद ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप, ए चार जीवना भाव पर्याय छे ते पर्यायने व्यवहारनयमां जीव कहीये अने निश्चेनयमां पर्यायने पर्याय कहीये पण जीव न कहीये वृक्ष अने मनुष्यनी छायाना दृष्टान्ते ए न्याये मोक्षने जीव कहीए (३).

हवे मोक्षने अजीव कया न्याये कहीये निश्चेनयमां कर्म क्षय थयां तेने मोक्ष कहीये, अने जीवने तो मुकायो कहीये कर्म क्षय थयां तेनेज मोक्ष कहीये ते कर्म अजीव छे ए न्याये मोक्षने अजीव

कहीये. (१) वली मोक्षने अजीव कया न्याये कहीए:-मोक्षनो
जीव छे, क्रिया जीवनी पर्याय छे अने कर्म ते कर्म क्षय थयां ते अ
छे. ए न्याये मोक्षने अजीव कहीये. (२)

हवे समचय नव तत्वमां जीव केटला अने अजीव केटल
निश्चेनयमां तो एक जीव ते जीव अने आठ अजीव; अने व्यव
नयमां आठ तो जीव अने एक अजीव ते अजीव. जेम व्यवहार
मां भमरो कालो, अने निश्चेनयमां पांचे वर्ण पावे (होय). व्यवहारन
गोल मीठो, अने निश्चेनयमां पांचे रस पामे. व्यवहारनयमां केतक
सुगंध अने निश्चेनयमां बंने गंध पामे. व्यवहारनयमां पत्थर खरर
अने निश्चेनयमां आठे फर्स पामे. व्यवहारनयमां चुडी गोल अने
श्चेनयमां पांचे संठाण होय. शाख सूत्र भगवती शतक १८ मे उ
छे. ए न्याये सात तत्वने व्यवहारनयमां जीव कहीये, अने नि
नयमां अजीव कहीये. वली ठाणायांग सूत्रने बीजे ठाणे बे समो
कह्या छे. जीव समोयार १, अने अजीव समोयार २. व्यवहारनय आ
पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष, ए सात तत्वने ज
समोयारमां कह्या छे; अने एज सात तत्वने निश्चेनय आश्री अज
समोयारमां कह्या छे. ए न्याये सात तत्वने व्यवहारमां जीव कह
अने निश्चेमां अजीव कहीये.

वली व्यवहार-निश्चे एक समचयमां एक जीव ते जीव, अ
एक अजीव ते अजीव; बाकी सात जीव अजीवनी पर्याय छे. शा
सूत्र भगवती शतक १३ मे उद्देशे चोथे, एम कह्युं छे के, मन, वच
काया प्रमुख सर्व पदार्थने चालवानो साहाज धर्मास्तिकाय आपे
अने स्थिर रेहेताने अधर्मास्तिकाय साहाज आपे छे. विकाश गुण जं
पुद्गलने भाजन आकाशास्तिकायनुं छे. काल ते पुद्गलादिक एक
रेहेवानी स्थिति जीवनो उपयोग; अने पुद्गलास्तिकाय पुद्गल म
ने विखेरे एम कह्युं छे. ए न्याये पुन्य, पाप, आश्रव अने बंध शुभाशु
पुद्गल मन आदिक जोग जीवना अशुद्ध उपयोगथी ग्रह्या स्थिरप

कर्मपणे रह्या छे छ द्रव्यना साह्याजथी नाम बन्या छे तेथी छ द्रव्यने जीवना पर्याय कहीये सबरे आवता कर्म रोक्यां, निर्जराए आगलां कर्म देशथकी तोड्या अने मोक्षे सर्वथा कर्म पुद्गलने जीवथी दूर कर्यां ए पण छ द्रव्यना साह्याजथी पर्यायथी नाम निपन्यां छे तेथी जीव अजीव सीवायना सात तत्त्वने जीव अजीवनी पर्याय कहीये

वळी सूत्र पन्नवणा पद पांचमें छत्रीसमा बोलने जीव पर्याय कह्या छे द्रव्य, प्रदेश, पांच वर्ण, पांच रस, बे गंध, आठ स्पर्श, बार उपयोग, पुद्गलथी निपनी अवगाहना अने आउखानी स्थिति, ए छत्रीस बोलने जीव पर्याय कह्या छे तेमां केटलाक संवर, निर्जरा अने मोक्षना भेद छे अने केटलाक पुन्य, पाप, आश्रव अने बंधना भेद छे, तेथी सात तत्त्वने जीव अजीवनी पर्याय कहीये जीव अजीवना संजोगे सात तत्त्व निपन्या छे, तेथी भेळाज पर्याय कहीये, पण न्यारा व्हेंचाय नही ते कया दृष्टान्ते जेम कोळणे कोळीनो नातो कीधो ए बनेना संजोगथी सात संतान उपन्यां ते व्हेंचवाने दृष्टान्ते जेम बनेना भेळा अंश ते न्यारा वेंहेंची शकाय नही, तेम सात तत्त्व जीव अजीवना संजोगथी निपन्या, पण न्यारा न्यारा वेंहेंची शकाय नहीं ते माटे तेने जीव अजीवनी पर्याय कहीये हवे जो एकला जीवने सात तत्त्व कहीये तो सिद्धमां पण केहेवा जोइए, अने जो एकला अजीवमां सात तत्त्व कहीये तो जीव विना पुद्गलमां पण केहेवा जोइए, पण एम नथी जीव अजीव बनेना संजोगनेज तत्त्व कहीये

तेवारे तेरापंथी एम कहे छे के " रास बे कही छे जीवरास १, अने अजीवरास २ तेमां नव तत्त्व कइ राशमां छे ? " तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! जीवते जीव अने अजीव ते अजीव बाकी सात तत्त्व तेमां केटलाक बहुलतामां अने केटलाक मुख्यतामां जीवद्रव्यना गुण छे (संवर, निर्जरा अने मोक्ष) शेष पुन्य, पाप, आश्रव अने बंध, ते निश्चेनयमां अजीव छे, अने जीवनी साथे छे तेथी व्यवहारनयमां जीव छे वळी ए सात तत्त्वमां उपयोग छे ते जीवना घरनो छे जेम एक आवानु

वृक्ष छे अने एक लींमडो छे. हवे जे वृक्षनी छाया छे ते वृक्षना गुणमां छे, पण छायारुप कोइ बीजुं वृक्ष नथी. वृक्ष ते तो द्रव्य अने गुण ते छाया. वली जेम पत्र फुलादिक सहित एकज वृक्ष छे, तेम गुण पर्याय लीधे एकज जीवद्रव्य छे. जेम जीव द्रव्य तेतो वस्त्र, अने तेनो गुण ते स्वेतादिकवर्ण, अने पर्याय ते दोरा, अने रागादिक चिगट ते मल ग्रहण रुप आश्रव, अने पुन्य पाप ते रज, निधत ते बंध, साबु पाणी ते संवर, अने शुद्ध दशा उज्वलता ते आत्मेयभाव; ए सर्व गुण पर्याय ते वस्त्रने छे, पण पूर्वोक्त गुण पर्याय वस्त्र नथी. तेम ए सात तत्व जीवने छे, पण ए एकला जीव नथी.

वली तेरापंथी कहे छे के, "जीव अजीवनी राश बे छे, पण पर्जवा क्यां कह्या छे ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! निश्चेनयमां राश बे छे तेम तत्व पण बेज छे. जीव अने अजीव. हवे व्यवहार-नय तो जीव अने अजीव बंनेना व्यापारने कहीये, अने निश्चेनय जीव अजीवनो संयोग विखरी न्यारो थाय तेने कहीए. एक जीव अने आठ अजीव एकान्त माने ते निश्चेनयवादी. ते एकान्त-नयवादी प्रथम गुणठाणा वर्ति जाणवो. वली आठ जीव अने एक अजीव एकान्त माने ते व्यवहारनय वादी. ए एकान्त-नयवादी प्रथम गुणठाणावर्ति जाणवो. वर्तमान व्यवहारनय भेला माने, अने वर्तमान ते निश्चय आश्री न्यारा माने, इत्यादिक यथायुक्त नय निक्षेपा सहित वचन कहे तेनां वचन प्रमाण छे; पण नय विना वचन अप्रमाण छे. तेनी शाख सूत्र अनुयोगद्वार.

हवे अहियां नव तत्व उपर अनेक नय संक्षेपथी उतारी देखाडी छे. छतां विस्तारथी जाणवानी इच्छा होय तेमणे स्वामीजी माहाराज श्री १००७ श्री भीकमदासजी माहाराज कृत 'तत्व-शोधक' ग्रंथथी जाणी लेवुं. जदपि एटलुं न धारी शके तो एम चिंतववुं के "तमेवसच्चं निसंकंज्जं जिणेहिं पवेइयं एवं मणे ऋारेमाणा, जाव आणाए आराहगा भवइ." एज अथागमे अरिहंतदेवना परुपवाथी. एज सुतागमे ते गणधरोना गुंथवाथी. एज अणन्तरागमे ते श्री सुधर्मास्वामी श्री जंबु-

स्वामीने अने जंबुस्वामी प्रभवादिकने परुपवार्थी. एज परप पुज्यजी श्री १००० श्री भुधरजी, कुशलोजी, गुमानचंद रतनचंदजीना परुपवार्थी. इति सिद्धान्तसार समाप्त

दुहा

सासन मंडन मुकुट मणी, ज्ञानचंद गुरु साज,
पाषंड मत खंडन करन, ज्यु मृग ने हरि गाज
तस लघु भ्राता दीपतो, तेजस्वी दुर गेश,
संघ रख्यो निज दृष्टमे, तपीया तेज दिनेश
तास शिष्य जगमें प्रगट, दुलीचंद रतनेश,
वदन कमल सरस्वति वसे, बोल बोलमें रेश
तास पसाये ए रच्यो, ग्रंथ सिद्धांतजुसार,
कनिराम चित्त चुपसु, तम खंडन दिनकार
संवत उगणीसें ठके, मृगसर शुद रवीवार
गाम पिंपाडमें सही थयो, ग्रंथ सिद्धांतजुसार

ठेश वंश शिर मुकुट हे, श्रावक गुणे प्रधान,
शेठ फतेमल रसिक हे, चिर वचनको जाण
तास चतुरता नव नवी, चरचा की मद्दमत,
तसु कारण अभ्यास ए, रच्यो शुद्ध सिद्धान्त
सुणशी भणशी शीखशी, होशी ज्ञान उद्योत,
मिथ्या तिमिर न व्यापसी, निर्मल समकित जोत
स्वामी श्री कनीरामजी, शेठ फतेहमल जाण,
अविचल नामज पहनो, जबलग जिनवर आण

